

वीर सेवा मन्दिर  
दिल्ली



१८०२

क्रम संख्या

काल नं०

खण्ड





विद्यासागर-न्यायवर्त  
 शान्त शान्तिविजयजी  
 पढागङ्गा  
 नवभेलावा - माधु.



VIDYASAGAR—NYAYRATNA—SHREEMAT

SHANTIVIJAYJI—MAHARAJ

JAIN SHWETĀMBAR—SĀDHU

# मानवधर्मसंहिता.

( दुसरा नाम- )

## शांतसुधानिधि:-

( जिसको )

जैनभेतावरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायर-  
त्न-महाराज-शांतिविजयजीने-बनाया.

[ शार्दूलविकीर्तित ]

धन्या भारतवर्षसंभविजना-येद्यापिकालेकलौ,  
निस्तीर्थेश्वरकेवले निरवधौ नश्यन्मनःपर्यये,  
उद्यत्सूत्रविशेषसंपदिभवदौर्गत्यदुःखापदि,  
श्रीजैनैन्द्रवचोनुरागवशतःकुर्वति धर्मोद्यम, १,

( प्रथमआवृत्ति: १००० )

प्रकटकर्ता

गुजरात-मारवारु-मालवा-और रा-  
जपुतानाका-जैनसमाज,

मुद्रितकर्ता

युनियनमिडिंगमैसकंपनीकिमीटैड-अमदावाद.

( मूल्य १ रुपये. )

सन-१८९८.

संवत् १९५५-



( दोहा, )

क्या देखो तनकी छबी-चित्रलिखि ब्रह्मांति,  
निरखो मुजमनकी छबी-मानवधर्म विख्यात, १,  
चतराईकी बातमें-बातबातमें बात,  
ज्यूं केलेके बातमें-बातबातमें बात, २

( सुवाल )-कौन किसकों नही चाहता ? ( जवाब )  
निचेलिखीइबारत पढो.

- |                             |                             |
|-----------------------------|-----------------------------|
| १ मित्र-वियोगकोंनहीचहाता.   | १७ जैन-असंगत वचनकों.        |
| २ सिंह-नौकरीकों.            | १८ दंपती-फूटकों.            |
| ३ चौर-दीपककों.              | १९ अमध्य मोक्षकों.          |
| ४ तामसी-छलकपटकों.           | २० उमदा घोड़ा-चाबककों.      |
| ५ दुर्विदग्ध-सदुपदेशकों.    | २१ पवन-एकत्रस्थितिकों.      |
| ६ गुरु-पठित शिष्यकों.       | २२ पापी-धर्मकों.            |
| ७ कामी-धैर्यनाकों.          | २३ गसभ-मिर्माकों.           |
| ८ पतिव्रता स्त्री-उपपातकों. | २४ विजली-अंधकारकों.         |
| ९ बहादुर-शिकस्तकों.         | २५ काग-दाखकों.              |
| १० विद्वान्-ताबेदारीकों.    | २६ सन्यासी-प्रतिष्ठाभंगकों. |
| ११ रोमी-पथ्यकों.            | २७ अघविक्रता-सुकालकों.      |
| १२ अनादी-चतुरताकों.         | २८ कृतघ्न-प्रत्युपकारकों.   |
| १३ वेद्या-अपन्यकों.         | २९ नकटा-आरसिकों.            |
| १४ निर्मोड़ी-स्त्रीसंगकों.  | ३० प्रीति-मित्रताकों.       |
| १५ महात्मा-निजस्तुतिकों.    | ३१ शत्रु-मित्र कं मित्रकों. |
| १६ निर्वल-कुस्तिकों.        | ३२ पक्षपार्ती-युक्तिकों.    |



## [ धन्यवाद. ]

(जिनजिनमहाशयोंने इसग्रंथके संग्रहकरते व-  
स्तु सहायता दिई उनकों धन्यवाद—और  
ग्राहकहोकर ज्य जेजा उनके  
नाम प्रकाशित करता हू. )

( किताब. )— ( ग्राहकोंके नाम. )

- १२५ गुजरातदेशनिवासी एक श्रावक,
- १०० मध्यप्रदेश राजपुतानानिवासी एक श्रावक,
- ५१ शहरअमदावादनिवासी एक श्रावक,
- ५१ झहोरी मगनमलजी जोरावरमलजी मुणोत—( मालिक हीरा-  
लालजी. )—शहर इंदोर देश मालवा,
- ५१ शेठ मगनीराम भभुतसिंह ( मालिक चांदमलजी ) शहर  
रतलाम देश मालवा,
- ५१ श्रीयुत खेमचंदजी दीपचंदजी सुरत नानपुरा,
- ५१ श्रीयुत लहेरचंदजी डालाचंदजी वकील शहर पाटण देश  
गुजरात,
- ५० मुहता जुगराजजी लक्ष्मणराजजी वगेरा, शहर जोधपुर  
देश मारवाड,
- १५ शा. कपुरचंदजी उमाजी, मुकाम देलदर, जीका बीरोही  
देश मारवाड,

- १३ श्रेष्ठ कुंदराजी कपुरचंदजी. घीया. (मालिक लक्ष्मीचंदजी,) परतपागढ, देश मालवा राजपुताना.
- ११ श्रेष्ठ नथमलजी गंभीरमलजी छाजेड, शहर इंदोर (मालवा)
- ११ श्रेष्ठ बालचंदजी कनीरामजी, शहर बंबई,
- १० शा. केशरीमलजी धन्नाजी, मुकाम जावाल जीला शीरोही, देश मारवाड,
- ९ शहर जेशलमेरके श्रावकोंकी तर्फसें,
- ७ मुहता-चंपालालजी हरखचंदजी शहोरी. शहर इंदोर देश मालवा,
- ५ श्रेष्ठ मुन्नालालजी चंपालालजी मारवी, शहर इंदोर देश मालवा,
- ४ शा. छीतरजी रूपजी, शहर इंदोर देश मालवा,
- ४ श्रीयुत जमनालालजी कोठारी, मुकाम जावद, जीला निमचकी छावणी, मालवा राजपुताना.
- ४ गांधी वरधाजी छोगालालजी, मुकाम रतलाम देश मालवा,
- ४ मारवी उदयचंदजी मूलचंदजी मुकाम रतलाम देश मालवा,
- ४ श्रीयुत भाउसाहब सिरदारमलजी, मेनेजर मकसीकार-खाना, देश मालवा,
- ३ शा. लुंबचंदजी, मुकाम रोहिडा राजपुताना आबुरोड.

### ( शहर इंदोर. )

- ४ श्रीयुत गुलाबचंदजी खजानची,
- ३ श्रीयुत वैद्य गणपतजी भगवान्जी,
- २ श्रीयुत सुरजमलजी सकलेचा,

( धन्यवाद. )

- १ श्रीयुत मूलचंदजी दलीचंदजी बोयरा, (मालिकवृजारीबलजी.)
- १ श्रीयुत जोरावरमलजी बागमलजी साणमुखा,
- १ श्रीयुत हीराचंदजी कोठारी,
- १ श्रीयुत सिरदारमलजी पारख,
- १ श्रीयुत लखमीचंदजी मारु,

( शहर रतलाम. )

- १ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी भागीरथजी पोरबाद.
- २ श्रीयुत खुवाजी फकीरचंदजी पोरबाद,
- २ चकौल भगजी केशरीमलजी मारवी,
- १ पीपाडा वीरचंदजी कारुजी,
- २ काठेड हीराजी,
- २ शा. लधाभाइ जेठाभाइ, कच्छी,
- १ घुघरीया हीरालालजी नानालालजी,
- १ श्रीयुत छगनभाइ गुजराती.
- १ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी पोपटचंदजी, खंभातवाला,
- १ शेठ मोकमभाइ केशरीमलजी, गुजराती,
- १ शेठ पेमचंदजी जयचंदजी, गुजराती,
- १ लुणीया सरूपचंदजी,
- १ मोदी धनाजी,
- १ बोथरा गजाजी,
- १ पीचोलीया सरूपचंदजी,
- १ खीमेसरा पंभाजी हरखाजी,

( धन्यवाद. )

- १ मारवी मयाचंदजी बुलचंदजी,
- १ चिनायका हीराजी,
- १ चौधरी नेमाजी,
- १ नाहार नंदाजी,
- १ कांसवा जगवानजी गवुजी,
- १ नाहर रताजी केशरीमलजी,
- १ मेता रतिचंदजी.
- १ पारख ताराजी भागीरथजी,
- १ तलेरा देपालजी चुनीलालजी,
- १ मारवी रायचंदजी खिवाजी,
- १ पोरवाड मुरजमलजी,
- १ पावेचा नाथाजी चपालालजी,
- १ तिलोकचंदजी मोतीलालजी, पंचेबावाला,
- १ कटारिया लखाजी निहालजी,
- १ सुराणा रुपचंदजी जडावचंदजी,
- १ घुघरीया हरखचंदजी केशरीमलजी,
- १ बगाणी जवरचंदजी चुनीलालजी,
- १ दलाल खुबाजी बाघमार.
- १ पोरवाड खुबाजी पुनाजी,
- १ कटारिया मंछारामजी केशरीमलजी,
- १ पंड्याजी भोलीरामजी कालुरामजी,

( कसबा वरुनगर—मालवा. )

- १ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी मोहनलालजी वैद्य, (कुशलगढवाले)

- २ श्रेष्ठ कालुजी तिलोकचंदजी, ( माळिक रिखवदासजी, )  
 १ श्रीयुत यविजी ऊत्तमविजयजी,  
 १ श्रेष्ठ मंगलजी नथमलजी पारख,  
 १ श्रेष्ठ माणाजी कस्तूरचंदजी,

( शहर मंदसोर—माळवा. )

२५ श्रीयुत सौभाग्यचंदजी मुणोत सेक्रीटरी अफीम गोदाव  
 सरकारी,

(तथा) श्रीयुत छगनमलजी बांठिया बगेरा,—

( शीरोही—देश माळवा. )

- |                           |                            |
|---------------------------|----------------------------|
| १ रा.रा. मिलापचंदजीदिवान, | १ शा. नानचंदजी खुशाल-      |
| १ शृंगीजी धनराजजी,        | चंदजी,                     |
| १ शृंगीजी अखेचंदजी,       | १ शा. हंसराजजी बनाजी,      |
| १ शृंगीजी कस्तूरचंदजी,    | १ शा. हिमतमलजी जयचंदजी,    |
| १ शृंगीजी रूपचंदजी,       | १ कोठारीनवलमलजी पंभाजी,    |
| १ शा. उमेदमलजी,           | १ कांगठाणी भूरमलजी ता-     |
| १ शा. हुकमीचंदजी,         | राचंदजी,                   |
| १ शा. आंबाजी प्रेमाजी,    | १ चौधरी हुकमीचंदजी म-      |
| १ शा. मूलचंदजी भुराजी,    | नरूपजी,                    |
| १ शा. गोबाजी हुकमाजी,     | १ शा. पंनेचंदजी देवीचंदजी, |
| १ शा. रूपचंदजी हिंदुमलजी, | १ शा. नगीनदासजी सुरतवाले   |
| १ शा. जाकमचंदजी जेताजी,   | १ सधवी नथमलजी चैनमलजी,     |

- |                          |                           |
|--------------------------|---------------------------|
| १ शृंगीजी जवानमलजी,      | १ शा. नथमलजी रूपचंदजी,    |
| १ शृंगीजी मिलापचंदजी,    | १ शा. जवेरचंदजी प्रेमाजी, |
| १ शृंगीजी हीराचंदजी,     | १ शा. खुबचंदजी ताराचंदजी, |
| १ शृंगीजी रिल्लवदासजी,   | १ कोठारी शिरेमलजी नव-     |
| १ शा. खूबचंदजी,          | लमलजी,                    |
| १ शा. शिरेमलजी,          | १ दोशी तिलोकचंदजी सां     |
| १ शा. चिमनमलजीनानचंदजी   | कलचंदजी,                  |
| १ शा. हिंदुमलजी भानाजी,  | १ चौधरी मोतीचंदजी नेमाजी  |
| १ शा. रूपचंदजी प्रेमाजी, | १ शा. कस्तूरचंदजी कानाजी, |
| १ शा. गुलाबचंदजी शवाजी,  | १ शा. हुकमीचंदजी मया-     |
| १ शा. लखमीचंदजी जेताजी   | चंदजी,                    |
| १ शा. बजेराजजी,          |                           |

### ( शिवगंज—देश मारवाम )

- |                          |                          |
|--------------------------|--------------------------|
| २ शा. बाहलाजी नाथाजी,    | १ शा. हेमराजजी,          |
| १ शा. श्रीचंदजी दीपाजी,  | १ शा. मोतीजी मंग्राजी,   |
| १ शा. गोमाजी केरिंगजी,   | १ शा. ओटाजी फवाजी, क-    |
| १ शा. मनरुपजी केरिंगजी,  | लापुग,                   |
| १ शा. चेंनाजी सदाजी,     | १ शा. जैसाजीकी स्त्री,   |
| १ शा. धंनानी गांविंदजी,  | १ शा. ललुभाइकी स्त्री,   |
| १ शा. कुपाजी मुजाजी, वा- | शा. तेजाजीकी स्त्री,     |
| लीवाला,                  | १ शा. जीताजी धंनानी,     |
| १ शा. भगाजी वनाजी,       | १ शा. गुलाबचंदजी हीराजी, |
| १ शा. वेलाजी फताजी,      | १ शा. दलचंदजी चांपाजी,   |

१ शा. भगजी लालजी,	लापुरा,
१ शा. हेमराजजी सादरी- वाला,	१ शा. लुंबाजी चेनाजी वा- लीवाला.
१ शा. हंसराजजी शीरोही- वाला,	१ शा. वनाजीकी स्त्री,
१ शा. धनरूपजी गलाजी क-	१ शा. जोधाजीकी स्त्री,
	१ सेवक चिमनाजी धुलाजी,

- २३ देश मारवाड-मुकाम मठारके-श्रावकोंकी तरफसें,
- १ मुता जोरावरमलजी मुकाम सोजत देश मारवाड,
- १ शा. लुंबाजी देवराज, मुकाम जावाल,
- २ श्रीयुत अबीरचंदजी जालोरी, मुकाम वासोदा, ( रियासत  
गवालियर, )
- २ श्रीयुत नंदलालजी पारख, मुकाम भेलसा, ( रियासत  
गवालियर, )
- १ श्रीयुत नथमलजी पारख, शहर उज्जैन, ( रियासत  
गवालियर, )



## ( नूतिका. )

॥ ग्रंथरचना उसको कहना जिसमें अपूर्ववातोंका संग्रह किया गया हो, और वह संग्रहभी ऐसा होना जो हमेशाके लिये सबको फायदेमंद हो, व्यर्थकागज कालेकरना क्या जरूरत ! अच्छे लोग फरमाया करते हैं कि—चतराईसे बोलना बहुत मुश्किल बात है लेकिन ! असल पुछांतो चतराईके लेख लिखना उससे भी ज्यादा मुसीबत समझो—थोड़ेहफ्तोंमें बहुत कुछ लिखना और भाषाको रसीली बनाना उससे भी ज्यादा मुश्किल है—अगर उक्त बातें तुमने पूरी तौरसे हासिल नहीं की हैं—तो—ग्रंथ बनाना फिजूल समझो. ग्रंथ तयार करके—छपवाना चाहो तो—बहेतर लेकिन ! मूल्य उतना रखो जो लागतमें ज्यादा न हो, लिखाणको प्रेसमें रवाना किये पहिले दोतीन दफे फिरफिरकर पढ़ जाओ, ऐसा न हो कि—पीछेंसे तुमको रंज उठाना पड़े, जैसे धनुष्यसे छुटा हुआ बाण फिर हाथमें नहीं आता लिखेहूवे लेख छपगये बाद फिर मिटा नहीं सकते, इसीसे कहा जाता है फिर मौचलो,

॥ ग्रंथ—छपेबाद दूसरा शब्द उसमें भूल बतलावे—और वह—सच्ची हो तो—दूमरी आवाजमें उसको सुधारलो, तुमारी तारीफ होगी, बुराई नहीं, भूलना सबके पीछे लगा है, जहां तक बनें ऐसा लेख लिखो—जो—अन्युक्तिमें रहित हो, बहुत—रायक या—भयानक बनादोगे—तो—सचको धकापहुंचकर कमजोरी आजायगी, जहां खंडनमंडनका मौका आनबने युक्तिसे—छड़ो, कुचन लिखना—ब—शादूरी नहीं, बहादूरी उमीका नाम है जो शास्त्रीयकानूनमें बखि—लाफ बात—नबाली जाय—तारीफ उनकी समझो जिनके लेखोंको दुश्मन सराहे. दुनिया दिवानी है, लेकिन, ! नहीं, ! जिनको अक—लमंद लोग सराहें वही ठीक है. इसग्रंथमें—मुझे—कड़मत्कारीवातें

बैसी लिखना-था-जो-निमित्त ज्ञानके तालुकथी, लेकिन ! इस-लिये नहीलिखीकि-जमाना बदला हुआ है-अधर्म वृद्धि दुनियाके तीनाहिसोंपर छागइ और-गुणकेपीछे अवगुण बोलने वाले कदम कदमपर खड़ेहै इसलिये यही मुनासिब समझागयाकि-समयदेख-कर बात बतलाना.—

यै-नही कहसकताकि-इसग्रंथमें कहीं-बगेर चुकके लिखगयाहूँ कइजगह गलतीयां रहगइ होगी, अपनी भूल अपने आपको जब तकदूसरा न कहे-मालूम नही देती, इसग्रंथके पांचौतरंगमें जोजो बाते लिखीहै सबका शूचीपत्र न्यारान्यारा बनायाजातातो बहुत बड़ा फैलाव होता. इस लिये आगे जो संक्षिप्तशूचीपत्र लिखा गयाहै-उसको पढ़कर मतलब निकाललेना, देशाटनवृत्तांतके ले-खमें पृष्ठ (४१)पर-जहां फरुखनगरका बर्नेन देखागे-पंक्ति (१२) में मेरीउमर (३३) वर्षकी छपगइहै वहांपे (३१) वर्ष जानना, श्वे-तांबर दिगंबरकीभिन्नतानामके विषयमें-पृष्ठ (२५३)-पंक्ति १-पर जहां-त्रिलोकसारमें ऐसा क्यों कहा लिखाहै, वहांपर-गोमटसा-रमें ऐसा क्यों कहा-जानना, पृष्ठ (३२६) पंक्ति (१७) में-जहां आमगंधतोला-दो-ऐसा छपगयाहै वहां-आसगंधतोला-दो-एसा पाठ जानना, पृष्ठ (३२८) पर-जहां-सर्पकाटनेपर आरामहोनेके उपाव बतलायेहै-वहांपे पंक्ति (८) में-जहां फीटकरी लिखीदेखो, वहां-सवातालेफीटकरी-ऐसापाठ जानना,-(४८७)पंक्ति-पांचपर जर्मनीवालोंके हिसाबसे दुनियामे जो एक अबज (७०) करोडको आबादी लिखोहै उसके साथ आम यूरोपवालोंके-जानेहुवे भूगोलके अनुमानसे (१५) अबज मनुष्यकी आबादी दुनियामेंहै एसा जानो.



( हस्ताक्षर,—)

—मुनि-शांतिविजय,—

( संवत् १९५५,—)

# **[मानवधर्मसंहिता-(शांतसुधानिधि)ग्रंथका- संक्षिप्त सूचीपत्र. ]**

( तरंगपहिलेका वयान. )

( विषय )	( पृष्ठ. )
१—देशाटनवृत्तांत, ....	१-१४०
॥—यतिजी पं-जयचंद्रजीके सवाल्लोंका जवाब,	१९-२१
॥—तीनथुइवाले-मलीनांवरी-मुनिधनविजयजीकी- कुतर्कोका-खंडन,	२१-३९
॥—दिगंबरभुल्लक-धर्मदामजीरचित-श्वेतांबर न्यायाकुश ग्रंथका-खंडन.	४३-७०
॥—श्वेतांबराचार्य-श्रीमद्-हीरविजयमूरिके फुरमान पत्रकी-नकल.	८४-८६
॥—मूर्तिपूजापर-व्याख्यान,	९८-१२४
॥—यतिजी-पं-माधवचंद्रजीके-सवाल्लोंका-जवाब,	१२५-१४०
२—जैन-बोधका-भेद, बुधगौतमकी उत्पत्ति-और- तीर्थंकर महावीरका जीवनचरित,	१४१-१८०
३—श्वेतांबरदिगंबरकीभिन्नता-दिगंबरमतकी उत्प- त्ति-भेदानुभेद-चौराशीवाल्लोंका-जवाब.	१८४-२७५
४—मुल्ताननिवासी-दिगंबरश्रावकोंके(१६)सवा- ल्लोंका जवाब,	२७५-२८१
५—लउकरगवालियरनिवासी-दिगंबरश्रावक फ- तेहलालजीके-सवाल्लोंका-जवाब,	२८१-३०६

६—चिकित्साविद्या-वैद्यकेक्षण-बीमारकीहिफाज-  
त-अजीर्ण-कोषवृद्धि-खुनीबवासीर वगेरारोगके  
मिटानेकाउपाय, स्त्रीको रक्तविकारशांत होकर  
गर्भस्थितिहानेकी चिकित्सा-औरतकों-और-  
मर्दकों किसतरह शरीरकी रक्षा करना-सर्पके  
काटनेपर आरामहोनेकी चिकित्सा,

३०६-३३०

(तरंगदूसरेकाबयान.)

१—स्वरोदपज्ञान,

३३१-३४१

,,—योगशास्त्रका वर्णन,

"

,,—सूर्य-और-चंद्रनाडीचलतेबख्त-क्याक्याकरना

"

,,—नत्नोंकी पहिचान-प्राणायाम,

"

२—अष्टांगनिमित्त,

३४१-३९१

,,—अंगफुरकनेका फल,

"

,,—स्वप्नोंका फल,

"

,,—स्वरविज्ञान-मनुष्य पथु-और पक्षीकीबोलीसंथुभाथुभ,—

,,—जमीनकंपनेका फल,

"

,,—देश-नगर-और ग्रामोंपरजब आफतआनेवाली  
हो-क्याक्या बनावबने,

"

,,—आकाशमेषधुम्रकेतुका उदय-उलकापात-और-  
तारोंकाखिरना,

"

,,—शरीरके तिल-मसे-और लहसनका फल,

"

,,—हाथपांवकी रेखाका फल,

"

२—शकुनशास्त्र,

३९२-३९६

३—कालज्ञान, .... ३९६-४०२

## ( तरंग तिसरेका वयान, )

१—मानवधर्मसंहिता,

४०३-६३३

॥—सवेरे उठकर मंत्राधिराजका स्मरण-दातूनकरनेकी विधि-जिनमंदिरजानेकी विधि-शास्त्रमुननेका वस्तु-खानपानकी विधि-तांबुल-मकानकीम-फाइ-नशाकरनेमेंनुकशान-वंश-और-गोत्रका वर्नन-क्षत्रीय-ब्राह्मण और वैश्यके कर्त्तव्य-अकलकंफव्वारे-पञ्चनी-चित्रिणी-हस्तिनी-और-शंखिनीस्त्रीके लक्षण-(कामविकार-मोह-कर्मका एकभेद) ब्रह्मचर्यपालनेका उपदेश-ग-र्भवतीस्त्रीको शिक्षा-गर्भाधान वंगरा मोलहमं-स्कार-जैनशास्त्रानुसार विवाहका वर्नन-जैन तोथोंका वयान-इमचंद्राचार्यरचित-अर्हन्नीतिके मुताबिक-दायभागऔर-वर्सायतनामा-वंगराकइ बातोंका खुलासा,

॥

## ( तरंग चौथेका वयान. )

१—ज्योतिषशास्त्रका वयान,

६३४-६४६

२—मंत्रशास्त्रका खुलासा,

६४६-६५२

३—छंदशास्त्रका वर्नन,

६५२-६५५

४—जैन-और-दयानंदसरस्वती, इसमें दयानंदसरस्वतीकी कुतर्कोंका-खंडन-और-वेदकी उत्पत्तिकी वयान है,—

६५५-७४७

- ५—दुनियाके मतमतांतर—( धर्मतत्व-प्रदर्शनी)— } ७४३-७९७  
 जैन-बौध-सांख्य  
 योग-मीमांसक-नैयायिक-वैशेषिक—( आर्यदे-  
 शीय मतमतांतर—)मुसलमान-और-इशाइयोंके  
 धर्मपुस्तकका सार—(अनार्यदेशीय मतमतांतर—)  
 काल-स्वभाव-नियति-उद्यम-और-कर्मवादी-  
 का बर्नन-ज्ञानाचरणीय वगेरा आठतरहके क-  
 मोंका बयान-चौदहवाक्यरत्न, .... ..  
 ६—भकसीतीथके मेनेजर-भाउसाहबके सवाल्लोका-  
 जवाब—( कलंकीका बयान-और क्षयवृद्धि-  
 थिका निर्णय. )— } ७९७-८०३  
 ७—जैनका संक्षिप्तइतिहास-ग्रंथकी पूर्णता, ८०४-८१२

( तरंग पाचवेका बयान. )

- १-धर्म-अर्थ-काम-और-मोक्ष,.....८१७-८२४  
 ,, जिनप्रतिमाका समवतुरस्नानाप-मूलनायक  
 प्रतिमा अचलरखना-उनकी दृष्टि-दरवजेके  
 कौनसे भागमें रहना ठीक-घरदेरासर  
 की विधि-जिनमंदिरमें घंटानाद-और शिखरपर  
 ध्वजा रखनेके फायदे..... ,,





## Manav Dharma Sanhita.

---

By Vidyasagar-nyaratna Maharaj Santibijoji—a Jain Swetambar Sadhu. The book is full of varied and manifold informations and contains a description of the various sects and their views. Everybody should keep a copy of this work with him. The different subjects treated in this book if studied carefully would undoubtedly win the esteem and approbation of the readers. The other productions of the author published upto date have all been praised by scholars. In fact he has put forward the substance of several *Sashtras* in his work. The paper and printing is neat. Demy 8 vo. of nearly 825 pages. The language is simple enough to be understood by ordinary men. Readers of limited capacity can easily grasp the the subject independently of any help from without. It is also known as *Santa-sudha nidhi* (lit. ocean of nectar of peace). It consist of five parts. The different matters are so interestingly represented that if once begun, the reader can hardly leave aside the book. The following are in brief the principal subjects treated in this work.

The first part contains—an account of a travel—answers to queries of Jatiji Joy Chandraji of Dehli—Criticisms upon Malinambari Muni Dhanbijoyji speaker of three verses of prayer and upon *Swetambariyan-*



*kus* of Dharma Das of Digambar sect—a copy of the *Farman* granted by Akbar the Great to Swetambaracharya Srimat Hira Bijoy Suri—Lecture upon idol worship—answers to questions of Jati Madhav Chandraji of Gualior—Difference between Jainism and Buddhism with origin of Budh Goutam and a short life of Tirthankar Mahavira—Distinction between Swetam-bars and Digambars—Origin of Digambarism—Point of similarity and difference—Solution of their 84 queries—answers to the 16 questions of the Digambar Sravaks of Mooltan and of Mr. Fateh Lalji, a Digambar Sravak of Gwalior—Medical Science—qualifications of a medical practitioner—Art of nursing and looking after the patients—treatment of various diseases e. g. indigestion, blood poisoning, barrenness &c.—rules for preservation of health—treatment of snake bites.

The Second Part contains—Science of nasal breathing—description of the *Yoga Sastra*—enumeration of acts to be done at the presence of *Surya and Chandra Nadi*—*Pranayam*—eight kinds of omers—effects of the throbbing sensation at the different parts of the body and of dreams—vocal knowledge—knowledge of the futurity from the voices of birds, animals and men—effects of an earth-quake—signs which foretell evils to countries, cities & towns—Rise of a comet, falling of a star or meteor—effects of the various red black spots over the body and Palmistry—*Sakunsastra*—knowledge of time.

The third part deals with the duties of human beings—rules for going to the temple of *Jains*—time for hearing *Sastras*—rules for eating and drinking—house cleansing—injury from the use of intoxicating drugs—description of the diver class and creeds—kinds of females—fountain of intelligence—Duties of a Brahmin, a Kshatrya and a Baishya—Total abstinence from intercourse—advice for pregnant women—Account of the Jain sacred place—Sixteen *Sanskar* from Garvadhan to marriage according to Jain Sastra. Copious notes on Jain law of succession according to *Arhan Niti* of Hemacharya—of wills.

The fourth part contains—Astrology—Mantra-viṇayas—Rhetoric—criticism upon the tenets of Dayanand Saraswati—the origin of the present *Vedas*—account of other religious tenets and views of Jain, Bouddha, Sankhya, Joga, Mimansak, Naiyayik, Vaisesik of Arya country and of Mahomedans and Christians of Anarya Country—eight different kinds of *Karmas*—14 *Bakya ratna*—Description of the Kalanki King—answers to question of Bhao Shahib Manager of Makshiji—the cause of increase and decrease of *tithis*—a short history of Jainism.

The fifth part concludes with a description of 4 *Margas* Dharma, Artha, Kam, Moksh (i. e. from religion to final liberation of our souls)—Rules and observances to be performed at the construction of the temples and the consecration of the statue of Gods in them.

( श्रीजिनायनमः )

# [ मानवधर्मसंहिताग्रंथ. ]

—वा—

## [ शांतमुधानिधि.— ]

( मंगलाचरणसमीक्षा, )

( दोहा. )

स्तवी देवअरिहंतकों—जोकलु कीजे काम,  
स्वतः सिद्ध सो होतहै—कहां? विघ्नकों नाम, १

( सवैया, )

आत्मज्ञान प्रकाश बिना—खद्योतसमान भया टिमकारा,  
तापर मान कहा करना—दिनचारगये फिर व्है अंधियारा,  
अतिबल्लभ प्राणप्रिया जगमें—निजस्वारथका सबाहि संसारा,  
चित्तशांतकिये संतोष मिले—कर शांतदसा सुखहोत अपारा, २,

जोशस्त्र देशाटनकरके पृथ्वीमंडलमें नहीफिरा—परायेदेशोंकी  
भाषा नहीसमझा—भूगोलखगोलका ज्ञान और नीतिवाक्य नही  
पढ़ा—बुद्धिमान् उसकों चतराइके बड़े हिस्समें बंचितरहा फरमाते  
हैं, दशाटनमें—देशदेशका चालचलन—व्यवहार—मजहब—विद्या—भाषा  
कारिगरी—तिजारत—तबारीख—पहाड—नदी—नहर—झील—बनास्पति  
जीवजंतु—और मौसिमवगेराका हाल—बखूबी मालूम हो सकता है,  
अगरतुम अनार्यदेशमें अटनकरना चाहतेहो—तो—अैसेप्रबंधमें करो  
कि—धर्मभ्रष्ट—न—बनना पड़े, धर्मका नाशकरके कोईकार्य किया  
जाय—बुद्धिमान् उसकों अज्ज्ञानहीफरमाते, हमेशासे यहबात हो—

( श्रीमद्भागवतम् )

# [ मानवधर्मसंहिताग्रंथ. ]

—या—

## [ शांतसुधानिधि.— ]

( मंमलाचरणसमीक्षा, )

( दोहा. )

स्तवी देवअरिहतको—जोकलु कोजे काम,  
स्वतः सिद्ध सो होतहै—कहां ? विप्रको नाम, १

( सवैया, )

आत्मज्ञान प्रकाश बिना—स्वद्योतसमान भया दिमकारा,  
तापर मान कहा करना—दिनचारगये फिर ज्यै अंधियारा,  
अतिबल्लभ प्राणप्रिया जगमें—निजभारथका सबहि संसारा,  
चित्तशांतकिये संतोष मिले—कर शांतदसा सुखहोत अपारा, २,

जोशस्त्र देशाटनकरके पृथ्वीमंडलमें नहींफिरा—परायेदेशोंकी  
भाषा नहींसमझा—भूगोलखगोलका ज्ञान और नीतिवाक्य नहीं  
पढ़ा—बुद्धिमान् उसको चतराइके बड़े हिस्समें बंचितरहा फरमाते  
हैं, देशाटनमें—देशदेशका चालचलन—व्यवहार—मजहब—विद्या—भाषा  
कारिगरी—तिजारत—तबारीस—पहाड़—नदी—महर—झील—बनास्पति  
जीवजंतु—और मौसिमयोंराका हाल—बसूबी माकूम हो सकता है,  
जगरतम अनार्यदेशमें अटनकरना चाहतेहो—तो—ऐसेमददमें करो  
कि—धर्मप्रदूष—न—जनना पड़े, धर्मका नाशकरके कोइकार्य किया  
जाय—बुद्धिमान् उसको अच्छाबुझाकरमाते, इसीकारण महाकाव्य हो—

तीचली आईकि-आर्योंकी हकुमतमें अनार्य लोग रहतेचलेआये, सबबकि-आर्योंका तकदीर अकसर सदातेज रहा. लेकिन! आज आर्योंकासितारा कमजोरहै-अनार्यदेशीयराजोंकी हकुमतमें आज आर्यलोग-निवासकररहेहै-चक्रवर्तीराजे-अबनहीरहे जिनका पुन्य सर्वत्रछा रहाथा, इसीसे कहाजाता हैकि-सभो दिन एक सरोखे किसीके नही होते, देखतेनहीहो-सवेरकी धूप-श्यामकों-कहां चलीजातीहै?-समझसको तो समझ लो ! जिसकी तकदीरबली उमकी-ततबीर बली-और-जिसकी तकदीर-कमजोर-उमकी ततबीरभी कमजोर,-अच्छा !-अब जो कुछ देशोंकी बात सुनाते है-सुनो, !

पहिले यह बतलाओकि-जिसदेशवालोंके मुखमें मिथ्री और दिलमें जहर हो-वह पसंद है-या-दिलमें मिथ्री-और-मुखमें कटुता ! पसंद है, ( जवाब. ) हमकों-जिसके दिलमें मिथ्री हो वही पसंद होगा, अच्छा ! तो-यह बतलाओकि-जो-लोग-अनाज-धी-और दुग्ध वगेरा खाते है-वह-पसंद है-या-मांस-मदिरा और पनीर ? ( जवाब. ) अनाज खाना पसंद है, अच्छा ! तो-यह बतलादो ! कुर्मीपर बैठके मेजपर खाना पसंद है-या जमीनपर बैठकर ? ( जवाब. )-इसमें हम किसीका पक्ष नही करेगें, जिसकों जैसा योग मिले वैसा करे, हां ! अभक्ष्य भोजन कभी-पसंद न करेगें, अच्छा ! यहभी बतालादोकि-पाजामा-कोट-और-टोपी-पसंदहै या-अंगरखा-धोता-दुपट्टा-और-पघडी ?-( जवाब. ) इसमेंभी वही कहेंगे जिसकों जैसा रुचे-वैसा पहने, लेकिन ! हां ? यह जरूर कहेंगे चालचलन बुरा न चले,

कोशलदेशकी राजधानी अयोध्या-जिसका नाम-विनीता-

नगरी था-रिषभदेव तीर्थकर इसीमें हुवे-और-सबसे पुरानी नगरी भी यही है,-कुरुक्षेत्र-जहां-कौरव पांडव दिल खोलकर लड़े थे, देखकर किसको वीररस नहीं छाजाता ?-हस्तिनापुर-रिषभदेवके वरुतका बसाहुवा बहुतपुराना शहर-लेकिन ! आजकल बिल्कुल बिरान पड़ा है, द्वारिका-पश्चिमसमुद्रका शिंगार-यदुवंशीयोंकी निवासभूमि-आजकल वैसि नहीं रही लेकिन ! जमीनवही है, मालवादेशकी राजधानी उज्जैन-बड़ेबड़े आश्रयोंकी भूमि किसीमें छीपीहुइ नहीं, लंका-जिसका दूसरा नाम सिंहलद्वीप वही है जो सेतुबंधके-ठीकसामने देखने हो, शास्त्रोंमें जो-सोनेकी लंका-लिखी उसका अर्थ-यह नहीं समझनाकि-उसके घरोंकी दिवारमें इंटचूनाभी सोनेका लगाया, असलमें घरघर-सोनेकी कलसियां-और दिवारोंपर सोमहरी चित्रकारो एसीथी जां तीनहिस्से सोनाहो सोना दिखताथा, दारचीनी-कालीमीर्च और-इलायची यहां आजकल ज्यादा होती है, यहांका हाथी चालाकी और मजबूतीमें सबसे बढ़कर देखोगे,

सौराष्ट्रदेशके लोग-धर्मज्ञ-दोलतपंद-और-दिलके दल्लेर किसीमें छीपहुवे नहीं, तीर्थ शत्रुंजय गिरनार इसीदेशके शिंगारहै, बंबइके आम-सबमेंवोंका शिरताज-पीठे और-बजनमें शेरसेंभी अधिक उतरेगें, हिमालयपहाड तरहतरहकी जडीबूटीयोंका भंडार नेवजे-देवदार-भोज पत्र-और-कस्तूरीयामृग-इसीमें होता है, कश्मिरके दुशाले देशोंमें मशहूर-अंग्रेजोंने बहुतसी कलें बनाई लेकिन ! यहतो उनसेंभी न बनपडा, केशर-बादाम-पिस्ते-अंगूर आलूबुखारा-शाहदाना-अखरोट-बेदमुश्क और-कचनार-बगेरा यहां-ज्यादे होता है, मारवाडमें पानीकी कमती-लेकिन-खानपान

उमदा,-कुंकण-कण्टिक-और-मलबारके लोग-सदाचारी मथुरा-  
त्रजके-लालची-पंजाबी आपस्वार्थी-लेकिन !-सिखलोग-योद्धे  
मगधके प्रेमी-गुजरातके दानार-बंगालके विनयवान् और-नेपा-  
लके बड़े सख्त होते हैं.

बनारसकी साडी-अहमदाबादका-कमरुबाब-काठियावाडके घोड़े  
जामनगरके औढ़ने-मारवाडके ऊंट-ढाकाबंगालाकी मलमल-जय-  
पुरकी चित्रकारी-सुरतका किस्बाकाम-अजमेरका गुलाब-जहां-  
सीका केवडा-तीरहुतकी नील-लखनउका कसीदा-और-आग-  
राका पेठा-देशोंमें मशहूर है, दिल्लीआगरा-लखनउ-और-बंगाल  
प्रदेशका-खानपान-बालचाल-पुशाक-अच्छा,-पेवाडके शूरवीर  
विराटके मिलनसार-होतेहैं, मारवाड और पूर्ववाले अपनी ओर-  
तोंकों पर्देमें रखते हैं, मुसल्मानी अमल्दारी जब पुरीतेजीपरथी  
लोगोंको बहुबेटीयोंको अकेली फिरना खौफकी जगहथा-तबसें  
पर्देकी-रसम जारी हुई-वर्तमानमें वह खौफ मिटगया लेकिन ! न  
मालूम ! फिरभी उक्तरसम क्यों नहीं उठादिई जाती, ? पर्देसें  
ओरतोंको देवदर्शन-और शाम्भु श्रवणमें-न्यूनता पहुंचतीहै, अस-  
लपर्दा नेत्रोंका रखना चाहिये, जिसराजाकी रानीयोंका पर्दा  
शास्त्रोंमें सुनते हों-वह-ऐसा नहीं था-जो तुमने जारी कररखाहै?  
दूसरे तुम-राजेलोग नहीं-जो उनकी बराबरी करो, बरादरीके  
लोग-एकठे होकर जिसबातको घटाना बढ़ाना चाहे-तो हो सकता  
है, कलिंग भोट-आभीर-गौड-द्रवीड-सुरसेन-सिंध-तैलंग-वत्स  
मैवात-गंधार-कच्छ-कामरूप-बम्बर-और वैदर्भ-बगेरा देशोंकी  
अलग अलग रसम कहांतक लिखे ? जिसदेशमें जो कोई रहता  
है उसकेलिये वहीवर्ताव अच्छामालूम देगा,

इंग्लंड-अमरिका-रुस-फ्रांस-और-जर्मनी-आजकल सभ्यता और-इशाइ मतके जोरशोरमें अबल मोरचेपर खड़े है, छंडन-न्यु-यॉर्क-सैन्यपिटर्सबर्ग-और-पेकिन-अलबते ! बड़ेशहर है, लेकिन ! फ्रांसकी राजधानी पेरिसनगर अपनीकतावजा और-सुंदरतामें सबमें निराला है, चीनदेशकी जमीन उपजाऊ-चायकी पैदाश ज्यादा-रेशमी कपड़े देशोंमें मशहूर-कापूरकेपेड़ चीनहीमें देखोगे, हाथीदांत कचकड़ेके खिलौने-और-चीनीके बर्तन-यहांसे देशोंमें जाते है, कस्तूरीयेहिरन-शालकी बकरी-और-जंगली गधे-तिब्बतमें देखोगे, एशियाइम्समें हजार बरसोंके पुराने जानवरोंकी लाशें बर्फके तलेमें निकलती है, जापानदेशके लोग घोड़ेकी लगाम हाथों लेना बड़ेजती समयते है, इसीलिये सवारहोंतबरत लगाम नोकरोंके हाथमें रहती है, अफगानिस्तानमें मेवेंकी पैदाश ज्यादा राजधानी काबुल तिनजारतके लिये अबलदर्जेपर, बलूचिस्तान और हिरात अलग अलग मुल्क-लेकिन ! पश्चिमहिरातको खुरासान कहदो कोइहर्जकीबात नहीं, मोनाचांदी-लसनिया-छाजवर्द-सीसा लोहा-मुरमा-हरनाल-फिटकरी-और-गंधक बगेरा-यहांकी खानोंमें निकलते है, अरबस्तानमें पानी-कम-बिल्कुल रेगिस्तान है, लेकिन ! घोड़ा यहांका तमाम देशोंमें मशहूर-उंट-और-गधाभी वहां अच्छा होता है, गधेकी सवारीसें वहांवाले षेब नहीं गिनते, बल्किन् ! बड़ेचावसें चढ़ते है, देशदेशका चलन व्यवहार सुनोतो पार नहीं, कहांतक कोइ लिखे !-लेकिन ! हां ! जबतुम खुददेशाटन जाओ तो इतनाजरूर लिखलिया करोकि-वहांपर बड़ा-शहर कौनसा है ?-विद्याका प्रचार कैसा देखा ?-मशहूर चीजे कौनकौनसी देखी ?-आबहवा कैसी मलूम हुई ?-कितने आद-



मीकी आबादी-और-व्यापारकी तेजी कैसी है ?-राजा-मंत्री-ज्योतिषी-वैद्य-हाथी-घोड़े-गवैये-साजंदे-नदी-सरोवर-बाग-बगीचे-कोटकिला-प्राचीनशिलालेख-देवालय-पाठशाला-और बाजारकी रजामक-कैसी है ?-पनेवार उसका वयान लिखलो, कइतरहके संसारी फायदे होंगे,

जवाहिरातमें ( १ ) मानक-सबरनोंका शिरताजहै बम्हा श्याम-काबुल-लंका-और-रुसकी अमल्दारीमें यह पैदा होता है, [२] हीरा-जिसका नाम शास्त्रोंमें वज्ररत्न लिखा यहभी सबरनोंमें प्रधान रत्न है, इरान-केंप-निजामकी राजधानी कीस्नानदी-और झरना परनावगेरामें पैदा होता है, (३)-पंजा-जिसका नाम शास्त्रोंमें वैदूर्यरत्न-कहा-मिश्र-अमरका-मरगज-इरान--और-रुसमें उत्पन्न होता है, (४)-मोती-वेहरन-जददा-मस्कद-लंका-तूत-खाडी-दरभंगा-ठाका-और-चूनाखाडी बंगरामें पैदा होतेहै, बडेसे बडा मोती-आजकल आवले प्रमाण मिलेगा, (५) मूंगा-समुद्रकिनारे और इंग्लंडकी जमीनमें उत्पन्न होता है, (६) गामेदकरत्न लंका-और-बम्हामें-(७)-लसनिया-जिसकानाम शास्त्रोंमें-ककैत-नरत्न लिखा-लंका-और-बम्हामें निकलता है, (८) निलम-इयामके मुल्कमें-बम्हा-और-कज्जिरकी अमल्दारी कुलुपहाडमें पैदा होता है, (९)-पुस्तराज-लंका-और-बम्हामें-(१०) पीरोजा-निशापुर-आरकजह-और इजिप्तमें-पैदा होता है, ( ११ ) लाल रत्न-रूम बम्हा-लंका-और-निजामकी अमल्दारीमें निकलता है, अकीक-खंभातके पास-और-तामडा-सरवाडमें पैदा होता है, शंगेसमपथ्थर सफेद और हरेरंगका-लाजवर्द-आत्मानी-और बिछोर-सफेद-होता है,-

सिंह-व्याघ्र-हाथी-घोड़े-गधे-डंटे-खच्चर-गौ-भैंस-बकरी-कुत्ते  
रीछ-सूवर-हिरन-रौस-गाँदड़-खरगोस-बंदर-नेवला-बिल्ली-साँप  
गिर्गट-चकोर-तीतर-बटेर-मुर्ग-सारस-बुगला-चीड़िया-तोता-मेंना  
मोर-कोयल-पपीहा-याज-शिकरा-पील-कच्चा-कबूतर-वीछू-म-  
खखी और मच्छर-बगेरा जीवजंतु-सब देशमें होते हैं, लेकिन !  
हां ! किमीदेशमें ज्यादा-किमीमें कम, कइ देशकी ताहसीर सर्द  
और कइकी गर्म-होती है,-विद्या और-धनमें-भारतमध्यखंड-स-  
बसें अवलदजेंपर रहता चला आया, दूसरे देशके बेपारी इसदे-  
शकी आशालगाये एकही सफरमें जन्मभरका दरिद्र दूरकर जातेथे,  
कौनसी ऐसी अधिक उपयोगी चीज है-जो-इस देशमें-न-होती  
हो ?-भापा सुनो तो-गुजरातमें गुजराती-बंगालमें बंगाला-पंजा-  
बमें पंजाबी-कश्मीरमें कश्मीरी-तिरहुतमें मैथिली-सिंधमें सिंधी  
राजपुतानमें देशवाली-कर्णाटकमें कर्णाटकी-तिलंगमें तैलंगी-महा-  
राष्ट्रमें महाराठी-और द्राविडमें द्राविडी-बंगाल तरहरहको मिलेगी.  
एक कविने (१०) देशकी भाषा-एकही काव्यमें दर्सा दिइ है-सुनिये !

( स्वयरावृत्तम्. )

प्राणार्थीशोगतोमे-बहुरिनबगदे-इयुंकरु ? रे ! हवेहुं ?  
माचेकम्मोर्चीगोष्ठी-हिवकुणसुणसी-गांठधेंलोनदी छे,  
मारे तीरां सुणोरा-खरच बहुत है-इहरां टावरां रो,  
दीष्टी तेंडेदिलोंदी-इशकइलफतें-होतवो वीचनाडु, १

जानना चाहिये-इस जमीनका एकछत्र राज्यकरनेवाला क-  
भीतो चक्रवर्त्ती हुवा, कभी वासुदेव-महामंडलीक-और-कभी-मं-  
डलीकराजा-इस तरह अनेक मालिक हो चुके, चारचार दिनकी  
हकुमत-कर सबचले गये-किसीका इरादा पुरा नहीं हुवा, जहां

जवाहिरातके ढ़ैर लगतेथे. वहां कभी कंकरभी देखे गये--किसकी तारीफ--और--किसकी बेइज़्ज़ती कहे ?--जिसमूलकमें तिजारत कम हो--वहां--रवंचकभी कम रहेगी, बड़े शहरोंमें अक्सर हरबातका सुख रहता है, लेकिन ! गांवके लोग शहरका रहना कभी पसंद न--करेंगे, पहाड़ीलोग--पहाडमें--जंगली जंगलमें--और--मेंदानके मेंदानमेंही राजी रहेंगे, कइ नदीयां ऐसी देखोगे--जिसमें बाराह-महिने जल भरारहता है और कइ चार महिनेभी खजानेमें जल नहीं रखती, कइ एसी हैं. जिसमें पूरीबालू रेतभी--नहीं--और--किसी-किसीमें झलाझलसोना निकलता है, इसीसे कहागयाकि-देशाटन करनेहीसे सबमाहीतगारी मिलेगी, आजकल बंबइ-कलकत्ता-दोनों बडेशहर--भारतमध्यखंडमें-आवादी--व्यापार--और--रवंचककेलिये पूरीतेजीपर है, जींदगीके जरूरी और आराम दोनोंतरहके अस-बाव--यहां मिल सकते हैं, सबकिस्मके कारीगर यहांपर मौजूद नगरकी शेरकरनाचाहोतो विनासवारी नहोसकेगी, कहांतक कोई पैदल चले-?-बडेशहरोंमें यहीतां बड़ीबातेहैं, इमीसे कहागया कि-देशाटन करनेसे सबतरहकी माहीतगारी मिल सकेंगी.

कइलोग कहेंगे मुनिजनोंको ऐसीऐसी बातें लिखना क्या जरूरतथी ?--( जवाब. ) ग्रंथमें सभरिस बयान किये जाते हैं, बुद्धिकी कचाइसे कोई न समझे तो उसके लिये क्या कहाजाय ? शास्त्रोंमें विधिवाद--चरितानुवाद--और--यथास्थितवाद--जहांजैसा मुनासिबहुवा बयान किया जाता है, बुद्धिमान जानतेसब-लेकिन! वर्ताव उसीका रखते हैं जो मुनासिब हो. सज्जन लोग गुन और दुर्जन अवगुन लेंयेंगे--ग्रंथकर्त्ताको लाजिमहै किसीका पक्ष-न-करे, जां बात जैसीहो--वैसी--लिख देवे, उपादेयको उपादेय-

त्यागनेयोग्यकों हेय—और—उपेक्षाकरने योग्यकों उपेक्षणांय लिखे,

( १ ) ~~हुआ~~ आदमी जब जन्मता है शिवाय पुण्यपापके और कुछ साथ नहीं लाता, जीवनका फल यही है कि—दुनिया में आकर कुछ करनी करे. मनुष्य जन्म बारबार नहीं, पूर्वजन्ममें पुण्य किया था तो नरदेह मिला, जिस जमाने में जो चीज आरामकी मिले मवलांग जमा करते हैं, कोई ऐसा नहीं देखा जो आरामकों न चाहता हो, अच्छे शहर में उमदा मकान बनाकर रहना कौन नहीं चाहते ?—शीश-महेल और मजेहुवे कमरे किसकों नापमंद होते हैं,—बाग बगीचे फुलवारी और गर्मीयों में हवादार मकान किसकों नागवार गुजरेंगे ? मर्दों को खूब मुरत औरत-और-औरतों को खूब भुरत मर्द-हमेशा से पसंद होते चले आये, ईतर फुलेल फुलों की संज-और उमदा गहने सबकों प्यार लगते हैं. रेशमी पुशाक शालदुशाले और गर्मीयों में वारीक वस्त्र किसकों लिये नापसंद हो सकते हैं ? ताजी मीठाई और तुर्की यनी रसोई किसकों अच्छी नहीं लगती ?—मव चाहते हैं कि—हम-खुशमिजाज रहे और आराम हम मिल करे, लेकिन ! याद रखो !! जब तुमारे घर खुशीके नकारे बजे में मव हाजिर रहेंगे जवरंज तब कोई नहीं, ई भीसे कहा जाता है सब मतलबके शायी है, धन दालत मिथ्या—और—संसार जानदार है, ई में कोई कायम नहीं रहा, जो शख्स ज्ञानीके कहने मुआफिक चलेगा चैन उठायगा और बड़ा नाम पायगा, मुलाहिजा करलो कि—यह बात सच है—या जूठ ?

( २ ) धर्मात्मा—रहे मदिल—परोपकारी और दलर होना सबके लिये लाजिम है, यह मीठीका पुतला नमालूम कि मरौज मीठों में मिल जायगा ?—यह खयाल अपने दिल में जलदी उठा लो कि—हम-कुछ चीज है, मन लगाकर कहो ! तुमने पुन्य कितना और पाप कि-

तना किया ? अगर पुन्य कर्मकिया है तो उसके बढानेकी खायेस क्यों छाँट बैठे हो ? जैसे ख्वाबमें तुम तरहतरहके कौतुक देखते हो संसार उसीका नमुनाहै, ईसमें आकर धर्मकरना मारतत्व है, हीरेकी बराबरी काच नहीं करसकता सुन्नेके सामने पीतल-और-चंदनकेसामने नींव जैसे कुछ चीजनहीं, संसार धर्मके आगे कुछ चीज नहीं, शास्त्रकीबातें सुनकर जो तुम हंसदेतेहो बड़ीभूल है, जवतुम मुमाफराकों चलतेहो साथमें औरतकों-दोस्तकों-और-नोकरचाकरकों जरुरलेजातेहो. तरहतरहके मेंवेमीठाई ईतरफुलेल-बिछोना-पंखा-छाता-और कई किस्मकीदवाओंसें भराहुवा-दवा-खानाभी साथ लेतेहो, उमदागाडीमें सवार होकर चलते हुवेभी जव भूखलगतीहै ईमजसें खातेहो मानो ! घरमें बैठकरखानाखारहेहै, यहमवधर्मरूपो कल्पवृक्षके फल है,-लेकिन ! ईतनाहरवखनयादर-खा-परलोककेलियेभी कुछबंदोबस्त करना चाहिये,


( ३ )-धर्मकोबदौलत मुखपाया-औरपाओगे,-अगर कहा जायकि-हम-धर्मधुर्म-नहीं मानते, आपही बनलाईये ! ईमकेहोनेमें सबुताही क्या है ?-( जवाब. ) मुनिये ! अगर धर्म नहीं है-तो-बतलाओ ! एकसुखी-एक दुखी क्यों नजरआते हैं ?-मव एक साही क्योंनहीं ? अगर कहाजाय पैदाकरनेवालेकी मरजी ऐसी-हीथी-तो-बतलाओ ! उसमें सबव क्या ! असलमें ईश्वर किभीका भलाबुरा नहींकरता, तुमारे कियेहुवेकमानुसार फल मिलताहै, ना-हक ! ईश्वरकों दोषदेतेहो, एक ईश्वरवादी एक शहरमें घूमनेकों जारहा था- सामने एकहाथी चलाआताथा-और उसपर बैठाहुवा महावत दूरसें पुकारताथाकि-हटो-हटो !-मगर ईश्वरवादी नहींहटा कहनेलगा जाईश्वर चाहताहै-वहीहोताहै, महावतनै कहा ईनबातों-

कौतो छोड़दो, और हटजाओ, ईश्वरवादी कहनेलगा हाथीमें ईश्वरकी बेसीही प्रेरणाहोगी तो तुजेक्या मालूम ! महावतबोला मेरेमेंभी ईश्वरकी प्रेरणा क्योंनहीमानते ? वह प्रेरणाकहरहीहैकि-हटो ! ईश्वरकी एकप्रेरणा तुमकोंमारना चाहतीहै एक बचाना ? तुमकों कौनवात मंजूरहै ?—ईश्वरवादी शर्मादा होकरहटगया. औरसमझगया कि—अपनेअपने कर्मही सबमें प्रधान है, न ईश्वर किसीकों मारे—न जीलावे, करांडयत्न करो कियेहुवेकर्म भोगेविद्वान नही छुटते,—

(४)—संसारमें दौलतमंद गंजहे लेकिन बुद्धिमानोंका गंज नही, ज्ञानके सामने-दौलत कमजोर—और जहां ज्ञान वहां दौलत कम-यह्वात किमीमें छीपी नही. ज्ञान और दौलतका वादानु-वादभी दौंचकाहै, रुपये पैसेपरभी हफोंकी महोरहोगी तभी चल-सकते हैं सवुतहुवा लक्ष्मीपरभी ज्ञानका प्रभाव छाया है, लक्ष्मी खर्चकरनेपर कम होजायगी ज्ञान कम नहोगा. तीनलोक और चौ-दहभुवनमें फिगाहुवाजीव-दौलतमंदकों नही पुछने जानाकि—मेरे किस्मतमें क्यालिखाहै ? जैसे सिंहकी बराबरी मियार—और—हंसकी बराबरी कौवा नहीकरसकता—ज्ञानकी तुलना दौलत नही करसकती, जितनी लियाकत ज्ञानसे टामिलहोतीहै. दौलतमें कभी नही होती, तुमकों जब बड़ा ओहदा मिले मौच समझकर चलो, और दिलमें रहेम रखो,—एकशख्सकों बड़ा ओहदा मिला तब उसके दोस्तने सौचा मुजे कुछ इसमें फायदाहोगा, बड़ी उमेदसें इसके घर गया. उधर ओहदेदारके चश्मे पहिलेही बद-लेहुवेथे—पहुंचतेही उसने पुछा—तू—कौन है ?—और क्यों आया ? दोस्तने कहा—खूब हुआ ! अब पहिचाननाभी गया, बहदिन भूल गया ! जो खानेकोभी तंगथा—और—सैंकडोंदफे हाथजोडे थे ?

बस ! इतना कहकर दोस्त चला गया, अच्छेलोगोंका यह काम नहीं कि. ओहदामीलनेपर गर्मीमें आजाय-और-दोस्तकों भूल जाय. नफा-नुक़्शान-तकलीफ़-और आराम-सबकों लगेहुवेहै, अपनी तरकीमें दूसरोंपर रहेमरखना सबकों मुनासिब है,

(५)-यह बात बहुत ठीक है कि-ओछे लोग-दोस्तकोभी दगादिये बिदून नहीं रहते, लेकिन ! अपने जीमें इस बातका अचरीज मत-लाओ कि-इसने ऐसा क्यों किया ?-जिसका जैसा स्वभाव होगा मुश्किलसें छुटेगा, असलमें दगाबाजोंने अपनी उमर बेफायदे ग-वाइ, जैसे ओछेजलकी मछली-उछलने लगती है-छोटे आदमी अमीरीपाकर उछलतेहै, लेकिन ! तुम सुजानहो ! छोटेकी सोब-तसे छोटा इरादा क्यों कियेहुवेहो ?-यह बात सचचै कि-कौवेके गलेमें मोतीयोंकी माला नहीं सोहती लेकिन ! क्या कहा जाय !! जमानेकी खूबीही ऐसी है, सिंह अगर सात उपवास करे तोभी उसको देखकर कोई भरुसा नहीं लाता कि-समताधारी बन गया, दगाबाज कितनाही शांतबने लेकिन ! उसका भरुसा नहीं आता. यह एक स्वाभाविक नियम है, एक वक्रजड शिष्यकों गुरुने फर-माया-तुं-हमेशासें उलटे रस्ते चलता आया-अब तो-समझकर चल, और-ऐसे कर्म-मतकर जिससें नरके कुंडमें जा पड़े, शिष्य बोला, महाराज ! रास्ता दिखलानेको आपही चलेगें जब ठीक होगा-मैं नहीं जानता हूं-रास्ता किस तरफ है ?-और यह भी कृपाकरके बत-लाइये कि यह-जो-हमेशा भूख लगती है-न-लगे, रोजका झगडा मिठ जाय, गुरुने कहा एसीही कुतर्कोंसें तेरी अकलमंदी झलक रही है, हमेशा ऐसीही तर्क कियेकर-इसमें तेरी तारीफ बढेगी,-

(६)-[  रसिक-और-दोस्तोंका संवाद. ]-एक दफे

रसिक-अपने दोस्तोंसे कहने लगे-एक बात मुझे तुम लोगोसे कहना है, दोस्त बोलें ! कहिए ! वह क्या है, ?

रसिक-प्रेम किसीसे मत करना,

दोस्त-खुब कहा !-नहीं करेंगे तो काम कैसे चलेगा ?

रसिक-खैर ! परदेशीसे तो कभी मत करना,

दोस्त-कभी परदेशीसे ही-होगया-तो ?

रसिक-खैर ! फिर उससे बिगाड मत करना अच्छे आद-

मीयोंका काम है,-दोस्तीमे सदा एक समान रहना,

दोस्त-कभी बिगाड हो जाय तो ?

रसिक-रुबरु मिलकर माफी मांगना-या-पत्रद्वारा अपनी भूल

मंजूर करना,

दोस्त-अगर वह न माने-तो,-?

रसिक-दोस्तानेकी गुजरी हुई बात-बिगाडमें दूसरोंके सामने

जाहिर मत करना और-सच्चे दिलसे उनके साथ बर्ताव

रखना मोहब्बत फिर शुरू होगी-मित्रतामें निरभिमान-

और-द्वेषरहित बर्ताव रखनेहीसे सबकाम ठीक होत है,

( ७ )-जो-मनुष्य-तुमारे साथ नहीं बोलता-और-तुमारा मन

उससे प्रीतिकरना चाहता है, बस ! तुम उसमें प्रीतिकी भावना करो,

जरूर आपसे प्रीति करने लगेगा, जिसमनुष्यका दूरदेशमें होनेसे

पता मालूम नहीं देता उसपर ध्यान करनेसे-वह-जरूर आजाता है,

ईसका निश्चय उसीसे होसकता है कि-तुमको घर आनेकी कब ईच्छा

हुई थी-?-तो-वह-वही समय बतलायगा जबसे तुमारा खयाल उस-

पर हुआ था, दूसरा प्रमाण यह है कि जब किसी स्नेहीका दूरदेशमें अं-

तकाल होजाता है और समाचारभी अबतक नहीं आये है-उससे प-



हिलेही स्नेहीके मनमें रंज पैदा होजाताहै, इसमें मालूमहुवाकि-जिसपर मोहब्बत हो-उसपर मनमनका आकर्षक यंत्र जरूर लगा रहताहै, लेकिन ! पूर्वभवका तुमारे और उनके संबंध होगा-या-नया संबंधलगना ज्ञानीयोंने देखाहोगा-तभी बनावबनेगा, नहीतो हर्गिज न बनेगा, अगर एकपक्षीराग होगातो एकका राग-और-दूसरेको कुछ खयाल नही, मनमें दुर्ध्यानरखनेसे अशुभकर्मोंका बंधहोताहै, ईसलियेहरवस्तुतमनको साफ रखना चाहिये, जिसको तुमचाहतेहो वह दुसरेसे खुशहै-और-जिसपर तुमनाखुशहो वहतु-मारेपर खुशहै, जिनसे तुममिलनाचाहतेहो-वें-दुसरोसे मिलतेहै-और-जिनसे तुम अलगरहना चाहते-हो-वें खुद, आनकर मिलते-है, क्याकहाजाय ! संसारकी यहीस्थितिहै, यहबात कभी मतभूलो-किस्मतकी बात कोईमिटा नही सकता, याद रखो ! एकदिन दे-शनगर राज-रैयत-अपने-पराये-सबको छोडनाहै;

(८)-हरेकचीजमेंसे समयसमयपर परमाणु निकमतेरहतेहै, कई चीजें ऐसीहैकि हाथमें रखकर कुछदौरतक स्पर्शकरोतो शरीरमें उसकाअसर पहुंचजाताहै, बर्फको हाथमें रखोतो ठंडकेमारे हाथ-कांपनेलगतेहै, पांवके तलवोंमें लेंपकरनेसे मस्तकमें असर पहुंच-ताहै, गुलाबचमेलीवगेराके फुलोंकी जोखुशबू आती है असलमें उनकेपरमाणु नाशिकामें जालगतेहै, शरीर-जवान-नाक और-कान प्राप्यकारी, मन-और-चक्षु-अप्राप्यकारीहै, रागभावसे जिमके शरीरपर स्पर्शकियाजाय उससे उसकोखुशी पैदाहोतीहै, जैसेकि-घोडेके शरीरपर कोई मोहब्बतसें थापदे-तो-वहखुशहोकर इनइना-ताहै वैसे औरोंकाभी हाल जानना चाहिये-सांप-और-विंचूकेस्पर्शसे जो तकलीफहोतीहै-सबब-उनके परमाणु जहरीलेहै, जवान-

पर-कोईचीज रखो-या-नाकसें-मुँधो-तुर्च उसके आठ स्पर्शी पर-  
माणुं-स्पर्शहोकर असर करतेहैं, कोईशस्त्र अंधेरेमें बैठाहो-शिवाय  
चुपचापके औरकुच्छ वहाँपरनहींहै उसवस्तु अगर वहाँकोईस्त्री-  
आजाय-और-उसके गहनेकी अबाज कानोंमें सुनाईदे-तो-मालूम  
होजाताहै कोईस्त्री यहां-आरहीहै, कानोंमें आठस्पर्शीपरमाणुलग-  
नेहींसैं यह मालूम हुवा, ज्ञानावरणीयवगेराआठकर्म-मन-वचनके-  
योग-और-कार्माणशरीर-इनके परमाणुं चारस्पर्शीहोतहै-शब्द-  
अंधकार उद्योत-धूप-छांव-और-प्रभाके-परमाणु-आठस्पर्शी होतेहैं,  
चारस्पर्शी परमाणुं इंद्रियगोचर नहीं होसकते, आठस्पर्शी-  
होसकतहैं, आरीसेमें अपना मुखदेखनेवाला-शस्त्र-आरीसेंकों  
औरउसपर पड़े हुवे-अपनेशरीरके आठस्पर्शी परमाणुंकों देख-  
ताहै,-फोटोग्राफकी-तस्वीरभी शरीरसें निकसेंहुवे आठस्पर्शीपर-  
माणुका एकसमुहहै, तारमें जो समाचार दिये जातेहैं-वें भी-आठ  
स्पर्शी परमाणुके खुटकेद्वारा जो संज्ञाबांधरखीहै, उसकों समझकर  
पिनसलद्वारा लिखदिये जातेहैं, रैलका प्रबंधभी-जल और अग्नि  
केसंयोगद्वारा है.

(९)-तुमको अखबार पढ़नेका शौकहै-तोकिइलेख देखेहोगें  
सोवर्ष पहिले दुनियामेंरैल नहींथी-न-तारथा, इस्वीसन (१८१८)  
में पहिलपहिली विलायतमें रैल जारी हुई, फ्रांसमें-सन (१८३८)  
चली, अमरिकामें (१८३८) में जर्मनीमें (१८३५) में-रुसमें  
(१८३८)-स्पेनमें-(१८४१)-भारतमध्यखंडमें(१८५२)-और-रुसमें  
(१८६८) में-रैल जारी हुई, कुल (१००) वर्षके इधरही इसकी  
शुरुआतहै, शास्त्रोंमें पढ़तेहोकि-पूर्वकालमें आकाशगामी विमान  
विद्याधर लोग चलातेथे सोठीकहै, इस जमानेमें विद्याधरलोग

रहे नहीं-न-वैसाधन-विद्या-और-पुन्यवानी रही. जैसा-समय वैसी-सामग्री रह गई, इसवस्तुतः जानेआनेके लिये रैलहीका साधन उमदा समझ लो. यह स्वाभाविकनियमहै कि-जिस जमानेमें जिसकी बराबरी दूसरी चीज नहो-उसवस्तुतः वही उमदा गिनना चाहिये,

(१०)-एकगुरुकों तीन शिष्य थे,-लेकिन !उनमें कौन कैसा है उसका इम्तिहान लेनेकेलिये-एकएककों अलगबुलाकर कहा, मुझे आम्रफल खानेकी इच्छा हुई है,-शिष्य-नाकमें बलढालकर कहने लगा-आपकी बुद्धि आजकल किसहालमेंहै ?-गुरुकों कुछ इच्छा तो-थी नहीं-फक्त उसका इम्तिहानलेनाथा-सो-होगया, और अपना अभिप्राय उसकों विदित नहो इसलिये कहदिया हां ! आजे मेरी तबीयत कुछ ऐसीही है. जाओ ! दूसरेकों भेजदो-उसने दूसरेकों भेजा, गुरुने उसेभी यही बात कही, उसने कहा, ठीकहै-सौचकर-जवाब दुंगा, इसकोंभी कुछ योग्य-और कुछ अयोग्य जानलिया, और कहा ! जाओ ! ! तीसरेकों भेजदो, तीसरा आया-गुरुने उसेभी यहीबात कही, शिष्यने कहा ! बहुत अच्छा ! लाता हूं,-गुरुने इसीकों योग्य समझा, बतलाओ ! तुमकों कैसा बननाहै-सौचकर जवाब दो ?

(१३)-कुसंग-और-सत्संगपर एक कविका वचन सुनो,

## [ सवैया. ]

बिगरे पय कांजीकीछींट पढ़ें-कलधौत कुधातपढ़ें बिगरे,  
बिगरे कुलजात कलंक लगे-तृपराज अनीतकिये बिगरे,  
बिगरे तपपुंजकषाय चढ़े-पद ऊंच कुसंगतसँ बिगरे,  
बिगरे हितमित्र जहांछलहै-शुभधर्म मृषामतसँ बिगरे,

सुधरे षष्ठ पंडितसंगतसें-अविनीत कलाधरसें सुधरे,  
 सुधरे मिलपारस लोहसही-और ताम्र रसायनसें सुधरे,  
 सुधरे विषऔषध वैदनसें-मलयागिरिसें बरवा सुधरे,  
 सुधरे अघहिंसक साधुयकी-भवकोटि अगाधतपें सुधरे, २,

## [ घमंडकरना बुराहै, ]

मान ! रे ! मानव ! मानबुरो-प्रतिमान-गुमान-न-मान-न-नीकों,  
 मानकिये अपमान लहे-न विमानलहे बरदेवपुरीकों,  
 मान मीटे सन्मान बढे-परमान करो शुभवाक्य मुनिकों,  
 मानसजन्म समान नहीकछु-धर्म समान नही और नीकों, ३,

(१४)-विना चीज लड़ाईलडे-वहभी-एक मूर्खोंका शिरता-  
 जहै, एक शरूश-अपनी औरतसें कहनेलगा-कलरौज-मैं-एकभेंस  
 लाउगा औरतनेकहा बहुतठीक ! मलाई-मैं-खाउंगी, मर्द बोला-  
 मलाई तुजे नही मिलेगी, मेरेलिये मलाई और तेरे लीये-कोरादुध-  
 दुंगा, बस ! ईसपर खूब जिद हुईयहांतककि-लड़ाई होगई-और-  
 दूसरोंने आनकर फैसलाकिया, हरेकशरूशकों मुनासिबहै नाहक  
 लड़ाई नलडे, एकशरूश अपनी औरतकों-सुसरालसें लेकर अपने  
 गांव आताथा, रास्तेमे एक नदी आई, औरतनेकहा मेरेपांवमें रंग  
 था, नदीके जलसें उतर जायगा, इसका क्या करना ?-पतिने कहा  
 तेरेपांवकों जलसें कुछ उंचे रखकर इसतरकीबसें घसीटकर ले  
 जाउगाकि-रंग-न-बिगडेगा, औरतने कहा-मेरी जान जायगी,  
 मर्द बोला-जानजाओतो क्याहर्ज है ? लेकिन ! रंग-तो-रहेगा,  
 देखिये ! जैसेभी मूर्ख दुनियामें है-जो-औरतकी जान गमानेकों  
 आमादा हुवे-परंतु रंगगमाना नही चाहा, औरतने पतिका बेहु  
 दापन देखकर आप पांवोंसें चलकर पारहोगई और रंगकी कुछ

परवाह नहीं किइ, मूर्खोंकी लीलापर खयाल नहीं करना और अपनी जानकों बचाना चाहिये,

(१५)-जितनेदोस्त तुमने किये-या-करतेहो सब तुमसे अपना मतलब निकाल लेतेहै-और यश नहीं देते, इसीसे कहाजाता हैकि-सौचसमझकर दोस्त बनाओ, तुमारा मन हजारहतरहके सोच फिकरमें हमेशा लगा रहता है-कभीपारनहीं पाते, इसका उपाव सुनोतो हम बतलावे-असल इसका यही उपाव हैकि-गइ वस्तुका सोच मतकरो और वर्त्तमानमें खयालरखकर बर्त्तो, इसीसे सबकाम ठीक होगा, दुसरेके औरत देखकर तुम अपना मन लो-भातेहो, सौचो ! इससे क्याफायदा मिलेगा ? जो चीज अपनी नहीं उससे मन लोभाना बेकारहै, जहांसे बहुत फायदा होनेकी उमेदथी-वहां थोडाहुवा-तो-उसीमें सबरकरनामुनासिब है, नफा-नुकशान अपनी तकदीरके तालुक है, तुमारे भाइयोंसे तुमको ह-मेशा तकली रहती है लेकिन ! क्या कहा जाय ! तुम लाइकवर हो गम स्याओ, तुमने अपने कुटुंबकी बहुत पाछनाकिइ-और कर-तेभी हो-लेकिन ! उनलोगोंका मन तुमसे राजी नहीं, यही तो जमानेकी खुबीहै, नयामकान बनानेका कइदिनोंसे तुम इरादा क-रतेहो-लेकिन ! अब उस इरादेको छोडदो, मकान बहुतहै, जरू-रतसे ज्यादे बनाना क्या फायदा ?-तुमारी औरतसे अलबते ! तुमारामन राजी नहींहै उसका यही उपाव हैकि-नसीयत देतेरहो, और बिद्यापढाओ-आप-लियाकत हासिल करेगी,

(१६)-प्रायःतुम झूठनहीबोलतेहो-यह तुममें बडा गुणहै, ईसी गुणसे तुमारी तरक्की हुइ औरहौगी, धर्मकाममें तुम खर्चभी करते हो-लेकिन ! पीछेसे पस्तातेहो-यहअच्छानहीं, यहखूब यादरखो

दौलत धर्मकी दासी है, तुमकों धन बहुत मिला-छास्रहंरूपये आये गये, लेकिन ! पासमें कुछनहीरहा, ईसका सोच-न-छाओ, स्नायापिया और धर्ममें लगाया यही सार है, जिसकों यहां छोड़ जाना है उससे ज्यादा ममत्व क्यों करना ?-तुमारा काम जब फतेह होने पर आता है दुश्मन लोग विगाड डालते हैं, लेकिन ! ईसमें किसीका दोष नहीं समझो-विगाड सुधार अपनी तकदीर का है, तुम हर वस्तु दिलमें डरते रहते हो-यह-आदत बिल्कुल छोड़ दो, डरनेसे आदमी की बुद्धि मारी जाती है, शास्त्रों का फरमाना है कि-दिल के बहादूरकों सब चीज आन मिलेगी, दुश्मन तुमारे कदम कदम पर खड़े हैं लेकिन ! सामने हुये बाद कुछ नही कर सकते यह तकदीर ही की तारीफ है, तुमारी बुद्धि-अलबते ! बढी तेज है-बिगड़े हुये कार्यकों भी सुधार देते हो-लेकिन ! वस्तु पर-अपने काममें गाफिल रह जाते हो-यह ठीक नही, किसीकी जमानत मत देना तकलीफ पाओगे, अत्यंत प्यारे के लिये देना पड़े-उसका हर्ज नही,-लेकिन ! जमाना बदला हुआ है ईसकों पहिले सौच लेना चाहिये, वकाल तपठकर ऐसामत करना कि-सच गवाहकों झूठा-और-झूठों सचाबना दो, घर का भेद-और-दिल का ईरादा किसीके आगे बयान मत करो, जिसकी सलाह लेना मुनासिब समझो उसके सामने कहना हर्ज नही, अगर तुमसे नयी विद्या पढना नही बन सकता-तो-खैर ! हर वस्तु किसी पुस्तकों वाचते रहो, लेकिन ! ऐसा पुस्तक वाचना ठीक नही जिसमे कुछ समझ ही न पड़े, ग्रंथ-वा-वाचना चाहिये जिससे मनकों आनंद मिले और नयी बात भी हासिल हो, ईस पुस्तकमें कई बातें नही मिलेगी. गौर करके देखते जाओ,-ग्रंथकर्त्ता की तारीफ जब है कि-उसके ग्रंथकों लोग-सुवर्ण के इफों-सें लिखाकर पास रखना चाहे, यह खूब याद रखो ! धर्मकी उत्तम शि-

सा पाये बिना कोई शरुस अपना-या-संसारका-उपकार कभी नहीं करसकता,—

संवत् (१९४७) में-हमारा चातुर्मास-दिल्लीमें हुवा, दिल्लीशहर कइदफे उजाड हुवा और बसा. दशदशकोसकेघेरेमें टूटीफूटी इम्मारतें और मकबरे यहां इतने खडे है जिनको देखते थकजाय, जमनानदी इसके नीचे बहरही है, बागबगीचे-तालाब-दरख्त-नयेनयेमकान-और-बाजार देखने लाइक है, दुकानोंमें तरहतरहके मालअसबाब-कहीं मेंवा नाशपाती-और-कहीं-मिठाइ-वेचनेवाले बेचरहे और लेनेवाले ले रहे है, श्वेतांबर श्रावकोंके घर-यहां (१००)-और-मंदिर (२)-एक नवघरेमें और एक चेलपूरीमें.-हमाराठहरना मालीवाडेमें हुवाथा,

[ इनदिनोंमें-यतिजी-पं-जयचंजजीने-नि-  
मल्लिखितप्रश्न-हमसेपुछे-उनकाजवाब  
इस तरह दियागया.- ]

(प्रश्न पहिला.)-केवलज्ञानी समुद्धात करे-या-नही ? करे तो कितनी दफे करे ?

(जवाब.)-केवली दो तरहके-एक-सर्वज्ञकेवली-दुसरे श्रुतकेवली सर्वज्ञकेवली समुद्धात करे तो एकही दफा करे, जिसमें आठसमयतक दैर लगे, दूसरे श्रुतकेवली-छह समुद्धातमें कोइसीभी एकदफे-या-अनेक दफे करे, जिसमें अंतर्मुहूर्त्तकालदैर लगे,

(प्रश्न दुसरा.)-नवनिदानोंमेंसे कितनेनिदानोंमें धर्मप्राप्ति हो ? और कितनोंमें नही,

(जवाब.)-प्रथमके छह-निदानोंमें धर्मप्राप्ति न होसके-पीछले तीनमें हो.

(प्रश्न तीसरा.)-सामायिक करनेवाला श्रावक-विना गुरु-आज्ञा किसकी लेवे, ?

(जवाब.)-गुरुके अभावमें उनकी स्थापनासें आज्ञा लेवे.

(प्रश्न चौथा.) दीक्षा लेनेवाला मनुष्य-विना गुरु अपनेआप दीक्षा ले सके-या-नही ?

(जवाब.)-न-लेसके, क्योंकि-सर्वविरति चारित्र-विद्यमान गुरुके पासही लेना शास्त्र वचन है, विना गुरु शिष्य किसका बनेगा ? मनकल्पनासें दीक्षा लेना-प्रमाणीक नही.

(प्रश्न पांचवा.) गणधरकों केवलज्ञान होवे-या-नही ?

(जवाब.)-क्यों नही ? केवलज्ञान हुये बादभी गणधरपदवी बनी रहती है,

(प्रश्न छठा) आजकल भारतवर्षमें कितने गुणस्थानवर्ती मनुष्य मिल सके.

(जवाब.)-सातगुणस्थानतक मिलसके, इसके बढकर न मिलेंगे,-

(प्रश्न सातवा.) रिषभदेवकेवरुत-सम्मेतशिखरतीर्थ-था ?

(जवाब.) नही था, उसवरुत-फक्त शत्रुंजय तीर्थही था, पीछें ज्युंज्युं तीर्थकरोंके निर्वाण वगेराहोते गये-तीर्थोंकी स्थापना होती गइ, यह कोई नियम नही कि-सभीतीर्थ-प्रथम तीर्थकरके वरुतही स्थापित हो जाय.

(प्रश्न आठवा.) चतुर्थ गुणस्थानवर्तीकों पंचमगुण स्थानवर्ती-नमस्कार करे-या-नही, ?

(जवाब.) चतुर्थगुणस्थानवर्ती देवता-या-मनुष्य-कोई हो-उसको



पंचम गुणस्थावी श्रावक-स्वधर्मी भ्राता समक्षकर नम-  
स्कार करते तो क्या हर्ज है, ? क्या सम्यक्तथारी देवते  
चतुर्थ गुणस्थानवर्त्ती-श्रावक नहीं है ? अगर है-तो-फिर आपसमे  
नमस्कारकरना कौन हर्जकी बात हुई ?

[ इति प्रश्नोत्तर समाप्त, ]

संवत् (१९२५) में-तपगच्छके-श्रीपूज्यश्रीभरणेंद्रसूरिसैं तक-  
रारकरके-मुनिराजेंद्रविजयजीने-जो-तीनस्तुतिका मत निकाला-  
मुनिधनविजयजी-उन्हींके अनुयायी है, चतुर्थस्तुतिनिर्णयछेदनकु-  
ठारग्रंथ ईन्होंनेही बनायाहै,-मुनिराजेंद्रविजयजीने सर्वविरतिचारित्र  
किसीगुरुके पास नहीं लिया, आपहीआप बिना गुरु किये साधु  
बने, सूरिपदवीभी किसीने नहीं दिई, शास्त्रोंके वचनकों लोपकि-  
या ईससैं निन्हवोंकी पंक्तिमें गिनेगये, पहिलेदिनोंमें जोजो स्तव  
न सम्राथबनायेथे-उनमें कहींकहीं ठाणांगसूत्रवगेराकी-जो-साक्षी  
दिईथी-इंदोरकी सभामें मुनिश्रीशिवेरसागरजीके सामने झूठे पढे,  
और उनपाठोंकों बदलनापडा, फिर कईदिनोंतक ऐसीभी श्रद्धा-  
रहीकि-जीवकों कोईमारताहो उसे छुडाना नही. कहतेथे छुडानेसैं  
पापहोताहै, जब श्रीशिवेरसागरजीने कहाजीवोंपर अनुकंपाकरना  
जिनेद्रोंने कहीं मना नही किया, दानके पांचभेद जहां बर्ननकि-  
येहै अनुकंपादान उनमें सामिल रखाहै, फिर जीवकों बचाना कैसे  
पापका कारण होसकताहै ?-जब लाजबाबहुवे-तब-कबुलहोनापडा,

पहिले कहतेथे साधुलोगोंकों जिनप्रतिमाकी प्रतिष्ठा नहीक-  
राना चाहिये, फिर जब तीनथुईके मतकी दुकानदारी जमी-तब-  
आपही प्रतिष्ठा करने लगे, कहिये ! क्याबात हुई ? जिसमुखसैं ना-  
करना उसीसैं फिर-हां-करना, पहिलेदिनोंमें कहतेथे जिनप्रति-

माकों अंगीरचाना मुनासिबनहीं, राग उत्पन्न होगा, फिर कहने लगेकोईहर्जनही, पहिलेकहतेथे जिनप्रतिमाकी पूजामें साधुलोगों-कों अनुमोदनाकरना ठीक नहीं. क्रिया लगेगी, फिरबोले कोईहर्जनही, पहिलेकहतेथे-जो जो प्रकरणवगेराग्रंथहै-सो-(४५)पेंताली-सआगमसें विरुद्ध है, हम नहींमानेंगे, फिर इंदोरकीसभामें मुनि-श्रीश्वेरासागरजीके सामने जब लाजवाबहुबेकहनेलगे ठीकहै, कहिये ! जिनकों कदमकदमपर संसयशत्रुने घेराहै उनकी श्रद्धाका क्या ईतबारकियाजाय ? जहां पंडितोंकी सभा हो-वहांसें दुमछिपाकर भागना-और-अपने श्रावकोंके सामने सूरि-और-न्यायचक्रवर्ती बनना, कहो ! कैसीबातहै ? इंदोर-और रतलामकी चर्चामें मुनिश्वेरासागरजीके सामने क्यों न हुबे ? असलमें उन्हीदिनोंसें पीलेकपडेवाले मुनियोंसें द्वेषकी जड लगी, और द्वेषके मारे पीतांबरीकहनेलगे,-लेकिन ! यहनहोमालूमकि-निशीथसूत्रके सोलहमेंउद्देशमें गणधरोंने क्याफरमाया है ? क्या ! वहां नहीं लिखाकि-जब साधुलोगोंकों नयाकपडामिले तो ईतनीचीजोंसें उसको रंग लेवे, क्या ! मलीनांबरी मुनिराजेंद्र विजयजी और धनविजयजीने अबतकईसपाठकों नहींदेखा, अगरदेखा है-तो-उस मुआफिक बर्त्ताव क्यों नहींकरते ? मूर्खोंके सामने क्यों नर्द दगाकी खेलते है ? अगर किसीकों शंकाहो-लेख छपवाकर मेरेपास भेजे, मैं-उसकों छापेद्वारा जवाबदुंगा, चीठीमें जवाब देनेसें लोग बदल जाते है,

मलीनांबरी-मुनि-राजेंद्रविजयजी-और-धनविजयजी-श्वेत-वस्त्र धारीयतिश्रीपूज्यवगेरासें ईसलिये नाराजहै कि-उनसेंतो तकरार करके निकले, चंदरौज श्रीपूज्यवनकर छद्मीचवरकी उमेद

पुरी किई,—पुरीभी कहां हुई ? बल्किन् ! जावरमें संवत् (१९२५) की-साल बेईज्जती होनापडा, जब पकडेगये कहनापडा हमतो साधु होगये है ? हमसे और छडीचवरसे क्यामतलबहै ?—पीलेकपडेवा-लोंसे इसलिये नाराजहुवेकि-रतलामकी सभामे-मुनिश्रीश्वेतरसाग-रजीसे हारखाकर भागना पडा अब इन्होंको-मलीनांबरपद मिलाहै, कपडेभी मलीन-और-मनभी मलीन, दोनों तरहके अन्वयकी ई-नमें योग्यताहै, पाठकवर्ग !—आपलोगईनकों श्वेतांबर-दिगंबर-पी-तांबर-रक्तांबर-नवांबर-डिसेंबर-कुच्छ मतकहिये, मलीनांबरही कहा किजिये, ईसीपदके ये लोग लोईकहै,—

चतुर्थस्तुतिनिर्णयछेदनकुठार ग्रंथ बनाकर चाहाकि-हम-अ-पनेमतकी पुष्टिकरे लेकिन ! कुवेकाजलपीछाकुवेमें चलागया, को-इवार्त पार-न-उतरी, भीतरसे कपट और जाहिरातमें दुंदियोंकी तरहदयाधर्मियोंका चांद लेना चाहालेकिन ! सबलोग मूर्ख नहीं है, सबजानेहुवे बैठेहैकि-ये-लोग-देवताके नींदकहै, जहांजाना भो-खेलोगों भ्रममेंडालकर कहना-सम्यक्त-लो, फिर धीरेधीरे तीन-थुईका मत पकडाना, अगर तीनथुई-सत्यहै-तो-क्योंकहतेहो ? तीन-और-चार-दोंनोंबात सत्यहै, अगर चतुर्थस्तुतिभी सचहै-तो-ती-नथुईके हठवादसे क्या सार निकाला ? जिंदगीतक झगडेटंटोंमें फ-सकर आत्मसाधनकों खोया, ईससे तो-यतिअवस्थाहीमें रहकर झूठीप्ररूपनासेबचेरहतेतो ठीकथा, उत्सूत्रभाषणसमान कोईबडापाप नहीं, सबक्रिया धरी रहेगी-उक्तपाप दुर्गतिकों लेजायगा, जमालि-जीने गौतमगणधर जैसी क्रिया किई लेकिन ! देखलो ! किस गतिकों जानापडा ? हरेकशस्त्रकों चाहिये श्रद्धामें अचल रहे,—

“चतुर्थस्तुति निर्णय डेदन कुठार”-यह ग्रंथ बनानेसे मुनि धनविजयजीको एक प्रकारका लाज जरूर हुआ वह जो कृमजी कह सकते है, एक अहमदाबादवाले श्रावकने एक गोधावी नाम निवासी श्रावकको (जोकि-मुनि धनविजयजीका शिष्यायीया) कहा कि-देखो ! आत्मारामजी महाराजने “चतुर्थस्तुति निर्णय ग्रंथ बनाया है इसमे (८३) ग्रंथोंकी साक्षी दीयी है, इसके उत्तरमें त्रिस्तुतिअनुवायी श्रावकने कहा ह्वाये धनविजयजीमहाराजने ग्रंथ बनाया है उसमें [३७५] ग्रंथकी साक्षी दीयी है, बताइये कौनकी तेजी रही ? पाठक मण ! अब कहो यह कैसाक शास्त्रार्थ हुआ ? एकने मुंह खोला दूसरेने फौरन उसको सील दिया, सोचो ! मुनि धनविजयजीको यह कितना लाज है ? कितना क्षिर पचाना कम हो गया. उनके श्रावक ही दूसरेको लाजवाब करनेकी ताकात वाले होगये, परंतु वस्तुतः इसमे कोई सार तत्व न निकला, कुछ बिना संबंधके अधिक ग्रंथोंकी साक्षी देनेमें सत्यता नहीं हो सकती, सत्य युक्ति एकजी हजारें तकोंके लिये बहोत, और हजार कुतर्क एक सत्य युक्तिके लिये जी थोमी है, हम क्या ! सब कोई मनुष्य निःशंसय कह सकते है कि-सूरिराजेधनविजयजीने और उनके शिष्य मुनि धनविजयजीने देवताओंकी आशातना करनेमें सारासर अधिक जोर दिया, अब इस प्रबंधसे निदोष होना चाहे दुर्भिक्ष नहीं होसकते, अपनी मानी हुई बातकी हकमें सब समझता है परंतु अगर वह शास्त्रसे विरुद्ध है तो उसको दोष कर अलग होना, तारिफका काम है.

## २६ श्रीस्तुतिमतानुयायीमुनिधनविजयजीकीतर्ककाउत्तर.

कोई शस्त्र एक जगह किसी बातको अन्यथा कथन करे उसको अनेक जगह अन्यथा बोलना पक्ता है, देखीये! एक चतुर्थस्तुतिके निषेधसे अनेक जगह देवताओंका स्मरण आराधन निषेध करना पक्ता. दीक्षाविधिमें जहां शासन देवताका स्मरण-बैयावृत्तकरादिका कायोत्सर्ग-देवबंदनमें श्रुतदेवता आदिका का-योत्सर्ग-बगेरा सब जगह अपेक्षा हुं हंके अन्य अन्य बातोंका शरण लेना पक्ता, वंदितासूत्रमें-“सम्मदीछीदेवा”-की जगह-सम्मदीछी जीवा,-कहना पक्ता, कितनेक जड़िक श्रावक इसबातसे शंसयवान् हुवे, बतलाईये! क्या लाज हुवा! बस! अपने मनमें सच्ची सच्चे है परंतु ज्ञानीयोंके सामने जो है सोही है.

कितनेक महाशय कहते है गणधर प्रणीत चार स्तुति कौनसी है? होवें तो मान जी लेवे, परंतु यह तर्क कार्यकारी नहीं, गणधरके कथनानुसार जो जो चार स्तुति आचार्योंने रची वे सब गणधरप्रणीत ही है, जैसे जिनेंछोकी कही हुई अर्थरूप बाणी गणधरोंने सूत्ररूपं गुथी परंतु वस्तुतः जिनेंछप्रणीत ही है, कितनेक कहते है पांचमे-ठठे-सातमे आदि गुणस्थानवार्ते श्रावक साधु देवताओंको नमस्कार कैसे करे? उत्तर, श्रावकजन स्वधर्मी वृद्ध श्रावक जानकर देवताको नमस्कार करते है, धर्मक्रियामें साहाय्यकारी जानकर साधुजनो स्मरण आदर बगेरा करते है, सम्यकदृष्टि देवता चतुर्विधसंघके बहार नहीं. संघ\* सबको पूज्य है इस लिये साधुजन जो देवताको गौणतासे नमस्कार करते है

---

\* तीर्थंकर भी श्रुतज्ञानका आधार जानकर और पण्य पूजान्यायको अनुसरके संघको नमस्कार करते है.

ऐसा कहनेमें क्या दोष है ! न कुछ, केवल अपनी अपनी समझका फर्क है, असलमें जो बात सत्य है वह सत्य ही ब्यायी रहेगी.

चतुर्थस्तुति निर्णयवेदनकुठार ग्रंथके [४५९] पृष्ठपर पंक्ति चौथीसें मुनिधनविजयजीनें हमारे संबंधमें निम्न लिखित लेख लिखा है कि—

“आत्मारामजीने कोई प्रकारनी शंका उपजी तेथी धर्मसंग्रह ग्रंथभां पोतानो प्रक्षेप करेलो पाठ तथा यंत्र तेनी प्रतनो लहीआ पासे बीजो उतारो कराववा मेशाणेशी पोताना शिष्य शांतिविजय पासे श्री अमदावाद मोकली. सारे शांतिविजयजीए ते प्रत लहीयाने लखवाने सोंप्या पढी ते लहीयो केटलेक दहामे कोई तेना कामने प्रयोजने अमारी पासे आव्यो. त्यारे अमें तेने पुढ्युं के हमणा तमे थुं लखो ठो ? त्यारे तेणे कहुं के आत्मारामजीनो धर्मसंग्रह लखुं छुं, सारे अमे तेने कहुं के ते प्रत अमारे देखवी ठे, त्यारे तेणे कहुं के शांतिविजयजीए कहुं ठे के कोइने प्रत देखामवी नही.” इत्यादि—

उत्तर—मुनि धनविजयजी लिखते हैं कि—धर्मसंग्रहकी प्रति, जिस लहियाको लिखने दीयी थी उसको शांतिविजयजीने कहा था कि-किसीको बताना नही. पाठकगण ! यह बात बिलकुल झूठ है. हमने न तो किसी लहियाको प्रति लिखने दीयी और न लिखवायी. अगर यह बात सत्य ही होती तो धनविजयजी हमको रूबरू मिलकर पुठ लेते, दूर तो नही थे. (संवत् १९४४) में हमारा चातुर्मास जी अहमदावादमें था, शेठ, दलपतजाइके मकानमें ठेरे हुवे थे. मुनि धनविजयजी जी इसी शहरमें पांज-

रापोलके उपाश्रयमें ठेरे थे, आनकर रुबरु खुलासा कर लेते, दूर ही दूरसे मनमें घटना करते रहना, सुनी न सुनी बातकों दिल चाहे लिख देना. यह क्या ! संसारमें विरक्तोका काम है ? यह तो सपत्नीकी लड़ाई जैसा हुआ. लहियाने कहा वह सच, और हम रुबरु बैठे थे वह झूठे, क्या बतावे ! यह वही कहलावत हुए कि-देवदत्त और यज्ञदत्त नामके दो मित्र एक समय एक स्थानकमें मिले. तब यज्ञदत्तने देवदत्तसे कहा कि-हमने सुना था तुम मर गये !-देवदत्त बोला मित्र ! यह कथन झूठ है, जब मरतक ही मैं तुमारे सामणे खम्हा हुं तो मर कैसे गया ? तो जी फिर यज्ञदत्त कहता है नही जी ! मेरेसे एक प्रमाणीक पुरुषने कहा है कि-देवदत्तजी मर गये, वस ! जैसा यज्ञदत्तका विश्वास देवदत्तके मरतकमें जी यही है कि प्रमाणीक पुरुषका वचन है मुनि धनविजयजीका जी तघत् विश्वास है कि-लहियाने कहा है, परंतु ऐसा आग्रह करना ठीक नही, संमारी मनुष्य जी जो सज्जन जन है कुछ विषयको लिखने लगने है तो सोच समझ कर लिखते है, मुनि जनोको विशेष सोचना चाहिये; हम मुनि धनविजयजीसे ही पुछने है क्या ! शहर अमदावादमे हमारा तुमारा मिलना कन्नी नही होता था ? एक दूसरेको पुस्तककी चाहना होती थी तो नही देते लेते थे ? केई दफे पुस्तक देखनेको ले जाते थे, मुनिश्री विवेक सागरजी द्वारा खुद तुमने श्रीवासुपूज्य चरितकी प्रति मंगायी थी. फिर उन्होंके स्वर्गवास हुए पिछे तुमने पीछी जेजी थी-तो क्या ! धर्मसंग्रहकी प्रतिविषयक शंसय निवर्त्तन रुबरु मिलके नही किया गया ?

चतुर्थ स्तुति निर्णय ठेदन कुठारकी प्रस्तावनाके ( ६२ ) में पृष्ठपर मुनि धनविजयजीने चतुर्थस्तुति निर्णय ग्रंथकी कितनीक अशुद्धियां बतलाकर पिठें गुरुप्रशस्तिके श्लोकोके ठंदोजंग और व्याकरण दोष दिखलाये है इसका समाधान यह है कि-ठापेकी अशुद्धिका ओलंजा ग्रंथ रचयिता को देना सार्थक नहीं, किसी जगह ग्रंथकी कोपी करनेवालेका हस्त वा दृष्टि दोष रह जाता है किसी जगह ठापनेवाले वा मुफमीट करनेवालेका रह जाता है, अलबते ! ग्रंथकर्त्तानि जो कोई काव्य वा गद्यरचना संस्कृतमे कीयी हो उसमें कोई व्याकरण ठंद दोष वगैरा वक्तव्यता रहजाती हो तो उसका ओलंजा जरूर ग्रंथ कर्त्ताको दे सकते है, (आपही अपनी अशुद्धियांको देखिये !)

[मुनिधन विजयजी रचित संस्कृत मंगलाचरण और गुरु प्रशस्तिके काव्योंका अशुद्धि प्रदर्शन नीचे मुजब.]

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारका प्रथम पृष्ठ, प्रथम वृत्तका पहला पद.

“श्रीअर्हं जिनवीरमीश्वरविभुं त्रैलोक्य चिंतामणिं”

श्रीअर्हं-यहां व्याकरणके नियमानुसार संधि होना चाहिये क्यौं कि-एक पदमें नित्यसंधि होती है (तथाहि) संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः नित्या समामे वाक्येतु सा विवक्षाम वेक्षते,-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके प्रथम पृष्ठपर दूसरे श्लोकका दूसरापद-“वीतरागं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते”-यहां उपासते बहुवचन और उसका कर्त्ता यः यह ठीक नहीं है जो



## १० त्रिस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

इसको यहां-येऽन्यदेवं-ऐसा पाठ करते तो क्रिया ठीक लगती, परंतु उत्तरार्द्धमे-स खरीं दोग्धि-यहां एक वचनसें पूर्वार्द्धमें जी एकवचन चाहिये.-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके प्रथम पृष्ठपर तिसरे श्लोकमे-“स्याद्वादनिति वीरं-प्रणिपत्य जगद्गुरुम्.”

स्याद्वादनिति वीरं-यहां सातवर्ण है इसलिये ठेदो जंग दोष हुआ. अनुष्टुप्मे प्रत्येकपदके [८] वर्ण होते हैं.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७५] पर गुरु प्र-शस्तिके दूसरे वृत्तका तिसरा चरण,-“त्येवं वीरवचःप्रतापतरणिस्तीर्थं प्रवर्तयिष्यति”-यहां प्रवर्तयिष्यति ऐसा चाहिये, क्योंकि एणच् विना वृत्तधातु अकर्मक है, उसका तीर्थ-कर्मके साथ संबंध नहीं हो सकता, और अकर्मक ही समजा जाय तो परस्मैपदमे इट् नहीं हो सकता.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७५] पर तिसरे वृत्तका चतुर्थचरण-“निग्रंथवीरुदमुशंति गणस्य मुज्ञाः”-वीरुद शब्द ह्रस्व चाहिये, गद्यपद्यमयी राजस्तुति विरुदमुच्यते-इति साहित्य दर्पणे.-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७६] पर ठेद वृत्तका चतुर्थचरण-“तन्नाम्नापि मुधर्मचंश्च इतियुत् मुज्ञाः समाचक्षते”-यहां युत्-शब्द व्याकरणके नियमानुसार अनन्वित और निष्प्रयोजन है.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७६] पर आठमे

**त्रिस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर. ३१**

वृत्तका तिसरा चरण-“सर्वदेववपुषि निस्पृहस्ततः-यहां अंदोजंग दोष होता है, वर्णाधिक्य है।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए६] पर नवमे वृत्तका तिसरा चरण-“तेन गच्छगतपचमाहयं”-यहां आह्वयशब्द अगर गच्छका विशेषण रखे तो जी पुल्लिंग चाहिये, अगर स्वतंत्र रखे तो जी पुल्लिंग चाहिये, आह्वय-पु० आ × हे श । नामनिस-ज्ञायां प्राणिसाधने धुते च-इतिवचनात्।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए७] पर तेरहमे वृत्तका तिसरा चरण “गण एष दर्शान्वपक्षिणो”-आगे पृष्ठ (६ए८) पर अठारहमे वृत्तका तिसरा चरण-“कल्याणान्यस्त्रि-लजगज्जने दधन्यो”-यहां दोनो चरणोंमें दधन् शब्द अशुद्ध है दधत् ऐसा होना चाहिये, क्योंकि-“नाभ्यस्ताञ्जतुः” इस सूत्र करके नुम्का निषेध होता है।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ (६ए९) पर बारहमी पंक्तिमें निर्मायि-क्रियापदकी जगह निरमायि ऐसा होना चाहिये, क्योंकि-यहां अमागम होता है।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारकी आद्यके पृष्ठपर जहां मुनिधनविजयजीने अपना और गुरुजीका नाम संस्कृतमें गुम्फित किया है-“क्रियाशुद्ध्युपकारका अक्रवर्त्याचार्याः परमगुरुश्रीश्री १०८ श्री विजयराजेंद्रसूरिजीतन्त्रिष्यभ्यायचक्रवर्तिपरंपरानुगश्री युतपंक्ति मुनिधनविजयजीमहाराजविरचितः-इस वाक्यमें सूरिजी यह पद निर्विज्ञक्तिक हुवा-चाहिये, सविज्ञक्तिक, क्योंकि अक्रवर्त्याचार्याः इस पदका विशेष्य है, “जी”-पद कुछ संस्कृ-

३२ त्रिस्तुति बतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

तका नहीं जो बिचमे रखा गया. "चक्रवर्ती"-यह समासमें दीर्घ नहीं चाहिये, इन प्रत्ययांत समासमे दीर्घ कैसे हो सकता है?

यह उपर लिखी हुई अधुष्टियां अगर सत्य है तो मुनि-धनविजयजी अपनी भूलको स्वीकार करे. लज्जित होनेका कुछ काम नहीं है, न अप्रसन्न होना चाहिये, क्योंकि-मनुष्य ही तो है भूलगये, हाथ ही तो है चूक गये, अगर असत्य है और इसके बारेमें कुछ लिखना पढ़ना चाहे तो प्रमाणीक लिखाणके साथ व्याकरण और उदःशास्त्रके कायदेसे जो कुछ वक्तृता लिखनी हो लिखे, उत्तर दिया जायगा, जैसे चतुर्थस्तुति निर्णय वेदन कुठारमें जगह जगह आत्मारामजीके नामपर कुवचनोकी वृष्टि और गाली प्रदान कीया है वैसा न करे, और, यदि इतने पर-जी वें गाली प्रदान करना चाहेगें तो उनकी मरजी,

“ ददतु ददतु गालीं गालीमंतो ज्वंतः

वयमपि तदज्ञावाद् गालीदानेऽप्यशक्ताः ”

इसी वचनपर हमारा संतोष होगा, सच पूछो तो वास्तविक और उत्तमवात तो यही है कि-अपनी अधुष्टियांको जहां तो स्वीकार लो और जहांतो व्याकरण और उदः शास्त्रका प्रमाण देकर शुद्ध करो, वृथा शंखनाद करके शौर मचाना कोई लाज न होगा, महाशय ! अपने विश्वासीको समझाना सहज है एक दो बातोंके दृष्टांत देकर रफू करना यह जी सहज है, परंतु विद्वानों के सामने शास्त्रार्थके कायदेसे वाग विलास करना सहज नहीं, शिष्टाचारसे जो कुछ कहोगे लिखोगे सबको मान्य होगा. कुवचनबोलने स्त्री जनोको जी याद है इसीमें विद्वत्ता होती तो

संजीजन हमी समक पर चलते, देखिये ! गुरुप ओर जर्मनके अंग्रेज विद्वान् जब कोई प्रकारका विषय वा प्रबंध लिखते है तो वह उमदा शैलीसे लिखते है कि-हृदसे ज्यादा, क्या बतावें ! जो रीति आर्थोंकी थी वह अनाथों कों मिल गयी, अगर इन अशुचियोंके बारेमें आप कहोगे जो हमने लिखा वह सत्य है तुम क्या जानो ज्ञाप्यमें और बने जैनैडव्याकरणमें ऐसा ही लिखा है तो हम पहलेसे ही लाजवाप है, हमने ज्ञाप्य और ब-मा जैनैड नही पढा, अगर कहोगें तुम सच्चा करो हम शास्त्रार्थ करनेको तयार है तो इसमें जी हम लाजबाय है, हमारा कोई हुकम नही चलता, जो सबको बुलाना जेजे, और न हमारे पास मरुधर-मालवा-गुजरातके सजी श्रावक लोग एक शाय आनकर हाजर होवे, महाशय ! यह तो सब रफू करनेकी बातें है, इनमें कोई लाज नही, अलवते ! आप न्यायचक्रवर्ती है आप उद्यम करे तो सब कुछ बन सकता है क्योंकि-चक्रके अधिष्ठा-यक देव सबको घेरकर लाशकते है और अन्यजी आपमें इतना विशेष है कि-आपने मंत्र आराधनजी किया है, आपके ग्रंथमें ( ६९९ ) पृष्ठपर दसमो पंक्तिमे लिखा है कि-“ गुरुमतान्तःपा-तिना धनविजयेन नाम्नाग्र गणिनामया कुवादिवाक्स्तम्जनम-न्वाराधनेन-” मैंने कुवादिओंकी वाणीको स्तंजन करनेका मंत्र आराधन किया है, अस्तु ! आपने आराधनजी किया होबा इसमे हम उजर नही करते, परंतु तर्क करनेवाले कह सकते है कि-मुनि धनविजयजी कुवादिओंकी वाणी अगर स्तंजन कर सकते है तो क्या ! अपनी अशुद्ध वाणीको स्तंजन न कर स-

३४ त्रिस्तुति मतानुरागी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

के, !-हम तो यहां विशेषकुछ नहीं कह सकते हैं मंत्र आराधन करना और उसके अधिष्टायक देवको अपने वशमें लाना, सहजकी बात नहीं. जो मनुष्य मंत्राधिष्टायक देवोंकी स्तुतिका निषेध करे उनको देव प्रसन्न होनाजी मुश्किल है, जब आपके लिखे कुवचन सज्जानोंके सामने वाचे जाते हैं तो उन्होके मुखसे यही वाक्य निकसता हैकि-यह लिखाण ठीक नहीं किया, अगर आपका आशय यह होकि तुमारे गुरुजीने भी तो हमको कुवचन लिखे है हमक्या ! न लिखे ? इसके उत्तरमें न्यायतों यही कहता है कुवचन लिखने उनको जी उचित नहि थे, अगर उन्होने लिखें और तुम न लिखते तो तुम्हीको यश आता, एकने किया सोही दूसरेने करना यह कांइ व्याप्ति नहीं. अगर कहोगे जो तुमने झथुधियां निकाली है वह वास्तविक नहीं, कुछ मुश्किलार्हकी बात कहते तो ठीक, तब फिर वही बात आ जायगी कि-किसी समय एक अध्यापकने अपने शिष्यसे पूछा गंगाजलं=और गुरु जक्तिः=पदोंका विग्रह कहो, तो शिष्यने उत्तर दियाकि-महाराज ! कुछ कठिन बात पुढिये, यह तो बहुत सहज है गङ्गास्प जलं=गङ्गाजलं-गुरुस्प जक्तिः=गुरुजक्तिः-इसमे मुश्किलार्हकी बात ही क्या है ? यह सुनकर अध्यापकको बहुत खेद हुआ, ऐसा न किजीयेगा.

आगे आपने अपने ग्रंथके [६३] मे पृष्ठपर आत्मारामजीकी बनाई गुरु प्रशस्तिके श्लोको के [२] उंदोभंग दोष बताये है, प्रथमतो-“ तपागळे जगदंघे, जझिरे बुधिशालिनः,-श्रीमन्मा विजयाख्या, गुरुवः संयमे रताः-इसमें तिसरे चरणका उठा वण

दीर्घ चाहिये, ह्रस्व है इसलिये उंदोजंग दोष निकाला, दूसरा श्लोक-यस्य धर्मोपदेशेन, निर्मलेन कति जनाः, -सम्यक्तं लेजिरे साधु धर्मं च लेजिरे कति, इसमें दूसरे पदका उठा वर्ण दीर्घ चाहिये, ह्रस्व है इसलिये यहांजी उंदोजंग दोष निकाला,-

[ इसका उत्तर. ]

महाशय ! अनुपवृत्तके जेदोंमें कितने नित्य और कितने अनित्य, इसका विचार करना प्रथम आवश्यक कीय है, अगर श्रुतबोधमें दिखलाये भेदको ही एकांत नित्य मानलिया जावे तो फिर त्रिषष्टिशिलाका पुरुषचरित और अमरकोश आदि अनुष्टुप् वृत्त बद्ध केइ ग्रंथ रचयिताओंने यह नियम नित्य क्यों नहीं रखा ? त्रिषष्टिशिलाका पुरुष चरितमें आद्यके अनुष्टुप् वृत्त जिसको हम तुम सकलार्हन् स्तोत्र कहने है इसीमें देखिये !

दूसरे वृत्तका प्रथम चरण-"नामकृतिः प्रव्यजावैः"--

आठमे वृत्तका तिसरा चरण-"अन्तरङ्गारिमथने"-

नवमे वृत्तका तिसरा चरण-"नमश्चतुर्वर्णसंघ"-

ग्यारहमे वृत्तका तिसरा चरण-"अचिंत्यमहात्म्यनिधिः"

तेरहमें वृत्तका तिसरा चरण-"निःश्रेयसश्रीरमणः"-

केवल तेरह वृत्तोंके ही देखनेपर आपके धारणे मुजब पांच जगह उंदोजंग दोष हुवा, उठा वर्ण सब पदोंमें ह्रस्व है.

अमरकोशके पाचमे वृत्तका पहलाचरण-"त्रिलिङ्गां त्रिष्विति पदं"

,, उठे वृत्तका प्रथम चरण-"स्वरव्ययं स्वर्गनाकः"-

,, उठे वृत्तका तिसरा चरण "सुरलोको द्योदिवौ द्वे"-

,, सातमे वृत्तका तिसरा चरण-"सुपर्वाणः सुमनसः"-

,, आठमे वृत्तका पहला चरण-“आदितेया दिविषदो”-  
 देखिये ! अमरकोशके आद्यमे केवल [८] वृत्तपर ही खयाल  
 किजीये, पांच जगह आपकी अपेक्षा उंदोजंग दोष हुआ, उछा  
 वर्ण ह्रस्व है, बतलाईये ! क्या ! हेमचंद्राचार्य और अमराचार्य  
 दोनो भूलगये ? उन्हांको अनुष्टुप्वृत्तके नित्यानित्य जेदोका जी  
 ज्ञान नहीं था क्या ?-महाशय ! न हेमचंद्राचार्यकी न अमरा-  
 चार्यकी और न आत्मारामजीकी कियोंकी भूल नहीं है, यह  
 तो आपकी इर्षाका एक नमूना है, उनियामें किसीने किसी त-  
 रह आत्मारामजीको लोग बुरा और अणपढ समझे, यह आ-  
 पका आशय है, परंतु उनिया आदर्श है इस में जो जैसा है आप  
 ही आप दिख पमता है, कहने सुननेकी कुछ जरूरत नहीं रहती,  
 अगर आपने इस नियमका नित्य ही माना है तो बतलाईये आपही  
 इसपर क्यों न चले ! खयाल किजीये आपके ही बनाये गुरु प्रस्तिके  
 वृत्तोंमें चतुर्थस्तुतिर्णय वेदन कुठार ग्रंथके [६९९] पृष्ठपर यह जो  
 अनुष्टुप्वृत्त लिखा है-“तच्चिप्योऽभुन्यायचक्र वार्त्तिविरुद्धधारकः  
 श्रीमद्भोमः गणकुशविजयो गणनायकः”-२२, इसमे आपने खुद  
 क्या रचना रची है ? आत्मारामजीकी दो वृत्तोंमें दो भूल आप-  
 ने निकाली और आपने वही भूल एक वृत्तमें दो रखदी, पहले  
 और तिसरे चरणके उठे वर्ण तर्फ दृष्टि दिजीये, दीर्घ है या  
 ह्रस्व है ? अगर ह्रस्व है तो आपने ही उंदोजंग दोष किया कि  
 नहीं ? आत्मारामजी न्यायान्जोनिधि है आप न्याय चक्रवर्ती  
 है, हमतो दोनोंको कुछ नहीं कह सकते, परंतु तर्क यह कह  
 रहा है कि-अंजोनिधिसं चक्रवर्ती अधिक शक्तिमान होता है,

उसको भूलना न चाहिये, दूसरी यह जी बात है कि-आत्मारामजीने मंत्र आराधन नहीं किया, आपने किया है फिर भूलना कैसे हुआ ?

चतुर्थस्तुति निर्णयके पृष्ठ (१७६) पर आत्मारामजी रचित गुरु प्रशस्तिके तिसरे वृत्तमें-“चंछा”-चौथमें-“क्षांता” और पाँचमें वृत्तमें-“मयानंदविजयेन”-इतनी जगह परसवर्ण दोष निकाले हैं.

( इसका उत्तर. )

महाशय ! जो दक्षिण पथके विद्वान् हैं वे इस पर सवर्ण-रूप व्याकरणके नियमको व्यवहारिक वर्तणुकमें नित्य नहीं स्वीकार रखते हैं उत्तराखंडके विद्वान् रखते हैं, परंतु इसमें ज़ारो दोष नहीं गिनते, देखिये ! दक्षिणापथ बम्बई इलाकेकी जितनी उपी वा लिखी हुयी पुस्तक हैं उनमें यह परसवर्ण करनेकी शैली नित्य नहीं रखी है, उत्तराखंड के पुस्तकोमें बहुधा करके नित्य दिखती है, निदान ! इस बातको ज़ारी दोष नहीं गिनते, इतने परभी आपको विशेष आग्रह था तो आप अपने ग्रंथमें तो वह शैली नित्य रखते, क्यों उसको ठोस दी ? खयाल किजीये टाइटलपेजपर मंत्रज्ञ पद-इससे अगामी दूसरे पृष्ठपर श्लोक के तिसरे चरणमें किंचित् मंगलाचरणक प्रथमका-व्यमें-बंदितामेंछ-बंदे-आगे गद्यपाठमें दूसरी पंक्ति-प्रतिबंध-मंगल-मुपक्रमते-

चतुर्थ पंक्तिमें-परममंगल-अंतकी पंक्तिमें-काकदंत-दूसरे पृष्ठ-पर प्रथम पंक्तिमें-संबंधस्तु-तिसरी पंक्तिमें-केषांचिद्-चतुर्थपंक्तिमें



## ३० श्रीस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

ग्रंथ:-गुरुप्रशस्ति के काव्योंमें पृष्ठ ( ६७१ ) पर तिसरी पंक्तिमें करीब:-

चतुर्थपंक्तिमें-पंच और इसके अगामी पूर्णाहुतीतक इसी परसवर्ण दोष संबंधी निगाह करे तो (३७) दोष और इसमें मौजूद है कहांतक लिख बतावे, इससे यही कहना ठीक है कि- आप अपनी गुरु प्रशस्तिमें तजासकर लिजीये, (३७) संख्यासे एक जी कम रहजावे तां हमको ओलंभा दिजीये, मुनिजी ! दूसरेको कहना सहज है आप उस राह चलना सहज नहीं.

आगे फिर आपने चतुर्थस्तुति निर्णयके [१७६] पृष्ठ पाचमे वृत्तके तिसरे चरणमें [गुम्फित] संबंधी ठापकी अशुद्धि आत्मा-रामजीको दीयो है परंतु यह ठीक नहीं, प्रस्तावअनोक्त [५१] पृष्ठ पर आपने अपने ग्रंथमें लिखा है कि आत्मारामजीके उपाये हुवे सजी ग्रंथमेंसे अगर अशुद्धियां निकाली जावे तो एक ठोठासा ग्रंथ जितनी संख्या बने, परंतु हम इन सब बातोंको सार्थक नहीं समझते, क्या आपके एक ही ग्रंथकी अशुद्धियां कोई व्यर्थ समय गमानेवाला शरुश अन्वेषण करे तो क्या कोईजी न निकलेगी? क्या [३७७] संस्कृत पाकृत पाठोंका अर्थ आपने किया है वह सब अन्वय सहित किया है ? इनमें कोई शब्दाशुद्धि-अर्थाशुद्धि और अनुवादाशुद्धि नहीं है इसके उत्तरमें कहोगे होती तो लिखके बतलाते नहीं ? मत्तशय ! इसमें कोई असली तत्व नहीं निकलेगा, जो वास्तविक तत्व है समालोचना उसकी करनी ठीक है,

## श्रीस्तुति मत्तानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर. ३७

समीक्षक-मुनिधनविजयजीने शुद्धिपत्र अलग बनाया है उसमें तुमारी निकाली हुयी अशुद्धियांको शुद्ध जो तो किया है,

उत्तर-हमने जो अशुद्धियां निकाली हैं उनमेसे केवल स्याद्वाद निधि-को जगह स्याद्वादस्य निधि-दिखलाया है परंतु और अशुद्धियांके विषयमें कुछ नहि लिखा, गुरु प्रशस्तिमें युत् इस जगह यत् बतलाया है परंतु यह जी सान्त्वय नही है, असल बात तो यह है कि-जो संस्कृत रचना मुनिधनविजयजी अपनी रची बतलाते हैं उसमें आद्यके तीन वृत्ततो साधारण रचनावाले होनेसे स्यात् उनके बनाये हुवे हो तो ना नही, परंतु और रचना तो अन्य किसी पंक्तिकी रची हुई है और अपने नामसे रफू कियी गई है, क्यों कि-मुनिधनविजयजीकी यह शक्ति नहि, दो वर्ष पहले जब हम और मुनि धनविजयजी शहर अमदावादमे थे, तब शंठ. दलपतजार्डके स्थानपर एक समय ऐसा हुवा कि-मुनि श्री प्रमोदविजयजी-मुनिश्री धीरविजयजी-मुनिश्री कांतिविजयजी-हम-और मुनिश्री मोहनलालजी-यही मुनिश्री धनविजयजी,-और यतिजी पं० पद्मसागरजी वगैरा सब एकत्र मिले थे, बातो ज्ञानगोष्ठीकी होती थी तब मुनि धनविजयजीसें निम्न लिखित-“ बटो ! जिज्ञास्य मां चानय ”-एक सामान्य सारस्वत ग्रंथका वाक्य शुद्धपने उच्चारण न होशकाथा, तो संस्कृत रचना रचनी कितनी बात ? इसमें मंत्राराधनका सहारा बतावे तो बतावो, अपने विश्वासी जनोको जो कहो सो ठीक.

जाह्नपद आसोज और कार्तिक मास बतीत होते सूत्रध्या-  
वश्यक (जो व्याख्यानमें वाचना शुरू था) प्रतिक्रमण अध्यय-  
नतक-और श्राद्धविधिग्रंथ संपूर्ण वाचा, सारे दिल्ली इलाकेकी  
मनुष्य गणना (६४३५१५) है, संवत् (१९३४) में यहां एकड़-  
म्पोरियल दर्बार हुआ तब हिंडुस्थानके सजी राजे यहां एकठे  
हुवे थे, -हस्तिनापुर तीर्थ यहांसे (३५) कोस दूर है, संवत् (१९४७)  
के मार्गशीर्ष वदी तोज रविवारको शहर दिल्लीसे आगरे तर्फ  
विहार किया, प्रथम मुकाम (४) ठोटे दादाजीकी ठतरीमें किया,  
दूसरेदिन कुतुब (महरोली) कुतुबसे (६) कोस गुमगांव-गुमगांवसे  
[४] कोस गढो गढोसे (४) कोस फरुखनगर मार्गशीर्ष वदी स-  
प्तमी बुधवारको पहुंचे.

फाल्गुन कृश्न (३) गुरुवार तारिख (२६) फेब्रुअरी सन (१८९१) की  
रात्रीको जो मनुष्य गणना (मर्दम समारी) हुयी इस समय मनोहरलाल ट-  
पालमास्तरने हमसे निम्न लिखित प्रश्न किये, (१) प्रश्न. आपका नाम क्या है?  
हमने उत्तर दिया (शांतिविजयजी,) (२) फिर प्रश्न किया, तुमारा धर्म क्या  
है? उत्तर जैन, (३) फिर पूछा तुमारे कौमका फिरका (धर्मकी शाखा) क्या  
है? उत्तर दिया श्वेतांबर, (४) फिर पूछा तुमागी जानि क्या है? हमने कहा  
जन्मके श्रावक ओशवाल, अब साधु संवेगी, (५) तुमारी कौमका शाखा (जा-  
तिकी शाखा) क्या है? हमने कहा तपागच्छ, (६) फिर हमसे पूछा आपकी  
उमर (अवस्था) कितनी है? हमने कहा (३३) वर्ष, (७) फिर पूछा जन्मसे  
आज तक आपका विवाह हुआ या नहीं? हमने कहा नहीं हुआ, फिर पूछा  
आपके माता पिताकी बोली क्या है? हमने कहा गुजराती, (८) फिर उसने  
पूछा आपका जन्म किस जिलेमें हुआ? हमने कहा राजधानी भावनगर गु-  
जरातमें, (९) फिर पूछा तुमारा गुजारा (आ जीवका) क्या है? हमने कहा  
भिक्षा, (११) फिर पूछा कुछ लिख पद जानते हो? हमने कहा हा। जा-

ग्रंथ वाचना शुरू किया, श्वेतांबर श्रावकोका एक जी घर यहाँ नहीं. हुंदियेलोग व्याख्यानमे नहीं आतेथे. सब दिगंबर श्रावक लोग आते थे.

फाल्गुन कृश्न (३) गुरुवार तारिख (२६) फेब्रुआरी सन (१८९१) की रात्रीको जो मनुष्य गणना (मर्दम समारी) हुयी इस समय मनोहरलाल ट-पालमास्तरने हमसे निम्न लिखित प्रश्न किये. (१) प्रश्न. आपका नाम क्या है? हमने उत्तर दिया (शांतिविजयजी). (२) फिर प्रश्न किया, तुमारा धर्म क्या है? उत्तर जैन. (३) फिर पूछा तुमारे कौमका फिरका (धर्मकी शाखा) क्या है? उत्तर दिया श्वेतांबर. (४) फिर पूछा तुमारी जाति क्या है? हमने कहा जन्मके श्रावक ओशवाल, अब साधु संवेगी. (५) तुमारी कौमकी शाखा (जातिकी शाखा) क्या है? हमने कहा तपागच्छ. (६) फिर हमने पूछा आपकी उमर (अवस्था) किननी है? हमने कहा (३३) वर्ष. (७) फिर पूछा जन्मसे आज तक आपका विवाह हुवा या नहीं? हमने कहा नहीं हुवा, फिर पूछा आपके माता पिताकी बोली क्या है? हमने कहा गुजराती. (८) फिर उसने पूछा आपका जन्म किस जिलेमें हुवा? हमने कहा राजधानी भावनगर गुजरातमें. (९) फिर पूछा तुमारा गुजाग (आजीवका) क्या है? हमने कहा शिक्षा. (१०) फिर पूछा कुछ लिख पढ़ जानते हो? हमने कहा हा! जानते हैं, (११) फिर पूछा विशेष क्या लिख पढ़ जानते हो? हमने कहा संस्कृत और प्राकृत. (१२) फिर उसने हमको देखकर कहा बस! खैर! तब हमने पूछा क्यों? क्या बात है? उसने कहा यह किताबमें एक खाना और है जीसमें हम जन्मके बावले-भूंगे-बहेरे-कोठीको यदि हो तो लिख लेते हैं सो यहाँ कोई ऐसा है नहीं इस लिये नहीं लिखा सो खैर.

वैशाखवदी [३] चंडवारके रोज यहाँ हमको (श्वेतांबरन्या-यांकुश) नामका एक पुस्तक एक महाशयसे मिला, यह शिला-यंत्रसे मुद्रित हुवा एक ओटासा चोपानीयाकी बतौर समजो. इसके रचयिता दिगंबर धुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदासजी हैं. मुनि

श्रीमान् ज्वेरसागरजी जो हमारे समुदायके गीतार्थ साधु है उन्होंनेका रचा हुआ (केशरीयाजी तीर्थका वृत्तांत) पुस्तक जो जावनगर जैनधर्म प्रसारक सज्जाने संवत् [१९४३] में उपवाया है उसका यह खंमन है. इसमें उक्त धुल्लक धर्मदासजीने श्वेतांबरी धर्मपर बहोत कुछ वक्तृता कीयी है और तर्कपर तर्कें लिखी हैं. इसकी समीक्षा करनी उचित समझकर यहां इसके बारेमें कुछ लिखते हैं, पाठकगण ! हम यहां जो कुछ लिखेंगे केवल धुल्लक धर्मदासजीके लेखकाही उत्तर लिखेंगे अन्य किसी मनुष्यके खेदका कारण हमारा लिखाण न होगा. जैसे धुल्लक धर्मदासजीने श्वेतांबरीके विषय कटुक वचनोंकी वृष्टि कीयी है यदि हमजी इसी प्रकार उत्तर देवे तो—“शठं प्रति शठं कुर्यात्”—के अतिरिक्त कोई लाज नही, किंतु जैसे सकल संघ श्वेतांबरीको धर्मदासजीका लिखाण अप्रिय हुआ है दिगंबर लोगोंको हमारा जी होजाय, परंतु हमारा किसीके दिल डखाना वा धर्मभेदनेका अजिप्राय नही. संयम ग्रहण किये. पितें जो हमको देशादन करनेकी आवश्यकता हुयी तो देश देशांतरके अनेक स्वमत परमतके विद्वानोंसे वचनालाप ज्ञानगोष्ठी हुयी. जिसमें दिगंबर आमनायके जी अनेक विद्वानोंसे मिलना हुआ. परंतु धुल्लक धर्मदासजीके सदृश हमने किसीको व्यर्थ पक्षपाती नही देखा.

अब हम उक्त श्वेतांबरीन्यायांकुश ग्रंथका संपूर्ण लिखाण यहां क्रमसे लिखकर उसके नीचे अपनी तर्फसे उत्तर लिखते जायेंगे. यद्यपि इसमें अनेक अशुद्धियां हैं परंतु केवल विषय संबंधी ही समीक्षा (उत्तर) लिखेंगे और अशुद्धियांको पाठक रुंद

के अब लोकनार्थ ज्युंका त्यूं नकल कर देयगें. जिस पारिव्राफ-  
की आदिमे [क्षु.] ऐसा लिखा देखो उतना लेख उक्त बुद्धक-  
जीकाजानना, जहां [ह] ऐसा लिखा देखो हमारा जहां (अ)  
ऐसा लिखा देखो किसी अन्य पुरुषका जानना. यह एक हमने  
अपनी समस्याके चिन्ह बताये है.

( उक्त बुद्धकजीके लेखकी नकल. )

(क्षु.)—श्वेतांबर न्यांकुश.

पत्र प्रथमप्रारंजः

मातृ मिति संवत् १९४४ आषाढ कृश्न १३ रविवारके दिवस लिखितं  
नाम मात्र बुद्धक ब्रह्मचारी धर्मदास,—आजके रोज सोलापुरसें डाकके द्वारा  
श्वेतांबरके—“श्रीकेशरीयाजी तीर्थनो वृत्तांत”—नामक पुस्तक, बहुरी गौतम  
मोतीचंद रचित मासिक पुस्तक, अर्थात् दोय पुस्तक डाकके द्वारा हमकू प्राप्त  
हुवा. उसमें श्वेतांबरके केशरीयाजीनो वृत्तांत, श्वेतांबरी कल्पित लिखता है,  
कारण पूर्वापर विरोध महित वचन उस पुस्तकमे है.

(हमारी तरफसें समीक्षा). [उत्तर]-

(ह.) प्रथम तो श्वेतांबर न्यांकुश लिखना ही सार्थक नहीं.  
इसरा हम ब्रह्मचारी उसी मनुष्यको समजते है जो अव्यवान्  
होकर स्त्रीका समागम मिलते हुवे न बाँडे.और त्यागी हो जाय.  
जिस मनुष्यको निर्धनताके कारण स्त्रीका समागम न हो सके  
तो उस संबंधी संसारकी यही कहलावत ठीक यचतो हे कि-‘नि  
र्धन माया त्यागी, त्रिया विना बेरागी’-बुद्धकजीको जो पुस्तक.  
वा. पत्र. केशरीयाजी तीर्थ संबंधी मिला उसमें कोई पूर्वापर वि  
रोध नहीं है. और जो उनको दिखलाई दियाथा तो धार्य

लिख देते कि-अमूक अमूक पूर्वापर विरोध है, क्योंकि बहुधा शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ पढ़ने वालोंकी समझमें तो आवे नहीं और वह अपनी बुद्धिद्वारा उसको डणित कह देते हैं. जैसे संस्कृतमें वदन मुखकों कहते हैं और फारसीमें संपूर्ण शरीरकों. सो जिसने केवल संस्कृत पढ़ी हो, वा फारसी पढ़ी हो, वह इसरी ज्ञापाके कविका सारांश नहीं जान सकेगा. जैसे किसी फारसी कविने लिखा कि-मेरा वदन साढे तीन हाथ लंबा है, तो संस्कृतका जाननेवाला उसको जूठा समझेगा, परंतु वस्तुतः उसकी समझका हों फेर है, फारसी कविका दोष नहीं है.

( ध्रु. )—नाम—प्रकार १ लो. तीर्थनी उत्पत्ति. सुनो स्वेतांबरी हो. तुम कही तीर्थ उत्पत्ति सो उत्पत्तिको साक्षीदार काण है. तुम कहोगे हमारा सूत्र सिद्धांत है, तो हम कहोगे के तुमारा सूत्र सिद्धांतको साक्षीदार कोन है. दुसरा तुमारा सिद्धांतकी सबके प्रमाणमें आती नहीं. जो बात सबके प्रमाणमें आवे नहीं वो बात सत्य नहीं, किंतु कल्पित है. तुम कहोगे कि हमारी सिद्धांत सूत्रकी बात सबके प्रमाणमें कैसी नहीं आती. उत्तर-मुनु, सबके प्रमाणमें आती तो सब ही स्वेतांबरी हो जाते. अर्थात् जैन. वैश्व. बौध. नैयायकक. मीमांसक. चार्वाक. पातंजलादिकका भेद नहीं रहता.

सफेद कपड़ा धारण करे सो स्वेतांबरी, रक्त कपड़ा धारण करे सो रक्तांबरी-इत्यादि समझना गुत्र रेशम आदिका वस्त्र रहित होय सो दिगंबर, अर्थात् जिसके वस्त्र नहीं सो नग्न, अकृत्रिम स्वयंसिद्ध है. आगमका प्रमाण देता हू समझ लेना. [ काव्य—]

\* मी<sup>१</sup>जीदंडकमंडलुप्रभृतयो<sup>२</sup>नोलांछनो<sup>३</sup>ब्रह्मणो,  
रुद्रस्यापि<sup>४</sup>जटाकपालमुकुटंकापिनखद्वंगांगना,  
विष्णुश्चक्रगदादिशस्त्रमतुलंबुद्धस्यरक्तांबरं,  
नम्रपद्मनिवादिनोजगदिदंजनेद्रमुद्रांकितं, १ ,

\* काव्यकीऽशुद्धियां. (१) मीजी. २ लांछन. ३ खट्वांगना. ४ विष्णोः पश्यत.

इस काव्यमें स्पष्ट प्रसिद्धि नम्रपणा अकृत्रिम स्वयंसिद्ध मालूम होता है. करिये खंडन नम्रके प्रथम कोण है.

[ उत्तर, ] ( ह. ) धुल्लकजी अकृत्रिम तीर्थ वह है जैसें सिद्धाचल, रैवताचल, सम्मेतशिषर, चंपापुरी, और पावापुरी, आदि, परंतु केशरीआजी तीर्थका नामकेवल प्रतिमाजीके चमत्कारी और प्रजाविक होनेके कारण पमा है सो जिस आम्नायकी यह प्रतिमा है उसी आम्नायका यह तीर्थ जी है इसमें आगम प्रमाणकी कोई आवश्यकता नहीं. लौकिक किम्बदंतियों संसारमें प्रसिद्ध है और प्रतिमाजीके उपर कोई चिन्ह दिगंबर दृष्टगोचर नहीं होता, अथवा किसी दिगंबराचार्यका नामतक जी नहीं, फिर आप जो लिखते हो कि-तुमारा आगम प्रमाण सर्वोपरि स्वीकृत नहीं हो शक्ता तो क्या. जो काव्य आपने अकलंक स्तोत्र दिगांबराचार्य रचितसें १२-मी लिखी उसकों हम या हमारे आम्नायी श्वेतांबर श्रावक-अथवा अन्यमति मान सकते हैं ?-यह आपने वही कहलावत कर दीयी कि-“अपने बैर मीठे अन्यके खट्टे, ”-इस प्रमाणसें तो आपका स्वयंसिद्ध नम्रनपना स्वीकृत नहीं हो सकता. इस आपके लिखाणमें कोई शास्त्रोक्तयुक्ति नहीं है. अब आगे चलकर आपको मालूम होजायगा कि-जिसको आप प्रथम नम्र कहते हो उसके प्रथम कोन है ? वास्तवमें तो जिसको आप प्रथम नम्र मानते हो उससे पहले उसके माता पिता विद्यमान हैं;-

( धु. )-तुम लिखि के केशरीआजी श्वेतांबरीका तीर्थ है. सो ऐसा तुम्हारा लिखना बालकवत् है. क्योंकि तीर्थ उसकू कहते हैं. जिनसें तरिये, अ-



## ३६ दिगंबर मुल्लूक धर्मदासजीकी तर्कका उत्तर.

यात् जैसे नौकामै जहाजमै बैठता है सो तरता है. तैसेही श्री केशरीआजीकी पूजा, ध्यान, जाप, आराधना करे उसका भला होता है. क्या दिगंबरी श्री केशरीआजीका ध्यान, सुमरण, जाप, केसरका विलेपन लगावेतो क्या दिगंबरीका भला नहीं होगा ? अर्थात् जरूर भला होगा. फिर तुम तुमारा ही तीर्थ कैसे मानते हो. येह तुमारा मानना भरमकाहे जैसे श्री गंगाजीका जलको कलस भरकर लेय ब्राह्मणतो आपणै मानता है. के यह जलमेरा है. शुद्धादिकभी तद्वतहि जलका कलस भरभर आपणा आपणा मानता है. विचार कियेसं देखिये तो जल किसिकाभी नहीं. जलतो श्रीगंगाजीका है. ज्यादा विचार कहिये तो जलका जल है. तदन्याय श्रीकेशरीआजी फकत तुमारा ही तीर्थ नहीं. ममणा ये समज तुम लोकोकी मिथ्यादृष्टनाकी है.

(ह०)-केशरीयाजी तीर्थ जो प्रतिमाजीके चमत्कारी होनेमें प्रसिद्ध हुवा है वह प्रतिमा श्वेतांबर आम्नायकी है इस लीये दिगंबरीयोंका उसमें क्या संबंध है, ?-हम यह नहीं कहते है कि-जो दिगंबरी मनुष्यजी उक्त प्रतिमाजीका पूजा, ध्यान, आराधना करे उसका जला न हो. जला तो होवे ही होवे. और हमारा तो यही निश्चय है कि-अवश्य जला हो. परंतु दिगंबरी लोक श्वेतांबर आम्नायकी प्रतिमामें छेषजाव रखते है तो क्या! इस चमत्कारी प्रतिमाके जयमें ही इसकों अपना तीर्थ मानने लगे !-देखो ! जब और श्वेतांबर प्रतिमामें तुम रुते हो तो श्री केशरीआजीसें जी यह हठ मत करो कि-यह तो हमारा ही तीर्थ है. और जो गंगाजलका प्रमाण देते हो इस विषयमें आपको अन्य दिगंबरीयोमें सम्मति करलेनी चाहिये. क्योंकि इस लीखाणसें तुमने श्री केशरीयाजी तीर्थकों ही सबका नहीं किंतु और अन्य कुदेव आदिक चमत्कारीकों जी अपनी तरफ खींच लीया. ऐसा अजिप्राय आपहीका हो तो हो. अन्य दिगंबरीका

नही है, इस लिखाणसें ज्ञानवान् स्वतः विचार लेंगे कि-स्वदे-  
वको ठोमकर परदेवपर दावा करना सम्पक् दृष्टिका काम है.  
या. मिथ्या दृष्टिका, ?

(धु.)—लौकिकमे वो धन्य है जो के अंधाकू नेत्र सहित कर देता हैं  
ओ धन्य है. श्वेतांबरी लोगोंका देव मूर्तिके चांदी सुवर्णका नेत्र चक्षु लगाते है.  
इससे सफा जाहीर होता हैं के श्वेतांबरी बडा है. श्वेतांबरीकी देवमूर्तिके हिन है.  
क्योकि—अंधाकू नेत्र देता है ओ श्रेष्ठ है. ऐसे तुमारी देवमूर्तिके अंधी हैं ! उसको  
तुम नेत्र लगाते हो. दिगंबर पक्षका श्रावक लोगोंकी देवमूर्तिके नेत्र जैसा  
द्रव्यकी प्रतिमा होय तिस ही द्रव्यमयी तिस द्रव्यसें तल्लीन जैसे हाथ, पाव, आंगु-  
लिका आकार मूर्तिका होता है. तद्वन् धातु पाषाणसे तनमयी नेत्र चक्षु  
होता है. इस न्यायसें यह बात साबन होती है. के श्री केशरीआ नाथकी मूर्तिके  
श्रीमत् जैन दिगंबर आमन्याकी पूर्व प्राचीन है.

(ह.)—“लौकिकमें वह धन्य है जो के अंधाकू नेत्र सहित  
कर देता है” ऐसेऐसे लिखाणोंसें आपकी उत्तम विद्वानता ऊ-  
लक रही है, जब प्रतिमा नही बनीथी तो केवल धातु या पा-  
षाण ही था. जिसने संपूर्ण अंगोपांग बनाये उसका कुछ दोष न  
समजकर केवल हमारे चक्षु आपको व्यथा दाता हुवे, सो यह अपने  
अपने कर्मानुसार योग्यता अयोग्यता है इसमें और कोई क्या करे, ?  
तुमने देवमूर्तिकों अंधी, हीन, इत्यादि कुवचन लिखे इसका उ-  
त्तर हम प्रतिमाजी संबंधी देना अच्छा नही समजते, क्योकि-जैसा  
आपने श्वेतांबरोका अंतःकरण उःखित करनेको कुवचन लिखे  
ऐसा लिखाण विद्वानोंको योग्य नही है, विक्रम संवत् [८००] से  
पहलेकी श्वेतांबर, दिगंबर, दोनों प्रतिमामें विशेष जेद नही था. अब  
जो अधिक जेद पर गया है यह हठ धर्मी और पक्ष पातीयोंने  
पामा है. श्री केशरीआजीकी प्रतिमा श्वेतांबर होनेमें कोई शक

रकी शंका नही, यदि यह प्रतिमा दिगंबरी होती तो उसका अधिष्ठाता देव केवल केशरहीसें तुष्ट होता, लाखों रुपयों के आभूषण क्यों धारण करने देता, ! केवल अष्ट ख्यकी पूजा ही मान लेता. परंतु प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि जब श्वेतांबरी लोक अंगीयां धारण करके पूजन करते है तो जैसा आनंद और हर्ष उस समय उत्पन्न होता है दिगंबरीयोंकी पूजा समय नही दिखता.

(श्रु.)-बहुरी हे श्वेतांबरी हो तुम लिखी संवत १३९ के सालसें दिगंबरी मत निकला है सो यह तुम कोण ग्रंथके प्रमाणसें लिखते हो. यह तुमारा के-हना किसके प्रमाण में आवेगा. क्योंके नगन के प्रथम क्या है. इसकू स्थापन करो ताके पिछे तुम बोलना के श्वेतांबरी प्रथम है. कारण दिगंबर पक्षमे शंकराचार्य बी है. जो के आगे तुमारा मतका आमरचंद जती जो के आमरकोश बणायो. उसका शास्त्र, पोथी, पुस्तक, जयके द्वारा शंकराचार्य उस जतीका ग्रंथ पुस्तक सर्व श्री गंगाजीमें डबोदिया. बिचार करो तुम तुमारा माका पेटमेंसे यो-नीद्वारा निकले तब कोणसा रसमका, कोणसा सूत्रका कपडा सहित आये बे ? अर्थात् इससें भी येही साबत होती है के तुम लोग भी अवलनभ दिगंबरी थे पिछे काल दोषसें तुम नभ दिगंबरका प्रति पक्षी हो गये. वास्ते सर्व भेष स्वांगके प्रथम यो नम्रपना अकृत्रिम स्वयंसिद्ध है. तब कोनती मिति संवत था. जुड़ी लिख दिनी. १३९ संवत में नभ दिगंबर हूवा ये बात तुम जुड़ी लिख दिनी.-

( ४७ ) सुलकजी लिखते है कि-तुम किस प्रमाणसे संवत् [१३९] की सालमें दिगंबर मत निकला सिद्ध करोगे सो यह प्रमाण प्रथमतो हमारे श्वेतांबराचार्योंने अपने अनेक अनेक ग्रंथोंमें लिखा, ( इसरा ) यह प्रसिद्ध प्रमाण है कि-श्री महावीर स्वामीकों मोक्ष पधायें आजतक ( २४१७ ) वर्ष हुये, और दयानंद सरस्वती अपने बनाये सत्यार्थ प्रकाशमें लिखता है कि-शंकराचा-

र्यकों [११००] से अधिक वर्ष हुवे. और तुमारे लिखनेसें बह सिद्ध होता है कि-शंकराचार्यका अमरचंद यतिसे वाद हुवा तो इससे यह सिद्ध हुवाकि-उस समयजी श्वेतांबर मत प्रबल था. जबकि दिगंबर शास्त्रोंमें अंगपाठी श्रुत केवली मुनियोंका विचरना लिखा है, परंतु वास्तवमेंतों दयानंद सरस्वतीका और आपका दोनों लिखाण सत्य नहीं है, क्योंकि-अमरकोशका कर्त्ता अमराचार्य जैनी नहीं था, किंतु बौध था. और उसके समय शंकराचार्य नहीं हुए. श्री हेमचंद्राचार्यसें कुमारपाल राजाके समय शंकराचार्यका वाद विवाद हुवा, जिसमें जैन धर्मकी जय हुई. यह अन्यमतिजी स्वीकार करते हैं. और यह तुमारी बहुत बड़ी भूल है जो शंकराचार्यों तुम दिगंबर पक्षमें लेते हो. वह तो वाम मत प्रवर्त्तक था. यद्यपि तुमारी दिगंबर शास्त्र हमारी श्वेतांबर आम्नायसें पृथक् है, परंतु अन्यमतियोंके विचारमें जब हम तुम एक समजे जाते हैं तो हमको महान् कष्ट हम बातपर होता है कि-केवल तुम ही अपनी लेखनीद्वारा वाममत प्रवर्त्तकको आपना कहते हो.—

हमने देवगुरुकी कृपा और देशाटनके करनेसें स्वमत परमत और विशेषकर श्वेतांबर दिगंबर आम्नायके अच्छे अच्छे प्रमाणीक शास्त्र देखे, और दिगंबर आम्नायके अनेक विद्वान् पंडितोंसें मीलनाजी हुवा, परंतु जैसा आप लिखते हैं कि-शंकराचार्य दिगंबर पक्षमें है ऐसा न किसी शास्त्रमें देखा और न किसीसें सुना, और तुमारे लिखने में कोई प्रमाण इस विषयका नहीं है कि-किसी श्वेतांबर आचार्यके ग्रंथ पुस्तक शंकराचार्यने गंगामें डबोये. यदि कोई प्रमाण था तो अवश्य लिखनाथा. बिना प्रमाण कोई लेख लिखना यह विद्वानोंका काम नहीं. तु-

मने लिखा विचार करो-“तुम तुमारी माका पेटमेंसें योनिद्वारा निकले तब कोणसा रसमका, कोणसा सूत्रका कपमा सहित आये थे,”-सो भुल्लकजी ! आपहीतो कहिये जब आपने जन्म लियाया तो क्या जो चदर आप ओढ रहे हो यह तुमारे संगे-थी, ? और मलुम होता है कि कमरुलु जी हाथहीमें होगा, क्यों कि ऐसा न होता तो आप हमपर ऐसा तर्क न करते, और विशेष क्या कहे ! दिगंबर आम्नायकी आर्यका ( साध्वी ) कों एक वस्त्र ( सामी ) रखनेका अधिकार है सो वहजो साथ ही लेकर जन्म लेती होगी, !-इस लिखनेमें तुमारा दिगंबर मत सिद्ध नहीं होता, जिस नग्नपनेकों तुम स्वयं सिद्ध अकृत्रिम समजे हुए हो वह तुमारे शास्त्रानुकूल स्वीकृत नहीं है, यह केवल तुमारी ही भूल है. क्योंकि जन्म समयकी नग्न अवस्था ज्ञान सहित नहीं है. क्या कोइ तुममें पुढे कि-एक पुरुष निज तरुण कन्याकों आप नग्न होकर उसकोंजी नग्न करके गोंदीमें वेठावे तो क्या यह योग्य है ?-और नॉदनीक नहीं है ? सो किम लीयेकि-वह ज्ञानवान् है तो ऐसा क्यों करता है ?-जिम बालकको विषय वासनाका ज्ञान नहीं है उसका ही नग्न रहना स्वीकृत है, ज्ञान वंतका नहीं. और संवत् ( १३९ ) में दिगंबर मत निकला हम जो लिखते है आप हीके लिये लिखते है. प्रगट है कि-महा-वीरके पिढे ( ६०९ ) वर्ष के बाद शिवभूति मुनिने दिगंबर मत निकाला.

( धु )—और तुम लिखा के जैन दिगंबर पक्षके केत्ताक तेरापंथी श्रावकलोकर्म केसर लगी प्रतिमाका दर्शन पूजन नहीं करते है. सोही आपका लिखना सत्य है. जैसें तुमों श्वेतांबरके भीतर धूडिया तेरापंथी उत्पन्न हुवा तद्वत ही जैन दिगंबरके पक्षके श्रावक मंडलीमें तेरापंथी उत्पन्न हुवा है.

कोई शुद्रादिक यवन आदि उन लोकोंसें बुजे के तुम कौन धर्मवाले हो. तब वह लोक बोलते हैं की हमतो तेरापंथ वाले हैं. तब शुद्रादिक श्रवण करके चक्रत चित्त हो जाते हैं के येतो हमारे धर्मवाले तो नाही. फिरसें बोलता है के हम तेरापंथ वाले हैं. इत्यादि चिभ्रम विसंवाद. और मुनु जिस तुम कहते हो के जैन सो जैन तीनसें तियालाम राजका घनाकार येह लोक हैं. और इस लोकसें इतरसो अलोक सोही तुम विचार करो. इस लोकालोकमें कोण द्रव्य, कोण क्षेत्र, कोण काल, कोण भाव, कोण ठिकाणो जैन नहीं है. अरु कौण द्रव्य, कौण क्षेत्र, कौण काल, कोण भाव, कोण ठिकाणो जैन हैं. इम दोय प्रश्नमेंसे एक बात स्थापन करो.

(है.)—धुल्लकजी लिखते हैं जैसें श्वेतांबरमेंसें हुंदीया तेरापंथी उत्पन्न हुवे इमी प्रकार दिगंबरसें दिगंबर तेरापंथी निकले हैं. इस विषयमें हमकों अपनी समीक्षा करनेकी कोई आवश्यकता नहीं. आगे चलकर इम विषयमें जो कुछ धुल्लकजीकों उत्तर\* दिगंबरी तेरापंथी श्रावकोंने दीया है सो देख लेना.

(धु.)—तुम लिखा के श्रीमनसुव्रत स्वामीके वागमैं गवण हुवा. जिसकी बनाइ हुइ केमर्राआर्जाकी प्रतिमा हैं. बहुगै श्रीमनसुव्रतस्वामीका वारा था तब सवत कोणमा था? जैसें आब इम वर्त्तमानमें संवत १९४४ बरतता है. तैसें मन सुव्रत स्वामीका समयमें कोणमा सवत था? इसका प्रमाण लिखो. बहुरी तुम लिखी के संवत १३९ साल में दिगंबरी मत उत्पन्न हुवा. तैमे ही तुमारा श्वेतांबर मत कोणसा संवत मितिमें उत्पन्न हुवा. तुम कहोंगे अनादिकालका है. तो हमभी सत्यार्थ कहेंगे के नम्र दिगंबर अनादिकालका है. तुम कहोंगे अनादिकालका कैसाहै? इसका समाधान तो उपर लिख चुके हैं. के माताका पेटमेंसे निकलना है तब वस्त्र रहित निकलता है. इसमें माषीद होता है के नम्र दिगंबर अनादिकालका है.

मुनो श्वेतांबरी हो तुम लोक ओघा, मुपटी, धोली चादर, लकड़ी, हातमें धारण करी जिसमितिसे तुम श्वेतांबरी कवाये. जिस मितिमें तुम ओघा, मुपटी, धोली चदर, धागण करी तब कोणसा संवत मितिथी? तुम तुमारा माके पेटमेंसे

निकले तबतो धोली चदर, मुपटी, नही था. पिछे धारण किया सो धारण को-  
ण मित्ती संबतमें कीया था.—“नम्र आवे, नम्र जावे, नम्र करे कछोल; जो नम-  
की निंदा करे, सोही डावा डोल”.—जीव, पुत्रल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, येह  
छ द्रव्य है. तुमारे सूत्रोमेभी है. इस द्रव्यमें सुफेद कपडा सहित स्वेतांबरी को-  
ण है. छ हु द्रव्य. अग्नि उष्णतावत् एक है के सूर्य अंधारावत् अलग अलग है.  
विचार करो. छ हु द्रव्य अनादिकालका स्वयंसिद्ध अकृत्रिम जैसाका तैसा है.  
नामे सफेद कपडा सहित स्वेतांबरी कोण है? जैसे तुमलोक अपने मूसें कहते  
धन इत्यादि प्रकार तुा ह्मारी बेटी, आ हमारी लुगई, आ ह्माग बाप, आ ह्मारा  
कहते हो के केसरियाजी आररा मल, आ ह्माग मुत्र, आ ह्मारा गांव, आ ह्मारा  
ह्मारा है के तुम तीर्थका है इत्यादि विचार केसे तुम लोक विना विचारसें  
धोली चदर, पुस्तक आदि ये स्वेतांबरी है के तुम स्वे- ~~ना~~ <sup>सूर्य</sup> तीर्थ तु-  
पटी, धोली चदर, आदिका मेल अग्नि उष्णतावन एक है, के तुह्माग, पात्रा,  
धोली चदर आदिका सूर्य अंधाराका सा अंतर है. प्रथम तुम हुये के मुपटी;  
धोली चदर, आदि हुये? अर्थात् तुम और मुपटी, धोली चदर, संग संग ही हुये!—

हमकूतो प्रत्यक्षं प्रतीति ये आंती हैं के तुमारी मुपटी, धोली चदर, औ-  
घा, पात्रा, लकड़ी आदि इनकू कोई अभीमें जलादेवे तो तुम जलनेका नही.  
तुम मुपटीकू धोली चदर आदिकू जानते हो. बहुगि मुपटी, धोली चदर, ये  
जब पदार्थ तुमकू जानते नही. वास्ते जैसा तुम हो तैसा येह मुपटी, धोली च-  
दर आदिक नही. बहुरी जैसी धोली चदरादिक तैसा तुम नही. तुम्हारा और  
मुपटी, धोली चदर आदिका अग्नि उष्णतावन एक स्वरूप, एक लक्षण, एक द्र-  
व्य, एक भाव, एक काल नही. तुम अरु मुपटी धोली चदरादिक अलग अलग  
हो. कहो विचार करो. तुमे स्वेतांबरी हो के यह मुपटी धोली चदरादिक स्वे-  
तांबरी है. विचार करो विवाद मत करो.

(हं.)-शुद्धकजी पुठते है कि-“श्री मुनि सुव्रत स्वामीके समय  
रावण हुवा जिसकी जराई श्री केशरोयाजीकी प्रतिमा है सो उस  
समय कोन संबत् था,?—जैसा कि अब (१९४४) संबत् चलता है”-

बाह ! क्षुल्लकजी, !-धन्य है, इसी विघटतापर पुस्तक लिखनेका साहसकिया ! बीसमे तीर्थकर मुनिसुव्रतस्वामी मल्लिनाथ और नमिनाथके अंतरमें हुवे. मुनिसुव्रतस्वामीके शासनमें रावण हुवा. उसने यह मूर्ति बनायी. मुनिसुव्रतस्वामीसे आजतकके वर्ष कल्पसूत्रमें लिखे है. काढकर गिन लो वही संवत् था. जो पुत्र, माता पिताके जीवते उत्पन्न होता है उसको इस प्रमाणकी क्या आवश्यकता है कि-मैं किसका पुत्र हु, ?-यह आवश्यकता तो उसी मनुष्यों होती है कि-जिसके माता पिता विद्यमान न हो जब हम लिखते है कि-दिगंबर मत संवत् [१३९]में उत्पन्न हुवा तो तुमारा यह पुठनाजी समुचित नही है कि-श्वेतांबर मत किस समयमें निकला. आप विचार करो ! मनुष्य जन्मलेकर जब बाल्य अवस्थाको ओमता है तो ब्रह्म धारण करता है, यह अनादि कालकी रीति है या नही ! और जो कहोंगे है तो फिर सोचो ! किसका पद सिद्ध होता है. ?-यदि तुम अपने दिगंबर आम्नायके किसी ग्रंथमें जी यह लेख दिखला दो कि-जन्मसे मरण पर्यंत मनुष्यों नष्ट रहेना ही कहा है तो हम तुमारा प्रमाण मान लेवेंगे. परंतु ऐसा नही है. जिनकल्प मुद्गा श्वेतांबर आम्नायमें जी मानी है ( जो अब काल दोष और संहनने दोषसे विवेद है ) उस मुद्गाके धारी साधु मुनिराज संसारी जी-वोंसे जिन विचरते थे. और जिसको तुम जन्मकी अपेक्षा दिगंबर सिद्ध करते हो यदि वही दिगंबर मान लीया जाय तो संसारके संपूर्ण व्यवहार व्यर्थ हो जाय. क्योंकि जब माताके पेटसे ही दिगंबरी उत्पन्न हुए तो गुरु आम्नाय वा शास्त्र पठन पठनकी कोई आवश्यकता ही नही रही. और संसारका संपूर्ण व्यवहार ज्ञानमें समजा जाय. सो ऐसा कहना आकाश पुष्प और बंध्यापुत्रके विवाह तुल्य है,-



भुल्लकजी लिखते हैं “अधौघा, मुपटी, धोली चदर, लकमी हाथमें कोणसी मिती, किस संवत्में धारण करी ?-और तुमारी माताके पेटसे निकले तब धोली चदर, मुपटी नहीं था, पीछे धारण करा. सो धारण कोणसी मिती संवत्में करा था” ?-

(भुल्लकजीका प्रश्न.) (पद्य.) नम्र आवे नम्र जावे, नम्र करे कडोल;

जो नम्रकी निंदा करे, सोही डावा डोल, ?.

(हमाग उत्तर.) (पद्य.)-जन्म समय अज्ञानी होवे, वापकर्म कडोक,

मरण समयके कष्ट घनेरे, समज सोचकर बोल, ?.

जन्मकी अपेक्षा चदर, मुख वस्त्रिकाका उत्तरतो उपर लिख आये, परंतु इतना अवसर पाय विशेष लिखते हैं कि-अनादिका-लसें जो प्रवर्तन चलता है उसका कोई संवत् मिती नहीं होता.

संवत् मिती नवीन वस्तुकी होती है. भुल्लकजी बारंवार एक शब्दको उच्चारण करते हैं कि-नम्र, नम्र, नम्र.-यह नहीं विचार ते हैं कि-इसका अर्थ एक समान सब जगें नहीं होता, देखो जब बालक जन्म लेता है वह नम्र दशा उसकी विषय वासना ज्ञान रहित है, और जब तरुण अवस्थामें विषय विकार सेवन करता है वह नग्न दशा पाप विकार युत है, और यह कर्मजी गुप्त स्थान होता है. और जब मरण समय आता है उस मरने वाले मनुष्यके जाव विचित्र होने हैं, परंतु वस्त्र तो उस वस्त्रजी शरीरके साथ रहते हैं, सब जगह एक नम्र, नम्र, ही पुकारते रहना विचारशील पुरुषोंका काम नहीं. (यहां एक दृष्टांत है.)

एक मनुष्यने एक तोता पाला, और उसे (इसमें क्या शक है?) यह वाक्य सीखा दिया. पिंजरेमें घालकर बाजारमें बेचनेको आया. ग्राहकने तोतेके मालकको पूछा कि-तोतेको मोंछ क्या लेओगे? मालक बोला सोरूपया लूंगा. झूठ हो तो तोतेमें पूछ लो. ग्राहकने तोतेसे पूछा. क्यों रे ! तोता ! तूं सो रूपयेका है. तोतेने उत्तर

दिया [इसमें क्या शक है?]-ग्राहकने बन्नी खुशीके साथ सो रुपया देकर तोता खरीद लिया, मनमें विचारता है तोता बन्ना इजानी है. रस्तमें तोतेसें पूछता है क्यों गंगाराम ! तुमसें हमको बहोत लाज होगा ? तोतेने कहा [इसमें क्या शक है?] ग्राहकने धरले-जाकर रख दिया. रोज अच्छी अच्छी चीज खोलाता रहा. कितनेक रोजके बाद ग्राहकने तांतेसें पूछा-तो क्यों जी गंगाराम ! इतने दिवस हुये तुमने हमको कुछ लाज नही दिवाया सो क्या ! चुपके ही रहोंगे ?-तब तोतेने वही कह दिया ( इसमें क्या शक है ? )-फिर मालक बोला तो क्या ? हमारे रुपये डूब गए ?-फिर तोता बोला (इसमें क्या शक है ? ) फिर मालक बोला तेरा बेचनेवाला कोई पाषंमी ठग ही था ! तोतेने जो याद था फिर कह दिया [ इसमें क्या शक है ! ] इस दृष्टांतका सारांश यह है कि-जैसे तोतेके एक शब्दने उसके ग्राहकको डःख दिया उक्त क्षुल्लकजीके नम्र, नम्र पुकारनेको जो बिना ज्ञान धारण करेगा सो ठगाया जायगा. क्योंकि नग्न शब्दका अर्थ सब जमें एक सार नही हो सकता. और नग्न नग्न सब एकजी नही हो सकते.-

क्षुल्लकजी लिखते हैं-“पट्ट द्रव्यमें श्वेतांबरी कोन है,”-यह कितनी बन्नी भूल है, ! इस लिखनेसे हम नही समजते, उनका तात्पर्य क्या है, ? क्योंकि पट्टद्रव्यसें त्रिन्न त्रैलोक्यमें कोई पदार्थ नही है, ओर यह हमारा बेटा, यह हमारी बेटी, यह हमारी लुगा ई. यह हमारा बाप, खाना, पिना, मलमूत्र, गांव, धन, इत्यादि श्वेतांबरी लोक नही बोलते, जैसा संसारी जीवोंका व्यवहार है तैसा सबका है, इससें क्षुल्लकजीने क्या सिद्ध किया ?-कंशरीयाजी तीर्थ हम प्रथम जी लिख आये है कि-जो जाव सहित पूजे, आरा-

वे उसका है. और उसका पूजक आराधक है, सोही केशरीया-  
जी तीर्थका है. परं यह तीर्थ उन मनुष्योंका नहीं है जो श्वेतां-  
बर आम्नायकी अन्य प्रतिमाओंसे जिन रहते हैं जैसे तुम.-

और हमारी चदर पुस्तकादि विशेष पुढा कि-“तुमारा वेष  
श्वेतांबरी है या तुम श्वेतांबरी हो !” सो हम तुमसे ही पुढते हैं  
कि-भुल्लक ब्रह्मचारी तुम हो ?-या तुमारा आत्मा, ? और धर्म-  
दासजी नाम तुमारा है ? कि तुमारा आत्माका, ? तुमारा जन्म  
प्रथम हुआ कि तुमारा आत्माका ?-और तुमको जीवते या मरने  
पर अग्निसँ संस्कार किया जाय तो तुम जी जलनेके नहीं.  
इसी प्रकार हमको जी समज लो.-यह बर्क तुमारी बालकवत्  
है. बुद्धिमानोके प्रमाण योग्य नहीं. परंतु हम क्या करे प्रथम  
जब तुमने ही लिखा तो हमको जी तछत् ही लिखना पमा.

(धु.)—ये तो हमको भी मालूम है के जैन दिगंबर आम्नायका श्रावक  
मंडलीमें केताक तेरापंथी नामकमध्ये ऐमा अबोध जन हैं के जैन दिगंबर प्र-  
तिमाके चरण उपर सुगंध पुष्प केसर विलेपन होय तो वह लोक उन्मूर्त्तिका  
दर्शन पूजन वंदन नहीं करते. अर्थात् आखियादिकका वह लोक योनादिक  
तो प्रेम भावसे देखते हैं. परंतु फिका भावसेभी केसर चर्चित प्रतिमाका द-  
र्शन नहीं करने. तब श्वेतांबरी मंदिरमें—तो वह तेरापंथी नामक भ्रष्ट लोक  
किस वास्ते जावेगा. ऐमा इस काल दोपसँ जैन दिगंबर आमनायका श्रावक  
मंडलीमें केताक ऐमा अबोध जन भी हैं. इस प्रमाणकी अबोध बुद्धि आपलोक  
न रखियेगा. यहमेरी लघुता ग्रहण कारणः—

(है.)—भुल्लकजीने तेरापंथी दिगंबर श्रावकों पर जो आ-  
क्रमण किया था उसका उत्तर पंमित ऊरगदलाल बलदेवदास  
आदिने सुजानगढ़ जिल्ला विकानेरके द्वितीय सभा पत्रमें उपवाया  
है, जो मुरादाबादके गुलजार अहमदी यंत्रालयमें श्रावणमास  
संवत् १९४५, में पृष्ठ ११, सँ १६, तक निम्न लिखित ढपा है.

## (अ.) (वदनगर मालवा प्रश्नोत्तर) —

क्षुल्लक धर्मदास और पंथित ऊरगदलाज बखदेवदासजी आदिकें श्रीमज्झिमेख चंडके मतानुजाई यथार्थ वस्तुके ज्ञाता सज्जनों-कों प्रगट होवै की नाम मात्र क्षुल्लक धर्मदासकी पत्रिका देश माजवे वदनगर गाममे आई और आपके वहांजी आई होगी इसमे जिस तरहसे धर्मविरुद्ध समाचार थे तिस पत्रिका उत्तर इस तरहसे लिखा गया है सो आप यथार्थ ज्ञातानकों प्रगट करते है.

१. प्रथम तो हमने उनसे यह पूछा की नाम तो क्षुल्लक और आचरण यह सो यह जेष कोनसे मतके अनुसार धारण किया ! अगर जो कहोंगे कि जिनमतके अनुसार धारण किया तो हम यह पूछते हैं कि जिनमतमें तो क्षुल्लक ऐसा नाम झारमी प्रति-माके पहले जेदका है और उसका आचरण करनेवाले तो खंम वल्ल मात्र परिग्रह और शुद्ध दोष टाल मुनिवत् परवर आहारकों जाने है और तुम तो ख्व इकठा करके आरंजादिक करते हो और डमरोंको आरंज आदिकका उपदेश देते हो सो ये काय शास्त्रविरुद्ध और जिन आज्ञा जंगको लिये हुये हैं और आज्ञा जंगोंको अनंतमसारो जगवानने कहा है इस हेतु हैं तो तुम मिथ्या जेषो हो सो तुमारी पत्रि हमारे मान्य नही ह-सरे तुम्हारी पत्रिकामें जितनी बातें तुमने लिखा है सो सब श्री मज्झिमेखके मतसे प्रतिकूल अर्थात् विरुद्ध लिखी है उसके नि-षेधके अर्थ और जोले जीवोंके मन न बहकनेके अर्थ उत्तर लिखा है सो एक तो यह है;

१. इसरे उनने यह लिखा की जैनमतमे दोय पद है एक दिगम्बर इसरा स्वेतांबर तिसका उत्तर ऐसा लिखाकि यह कहना तो जिनको दो नेत्र भ्रष्ट नए हो तिनका है तुमारा जी एक नेत्र भ्रष्ट जया हुवा सुणाहै इसरातो कायम है अगर वो जी भ्रष्ट होगया होवे तो मालूम नही यह वचन कठोर है सो माफ करना इस लिखनेका मतलब यह है की स्वेताम्बरोको तो संसय मिथ्याती शास्त्रोंमे जगैं जगैं आचार्योंने बर्णन किये है सोही कहा है ( ईंदोविय संसेयो ) ऐसा पद है सो जिनमत बाह्यकों तुमने जिननमतमे माना इस हेतुसे जी तुम जिनमत बाह्य हो.-

२. तीसरे उनने यह लिखा है कि तुम तेरापंथी ऐसा ह-मको लिखते हो सो तुम मेरे पंथी नही ऐसा व्यंग लिखा है तिसका उत्तर इस तरहसे दियाकी जो श्री जैनधर्मके श्रद्धानी है सो तो नेम करके दर्शन ज्ञान चारित्र भ्रष्ट ऐसे तुम सो तुम्हारे पंथी कैसे होय श्रद्धानीतां तेरेप्रकारचारित्रके धारक ऐसे जिनेंछ मुनेंछ तिनके पंथसे है निसवास्ते तेरहपंथी कहलाते है-यह तेरापंथी सब्द कुदेव, कुगुरु, कुधर्मका, निषेधवाचक है तातैं सत्यार्थ धर्म प्रवर्त्तने वालोंका नाम तेरापंथी है और उसमें यह लिखा है की तेरै प्रकारके चारित्रको धारे वे तेरहपंथी होते हे सो तुमतो हिंस्यादिक वा कषायादिकमे प्रवर्त्तते हो तुम तेरह पंथी कैसे: इसका उत्तर दियाकी कल्याणतो कषायोंका जितना अंस अज्ञाव होवैगा तितना अंस ही होवैगा परंतु इस लिपनसे तेरहपंथी नामका अज्ञाव नही हुवा सोचो. अर्थात् विचारांके जिनके उः खंरु पृथ्वीका राज्य और उषानवैं हजार रानी तिनकोंजी दिगं-

बरी कहै और अवारजी नाना परिग्रह आरंज करी सहित गृह-  
स्थ श्रावण दिगंवरी कहलाते है सो प्रतिष्ठ है जो दिगंबर मुखा-  
धरनसे दिगंवरी कहलाते तो चक्रवर्त्त नारायण बलज्जघ काम  
देव मंडलेस्वरादिक कोईजी दिगंवरी नहि कहलाते परंतु वे सब  
कहलाते है तैस ही तेरहपंथी जानने. ऐसैं अपनी कषायें पुष्ट  
करनको खोटा अर्थ करना योग्य नही इसका फल सर्वज्ञाने नि-  
गोद कहा है जरा जय रखवो क्यों कुपद्ध करकैं निजपर  
कोम बोते हो.-

४. चौथे उन्ने यह लिखा की तुम तेरहपंथी तो कहलाते  
हो और विषयजोग सेवना योनादिकका अवलोकन स्पर्श  
करते हो सो तुम महापापी हो ऐसा अपभ्रंस शब्द लिखा है  
तिसका उत्तर ऐसैं दिया की जो अतिलुब्धता करके विषयादि-  
कका भेवन करते है तिनके पाप बंध होता है लेकिन महापापी  
तो मिथ्यादृष्टि प्रतिज्ञा जंग करनेवाले और धर्मके आश्रित आ-  
जीवकाके करनेवालोंको कहा है और योनादिक अवलोकन  
करनेवाले महापापी है तो तुमारे पिताने तुम्हारी माताका योनि  
आदि अवलोकन या स्पर्शनादि नहि किया मालूम पडता है  
तुम्हारी उत्पत्ति किसी और हीसे है सो तुमारेही लिखनेसे मालूम  
होती है अगर जो कहोगोकी हमारे पिताने किया तो तुम महा-  
पापीकी अवलाद उहरे ऐसी ऐसी कुजुगते बनाबनाकर ज्ञांछे  
जीवोंको क्यों मबोते हो जरा नर्क निगोदादिकका जय रख  
छःस तुम ही को भुक्तना पमेगा;—

५. पांचवे उसने यह लिखा कि केशरलगे प्रतिविंब अवलोकनका तो त्याग करते हो और गोवरादिक अवलोकनका त्याग नहीं करते हो तिसका उत्तर यह दिया है कि हमारे तो जिनेंछजगवानके मतमें वस्त्र, भूषण, गंधमाल्यादिक परिग्रह सहित तथा राग द्वेष ज्ञयादिक वर्द्धिक पतिविंब पूज्य नहीं. फकत निरावरण निर्विकार निर्दूषण जिनेंछ सदृश बीतराग ज्ञावकी वर्द्धिक जिनेंछकी आज्ञा प्रमाण जिनविंब पूज्य है और जो इसकी अधिक चर्चा करना होतो शास्त्रोंका प्रमाण लेकर इन्दोर तथा बदनगरमें हाजिर होना तुमको सर्वज्ञ मतके अनुसार उचित दिया जावेगा.

६. ठठे, उनको यह लिखा है कि तुम चर्चा बगेराहकी पुस्तक उपाकरके जैन ग्रंथोंका अधिनय किया सो यह तुमने बड़ी छष्टता करी इसका फल अक्षरके अनंतवे ज्ञाग ज्ञान धारककी अवगाहना पावोगे,-

७. सातवे अब १. सिष्या हितकारी तुमको देतेहै तुम सिष्या देनेके लायक पात्र तो नहीं हो सोही कहाहै-श्लोकः हितोपदेशं मुख्याणां प्रकोपाय नशांतये. पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनं, १, परंतु जैन धर्मियोंका चित्त करुणारसकर सदा काल आश्रित रहता है तिस कारणसे तुमको लिखते है कि ऐसी धर्मछोहकी बातें करोगे तो तुम्हारे हकमें बहुत बुरा होवेगा बिचारी पहलेजी इसी अपराधसे दो चार जगें तुम्हारा अपमान हुआ है एकतो देश मालवेमें धार नगरमें प्रतिष्ठा हुई तब हमारे साम्हने तुमको सत्पार्थ ज्ञातानकी सज्जामेसे ज्ञागना पन्ना, छत्तरे

उत्पत्तिजीसें तुमने धर्म विरुद्ध चरचा करी तद-दिह्नी मंमलनेसे निकाले गये ऐसे. २ तुम्हारे अपमान तुमको याद नही जिनको अपमान हिताहितका विचार नहि तिनको यादा लिखना व्यर्थ है॥ इस रीतिसे उसकी चिठीका उत्तर दिया गया है और आप साधर्मियोंसे जो हमारी यह प्रार्थना है की एसे कुधर्मनको सिद्धा रूपी दंड दिया करें सो आयंदेसे धर्मविरुद्ध चरचा नही करें-इति शुद्ध मिति मार्ग सोर्ष सुद्ध ७ संवत् १९४४ भृगुवार, ॥-

(है. —इस तेरापंथीयोंके लेखमें अशुद्धियोंके अतिरिक्त पद्यपि अनेक ऐसे कुवचन जरे है जो विद्वानोंके लिखने योग्य नहीं. परंतु हम क्या करे? जब भुल्लकजीने ही एमे शब्द लिखे जो अकथनीय है तो यह बिचारे श्रावक तद्वत् लिखेतो आश्चर्य ही क्या है, !-विद्वानोंकी यह रोति नही है कि किसी मनुष्यकों-अनंत संसारी, मिथ्याज्ञेयो, दो नेत्रभ्रष्ट, तुमरा एक नेत्र भ्रष्ट, तुम जिनमत बाह्य हो, दर्शन ज्ञान चारित्र्य भ्रष्ट, कषाय पुष्टकर नेकों खोटा अर्थ करना, तुमारी उत्पत्ति किसी औरही से है, महापापीको ओलाद, डःख तुमहीकों भुक्तना पड़ेगा, बन्नी छष्टता करी, -इत्यादि निज लेखनो द्वारा लिखे. वा. मुखसेंजो कहै. परंतु क्यों न हो, ! भुल्लकजीके दिगंबर पद्धके ही तो श्रावक है. कहे ही कहै;—

इसी लेखमें निम्न लिखित वाक्यजी समीक्षा करने योग्य है “भेतांबरोको तो संशय मिथ्याती शास्त्रोंमें जगे जगे आचार्यों-ने वर्नन किये है सो ही कहा है कि-ईदो वियसंसेयो;”—



यह लिखना हमारे संबंधी है और अप्रमाणिक और मिथ्या है. बिना आधार कोई वचन लिखना अल्पज्ञताका चिन्ह है. परंतु जिस धर्मदासजी भुल्लूकने दिल्लीमें संवत् १९३० के लगभग पूर्ण दिगंबरी श्रावकोंमें चतुर्मासा करके अपना इतना मान्य कराया जो इस समयमें अन्य पुरुषका होना कठिन है, और जिस धर्मदासजीकों तेरापंथी और विशपंथी दोनों प्रकारके दिगंबरीयोंने आचार्य करके माना, और उनके चरणोंकी रजकों निजमस्तकसें छूँछाया, आज उनही धर्मदासजीकों जब तेरापंथीयोंने उपर लिखे हुए अनेक कुवचन कहे तो यदी एक दो कुवचन हमकोंजी कह दिये तो कुछ हर्ज नहीं. क्योंकि हमतो जिन ही हैं. और जो उन कुवचनोंका उत्तर लिखा जावे अनेक दिगंबरीयोंका चित्त व्याकुल हो, इहां हमकों भुल्लूकजीका ही उत्तर देना अजिष्ट है. फिर अन्य मनुष्योंको प्रतिपक्षी करनेमें कोई लाज नहीं है. हा ! इतनातो अवश्य लिखेंगे कि-जो सूत्र दिगंबरी तेरापंथीयोंने उपर लिखा है सो सार्थक और प्रमाणिक नहीं है. क्योंकि जिस धर्मदासजीकी उन्होंने पूर्वोक्त मान बढ़ाई प्रतिष्ठा बढ़ाई थी तब तो क्या उनमें गुण था ?-और जब निंदा बापी तब क्या अवगुण होगया था ?-यह विदित न हुआ.

(क्षु.)—यह मेरी लघुता ग्रहण करणा. क्यौ के दिगंबर पक्कवाले श्रावक और स्वेतांबर पक्कवाले दोनु श्रावक मंडलीमें कोई जीव सम्पत्त सहित दान पूजा, जीवदया, पंच परमेष्टीका जाप्य नाम पापक्रियाका त्याग, चोरी, हिंसा, कुसील, जुवा, मांस, मद्य, बेदया, इत्यादि पाप, अपराध, राग, वैषादिकका जो कोई

त्याग करेगो उसीका जला होगा. मेरी समजतो येती है. जादा समज मेरी मेरे जीतर चंद्र चांदणीवत्, सूर्यकिरणवत्, अग्नि उष्णतावत् एक मेरी मेरे जीतर बुद्धि है सो है ही है. जिसकी निशाणी और सैदाणी क्या बताऊ. घायलकी गति घायल जाने, क्या जाने वैद्य विचारा. इति अलंब ॥

(ह.)—भुल्लकजी लिखते है कि “मेरी लघुता ग्रहण करणा” सो बने आश्चर्यकी बात है कि-रस कालमें कोई किसीका ऐश्वर्यजी सहन नही कर सकता तो लघुता क्यों कर ग्रहण हो सकती है, !-और आपने लिखा कि-“दिगंबरी श्वेतांबरी दोनु पक्षके श्रावक जो जाप दान पूजा जीव दया इत्यादि करेगा उसका जला होगा”-यह लिखना सर्वथा वृथा है. क्योंकि यदि दोनु पक्ष वीतराग प्रणीत एक ही मार्ग चलते है तो अंतर क्यों है ?- एकतो सम्यक्तवान् और एक मिथ्यान्वी कैसे हो सकते है, ?-और अंतर है तो उत्तर दक्षिण जिन्न जिन्न मार्ग चलनेवाले एक स्थानपर क्योंकर पहुंच सकते है ?-इसमें जैसी आपकी समज आपके पास चंद्र चांदणीवत् सूर्य किरणवत् अग्नि उष्णतावत् है यह आप ही के पास रहे. हमको अथवा अन्यको उससे कोई लाज नही, क्योंकि जैसी तुमारी समज तुमारे पास ऐसी हमारी हमारे पास. और तुमने लिखा के:-

“ घायलकी गति घायलजाने, क्या जाने वैद्य विचारा ” सो जो मनुष्य अथुज कर्मरूपी-शस्त्रोंसे घायल हुवे है उनको सत्प स्याद्वाद जैनसिद्धांतरूपी ओषधी बहुत शिघ्र अज्ञा कर देती है. भुल्लकजी ! आप ऐसा लिखते हो कि-“ क्या जाने वैद्य वि-

चारा " इसका तात्पर्य यह है कि तुमारे चित्तके भावकों कोई नहीं जानता. और जैन सिद्धांतका सारांश यह है कि-सिद्ध जगवान् अपने ज्ञानमें सर्वकाल सर्वदर्शी है. अब कहो ! तुमारा लिखना सत्य है या असत्य ?-यदी सत्यमानोंगे तो तुमारा जैन धर्मसें अविश्वासी होना सिद्ध होगा. और अविश्वासी सिद्ध हुवे तो जैन आमनायसें निन्न रहोंगे. और जब निन्न हुवे तो श्वेतांबरी रहे न दिगंबरी फिर बतलाइये आप किस गणनामें गिने जाओगे, ?-

(क्षु.)-कोई सज्जन हमारे नाम कृपापत्र जेज्यो तो हमारा ठिकाना हम प्रमाणसे है. खानदेश जिह्वा धूलिया माक घर मेर मुकाम गांव कमुंबामे शुद्धक बह्मचारो धर्मदास. इस प्रमाणसे कोई सज्जन नाम पत्र जेज्यो तो शास्त्री बाजबोधी अह्मरा-धारा भंजना. इति अञ्च. ( इति प्रथम जाग समाप्त. )-

( ह. )-शुद्धकजी लिखते है कि-" जो कोई सज्जन पुरुष हमारे नाम कृपापत्र भेजे तो अमूक ठिकाने अमूक पत्तेपर भंजे-"

यह बड़ा विजह्वा लेख है, क्यों कि प्रथमतो इस जीवका भौतिक्यमें कोई ठिकाना ही नहीं, जहां जहां यह जीव जन्म मरण करता है वह ठिकाना मुसाफरके रैनवशरेवत् है. और थव्य जीवकों ठिकाना तो परंपरा करके मोक्ष ही है. ( इसरा ) जब निजघर त्याग शुद्धकजी हुए तो किसका ठिकाना ? किसका घर ? और किसका पता ?-यदि नाम मात्र होवेभी तो गृहस्थी-कों संभवे है त्यागीको नहीं. हमारातो यही सिद्धांत है

उहा.

जब घर ठोमा आपणा-शिरके पाडें केश.

ममता माया त्यागके,-विचरें देशविदेश.

१

जब ऐसा विचार लिया तो किसका ठिकाना ? किसका देश ? किसका गृह ? और किसका परिवार ? किसका पुस्तक ? किसका चोपानीया ? किस्सें प्रीत ? और किस्सें वैर ? सब हो-सैं भिन्न रहकर निज आत्मकल्याण करना ही ठीक है, क्यों कि-यह जोव अकेला ही चोरासी लक्ष जीवयोनी और त्रिलो-कीमें भ्रमता रहता है, इसलिये ज्ञानवान्को किसी स्थान वा देश संबंधी निज ठिकानेका ममत्व नहीं रखना चाहिये. इसमें मुर्छा होनेसे \*परिग्रह दोष आता है.

(बुद्धकजीके लेखसें पाया जाता है कि इस प्रथम ज्ञागके अतिरिक्त वे कोई अन्यज्ञागत्री रचेंगे सो जब हमको इसके अन्यज्ञाग मिलते रहेंगे समीक्षा भी कीयी जायगी.)

(इतिअलं.)

इन दिनोमें एक पत्र बम्बईसें जैनविद्याशालाके अध्यक्ष माणाभाइ उत्तमचंदने हमारे पास भेजा. यह शिलायंत्रका उपा हुवा इसमें आपनेवाले उपानेवाले दोनोंका नाम नहीं है. जिसको गुम्म चोछी कहते है सो यह है. नाम चाहे किसीका न हो परंतु इसका अंतिम लेखसें यह विदित होजाता है जिसने यह उपा-वाया है. अंतिम पंक्तिमे यह पद लिखा है कि-“धर्मका उद्योत

होगा." इसका ध्वन्यर्थ समझ लीजिये, शुद्धक धर्मदासजी खुद अपना नाम प्रगट बतारहे हैं कि-हमने यह उपवाया. परंतु प्रगटपने नाम न लिखनेसें राज्यकी चौरी और राज्यघोही तो धर्मदासजी हो चूके. ऐसा करना उचित नहीं था. उचित यह है जो छेख लिखा करे उसमें नाम न छुपाया करे. श्वेतांबर न्यायांकुशमें तो लिखते हैं अमूक हमारा नाम-अमूक ठिकाना-अमूक पता-अमूक शिरनामसें पत्र देना, और यहां सबको उमा दिया. इसजगह कौनका मर था ? सो विदित न हुआ.

शुद्धक धर्मदासजी इस बिना नामकी जांहर खबरमें लिखते हैं कि-मैं बड़ा दिल्लीगिर होकर कहता हूँ श्वेतांबर धर्ममें बड़ी पोख घस रही है. केइ तरहका दुंग करके केवल उगाइ शुरू कीयी है इसका कारण यह है कि-निःस्वामित्व धर्म है, अज्जी जैनमें कोई राजा नहीं, एक रुगनाथ नामा हुंढिया आत्माराम हुंढियेका चेला सो कज्जी तो यति बन जाता है, कज्जी पीत वस्त्र धारण कर लेता है, ऐसे नाना प्रकारके दुंग करके लोग लोगाइयांको ठगता है.-जगवान् विजय बुटेरायजीका शिष्य है सो ज्जी नाना प्रकारके वेषांतर बनाकर उगाई करता है. महात्मा ऊबेरचंद ताराचंद कटणी मोरुवामाका रहनेवाला ज्जी बन्नी उगाई करता है, संवत् [१७४५] में जलगांवमें इसने चौमासा किया था, और एक स्त्रीको भगाके ले गया था. फिर दोवर्षकी कैद भुगती, ऐसे ऐसे कपटीओंसें श्वेतांबर लोग बहोत राजी रहते हैं,-

[ इसका उत्तर. ]

शुद्धकजी लिखते हैं कि-श्वेतांबर धर्ममें बन्नी पोख और

ठगाई चलती है इसलीये मैं बन्ना दलगिर हु. यह उन्होंका दिलगिर होना सरासर व्यर्थ है. क्योंकि-धर्म जो है सनातन है. इसमें जले और बूरे दोनो प्रकारके शरूश रहते है भले सज्जन निष्कपट धर्म पालते है इतर जन इतर प्रकारसे पालते है और इसमें विघ्न होना भी कुछ नवीन नहीं. धर्मी और अधर्मी सदैव चले आते है. जैनी राजा न हुवा तो क्या हुवा ! जोराजोरी धर्मतो बहभो किसीसें नहीं करा सकता. अलबते ! जिस धर्ममें राजा हों उस धर्मकी उन्नति शोभा तो जरूर बढ़ सकती है उल कपट करनेवालोंको दंभभी दे सकता है, परंतु इससें क्या हुवा- अंतःकरणमें जो अधर्मी है वे कुछ राजाके हुकमसें धर्मी नहीं बनते, जैन धर्ममें जो आधूनीक पंथो ठगाई करते है यह भी नवीन प्रचार नहीं है. तीर्थकरोके विद्यमान होते भी (३६३) पावंरु चलते थे और जैनमें भिन्न प्रचार चलानेवाले चलाते ही थे जैसे मरिचि और गोशालाने मनमाना पंथ चलाया था. सब कोइ जैनी जानते है. फिर जो आजकल नवीन प्रचार चलता हे इसमें आश्चर्य ही क्या ?-रुगनाथ टुंडियेको आत्माराम टुंडियेका चेला लिखा यह भी जूठ है क्योंकि-आत्मारामजी टुंडिया है नहीं और जिस समय वे टुंडिये थे उस समयके गुरु वा चलेसे उनका अब कोइ संबंध नहीं. फिर आत्मारामजीको रुगनाथसें क्या संबंध है, ? और असलमें रुगनाथ नामे कोई मनुष्य उनका शिष्य है ही नहीं. भगवान्विजय बुटेरायजीके शिष्य विषय और महात्मा ऊबेरचंद ताराचंद कटणी मोरुबामा विषयक लिखा अगर वह सत्यबात है तो भी सुल्लकजीको दिलगिर होनेका क्या प्रयोजन!

क्या ! दिलगिर होनेसें वे हठ जायगें ? बुटेरायजी हमारे गुरुके गुरु है उनके शिष्य प्रति शिष्य हम [१००] साधु अंदाजसे है. अगर इसमें एक दो विपरीत चलते हो तो इसका कोई क्या करे? जोराजोरीतो कोई किसीको रख नहीं सकता. जो जेसा करेगा आप भुगतगा. अगर क्षुल्लकजीको ऐसी बातेंपर दिलगिरी ही रहती है तो पहले अपने समुदायकी तलाश तो कर लेवे कि-दिगंबर आमनायमें मरे जैसे दूसरे क्षुल्लकजी होकर क्या क्या कृत्य कर रहे हैं और पांभे लोग कैसाक चलन चल रहे हैं.

इन्ही दिनोंमें एक महिनारोज जी नहीं हुआ है पंमित जीयालालजी बम्बई जाते समय वियावर अर्थात् नयाशहर गये थे. और शेष अमोलकचंद चंपालालके नवीन मंदिरमें दर्शन करनेको गये तो दरवजेमें एक मयूरपांढी और कमलधरा देखा. और एक मनुष्य मलीन चदर ओढ़े मुख ढके हुआ हिल रहा था. दो चार मनुष्य जो निकटवर्त्ती थे उनसे पूछाकि- यह कौन है ? तो ऊत्तर मिला क्षुल्लकजी है और ध्यानमें बैठे हैं. यह सुनकर पंमित जीयालालजीने विचारा कि-चलो बाजार देख आवे, लोटते समय अवश्य मिलेंगे, क्या ग़ड़ीबात है कि-यह क्षुल्लक धर्मदासजी ही हो ! क्योंकि- उनके अतिरिक्त तो आजकल दिगंबर आमनायमें कोई क्षुल्लक ही नहीं है, जब बाजारसें दो तीन घंटे पीछे लोटकर आये तो दरवजेमें क्षुल्लकजी न मिले. पुछनेसें पता मिलाकि-मंदिरमें गये हैं. पंडित जीयालालजी जी मंदिरमें गये, और जोतर जाकर देखा तो एक चक्षुबिहीन पुरुष एक अन्य मनुष्यके कंधेपर चढ़ा पाया और यह चक्षुबिहीन पुरुष

जी फरुखनगरका ही रहनेवाला है. इसका नाम फरुखनगरमें-  
 “दयाला”-मसिख है. अपनी तरुण अवस्थामें इस मनुष्यने अ-  
 पने आपको दयाराम एसा नाम मसिख करके बहुधा जैनी यति  
 जहारक साधु श्रीपूज्य आदिको ठगा, और एक जैन बंक सो-  
 ला था. अब जोजनमें जी तंग हुवा तो अंतसमय क्षुल्लक बना  
 है. परंतु कपट बुद्धिलगी हुई है. मंदिरमें शेठ चंपालालजीसें  
 कह रहा था कि मैंने दो लक्ष रुपैये इकठे करलिये है और वि-  
 शेष धन्यकी अवश्यकता है, पावागढका मंदिर तयार कराउंगा,  
 यह चरित देख कर पंमित जीयालालजी उलटे चल दिये. और  
 अपना मगट करना ठोक नहीं समझा, क्योंकि-उक्त चक्षुविही-  
 नकों इसमें कष्ट होता.-अब हम पूछते है उक्त चक्षुविहीनने क्षुल्लक  
 व्रत किस गुरुके पाम लिये ? किसने संयम दिया ? हमारे प्रति-  
 पक्षी क्षुल्लक धर्मदासजी श्वेतांबरीओंकों तो बुरा कहते है परंतु यह  
 नही विचारते है कि हमारे मस्तकमें ही नेत्र संख्या पूरी नहीं है.

(सत्य है कि-) [अनुष्टुप्चत्तम्.]

पुमान् सर्पपमात्राणि-परजिह्वाणि पश्यति,

आत्मनो बिल्वमात्राणि-पश्यन्नपि न पश्यति, ?

आगे क्षुल्लक धर्मदासजी लिखते है अमूक गड्डका श्री पू-  
 ज्य गद्दीके योग्य नहीं, अमूक गड्डके श्रीपूज्यको किसीने पदवी  
 नहीं दीयी आप ही आप श्रीपूज्य बन गया है, कौनके पास  
 स्वरिमंत्र लिया ? किसकी आज्ञासें किस गुरुका शिष्य हुवा ?-  
 इनको मानना पूजना न चाहिये, जो मानेगा पूजेगा वह गद्दी-  
 का हरायखोर होगा. इत्यादि,-



[ इसका उत्तर. ]

यह लेख ऐसा है जिसमें सखता और भ्रूखता मिली हुई है, अबलतो इस बातका उत्तर सुल्लकजीकों उन उन श्रीपूज्योसैं ('जो अब विद्यमान है) पुठना व्याजब था कि-आप किसकी आझासैं श्रीपूज्यजी हुवे ? किम गुरुसैं सूरिमंत्र लिया ? अगर वे उत्तर न देते तो फिर श्वेतांबर संघको पुठना था कि-आप लोग इनकों मानते पूजते हो किस आधारसैं मानते हो ? सो ज्ञी प्रगटपने पुठना था, विना नामके पत्र ठपाना और नौंदा करनी यह संसारसैं बिरक्तोंका काम नही. इसमें मायावीपना पाया जाता है. असली हकीकत तो यह है कि-जो मनुष्य ईर्ष्या-लु होते हैं वे दूसरेको किसी गद्दीका अधिकारी हुवा देख नही सकते. परंतु यह केवल अयोग्य बात है इसमें कर्मबंधके अतिरिक्त कोई लाज नही. हा ! यह हम नही कह सकते हैं कि सजी साधु श्रीपूज्य अच्छे ही हैं वा सजी साधु बुरे हैं, काल दोषसे श्वेतांबर दिगंबर दोनोंमें विपरीत चलनेवाले अनेक मुनि हो गये हैं. परंतु इसमें हम तुम और अन्य कोई क्या करे ! उपदेष्टा उपदेश देनेका अधिकारी है, उसमुजब चलना न चलना यह चलनेवालोके आधीन, कुछ हमारे तुमारे आधीन नही.

वैशाख मास पूरा हुवा, व्याख्यान रौज होताही था, जी-समें विविध तीर्थ कल्प-त्रिजवदनचपेटा-और मुक्तमुक्तावली तीन ग्रंथ परिपूर्ण बाचे. संवत् (१९४८) ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमें रविवारके रौज फरुखनगरसैं मथुरा तर्फ विहार किया, प्रथम मुकाम पांच कोस हरसरु गांव-हरसरुसैं आगे (५) कोस बादशाहपुर

यहां [१] दिन ठेरै, बादशाहपुरसें जौमसी-सौना-इमरी-मंमना-का-सेवली-होमल-कौसी-और चोमुहा-इन गांवोंमें होते हुवे आ-षाढ कृष्ण [२] बुधवारको मथुरा पहुचे. रास्तेमें अग्रवाल प-ल्लीवालोंकी वस्ती गांव गांवमें है. जौडसीसें सौने गांवतक पक्की समक-आगे होमल तक कच्चा रस्ता होडलसें मथुरातक पक्की समक है, दोनों तर्फ वृद्धोंकी गांवमें चलते मुसाफरोको ताप बिलकूल नही सताता.

शहर मथुरा—जमनाके दाहने कनारे बसा हुवा पुराना नगर है सूरसेनदेशकी राजधानी यही शहर शास्त्रोंमें लिखा है, सुपार्श्वनाथ जगवान्के शासनमें धर्मरुचि और धर्मघोष नामा दो मुनि यहां आये थे. ये मुनि महातपस्वी जीन्होको दसम-डवाजस पढ़-भासपढ़न आदि तप करना तो सहज बातथी, उस वखत मथुरानगरी बने धेरेमें बसती थी, वापी-कूप-पुष्करणी-बाग-ऊ-द्यान और धनीक जनोंके प्रामादसे सुशोभित थी. उक्त दो मुनि नगरीके बहार भूतरमण उद्यानमें ठेरे. दोनोंने चातुर्मास यहां किया, चारमहिनेके ऊपवास करके धर्मध्यानमें लीन रहे, ऐसा इनका प्रथम गुण देखकर उपवनकी अधिष्ठातृ कुबेरा देवी रा-तके समय इन्होके दर्शनोंकों आयी. दर्शनकर कहने लगी आप-के गुणोंसें मैं रंजित हू, कृपाकर मेरेसे कुछ इप्सित वस्तु लीजीये. मुनियोंने कहा हम निग्रंथ है किसी वस्तुकी चाहना नही, धर्म सुनाया, देवीने सम्यक्त अंगीकार किया चातुर्मास पूरा हुवा तब मुनि विहारको तत्पर हुवे, देवीने विज्ञप्ति कीयी कि-सबका ल आप यहां हो विराजे रहे तो अति उत्तम है मुनियोंने कहा

पबबकी तरह हमारी एकत्र स्थिति नहीं होती. देवी-धर्मोन्नति होती हो तो एक जगह अधिक रहना जी जिनाझासे अविरुध है, निदान ! मुनि यहां कितनाक समय और ठेरे. देवीने अरि-हंत सुपार्श्वनाथकी प्रतिमा सहित स्तूजकी रचना करके धर्मोद्योतमे अधिक यत्न किया. विविधतीर्थकल्प आदि ग्रंथोमें लिखा हैकि-जैसे शत्रुंजयमें रिषजदेव-गिरनारमें नेमिनाथ-भृगुक-लमें मुनिमुव्रतस्वामी और माढेरमें महावीर स्वामी विराजमान है. मथुरामें सुपार्श्वनाथ जगवानका तीर्थ था. अन्यजी केइ मंदिर यहां थे, जेद ग्रंथोमें जहां मंगल चैत्य प्ररुपणाका अधिकार चला है, मथुराके चैत्य विशेष वर्नन किये गये है.

यादवकुल मंडन-समुद्रविजय-उग्रसेन-वसुदेव आदि दश दशारवर बीर पुरुष और जावी तीर्थकर कृश्र वासुदेव आदि पुन्यवंत पुरुषोकी यह पुरी जन्म भूमि है. १ अर्कस्थल-२ चीरस्थल-३ पद्मस्थल-४ कुरुस्थल-और ५ महास्थल-ये पांचस्थल पहले यहां अधिक मशाहूर थे, १ लोहजंघवन-२ मधुवन-३ लिहवन-४ पालवन-५ कुमुदवन-६ वृंदावन-७ हुमीरवन-८ खदीरवन-९ कोमितवन-१० कालवन-११ बहुलवन-और १२ महावन. येह बारह वन यहां पहले मौजूद थे, वर्तमानमे केइ उजर केइ नामांतर हो गये है, इनमे वृंदावन आजकल शहरकासा आबाद है, १ विश्वंतिकतीर्थ-२ असिकुंरतीर्थ-३ वैकुंठतीर्थ-४ कालिंजर-तीर्थ-और ५ चक्रतीर्थ-येह पांच तीर्थ-वैश्रव संप्रदायके यहां विद्यमान थे, महावीरस्वामीके जीव विश्वभूतिने विश्वनंदीके सायने यहां निदान कियाथाकि-मैं अपने तप तेजक प्रजावसें अगले ज-

न्ममें इसको मारनेवाला होऊं. जीतशत्रुराजाके पुत्र कालवेशी-  
यमुनि अशरोगसे पीमित होये हुवे जी यहां गाढ उपसर्ग सहन  
करके निश्चल रहे थे. निवृत्तिरायवरकन्या यहां स्वयंवर मंड-  
पमें सुरेंद्रदत्त राजकुमारको राधावेंधकी प्रतिज्ञासे परणीथी.  
कुबेरदिक्षा श्राविकाने अपनी कुबेरसेना माताकों और कुबेर-  
दत्त भ्राताकों यहां अवधिज्ञानसे जानें और अठाराह प्रकारके  
नाते (संसारिक संबंध) सुनाकर उन्होको निर्मोही किये. कंबल  
संबल दो बैलोंन जिनदास श्रावकके संसर्गसे यहां जाति स्मर्ण  
ज्ञान पाकर अनशन किया. और काल करके भुवनपति देवोंमें  
नागकुमार देव उत्पन्न हुवे. शक्र इंद्रने श्रीकालिकाचार्यसे यहां  
निगोदका स्वरूप सुना. उक्त सूरिके कितने शिष्य जो कि-दे-  
वताओंके होनेमें शंसयवान् थे कहते थे देवता कहने मात्र ही है  
वस्तुतः नहीं वे इस प्रबंधसे निःशंसय हुवे. वस्त्र पुष्प मित्र-डुर्बलि-  
का पुष्प मित्र यह तीन लब्धि संपन्न मुनि यहां बहुधा वस्तु  
आये है. जब डःसह डर्जिह्द वारहवर्षी काल पन्नाथा तब स्कं-  
दिलाचार्यने यहां आनकर जैन आगमका अनुयोग प्रवर्तया था  
और सकलसंघ ( जैन समाज ) यहां इकठा हुवा था. वाचक मु-  
ख्य जीनज्ज गणि क्कमा श्रमणने जोर्णप्राय महानिशीथ सूत्र  
जो उहेही जंतु ज्जित्ति जिन्न जिन्न वुटित प्राय हो गया था यहां  
पुनः अनुसंधान किया. क्कपकमुनिकी तोत्र तपस्या देखकर यहां  
शासनदेवी तुष्टमान हुयीथी, और उस समय यह मथुरातीर्थ  
अन्यमतावलंबीउने अपने हस्तगत कर लिखाथा पुनः आर्हत  
संघके हस्तगत कराया. इत्यादि अनेक आश्चर्य निधान यह म-

मुरापुरी जैन आगममे वर्णित है.

वर्तमानमे मथुराका जो कुछ वृत्तांत दृश्यमान है लिखते हैं, जमना कनारे अछा आबाद शहर-वस्ति (५५०१६) मनुष्य-की-और राज्य अंग्रेज गवर्नमेन्टका-कुल इलाकेकी बस्ती (६७१६७०) है. कृष्णजीकी जन्मभूमि होनेपर यह तीर्थकी जगह गिनी गयी है. नगर शोजनीक-बाजारमें पाषाणका फर्श-इम्मारते पकी जोसमें पथ्थरका काम अधिकतालिये है. पनरांह बीस वर्ष पहिले खेतांबर श्रावको के यहां २०-२५-घर थे, वर्तमानमे कोइ नही. घीयामंमीमें एक मंदिर पार्श्वनाथजीका है, सार संजाल इ-सकी छश्कर ग्वालियरके श्रावकलोग रखते है, मूलनायक पार्श्वनाथ जगवानकी प्रतिमा (१) बीलस्तजर उंची है, इसके बाये पासे दूसरी प्रतिमा देह बीलस्त जर उंची और पुरानी है. ग्यारहसैं वर्ष पहिलेकी बनी हुयी यह महा अतिशय युक्त है. जो संवेगी साधुजनो यहां आते है. इसी मंदिरके पासकी जगहमें ठे-रते है. हमारा ठेरना जो यहां हुवा. दिगंबर श्रावकोंके घर ६०-७०-और एक पंचायती मंदिर इसी घीयामंमीमें है. वैश्रव सं-प्रदायके मंदिर-सबसे बडा घाटीकाधीशका-दूसरा जमना कनारे विश्रामघाटका-तिसरा गतश्रमनारायणका-और चौथा गोवर्धन नाथका-वगेरा केइ मंदिर है.

शहरसे (१) मील दूर भूतेश्वर महादेवके पिढामी एक कं-कालीटीला जिसको जैनटीला जी कहते है, पुराना खेंमा है, पहिले यहां बनी बस्ती थी. जैनपाठशाला-मंदिर यहां अधिक थे, योमे वर्ष पहिले सर, ए, कनिंगहाम साहबने प्राचीन लेख

शोधनके लिये यह स्थान खुदाया था, बहोतसें सिलाखेस जमीनमेंसे निकले थे, बुद्धर साहबने इन लेखाँकों- “ओयेटीसिटी ओफ ध जैन ट्रेमीशन-” कीताबमें जाषांतर करके अंग्रेजीमें उपबाये है. जैनाचार्यके नाम-गण-शाखा-आरै कुलके नाम जो कल्पसूत्रमें लिखे है इन लेखाँसे मिलते है, (६) लेखाँका वर्नन बुद्धर साहबने लिखा है. जीसमेसें (प्रथम लेखका सार.)

सिद्धं संवत् (३०) गृष्मरीतुका पहला मास तिथि (१५) के रोज जयपालकी माता-वि . . . लकी स्त्री-दत्तिलकी पुत्री दत्ताने यह कीर्त्तिमान् वर्धमान स्वामीकी प्रतिमा चतुर्विध संघको अर्पण कीयी, कौटीक गज्ज-वाणिज्यकुल-वयरी शाखाका सीरीका भागके आर्यसिंह आचार्यने इसकी प्रतिष्ठा कीयी.

(दूसरा लेख.)—अरिहंतको नमस्कार सिद्धकों नमस्कार-संवत् [६०] उश्ररीतुका तिसरा महिना-तिथि (५) के रोज यह स्थान उस समुदायको उपजोगके लिये दिया गया, जिसमें चार वर्गका समावेश होता है. दूसरा अर्थ यह जी कर सकते है कि-एक एक वर्गके लिये इसका एक एक हिस्सा देनेमें आया था.

(तिसरा लेख.)—सिद्धं महाराज कनीष्क राज्यके संवत् [ ६० ]-महिना पहेला-तिथि [५] के रोज-ब्रह्माकी पुत्री

\* हिंदुस्थान और सीथिया बीचके राजाओंके संवत्सें यह संबंध नहीं रखता. किंतु इन्होसें पहेलेके किसी राजाका यह संवत् होना चाहिये. क्योंकि-इस लेखकी लिपी बहुत पुरानी है.

† यह क्या स्थान था इसका खुलासा नहीं मिला है.

और जट्टमित्रकी स्त्री-विकटाने-सब जीवोंके कल्याण निमित्त यह कीर्त्तिमान् वर्द्धमानकी प्रतिमा बनवायी. इसकी प्रतिष्ठा कौटीक गण बाणिज्यकुल-और वथरी शाखाके आचार्य नागनंदीने कीयी.

(चौथा लेख.)—इम लेखका पुरेपुरा समाधान मिलना मुश्किल है परंतु प्रथम पंक्तिके एक टुकड़ेके देखनेमें विदित होता है कि-यह अर्पण करनेका काम एक स्त्रीसें हुवा था. और वह स्त्री अग्रक पुरुषकी बहू तरीके लिखनेमें आयी थी दूसरी पंक्तिमें-कौटिकतो गणतः प्रश्नवाहनतः कुलतो मध्यमातः शाखातः-लिखा है.

(पांचमा लेख.)—वर्ष (४७) उश्ररुतुका दूसरा महिना मोति (२०) मी के राज-यह एक पानी पिनेका स्थान अर्पण करनेमें आया.

(छठा लेख.)—अरिहंत महावीरको नमस्कार हो. राजा वामुदेवके संवत् (६८) वर्षारुतुका चौथा महिना (११) के रोज-यह एक स्त्रीकी तर्फसे बनवायी गयी. और पारिहासीक कुलकी पौर्ण पत्रिका शाखाका आचार्य आर्यरोहने यह स्थापन किया, यह लेख एकीला अलग पाषाणपर है इस लिये नियत कहना नही हो सकती कि-यह क्या वस्तु स्थापन किया?

ये लेख कल्पसूत्रमें संबंध रखते है कल्पसूत्र श्वेतांबर प्रणीत है इसलिये कह सकते है, पहले यहां श्वेतांबर संघकी आधिक्यता होनी चाहिये. महाबोरके निवारण पिठे [४७०] वर्ष व्यतीत

हुये बाद विक्रम संवत् चला, विक्रमके बाद (५७) वर्ष पिछे, इस्वीसन चला, राजा अशोकके लेखोंसे पुराने लेख आजतक हिंडुस्थानसे नही मिले थे. इन लेखोंको देखकर कह सकते है कि-ये अशोकके लेखोंसे जी पुराने है इनमें जो जो संवत् लिखे है हिंडुस्थान और सिथिया देशके बीचके राजा कनिष्क-इ-बिष्क-और वामुदेवके-समयके है. अबतक इन संवत्सरोंकी शुरुआत निश्चय नही हुयी है तो जी यह नियत है कि-हिंडुस्थान और सिथिया देशके राजाओंका राज्य इस्वीसनके पहले सेंकमे के अंतसे और दूसरे सेंकमेके पोने जागसे कम नही ठहरा सकते. सबबकि-कनिष्क महाराज इस्वीसन [७८] वा [७९] के वर्षमें नहीपर बैठा सिद्ध हुवा है.

इस्वीसन [१८७६] मे-सर. ए. कनिंगहाम साहबकों यहांसे एक प्रतिमा महावीर स्वामीकी पायी है, इसपर पाली हर्फोंसे लिखा है कि-"सिद्धं उं नमो अर्हंतस्म महावीरस्स-राजा वामुदेव संवत्सरे ( ९० ) अरिहंत महावीरको नमस्कार हो. वामुदेवके संवत् नब्बेमे यह बनायी गयी. यद्यपि वामुदेव संवत्की शुरुआत कब हुयी अबतक निश्चय नही हुवा है तथापि पाली लिपी हिंडुस्थानमे [ १५०० ] वर्ष पहले लिखी जातीथी यह निःशंका कह सकते है.

यहां हमारा रहेना (३) रोज हुवा आषाढ कृष्ण [५] शुक्र-वारको मथुरासे विहार कर वृंदावन गये. इसको (१२) प्रकारके वनमें हम पहले लिख आये है. मथुरासे (५) मील उत्तर तर्फ जमनाके दाहने कनारे बसा हुवा-इसके महावन होनेमें कोई



सक नहीं चारों और इसके बड़े सघन वृक्ष और छाड़ी ब्रूखम खमे है. जगह मुहावनी-वृक्षोंकी ठंडी छांवमें वानर सदा कलोल करते रहते है. वृंदावन मथुरासें छोटा, राज्य गवर्नमेन्टका, श्वेतांबर श्रावक श्रेष्ठ जीतमलजी चंदनमलजीका एक ही घर यहाँ गीपीगली है, हमारा ठेरना इन्हीकी कोठीमे हुवा. दिगंबर श्रावकोके घर पांच दश और एक मंदिर इसी गीपी गलीमें है. वैश्व संप्रदायके मंदिर यहाँ केइ है. सबसें बड़ा रंगजीका जीसको जेतखंजका कहते है-१, लालाबाबूका-२, शाहजीका ४, ब्रह्मचारीजीका-५, गोविंदजीका बगेरा. गोविंद घाटपर रासमंडल एक रमणीक स्थान है. कहतं है यहाँ गोपीजका और कृष्णजीका रासमंडल होता था. कालीछह, मेवाकुंज निजवन, और चीर, घाट आदि स्थान कृष्णजीकी विज्ञासभूमि है. श्रीसंप्रदाय, माधवाचार्यसंप्रदाय, विश्वसंप्रदाय, और निंबार्क संप्रदाय. इन चारों संप्रदायके घारे अखाड़े अलग अलग बने हुवे है. वृंदावनमें हम (४) रोज रहे. फिर लोटकर मथुराहीमें आये. सबबकि हमको आगरे आना था.

मथुरासें विहार कर (३) कोस नौरंगाबाद-नौरंगाबादसें (७) कोस फरेरा-फरेरासें (७) कोस सिकंदरा-सिकंदरासें (३) कोस आगरा—पूरा ( २० ) कोस है. आषाढ कृष्ण (१३) शनिवारके रोज पहुचे. नोनमंडीमें शांतिनाथजीके मंदिरके पास धर्मशाखामें ठहरे.

शहर आगरा—जमना कनारे बसा हुवा—इसका दूसरा नाम अकबराबाद जी बोलते है. इसमें (१६५३४०) मनुष्यको

बस्ती है, सारे इलाकेकी बस्ती (१७४६५०) मनुष्य-राज्य अंग्रेज गवर्नमेन्टका-और रैलका जंकशन है. श्वेतांबर श्रावकोके घर (५०) और (८) मंदिर यहां है. मोतीकटमेमें चिंतामण पार्श्वनाथका मंदिर पुराना है. इसकी दिवारमें हीरविजयसूरि के बरतका शिला लेख लगा हुआ है. रासन महोलेमें सीमंघर स्वामीका-इसके एक आलेमें पंजेकी प्रतिमा अवगाहना तीन अंगुलकी है. तिसरा वासुपूज्य स्वामीका, चौथा गोमती पार्श्वनाथका जो श्रावक हंसराज वेद मोताने बनवाया है.-पाचवा केशरीयानाथजीका-छठा विहरमान सुरस्वामिका-मातमा दादावामीमें महावीर स्वामीका-इसमें जीनदत्तसूरि और हीरविजयसूरिका थूज है.-आठमा नौनमंमीमें शांतिनाथजीका.-

शाहजहां बादशाहकी बेगम मुस्ताज महेलका मकबरा जीसें लोग ताजगंज वा ताजबीबीका रोजा कहते है. जमना कनार देखने लाइक मकान है. इसमें मंगमर्म पाषाणका काम शिल्पकारीगरीका एक नमूना है. दूसरा मकान अकबरका बनाया हुआ किला जी बनी लागतका स्थान है, इसमे महेल जोधाबाइका-खास महेल बादशाहजादीका, अंगुरीबाग शोशमहेल शम्भनबूर्ज, नगीना महेजत, दिवाने आम और सोमनाथ गेट वगेरा अलग अलग मकान बने हुवे है. जब महम्मूद गजनवीने संवत् [१०८२] में सोमनाथ पट्टनको लूटा था तब सोमनाथ महादेवके चंदनके किवाम गऊनीको ले गया था.

संवत् [१८९९] में सरकारी फोजने गऊनवीसें लाकर यहां धरे है.-

मुसल्मानी अमल्दारीका हेवाल. तवारिखोमे बाचते है तो अकसर दिलको रंज आये बिदून नही रहता. हिंडुओंका नाश करना उनके मूर्ति मंदिर तोम मालना ये लोग बड़ा धर्म सम-जते थे. काफिर शिवाय दूसरी जबान नही बोलते थे. नाचना, गाना, शराब पिना, जो कोइ न्याय होनेको कहें उसको कतलका हुकम कहदेना, हिंदुओंकी बहू बेटी बच्चेकों अपने लोंमी गुलाम बना लेना, दिनरात जनानखानेमें बैठ रहना, जीन्होंका नित्य कर्त्तव्य था. अलाउद्दीन, महम्मूद तुगलक, फीरोजशाह, तैमूर, और बाबरशाह नेंक. इन्होके इन्साफकी तारिफ तवारिखोंसे बखूबी दिख पमती है, कहने सुननेकी जरूरत नही रहती. औरंगजेब, नादीरशाह, अहमदशाह डरानो-इन्होंने देशको बरबाद करनेमें कोइ घट नही गुजारी. अमीर खुसरो तारीख अलाइमें लिखता है कि—दखनके शिवालयोंके महादेवकी मूर्त्तें जो मुसल्मानोंके घोडेकी लातसे बच गयी थी बिल्कुल तोमी गयी. कहिये ! अमल्दारी किसको कहते है ? इसीका नाम तो अमल्दारी है. ये क्या ! जीधर देखो यही किस्सा है. कोइ तवारिख यह कह रही है आज अमूक राजकुमारकी जीज कटवामाली, आज इतने हिंड कतल किये, अमूक राजकी रानीको आज बेगम बना ली. हिंडओंके घरोसे सोना-चांदी-मोती-हीरा-माणिक-पन्ना और बढिया कपमे आज इतने लूट लाये, बस ! यही नमूने इन्साफ होनेके लिखे है. हिंदुओंकी बहू बेटीओंको पर्देमें रहना उसी राजसे थुरु हुवा जब मुसल्मानी जरजवानीमे थी. यह कहना न होगा कि-आपको मुसल्मानोपर कुछ घेषबुद्धि है. हमारे लिये जैसे मुसल्मान वैसे अंग्रेज-अंग्रेजोंकी सराहना इस लिये कियी

जाती है ये कुछ न्यायसे चलते हैं. अन्याय नहीं चलते. अम-  
ल्दारी वही है जहां न्याय हो.

अकबर बादशाह कुछ इन्होमें लायकवर हुवा तो मुसल्मा-  
नोंने इसकों काफिरके बतौर समझा. कहते थे इसने अपने दोनकी  
जोम दिया. अकबर सरीखे बादशाहको हिंडुराजा मजा सब  
चाहते थे. सबबकि-इसको धर्मदेष बुद्धि कम थी. इसको राज्य-  
में केइ हिंदु नोकर थे. आमदनी इसके राज्यकी बत्तीस करोम  
रुपया थी. अपनी रानीउकों (जो हिंड राजेकी लम्कीये थी)  
सुशीसे हिंड रखता था न्यायमें तो कज़ी कज़ो यह ज़ी अपनी  
असलीयत पर पहुचे रहता था परंतु अलबते ! जितना इसमें  
धर्मअंश था हमको सराहना अनुचित नहीं. अबल तो दूसरे  
धर्मका यह देषो नहीं था. सज़ी धर्मके साधुउसमें मिलता था.  
दूर दूरसे आमंत्रण पत्र (परवाना) जेजकर बोलाताथा और  
ईश्वरके पहचाननेका रस्ता पूछता था. एक समय अकबरने ही-  
रविजयसूरिकी विघटताका बयान सुना. विघातिपत्र जेजकर  
अपने पास बुलाये. धर्म सुना. और जो जो धर्मकृत्य किये उ-  
नकों लिखते पहले हमको हीरविजयसूरिका वर्नन लिखना  
ज़ी यहां कचित हुवा.

हीरविजय सूरिका जन्म (संवत् १५८३) मगशीर सुदो (७)  
के रोज मल्हादनपुरमे हुवा. माता पिता जैनी थे. सूरिजी बाल्या  
बस्वामें ही बहोतकुछ योग्य थे. ( १३ ] वर्षको ऊमरमें इन्होंने  
संनय लिया, चार वर्षके बाद शिरोही नगरमे सूरिपद प्राप्त हुवा.

व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, अलंकारके संपूर्ण वेत्ता थे. जैनसंघमें एक मध्यान्ह सूर्य थे, आत्मज्ञानी, क्रियापात्र, प्ररूपणा आगम अविरोधिनी होनेके कारण सब गच्छ [ गण ] में इन्होंका वचन मान्य था. हीरप्रश्नग्रंथ जो इन्होंके हृदयगत समुद्रका एक बिंदु है कौन जैनी औसा है जो नहीं चाहता. निदान ! ज्ञाततत्त्व हीरविजयसूरि एक महाप्रज्ञाविक पुरुष थे. इन्होंके विहारमें युग प्रधान अतिशय विदित होता था, एक दिन वो समय था जिन्होंके प्रभावसे जैनसंघ आनंद पुरित हो जाता था. आजकल बहुतेरे इन्होंका नाम तक भूल गये हैं. नामको चाहे भूल गये हो पर उन्होंके धर्मकृत्य के नमूने देखकर सब कोई धन्यवाद देनेके उमेदवार है. इसी आशापर आज हम यहां उन्होंके एक दो नमूने लिखनेको आकांक्षी हुवे हैं.

हीरविजयसूरि गंधार बंदरकी तर्फ विचरते थे तब अकबरने एक विज्ञप्तिपत्र जेजा. ऊत्तरखंममें आनेको आमंत्रण किया, अकबर इसबख्त आगराकेपास फतेहपुरमें था. सूरिजी गंधार बंदरसे विहार करते ( संवत् १६३९ ] जेठ वदी ( १३ ) के रोज फतेहपुर आये, प्रधान अबुल्फजल द्वारा बादशाहसे मिले, हीरविजयसूरिके साथ विमलहर्षगणी आदि अनेकमुनि थे. बादशाहने आदरसे सज्जामे बैठाये. ईश्वरका, गुरुका, और धर्मका स्वरूप पूछा. सूरिने ऊत्तर दिया-राग द्वेष, काम क्रोध, मोह अज्ञान आदि दोषोंसे रहित जो संपूर्ण कर्मोंका नाश करके मुक्तात्मा हुवा है, जो किसीपर न खुश है न नाराज है, न संसारमें पुनः अवतार लेता है वह सर्वज्ञ सर्वदर्शी ईश्वर है. सं-

सारको त्याग के मुक्ति मार्गपर आरुढ़ है कंचन कामनोको स्वीकार नहीं रखते और सब जीवांको सच्चा धर्मोपदेश देते है वह गुरु है. उर्गति पमते रक्षण करें और सुगति मे धारण करे उसका नाम धर्म है, अथवा आत्माका शुद्ध स्वभाव जो ज्ञान दर्शन चारित्र वह धर्म है, यह उपदेश सुन अकबरने अधिक हर्ष माना. ईश्वर प्राप्तिके लिये क्या उपाय करना चाहिये. कौन कौनसे कर्मसें स्वर्ग नर्क प्राप्त होता है, इत्यादि सवाल पूछे. एक महरतक धर्मगोष्ठी हुयी. और कहा कि-आप सजी वस्तुके त्यागी है साँना, चांदो, लेना आपको स्वीकार ही नहीं. आपको दूसरा क्या देवुं ? मेरे मकानमें जैनपुस्तक बहोत है आपको चाहिये तो सजी ले लिजीये. सूरिजीने वे पुस्तक लेकर आगरेके ज्ञान जंमारमे स्थापन किये.

फतेहपुरसें आगरे आनकर संवत् ( १६३९ ) का चौमासा किया. चौमासेके बाद शौरीपुर तीर्थकी यात्राको गये, वहां केइ प्रतिमा और नेमिनाथजगवान्की चरणपाडकाकी प्रतिष्ठा कियी. नेमिनाथको जन्म भूमि यही शहर है. शौरीपुरसे फिर आगरा आये. शाह. ज्ञानचंद कल्याणमल्लके बनवाये चिंतामणि पार्श्वनाथ आदि जीनबिंबोंकी प्रतिष्ठा कियी. आगरासें फिर फतेहपुर गये. अकबरसें मिले. धर्मोपदेश करा. अकबरने कहा मैंने दूर-देशसें आपको बुलाये. और आप कुछ वस्तु मेरेसें नहीं लेते यह ठीक नहीं. सूरिने कहा तेरे राज्यमें पर्युषणपर्वके (७) रोज कोई जानवर न मारा जाय यह मागताहुं. अकबरने कहा (७) आपके और (४) मेरे कुल [ १२ ] रोज (जाइपद बदी दशमीसे सुदी ठठ

तक) कोई जानवर नहीं मारा जायगा. (६) फुरमाने लिख दिये. १, गुजरात देशका-२, मालवाका-३, अजमेर प्रांतका-४, दिल्ली फतेहपुरका-५, लाहोर मुल्तान मंगलका-और ६, ठठा हीरवि-जयसूरिके पास रखनेका, पांच फुरमाने उक्त स्थानोपर जेजकर जीवहिंसा बंध करवायी. सूरिकेपाससें उठकर खुद अपने हाथोंसें केइ जानवरोंको पिंजरेसें डोम दिये. सूरिने (१६४०) का चौ-मासा फतेहपुरमें किया. तिसरा चौमासा जौरामनगरमें-चौथा आगरामें-करके जब दखनको आने लगे तब निम्नलिखित एक और करवाया फुरमान उर करवाया.

१  
जलालुद्दीन मो  
इम्मद-अकबर वा  
इशाह गाजीका  
फुरमान.

जलालुद्दीन अकबर बादशाह हुमायून  
बादशाहका बेटा-बाबरशाहका बेटा-  
उमरशेखपिगजाका बेटा-मुल्तान अबु-  
सैयदका बेटा-मुल्तान महमदशाहका  
बेटा-मीरशाहका बेटा-अमीरतहमूरसा  
हबकिरानका बेटा.

सूबे मालवा, अकबराबाद, लाहोर मुल्तान, अहमदाबाद, अज-मेर, मेरठ, गुजरात, बंगाला, तथा और मेरे ताबेके सच्ची मुल्कमें अबजो मौजूद है और पिछेसें जो बियत किये जाय उन सच्ची सूबे करोरी जहांगीरदारोंको मलूम हो मेरा यह इरादा है कि-सच्ची रैयतका मन राजी रखना, क्योंकि उनका दिल परमेश्वरकी एक बन्नी अनामत है. विशेष करके कृ-अवस्थामें मेरा यही इरादा है कि मेरा जजा इन्होंनेबाली रैयत सदा सुखी रहे. इसलिये

इसके धर्मकी कौममेंसे जो अच्छे विचारवाले परमेश्वरकी ज्ञाति-  
हमे अपनी ठगर पुरी करते है उनकों में दूर देखोसे अपने पास  
बुलाता हु. उनकी बातें सुनकर खुश होता हु. मेरे सुननेमें आ-  
या था कि-हीरविजयसूरि जैन श्वेतांबर मतके आचार्य गुजरातके  
बंदरोमें ईश्वरकी ज्ञाति करते है. येने उन्होंको अपने पास बुल-  
बाये. उनकी मुलाकात करके मैं बहुत खुश हुवा. कितनेक दिन  
पिछे जबमें अपने बतनको जाने लगे तब अर्ज गुजारीकि, गरीब  
पर्वरीकी राहसें हुकम होना चाहिये कि-सिद्धाचलजी, गिरनारजी,  
तारंगाजी, केशरीयानाथजी, आबूजीका पहार जो गुजरातमें है.  
राजगृहीके पंच पहार, सम्मैतशिखरजी ऊर्फें पार्शनाथजी जो  
बंगालेमें है उन सजी पहारोंके नीचे, सभी मंदिरोंकी कोठीअं-  
सभी भक्ति करनेकी जगह-तीर्थोंकी जगह-जो जैनश्वेतांबरी धर्मकी  
है उनकी चारों ओर कोई आदमी किसी जानवरको न मारे.  
अब ये बहुत दूरसे मेरे पास आये है. इनकी अर्ज व्याजब और  
दुरस्त है. यद्यपि यह अर्ज मुसलमानी मजबसें विरुद्ध मजूम होती  
है तो जी ईश्वरकों पहचाननेवाले आदमीयोंका यह दस्तूर होवा  
है कि कोई किसीके धर्ममें दखल न दे. उनके रिवाजोंकों बहाल  
रखे. इसलिये यह अर्ज मेरी समझमें सची मालूम हुयी. ये सभी  
पहार और सजी पूजाकी जगह बहुत मुदतसें जैनश्वेतांबर धर्म  
वालोंकी है. इसलिये इनकी अर्ज कबुल कियी गयीकि, सिद्धा-  
चलका पहार, गिरनारका पहार, तारंगाका पहार, केशरीयाका  
पहार-आबूका पहार-जो गुजरातके मुल्कमें है. राजगृहीके पंच  
पहार, सम्मैतशिखर ऊर्फें पारसनाथ जो बंगालेमें है. ये सजी



पूजाकी जगह और पहानके नीचेकी जगह जो मेरे राज्यमें है चाहो किसी ठिकाने जैनश्वेतांबर धर्मकी हो वह श्वेतांबर धर्मके आचार्य हीरविजयसूरिको देनेमें आयी है. हकीकतमें येह पूर्वोक्त सच्ची जगह जैनश्वेतांबर धर्मवालोंकीही है. जबतक सूर्यसें दिन प्रकाशमान रहे. और चंद्रमासें रात रोसन रहे तबतक इस फुरमानका हुकम जैनश्वेतांबरधर्मके लोगोमें सूर्यचंद्रमाकी तरह प्रकाशित रहे. कोइ आदमी इनको हरकत नकरे. कोइ इन पहानों-पर-नीचे-चारोंओरकी पूजाकी जगह-और तीर्थकी जगह-जानवरकों न मारे इस हुकमपर अमल करे. इस हुकमसें न फिरे. नयो सनंद न मागे. लिखा तारिख [७] मी-माहे ऊर्दी बहेस मुताबिक माहे रबीयुल अबल सने (१७) जुलसी.-

शांतिचंद्र उपाध्यायको अकबरके पास उपदेशके लिये भोमकर हीरविजयसरि मारवाडको आये शिरोहीमें-रिषजदेव जगवानके चौमुखजी और अजितनाथजी वगेरा प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कियी. फिर आबूजीको आये. बहोतसा बिहार हीरविजयसरिने गुजरात मारवाड देशमें ही किया है. इधर शांतिचंद्र उपाध्याय अकबरको धर्म सुनाते रहे. हीरविजयसूरिके पहपर विजयसेनसूरि हुवे. इनके शिष्योंने अकबरके बेटे जहांगीरको धर्म सुनाया. फुरमानपत्र जी लिखवाया, जो सात फुरमानकी किताबमें डप चुका है.

शहर आगरामें हम (५) रोज ठहरे. चौमासाका समय निकट आया था आषाढ सुदी (३) गुरुवारके रोज लश्कर ग-वालियर आनेको बिहार किया. चारकोस ककौआ गांव ति-

सरे ग्रहर आये. पांच कोस आगे जाजलकी शराय पांच कोसपर मनीयागांव चार कोस आगे धोलपुर पहुँचे. जाजलकी शराय ठोककर अन्यत्र आहार पानी मिलनेका योग नहीं.

**धोलपुर**—गवालियरसे उत्तरको (१८) कोसपर चम्पल नदीके बायें कनारे बसा हुआ है. धोलपुरके बसानेवाले राजा धोलनदेव तूअरके घरानेके थे, यह घराना पहले दिल्लीमें राज्य करता था. धोलपुरसे नैरुत्यको चम्पलसे दश मील दूर बेलपुरमें संवत् (१०६९) में ये रहते थे. राजा धोलनदेवने चम्पलके नामलेमे किला बाधा था जो अबतक मौजूद है. अकबरकी अमल्दारीमे धोलपुर आगरेके सूबेकी तर्फ था. मोहबतखां बगेरा यहां हाकमी करते थे. संवत् [१८३८] में सिंधियाके कबजेमे आया फिर अंग्रेजोंके कबजेमे हुआ. अंग्रेजोंने खेरातसिंहजीको गोहदके बदलेमें दिया. खेरात सिंहजी संवत् [१८८३] मे देहांत हुवे, वर्तमानमे राणा निहालसिंहजी स्वतंत्र राज्याधिकारी है, इस राज्यके नीचे (६६६) गांव है. आमदनी दश लाखकी खास धोलपुरकी मनुष्य गणना (६३७३) है. श्वेतांबर जैन मंदिर वा श्रावकोके घर कोइ नहीं. अन्य जगहसे आये हुवे एक दो घर है. हम एक रोज यहां रहे. दूसरे दिन बिहार कर चम्पल नदी उत्तरे इसका पाट लंबा है नाव बिदून उतरना नहीं होता. चार कोस बंधा गांव बंधासे चार कोस मुरेना मुरेनासे चार कोस नुराबाद चार कोस पुरानो ठावणी और पुरानी ठावणीसे दो अठ्ठाइ कोस छत्कर गवालियर सं० [१८४८] आपाठ मुदी [८] जौमवारके रोज पहुंचे. सराफा बजारमें मंदिरके

पास पंचायती उपाश्रयमे ठहरे. यह शहर सोनरेखा नदी कनारे बसा हुवा पहाडके घेरेसें वेष्टित है. लखर और गवालिनगरके बीचमे देह कोसका अंतर है. गवालिनगर पुराना नगर है, लखर नया है संवत् [१७६६] मे इसकी आबादी हुयी. सिंधिया सरकारकी राजधानीका शहर है पहले उज्जैन था. इसको फोज सदा चढाई और लम्बाइपर रहती ही थी जबसें गवालिनगरमें बसा हुवा और फिर न हिला तबसें यही राजधानी हो गया. सिंधियाकी अमल्दारी उत्तरको सूबे आगराके सरकारी जिले करोली और धोलपुर इलाकेसे मिली है. पूरबकों बुदेखखंम ताल जोपाल और सागर नर्मदाके जिले पश्चिमकों जयपुर और कोटाको सीमातक दखनकी तर्फ निजाम हेदराबाद और इंदोरको अमल्दारीसें मिली है. आमदनी लखर राज्यकी [१३६०५००६] वस्ती [३११५०५७] खास लखरकी देहलाख, श्वेतांबर श्रावकोके घर (३५०) जीसमें [१००] दुधियापंथके मंदिर (१) सराफा बजारमें चिंतामणि पार्श्वनाथका शिखरबंद लंबाईमें सवातेइस गज, चौड़ाई साढे चौदह गज है, रंगमंडपकी उत्तमें मीनाकारो काम देखने योग्य है. दोनों पासेकी दिवारमें सिद्धाचल, गिरनार, आबू, अष्टापद, सम्मेशिखर, और नंदीश्वर आदि तीर्थोंके जाव चित्रांमके बने हुवे मनोहर है. शहरके बहार दादाबानीमें शांतिनाथजीका मंदिर और जिनदत्तमूरि जिनकुशलमूरिका धून है.

आषाढ सुदी (१३) रविवारके रोज झातासुत्र और आचार दिनकर व्याख्यानमे वाचना शुरू किया. ओर निम्न लि-

खित टाईमटेबल ( वरुत नियमावलीपत्र ) लिखकर उपाश्रयकी दिवारपर लगाया.

### ( टाईमटेबल.)

प्रातःसमयके (६) बजेसें (७) बजेतक प्रतिलेखना स्थंभिल-भूमि गमन आदि सब क्रिया.- (७) बजेसें (८) बजेतक धर्मोपदेश (व्याख्यान).- (८) बजेसें (१०) बजेतक विश्राम.- [ १० ] बजेसें (११) बजेतक अहार पानी लेना.- (११) बजेसें (१) बजेतक विश्राम और कुछ योगाभ्यास चितवन.- (१) बजेसें [ ४ ] बजेतक ज्ञानचर्चा पठनपाठन आदितत्व विचार और प्रतिलेखना आदि क्रिया.- [ ४ ] बजेसें (५) बजेतक पुनःस्थंभिल गमन आदि क्रिया.- (५) बजेसें (६) बजेतक आहार क्रिया.- सूर्य अस्त होनेके पितें [ ८ ] बजेतक प्रतिक्रमणक्रिया.- (८) बजेसें [ १० ] बजेतक ज्ञानगोष्ठी.- (१०) बजेसें [ ११ ] बजेतक योगाभ्यास.- [ ११ ] बजेसें (५) बजेतक शयन और फिर पुनःप्रतिक्रमण आदि आवश्यक क्रिया सूर्योदयतक करनी.- उपर लिखे अनुसार जो समय ज्ञान चर्चाका नियत किया गया है उस समय श्रावक और अन्यसर्वही मतांतरके धारक मनुष्य हमारे पास आनकर धर्मोपदेशका और ज्ञानचर्चाका लाभ ले सकते है और जिसको पूछना वा शंसय निवर्तन करना हो एसा कर सकते है. विवाद भ्रम व्याख्यानसज्जामें करो.

समयको निरर्थक न जाने देना अधिक लाभका हेतु है. गथा हुवा समय फिर पिछा नही आता. समयपर किया हुवा काम बहुधा निष्फल नही जाता. आगमका वचन जी है कि "काछे

काले समायरे,-' जो मनुष्य वरुतनियामावली नही करता है ऊतकां सदा प्रमाद घेरे रहता है. कोइ कार्य नही सुऊता.

श्रावण सुदो (११) रविवारके रोज हमारा जाना गवा-  
लियरको हुवा. पहेले किलेपर गये लश्करसें देह मील उतर की  
बाजु [१७४] फूट उंची पहामोपर यह एक पुराना स्थान है.  
(२) मील लंबा और एक तर्फसे [ ६०० ] फूट दूसरी तर्फसें  
(१०००) फूट चौमा है. इसके दरबजेपर हर वरुत चौकी पहरा  
रहता है, जो शरुस इसें देखना चाहता है राज्यकी तर्फसें उ-  
सको टिकट मिलता है, इसको देखाकर सारे किलेमें घूम लो.  
शास्त्रोमें जो गोपाचल उर्ग लिखा है वह यही स्थान है. पावा-  
पुरीमें निर्वाण समय महावीरस्वामीने पांचमें आरेका ज्ञाव वर्नन  
करते कहाथा जो गोपाचल उर्गमें आमराजा बप्पन्नद्धमूरिके  
उपदेशसें मेरी स्वर्णमय प्रतिमा बनायगा सो यहो गोपाचल स-  
मजीयेगा. विविधतीर्थ कल्पमें जीनप्रन्नसुरि इसीके संबंधमे लि-  
खते है कि विक्रम संवत् [८०१] में यहां आमराजा राज्य करता  
था. आचार्य बप्पन्नद्धमूरि यहां आये थे. उनके उपदेशसें आ-  
मराजा जैनधर्मी हुवा. और महावीर स्वामीकी स्वर्णमय मूर्ति  
यहां स्थापन कियो. कितनेक समयके बाद राजका उलथा हुवा  
तब यह मूर्ति मथुरामें पधरायी गयी.

किलेमें प्रवेश करते उरवायो दरबजा आता है. आगे सु-  
रजकुंम और गंगोला जील सुहावने स्थान हरवरुत इनमें  
पुष्कल जल जरा रहता है. गुजरी महल, शीशमहल, पुरानी  
इम्मारते है, इनमें कारीगरोंका काम तलधर जलके ऊरनें और

तरह तरहके मकान देखने लाइक है गणेशपोल दरवाजा और बादलगढ दरवाजा इसपर निर्गमघार है.

संवत् (११४९) में यहां दिगंबर आम्नायका मंदिर बना. जो अब प्रसिद्धिमें सास बहूका मंदिर कहा जाता है. इसके पहले दिगंबरमतका यहां कोई मंदिर नहीं था. आजकल इसमें कोई मूर्ति नहीं. केवल टूटा फूटा पत्ता है. घारके अगामी दोनों फाटकमें दो शिलालेख आपने सामने दिवारमें लगे हुवे है लंबे सवातीन हाथ, चौमें एक हाथ पंक्ति (११) दोनोंकी मिलाकर ४२ है. इसमें कुछ लिखाण संस्कृत है. लिखा है कि विक्रम संवत् ( ११४९) आसोज वदी पंचमीके सौंज यह पद्म प्रभुका मंदिर बनाया गया. कितनेक काव्य जिन स्तुति के और कितनेक दिगंबर आचार्योंके वर्णन के है. उरवायी दरवाजा के पास पहाडमे उकेरी हुयी कितनोक मूर्ति खमे आकार कितनोक बेठे आकार सब खंमित है खमे आकारकी मूर्ति कोई (५) गज कोई (७) गज उंची है. सब नग्न स्वरूप हैं. इनमें एक मूर्ति सबसे बनी जिसकों लोग कहते है (५२) गज उंची है परंतु यह कहना ब्रथा है. हमारे खबर एक शरूखने चढकर इसको मोरीसें नापी तो (१७) गज हुयी. इसके दाहने पासे थोमीसी दूर एक प्रतिमा बेठे आकार अनुमान (१०) हाथ उंची रिषजदेव जगवानको है इसके नीचेके लेखमे लिखा है कि ( संवत् १४९७ ) वैशाख सुदी सप्तमी वार शुक्रे.—

गोपाचल डोंगे-महाराजधिराज ( यहां राजाका नामथा सो तोमा गया है)—काष्ठासंधे माधुरान्वये पुष्कर गणो जहारक श्रीगुण कीर्तिदेव तत्पदे यशःकीर्तिदेव प्रतिष्ठाचार्ये, श्रीपंमित रैपु तेषां

आम्नाये-अग्रोतवंशे-गोहुलगोत्रे-साचुरातू-तस्य पुत्र साचू भोपा  
तस्य जार्या नाल्ही-पुत्र ५-प्रथम साचु क्लेमसिंह-द्वितीय साचु  
महाराज-तृतीय आसराज-चतुर्थ साचु नयपाल-पंचम संधाधि-  
पति कौला-तस्य जार्या (१) ज्येष्ठा स्त्री सरस्वती-पुत्र मल्लिदास  
द्वितीय जार्या साध्वी सुरों-पुत्र चंडपाल-क्लेमसी पुत्र द्वितीय  
साचु श्री जोजराज जार्या देवादी-पुत्र पुन्यपाल-एतेषां मध्ये  
श्री आदिजिन-संधाधिपति कौला सदा प्रणमति.

यह लेख यद्यपि विद्वान्का लिखाया हुआ नहीं है क्योंकि  
विद्वान् आचार्यका लिखाया हुआ होता तो व्याकरणके कायदेसें  
विरुद्ध नहोता परंतु इस बातका यहां विचार करनेकी जरूरत  
नहीं. तात्पर्यसें जरूरत है. सो तात्पर्य खुलासा ही है जाषामे  
लिखनेकी आवश्यकता नहीं.

इसप्रतिमाके दाहने पासेकी दिवारमें (१) शिला लेख और  
भी लगा हुआ है. इसमें संस्कृत वृत्त (ए) है. पहले दोवृत्तमें रिषज  
देवकी स्तुति है तिसरे वृत्तमें आगे संवत् मिति वगेरा है संवत्  
( १४९७ ) वैशाख सुदी सप्तमी शुक्रवार पुनर्वसु नक्षत्र आदि  
लिखा है.—

किलेके पिछले पासे एक पथरकी बावनीके दाहने हाथ  
पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा जो उकेरी हुयी है निचेके लेखमें लिखा  
है कि-जब यहां कीर्तिसिंघ राजा राज्य करता था उसका खजा-  
नची गोलाराट् श्रावकने(जो दिगंबर आम्नाय मूलसंघका श्रावक  
था) यह प्रतिमा बनवायी.-अन्य जी बहांतसी प्रतिमा इसजगह  
उकेरवायी. परंतु वर्त्तमानमे कोई साबत नहीं. किसीके अंग

और किसीके ऊपांग खंमित किये हुवे है.

इस किलेके बारेमें इतिहासकारोंका कथन.

(१०६७) वर्ष पहले यहां कडवाहे ठाकर सूरजसेन महा-  
राजका राज्य था. इसका दूसरा नाम सूरजपाल था. सूरजकुंभ  
इसी सूरजपालका बनाया हुवा है. इसने यहां (३६) वर्ष राज्य  
किया. इसका पुत्र रसिकपाल हुवा. राज्य (१) ही वर्ष किया.  
इसका पुत्र नरहलपाल इसने यहां एक महादेवका मंदिर बन-  
वाया. (११) वर्ष राज्य किया. इसके पिछे अमरपालने (३६)  
वर्ष, इसके पिछे गंगपाल हुवा. (३१) वर्ष राज्य किया. इसने  
यहां गंगोलाजील तालाव बनाया जो अबतक मौजूद है. गंग-  
पालके पिछे राजा पालने यहां (१०) वर्ष राज्य किया. नोजपा-  
ल (९) वर्ष राज्य-पद्मपाल (९) वर्ष राज्य-अनंगपाल यह साधु  
जनोंका संगी हुवा-इंद्रपाल (३) वर्ष राज्य जोतपाल (१४) वर्ष  
राज्य-वसंतपाल (१७) वर्ष राज्य-धोधपाल (११) वर्ष-लक्ष्म-  
नपाल (४) वर्ष-नाहरपाल (३) वर्ष-और अज्जापाल (९) वर्ष  
राज्य किया. इन बीस राजाओंके बाद पालके घरानेमें  
(६३) राजें और हुवे. सूरजपालसें लगा पालघरानेका राज्य(८४)  
राजेतक (९८९) वर्ष रहा. अंतिम राजा बुधपाल था. बुधपा-  
लका पुत्र तेजकरण. यहां पालगोत नुस हुवा. तेजकरण\*आमेरके  
राजा रानमूलकी पुत्री व्याहा था. राजा तेजकरण इस रानीके  
साथ अत्यंत रागवान् था. और अपने सुसरालमें जा रहा था.

\* जयपुरसें (३) कोस उत्तरमे छोटासा गांव मौजूद है.



स्त्रीकी आसक्तिमें राज्यका चलाना कैसे बने ? निदान ! गवा-  
लिअरका राज्य रामदेव प्रहारने संजाला. और (१) वर्षके बाद  
यही खुद राज्याधिकारी हो गया रामदेव प्रहारसे प्रहार खान-  
दान थुरु हुवा. इसघरानेमें परमालदेव-सलामदेव-विक्रमदेव-रत्न-  
देव सोजागदेव नरसिंघदेव-और परमलदेव-यह (७) राजे (१०१)  
वर्षतक राज्य करते रहे.

बाद शमसुद्दीन अलतमसके कबजेमें आया. यह कुतबुद्दीन  
अयबकके घरका गुलाम था कुतबुद्दीनके पिछे यही दिल्लीके  
तख्त नसीन हुवा था. जब दखनसे लडाइकर यह पिछा लोटा  
तब (११६) हजार फोजके साथ यहां \* आंतरी मुकामपर पमाव  
किया. सुलतान यहां ठेरा परंतु परमलदेव इसको मिलने नही  
गया. सुलतानने अपने नोकरोको हुकम दिया कि-इसको पकड़  
लाउ. और किलेपर एक मशजीद् बनाउ. परमलदेवनं अपने  
कुटुंबको जलायकर आप सुलतानसे लमा. और देह त्याग  
किया. यहां प्रहार घराना टूट गया. सुलतानने यहां एक मश-  
जीद् बनवायी. जो सूरजकुंम और गंगोलाजीलके पास  
मोजूद है.

सुलतान शमसुद्दीनके बाद सुलतान फिरोजशाह यहां रा-  
ज्याधिकारी हुवा. इसके वख्तमें तूअर जातिके दो रजपूत जी-  
न्होंका नाम परमालदेव और अधरदेव था लम्कर यहां अपना  
कबजा किया. तूअर घरानेके (६) राजे यहां हुवे, ठठा राजा  
बंगरसिंहने यहां गणैसपोल दरवजा बनाया. जो बादलगढ द-

\* यहगांव गवालिअरसे (१२) मील दक्कनमें है.

रवजे के पास है. इंगरासिंहका पुत्र कीर्तिसिंह हुवा. कीर्तिसिंहका पुत्र कल्याणसिंह इसने (१७) वर्ष राज्य किया. कल्याणसिंहका पुत्र राजामान हुवा. यह एक समय एक मेदानमें ट-हल रहाथा तो रायगांवकी एक ओरत चली जाती देखी. जो शरीरसें ताकातदार और सुंदर थी इधर दो जैसैं बने जोरसें लम रहेथे ओरतने बीचमें आनकर दोनोंको अलग अलग कर दिये. चकित हुवा राजा मान ओरतसें पूछता है तुं इतनी ताकातदार क्यों ? ओरतने कहा राइजीलका पानी पिती हुं. राजाने इसको मुशीमें इसको अपनी रानी बना ली. ओर रहनेके लिये एक गुजरोमहल बनवा दिया जो शीशमहलके पास मौजूद है. राजा मानके वख्त दिल्लीकेतख्तपर सुलतान बहलोले लोदी था. संवत् ( १४२४ ) में हुसंगशाह मालवेका यहां आया और कुछ दखल जमाया था. राजामानके पिठें इसका पुत्र विक्रमाजीत हुवा. (३) वर्ष राज्यकिया. तूअर घराना यहां समाप्त हुवां. परमालदेवसें लगा विक्रमाजीततक तूअर घरानेके (१०) राजा आने (२०५) वर्ष यहां राज्य किया.

बाद मुसल्मानी अमल्दारीके कबजेमें रहा. ऊन दिनोंमे बाबर बादशाह यहां आया. इसने यहां गंगोलाजीलपर एक बगीचा बनवाया. हुमायुके पिठे जब दिल्लीके तख्तनसीन अकबर हुवा तब मुरबल गुलाम राज्याधिकारी होकर यहां आया. निदान ! अकबरके हाथनीचे यह किला (५०) वर्ष रहा. जहांगीरके हाथ नीचे (२४) वर्ष रहा. शाहजहांके वख्त बराह शैबद यहां हुकूमत करता रहा. आलमगीरके वख्त ख्वाजा अबडल्ला

इसने यहां किलेके नीचे (१) शराय बनवायी. कुल (१) वर्ष रहा. बाद मोतमीतखां आया (९) वर्ष रहा और (३) इम्मारतें बनवायी. आलमगीरदरवजा मशजीद और नूराबाद शराय. मोतमीतखांके बाद खिदमनगारखां आया. (६) वर्ष रहा धोरेपुर बारेहदरी-मोलाफसल बाग-और ऊरवायी दरवजा इसने बनवाया. इसके पिठे शैयद मनवरखां-मनवरखांके पिठे महम्मद अली न-वाब शवास्तखां-वसंतशाह-मुहमदशाह-कासदअलीखां-वगेरा यहां राज्याधिकार करते रहे.

इसके पिठे महाराठोंका यहां दखल हुवा. राणा जीमसिंह गोहद वालेको विठलरावने सीकस्त दीयी और अपना अमल किया. विठलरावके पिठे उसका पुत्र बापू शिवाजीने यहां १६ वर्ष राज्यकारजार किया. लधेभी टेकरीके पास नजरबाग और तालाब बनवाया. ग्वालपासिध्र योगीकी गुफा इसीके पासमे है बापू शिवाजीके पिठे गोविंद श्यामराव (जो कारकूनथा) काम करने लगा. बाद रुगनाथराव ( गोविंद श्यामरावका पुत्र ) राज्याधिकार करता रहा. रुगनाथरावके पिठे बापूजी होजकर-और इसके पिठे ज्ञाउसाहब और विश्वासराव यहां राज्य करते रहे. (संवत् १८३६) में अंबाजी इंगलें गणपतराव और सरदार खामेरावने गोहदवाले उतरपतके साथ लम्हाइ कियो. उतरपतने हार मानो और अंग्रेजोंसे मिता. अंबाजी इंगलेने दखनी फोजकी (१) कंपनी किलेपर रखी. श्रावण वदी (४) शुक्रवारके रोज अंग्रेजी दो रजमीट गरगजके पहारपर दाखल हुयी. इधर बापूजी सूबेदार और अन्य केइ सरदार लोग

सूरजकुंभपर उपस्थित हुवे. अंग्रेजी फोजसें एक गोली आनकर बापूजी सुबेदारको लगी और उनका देहांत हुवा तब अंबाजी इंगले माल असबाब वगेरा लेकर पहाडगढको चले गये. अंग्रेजोने किलेपर आनकर कब्जा किया. (१) वर्षके बाद महदजी सिंधियेने इसको संजाला. फिर अंग्रेजोने इस वख्त महाराज जीयाजीरावको उमर (२४) वर्षकी थी. राज्यकारनार दिनकर रावजी करते थे. इन दिनोंमें बागीलोगोंका ऊपड्व अधिक था. जीयाजीराव बागीउ के सामने उपस्थित हुवे, परंतु फोजके बदल जानेपर पिठा हठना हुवा. अंग्रेजोकी साहाय्यसें फिर बागीओंसें लडे और सीकस्त दियो.

किलेको देखकर हम गवालिअरको गये. यह नगर पहाडके नीचे खंम खंम वमा हुवा है. जितना पहले आबाद था अब नही रहा. मनुष्य गणना (२००००) हजार राज्य सिंधिया सरकारका और जैनश्वेतांबर मंदिर एक ही यहां है, श्रावकोके घर पहले बीस पच्चीस थे अब नही रहा. मंदिरमें मूलनायक पार्श्वनाथजी, सार संजाल लश्करके श्रावक लोग रखते है. सायंकालको हम लश्कर आये.

पर्यषण पर्व बतीत होनेके बाद भाद्रपद सुदी (१३) बुधवार के रौज दर्शनोके लिये हमारा जाना मुरार ठावणी हुवा.

लश्करसे पूरबको (३) कोसपर मुरार नदीके किनारे अनुमान (५०) वर्ष हुवे यह आबाद हुयी है. हम (४) घटी दिन चढे पहुचे. इसमें (२५०००) हजार मनुष्यको बस्ती, राज्य सिंधिया सरकारका, श्वेतांबर श्रावकोके घर [३०] मजी दुंदियापंथके

है. मंदिर (१) पार्श्वनाथजीका शिखरबंद, इसकी प्रतिष्ठा संवत् (१९२७) वैशाख सुदी (३) तोजके रोज हुयी. दर्शन किये, मूर्ति अतिशय युक्त है. मंदिरके पास उपाश्रयमें ठहरे, व्याख्यान बा-चा. लडकरसे कितनेक श्रावक यहां दर्शनोको आये थे. और कितनेक यहांके श्रावक जी मुननेको आये. मूर्ति पूजा आगम प्रमाण और युक्तिद्वारा सत्य है वा असत्य है, इस विषयपर ब-कृता हुयी. इसका संक्षिप्त निचे मुजब.

### (मूर्ति पूजापर व्याख्यान.)

मूर्ति पूजा सर्वज्ञ प्रणीत आगमानुसार सबको मान्य है. अनुयोगधारसूत्रमें [४] निक्षेपेके अवांतर दूसरा स्थापना निक्षेप यही मूर्ति. मूर्ति कहो बिंब वा. प्रतिमा कहो तस्बीर उबी अक्ष या प्रतिकृति कहो सबका वाच्य अर्थ एक है.

नाम जिण जिणानामा, ठवणजिण जिणदंपडिमानु,  
दव जिणा जिणजीवा, जावजिणा समवसरणत्ता. १

रिषजदेव-पार्श्वनाथ-महावीर-आदि नाम जिन है, उनकी मूर्ति स्थापना जिन-उनका असंग्रह्य प्रदेशमय आत्मा इव्य जिन और जब वे समवसरणस्थित साक्षात् विद्यमान थे वह जावजीन है. "जिन अजावे जिनठवणा"—जिनेश्वरोके अजावमें उन्होकी स्थापना दो प्रकारकी, सद्जाव दूसरी असद्जाव, सद्जाव स्थापना मूर्ति और असद्जाव स्थापना स्थूजआदि, जगवतीसूत्रमें ब्राह्मी लिपीको गणधरोने नमस्कार किया, जो महाशय इस बातको मानता है, मूर्ति पूजासे कर्जी इनकार नहो

कर सकता. इसी सूत्रमें जहां चमरेंद्रकी उत्पात शक्तिका वर्नन चला है वहां तीन वस्तुका सरणा लेकर उर्ध्वलोगम जाना लिखा है. अरिहंतका सरणा चैत्यका सरणा और तिसरा मुनिका सरणा. यहां चैत्य शब्दका अर्थ मूर्ति है ज्ञान नहीं. चैत्य शब्द का ज्ञान अर्थ धातु प्रत्यय रुढ़ी वा योगिक किसीद्वारा सिद्ध नहीं हो सकता. “चैत्य जिनौकस्तद्विंबं चैत्यो जिनसज्जातरुः” अरिहंतको दाढ़ाउको लेजाकर इंद्र रत्नमय साजमेमें रखते है. उनके स्वरु पांच इंद्रियोंके विषय विकारको कोइ बात नहीं करते यहांतककि देवांगनाकेसाथ उसजगह प्रेमयुक्त दृष्टिमें दृष्ट भी नहीं मिलाते. यह मूर्तिपूजाका ही एक जेद समझियेगा.

समीक्षक मूर्ति पूजा खुद जिनेश्वरोंने कही वा पिछेंसे आचार्योंने चलायी ? उत्तर-जिनेश्वरोंने कही समीक्षक—जिनेश्वर कैसे कहे कि-तुम हमारी पूजा करो ?-इसमें महत्त्वताकी आकांक्षा पायी जाती है. उत्तर, जैमें गुरु अपने शिष्यका विनय सिखाते है और उसके आत्माहितका रस्ता बतलाने है वैसे जिनेश्वर जी जव्य जीवोंको आत्महितका मार्ग बताकर उनकों उचित किया करनेका उपदेश देते है. महत्त्वताकी आकांक्षा उसको है जो रागी घेपी है. निरागीको महत्त्वता कैसी ?-समीक्षक मूर्तिपूजा उत्तम है तो साधुजनो क्यों नहीं करते ? उत्तर-पूजा दो प्रकारकी, जव्य और ज्ञाव, साधुजनो ज्ञाव पूजा करते है. यह कोइ नियम नहीं कि-जो कार्य श्रावक करे वह मुनि जी करे. देश विरति और सर्व विरतिका गुणस्थान अलग है इसलिये साधुश्रावककी समस्तक्रिया एक नहीं हो सकती. दूसरा यह

जी है कि-अविरतिरूप ज्वर गृहस्थको है साधुओंको नहीं इसलिये ये अर्घ्य पूजारूप औषधी लेनेकी उन्हेंको जरूरत नहीं.

मूर्तिपूजा मूर्तिको उपकारी नहीं किंतु पूजकको उपकारी है. अर्थात् असुखकर्ममल दूर होनेमें निमित्त कारण है. यद्यपि इसमें अर्घ्य हिंसा होती है परंतु वह पुन्यानुबंधिपुन्य प्राप्ति और अशुभ कर्मकी निर्जरा होनेमें हानिकारक नहीं. जैसे किसी स्त्री का पुत्र एक जगहपर खेलता है और उधरसे एक सर्प उसके सामने चला आया. माताने दूरसे देखा कि-मेरे पुत्रको सर्पके मुखसे खींच लेना ही मेरे सुखका निधान है. दोमके आयी, और पुत्रको पकड़के घसीट लिया. पुत्रके शरीरमें लोहूजी आ गया परंतु कहती है बन्ना लाज हुआ मरनेसे मेरा पुत्र बच गया. इसी तरह गृहस्थ जी अर्घ्य हिंसासे मूर्तिपूजामें अधिक लाज समझकर सुखका निधान समझते हैं. जिस कार्यमें अल्पदोष हो और बहुत दोषोंका निवारण होता हो वह कार्य त्यागने योग्य नहीं. जैसे रिषभदेव जगवान्ने शिल्पआदि शिक्षा बहोत दोषाका निवारण होता जानकर संमारी जीवोंको बतलायी.

समीक्षक,-पूजा सावध है और सामायिक निरवध है, इस लिये सामायिक ही क्यों न करे? उत्तर कौन कहता है कि सामायिक न करना. पूजाके समय पूजा और सामायिकके समय सामायिक दोनों करना ठीक है. पूजाको ओरुना और सामायिक करना यह ठीक नहीं. क्योंकि-प्रथम सम्यक्तकी शुद्धि हो नि व्याजब है. जिन पूजा सम्यक्तकी शुद्धि करनेको पुष्ट आलंबन है. समीक्षक,-तीन निक्षेपें जाव निक्षेपा बिदून अपूज्य कहते

है ? उत्तर यह बात असत्य है क्योंकि शास्त्र सिद्धांत जी भाव निक्षेपों से रहित है वे जी अपूज्य ठहरेगें. समोक्तक, - जैसों षट् आ-वश्यक साधु श्रावकको प्रतिदिन करना कहा वैसे सूत्रोंमें जिन पूजा जी अवश्य कृत्य क्यों न कही ? उत्तर बराबर कही है कौन कहता है नहीं कही ? जगह जगह सूत्रोंमें जिन पूजा करनी कही है. कौन कौनका यहां नाम लिखे. सैंकमे ग्रंथ इन बातोंपर बन चूके है. जो एकत्तीस बत्तीस शास्त्र ही मान रहे हे यह चिंता ऊन्होंकों ही है हमको नहीं. जब कोइ पूजता है बत्तीस सूत्र ही मानने अपर नहीं मानने कहा लिखा है तब फिर मुंह खोलनेकी जगह नहीं रहती. समीक्षक-आणंद कामदेव श्रावकने मंदिर बनाया सूत्रोंमें क्यों नहीं लिखा ? हकीकतमें उन्होंने बनाया ही कहा है ? उत्तर-न बनाया तो क्या हुआ ? पूज्या तो है. उपासकदशांग सूत्र कह रहा है आणंद कामदेव आदिने सम्यक्तमूल बारहव्रत लिये. और अन्य देवको नमन पूजनका त्याग किया. वीतरागदेवको नमना पूजना स्वीकृत रखा. फिर शंसयकी बात ही क्या रही ? ठाणांगसूत्रके चौथे ठाणेमें श्रावक शब्दका अर्थ कहा है वहां सात खेत्रमें श्रावकको धन लगाना कहा. आणंद कामदेव दृढ़ धर्मवान् श्रावक थे इन्हों ने सातखेत्रमें धन लगाया और सम्यक्तके आठ आचार यथाविधि सेवन किये. साधर्मि वत्सल और प्रज्ञावना ये दो ऊक्त आठ आचारोंमें जिन नहीं. साधर्मि वत्सलमें साधु साध्वी श्रावक श्राविका ये (४) क्षेत्र आ गये. प्रज्ञावनामें जिनमंदिर जिनप्रतिष्ठा और ज्ञान ये (३) क्षेत्र आये. आणंदआदिने सातक्षेत्र सेवन किये



और जिनप्रतिमाकी पूजा कियी इसमे कोई शंसयकी बात नहीं. हतनेपर जी जिन्होको शंसय न मिटे उनके लिये कोई उपाय नहीं. उपासकदशांग चरितानुवाद है. चरितानुवाद एक देशी होता है. विधिवाद सर्वव्यापी होता है. इसमे देखना चाहिये कि-भावकोके लिये मंदिर और मूर्ति बनवानेकी आज्ञा है कि नहीं ? अगर आज्ञा न होती तो जरतचक्रवर्त्ति अष्टापदपर काहेको मंदिर और मूर्ति बनाता ? पुरिमताल नगर निवामी बगूर भावक मल्लिनाथका मंदिर काहेको बनवाता ? विमलशाह शेष-वस्तुपाल, तेजपाल, मंत्री-और जैसाशाह, शत्रुंजय, गिरनार, और आवू बगेरा तीर्थमें काहेको लाखों करोमों रुपैये लगाते ? कुमारपाल राजा तारंगतीर्थपर आस्मानसे बातें करता हुआ मंदिर बनाकर काहेका छव्य विनाश करता ? महावीरस्वामीके पश्चात् (७०) वर्ष बाद रत्नप्रज्ञमूरि हुवे उन्होंके प्रतिष्ठा मंदिर जो अबतक मारवाम देशमे मौजूद है काहेको होते ? शंखेश्वर पार्श्वनाथ-धुलेवामे केशरीयानाथ-खंजातमे स्थंजनपार्श्वनाथ-फलोदीमें फलवर्द्धी पार्श्वनाथ-वरकाणामें वरकाणा और अंतरी-स्वजीमें अंतरिक्षपार्श्वनाथ, नादिया गांवमें जीवितस्वामी, महावीर, गोधामें नवखंभापार्श्वनाथ, ज्योयणीमें प्रगट हुवे मल्लिनाथ-और मथुरामें ग्यारहसे वर्षके पहलेकी पुराणीपार्श्वनाथकी प्रतिमा-ये सब पुराणी प्रतिमा अगर जैनमें मूर्तिपूजनका निषेध होता तो कौन बनवाता ? संप्रतिराजा जो महावीरस्वामीके पश्चात् (१७०) वर्ष बाद हुवा काहेको जगह जगह मंदिर मूर्ति स्थापन करता ? जो वर्त्तमानमें हम तुम देख रहे है. महानिशीथ मूत्रमे अष्टप्रकारी

पूजाका वर्नन और ज्ञाता रायपसेणी बगेरा सूत्रमें सतराह प्रकारी पूजाका वर्नन काहेको होता ? बस ! मूर्तिपूजाका निषेध जैनमें कुल (३३५) वर्षके अंदाजसें शुरू हुवा है. इस बातको कोइ इनकार नहीं कर सकता.

उत्तराध्ययन सूत्रमें कहा है कि-चित्रामकी स्त्री मूर्ति जिस मकानमें हो वहां साधु न उहरे. सोचोकि जब चित्रामकी स्त्री मूर्ति विकार पेदा करेगी तो वीतरागकी मूर्ति हमको वीतराग क्यों न करेगी ? समीक्षक-दूसरेकी पूजासे दूसरेको संतोष कैसे ? उत्तर-हम दूसरेकी पूजा नहीं करते हैं किंतु मूर्तिद्वारा उस देवकी स्मृति करके उसमें आरोपद्वारा साक्षात् देवकी पूजा करते हैं. वीतराग आत्म स्वप्नावमें स्थित है हम उनको संतोष क्या करेंगे वे आप आपने ज्ञानदर्शनचारित्र्यमें संतुष्ट हैं. पूजा पूज्यको उपकारणी नहीं किंतु शुद्धज्ञावसे पूजकको उपकारिणी है. समीक्षक-पाषाण पूजना और मुंहसे वीतरागको पूजा बोलना यह क्या ! हम पाषाण नहीं पूजते हैं. अगर हम पाषाण पूजते होते तो स्तुति इस वजह करते हैं पाषाण ! तूं ब्रह्मा कोमल है, अमूक खाएसें तूं पैदा हुवा, तूं मरुखनसा मलाश्म है. तूं दश रूपये गज मौलका है. तेरी हम स्तुति करते हैं असा बोलते. परंतु नहीं ! हमतो उसमें आरोपित वीतराग देवकी स्तुति करते हैं, निरंजन-निराकार-अजर-अमर-अकलंक-सिद्ध निर्मोही-निःकांक्षी वीतराग-अर्हन्-जिन, इत्यादि बोलते हैं.

समीक्षक-मूर्तिमें ये गुण हैं ?

उत्तर-मूर्ति एक अपेक्षा तत्त्व है और एक अपेक्षा तत्त्व

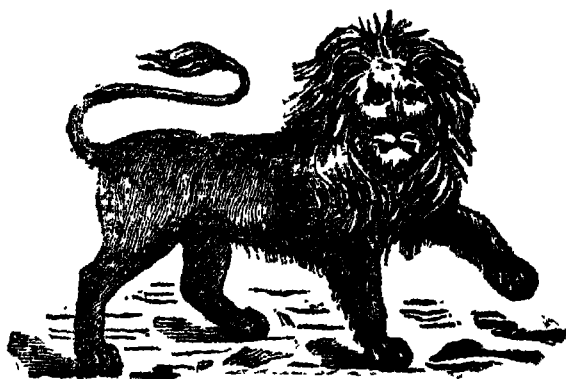
नहीं. जब पूजक पुरुष उसमें पूज्यका आरोप करता है तब उसको साक्षात् वीतराग ही दिखता है.

समीक्षक,—पूजा समयके अनंतर मूर्तिको कोई पैर लगावे तो दोष है ?

उत्तर—क्यों नहीं ? जो मूर्ति देवकी स्मृति करानेमें उपकारिणी है उसका आदर चाहिये कि निरादर ! जैसे पुस्तक और मालाका निरादरमें दोष है तद्वत् मूर्तिके निरादरमें भी है.

समीक्षक—जबतक जिस वस्तुका पुरेपूरा हाल न पाया हो सुने सुनाये उसपर अमल कर लेना कौन चतुराईकी बात है ?

उत्तर—अच्छा ! इसीपर कायम रहियेगा बदलना नहीं. मानिये ! कि—आप किसी राजेके बागमें देखनेको गये हैं. वहां केई पिंजरेमें सिंह (शेर) बंधे सुने है, अबतक आप उस जगह नहीं पहुंचे हैं और रास्तेमें किसी शख्शनेदोमके कहा कि—जागिये ! पिंजरेमें सिंह निकल आया, चला आता है.



बस ! इतनेही कहनेपर आप चमक गये. और उस सुनी सुनाई बातपर अमल करके जगे. सोजो ऐसे जगे कि—थुछ बुछ

दोनों विसर गयो. बतलाइये पूरेपूरा हाल पाना और उसकी तलाश करनी कहाँ रहो ! सुना सुनाया ऐसा ज़ारी हो गया जिसपर जागना ही बन आया. महाशय ! ये सब आपकी वृथा तर्क-वितर्क है. जिस बातको आप न मानना हो अनेक दोष निकालने, समीक्षक-जो बस्तु जब तक समझमें न आवे तब तक हमतो नहीं माने अर्थात् मूर्तिपूजाका तात्पर्य और विधि विधान जब तक समझे नहीं है तब तक कैसे माने ?

उत्तर-बिना समझे जन्मते ही दूध पिया. बिना समझे खेल खेले, बिना समझे पढ़ने लगे. बिना समझे दवा खायो. बगेरा केइ कार्य बिना समझे किया. यह व्याप्ति यहां लग नहीं सकती.

वैश्याका नाटक रंग राग देखते ही राग रागणी के जेद बिना समझे कह देते है अहा ! हा !! क्या ! सुंदर गाना हो रहा है. चंद्रमा सूर्यके विमानमें क्या क्या चीज है हम तुम देख नहीं आये जब देखा नहो तो समझना कहासे हुवा ? फिर बिना समझे उसकी चांदनी और प्रकाशके अनुसार कार्यजी न करना ठीक है, एकोले परमाणुको हम तुमने कजी नहो देखा तो फिर बिना देखे समझ उसका मानना जो व्यर्थ है. कहोगे सर्वज्ञके वचनसें मानते है तो पूजा जी सर्वज्ञके वचनसें मान्य होगी, जो मनुष्य विचार शील है उनके लिये समझानेका यत्न है. दीबेमें गिरते पतंगका बचाना हमारा उद्योग हे इतनेपर जो आन पजे तो उसकी मरजी.

समीक्षक-निराकारकी उपासना ध्यानद्वारा हो सकती है फिर मूर्ति पूजासें क्या प्रयोजन ?

उत्तर-मनुष्यके मस्तिष्कमें जितने जाग है उनमें किसीमें जी यह ताकात नहीं कि निराकारका ध्यान करे. यह बात प्रत्यक्षमें जी सबको मान्य है कि-जितने रंग हम लोगोके देखनेमें आते हैं. जिस जिस चोजका स्वाद चखनेमें आता है उनमें वि लक्षणका ध्यान स्पर्श और कल्पना जी हमारी शक्तिसें बाहार हैं. जब जब ध्यान करेंगे तो किसो एक वस्तु ध्यानमें पड़ेगी. यदि ज्योतिरूप मानकर ध्यान करेंगे तो जी उसमें शुद्ध श्याम आदि रूप मानना पड़ेगा. और सिद्धोंमें वह पौद्गलीक रूप नहीं किंतु अपौद्गलीक रूप है जिसको सर्वज्ञ जान सकते हैं. सिद्धचक्रमें सिद्धोंकी लाल कल्पना कियी गयी है वह साकारकी है निराकारकी नहीं. समोक्तक,—हम मानसी मूर्ति मनमें कल्पना करके उसका ध्यान करते हैं. पापाणमय नहीं मानते, उत्तर-किसीने मनमें मूर्ति मानो किसीने उसको प्रगटपने मानी. मूर्ति बिदून ध्यान जी तो न हुआ फिर बात ही क्या हुयी? और ध्यान करना जी क्या सहज है? संसारमें कोइ तो धनकी चिंतामें मग्न है कोइ स्त्री चिंतामें. कोइ अरजी पुरजे के देने लेनेमें और कोइ जमीन के ऊगड़ेमें सदा मस्त हो रहे हैं, कोइ के ध्यानमें तबला और आंखमें अबला समा रहो है उनका ध्यानकी प्राप्ति क्या रस्तेमें धरी है ! यह सब कोइ जानना है कि जोले जीवोका ध्यान जितना पूजामें रंग रागमें लगेगा हरगिऊ ध्यानमें नहीं लगेगा. सब कहियेगा ! नये नये गीत सुरोजा, तमूरा, सीतार, घु-दंग, सारंगी, और ताल, स्वरका जरा गमक तमकदार गाना आपके चित्तको ज्यादा मोहे लेता है कि ध्यान समाधि !-जब

योगीराज बनना चाहोगें पूजा आप ही छूट जायगी. गृहस्थमें रहकर पूजा ठोमना लाजके बदले हानि उठाना है. ध्यानकी जगह ध्यान और पूजाको जगह पूजा. अलबते ! पूजा ध्यानको साहाय्यक है प्रतिबंधक नहीं. ध्यानका अभ्यास थोमे कालका है रंगरागका जन्म जन्ममें है, गीतगानको सुनकर बालक रुदन करता हो तो जी चूप हो जाता है. सर्प और हिरन जो तिर-थीन जाति है मस्त हो जाते हैं मनुष्य तो उसीमे लयलीन ज-रासा “तननतूं” जी हुवा कि-चट चंचलमन वहां ही जाय बे-उता है बताइये ! अगर इसमें जिनस्तुति और संसारकी असा-रता बुद्धि ग्रहण कर सके तो कितने कर्मोंकी निर्जरा हो जाय ? ध्यान ध्यान तो करते हो परंतु मोचो तो यही परम ध्यान है जो जिन पूजामें लीन होना. अलबते ! जो संसार ठोमकर दो-क्कित हुवे हैं उन्होंने ध्यान ही परम निधान है. गृहस्थको मूर्ति पूजा परम निधान है.

समीक्षक-मूर्ति पूजामें प्रमाण क्या ! (याने मूर्ति पूजा करनी चाहिये इसमें क्या प्रमाण है.)

उत्तर-प्रत्यक्ष अनुमान-और आगम ये तीनों प्रमाणसे मूर्ति पूजा सिद्ध है. समीक्षके, यह जी तो सुनते हैं कि-मूर्ति पूजा ज-गवान्के पिठेसे यतिजनोने चलायी है. उत्तर, यह बात युक्तिसें रहित है. अगर यतिजनोने चलायी होती तो मूल सूत्रोंमें मूर्ति पूजाका वर्णन कहाँसे आता ? समीक्षक मूर्ति पूजाका वर्णन जी तो यतियोंने प्रक्षेपकिया सुनते हैं. उत्तर, यह कहना एक ज़ारी दोष देना है, पुरानेसे पुराने लिखे सूत्रमिलाने जाते हैं तो सब

एकसे मिलते हैं. कोई फर्क नहीं आता. अगर यही मान लिया जायकि-मूर्ति पूजन यतियोंने चलाया है तो यह बतावो सारे संसारको किसने सिखलाया ? मुसल्मान मक्केको, क्रिश्चियन चर्चको, पारसी अग्निको, वैदिकलोग ब्रह्मा विष्णु महेशको, कोष्ट किसी पहामकी टेकरीको कोई किसी वृद्धके पैरको-आप लोग अपने गुरुजके चरणको पूजते हैं. कहिये ! मूर्तिपूजाके आश्रयसे कौन बचा है ? मूर्ति पूजाको संसारसे उठा देनेके लिये अनेक विद्वानोंने अनेक ग्रंथ रचे अनेक युक्तिये लगायी परंतु सब व्यर्थ गये. एकको न चली. मूर्ति पूजाके बारेमें जिनेंश्लोका वचन ग-णधरोका वचन निर्युक्ति ज्ञाप्य टीका और चूर्णिकारोका वचन कौन कौनका यहां नाम लेवे जो सुविहित आचार्य पाठक प्रभृति हो गये इसी समकपर चले हैं. यदि इतनेपर भी जिनको विश्वास नहीं है और “टीका न मानु मैं ज्ञाप्य न मानु माने मूलमें काढ बतावो जो” इस ढाल चोपाइपर आग्रह है उनको हमारी ताकात नहीं जो समझा सके.

समीक्षक,-कहिये तो ! मूर्तिके सामने जो प्रार्थना वगेरा किया जाती है क्या वह सुनती है ?

उत्तर-पहले जी हम कह चुके हैं कि हम मूर्तिकी प्रार्थना वगेरा नहीं करते हैं, किंतु जिसकी वह मूर्ति है उस देवकी करते हैं, वह जानी है हमारी प्रार्थना बराबर अपने ज्ञानसे जान रहे हैं परंतु यह तो बताइये ! आप जो जन्मते ही बालकके कानमें मुंहलगाकर काना फुस फुस करते हो क्या वह बालक सुनता है ? तुमारे किये हुवे प्यारकी कदर जानता है ? नहीं जानता तो ह-

यां पागलपना क्यों करना ? इसे जी ठोम दिजिये.

समीक्षक-मूर्तिके स्नात्रजलसे कहते है समी रोग चले जाते है तो उसीसे रोगकी शांति कर लिया करे, वैद्य और मात्तरो के दवाखाने क्यों टुंढने ?

उत्तर-बराबर रोग चले जाते है कौन कहता है नही जाता ? जन्म जन्मके रोग जाते है जो जावसे लगावे. श्रीपालका और [ ७०० ] कोढीयोंका कौंढ गया. यादवपतिकी मेना जरासे मुक्त हुयी. अजयदेवमूरिका सर्वांग रोग गया. वर्त्तमानमें जो केइ मनुष्योंका रोग जाता देखते है. परंतु आप लोग अपने पूज्य गुरु टुंढिये साधुओंके चरण पूजते हो उनकी रजकों जी त चुल्य गिनते हो तो फिर विमारोंके बरत वैद्य लोगोको क्यों बुलाते हो ? पूज्यके चरणोंको रज लगायी अज्ञा होजायगा, वृथा दाम खर्चके असंयतीको क्यों पोपना ? लाहोर के दवाखानेमें जायकर धर्मचंदजी साधुजी (१) महिने तक क्यों रहे ? क्या आंखोका रोग गुरुओंकी चरण रजसे न मिटा ? थोमे दिन हुवे इसी मुरार ढावणोंमें आप लोगोकी एक आर्याजीको भूत लग गया था तो मुसल्मानको जामा देनेके लिये काहेको बुलाया था ? क्या चरणोंकी रज नही मौजूद थी ?

समीक्षक-हम मानसी मूर्ति मानते है कृत्रिममूर्ति नही मानते. जो पांच पांच सात सात रुपैयेमे बिकती है बल्कि इन बातोंसे जिन्हेंछांकी आशातना होती है.

उत्तर-कहिये ! मानसी [ जाव ] मूर्तिके रंग कैसाक है ? लाल, पिला, सफेद, काला वा हरा कौनसा रंगकी है ? कहोगे



उसका न रंग है न रूप है बतावे क्या ! तो फिर महाशय यह आपका कहना बिल्कुल जुठा है कि हम मानसी मूर्ति मानते हैं. जिसका रंग रूप नहीं तुमारी सामर्थ्य नहीं कि तुम उसका ध्यान कर शको कृत्रिम मूर्तिसमें कहते हो आशातना होती है तो फिर आचारांग सूत्रकृतांग जगवतीआदि वादशांग वाणी के कृत्रिम पुस्तक जो पांच पांच दश दश रूपयेमें बिकते हैं का हेको लेना और अपने गुरुजको देना, महाशय ! जुठी तर्कों में क्या रखा है वस्तुतः गुणदोषको चीनों.

समीक्षक—मूर्ति जीव कि अजीव ? पर्याप्त कि अपर्याप्ति ? सूक्ष्म कि बादर इसमें गुणठाणे कितने ?

उत्तर—बत्तीस सूत्र जीवकि अजीव पर्याप्तकि अपर्याप्ते ? सूक्ष्मकि बादर ? गुणठाणे कितने ? यह आपका जैसा प्रश्न है ऐसा उत्तर है.

समीक्षक—मूर्तिको स्नात्र ही कराना है तो केवमे, गुलाब, जलआदि अचित्त जलमें कराना चाहिये. कच्चे जलसे हिंसा होती है. फलको जगह कागजोंके बने फुल वा लोंग बगेरा अचित्त फुल चढ़ाया करे.

उत्तर—आप जी अपने पूज्योंको जबकि गोचरी लेने आवे कागजोंकी रोटी और पुरियां दिया करे और जलको जगह गुलाबजल केवमा दिया करे. आप लोग जी उपवास करें तब गुलाबजल पिया करे, कच्चे पानीको तत्ता करनेमें हिंसा होगी, रसोश्में जी षट्काय जीवोंकी हिंसा होगी. महाशय ! यह सब वृथा तर्क है, जो उचित प्रवृत्ति है उसमें फेरफार करना न चा

हिये, कागजोंके फुल और गुलाबजलसे पूजा करनेसे आइहा जंग आदि दोष है लाज नहीं, सोचो कि स्त्रीसंजोगमें फुलोंका ओढ़ना कांचली गजरे वगेरा पहनाकर काम सेवन करते बख्त जीव हिंसाका खयाल न करना और पूजामें पांच दश फुलोंपर हिंसाका खयाल करना यह कौन चतुराईकी बात है? गुरुजके सामने जानेमें, प्रतिक्रमण करनेमें, तपस्वीको पारणा करानेके लिये जोजन बनानेमें, दीक्षा महोत्सवमें, सब धर्मकृत्यमें पहले हिंसा होती है कौन ऐसा कृत्य है जिसमें हिंसाका लेश नहा सजी त्याग देना चाहिये.

समीक्षक-अच्छा ! मूर्ति पूजा ही मंगल कारण है तो फिर प्रतिष्ठा वगेरा मुहूर्तमें ये नक्षत्र ठीक है ये ठीक नहीं यह बखेभा क्या ? आकाशके तारे जी जला बुरा कर देते है ?

उत्तर-आकाशके तारे न जला करे न बुरा करे, अलबते ! वे जले बुरेके द्योतक और सूचक है. जैसे आप किसी कार्य करनेका चले और ठीक हुयी, कुत्ता चिल्लाया, बिलाइ सामणे आ गयी, विधवा स्त्रीके दर्शन हुवे, तो कहते हो ठहर जाओ बुरा होगा. कहिये तो ! क्या ठीक जी जला बुरा कर देती है ! कुत्ता बिलाइ विधवा स्त्री जला बुरा करनेको शक्तिमान् है ! बस ! यही कहना होगा कि अथुज सूचक है, इसी तरह यहां जी समझ लो. थुज नक्षत्र थुज ग्रह वगेरा थुज सूचक है अथुज अथुज सूचक है. अगर इस बातका नही मानते हो तो आपके गुरु जब किसी चलेको दिक्षा देना चाहते है तो मुहूर्त के लिये पंचांगको क्यों दुंदते है ? दुंदिये साधुज व्याकरण पढते

नहो, व्याकरण बिना पढ़े ज्योतिष कहा ! फिर ब्राह्मणको जो अविरति अमृत्यु ख्यानी है बुलाना पमता है. कहिये तो ! पंच-महाव्रत खुद मंगलकारो नही जो आकाशके तारे दिखानेका बखेमा करना पमा.

समीक्षक—भूर्ति तो गोटोसी और मणोंबंद नैवेद्य क्यों ! भूर्तिके पेटमें इतनी जगह है !

उत्तर,—दीक्षा लेनवाला मनुष्य गेटा और उसपर पंच महाव्रतरूप पांच मेरु क्यों ? क्या ! उसके शिरपर पांचमेरु उठरनेको जगह है ! यह जैसी तर्क है वैसा उत्तर है. हकीकतमें नैवेद्य भूर्तिको खानेके लिये नही धरते. पूजकको भक्तिका एक अंग है.

समीक्षक,—कृत्रिम वस्तुका आदर करना चतुराशकी बात नही.

उत्तर,—जबतक मुक्तात्मा नही हुवे है तब तक कृत्रिम वस्तुका आदर करना नही छूटता, साधु साध्वीका वेष कृत्रिम-शास्त्र कृत्रिम-मकान कृत्रिम-आपको उचित है इन वस्तुओंका आदर करना ठोम देवे.

समीक्षक,—एक सास अपने बेटेकी बहूकों ठाकुरजीकी पूजा कराने लेजाना चाहती थी. बहूसें कहा, चल ! ठाकुरजीकी पूजा कर आवे. सासके कहनेसे बहू सामग्री लेकर सासके साथ चली. ठाकुरघारेके अगामी एक गौ और एक नाहर पथथरका बनाया खमा है. बहूने गौके आंचजोसें पानी लगाकर दूध दोहना शुरू किया. सासने कहा बहू ! तूं बम्नो मूर्खिणी है पथथरकी गौ जो दूध देतो हांगी ? अगामी चल ! फिर नाहरको देखकर बहू चमक उठी. कहतो है हाय ! खा लिया. सासने कहा, री ! अकल

की दुश्मन ! पथरका नाहर कजी खालेता होगा ? चल ! ठा-  
कुरजीकी पूजा कर, वैकुंठ देयगे. बहुने कहा यदि पथरका ना-  
हर खा नहीं लेता गौ दूध नहीं देती तो पथरके ठाकुरजी  
मुक्ति कैसे देयगे ?

उत्तर—हम कब कहते हैं पथरकी मूर्ति मुक्ति देती है.  
जिस देवकी वह मूर्ति है उस देवकी स्मृति करानेमें वह सहारा  
है स्मृति होने बाद पूजकको जैसा ज्ञाव पैदा होगा वैसा फल होगा.

समीक्षक—मूर्तिकों देखकर ह्वायोपशम ज्ञाव नहीं आता  
किंतु उदयिक ज्ञाव आता है. जब कोइ मंदिरमें जायगा तो  
स्नान दीप धूप फूल चढ़ाना, ताल मृदंग बजाना, नाचना कूद-  
ना वगेरां ढकाय जीवोंकी लूटालूट करनेका परिणाम आयगा.  
अगर कहोगे नमस्कारमंत्र शक्तस्तवत्र्यादि स्तोत्र पढ़ने जाते हैं  
तो ठीक है परंतु वह तो किसी जगहपर बैठकर गिनो, मंदिर  
हीमें जाना क्या जरूरत ? हमारी समझमें मंदिर मूर्ति बनाना  
बुरा ही है. सो चोकि—किसी शखशने मंदिर बनाकर मूर्ति स्था-  
पन किया. लाखों रुपैये व्यय किये. कहिये ! सब कार्य हिंसासें  
बनाकि-हिंसा बिदून, ?-हिंसासें तो बनाने वालेकों पाप हुवा,  
फिर पूजने वालेकों धर्म कैसे होगा ? अगर कहोगे हिंसासें धर्म  
हुवा तो तुम हिंसाधर्मी हो चूके, अर्हन्ने अहिंसा धर्म प्ररुपा है.

उत्तर—मूर्तिको देखकर कौन कहता है ह्वायोपशम ज्ञाव  
नहीं आता, जरूर आता है, अर्हन् मूर्ति देखकर जब अर्हन्की  
स्मृति होगी तो शुज्ज ज्ञाव क्यों न आयगा ? शुज्ज ज्ञाव आना  
ह्वायोपशम ज्ञाव है. मंदिरमे जायकर ढकायजीवोंकी लूटालूट

करनेका इरादा पूजक पुरुषका नहीं, किंतु जक्ति करके जिन आज्ञा अखंड रखनेका इरादा है, जैसे नदी उतरते साधु जानते है कि-हिंसा होती है परंतु जिन आज्ञा है ऐसा जानकर उतरते है, कहोगे नदी उतरनेसें अगामी धर्मध्यानकी प्रवृत्ति होनेपर भव्य जीवोंको उपकार होता है जैनधर्म दीपता है तो तद्यत् मंदिर बनानेसें पूजा प्रतिष्ठा करानेसें भी भव्य जीवोंको उपकार होता है, जैनधर्म दीपता है फिर वृथा कैसे हुवा ? अगर कहोगे वीतरागने आहिंसा धर्म कहा है तो हिंसा होती जान बुझकर नदी उतरना यह तुमारी श्रद्धानसें अधर्म हुवा. अधर्मसें फिर धर्म कैसे होगा ? जैसे मंदिर मूर्ति बनाना पूजा करना हिंसा होनेके लिये वृथा है तैसे ही हिंसा होनेसें तुमको नदी उतरना, आहार विहार करना, वरसातमें लघुशंका बभीशंकाके छिड़ जाना. प्रतिक्रमण करना, व्याख्यानवाचना, गोचरी जाना, गुरुकी वैयावृत्य करना वगेरा न करना चाहिये सब काममें जीव हिंसा होती है.

(यतः) — ( अनुष्टुप्चतम् )

जले जीवाःस्थले जीवा-जीवा आकाश मालिनी,

जीवाःसर्वत्र लोकेषु-कथंजिह्वुरहिंसकः ( १, )

परंतु महाशय ! यह सब आपलोगोंकी समझका फर्क है, कोइ कार्य ऐसा नहीं जिसमें हिंसा न होती हो, द्रव्य हिंसा सब जगह होती है, जाव हिंसा मनःपरिणाम के आधीन है, जैसा जिसका परिणाम होगा वैसा उसको फल होगा. हिंसाकों देखे या जिन आज्ञाको देखे ? जो कुछ जिनेछोंने आज्ञा दीयी है सब

जीवोंके आत्म कल्याण निमित्त दियी है. हम तुमसे वे निर्मल ज्ञानी थे, पूर्वापर अविरोधी कथनसे उन्होमें सर्वज्ञता सिद्ध हो चुकी है, उन्होको असख आज्ञा देनेमें क्या प्रयोजन था ?

मूर्तिपूजाके निषेधक पुरुष संसारमें केइ हुवे परंतु एककी न चली, दयानंद सरस्वतीने मूर्तिपूजाके निषेधमें अधिक जोर दिया. वह कहता था मैरी समझके अगामी किसीकी समझ कार्यकारी नहीं. सब रिषि मुनि अविद्या हुवे, वेदका सच्चा अर्थ मैं ही जानता हू, मुझे सुजी सो किसीकों न सुजी, अपने सेवकोंके समूहका नाम (आर्यसमाज) रखकर उनकों उपदेश दिया कि-तूम सब उस ईश्वरका ध्यान करो जो निरंजन निराकार है, बस ! आर्यसमाजी क्रियाकाम उपासना छोडकर गृहस्थाश्रम में ही बैठे चोथे आश्रममें टांग पसारने लगे. वेदके निंदक होते होते देवताओंके निंदक बनना पमा. सजी मनुष्योंकों एक जाति करना चाहा, ज़ीतरमें हिंसक और उपरमें गोरक्षाका चंदा बनाकर दयाधर्मीयोंका चांद लेना चाहा. परंतु थोमे ही दिनोमें कूबेका जल पिठा कूबामें चला गया. एक बात पूरी न उतरी. केइ जगह विद्वानोंकी सज्जामेंसे हाथ पकड कर बहिष्कृत किये किये गये, जब कोइ उनकों पूछता है तुम्हारा सिद्धांत क्या है ? उत्तर नहीं देशकते. क्या देवे ? सब रिषि मुनियोंकी झूठ लेकर तो मत निकाछा, वेदके असली अर्थकी नींदा शिवाय दूसरी बात नहीं. कहेंगे-निराकार ईश्वरकी मूर्ति बनाना वृथा है, देव देवीओंकों पूजना न चाहिये, जातिभेद रखना ठीक नहीं, जन्मका कर्त्ता ईश्वर है, पृथ्वी जल तेज और वायुके परमाणु नि-

त्य है, इत्यादि इत्यादि.-सोचनेकी जगह है दयानंदजीने दूसरों के मसालेसँ अपनी दिवार बनाकर कौनसा रक्षण किया ? क्या ! वेदमतानुयायी नहीं कहते है मूर्तिपूजा साकारकी है निराकारकी नहीं. निराकार अवस्था वे जी तो मानते ही है, कहते जी है कि-उपरको भूमिकामें पहुँचेंगे तब साकारता सेवन आप ही छूट जायगा, मूर्तिपूजा फिर न करनी होगी. बतलाइये ! फिर दयानंदजीने अपनी न्यारी खीचनी पकाकर क्या सार निकाला ?-पृथ्वी जल आदिके परमाणुओंको नैयायिक पहले ही कह रहे है कि-नित्य है, जगत्का कर्त्ता ईश्वर है, थोमासा मसाला नैयायिकोका लेकर सरस्वतीजीने अपनी जाजी तर्कारी ठमकी. कौनमें हिंदूलोक अनार्य हो गये थे जिनमेंसें ठाँटकर अपनी समाजका नाम “ आर्य ” रखा ?-देव देवीओंकी उपासना जी उपरले आश्रम पढ़ाचनेपर वैदिक लोक त्याग रूप कहते ही है, फिर सरस्वतीजीने नयेनाटकमें क्या लाज उठाया ? लाजतो क्या उठाया बल्कि अपने सेवकोंको न घरके न घाटके दोनों जहानके न रखे. सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथके पृष्ठ ( ५७८ ) में लिखा है मैं विद्वानोंको देव मानता हू, अविद्वानोंको असुर मानता हू, पापीयोंको राक्षस और अनाचारियोंको पिशाच मानता हू, अगर यह बात सच है तो वेद मंत्रोंमें जहाँ जहाँ देव और असुरोंका पूजन लिखा है वहाँ विद्वानोंका और अविद्वानोंका पूजन होना चाहिये. ( ५८१ ) पृष्ठपर लिखा है मुझे मतमतांतरके ऊगमे प्रसन्न नहीं, कहिये अगर मतान्तरके ऊगमे प्रसन्न नहीं थे तो सत्यार्थप्रकाश ग्रंथके कागजोंको क्यों काळे किये?-

सब बात तो यह है कि-मुंहसे बातको निकालना सहज है उस पर चलना सहज नहीं, अलबते ! इतना इतम दयानंदजीका तारीफ करने योग्य है कि-उन्होंने अछे अछे विद्वानोंको जी गुरु देकर खूब लुझाये, कहते रहे देखो जाइ ! तुमको मैं कितना सरल रस्ता बताताहु, जब तूम मैरे कथनानुसार चलोगे तो-जिस तिस कुलकी युवती से शादी कर शकोगे, मनमाना खाना खा शकोगे, विना पूजन पाठ परमात्माको प्रसन्न कर शकोगे, विना कृस्तान बने कृस्तानीका मजा उठा शकोगे, और साथ आर्य जी कहलाओगे, वेदमें मूर्तिपूजन कही नहीं लिखा, बल्कि प्रतिमाका निषेध वाक्य है, देखो ! यजुर्वेद अध्याय (१४)-सपथ्यगान्धुक्रमकायमव्रणम्-वह परमात्मा अकाय ( शरीर रहित ) है. इसका उत्तर,-यह श्रुति निर्गुण अवस्था प्रतिपादक है, वैदिक लोक निर्गुण अवस्थामें मूर्ति कहाँ कहते है ? साकार अवस्थामें मूर्ति कहते है.

न तस्य प्रतिमा अस्ति-यस्य नाम महद्यशः यह जो वेदमें श्रुति है कि जिसके नामका ही ब्रह्मा यशः है तिसकी प्रतिमा नहीं है, यहां प्रतिमाका अर्थ तुल्य लिया है परंतु मूर्तिका अज्ञाव नहीं लिया, अगर अज्ञाव ही अर्थ लेवे तो वेदकी अन्य श्रुतियोंसे विरोध आता है अन्य श्रुतियोंमें सैकड़ो जगह मूर्ति पूजा प्रतिपादक प्रमाण है, यजुर्वेद अध्याय (१३) श्रुति (४१) आदित्यं गर्जपयसा समङ्घिसहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपं-नाष्यं-हे पुरुषशिरः आदित्यं चित्याग्निं पयसा



हुधेन समङ्घिसन्नद्धय अजे लोटमध्यमैकवचनं किं-  
भूतं आदित्यं गर्जं गृह्णाति पशूनिति गर्जस्तं मत्वं ज्ञा-  
दसं तथा सहस्रस्य प्रतिमाम् सहस्ररूपेण प्रतिपाद्यस्य  
परमेश्वरस्य प्रतिमाभूतं अतएव विश्वरूपं सर्वाणिरू-  
पाणि यस्मात् यद्वा आदित्यो वा एष पुरुषः पुरुषो वै  
सहस्रस्य प्रतिम विश्वरूपं इति श्रुतिः—

अर्थ,—हे ! पुरुष शिरः—आदित्य जो चित्पिहै तिसको दूध-  
सें रक्षा कर, कैसा यह आदित्य है कि—गर्जरूप है, गर्ज किसको  
कहते है जो प्राणोंको ग्रहण करे, वहां परमेश्वरकी प्रतिमा है और  
विश्वरूप है, तात्पर्य यह हुआ कि— उस परमेश्वरकी श्रुति है और  
वह मान्य है.

यजुर्वेद अध्याय(१६)-नमस्ते रुद्रमन्यव उतो-  
त इषवे नमः—बाहूभ्यामुतते नमः

अर्थ.—हे रुद्र ! तुम्हारे क्रोधको नमस्कार हो, तुम्हारे बा-  
णको नमस्कार हो, और तुम्हारी बाहुओंको नमस्कार हो. ज्ञा-  
प्यकारने इस श्रुतिके अर्थमें लिखा है कि—तवक्रोधबाणहस्ता  
अस्मदरिषु कामादिषु प्रसरंतु नास्माषु—हे रुद्र! तुम्हारे  
क्रोध बाण और बाहु हमारे काम क्रोध आदि रिपुओंपर पसार  
हो याने उनको व्यथादाता हो हमको नहीं, यहां तात्पर्य यह है  
कि—बाहु साकारके ही होती है निराकारके नहीं होती,

रिग्वेद अध्याय ( ५ ) मा—अनुवाक् ( ४ ) वर्ग

तिसरा रिचा (१३)—अंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टि  
वर्धनं उर्वारु कमिव बंधनान्मृत्यो मुह्यीयमामृतात्—

इस रिचाका तात्पर्य अर्थ यह है कि-हम अंबकको यज  
न करते हैं, अंबक शब्द महादेवका विशेषण और त्रिलोचनका  
पर्याय है, सोचो कि-यदि वेदमें साकारता स्वीकार है तभी अंब-  
क उसका वाचक कहा, निराकारता स्वीकार होती तो अंबक  
कहना न रहता, दयानंदजी अंबक शब्दकी व्युत्पत्ति करते थे  
त्रीन् लोकान् अवतीति अंबकः—परंतु अब रक्षणे  
धातुका अंबकरूप नहीं बनता अंबक बनेगा. व्याकरण को-  
शके नियमको ठोकर मनःकल्पना कैसे किया जाय ?—इसी  
कल्पनाने सरस्वतीजीकी विद्वत्ताको हानी पहुंचायी है.

सामवेदीयप्रतिमोपनिषदमें लिखा है. ( प्रतिमा  
पूजनाद्वयत्वं च गत्वा अमृतत्वं च गच्छति. ) प्रतिमा  
पूजनसे ब्रह्मत्व और मूर्ति प्राप्त होती है. आगे वसिष्ठजीने  
ब्रह्मासे पूछा कि-हे जगवन् ! प्रतिमा कैसे हुयी, तब ब्रह्माने कहा.  
पहले एक महापुरुषसे मैं पैदा हुवा, मेरा नाम हिरण्यगर्भ कहते  
हैं, सो महापुरुषकी अंगुली मथन होनेसे जल पैदा हुवा. जलसे  
फेंन हुवा, फेंनसे बुद्बुद हुवा, बुद्बुदसे अंम और अंमसे दृष्टि  
क्रम-बगेरासो—जानीहि जो प्रतिमा ब्रम्ह मूर्तिः—प्रतिमा  
आठ प्रकारकी जिसमें सात भौमविकारकी और आठमी मानसी,  
भागवतके (११) स्कंधमें कहा है.

शैली दारुमयी लोही लेप्यालेख्या च सैकनी

मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधाः स्मृताः १.

प्रतिमा मनुष्यकों पवित्र करती है, सामवेदके ब्राह्मण जागमें लिखा है कि-देवतायतनानि कंपन्ते-दैवतप्रतिमा हसन्ति रुदन्ति गायन्ति नृत्यन्ति स्फुटन्ति खिद्यन्ति उन्मीलन्ति निमीलन्ति-प्रतियन्ति नद्यः-कबंधं आदित्ये दृश्यते-केतुपताका उत्र वज्र विषाणानि प्रज्वलन्ति-अश्वानां च वालधीष्वंगाराः क्हरन्ति-अहतानि मर्माणि कनिक्रंदन्ते-इत्येवमादिनि सर्वाणि विष्णुदैवत्यानि अद्भूतानि प्रायश्चित्तानि नवन्ति-इति-

अर्थ,-देवताओंके मंदिर कंपायमान होवे, देवप्रतिमाओं हसे, रोवे, गावे, नृत्यकरे, खंभित होजाय, खेदयुक्त होय, नेत्र-पीचे, नेत्रखोल्ले, मूर्त्यमें कबंध दिखे, नदीयाँ उलटी बहे, केतु पताका उत्र वज्र पशुविषाण जाज्वल्यमान दिखे, घोमोंकी पूँठसे अंगारे गिरे, बिना मारे घाव हो जाय, इत्यादि जितने उत्पात है उन सबोंका विष्णुदेवता है अद्भूत प्रायश्चित्तशेँ वे शांत होते है, निदान ! सामवेदके ब्राह्मण जागमें देवमंदिर और देवमूर्त्तिका होना सिद्ध है.

अथर्वकांम तिसरेमें लिखाहै-सम्बत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा राज्युपास्महे सान आयुष्मतीं प्रजां रापस्यो-षेण संसृजः ३-(टीका.) संवत्सरस्य रात्रिषु कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च तासु यां प्रतिमां प्रतिष्ठायारूपां

त्वां वयंसर्वे उपास्महे-अथवा सम्बत्सरस्य रात्रि र्यथा  
सितकृष्णरूपा स्यात् तद्वत् यां सितकृष्णरूपप्रतिमां  
त्वां वयं उपा स्महे-सा प्रतिमा नःअस्माकं प्रजा राप-  
स्योषेण सहआयुष्यमतीं सम्यक् प्रकारेण सृज-यया  
प्रजया नःसुखं स्पादिति प्रार्थना-

अजुर्वेद अध्याय (१५)

सहस्रस्य प्रमासि-सहस्रस्य प्रतिमासि-सहस्र  
स्योन्मासि-सहस्रायत्वा. (जाष्यं) त्वं सहस्रस्य प्रमा  
नाम प्रमाणमासि-त्वं सहस्रस्य प्रतिमा प्रतिनिधिरसि  
त्वं सहस्रस्य उन्मानं तुल्यं उर्द्धमानं किलोन्मानमिति  
महानाष्ये-साहस्रःसहस्राहोसि अतःसहस्राय सह-  
स्रफलावाप्त्यै त्वा त्वां प्रोक्षामि.-

(मनुस्मृति-अध्याय दूसरा—)

नित्यं स्नात्वा गुचिः कुर्याद्वेवर्षि पितृतर्पणं,  
देवताभ्यर्चनं चैव समिधादानमेव च, (१७)

(अध्याय चौथा—)

मैत्रप्रसाधनं स्नानं दंतधावनमङ्गानं,  
पूर्वान्हे एव कुर्वीत देवतानां च पूजनं, (१५३)

(अध्याय आठवा—)

तद्भागान्युदपानानि—वाप्यःप्रश्रवणानि च,  
सीमासंधिषु कार्याणि देवतायतनानि च,  
(पाराशर स्मृति—)

वापीकूपतद्भागदि देवतामंदिराणि च  
पतितान्युद्धरेद्यस्तु सपूर्तफलमश्नुते,—

इत्यादि प्रमाणोंसे वेदमें मूर्तिपूजन सिद्ध है, इनका अर्थ कोई तोमफोम कर अन्यथा करे तो वह मान्य नहीं, टीका और ज्ञाप्यकारोंका किया हुआ अर्थ असत्य होनेमें प्रमाण क्या ? कवि परंपरा करके जो शब्द जिस अर्थमें आरुढ़ है वे शब्द उसी अर्थमें योजन करना चाहिये.—जो पुरुष मूर्तिपूजन सेवनमें बिस्कुल इनकार है उसमें पूजना चाहिये कि-निर्गुण ब्रह्मकी प्रतिमा जो प्रणव है उसका अर्चन और मानसी पूजन तुम करते हो या नहीं ?—ध्वनिमात्र शब्द होता है उसकी प्रतिमा अकार आदि स्वर और व्यंजनकों वाङ्मय अर्चनमें हरवख्त लाते हो या नहीं ?—वेदकी ज्ञानमय प्रतिमा तुमारे हृदयमें विद्यमान रहती है वह मान्यरूप है या अमान्य है ?—तुमारा शरीर ही तुमारी प्रतिमा है जिसका दिनरात सेवन करते हो यह सत्य है वा असत्य ?—प्रियपुत्र वा स्त्रीकी तसबीर नित्य देखते हो मगन होते हो, दयानंदजीका प्रतिबिंब प्रति आर्यसमाज पास रखते है. फिर विक्टोरियाका प्रतिबिंब दिल्लीमें साहनसाह नखतपर रख गद्दीका अधिकार और जेंट असरफी धरी गयी. राजा महाराजा परिचर्यामें हाजिर थे, हकीकतमें सारा संसार प्रतिबिंबके बशी-

भूत है ऐसे ही त्रिलोकीनाथके प्रतिविंबका कौन इनकार कर सकता है ?—

दयानंदजी अगर मूर्ति नहीं मानते थे तो सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथके पृष्ठ (४१) पर अग्नि होत्रके लिये वेदी-प्रोक्षणीपात्र-पणी-तापात्र-आज्पस्थाली-और चमसा-इस प्रकार बनाना ऐसा चित्र करके न बतलाते. अगर अल्पज्ञोंके समझानेको बतलाये है तो मूर्ति कौनसी सर्वज्ञोंके लिये है ? जब उपरली भूमिकामें पड़ो चोगे मूर्तिपूजा काहेको करनी रहेगो. (कहलावत है कि—)

प्रतिमाजीको पूंजनो—ज्यूं गुमीयांको खेल,

जबमन लाग्यो पीवसें—धरी पटारे मेल. (१)

दयानंदजी सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथमें लिखते हैं जब मुसल्मानोंने देवमंदिर और मूर्तियां तोम माली तब उनके सामने बे लमी क्यों नहीं ? जब अपना ही रक्षण न करसकी तो हमारा क्या कर सकेगी ?—परंतु यह वृथा आग्रह है मूर्ति उस देवकी स्मृति करानेमें सहारा है जो करामात बतावे वह मान्य और इतर अमान्य ऐसा कोई शास्त्रमें लेख नहीं.

बराह मिहिर संहिता वगेरा शिल्प शास्त्रोंमें अर्हन् विष्णु देवता देवीओ वगेराकी मूर्ति बनानेका विधिविधान लिखा है बराहमिहिर प्रथम जैनमुनि थे. जह्नुबाहु स्वामीके भ्राता थे.\* जह्नुबाहु ठोटे थे बराहमिहिर बम्मे थे. गुरुके पिछे गादीपर बैठनेकी

\* भद्रबाहुस्वामीने भद्रबाहुसंहिता रची. जो अब संपूर्ण नहीं मिलती. ते-रहजर श्लोक प्रमाण एक हिस्सा कही कही भंडारमें मिलता है.

बाबतसे तकरार होनेसे बराहमिहने जैन मुनिका वेष ढोम दिया पूर्वोक्त विद्या जानते ही थे उन्होने संहिता वगेरा ग्रंथ रचे, अनुमान इन्होंको (११००) वर्षसे कुछ अधिक वर्ष हुवे. सोचोकि-अगर मूर्तिपूजन थोमे समयसे चला है तो पुराने ग्रंथोंमें इसका विवेचन कैसे होता ?

जैन आगमके प्रमाण पहले दे चुके है विशेष जंबूद्वीप म-झमि जिवाजिगम और महानिशीथमें लिखा है वीतरागकी प्रतिमाके समीप मुनि आलोचन प्रायश्चित्त लेवे, व्यवहार सूत्रमें भी यही वर्णन है. सोचोकि-अगर जिनप्रतिभा जैनशासनमें अमान्य होती तो ये अधिकार कैसे होते ?-शर्यंजवसूरि-और आङ्कुमार मूर्ति देखकर प्रतिवांध पाये. अनेक जीव मूर्तिके आलंबनमें संसार समुद्र तरे है.

इसप्रकार मूर्तिपूजापर व्याख्यान सुनकर-श्रावक राजमल-जी [ जो इस मोरारठावनीके ही रहनेवाले है ] ने कहा कि-मैं कितनेक समयसे दुंदक आम्नायमें श्रद्धावान् हुवा था. अब मूर्तिके बारेमें मेरा संशय न रहा. मूर्ति मानना सत्य है. दुंदियेपने-की श्रद्धा झूठी होनेमें ठोमताहु. उसी वरुत मज्जाके रुबरु सम्य-क्तमूल श्रावकधर्म अंगीकार किया. विधिके साथ वासद्धेय लिया और पूजन स्वधर्मी वत्सल वगेरा महोच्चव किया. तिसरे महर हमारा आना लश्कर हुवा.

चौमासा पूरा होनेपर धर्माधिकारमें जो ज्ञातासूत्र बाचतेथे ते पूरा बाचा, चौमासाके बाद मोरार ठावनी गये, एक सप्ताह यहां ठहरे, पुनः लश्कर आये. धर्माधिकारमें अंगचूजियासूत्र

बाचना शुरू किया, फिर उपासकदशांग और फिर विविधतीर्थकल्प वाचते रहे.

संवत् [ १९४९ ]-चैत्र शुक्ल [ ७ ] के रोज यतिजी पं० माधवचंद्गीने-जो पं० पंन्नालालजीके शिष्यके शिष्य है इसी लश्कर दानावली बाजारमें रहते हैं हमसे निम्न लिखित (३?) प्रश्न पूछे, जिसका उत्तर इस प्रकार दिया.

१-प्रश्न,-सम्यक्त जीवका निजगुण है वा परगुण है ?

उत्तर-निश्चयनयकी अपेक्षा निजगुण है और व्यवहार नयकी अपेक्षा परगुण है.

२-प्रश्न,-सिद्ध महाराजमें सम्यक्त पाइये वा नहीं? पाइये तो कोनसा ? और उसकी स्थिति कितने कालकी ?

उत्तर-सिद्धमें द्वायिक सम्यक्त पाइये. द्वायिक सम्यक्तकी स्थिति संसारा वस्थामें (६६) सागरोपम, सिद्धोंके एक सिद्धकी अपेक्षा सादि. अनंतकाल और अनंत सिद्धोंकी अपेक्षा अनादि अनंतकाल.

३-प्रश्न,-प्रज्ञापना सूत्रमें चारों प्रकारकी ज्ञापा बोलता हुआ आराधक कहा. सो अमत्य ज्ञापा बोलता हुआ साधु आराधक कैसे संजवे ?

उत्तर-आचारांग सूत्रमें अधिकार है कि-अटवीमें मुनिचले जाते हो, हिरनका झूंम पास होकर चला गया. पिछेसे पारधि आनकर मुनिसे पूछे कि जो साधो ! तुमने हिरन देखे ? तब मुनि जानता हुआ जो कहे कि-मैं नहीं जानता हूं. इसमें आप्त प्रणीत आगम वचन प्रमाण है. आप्त वचन सदैव हितावह होता



१२६ यतिजी पं० माधवचंद् जीके प्रश्नोका उत्तर.

है. लोकीकमें यह प्रसिद्ध है कि—“सत्यं हि तत् नूतहितं यदेव,”—

४-प्रश्न,—जिसमें एक अंक और मिला देवेतो असंख्याते हो जाय ऐसा संख्याता कितने अंकका हो ?

उत्तर,—जैन आम्नायमें [१.९४] अंकतकको संख्यातेकी संज्ञा है, और उसका नाम शीर्षमहेलिका कहते हैं. इसपर एक अंक बढ़ानेसे आगे असंख्यातेकी संज्ञा है.

५-प्रश्न,—एक आकाश प्रदेशमें अजीवके जेद कितने पाइये?

उत्तर—धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय इन तीनोंके प्रदेशकी अपेक्षा तीन जेद-पुद्गलके चार-स्कंध, देश, प्रदेश, और परमाणु, कुल सात जेद हुवे. क्षेत्रकी अपेक्षा प्रश्न है तो एक जेद कालका और बड़ेगा.

६-प्रश्न,—जीवके आठ रुचक प्रदेश कर्मोपाधिसें लिप्त हो या नहीं

उत्तर—नहीं होवे, अगर वें जी लिप्त होवे तो जीव अजीव हो जाय, (युक्तं)-

स्पृश्यंते कर्मणा तेऽपि-प्रदेशा आत्मनो यदि,

तदा जीवो जगत्यस्मि नजीवत्वं प्रपद्यते. १,

७-प्रश्न,—ग्यारह पद्मिमा (अग्निग्रह विशेष) बह्मन करनेवाला श्रावक कितनी पद्मिमातक चंदनपुष्पादि सामग्रीसें जिनपूजा करे,!

उत्तर,—सातमी पद्मिमाकी पूर्णाहुती तक चंदनपुष्पादिसें जिन पूजा करे. ललितविस्तरा पंजिकामें यह कथन है.

८-प्रश्न-रात्रि जोजन करनेवालेकों दूसरे दिन अगर नव-कारसी, पोरसी, एकाशन, आचाम्ल वा उपवास आदि तप करना हो तो हो सके वा नहीं, ?

उत्तर-हो सके, शास्त्र आज्ञासें विरुद्ध नहीं. क्योंकि-सू-योंदयसें उसका नियम शुरू होता है.

९-प्रश्न,-उपपातिक आदि उपांग सूत्रके रचयिता कौन कौन हुवे, ? जैसे प्रज्ञापना उपांगके रचयिता श्यामाचार्य.

उत्तर,-तीर्थंकरके शिष्य समुदायमें गणधर शिवाय अन्य जो स्थविर मुनि होते हैं वे उपांग सूत्रके रचयिता हैं.

१०-प्रश्न,-कौन कौनसे गुणस्थानमें वर्त्तता जीव मृत्यु न पावे?

उत्तर, मिश्र-क्षीण मोह-और सयोगी केवली-इन तीन गुणस्थानमें वर्त्तता हुवा मृत्यु न हो, शेष ग्यारह गुणस्थानमें हों.

११-प्रश्न-सामायिक जीव वा अजीव ? इव्य वा गुण, ?

उत्तर,-इव्यार्थिक नयकी अपेक्षा सामायिक गुणमें परिणमन हुआ हुवा जीव ही सामायिक है, पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा सामायिक जीवका एक गुण है. आंवश्यक सूत्रकी नि-र्युक्तिमें यह वर्नन है.

( गाथा. )

जीवो गुणपन्निबन्धो-नयस्स दब्बठिअस्स सामाहयं,  
सोचेव पक्कठिअनयस्स जीवस्स एस गुणो. १

१२-प्रश्न-जिसकी गुरुपरंपरामें शिथिल आचार हो गया है उसमेंसें कोई यतिजी क्रिया उद्धार करना चाहे तो उनको अन्य मुनिके पास चारित्र्य उपसंपदा लेनी चाहिये कि नहीं ?

वा सुधर्मस्वामीकों ही गुरुमानकर क्रिया उद्धार कर लेना ?

उत्तर-जिसके एक दो तीन पद तक गुरु परंपरामें शिथिलता हुयी हो प्रायः उस परंपरामेंसे समाचारी सर्वथा नाश नहीं होती, इस लिये उसमेंसे कोई शरत् क्रिया उद्धार करना चाहे तो उसकों अन्य गुरुके पास चारित्र्य उपसंपदा लेनेकी जरूरत नहीं. जिसके चार आदि गुरुपट्ट परंपरासे शिथिलता हुयी है उसकों अन्य गुरुके पाससे चारित्र्य उपसंपदा लेकर क्रिया उद्धार करना चाहिये. क्योंकि-सर्वविरति सामायिक विद्यमान गुरुके पास ही लिया जाता है. जो इस तरह नहीं करते हैं और सुधर्मस्वामीको गुरु मानकर मुनिपना स्वीकार कर लेते हैं यह बात जैन आगमसे विरुद्ध है.

१३-प्रश्न,-प्रदेशी राजाकों केसीकुमार श्रमण निर्ग्रंथमुनिने कहा कि-पहले रमणीक होकर पीछे अरमणीक मत होना. प्रदेशी राजाने कहा आजसे मैं राज्यके ( ४ ) जाग करुंगा. सो चार जागमेंसे कौनसे जागसे धर्म पैदा हुवा ? और वह रमणीक हुवा, ?

उत्तर,-प्रदेशी राजाने अपने राज्यकी आमदनीके ( ४ ) जाग किये. एक जाग सैन्य वाहनके लिये-एक जाग कोष्टागारके लिये-एक अंतःपुर (रानीयों) के लिये-और एक दानशाखा आदिके लिये-दिया. हकीकतमें चारों ही विजाग धर्मकी सापेक्षतालिये हैं, अगर इनमेंसे कोई जी हिस्सा अधर्मरूप होता तो केसीकुमार श्रमण निर्ग्रंथ उसे मनायी करते कि-अयूक हिस्सा अधर्मरूप है अरमणीक है, इस लिये जाना जाता है चारों

ही हिस्से बीतरागकी आज्ञा संयुक्त है. और बीतरागकी आज्ञामें धर्म है.

१४-प्रश्न-केवल मनसे विचारा हुवा पाप निकाचित हो सकता है या नहीं, ?

उत्तर,-केवल मनसे विचाराहुवा पाप निकाचित हो सकता है और नहीं जी होशकता. निकाचितके अध्यवसाय फरसे तो निकाचित कर्म बंध हो-अनिकाचितके अध्यवसाय फरसे तो अनिकाचित कर्म बंध हो. अध्यवसाय स्थान आश्रित कर्म बंध पमताहै. जैसे तंडलमल्लकी तरह कोइकों निकाचित-और प्रसन-चंख राजार्थकी तरह कोइकों अनिकाचित बंध पमे. जहां मनयोग है वहां वचनकाया जी है, क्योंकि-एक काययोगके विशेष विज्ञा-गको वचन मनयोग कहाहै. आवश्यकमूत्रवृहद्वृत्ति-विशेषाव-श्यक-और लोकप्रकाशमें यह अधिकार है

१५-प्रश्न,-स्थापनाचार्य जिनके सामने प्रतिक्रमण आदि क्रिया करते है यह गुरुस्थापना वा अरिहंतकी स्थापना है ? गुरु-स्थापना है तो इनके सामने शक्रस्तव कहना कैसे बने. ?

उत्तर,-यह गुरुस्थापना है अरिहंतकी नहीं. जैसे जिन अज्ञावे जिनप्रतिमा तैसे गुरु अज्ञावे गुरुस्थापना. यह लेख अनु-योगद्वार-हंदारवृत्ति-और प्रतिक्रमण गर्जहेतुमें है. आवश्यकक्रिया वगेरामें चैत्यवंदनके समय गुरुस्थापनाके सामने शक्रस्तव पढ़नेमें कोइ हर्ज नहीं. क्योंकि-जितनी क्रिया करनी गुरुसाक्षीसे करनी कही है.

१६-प्रश्न,-आर्क्षा नक्षत्रपर सूर्य आये पीठे विहार नहीं

## १३७ यतिजी पं० माधवचंद्रजीके प्रश्नोका उत्तर.

करना यह कौनसे सिद्धांतमें कहा है ?

उत्तर-आर्घा नह्त्रपर सूर्य आये बाद मुनिको विह्वल मही करना यह बात कोइ सिद्धांतमें नही देखी. केवल जलप्राय देशोंमें बरसात आदिके कारण जीवोंकी उत्पत्ति देखकर यह रीति पूर्वाचार्योंने पीठोंसे थुरु कीयी है जैसे गुजरात देशमें है. मालवा-मारवार-मेवार-हुंढार पंजाब वगेरा देशोंमें आषाढ सुदी (१३) तक मुनिजनों विहार करते हैं.

१७-प्रश्न-दृष्टिवादकों ( १४ ) पूर्वके अंतर्गत समझना वा पूर्वोका एकविभाग समझना ?

उत्तर,-चौदह पूर्वकों दृष्टिवादके अंतर्गत समझना क्यों कि-<sup>\*</sup>दृष्टिवादका तीसरा अध्ययन (१४) पूर्व है.

१८-प्रश्न,-जगवती सूत्रमें कहा है असंयती अव्रतीकों जोजन जीमानेवाला एकांत पापकर्म बंधन करे, निर्जरा न करे, यह कौनसे न्यायका वचन,

उत्तर,-असंयती अव्रतीकों मोक्ष निमित्त जोजन जीमावे अर्थात् इन्होंकों जोजन जोमानेसें मेरी मुक्ति होयगी ऐसा जानकर जीमावे तो एकांत पाप कर्म बंध करे इस न्यायका वचन है. जगवती सूत्रका आठमा शतक उठा उद्देश देखो.

१९-प्रश्न,-नवतत्त्वमें होय कितने ? उपादेय कितने और हेय कितने, ?

---

<sup>\*</sup>दृष्टिवादके पांच अध्ययनके नाम-१, परिकर्म-२, सूत्र-३, पूर्वानुयोग-४, पूर्वगत-और ५, चूलिका.

उत्तर,—जीव अजीव ज्ञेय-पुन्य संवर निर्जरा मोक्ष  
उपादेय-पाप आश्रय और बंध हेय है.

३०-प्रश्न-पृथ्वी स्थिर है या फिरती है ?-गोल है या स-  
पाट है ? गोल है तो नींबूके आकार वा स्थालीके आकार है ?

उत्तर,—पृथ्वी स्थिर है फिरती नहीं. स्थालीके आकार  
गोल और सपाट है नींबूके आकार नहीं. अगर पृथ्वी फिरती  
है तो कहो उर्ध्व अधः फिरती है वा तिर्यग् फिरती है ? उर्ध्व  
अधः फिरती है तो उर्ध्व स्थित पदार्थ अधः आनेसे गिरनेकी  
संज्ञावना है. तिर्यग् फिरती है तो कहो किसके आधार वह एक  
स्थानमें स्थित रहकर फिरती है ? याने जिस कीलकके आधार  
वह फिरती है उस कीलककी आधार कोइ अन्य पृथ्वी जी है  
जिसमें वह कीलक लगा हुआ है. जैसे कुंजकारके चक्रके नीचे  
कीलक होता है. अगर कहोगे पृथ्वी निराधार हि रहकर  
फिरती है तो सोचो कि-गुरु पदार्थ निराधार कैसे ठेर शकेगा ?  
जो जो गुरुपदार्थ देखा सो सो निराधार नहीं देखा, इससे नि-  
श्चय मानना पड़ेगा कि-पृथ्वी किसीके आधार रही है. सिद्धांत  
शिरोमणि ज्योतिष् ग्रंथका रचयिता ज्ञास्कराचार्य कहता है  
पृथ्वी मोदकके आकार गोल और बिना आधार आकाशमें  
स्व स्वज्ञावसे स्थिर है जैसे सूर्य और अग्निमें उष्णता चंद्रमामें  
शितलता पाषाणमें कठिनता और वायुमें तिर्यग् गतिका स्वज्ञाव  
है तद्वत् पृथ्वीमें निराधार स्थिर रहनेका स्वज्ञाव है परंतु यह,  
बात केवल जो ज्ञास्कराचार्यके रागी है उन्हीको मानने योग्य  
है इतरजनोंको तो युक्ति प्रमाण सहित हो मानने योग्य है, पृ-

ध्वी गुर्वी पदार्थमें निराधार स्थित रहना यह स्वज्ञाव प्रमाणसे बाधित है. जास्कराचार्यकों ज्योतिषीलोग सर्वज्ञ कहते हैं परंतु उनके वचन सर्वज्ञताके नहीं हैं, ये महाशय महाराष्ट्र देशके प्रा-  
प्त हुए इन्होंने प्राचीन सिद्धांतोंको देखकर सिद्धांत शिरोमणि  
ग्रंथ (३६) वर्षमें तयार किया. फिर जो बहोत जगह भूल गये,  
कवित्वशक्ति अच्छी होनेसे सिद्धांत शिरोमणिकों लोग पढ़ने  
लगे, लंबन नति क्षेत्र जास्कराचार्यने बिल्कुल अशुद्ध बनाया,  
भुज कोटि कर्ण तीनों ही वृहद्वचनोंमें कह दिया, और उनकी  
मणित मान्य जी न हुयी. परंतु खेर ! इन बातोंसे अपनेको यहां  
कोई जरूरत नहीं, पृथ्वीके गोल आकारमें उन्होंने जो कहा  
है कि-भूगोलके उपर ठीक मध्य जागमें लंकापुरी है-पूर्वमें यम  
कोटि पश्चिममें रोमक पत्तन-और ठीक नीचे सिद्धपुरआदि न-  
गर हैं. यहां परिक्रमक जनो सवाल कर सकते हैं कि-सिद्धपुर  
आदि नगरके कुवोंका जल निराधार कैसे ठहर सकेगा, ? ध्वी  
पदार्थ निराधार नहीं रह सकता. कहोगे आकर्षण शक्ति पृ-  
थ्वीमें है वह ठहरा लेती है तो सोचोकि-आकर्षण शब्द व्युद्भू-  
तप्रत्ययांत करण अर्थमें होता है, निदान ! आकर्षण शब्द करण  
वाचक हुवा. आकर्षक कर्ता कोई अन्य होना चाहिये, अगर  
कहोगे पृथ्वी ही आकर्षक है तो कहिये ! आकर्षक शक्ति पृथ्वीमें  
जिन्न है या अजिन्न ? जिन्न है उसका आधार कौन पदार्थ है ? अ-  
जिन्न है तो पृथ्वीके साथ लगी हुयी सजी वस्तुमात्रकी चखन शक्ति-  
का अज्ञाव होना चाहिये और है नही इस लिये प्रत्यक्ष विरोध है.  
ज्योतिषके (१०) सिद्धांतोंने पृथ्वीको मोदकके आकार

गोल और स्थिर मानी, इनमें आर्य जट्ट सिद्धांत वालेने इतना विशेष माना कि-पृथ्वी फिरती जी है. अंग्रेजोंने इसी आर्यजट्ट-सिद्धांतका आधार लिया है. जो बालक अंग्रेजी पढ़नेमें उद्योगी है उन्हेंकों भूगोलविद्या पढ़नी ही होती है. बस ! उन्हेंकों दिखयें यह संस्कार पुरत जमजाता है कि पृथ्वीका फिरना सच है. परंतु युक्तिद्वारा सिद्ध नहीं होता, अगर पृथ्वी फिरती है तो एक गांव दूसरे गांवसे जिस दिशामें है बदलजाना चाहिये वरसातसे इंद-सरोवरआदि जलसे भरने न चाहिये. वरसात दोघंटेक समजो एक जगह वरसता रहा. और पृथ्वी वहांसे दोघंटेमें ( १६०० ) कोस दूर चली गई. क्योंकि-पृथ्वीको फिरना माननेवालोंने माना है कि पृथ्वी एकघटीकामें [ ३२० ] कोस काटती है, इससे इसका वेगजी बढा जारी हुवा, इस वेगसे उत्पन्न होता हुआ पवन बमेवडे वृक्ष मकान आदिकों तोमने वाला कैसे न होशकेगा ?-पृथ्वी फिरती है तो पंखी अपने मालोंसे उमकर फिर अपने मालोंको न पाशकेगे. क्योंकि दोघंटे वे आकाशमें उमते रहे इधर पृथ्वी चलकर उस जगहसे ( १६०० ) कोस दूर चली गयी. सबूत उमानेवाले अपने मकानसे सबूत उमते है फिर वे पहरदोपहरकेबाद उसी जगह आन बैठते है जहांसे उमे थे. फिरना माननेवालोंकी अपेक्षा वहस्थान दूर चलागया पाना न चाहिये. पतंग उमानेवाला एक मकानपर बम्बरडकर पतंग उमाता है समजोकि-मोर बीचमेंसे दूट गयी. उमानेवाला मनुष्य पृथ्वीकेसाथ लगाहुवा चलाजाता है. पतंग आकाशमें घूमता हुवा फिर जमीनपर उसीजगह थोमीसी दूर



आनकर गिरा दिखता है वह न-दिखना चाहिये. निदान ! कि-सी मूरत पृथ्वीका फिरना नहीं सिद्ध होता.

प्रश्नोत्तरी प्राकृतिक भूगोल चंद्रिका जो हिंडस्थानी ज्ञापामें लपी है उसके (५) में पृष्ठपर लिखा है कि-पृथ्वी फिरती है परंतु हमको मलूम नहीं होता जैसे नदीपर नाव घूम जाता है और उसके आदिमियोंको मलूम नहीं होता. इसीतरह पृथ्वीके रास्तेमें कोई ऐसी चीज नहीं है कि-वह टकरावे या रुकजावे जिससे हमको मलूम हो. यहां हमारा सवाल है कि-पृथ्वी नि-राधार फिरती है कि साधार ? अगर कहोगे कीलीके आधार फिरती है तो कहिये ! वह कीली किसके आधार है ? फिर उसी पृष्ठपर भूगोल कर्त्ताने लिखा है पृथ्वीकी कीली एक क-ल्पित रेखा है, जब कीली कल्पित रेखा है तो हम कहते हैं पृथ्वीका उसके उपर स्थित रहकर फिरना जी कल्पितमात्र है, फिर भूगोलकर्त्ताने लिखा है जैसे गेंदपर स्याहीकी बिंदू माल दीजावे और उसको उंधा करदियाजाय तो स्याहीका बिंदू उस जगहसे स्थान नहीं बदलता और न गिरजाता है तद्वत् पृथ्वी उर्ध्व अधः फिरती है परंतु उसपरसे चीज नीचे नहीं गिरती, आकर्षण सक्तिसे थंजी रहती है. परंतु यह कहना वृथा है, क्यों कि-स्याहीका बिंदू गेंदसे एकमेक याने अजिन्न है और हम तुम हाथी-घोमे-पत्तार-जल-शिला-जामे वर्तन-आदि असंख्य चीजें पृथ्वीसे जिन्न है, जैसे गेंदपर गेहू या बाजरीका दाना रखा जाय और फिर गेंदको उल्टादिया जाय जरूर गेहूका दाना गिर जायगा, इसीतरह पृथ्वीके उर्ध्व अधः फिरनेसे असंख्य चीजें

जी जरूर गिर जायगी कोई अटका नहीं सकता. आकर्षण शक्तिका सहारा लेते हो परंतु वह आपकी आकर्षण शक्ति कहने ही मात्र है, अगर आकर्षण शक्ति पृथ्वीमें होती तो हम तूम जो अपनी इच्छा पूर्वक गमन कर रहे है रोक न लेती ? और जहां हम तूम बैठते है वहां ही पकड़ न लेती ?-भूगोलविद्या लिखने वाले तर्क करते है कि-अगर पृथ्वी अपनी कीलीपर न घूमती तो उसके आधे हिस्सेपर सदा प्रकाश और आधे हिस्सेपर सदा अंधेरा रहता, परंतु जब पृथ्वी धालीके आकार गोल है जिसके ठीक मध्यमें मेरु पर्वत है, मेरुके चारों ओर आकाशमें सूर्य चंद्र आदि ग्रहतारागण फिरते है बीचमें निषध नीलवंत पर्वत पूर्व पश्चिम पमनेसे दिन रात वगेरा सब प्रवर्तन यथातथ्य हो रहा है, फिर सदा एक जगह प्रकाश और अंधेरा रहनेका क्या हेतु रहा ?

फिर नयीरोशनीवाले कहते है सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चोफेर घूमती है. अगर यह सत्य है तो अमावास्याके रोज चंद्रमा सूर्यजायाके नीचे और पौर्णमासीके रोज सन्मुख क्योंकर हो जाता है ? और एक राशिपर अनेक ग्रहोंका एकत्र होना फिर जिन्न जिन्न हो जाना जो प्रगट रूपसे देखनेमें आता है क्यों कर संभव हो ?-निदान ! पृथ्वीका फिरना और चंद्र सूर्यादिग्रह गणका स्थिर रहना किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता. पृथ्वी मोदकके आकार गोल नहीं. अठारह सिद्धांतवाले ज्योतिषी जो कह रहे है, ज्योतिष्यका सर्वांगको बिना जाने कह रहे है, ज्योतिषका सर्वांग जाननेकी जिनको इच्छा है, चंद्रप्रज्ञप्ति

सूर्यप्रज्ञप्ति सिद्धांत देखो, आजकल जितना प्रचार ज्योतिषका चल रहा है कुछ दो अठाइ हजार वर्षसे नया शुरू हुआ है इसके पहले आर्यावर्तमें जिस प्रकार ज्योतिषका प्रचार था चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्य प्रज्ञप्ति सिद्धांतमें देख लो. वह गणित वह क्षेत्रफल वह गति आजकल व्यवहार गिणानामें चलनी मोकुफ होगयी है, जर्मनी देशस्थ जोकोवी साहबने आचारांग और कल्पसूत्रका अंग्रेजीमें उल्था (तरजूमा) किया है उसकी प्रस्तावनामें चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति सिद्धांतकी ज्योतिष गिणानाकों प्राचीनता दिखानेमें उत्तम युक्ति तर्क वितर्क दिनी है. लिखा है कि- चंद्र प्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति जैनागम ग्रीकलोकोके हिंदूस्थानमें आये पहलेके है, क्योंकि-जो जो ज्योतिष संबंधी हकीकत इनमें है ग्रीकलोको के ज्योतिषशास्त्रमें नहीं.-जैन आगममें निषधपर्वतके उपरसें सूर्यका उदय होना और तिरश्चोन गतिसें सायंकालको उसी पर्वतके पश्चिम जागपर जायकर अस्त होना, मंमलोंद्वारा ज्योतिषचक्रका भ्रमण होनेसें अयन आदिका व्यवहार होना, घनवायु तनुवायुके आधार रही हुयी पृथ्वी स्थालीके आकार गोल और सपाट होना, सत्य मलूम होता है.

११-प्रश्न,-सूर्यचंद्र ग्रह नक्षत्र तारे जमीनसें कितने उंचे है?  
उत्तर,-(७६०) योजन उंचे तारेके विमान-(८००) योजन सूर्यका विमान. (८८०) योजन चंद्रमाका विमान-(९००) योजन शनैश्वरका विमान जमीनसें उंचा है.

१२-प्रश्न,-पच्चीस क्रियामेंसें (१३) में और (१२) में गुणस्थान कितनी क्रिया पावे ?

उत्तर,—११-१२-१३-में गुणस्थानमें एक इर्याप्रक्रिती क्रिया पावे.

१३-प्रश्न,—धुजयोगमें पुन्य संवर निर्जरा तीनोंही होवेया कमी बेसी, ?

उत्तर,—धुजयोगमें पुन्य संवर निर्जरा तीनोंही होंवे, तैर-हमें गुणस्थानमें केवलीकों सातावेदनो कर्मका बंध है.

१४-प्रश्न,—सम्यक्त कितने दंमकमें उपजे ?

उत्तर,—पांच स्थावरके पांचदंमकमें सम्यक्त न उपजे, तीन विकलेंद्रियके तीन दंमकमें अपर्याप्त अवस्थामें पिडले जखन शाय लाया हुवा हो, नया न उत्पन्न होवे. शेष सोलह दंमकमें नया उत्पन्न होवे.

१५-प्रश्न,—गत्यंतर जाते अपांतराल मार्गमें पांचप्रकारके शरीरमेंसे कितने शरीर? कितने योग हो, ?

उत्तर,—तैजस कर्मण दो शरीर और एकही कर्मणकाययोग,

१६-प्रश्न,—र्चीन्द्रिय त्रीन्द्रियमें उपयोग कितने ? और वायु कायमें योग कितने, ?

उत्तर,—१-ज्ञान-२, अज्ञान-१, अचक्षुदर्शन. यह पांच उपयोग र्चीन्द्रिय त्रीन्द्रियजीवोंमें पाइये, वायुकायमें १, उदारिक-२, उदारिककामिभ्र-३, वैक्रिय-४, वैक्रियकामिभ्र-और-५, कर्मणयोगयह पांच योग पाइये.

१७-प्रश्न,—मुनिकों एकीले विहार करनेकी जिनाज्ञाहै, ? वा नही ?

उत्तर,—आज्ञा है. ( यतः आगमवचनं.)

गीयथ्य विहारो, बीयो गीयथ्य मिसओ नणियो,  
एस तईयो विहारो—नाणुन्नाओ जिएवरेहिं, १

अर्थ:—गीतार्थमुनि एकीला विहार करंतोजी जिनाझा विरुद्ध नहीं. दूसरा गीतार्थमिश्रित अर्थात् एक मुनि गीतार्थ और दूसरे अंगीतार्थमिलकर विहार करे तोजी जिनाझाविरुद्ध नहीं. इसके शिवाय तिसरे प्रकारका विहार करनेकी जिनाझा नहीं. कितनेक मुनि अंगीतार्थ मिलकर विहार करते है उनमें एकजी गीतार्थ नही परंतु वे अपने बहोत मुनिसमुदायका मान करके अपने आपको संयमी कहलातेहै, ज्ञानी इनमें कोई गीतार्थ नहीं इसलिए अंगीतार्थ विहार कहकर संयमका अज्ञाव बतलाते है. निदान ! आगमवचनका तात्पर्य यह हुवाकि—कुछ पांचसातसाठ अंगीतार्थोंके इकठे मिलनेपर संयमका सद्ज्ञाव नहीं, संयमका सद्ज्ञाव गीतार्थसे है, चाहे गीतार्थ एकीलाविचरे, वा. दोचार मिलकर विचरे, वा एक गीतार्थ औरउनके साथ अंगीतार्थ मिलकर विचरे सब जिनाझा के आराधक है. गीतार्थके बिना पांच दस इकोठ मिलकर विचरे तोजी वे आराधक नहीं. किंतु विराधक है.

१०-प्रश्न,—पांच ज्ञावके एक एक ज्ञावमें कितने कितने बोलपाइए ?

उत्तर,—उपशम सम्यक्त और उपशम चारित्र उपशमज्ञावमें पाइए. क्वायिकसम्यक्त क्वायिकचारित्र केवलज्ञान केवलदर्शन दान लान जोग उपजोग और वीर्य यह (ए) क्वायिकज्ञावमें पाइए. हायोपशम सम्यक्त हायोपशम चारित्र

संयमासंयम मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनःपर्यायज्ञान  
मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान विभंगअज्ञान चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन  
अवधिदर्शन दानलब्धि लाभलब्धि जोगलब्धि उपभोगल  
ब्धि और बोर्यलब्धि यह ( १० ) द्वायोपशमभावमें पाइये.  
चारगति (नरक तिर्यच मनुष्य देव. )-चार कषाय ( क्रोध मान  
माया लोभ. )स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद मिथ्यादर्शन अज्ञान  
असंयम असिद्ध और उह लेख्या यह ( ११ ) औदयिकभावमें  
पाइये. जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व अस्तित्व अन्यत्व कर्तृत्व भो-  
क्तृत्व गुणवत्व असर्वगतत्व अनादिकर्मसंतानबद्धत्व प्रदेशत्व  
अरूपत्व नित्यत्व-इत्यादि अनादि परिणामिक जावमें पाइये.

१९-प्रश्न,-नेरहमें चौदहमें गुणस्थान भाव कितने पाइये.

उत्तर.-औदयिक द्वायिक और पारिणामिक तीनभाव पाइये.

२०-प्रश्न,-हुंढियेलोग चैत्य शब्दका अर्थ ज्ञान करते है.

अथवा कोइ उद्मस्थ अरिहंत ऐसा करते है, अथवा कोइ साधु  
ऐसा करते है यह बात सत्य है कि असत्य ?

उत्तर,-असत्य है. व्याकरण कोश वा आगमधारा यह  
अर्थ सिद्ध नहीं होता. चैत्यशब्दका सत्य अर्थ यह है हेमचंद्र  
सूरिकृतनाममालामें चैत्यावेहारौ जिनसद्गनि इति-स्वो.  
पद्मवृत्तौ-चीयत इतिचितिः तस्यजावश्चैत्यं जावेयण  
प्रत्ययः-तथा अमरकोशे चैत्यमायतनं प्रोक्तं-धातुपा-  
ठवृत्तौ चिञ् चयने इत्यस्य धातोः प्रयोगश्चैत्यं-हेमाने  
कार्यसंग्रहे चैत्यं जिनौक स्तद्विबंम-इति-चैत्यशब्द-

का अर्थ जिनबिंब जिनमंदिर और जिनसत्तातह है.

३१-प्रश्न,—हुंढिये लोक [३१] सूत्र कौन कौनसे मानते है और अपनेमें कितने मानते है ?

उत्तर,—[११] अंग, [१२] उपांग, चारमूल (दशवैकालिक-उत्तराध्ययन-नंदीसूत्र और अनुयोगचार.) ठेदग्रंथ चार दशाश्रुतस्कंध-वृहत्कल्प-व्यवहार और निशीथ.) वत्तीसमा आवश्यक सूत्र-ये (३१) सूत्र हुंढिएलोग मानतेहै, चारमूलमे फेरफार कराहै उह (६) ठेदग्रंथमेंसे चारहो ठेदमाने दो नही माने.

अपनेमें (११) अंग, [१२] उपांग,—दशाश्रुतस्कंध, वृहत्कल्प व्यवहारसूत्र, पंचकल्प, निशीथ, और महानिशीथ, ये [६] ठेद ग्रंथ. चारमूलसूत्र ( आवश्यक-दशवैकालिक-परिनिर्मुक्ति और उत्तराध्ययन.) अनुयोगचार और नंदीसूत्र मुख्य करके ए [४५] मानतेहै, नंदीसूत्रमें (८४) आगमके नाम है बेज्जी मान्य है. (१४०००) प्रसिद्ध एक महावीरस्वामीके शिष्यके रचित नंदीसूत्रमें लिखेहै सब मात्थेहै. विशेष क्या कहे ! महावीरस्वामीसे लेकर आजतक पूर्वाचार्योंने जितने शास्त्रसिद्धांत रचेहै जो जो द्वादशांगवानीके अनुसार है वे सज्जी मान्यहै.

वैशाख-ज्येष्ठ आषाढ महिनेमें नंदीसूत्र व्याख्यानमें बाचा. आचारदिनकर जो जावनाधिकारमें बाचते थे पूरा किया. सिद्धांतशिरोमणिका गोलध्याय इनदिनोंमें कंठाग्र किया. चौथासा लगते पहले आषाढ शुक्ल (१३) के रौज ठाणांगसूत्र और वासुपूज्य चरित व्याख्यानमेंवांचना शुरु किया. श्रावणशुक्ल [ए] के रौज जैनधर्मप्रसारक सत्ताके मंत्रा अमरचंद घेलाजाइ एक प्र-

कारका चलता विरोधकी कृपा मागनेकों हमारे पास आये. तीन रौज रहे. फिर अपने शहरकों गये. पर्युषणपर्व बतीत होनेके बाद जयपुरसें भिन्निपल्ल हरिदासजीने पंमित जगन्नाथजी द्वारा जैन बोधके संबंधमें कितनेक सवाल हमसें पूछे. उसका उत्तर लिखकर उसीके बारेमें एक सविस्तर निराळा विषय लिखा सो यह है.

### ( जैन बोधका जेद. )

कितनेक महाशय जैन बोधको एक और कितनेक एक दूसरेकी शाखा समझते है. परंतु जैन बोध एक नहीं, न एक दूसरेकी शाखा है. कितनेक कहते है एक दूसरेकी पुस्तकोपरसें नकल कियो, कितनेक कहते है दोनोने-“बौधायन”-जो वैदिक-मतका पुस्तक है उस परसें नकल कियो. परंतु यह बात गलत है. क्योंकि जो बात जैन पुस्तकोमें है वह बौधायनमें नहीं, जो बौधपुस्तकोमें है वह जैनमें नहीं. कितनेक कहते है जैन बोधके इतिहासकी बातें परस्पर मिलती है इसलिये दोनो एक है. परंतु इतिहासकी बातें कहाँ मिलती है ! जैनमें (१४) तीर्थंकर मानते है बौधमें (७) मानते है. चोइसमे तीर्थंकर महावीर और बौधमतके आचार्य गौतमबुध एक समयमे हुवे परंतु इससें यह नहीं कह सकते है कि-जैनबोध एक है, रिवाज जी निम निम है. एक दो बातें मिलनेपर एक नहीं हो सकते.

महावीरके पिताका नाम सिद्धार्थ और गौतमबुधके पिताका नाम शुद्धोदन था. महावीरकी माताका नाम त्रिशला-गौतमबुधकी माताका नाम गौतमी था. महावीरकी स्त्रीका नाम



यशोदा-गौतमबुधकी स्त्रीका नाम यशोधरा था. महावीरके भ्रा-  
तृका नाम नंदीवर्द्धन-गौतमबुधके भ्राताका नाम नंद था. महा-  
वीरका जन्म \*कृत्रियकुंरु ग्राममें हुआ गौतमबुधका जन्म नेपाल  
की तराइमें सुंसरमारपर्वतके पास कपिलवस्तु ग्राममें हुआ. महा-  
वीरकी माता महावीर ( १० ) वर्षके हुवे तबतक जीयो-गौतम  
बुधकी माता गौतमबुधके जन्मते ही गुजर गयी. महावीरको कोई  
पुत्र नहीं था प्रियदर्शना नाम एक पुत्री थी. और गौतमबुधको  
राहुल नाम एक पुत्र था.

१-महावीरने राज्याधिकार नहीं लिया. अठाइस वर्ष  
बतीत होनेपर माता पिता स्वर्गवास हुवे तब नंदीवर्द्धनसे पूछा  
कि-मैं मुनि होना चाहता हु. नंदीवर्द्धनने कहा माता पिताका  
शोकरूपो दाह मुझे हो रहा है उसपर नौन मत लगा. जाइके  
आग्रहसे (१) वर्ष संसारमें रहना स्वीकार किया. परंतु संसारिक  
कार्यमें आसक्त न हुवे. ब्रह्मचर्य पाला. और पुरे (३०) वर्षकी  
उमरमें संसार छोडकर मार्गशीर्ष सुदी दशमोके राँज अपने लंबेके  
शोंकों काट कर मुनि हुवे. नंदीवर्द्धन और इन्होंने दीक्षा महो-  
त्सव किया. मतिज्ञान श्रुतज्ञान-आर अवधिज्ञान पहले मौजूद  
थे दीक्षा लिये बाद महावीरको \* मनःपर्यायज्ञान पैदा हुआ.

२-गौतमबुधने (३०) वर्षकी उमरमें डुनिया छोडकर मुनि  
पना स्वीकार किया. ऐसा बयान है कि-एक दिन गौतमबुध अ-  
पनी स्त्रीके महेलमें सोने लगे. वह सोती थी, मनमें वैराग्य आया

\* आजकल लखीशरांग स्टेशनसे (१६) मील दूर बसता है.

\* दूसरे मनुष्यके मनकी बात इस ज्ञानसे जाहेर हो.

कि-डनिया मुठी है दरवजे ही सें पिठें लोटे. बच्चेकों इस अं-  
देसेसैं प्यार जो नही किया कि-ऐसा न हो उसकी मा जाग  
उठे. घोंमंस्वार होकर अंधेरेमें चले. रात जरकी सफरके बाद  
सवेरकों अपने इमानदार रथवानके हाथ घोड़ा और गेहना  
अपने पिताको जेज दिया और लंबे केशोंको काट फकीराना  
वेष पहनकर जंगलको राह लीयी.

महावीर और गौतमबुध दोनों राजपुत्र थे. दोनोंने जवा-  
नीमें डनियाका सुख चैन गोमा. प्यारे अपत्य और स्त्रीसैं मोह  
न किया. राजकुमार होकर जंगल वासी बने हकीकतमें सहज  
बात नही. इस मजपुनकों जैनी और बौध अपने अपने पवित्र  
पुस्तकमें जब खयालाना करते है सबकों प्यारा लगता है. पाषाण  
हृदय पुरुष जी रो देते है. एक जमाना वह था चंपेवर्ण शरीर-  
पर राजसी कपमें पहने रहते थे, घरसैं बहार कदम जरनेकोंजी  
स्वारी हाजर थी, अब वो बात धार लीयी कि-घर घर मोछने  
वाल्लोंको तरह जिह्वा मागना-देहकों विदेह समजना-और जंगल  
वासी बनना धर्म प्यारा न होतो कौन ऐसा कर शकता है, !-  
हकीकतमें डनिया मोहरूपी जंजोरसैं जडो है, जहां स्नेह वहां  
डल है, संयोगके साथ वियोग लगा है, युवानो बुढापनसैं घीरी  
है सुख डःखका चक्र सारे संसारपर फिर रहा है. रैयत समजती  
है राजा-और राजा समजता है रैयत सुखी है, परंतु वास्तवमें  
कोइ सुखी नही. धन और औरत के लिये पुरुष और पुरुषके  
लिये औरत बेहोश फिर रहे है. किसीने तृप्ति नही पायी. तृप्ति  
पानेका यहो रस्ता है जो महावीर और गौतमबुधने लिया. धर्म

प्यारा लगे बिदून संसारकों कोइ नही ठोमता. अलबते ! झा नकी न्यूनाधिकता होनेपर कोइ सचे राह चलता है कोइ उजडे चलता है, परंतु इतना कहना जरूर बन सकता है संसार ठोमना और धर्मकी तर्फ मुंह करना अच्छा ही है.

३-कृत्रियकुंम ग्रामसें विहार कर महावीर कुमारसंनिवेश गये, और ध्यानारूढ हुवे. वहां पशुपाल (गोवालो) ने अपने बैलोंको इनकेपास लायकर बांध दिये. इस विचारसें कि ये इनकी रक्षा करेंगे, बैलोंके चले जानेपर पशुपालोंने गुस्ते होकर महावीरकों मार मारना चाहा. इन्हने अवधिज्ञानसें यह बात जानी आनकर पशुपालोंकों शिक्षा दीयी. और महावीरसें विज्ञप्ति कियी कि-(१३॥) वर्षतक आपको बमे कष्ट उपस्थित होंगे आप हुकम देवेतो मैं आपकी सेवामें हाजर रहू. महावीरने कहा कर्मोंका कृत्य अपनी शक्तिद्वारा करे मुक्ति जब होती है. इन्हने मरणांत उपसर्ग निवारणके लिये एक देवता महावीरकी सेवा में रखा जिसका नाम सिद्धार्थ था. पहला चौमासा महावीरने मौराक संनिवेशमें किया, यद्यपि केइ कारणोंसें इस चौमासेमें अनियतपने फिरते रहे परंतु यही कहजाता है कि-मौराकसंनिवेश और अस्थिक ग्रामके निश्चित यह चौमासा हुवा.

४-कपिलवस्तु ग्रामसें चलकर गौतमबुधने पहला चौमासा बनारसमें किया.

५-मौराक संनिवेशसें अन्यत्र विहार करके महावीर श्वेतांबिका नगरी गये, रस्तेमें चंमकौशियानागकों प्रतिबोध दिया. श्वेतांबिकासें सुरजीपुर-सुरजीपुरसें आगे गंगा नदी छतर कर

राजग्रही गये. वहां नाळंद मोहलेमें तंतुवायकी शालामें ठहरे. एक महिनेका तप किया. गोशाखा मंखलीपुत्र यहां महावीरसें मिला. दूसरा चोमासा यहां हुवा.

६-वनारससें चलकर गौतमबुध राजग्रही आये. और आनंद-देवदत्त-उपाली-और अनुरुद्ध-ये ( ४ ) चले यहां किये. जिसमें आनंद जातिका हजाम था. इनदिनोंमें कपिलवस्तुमें शुद्धोदनराजाका गौतमबुधको बुलाना आया, गौतमबुध चेलों-कों लेकर कपिलवस्तु गये. पिताने जोजनकेलिये निमंत्रणा कियी. जिक्राकेलिये गौतमबुधे अपने घर गये-सत्ती कुटुंबसें मिले-स्त्री यशोधराकोंजी मिलने गये. दूरसेंही पतिकों देखकर यशोधराने रोदिया. पैरमें गिरकर बहोत रोंने लगी तब गौतमबुधने उपदेश दियाकि धीरज रखो. दुनिया झूठी है और धर्मकरना अच्छा है. गौतम बुध जिक्रा लेकर अपने मठको आये. और जब कपिल वस्तुमें जाने लगे यशोधराने अपने बेटे राहुलको राज्यजाग मांगनेके लिये जेजा. एक दो पमाव चले गये बाद एक आश्रममें राहुल गौतमबुधसें जाय मिला. गौतमबुधने चेलोंसें कहरसाथा कि-राहुलकों साधु बना लेना. उन्होंने उसीतरह किया. शुद्धोदन इसबातसें बहोत नाराज हुवे. और गौतमबुधसें मिलकर इकरार करवाया कि-माता पिताको आज्ञा बिदून किमीकों साधुकरना नही. अखीरमें गौतमबुधकी स्त्रीजी साध्वी हुयी. गौतमबुध राजग्रही आये. दूसरा चोमासा यहां किया.

७-राजग्रहीसें विहारकर महावीर ब्राह्मणगांव होतै चंपा-नगरी गये. तिसरा चोमासा यहां किया. चंपासें काळाकसंनिवेश

होते पात्रालक संनिवेश गये. गोशाला मंस्वलीपुत्र जो महावीरके बिना कहे साधुपनेका वेष पहनकर चेला हांछूका था साथ ही फिरता रहा. पात्रालक संनिवेशसे कुमार संनिवेश गये, वहां तेइसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथके शिष्यसंप्रदायमेंसे मुनिचंड्रजीके चेलोंसे गोशाला मिला. कहताहै तुम कौन हो ? उन्होंने कहा हम निर्ग्रंथ मुनिहैं. गोशालाने कहा तुमकों निर्ग्रंथ किसने बनाये?—कहां मेरा धर्माचार्य और कहां तुम?—बिल्कुल झूठे हो. इत्यादि वादानुवाद करता रहा. कुमार संनिवेशसे महावीर चौराकसंनिवेश होते हुवे पृष्ठचंपानगरी गये. चौथा चौमासा यहां किया.

८—गौतमबुधके तिसरे चौमासेका यथार्थ हाल बौधपीटकोंमें नही मिलता. चौथे चौमासेका इतना हाल मिलता हैकि—विशाला नगरीमें किया.

९—पृष्ठचंपासें विहार कर महावीर कायंगल संनिवेश होते सावलीनगरी आये. कितनाक समय ठहरकर हरिद संनिवेश गये, वहां ध्यानारूढ हुवे. वहांसें नगलग्राम गये. वहांसें लिष्ट कर्मकी निर्जराके लिये लाढा विषयको और वहांसें पूर्णकृश (अनार्यभूमि) नामा ग्रामकों गये. वहां अपशुक्न हुवा मानकर दो चौर तलवार लेकर महावीरकों मारने आये. इन्होंने आनकर दोनोंको हठाये. वहांसें जडिकापुरी गये. पांचमा चौमासा यहां किया.

१०—विशालासें चलकर गौतमबुध कपिलवस्तु तर्फ आये. राजा शुद्धोदन मृत्यु हुवा तब गौतमबुध कपिल वस्तुमें थे. कितनीक स्त्रीयोंकों यहां साध्वी कियी. फिर वत्सदेशमें कौ-

शांभी आये. कौशांभीमें महावनमें कुंतामारविहार आनकर पांचमा चौमासा किया.

११-ज्जिकामें विहारकर महावीर तंबालग्राम गये. गौशालामंखली पुत्र यहांसें न्यारा हुवा. तंबालमें विशाला गये. यहां ध्यान किया. फिर ग्रामाक संनिवेश गये. यहां विज्जेलकयद्धने महिमा कियी. फिर शालिशोर्षग्राम गये. यहां एक वाणव्यंतरी देवीने उपसर्ग किया. यह देवी जब महावीर त्रिपुष्ट वासुदेवके जवमें थे तब इन्होंकी स्त्री थी परंतु अपमानिता थी. उपसर्गको सहते हुवे महावीरकों यहां \*लोक अवधिज्ञान पैदा हुवा. यहांसे फिर ज्जिकानगरी गये और उठा चौमासा यहां किया. अनेक अजिग्रह धारन किये, गोशाला मंखली पुत्र फिर आन मिला.

१२-कुंतागार विहारसें चलकर गौतमबुध महाकुलमें गये वहां उठा चौमासा किया. इस चौमासमें गौतमबुधने सोचा कि-मैंने छ वर्ष तप किया. परंतु कुछ न हुवा. इस लिये तप करना छोड़ देना चाहिये. जो हैसो ज्ञानमें है. दूसरे मनुष्योंको उपदेश देकर धर्ममें लाना यही ठीक बात है.

१३-ज्जिका नगरीमें विहार कर महावीर मगध देशमें आठमहिने निरुपसर्ग विचरते रहे. सातमा चौमासा आलंजिका नगरीमें किया. चार महिनेका तप किया.

१४-महाकुलसें चलकर गौतमबुध राजग्रही आये. राजा बिम्बिसार (श्रेणिक)की स्त्री क्लेमाकों बुध धर्मकी दीक्षा दीयी.

\* चतुर्दश रज्जातमक लोकमें जितने रुपीपदार्थ है इस ज्ञानसें देख सके.

सावध्यामें आनकर बिम्बिसारकों कितनेक चमत्कार बताये, फिर गौतमबुध स्वर्गमें गये. वहांसें पिठें आनकर सातमा चौमासा जैतवनविहारमें किया.

१५-आलंभिकासें महावीर कुड्मसंनिवेश गये. वहां ध्यान करते रहे. फिर मदनग्राम-मदनग्रामसें उन्नागसंनिवेश-फिर वज्रभूमि-और वज्रभूमिसें राजग्रही आनकर आठमा चौमासा किया.

१६-जैतवनविहारसें चलकर गौतमबुध सूंसमार पर्वत [जो कपिलवस्तुके पास है] पर नये. यहां आठमा चौमासा किया.

१७- राजग्रहीमें महावीर वज्रभूमिमें गये. इस जगह अनेक उपसर्ग सहन किये. नवमा चौमासा इसी भूमिमें अनियतपने किया. सबबकि-चारमहिनेतक एक जगह ठहरनेको उचित स्थान नहि मिला. कजी किसी जगह और कजी किसी जगह फिरते रहे. चार महिनेका तप किया.

१८-सूंसमार पर्वतसें गौतमबुध कौशांबी आये. यहां मोद्गलायनके साथ तकरार हुवा. आप ममे विरोध पैदा होनेसें गौतमबुध गुस्से होकर पारिलेयकवनमें चले गये. और यहाँ नवमा चौमासा किया. मोद्गलायन और शौरीपुत्र ये दो गौतमबुधके लायकवर शिष्य थे. बांधपीटकोंमें इन्होंका नाम बहोतजगह देखनेमें आताहै.

१९-वज्रभूमिसें विहारकर महावीर और जी दो महिने उसीके आसपासकी जमीनमें विचरते रहे. बाद कूर्मग्राममें आये. कूर्मग्रामसें सावध्या आनकर दशमा चौमासा किया. गोशाला मंखलीपुत्रने महावीरसें अलग होकर तेजुलेख्या साधन कियी.

और पार्श्वनाथके शिष्यप्रशिष्योंमेंसें एककों [जो संयमरहित था] मिलकर अष्टांग निमित्त सीखा. अपने आपको सर्वज्ञ मानने लगा.

१०-दशमा चौमासाजी गौतमबुधने पारिलेयकवनमेंही किया

११-सावध्थीमें विहारकर महावीर म्लेच्छछद्मभूमि कों गये.

वहां पेढालग्राममें बहार पोलासचैत्यके एक जगमें ध्यानारुढ़ हुवे. इसवख्त तेलका तप किया था. इधर पहले देवलोकेमें इंद्रने अपनी सज्जामें सबदेवोंके स्वरु महावीरके चित्तकी हृदता का वर्णन किया. और कहा कौनदेव वा दानव ऐसा है जो महावीरकों ध्यानमें चला सके. सज्जामें बैठा हुवा संगमदेव कहने लगा अजी चलाकर आताहुं. मनुष्यलोकेमें जहां महावीर थे आया. महावीरपर धुलकी वृष्टि कियी. मांस मच्छर घृतेलिका विछु सर्प उंदरे नोलके रूपमें महावीरकों काटा. हाथीका रूप करके मर्दन प्रहार किया, पिशाच होकर मराये, व्याघ्र होकर नखोंसें विदारण किया, सिन्धार्थ और त्रिशलारानिका रूप करके रुदन किया अनुकूल उपसर्ग दिया. महावायु कलिकाबायु चलाकर कालचक्र ठोसा. देवमायामें सूर्योदय करके महावीरसें कहा अब दिन चढ़गया चलते क्यों नहीं? महावीर अपने ज्ञानमें जानतेही थे कि-रात्री है और इसने देवमायासें दिन चढ़ाकर दिखाया है. फिर दिव्यरिद्धि देखाकर कहा जो दिल चाहे सो मागलो. देवांगनाका रूप करके जोग करनेकी प्रार्थना कियी परंतु किसी प्रकार महावीर अपने ध्यानमें चले नहीं, एकरात्री में संगमदेवने (१०) उपसर्ग किये. वहांसें दिन रोशन हुवा जब महावीर आगे बढ़े तब वह देवजी पिठे पिठे चला. जहां जहां जिह्वाकों जावे जिह्वाकेयोगकों दोषित करमाछे. याने किसी प्र-



कार तोम फोमकर जिह्वा न मिले वैसा उपाव करे. निदान ! उद्धमहिनेतक महावीरके पिठे फिरा. परंतु एक उपाव नही चला. हार खाकर जब जाने लगा कहता है है ! देवार्थ ! चले जाऊ अब मैं आपको छोड़दिये. महावीरने कहा मैं कोशके आधीन नही. जहां योग्य जानता हुआ जाता हुआ. संगम देवलोककों गया, महावीर अगाडीबढे. देवलोकमें इंद्रनेसंगमकों आते देखकर मुंह फेंर लिया. और देवोंकों हुकम दियाकि- इस छष्टकों मेरे सामनेसेनिकाल दो. इमने हमारे मान्य परमात्मकों बहोत खेदित किये. निदान ! संगमदेवको स्वर्गसे निकाल दिया, जोकि- मेरुपर्वतकी चूलिकापर आन रहा. महावीर आलंजिका नगरी गये. वहां हरिकांत और श्वेतंबिका गये तब हरिसह दो विद्युत कुमार देवोंके इंद्र माता पूठने आये. साव-ध्यीमें शक्र इंद्र साता पुठने आया. कौशांबीमें गये तब चंद्र सुर्य राजग्रहीमें इशान इंद्र और मिथिलामें धरणींद्र साता पूठने आये, इसी तरह विहार करते विशालामें आये. ग्यारहमा चौमासा यहां किया.

१३-पारिलेयक वनसें चलकर गौतमबुध राजग्रहीके पास भरघाज ग्राम गये. ग्यारहमा चौमासा किया.

१४-विशालासें चलकर महावीर सुंसमारपुर गये. सुंसमारपुरसें कौशांबी-जहां शतानिक राजा राज्य करता था. महावीरने यहां एक कठिन \*अजिग्रह धारा जो उह महिनके बाद पूरा हुवा. कौशांबीसें जंभिका ग्राम गये. जंभिकासें मैठिक ग्राम-मैठि-

\* कल्पसूत्रमें इसका वर्नन हे.

कग्रामसें पणमानी ग्राम गये. वहां ध्यानारूढ थे तब एक गोवा-  
लिया दो बैलोंको इनके पास ठोर गया. कह गयाकि मैं-  
आता हु आप खयाल रखियेगा. निर्मोही महावीरने न हां कही  
न ना कही. इधर बैलोंने जंगलकी राह लीयी. गवालीयेने आ-  
नकर पूजा बैल कहां गये ?-महावीर कुछ न बोले. क्रोधमें आकर  
गवालियेने दो मेखां काठकी दोनों कानोंमें लगा दियी. त्रिष्टु  
वासुदेवके ज्वमें महावीरने इस गोवालियेको (जो शय्यापाल था)  
कानोंमें सीसा गिराकर प्राणांत किया था. वह कर्म यहां उदय  
आया. याने वह शय्यापाल गोवालिया हुवा और कानोंमें मेखां  
लगाकर बदला लिया. वहांसे महावीर मध्यपावामें गये. स्विच्छार्थ  
वणिकके घर जब जिक्हाकों गये तब खरक वैद्यने देखा कि-इन  
के शरीरमें कुछ व्यथा है. जब महावीर जिक्हा लेकर वनकों  
लोटे खरक वैद्य पीठें पीठें आया. और व्यथा निवारण कियी.  
बने यत्नसें काष्ठकी मेखां निकाली, संरोहिणी औषधि लगाकर  
निरोग किये. इस उत्तम कार्यमें वैद्यने देवगति होनेका पुण्य  
उपार्जन किया. गोवालिया मरकर नरकगतिको गया शांत  
दांत जिनेन्द्रिय-गगनवत् निरालंबी-वायुवत् अग्रतिबंध विहारी-  
समुद्भवत् गंजीर-मेखवत् अक्रंप-ज्जरंमपक्षीवत् अममादी-कंचन  
पाषाणमें एक दृष्टि ज्ञानदर्शन चारित्र करके जावितात्मा-महावीर  
(१२) वर्ष ग्रामानु ग्राम विचरे. तेरहमें वर्षकी गृष्मरुतुका दूसरा  
महिना वैशाख शुक्र (१०)मी के रौज-जूजिकग्रामके बाहार-रिजु-  
वालुका नदी कनारे-श्यामाक कुटुंबके खेतमें शालवृक्षके नीचे  
अकहुआसन बेटे हुवे महावीरकों शुरुध्यान ध्याते केवलज्ञान

उत्पन्न हुवा. ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनी और अंतराय ये (४) कर्मसें रहित हुवे. चौरासी लाख जीवयोनि की गति आगति स्थिति जीवन मरण अवतरण सजी जीवोंके मनोगतज्ञाव और धर्मास्तिकाय आदि खट्खटके सजी जेदोंको जानने लगे. महावीरको केवलज्ञान उत्पन्न हुवा जानकर [ ६४ ] इंद्र ज्ञानका महोत्सव करनेको आये, समवसरण (व्याख्यान भूमि.) की-रचना कियी. उसमें बैठकर महावीरने धर्मोपदेश किया. (१२॥) वर्षके तपको महावीरने सफल माना. तपसें कर्मोंका नाश होता है कर्मोंके नाशसें ज्ञानप्राप्ति होती है.

रिजुवालुका नदीकिनारेसें विहार करके महावीर पावा पुरीमें आये. देवाने मिलकर समवसरणकी रचना कियी. इसवख्त पावा पुरीमें सोमिलविप्रके घर यज्ञ महोत्सवकेलिये बहोत ब्राह्मण इकठे हुवे थे. इनमें इंद्रभूति (गौतम)-अग्निभूति-वायुभूति-वे(३) पंमित सगेभ्राता थे. एक एकको पांचसें पांचमें शिष्यका परिवार था. व्यक्त और सुधर्मा पंमितकोंजी पांचमें शिष्य थे. पंमित और मौर्यपुत्र दो पंमित सगेभ्राता थे. दोनोंके सातसें चले थे. अकंपित अचलभ्राता मेतार्य और प्रजास इन चार पंमितोंकोतीनसें तीनमें शिष्यका परिवार था. कुल (४४००) शिष्यके(११) पंमित अध्यक्ष थे. महावीरके समवसरण में इंद्र-वगेरा देव आकाशसें उतरने लगे इंद्रभूतिआदि [११] पंमित कहते रहे देखो ! यज्ञ के प्रजावसें प्रसन्न होकर देवता यज्ञमहोत्सवमें आते हैं. परंतु वे जब महावीरके पास गये औरलोकोमेंजी बात पसार दुश्कि, यहां चौदसमें तीर्थकर आये है तब इंद्रभूति

[गौतम] को दर्शा पैदा हुयो. मनमें निर्णय करलिया कि-उस सर्वज्ञको चर्चा करके हराना यज्ञको ओमकर इन्द्रभूति गौतम महावीरके सामने गया. इसको शंसय थाकि-आत्मा मरकर परलोक जाता आता नहो किन्तु पृथ्वोजन आदि पंचभूतोंसे उत्पन्न होकर उसीमें समा जाताहै जैमें जलमें बुद्बुदा-महावीरने इसका उत्तर दिया कि-जोव नित्य है नित्यको उत्पत्ति नहो होती. अगर यह पंचभूतोंसे उत्पन्न होता होतो एक सुखी एक दुखी न होना चाहिये. सुख दुखका होना शुजाशुजकर्मके आधीन है. जब शुजाशुजकर्मका सद्भाव हुवा तो परलोक जाना आना कैसे न हो ! इसलिये आत्मा मरकर परलोकमें जाता आता जरूरहै. जब संपूर्ण कर्म क्षय हो जायगे इसकी मुक्ति होगी. दूसरा प्रमाण यह है कि-शरीर जोग्य है जोग्यवस्तुका जोक्ता जरूर होना चाहिये, जैमें दूधमें घृत-तिलोंमें तैल-काष्ठमें अग्नि और पुष्पमें सुगंध रही है तद्वत् शरीरमें आत्मा रहा है आत्मा ज्ञानमय है. जबतक कर्मोंसे मुक्त नही हुवा है शरीरके शाय क्षीरनीरकी तरह मिला है. सांजी देह व्यापी सर्वव्यापी नहो. मुक्ति होनेपर शरीर छूट जाताहै. ज्ञानकरके सर्वव्यापी है. इस उत्तरसे इन्द्रभूति गौतम निशंसय होकर पाचसे शिष्योंके साथ दीक्षा लेकर महावीरका शिष्य हुवा.

दूसरा अग्निभूति पंमित आया. इसको कर्मके होनेमे शंसय था. महावीरने उत्तरदिया अगर कर्म नहोतो एकसुखी एक दुखी एक राजा एक रंक बगेरा वैचित्रता कैसे है ?-इकीकतम इनका हेतु शुजाशुजकर्म है. इसबातसे अग्निभूति निःशंसय हो-

कर पांचसैं चेलोंके साथ दीक्षा लेकर शिष्य हुवा. तीसरा वा-  
युभूति पंमित आया. इसकों-जो शरीर है वही आत्मा है वा श-  
रीसैं कोई न्यारा आत्मा है?—यह संसय था. महावीरने इंद्रभूति  
गौतमकों जो उत्तर दिया था वही उत्तर देकर निशंसय किया.  
वह पांचसैं चेलोंके साथ दीक्षा लेकर शिष्य हुवा चौथा व्यक्त  
पंमित आया. इसकों पृथ्वी-अप्-तेज-वायु-और आकाश यह  
पंचभूत है या नही इसविषय संसय था. महावीरने उत्तर दिया  
पृथ्वी आदि पंचभूत हैं वेदमें पृथ्वी आदि पंचभूतोंको स्वप्नकी  
तरह असत्य कहे यह अध्यात्मज्ञानको अपेक्षा कहा है. इससैं  
पंचभूतोंका निषेध हुवा नहि समझना अजबने ! अखीरमें ठो-  
मनेयोग्य है इस उत्तरमें निशंसय होकर पांचमें चेलोंके साथ  
महावीरका शिष्य हुवा. पांचमा सुधर्मा पंमित आया. इसकों  
यह संसय था कि-जो इम जन्ममें पुरुष वह मरकर अगले जन्म-  
में जी पुरुष होगा. जो पशु है वह पशु और जो स्त्री है वह अ-  
गले जन्ममें स्त्री होगी. महावीरने उत्तर दिया यह बात ठीक  
नही कोई पुरुष बहोत पापकर्म करे वह पुरुषमें बदलकर अगले  
जन्ममें पशु होजाय. पशु अगर पुन्यकर्म करे तो वह अगले ज-  
न्ममें मनुष्य होजाय. यह कोई बात नही कि-जो यहां पुरुष है वह  
पुरुष और पशु है वह पशु ही हो. यह सब अपने अपने कर्मके  
अनुसारहै. इस उत्तरमें निःसंसय होकर पांचमें चेलोंके साथ महा-  
वीरका शिष्य हुवा. छठा पंमितपुत्र पंमित आया. इसकों बंध  
मोक्तहै वा नही ?—यह संसय था. महावीरने उत्तर दिया जहांतक  
जीव संसारमें एक गतिमें दूसरी गति भ्रमण करता है वहांतक

उसे कमाका बंध जरूर है. जब संपूर्ण कर्मोंमें रहित होगा तब फिर उसे कर्मबंध न होगा इस उत्तरमें निःशंसय होकर साढ़े तीनसों चेलोंके परिवारमें महावीरका शिष्य हुवा. सातमा मौर्यपुत्रपंम्ति आया. इसको देवताके होनेमें शंसय था कहता था यह सब इंद्रजालकी विद्या है, महावीरने उत्तर दिया अगर देवता न होतेतो-यज्ञायुधी यजमानः स्वर्गलोकमवाप्नुयात् वेदमें यह वचन न होता, मायोपमादेवाः-यह जो वचन है इसका तात्पर्य यह नहि कि-देवते बिल्कुल है नही. किंतु अस्सीरमें देवतेजी अनित्य है. आयुष्य पूर्ण होनपर विनाशी है. शंसय दूर हुवा और साढ़ेतीनसों चेलोंके साथ शिष्य हुवा. आठमा अकंपित पंम्ति आया. इसको नरक है वा नही शंसय था. महावीरने उत्तर दिया अगर नरक नही है तो-"जो शुद्धका अन्न खावे वह नारको हो"-यह वचन वेदमें कैसे कहा? इसमें मिद्ध है कि-सबसे अधिक पापफल जोगनेको जगह नरकगति है एक जीवकी अपेक्षा सादि सांत है अनेक जीवोंकी अपेक्षा अनादि अनंत है. शंसय दूर होनेसेतीनसों चेलोंके साथ महावीरका शिष्य हुवा. नवमा अचल भ्राता पंम्ति आया. इसको पुन्य पाप है वा नही इसपर शंसय था. महावीरने उत्तर दिया पुन्य पाप शुभाशुभकर्मजन्म है. शुभाशुभकर्म विना जगत्की विचित्रता नही बनशकती. इश्वर इच्छाका सहारा लेवेतो कृतकृत्य इश्वरको जगत रचनेमें क्या प्रयोजन? -जगत प्रवाहरूपसे अनादि है. इसका बनानेवत्ता काइ नही जो जीव जैसे कर्म करते हैं उसकर्मके उदयसे आपहोवैसा फल जोगते हैं. इसी कारण जगतकी विचित्र-

ता है. इस उत्तरसे शंसय न रहनेपर तीनसो चेलोंके परिवारसे शिष्य हुवा. दशमा मेतार्य पंमित आया. इसको परभव है वा नही शंसय था. महावीरने जैसे इच्छभूति गौतमके उत्तरमें वर्णन किया था तद्वत् उत्तर देकर निशंसय किया, तीनसे चेलोंके साथ दोहा लेकर शिष्य हुवा गारहमा प्रभास पंमित आया. इसको निर्वाण है या नही ? यह शंसय था कहता था मोक्ष साधनके अनुष्ठानका काल वेदमें क्यों नही ?—महावीरने उत्तर दिया आठ प्रकारके कर्मसे जब यह जीव रहित होता है तब इसका निर्वाण ( मोक्ष ) होता है वेदमें निर्वाण अर्थात् पुरुष अग्नि-होत्र आदि कार्य छोड़कर निर्वाण साधनका अनुष्ठान करे यह जो लिखा है निर्वाण साधनकाल हा तो बताया है. अगर निर्वाणका अज्ञाव होता तो यह वचन कैसे होता ?—शंसय दूर होनेपर तीनसों चेलोंके परिवारसे दोहा लेकर शिष्य हुवा. पावापुरीमें एकहो सौज ( ४४११ ) चेले हुवे. उक्त [११] पंमितको गणधरपद दिया. इन्होंने छद्मशांगवानी रची. साधुसाध्वी श्रावक श्राविका-चतुर्विध संघका स्थापना हुयी.

पावापुरीसे बिहारकर महावीर ग्रामानुग्राम विचरते रहे आर धर्मोपदेश करते रहे महावीरका धर्मोपदेश यह था. हर एक मनुष्य [जो धर्म करता है] मोक्ष पाशक्ता है. जो जोव जैमाकर्म करता है वैसा फल जोगता है. न तो देवते और न मनुष्यके रोके रुक सकता है. आराम और रंज आदमीको घेरे तब अपने कर्मोंके फल और नतीजेपर खयाल करना चाहिये, सुख के वस्तु मान और दुःखके वस्तु गरीबी न खाना चाहिये. जब कोई जीव मरता है

तो वह फिर अपने कर्मानुसार ढोटा या बम्हा शरीर धारण करता है. चौराशी लक्ष जीवयोनिमें यह जीव अनादिकालसे फिर रहा है. कभी देव कभी मनुष्य कभी जानवर पंखी और कभी नरकगतिमें इसका जाना आना बन रहा है. जीमने मनुष्यजन्म पाया और पूर्वसंचितकर्म दूरकरके अगामी निस्पृह तप किया उसने मुक्ति पायी. जगतका कर्त्ता कोई नहीं स्वतः अनादिकालसे प्रवाह रूप चला आता है. जो जीव मुक्त्य करता है उसकी मुक्ति होती है, मुक्त हुये पिछे संसारमें आना नहीं रहना. जीव-अजीव पुण्य-पाप-आश्रव-संवर-बंध-निर्जरा-और मांस्-ये [ ९ ] तत्व हैं. धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय-आकाशास्तिकाय-पुद्गलकाल-और-जीव ये (६) द्रव्य हैं - अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्त्तत्व, और अमूर्त्तत्व, ये [ १० ] द्रव्यके सामान्य गुण हैं. ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, गतिहेतुत्व, स्थितिहेतुत्व, अवगाहेनाहेतुत्व, वर्त्तना हेतुत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्त्तत्व, और अमूर्त्तत्व, ये (१६) द्रव्यके विशेषगुण हैं. - अस्ति, नास्ति, नित्य, अनित्य, एक, अनेक, जेद, अजेद, जव्य, अजव्य, और परम, ये (११) द्रव्यके सामान्यस्वजाव हैं. - चेतन, अचेतन, मूर्त्त, अमूर्त्त, एक प्रदेश, अनेकप्रदेश. विज्ञावस्वजाव, शुद्धस्वजाव, अशुद्धस्वजाव, और उपचरितस्वजाव, ये (१०) द्रव्यके विशेषस्वजाव हैं.

अनंतधर्मात्कवस्तु प्रमाणका विषय है. प्रत्यक्ष और परोक्ष-ये (२) प्रमाण हैं. वस्तुके एक एक धर्मपर सप्तजंग रचना जानने योग्य है. स्याद्वाद न्यायसे जिसवस्तुकी परिक्षा कियी जाय और



सही सही जतरे वह सत्य है.—स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिनास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्ति अवक्तव्य, स्यान्नास्तिअवक्तव्य, स्यादस्तिनास्तिअवक्तव्य. यह स्याद्वाद न्यायकी मुख्य बातें हैं. दुनियामें सजी वस्तु उत्पात व्यय और ध्रौव्यगुणमें युक्त हैं. द्रव्यकी अपेक्षा नित्य है, पयायकी अपेक्षा अनित्य है. स्वरूपकरके अस्ति हैं पररूप करके नास्ति है. पररूप करके अस्ति नहीं और स्वरूप करके नास्ति नहीं.

पृथ्वी थिर है फिरती नहीं. थाली के आकार गोल है मोदक के आकार नहीं. जंबुद्वीपमें घेरे हुए असंख्य ममुक्ष और असंख्यद्वीप हैं. मनुष्यलोक ठीक बीचमें है स्वर्गलोक उपर और नरकावास मनुष्यलोकके नीचे है. जगत अनेकांत है, निसानिख एकानेक जेदाजेद वगेरा धर्मकरके युक्त है. अगर एकांत नित्य—एक—और जेद—ही होतो पुन्यपाप सुखदुःख बंधमोक्ष वगेराका अभाव होना चाहिये. जोत्रमंख्या अनंत हैं, हर वस्तुके—नाम—मूर्ति—द्रव्य—और भाव—ये (४) निक्षेपे होते हैं, जिस वस्तुके ये [४] नहीं वह अवस्तु है. ज्ञान दर्शन चारित्र्यद्वारा मोक्ष मार्गका साधन किया जाता है. वह मार्ग [१] प्रकारमें—एक मनिमार्ग—दूसरा गृहस्थमार्ग—मनिमार्गमें प्राणानिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन और परिग्रह (धन)का त्याग रखना चाहिये. गृहस्थमार्गमें स्थूल प्राणानिपात विरमणव्रत आदि (११) व्रत पालन करने चाहिये. (११) अजक्ष्य (२१) अनंतकाय वस्तु न खाना और (११) जावना खयालमें लाना उचितकृत्य हैं. तीर्थ (१) प्रकारके

है एक स्थावर दूमरा जंगम. स्थावर तोर्थ वो है जहां तीर्थंकरोंके कल्याणक हुवे हैं. जगमतोर्थ खुद मुनिजन है. दान शीख तप और जाव ये (४) धर्मके पर्याय है जाव इनमें प्रधान है क्यों कि-जाव बिदून दान शील तप कार्यकारी नहो. आत्त रौखध्यान आत्माकों पापमे लपेटनेवाले है. धर्म शुक्लध्यान आत्माकों मुक्तिदेनेवाले है. काल-स्वभाव-नियति-कर्म-और उद्यम-ये ५ ) समवाय मुक्ति होनेमें संबंध रखत है. अर्थात् जब जग्य जीवका भव्यत्वस्थितिपरिपाक होगी और ज्ञानिदृष्ट जावके अनुसार जब उद्यमद्वारा ज्ञानावरण आदि आठ कर्म क्षय किये जायगें तब जीवकी मुक्ति होगी. जिसको मुक्तिकी परवाह है वह प्रथम ज्ञान-द्वारा मनकों खोटे कर्मोंमें रोंके. इति धर्मोपदेशः—

बहुधा महावीरका विहार चंपा राजग्रही पृष्ठचंपा विशाली मिथिला अयोध्या कौशांबा नदिका आलंबिका कुणाला आदिनगरी उत्तर पूर्वप्रदेश तर्फ हुवा कज्जी हिमालयमें उत्तरको-कज्जी नेपालकी तराईमें-कज्जी जमना गंगाके चौफेरकों-और कज्जी मध्यदेश और दखनकोंभी फिरे हैं.—(१३) वर्ष तप के और (२०) वर्ष ज्ञानक कुल (४३) मुनिअवस्थामें रहे. बयाली चौमासेकी गिनतो. (१) चौमासा मोराकमनीवेश और अस्थिक ग्रामकी निश्राय किया, चंपा और पृष्ठचंपाको निश्राय (३) चौमासें किये. विशाला और वाणिजयग्रामको निश्राय (१३)-राजगृही औरनालंद शास्त्रापुरके निश्राय (१४) मिथिलानगरीमें (६)-भदिकामें (३)-आलंबिकामें (१)-सावध्थीमें (१)-वज्रभूमि अनार्यदेशमें

(१) और ठेकमका पावापुरीमें [१] चौमासा -

१४-भारद्वाजग्रामसे चलकर गौतमबुध कोशलदेशमें बेरंज ग्राम गये. वहां बारहमा चौमासा किया. बेरंजसे चलकर दक्षिण देशमें मंतलनक लंबो सफर कियी. मंतलसे लोटकर कोशलदेश में बनारस आये. बनारसमें विशाला होते सावध्थी गये. यहां राहुल पुत्रकों महाकृलनामासूत्र रचकर सुनाया. जबकी-राहुल (१०) वर्षका होचूका था, सावध्थीसे चालियाग्राम गये. तेरहमा चौमासा यहां किया. चौमासके बाद फिर सावध्थी गये. सावध्थीके जेतून विहारमें चौदहमा चौमासा किया. पनराहमा चौमासा सावध्थीके पास न्यग्रोधगृहमें किया. शुद्धोदनकी गद्दीपर जड़क और जड़ककी गद्दीपर जो महानामका राजा हुवाथा उसकों यहां उपदेश किया. न्यग्रोधगृहमें चलकर सांलहमा चौमासा अलवीग्राममें किया यहां एक राक्षसकों प्रतिबोध दिया. सतराहमा चौमामा राजग्रहीमें किया यहां एक श्रीमतीवेश्याकों प्रतिबोध दिया. राजग्रहीमें सावध्थी-सावध्थीसे अलवीग्राम-अलवीसे चालियाग्राम आनकर अठारमा चौमामा किया. चालियासे राजग्रहो गये. उन्नीसमा चौमामा वेल्वनविहारमें किया. वेल्वनविहारसे मगध देशकी मुसाफरी कियी. रस्तेमें एक हिरन ( जो फसा हुवाथा ) उमाया, उर एक वृक्षके नीचे ध्यानकेलिये बैठे. यहां एक शरूशकों दोक्षा दियी. बिसमा चौमासा सावध्थीमें किया. सावध्थीमें चालियाग्राम गये, वहां वनमें एक चौरकों प्रतिबोध दिया जिमका नाम ऐंगुजीमाल था. इसकेबाद चौमासेकी ठीक ठीक हकीकत नहीं मिलती.

इनदिनोमें देवदत्तके साथ गौतमबुधका तकरार हुआ जोकि -पाचेका बेटा था. रुसकर देवदत्त राजग्रही गया, श्रेणिकके बेटे अजातशत्रु (कौणिक) के दिये हुवे मकानमें ठहरा. थोड़े रौ-जके बाद गौतमबुधभी राजग्रही गये. देवदत्तने क्रियाउध्दार करनेकी आज्ञा मागी परंतु गौतमबुधने आज्ञा न दीयी जिससे दे-वदत्तने नयामत निकाला. बौधपीटकोंमें लिखा है देवदत्तने अ-जातशत्रुकों कहकर श्रेणिककों मरवा माला. क्योंकि इसमें देव-दत्तकों लाभ होनेका संभव बताते है. इसवखत गौतमबुधकों दीसा लिये (३७) वर्ष होचूके थे. देवदत्त नयामत निकालनेकी को-शीशमें था तब निम्नलिखित (४) कायदे गौतमबुधमें स्वीकार कराना चाहता था.

- (१) साधुवोंकों शहर ठोमकर वनमें रहना.
- (२)-गृहस्थके उत्तरे हुवे वस्त्र लेना.
- (३) भेजा हुआ आहार नहीं लेना. आमंत्रण करे उसके घ-रजी नहीं जाना किंतु गोचरीकरके आहार लाना.
- (४)-मांस जह्णण बंध करना.

गौतमबुधने उत्तर दिया कि-इस बातमें मैं नाखुशजी नहीं और खुशजी नहीं. एक सरखे कायदे बाल वृद्ध और ग्लानपर मैं जारी नहीं कर सकता हु. साधुवोंके रहनेकों शहर और वन दोनों ठीक है. कपडोंके विषयमें जैसा मिले वैसैं करना. आहा-रके लिये जहां जैसा योग हो वेसा लेना. मांसकेबारेमें जिसदेश में जैसा मिले वैसा खाना परंतु जोलुपतासैं मांस नहीं खाना. मांसके त्यागनेसैं वा अंगीकार करनेसैं मुक्ति होती बंद नहीं हो

शक्ती. अगर एक सरखे कायदे सजीपर चलाये जाय तो मुक्तिका रस्ताबंद किया उहरे. मैरा अजिप्राय यह हैकि-सजीकों मुक्ति प्राप्त हो. देवदत्तने नयामत निकाला अजातशत्रुने उसकों सहारा दिया परंतु देवदत्त बहोत काल जिया नहो जिससें उसका मत अधिक न चला. अजातशत्रुने सावथीपर अपना कबजा किया और कपिलवस्तुका नाश किया यह सब वर्नन बोध मतके महा परिनिब्बाण सूत्रमें है.

एकीसमें चौमासेसें लगाकर तेयालीसमें चौमासेतक गौतम-बुधकी दिनचर्या यथार्थ नही मिलती. चौआलीसमा चौमासा सावथीके पास जेतवनविहारमें किया. जेतवनविहारसें बलचर टेकरी-बलचरटेकरीसें पाटलीपुत्र-पाटलीपुत्रसें अंबपाली-और अंबपालीसें बेलूग्राम आनकर पैतालिसमा चौमासा किया. यहां गौतमबुध बिमार हुवे.

सारी जीदगी गौतमबुध ग्रामानुग्राम विहार करते रहे. विहार-अवध-ममालिक-मगरबी-और शीमालीके जिलोंमें विशेष उपदेश दिया. (३०) वर्ष दुनियादारीमें रहे. (५)-(६) वर्ष तप किया. (४४) वर्षसेकुच्छ अधिक दुनियाकों अपने महजबकी शिक्षा दीयी, [गौतमबुधकी धर्मशिक्षा निम्न लिखित थी, ]

जो शरूश धर्म और शिक्षापर पाबंद है हिम्मत नही हारता वही जीदगीके समुझको पारकरके दुखसें छूटकारा पावेगा. यह दुनिया जंजीरोंसें मखन जकमी है. सब चीजें क्षणविनाशी है मेरी शिक्षा क्षणविनाशी नही. मेरी शिक्षापर ध्यान दो जो शरूश जैसा बोताहे वैसाफल पाता है. शरीरकों तकलीफ दिये

बिदू न मुक्ति नही. जो मनुष मुकृत्योसें अपने आत्माकों वश करेगा उसकी मुक्ति है. जिसका संयोग है उसका वियोग है. खुद आत्माजी सएविनाशी है. एकीला ज्ञान ही कृणसंततीके साथ वासनारूप सहचारोहै. स्कंध [तत्व] पाचहै. विज्ञान-वेदना-संज्ञा-संस्कार-और रूप, जो बुधधर्मके आचार क्रियामें लीन रहेगा उसका ज्ञान निर्मल होगा. इसीका नाम मुक्ति है श्रमण माहण जो जो उपदेश देते हैं इस पांचस्कंधसें अलग नहीं. जावना पांचहै. १. मैत्री-२, मुदित-३, करुणा-४, अशुज, और ५, उत्पेक्षा, आयतन [१२] है, १, स्पर्शन-२, रसन-३, घ्राण-४, चक्षु-५. श्रौत्र-६, स्पर्श-७, रस-८, गंध-९, रूप-१०, शब्द ११, मनः-और १२, धर्मायतन.-इनकेशिष्य जाति जरा मरण जब उपादान तृप्णा यह आयतन नाम रूप विज्ञान संस्कार और अविद्या यह जी आयतन है यह सर्ववस्तु क्षणिक है. प्रत्यक्ष और अनुमान यह [२] प्रमाण है.-धर्म-बुध-और संघ-ये [३] रत्न है. प्रथम समय हेतु [कारण] और दूसरे समय उसका फल होता है. इत्यादि धर्मशिक्षा देतेथे. अपने शिष्योंको ताकीद करी कि-सबकों उपदेश देकर अपने महजबमें लाओ. इति धर्मशिक्षा:-

२५-महावीरके उपदेशकों निम्न लिखित राजोंने सुना और माना. मगधदेशका मालक श्रेणिक ( बिम्बिसार )-अजातशत्रु [कौणिक]-विशालीका मालक चेटक-काशीकोशलदेशके. मल्लिजातिके [ए] और लठीयजातिके [ए] कुल अठारह राजे-आमलकल्पाका राजा श्वेत-वीतजयपत्तनका राजा उदयन-कौशांबीका

वत्स उदयन-कृत्रियकुंभका राजा नंदीवर्धन-उज्जयिनीका चंम-  
मद्योत-पृष्ठचंपाके राजे शाह और महाशाल-पोतनपुरका प्रसेनचंड  
-इस्तिशीर्षका अदीनशत्रु-विजयपुरका वासवदत्त-महापुरका बल  
और साकेतपुरका मित्रनंदी बगेरा. श्रेणिकके बेटे अजयकुमार  
और मेघकुमारने महावीरके पास दीक्षा लीथी. अजयकुमार  
नंदारानीका बेटा था मेघकुमार धारणीका और अजातशत्रु [को-  
णिक] चेलणा रानीका बेटा था. दोनों रानी बनी थी. और  
महावीरके उपदेशकों स्वीकार रखती थी. अजातशत्रु श्रेणिकके  
पूर्वजन्मका वैरी था. अपने पिताकों कैद रखा और पिठली अ-  
वस्थामें श्रेणिक कैदरीमें परलोक हुवे. वैरानुबंधकर्म जब खतम  
हुवा अजातशत्रुने बहोत श्वात्ताप किया. कितनेकरोज पिताके  
नाम ही नाम लेते गुजारे. अलोरमें राजग्रही ठोमकर चंपामें  
रहना शुरू किया, आणंद कामदेव बेपेरा (१०) श्रावक महावीरके  
अवल नंबरके श्रमणोपासक थे. उपासक दशांगसूत्रमें इनका  
बयान है.

१६-गौतमबुके उपदेशसें श्रेणिक [विम्भसार]-अजातशत्रु-  
शुद्धोदन-जडक-और महा बगेरा राजे बुधमतके पाबंद हुवे.  
श्रेणिक और अजातशत्रुकों बौध और जैन दोनोंमें पाबंद लिखा.  
देखकर अनुमान होताहै किये दोनों पहले स्यात् बौध होंगे.  
पिछेसें जैन हुवे. क्योंकि-श्रेणिकचरितमे लिखाहैकि-महावीरकी  
धर्मदेशना सुनकर श्रेणिक जैनमतानुयायी हुवा. यतः

[ अनुष्टुप् वृत्तम्. ]

श्रुत्वा तां धर्मदेशनां जत्तुः-सम्यक्तं श्रेणिकोश्रयत्  
श्रावकधर्मं त्वज्जय कुमाराद्याः प्रपेदिरे [३७५].

जैनागममे यहजो लेख है कि—चिल्लणारानी और भेषिकका धर्मविषयक वादानुवाद होता था, सबबकि चिल्लणा प्रथम हीसँ जैनधर्मावलंबिनी थी.

१७-महावीरके शिष्योंमें इंद्रभूति ( गौतम ) आदि. (११) जो गणधर कहाते थे बड़े माने जाते थे.

१८-गौतमबुधके शिष्योंमें मौद्गलायन शौरीपुत्र और आणंद बड़े थे.

१९-महावीरने ठेकरुका चोमासा पावापुरीमें किया. आपने ज्ञानसँ जाना कि. मेरा आयुष्य कार्तिकवदी ०)) के रौज पिठलीरात जब चंद्रमा स्वातिनक्षत्रमें आयगा पूर्ण होगा. जब वह समय आया तब पावापुरीमें काशीकोशल देशके मल्लीय और लच्छीयजातेके (१८) राजे-साधु साध्वी श्रावक श्राविका आदि चतुर्विधसंघ इकठा हुवा. महावीरने उन्हींकों धर्मोपदेश दिया. ज्ञानावरण आदि (८) कर्मोंका स्वरूप आत्माका, स्वरूप संसारका और मुक्तिका स्वरूप दो दिनतक वर्नन किया.

पुरुष वा स्त्री कोइ हो जो श्रद्धापूर्वक ज्ञानद्वारा निस्पृह होकर तपकरेगा उसकी मुक्ति है. [३] वर्ष [८॥] महिने बाद पांचमा आरा लगेगा. उसवस्तुसँ दिनपर दिन उत्तम वस्तुकी न्युनता होती जायगी. बैसातप नही बन सकेगा जिससँ मुक्ति हो. जारतवर्षके सिवाय महाविदेह आदि अन्य जो क्षेत्रहै वहाँके मनुष्योंकी बैसाताप करनेकी शक्ति बनी रहेगी जिससँ उनकी मुक्ति होनी शरु रहेगी. चाहे राजा या रंक हो जो पापसँ बचेगा अस्तीगति पायगा. इस संसारमें अनंते जीव है, जो जीव मनुष्यम-



तिमें आनकरके जी अपने आत्माको नहीं चीनता वह बहोत दिलगिरि उठायगा. मनुष्यजन्म पाना बहोत पुन्यके उदय बिडन नहीं बनता. जबतक रागद्वेष [जो कर्मोंका बीज है] न छोडा जाय तबकक मुक्ति नहीं होती. महावीरने कोइ शिष्यपर मोहवत नहीं किया. न किसीवातकी ताकीद या जलामण किया. न अपना मत चलानेकों किसीसे प्रेरणा किया. सबहैनिरोगीकों राग कहां ! जब वे अपने शरीरपरजी राग नहीं करते थे तो अन्म बीजकी बात ही क्या ? निदान ! निस्पृहतासे उपदेश देते समाधिमें पदमासन बैठे निर्वाण हुवे. जीवन मरणमें रहित हुवे. अरूपी आत्मा स्वर्गसे अगामी लोकांतमें जायकर स्वस्वरूपमें स्थित हुवा जैसे तुंबीपर बहोतसें मीटीकेलेप लगाकर जलमें गरदो और लेंप दूर होनेपर वह जलपर आजाती हैं मुक्तात्माजी तत्रत् कर्म लेंपसेरहित होनेपर लाकके उपर अजातेहै. महावीरके शरीरका अग्निसंस्कार किये बाद उनकी माढे पूजनेकेलिये इंद्र स्वर्गमें लेगये. मनुष्य उनके शरीरकी जस्म लेगये. महावीरके निर्वाण होनेपर कितनेक मुनियोने सब व्यवहार छोडकर बिल्कुल ध्यान समाधि लगादियी. महावीर जब निर्वाण हुवे तब उनके शरीरकी इंद्रआदि देवांने और मनुष्योने आरात्रिका ( आरती ) किया. दीपकका उद्योत किया इस सबबमें दीपमाला (दीवाली) पर्व हिंडुस्तानमें शुरुहुवा. पहले नहीं था. कार्तिकशुक्र [१] के रौज इंद्रभूति (गौतम) गणधरकों केवल ज्ञान पैदा हुवा.

३०-विमार हुवे पिठें गौतमबुधने बेलूग्राममें अपने शिष्यों-कों इकठे किये और बोध दिया कि-सजीकों सुख हो इसप्रकार

तुम वर्त्तना. मैरा आयुष्य अब (३) महिना बाकी रहा है अतः  
 करणका स्वच्छ रखना और ज्ञानकी रक्षा करनी यही सार है.  
 इसप्रकार जो वर्त्तेगा सुखी रहेगा. इत्यादि बोधकर पावापुरी  
 गये. वहाँ एक \*सोनीने उनकी परोणागत कियी और डुकरका  
 मांस और चावलोंका जौजन जिमाया. (३) प्रहर रहकर पावा-  
 पुरीसे बनारस होते कुसीनार जानेको रवाना हुवे. कुसीनार ब-  
 नारससे (१००) मील और कपिल वस्तुसे (८०) मील दूर था.  
 कुसीनार पहुँचनेपर उनको विमारी बढ गयी. तृषाने अधिक  
 जोर दिया तब आणंद शिष्यकेपास पानी मंगाकर पिया और  
 कहा कि-चंदसोनीसे जब तेरा मिलना हो तब कहना कि-हे चंद !  
 मेरी सेवाका लाज तुजे अगले जन्ममें मिलेगा. काल होते पहले  
 गौतमबुधने आणंद शिष्योंको कितनाक बोध दिया. जब आणंद  
 रुदन करने लगा गौतमबुधने उसे पास बुलाकर दिलासा दिया.  
 और कहा कि-डुनिया झुठी है तुजे ज्ञी निर्वाण मिलेगा. जिसका  
 संयोग है उसका वियोग है इस लिये हिम्मत रख इतना कह  
 कर दूसरे शिष्योंतर्फ दृष्टि दीयी. आणंदकी बाबतमें कितनाक  
 कहना था सो कहा. इस वख्त कृष्णनगरका मुज्जविघ्नान् गौ-  
 तमबुधसे प्रश्न पूछने आया. आणंदने उसको जीतर आनेकी  
 मना कियी. गौतमबुधने कहा आनेदो. मुज्ज जीतर आया और  
 प्रश्नकिया कि-(६) ब्राह्मण जो कुछ कहते हैं सच है ? वा फू-  
 ठ ? गौतमबुधने कहा ऐसी चर्चाका इस समय अवसर नहीं.  
 मैं तुजको अपनामत कहता हू. सुन ले !-जिसमें पवित्रताके [८]

रस्ते नहीं है यह मत ठीक जानना. इस वचनकों सुनकर मुजंझ बोधकों प्राप्त हुआ. गौतमबुधने अपने शिष्योंको उपदेश दिया कि-जो मेरे कायदे है खुद में ही हूँ ऐसा जानना, जिस बातका शंसय हो फिर पूछ लो. पांच स्कंध मैंने तुमको कहे हैं वही ठीक है. श्रमण माहण बगेरा जो कुछ तुमको बोध करेगें इन्ही स्कंधोंके जीतर आजायगा. तुम अपने अछे रस्तेको ठोमना नहीं. ऐसे कहते कहते बेहोश हुवे और काल किया.

४१-महावीरके पहले और उनके राबरे निम्नलिखितदेश नगरमें जैनधर्म चलता था. १-मगधदेश राजग्रहनगर, २-अंगदेश चंपानगरी, ३-वंगदेश ताम्र लिप्तीनगरी, ४-कालिंगदेश कांचनपुरनगर, ५-कोशलदेश साकेतपुर. (अयोध्या)-६-कुरुदेश गजपुर (हस्तिनापुर)-७-कुशावर्तदेश शौरीपुर, ८-पांचालदेश कांपिल्यपुर, ९-जंगलदेश अहिच्छा नगरी, १०-सौराष्ट्रदेश द्वारिका नगरी, ११-विदेहदेश मिथिला, १२-वत्सदेश कौशांबी, १३-शांमिल्यदेश नंदीपुर, १४-मलयदेश जटिलपुर, १५-मत्स्यदेश बैराटनगर, १६-वरुणदेश अज्जापुरी, १७-दशार्णदेश मृत्तिकावती नगरी, १८-चेदिदेश शौक्तिकावती नगरी, १९-सिंधुसौवीरदेश वीतजयपत्तन नगर, २०-सुरसेनदेश मथुरा नगरी, २१-कुण्डलदेश सावध्दीनगरी, २२-लाटदेश कोटीवर्षनगर २३-अवंतिदेश उज्जयिनी नगरी, २४-महाराष्ट्र, २५-कॉकण, २६-मरुस्थल, और २७-मेदपाट बगेरा देशोंमें-बाद महावीरकेपिठे नेपालमें जैनधर्म चलता था. जैनाचार्य जडवाहुस्वामी नेपालमें बहोतदफे फिरे जो-कि-महावीरके पिठे (१४८) वर्षबादहुवेहै, महावीर चौदसमे ती-

र्थकर ये इनके पहले रिषजदेव आदि तेइस तार्थकर होचूके है. रिषजदेवके बख्त बहलीदेशमें तरुतशीलानगरी जिसकों वर्त्तमानमें काबलगङ्गानी कहते है जैनधर्म चलता था, मगधाधिप श्रेणिकके मरनेबाद गद्दीनसीन कौणिक हुवा. कौणिकका पुत्र उदायी, इसकी राजधानी पटणा थी ये तीनों जैन थे. उदायीके पट्टपर नवनंद हुवे. इनकी राजधानीजो पटणा रहा. ये जैनी नहीं थे. नवमें नंदके पट्टपर चंडगुप्त-मंत्री चाणाक्य ये दोनों जैन थे. चंडगुप्तका बेटा बिंडुमार-इसकी राजधानी उज्जयिनी हुयी. बिंडुमार जैन था. इसका बेटा अशोकश्री हुवा इसने बौधमत स्वीकार किया. इसके पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमोताने बौधमतका योग धारा. अशोकश्रीने बौधमतकों फेलानेमें अधिक जोर दिया. दिल्ली और प्रयागके शिलास्थंजोमें जो पाली इफोंके लेख देखते है इसीके लिखवाये हुवे है. अशोकश्रीका बेटा कुणाल और कुणालका बेटा संभति हुवा आर्यमुहस्ती जैनाचार्यके उपदेशसे इसने जैनमत स्वीकार किया छात्रिम-अंध-कर्णाटक-गङ्गानी-और खु-रासाण वगेरा देशमें जहां जहां अपना राज्य था जैनमत बढ़ाया. बहोत जैनमंदिर बनवाये जो कि-शत्रुंजय गिरनार आदि तिर्थोंमें अब मौजूद है. दानशाला औषधालय वगेरा धर्मस्थान बनवाये. महावीरके पीढे तीसरे सेंकमेंमें यह हुवा.

महावीरके निर्वाणपीछे (११) वर्षबाद इंडभूति (गौतम) गणधर (१०) वर्ष बाद सुधर्माणधर और (६४) वर्ष बाद जंबू-स्वामी निर्वाण हुवे. जंबूस्वामीके पीढे केवलज्ञान होना व्यवस्थित हुवा. प्रज्ञवाचार्य-शय्यंजय यशोज्ञ-संभूतिविजय-जडवाहु-और

स्वच्छन्द-ये (६) श्रुतकेवली याने चौदहपूर्वके ज्ञानो हुवे. वज्र, स्वामीतक दशपूर्वका ज्ञान रहा. आर्यरक्षियसूरि सादे नव पूर्व-पाठो थे. इन्होंने मनुष्योंकी प्रज्ञाहानी होती देखकर जैनसूत्रके (४) \*अनुयोग अलग अलग गुंथे. महावीरके पीठे (९८०) वर्ष बाद देवर्द्धिगणिकमाश्रमण आचार्यने +वल्लजोनगरीमें जैनपुस्तक लिखे. इसके पहले मुनि कंठाग्र ज्ञान रखतेथे. देवर्द्धिगणिकमा-श्रमण एकपूर्वधारी थे. चौदहपूर्वज्ञानके आगे एकपूर्व इतना स-मझीये जैसे समुद्रके आगे बिंदु.

३३-गौतमबुध जहां जहां विचरते रहे उनके वरुतमे वहां पर बौधधर्म चलता था. महावनमूत्रमें लिखाहैकि-गौतमबुधके निर्वाण हुवे पीठे (३३०) वर्षबाद तीनपीठका लिखी गयी. संवत् (१६१) में काश्मिरका मेघवाहनराजा बौधमत पालता था. चीन-मेंजो इसी अरसेमें इसका फेलाव हुवा. संवत् (४५७) में चीनके राजेजो बौधमत मानने लगे. कोरियाटापुमें संवत् (४३९) में बौधमत मानना शुरु हुवा. संवत् (४८७) में बौधाचार्य बुधघोषने धम्मपादसूत्रकी टीका शीलोन (लंका) में बनायी. संवत् (५०७) में बर्मादेशमें-संवत् (६०९) में जापानमें और संवत् (६९५) में स्यामदेशमें बौधमत चलना शुरु हुवा. जापानमें पहले यह मत चलता था. कि-स्वजावकी शक्तिसे सब बनाव बनता है संवत्

\* ग्याह अंग चरण करणानुयोग-उत्तराध्ययन आदि धर्मकयानुयोग-सू-  
र्यप्रज्ञति चंद्रप्रज्ञप्तिआदि गाणितानुयोग-और संपूण दृष्टिवाद इव्यानुयोग है. महा-  
कल्प-निशाय मङ्गलनिशायआदि (६) छेदसूत्र चरण करण के अर्थ ही से संबंध रखत  
हैं इसलिये चरणकरणानुयोग है.

✕ किञ्च कारिकायाः सौराष्ट्रमें हैं.

(१३५७) में काबुल और काश्मिरके पास लद्दाकमेंसे मुसलमानोंने बौधमत निकाल दिया जोकि-थोमे वस्तु पहचाने थुरु हुवा था. जापानमें संवत् (१३१९) में एक सीनराम नामके बौधमुनिने नमसंपथ निकाला और यह कायदा जारी कियाकि-मुनियोंको भी कन्याविवाहनी चाहिये. आजनक जापानमें वही रीति चलती है. जावा टापुमें बौधमत कबसे चला इसका पता नहीं मिलता परंतु यह निश्चय होचुका है कि संवत् (१३५७) में यहांका राजा बौध था. संवत् (४५७) में चीना मुसाफर फाहियान हिंडुस्थानमें आया उसने अपनी किताबमें लिखा है जब मैं मगधदेशमें गया मुझे बौधमतके साधु मिले. ब्राह्मणोंके और हिंदुओंके देरास्तर (मंदिर) बहोत देखे. संवत् (४६७) में फाहियान शीलोन गया. शिलोनके बर्ननमें लिखता है यहांके लोग बतलाते है कि-बौ-तमबुध यहां आये थे. हवांक्तसांग चीना मुसाफर संवत् (५०५) में हिंडुस्थान आया. उसने लिखा है गंगा जमनाके चौफेर मुल-कमें ब्राह्मण और बौध धर्म ज्यादा था. राजग्रहीके नालंद पा-केमें कितनेक विद्वानोंसे मेरो बातें हुयी. काश्मिरमें (५००) सठ और अंदाज (५०००) हजार बौधसाधु रहते देखें. कंदहारमें बौधमत अधिक था. काश्मिरकों जब मुसलमानोंने जीत लिया था हिंडुस्थानमें बौधमत बहोतकम होगयाथा.

३३-जैन आगम द्वादशांगवानोंके कितनेक पुस्तकोके नाम.

१ आचारसंग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ सप्तकाव्यांग,  
५ जगवती, ६ ज्ञाताधर्मकया, ७ उपासकदशांग, ८ अंतकृत, ९  
अनुचरोपपातिका, १० प्रभव्याकरण, ११ विपाक, और १२

दृष्टिवाद. इन बारह अंग सूत्रोंके उपांग नोचे मुजब. १ उपपा-  
तिक, २ राजप्रश्नीय, ३ जीवाभिगम, ४ प्रज्ञापना, ५ जंबूद्वीप-  
प्रज्ञप्ति, ६ चंद्रप्रज्ञप्ति, ७ सूर्यप्रज्ञप्ति, ८ \*निरयावली, ९ कल्पा  
वतंसिका, १० पुष्पिका, ११ पुष्पचूलिका, और १२ बन्धि-  
दशा. (१०) प्रकीर्णकसूत्रके नाम, १ चतुःशरण, २ आयुःप्रत्या-  
ख्यान, ३ ज्ञक्त परिज्ञा, ४ महाप्रत्याख्यान, ५ तंदुलवैतालिक-  
क, ६ चंद्रवेध्यक, ७ गणितविद्या, ८ मरणममाधि, ९ संस्ता  
रकप्रकीर्णक, कितनेक देवेंद्रस्नवज्जी गिनते है, १० गच्चाचार,  
(६) जेदसूत्रके नाम, १ निशीथ, २ वृहत्कल्प, ३ व्यवहार, ४  
पंचकल्प, ५ दशाश्रुतस्कंध, और ६ महानिशीथ.-(४) मूलसूत्रके  
नाम, १ आवश्यक, २ दशवैकान्तिक, ३ पिमनिर्युक्ति, कित-  
नेक औषधनिर्युक्तिज्जी गिनते है. और ४-उत्तराध्ययन.

चूलकासूत्र [ २ ]-१-नंदीसूत्र, २-और अनुयोगघार.  
नंदीसूत्रमें [ ८४ ] आगम और ( १४००० ) हजार प्रकी-  
र्णक सूत्रके नाम है जिनमेंसे कितनेक मौजूद है कितनेक  
व्यवच्छिन्न हो गये. महावीरसे लेकर आजतक जितने पूर्वाचार्य  
हुवे उन्होने जितने द्वादशांगवानीके आधारसे शास्त्र रचे उनमे  
से कितने व्यवच्छिन्न होगये ? इसका निर्णय होना मुसीबत है.  
(१४०००) हजार हस्त लिखित जैन पुस्तक मोक्षतर बुद्धर और  
पीटरसम वगेरा हिंडस्थानसे मॉल देकर ले गये जो अब जर्म-  
नीदेशमें † मौजूद है. महावीरने केवलज्ञानके बलसे अर्थरूपवानी

\* कल्पिका सूत्रभी गिनते है

† वसुदेवहिंद (प्रथमानुयोग)-अंगविद्या-द्वीपसागर प्रज्ञप्ति-सिद्धप्राप्त-  
व्योतिष्करदक-भार अष्टांग निमित्तभादि.

कही और उनके ग्यारह गणधरोने जो सूत्ररूप गूथन किसी छ-  
नमेसे सुधर्मागणधरकी गूथी हुयी बानीका सब फेलाव है [ ९ ]  
गणधर महावीरके रोबरु निर्वाण हुवे, इन्द्रभूति ( गौतम ) और  
सुधर्मा ये दो गणधर पिछे निर्वाण हुवे. निदान ! महावीरकी  
गहोनसीन सुधर्मा गणधर थे महावीर चौइसमें तीर्थकर ये इन-  
के पहले रिषजदेव, अजोतनाथ, संजवनाथ, अजिनंदन, सुमति-  
नाथ. पद्मप्रज्ज. सुपार्श्व, चंद्रप्रज्ज, सुविधि, शीतल, श्रेयांस बा-  
सुपूज्य, विमल, अन्नंत, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुथुनाथ, अरनाथ,  
मल्लिनाथ, मुनिमुव्रत. नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, -ये ( ३३ )  
तीर्थकर होचुके है. सब तीर्थकर अपने केवलज्ञानसें छनियाका  
और मुक्तिका जैसा स्वरूप जानते है कथन करते है. किसीके  
कथनमें फर्क नही आता सबब कि सब पूर्णज्ञानी होते है. नि-  
दान ! महावीरने नयामत नही चलाया किंतु तेइस तीर्थकरोसें  
चलते आयेको संहारा दिया.

३४-बौध आगम पीठिकामूत्रके कितनेक पुस्तकोके नाम.  
१-विनयपीठिकामूत्र, २-महावग्गमूत्र, ३-कुलवग्गमूत्र, ४-परिवा-  
रपाठमूत्र. ५-दिग्गनिकायमूत्र, ६-परिनिब्बाणमूत्र, ७-मध्यम-  
निकायमूत्र, ८-मूत्रनिपात, ९-विमानवध्युमूत्र, १०-पेयवध्यु,  
११-थिरगाथा, १२-जातक, (इसमें ५५० कथा है)-१३-निदी  
शपीठिका. [शौरीपुत्रकृत] १४-पाटीसंविदा, १५-अपादान,  
१६-बुद्धव्यास, १७-क्रियापीठिका, १८-धर्मसंग्रहिणी, १९-क-  
थावध्यु, २०-पठाणमूत्र, [इसमें जीवका स्वरूप वर्नन है. -३१



शृगालवाद, [इसमें गौतमबुधके साथ शृगाल पुरुषका सवाल जबाब है.] वगेरा.

लंमनशहर निवासी डेविडजबारीष्टर कहता है सजी बौधमत के पुस्तकोमें (१७५२८००) शब्द है.

३५-जैनमें सम्मतितर्क, प्रमाण मीमांसा, नयचक्र, प्रमाणोक्ति समुच्चय, प्रमेयप्रमाचूर्ण, तत्त्वार्थ, अनेकांतजयपताका, स्याद्वादरत्नाकरावतारिका, स्याद्वादमंजरी, स्याद्वादकलिका, और धर्मसंग्रहिणी. वगेरा तर्क ग्रंथ है. बौधमें तर्क ज्ञाषा, हेतुबिंड, न्यायबिंड, अर्बट, कर्मलशैत, न्यायप्रवेश, और ज्ञानपार, वगेरा तर्क ग्रंथ है. जैनमुनि विशेषकरके श्रमण वा निर्ग्रंथ लिखे जाते हैं बौधमुनि श्रमण वा बोधिसत्व लिखे जाते हैं, जैनमुनि श्वेत्तवस्त्र और बौधमुनि रक्तवस्त्र पहनेते हैं.

बौधमें (७) तीर्थंकर मानते हैं उनके नाम.

विपश्यी, शिसी, विश्वभू, ककुब्ध, कांचन, काश्यप, और सातमा शाक्यासिंह. जैनमें इंद्रभूति, (गौतम) सुधर्मा, जंबू, भद्र बाहु स्थूलजघ्न, वज्रर्षि, सिद्धसेनदिवाकर, देवर्द्धिगणिक्कुमाश्रमण और हरिजघ्नसूरि वगेरा मुनियोंको गुरु मानते हैं. बौधमें गौतमबुध, सर्वार्थसिद्ध, मौद्गल्यायन, शौरीपुत्र देवदत्त और आर्षद वगेराको गुरु मानते हैं. जैनमें दिगंबर और टुंडिया जैन कहलाते हैं परंतु जैनकेकायदेसे विपरीत चलाते हैं. जैसे जैनमें मुनियोंको श्वेतवस्त्र पहनना लिखा है दिगंबर कहते हैं नहीं ! मुनियोंको नग्नही रहना कहा है. स्त्रीको अगर पंचमहाव्रतपाले तो छसीजन्ममें मोक्ष हो ऐसा जैनागममें कहा है दिगंबर कहते

है चाहे स्त्री कितना ज़ी ब्रत पाले तोभी उसजन्ममें उसकी मोक्ष नहीं हो. निदान ! जैनकी असली कोम जो भूतांबर प्रसिद्ध है द्वादशांगवानोके पुस्तक मानते है और उसमें लिखे वमुजब च-  
खते है दिगंबर नहीं चलते.

जैनमें मूर्तिपूजन करना लिखा है दुंदियेलोग कहते है मूर्ति पूजन जैनमें कहां लिखा है ? मूर्तिकों मानना और पथ्यरको मानना एकसरखा है एसा कहकर असलीकोंममेंसे भेद करते है मुँहके उपर दिनरात वस्त्रकीपाटो बांध रखतें है.

बोधमें मुख्यकरके (४) भेद है वैज्ञापिक, सौत्रांतिक, योगाचार, और मध्यम.

(यतः) — (शार्दूल विक्रीणितम्.)

अर्थो ज्ञानसमन्वितो मतिमता वैज्ञापिकेणेष्यते,

प्रत्यक्षो नही बाह्यवस्तुविसरः सौत्रांतिकैरादृतः;

योगाचारमतानुगै रजिमता साकारबुद्धिः परा,

मन्यते वत मध्यमाः कृतधियः स्वस्थां परां संविदं. १

निदान ! जैन और बौध दोनों निराले है. बौधके महाव-  
ग सूत्रमें लिखा है जब गौतमबुध विशाली गये थे तब वहां एक  
निगंथज्ञातपुत्रके उपासकको अपना मतमें किया, बाने बौध  
मतमें लाये जोकि मल्लीय और लल्लीय जातिके अठारह राजा-  
उकें वंशमें था. इससे कहसकते है कि गौतम बुधके समय वि-  
शालीके गिर्द जैनमत चलता था. बौध पीठिकामें लिखा है नि-  
गंथनाथपुत्र और अग्गीवेशायगोतका सुधर्मा अपने पक्षे दुश्मन है.  
इससे कह सकते है कि बौधकों जैनका कुछ जय रहता था.

फिर लिखा है निगंथनाथपुत्रने पावापुरीमें काल किया. गांशा-  
ला [मंसलीपुत्र) अजयकुमार और अजातशत्रु बगेराके नामभी  
बौधपुस्तकोंमें बहोत जगह लिखा है. किसो जगह यह नही लि-  
खा कि निगंथनाथपुत्र आदि नये हुवे. इससे पाया जाता है कि  
जैन नवीन नही. बौधोंमें ललितविस्तराग्रंथ बहोत पुराना मानते  
है परंतु इसमें भी जैन छ्वादशांगवानी-के आचारांग सुत्रकृतांग  
आदि पुराने सिद्ध होते है क्यों कि इनमें जो आर्यावंद लिखे  
है [११००] वर्षकी रचनासे पुराने है. चंद्रमङ्गसि सूर्यमङ्गसि जै-  
नागम ग्रीकलोगोके हिंदुस्थानमें आये पहल्लेके है सबबकी-ज्यो-  
तिष् संबंधी जो जो हकीकत इनमें है ग्रीकलोगोके ज्योतिष् शा-  
स्त्रमें नही.

कितनेका यह आशय है कि बौधोंकी पालीभाषा जैनोकी  
प्राकृतजाषासे पुरानी है परंतु सोचनेकी जगह है कि-जैनआगम  
जैसे अब है महावीरके निर्वाणसे [६८०] वर्ष बाद लिखे गये  
उस असेमें बोली जरूर बदली होगी. शिवाय इसके जैनोके (१४)  
पूर्व विवेद हो गये. बाजे आदमी कहते हैं बौधमतकी जड कपि-  
लके सांख्यपर है, परंतु यह गलत है, सांख्य और बौधके त-  
त्वोंमें जमीन आस्मानका फर्क है. हंटर साहबके कहनेपर काय  
म रहे तो जैन बौधकी एक शाखा उहरती है परंतु हकीकतमें  
हंटर साहबकी समझका फर्क है. कोलब्रूक अंग्रेज गौतमबुधको  
महावीरका चेला कहता है और वेबर जर्मन कहता है दोनों  
अलग थे याने महावीरका चेला गौतम अलग और बुधगौतम  
अलग. इसमें वेबरका कहना सच है. क्योंकि-गौतम तीन हुवे.

इंद्रभूति [गौतम] महावीरका चेला, बुधकीर्त्ति गौतमबुध बौध-मतका गुरु, और प्रमाण प्रमेयादि [१६] पदार्थ प्रतिपादक गौ-तम नैयायिक. ये तीनों एक दूसरेसें कुछ संबंध नहीं रखते. बौधपोठिकाओंमें निर्ग्रंथोंको बौधोके वादी लिखे है, इन बातों-सें कह सकते हैं जैन बौध एक नहीं.

३६-जैनमत बहुधा हिंडुस्थानमें ही है, कुछ (३०) लाख संख्यासें अधिक नहीं. जिममें (३ लाख दिगंबर और (१) लाख के अंदाज दुंढिये है. जैनमंदिर [३६०००] हजारसें कम न होंगे. बौधमत हिंडुस्थानमें थोमा है एशियाखंडमें वगेरा अन्यसब ज-गह मिलाकर (५०) करोडके अंदाज मनुष्य है. बौधमंदिरोंको बौधाढक बोलते है कता वजामें गोल आकार होते है. बुधकी मूर्तिके शिरपर जटा बढीहुयी और बधीहुयी होतीहै, यज्ञोपवी-तके आकार वस्त्र लिपटा हुवा-लंगोट बंधा हुवा-दाहना हाथ उपदेशरूप उंचा कियेहुवे-पद्मासन बेठी रहती है. और बुधम-तके पदवीधर साधुओंको लामा और साधारण साधुओंको पुंगी जी बोलते है और रक्तावर रखते है तिब्बतदेशमे लामाकी मूर्ति इसी पूव क्त प्रकारकी पूजी जाती है. जैनमुनि-योंके ठहरनेकी जगहको उपाश्रय और बौधमुनियोंके ठहरनेकी जगहको मठ वा आश्रम बोलते है. बौधमें देवमंदिर प्रायःथोमे बनाये जाते है विशेषकरके गुम्बज ढत्रीयां और मठ बनानेका रिवाज ज्यादा है. इतिहासकारोंने गौतमबुधकी लाशके बारेमें लिखा है जब इस्वीसन [४७७] वर्ष पहले गौतमबुध देहांत हुवे उस समय बौधमती राजोंने चाहा कि-उनकी लाशको अपने

अपने देशमें लेजावे. और इस बातकेलिये लम्बनेकों जी तयार हुवे तब गौतमबुधके चेलोने उस लाशकों जलाकर थोमी थोमी हम्मी और राख सबकों बांटदियी. और लम्बनेसें रोका. निदान बौधराजाआोंने उस हम्मी राखकों अपने अपने इलाकेपर जमीनमें गामकर गुम्बज बना दिये. फिर उसके चेलोके मरनेपर उनकी हम्मी राखके उपर जी इसीतरह गुम्बज बने और उनकी पूजा करने लगे. इसी सबब बौधमें देवमंदिर बनानेका रिवाज थोमा रहा. जिलसा मानिकयाला आदि केइ जगह उक्तप्रकारके गुम्बज मौजूद है. बर्मा-सहल-तिब्बत-और चीनके मुल्कमें बौध लोग धातु पत्थर या मीट्टीके गुम्बज बनाकर पूजते हैं. बनारसमें बौधोंकी एक पूज्यजगह है जिसकों वहाँके लोग सारनाथ की धमेख बोलते हैं इसमें उनके कोइ महापुरुषकी लाश बताते हैं. नेपालमें अबजो शिवधर्म चलता है शिव और पार्वतीका नहीं किंतु अवलोकितेश्वर और पैशावरके असंगनामके शरूशका चलाया हुवा बुधशिव नामका धर्म है. एशियाखंडमें बौधमत अशोकके वरुत जारो हुवा, अशोकका इरादा यह ज्यादा रहता था कि-किसीप्रकार बौधमत अधिक फैले. कनिष्कराजा अनुमान इसीसन (४०) में हुवा. अशोकके वरुतसें बौधमत राजधर्म होगया.

३७-जैनमुनिके नियम,-कच्ची जीवकों न मारना. मारा जावे तों प्रायश्चित्त लेना. झूठ नहीं बोलना. चोरी नहीं करना. यहाँ तक कि-मालककी रजा लिये बिदून कोइजी चीज अपने उपयोगमें नहीं छाना. मनः वचन और कायासें स्त्रीसेवन न करना. एक आदमी बिचमें पाये बिदून एकीली स्त्रीसें बात न करना. वन

दोलत न रखना. रात्रीकों कजी आहार या पानी खाना पीना नही. सामना कनारा न दिखाइ देवे एसे समुद्र या नदीके पार होनेको जहांजमें न चढना. सारी जीदगी जिह्वाभांगकर आ जीविका करना. पलंगपर न सौना. रुइदार वस्त्र न उढनें. कोइ वनास्पति जिसमें जमीकंद आदि अजह्द बिल्कुल त्याग और जमीकंद शिवाय कच्ची वनास्पति न खाना. रंधी हुयी खाना. उ-  
श्र जल पीना. दशप्रकार यतिधर्म और समाचारी पालन करना. असवारीपर न चढना सदा पैरोंसें चलकर देशाटन करना. बौ-  
धमुनिके नियम इससें फर्कवाले है. जैसें जैनमुनिकों घर घर गो-  
चरीकरके जिह्वा लेना कहा बौधमुनिकों कोइ शस्त्र मठमें जो-  
जन देजावे तो जो खा लेना. जैनमुनिकों मांस खाना मना है  
बौधमुनिकों मना नही. देवदत्त शिष्यने गौतमबुधसें इसरिवाजकों  
बंद करनेकी याचना कियी थी परंतु कबूल नही हुयी.

३७-जैनगृहस्थके नियम. व्रमजीवकी हिंसा न करना. ब्रूठी  
साक्षी फूठा लेख न करना. चौरी न करना. अपने धनका इ-  
च्छा निरोध याने प्रमाण करना कि मुजे इतने तक रखना. रखे.  
हुवेमेंसें उठा जाग धर्मकृत्यमें व्यय करना. पर स्त्री न जोगेना.  
दश दिशामें जाने आनेका प्रमाण करना. मदिरा मांस आदि  
[३३] अजह्द और (३३) अनंतकाय वस्तु न खाना. रात्रीजो-  
जन न करना. प्रतिदिन सामायिक करना. पर्वतिथिकों पौषध-  
व्रत करना. बिकाल जिनपूजा और यथाशक्ति मुमुनिकों  
दान देना.

३४-बौध कृषिकवादी है प्रथम जिस चूके, ज्ञाना क्षेत्र-

वादी और शुन्यवादी ये [ १ ] शाखा और जी इनमें है. वेदसें तो जैन बौध दोनों बखिलाफ है. जैन लोग महावीरकों ज्ञातपुत्र इसलिये कहते हैं कि कल्पसूत्रमें उनके पिताकों ज्ञातकृत्रीय कहकर लिखा है. बौधके सामन्तफलसुत्रमें निर्ग्रन्थज्ञातपुत्रकों अग्निवैशायन लिखा है यह बौधोंकी भूल विदित होती है. उन्होंने ने स्यात् महावीरकों उनके शिष्य मुधर्मासें मिलाकर एक कर दिया. क्योंकि मुधर्मा अग्निवैशायन गोतके थे. गौतमबुधने अपने शिष्योंकों कहा है कि-श्रमण माहण तुमकों जो कुछ बोधे करेगें मेरे कहे पांचस्कंधके जीतर आजायगा. निदान ! इन बातोंसें सिद्ध है कि जैन बौध जिन जिन हैं एक नहीं. न एक दूसरेकी शाखा.

४०-जैन और बौध दोनोंके शास्त्रोंमें सबूत है महावीर और गौतमबुध बिम्बसार और अजातशत्रुके वख्तमें थे. जैनशास्त्रोंसें नियत है कि महावीरके निर्वाण के बाद (४७०) वर्ष बतीत हुवे तब विक्रम संवत् चला. [ ४७० ] कों [ १ए४ए ] में मिला दो तो महावीरके निर्वाणकों आज (१४११) वर्ष होते हैं.

जैन बौधके बारेमें यहां हमने जो कुछ लिखा दोनोंके शास्त्रोंसें और प्राचीन इतिहासकी कितावांसें देखकर लिखा है. अगर इसमें कोई गलत बात है पाठकवर्ग उसे गलत समझे. सुधारनेकों हमसें सूचना करे. नयी बात जान पड़े जरूर लिखे. संसारमें एकसें एक ज्यादा बहिमान् पड़े हैं. मनुष्यों यह खयाल न रहना चाहिये कि-हमने जो लिखा सो ही मत्त है. इस विषयको अगल अलग करना है तो जिनजिन पारिग्राफ गट

लो, महावीर और गौतमबुधकी दिनचर्या न्यारी बन सकेगी और साथ साथ दोनों मजबूके कायदेजो अलग निकाला आवेंगे.

संवत् (१९४९)-जाछपद वदी (१४) रविवारके रोज पा-  
लिताणोमें मुनिश्रो दानविजयजीका पत्र आया, जिसमें स्थापन  
होनेवाली जैन पाठशालामें आनेकों आमंत्रण लिखा था. जिस-  
का उत्तर अनेक धर्मसंबंधी कार्योंका विघ्न देख जाना न बननेके  
कारण यही लिखना बना था कि-कई विशेष कार्योंके उपस्थित  
होनेसे हम आ नहीं सकते.

आसोज वदी (१३) रविवारके रोज जावनगरमें अम-  
रचंद घेलाजाइका पत्र आया. हममें वालुकाम मुकामपर प्रतिष्ठा  
किस दिन करना ! श्रीमुनिमुव्रतस्वामीकी प्रतिमा-बैठानेवाले-  
का नाम रतनचंद वीरजी है. इत्यादि हकीकत थी. इसपत्रके  
आनेपर ज्योतिषद्वारा विचार किया तो इस वर्षमें लग्नशुद्धिका  
अज्ञाव मिला. हमलिये यही लिखदिया गया कि-इसवर्षमें  
उत्तम लग्न शुद्धिका अज्ञाव है.

संवत् (१९४९) आसोज सुदी (७) बुधवारकी टपालमें मुनि  
श्री वीरविजयजीका पत्र मुकाम अमृतसर पंजाबमें आया. उसमें  
लिखा था कि सिद्धमहाराजकों रूपारूपी माननेमें आता है. क-  
हनेमें जी रूपारूपी आते है. सो किस अपेक्षा अरूपी और कि  
स अपेक्षा रूपी समजना, ? इसका यह उत्तर दिया कि-पौद्-  
गलौकरूपका अज्ञाव होनेमें सिद्ध अरूपी और ज्ञानीयोके ज्ञा-  
नमें वे असंख्यात प्रदेशात्मक आत्मद्रव्य जैसे है दिखलाइ देते  
है इस अपेक्षा रूपी समजना निदान ! अपौद्गलौक रूप  
सिद्धमें है.



इनदिनोमें गुजरात और मारवातमें [१]मुनियोंने पत्रद्वारा सूचन किया हम आपकेपास रहकर विद्याभ्यास करना चाहते है. इनपत्रोंका उत्तर हमने उनकी मरजीके माफिक इसलिये नही दिया कि-इस पंचमकालमें मनुष्योंके योग्यायोग्यका पता नही लगता. समय बड़ाविचित्र है. मुनासिब नही है कि-इतनी दूरसे किसी साधुकों बोलाकर पास रखाजावे. अलबते ! जब हम विहार करते हुवे गुजरातकी तरफ विचरेगें तब जो कुछ विद्याभ्यास कियो है उसकों नवीन साधुओंके पढाने और श्रावक आदि शुद्धकर्मीओके उपदेशमें ही लगावेगें यही मुनियोंका धर्म है. किसी मुनिको दूरदेशसे बोलाकर हम व्यर्थ डुबी करना नही चाहते, जैसे कि-पंजाबमें बहुधा साधु गुप्तपने डुबी दृष्ट पढते है.

चौमासा पुरा हुवा कार्तिक पौर्णमासी शुक्रके रौज तिसरे पहर लश्करसे विहार कर मोरार ठावणी गये. व्याख्यानमे ढालसागर जिममें हरिवंश पांम्व कौरवोका वर्नन है ) वाचना शुरू किया. मार्गशेष वदी (२) रविवारके रौज मिष्टी हरनारायणजी हमारेपास आये और ज्योतिषसंबंधी कितनेक सवाल पूछे. जिनका उत्तर यथाअवसर ग्रंथानुसार दिया गया. एकमास कल्प ठहरे शेठ-राजमलजीके छोटे भ्राता मगनमलजीने दुंदिया पंथ ओरुकर सम्यक्तत्त्वके संवेग आम्नायका वासक्षेप लिया. विश स्थानककी पूजनवगेरा उज्ज्व हुवा. मोरार ठावणीसे फिर लश्कर आये.

संवत् (१९५०) चैत्रमुदी प्रतिपदाके रौज नवीनसंवत्के प्रवेशमें एक नवीन समाचार निम्नलिखित प्राप्त हुवा. ज्ञावार्थ-एक

दिगंबर महाशय ! निजपत्रद्वारा निर्पेक्षज्ञावसें लिखते है कि-दि-  
ल्लीके दोचार जैनीलोकोने अंबलीके महोलेमें एक नवीन दिगं-  
बरमंदिर बनाया है, और उसको रथयात्राका महोत्सव चैत्रकृष्णा  
(४) चंडवारका नियतकरके देशांतरमें चीठो जेजो गयी. और  
दिल्लीकी सर्वबरादरी इसमें सामन्न थी. एकमास प्रथमसें जेमंगपुरे  
स्थानमें (जो दिल्लीमें दखन दिशामें दोकोशके फाशलेपर बसता  
है राज्यजयपुरके आधीन है ) जंमारोपणका मुहूर्त किया. सो  
जंमारोपणके समय पृथ्वीमेंमें दबीहुयी एक जैनप्रतिमा निकसी.  
जिसको देखकर प्रथमतो हमलोकोकों बडा हर्ष हुवा परंतु विशेष  
देखजाल करनेसें जबउक्त प्रतिमा श्वेतांबरआम्नायकी ज्ञात हुयी  
उससमय मूर्त्तानंदीयोने पक्षपातरूपी द्वेषकरके फेंक दियी, जिसका  
फल अज्ञा नही हुवा, जावार्थ-जो मेलता होनेवाला था उसमें एसे  
एसे विघ्न हुवे जिनका वर्नन करने शोक उत्पन्न होता है. यद्यपि  
कोशकोइ विद्वान्पुरुषोने मूर्त्तानंदीयोकों बारबार समझाया कि-  
यद्यपि आम्नायजेद् परु गया परंतु प्रतिमातो अपनेही जिनेइ-  
देवकी है. उससें द्वेष करना आपको उचित नही. परंतु पथरकों  
जोक नही लगती. किमीकों कुछ खयाल नही हुवा केवल प्रति-  
माकों उठाकर लेगये. सोजो इस जयमेंकि-कोइ श्वेतांबरी न  
जेजाने पावे. प्रतिमा महामनोइ और अखंड है.

दिल्लीके दिगंबरलोकोने जेमंगपुरेमें जो ( ५००० ) रूपये  
लगाकर सज्जामंरुप बनाया था उसके थंज लोहमयी अधिक-  
पायदार जावार्थ-रैलकी लीकके बनाये थे, और यात्राहोनेसें  
एकदिन पहले पूर्ण कियागया था. जिसकों देखकर अत्यंत आनंद

होता था. परंतु इनके द्वेषका परिचय किसीदिवयोगसे यह हुआ कि-चैत्रकृष्णतृतीया रविवारकी अर्द्धरातकों वृष्टि-आँला-भूकंप-वज्रपात इत्यादि उपद्रवोंने उमसज्जामंरूपकों समूल उठाकर दूर फेंक दिया. लोहेके थंज इसप्रकार टूटने लगे जिनप्रकार काचकी ठमी उपका लगनेसें करक जाती है. और यह उपद्रव मेल्लेकेबजार और मज्जामंरूपमें ही हुआ जहां जगवानकी प्रतिमा बिराजमान करनेकेलिये मरा लगाया था उसमें कोई उपद्रव नहीं हुआ. यह देवकागण नहीं तो और क्या है ?

इमलिखनेसें सारांश यह है कि आजकल संसारमें अविद्या-अंधकारके फैलानेसें द्वेषभावकी वृद्धि होगयी और हमारे दिगंबरज्जाइ जो प्रायः विद्याकरके अनजिज्ञ है उनके द्वेषका तो क्या कहना? जब वे पाषाणमूर्तिसें घेप रखते हैं तो-श्वेतांबरसंघसे द्वेषकरना कौन बमोवात है ? यह तो इनका स्वभाविक धर्म ही होगया. अब इ-विषयके अंतर्गत हमको यह दिखलानेकी आवश्यकता हुयी कि-जैनमें दिगम्मतकी उत्पत्ति कबसें हुयी?-कान-आचार्यके कौनमशिष्यसें इमका प्रचार क्योंकर हुआ?—यद्यपि इ-विषयमें हमारे पास कुछ दिन हुवे मुलतानकरहनेवाले श्रावकोने [१५] प्रश्न जेजे थे जिनमेंकुछ दिगंबर और कुछ दुंदियोंकी तरफ के प्रतीत होतेथे, परंतु इमअवसरपर उनकाजो उत्तर यथार्थ लिखनेमें आयगा. जोकि-इमनिबंधकी पूर्णता होनेपर लिख लाये जायगें.

( श्वेतांबर दिगांबरकी निन्नता. )

महावीरके निर्वाण पिठें (६०९) वर्ष बतीत हुवे बाद शिव

भूतिमुनिसैं दिगंबरमतकी उत्पत्ति हुयी. आर्यकृष्णाचार्यके ये शिष्य थे. संसार अवस्थामें रथवीरपुर नगरके रहनेवाले एक प्रसिद्ध गृहस्थ थे. नाम शिवभूतिसहस्रमल्ल था. इन्होंने उक्त आचार्यकेपास दीक्षा लियी और जिस हेतुसैं इन्होंका प्रयत्न होना हुवा आवश्यकसुत्रकी श्रीहरिजन्मसूरिरचित बृहद्वृत्तिमें इसप्रकार लिखा है. ( तद्यथा. )

[गाथा.]

उवासमएहि नवुत्तरोहिं [६०७]सिद्धिगयस्स विरस्स १,

तो वोडियाएदिठी-रहवीरपुरं समुपन्ना,

रहवीरपुरं नयरं-दीवगमुज्जाण मज्झकन्होय,

सिवभूइस्सुवाहिमिउ-पुत्ता थेराण कहणाय, २

व्याख्या,-रहवीरपुरं नगरं, तच्च दीवगमुज्जाणं, तच्च अज्झकन्होय एवम आयरिया समोसद्धा, तच्चय एगोसाहसमल्लो एवम, तस्स जज्जा, सातस्म मातंचमेति तुज्झ पत्ता दिवसे दिवसे अश्वरत्ते एइ, अहं जग्गामि छुहाइया, अज्जामि ताहे ताए जणति, मा दारं देव्वाहिं, अहं अज्झ जग्गामि, साए सुत्ता, इयरा जग्गइ अश्वरत्ते आगतो, दारं मग्गति, माताए अंबादितो, जच्च एताए वेज्जाए उपाडिताणि दाराणि तच्च वच्च. सो एिगउ. मग्गतेण साहु पडिस्सउ उग्गामितो दिठो. वंदित्ता जणति, पन्वावेहमं, ते नेउंति, सयं ज्ञाउ कतो. ताहे सल्लिं दिव्भं. ते विहरिता. पुरि एोवि आगताए रएणा कंवलएयणं दिव्भं. आयरिएण किं एतए जतोए किं गहितंति जणिकए तस्स अणापुत्ताए फालियं निसे थातो कतातो, कसाइउ. अएणइ जिएकप्पिया वणिज्जंति, ए-

उंतरे सिवभूतिणा पुठितो. किंमिदाणि पत्तियो उवही धरिच्च-  
 ति जेणं जिणकप्पो न किरति. गुरुणा जणितं. न तीरइ सो इ  
 दाणि बोठिन्नो. ततो जणाति. किं बोठिञ्जाति ? अहं करोमि. सो  
 चेव परलोगठिण्णा कायव्वो. किं उवहिपरिग्गहेण ? परिग्गह  
 सभ्जावे कसाय मुञ्जाजयादिया बहु दोसा. अपरिग्गहत्तं च सुए  
 जणितं. अचेलय जिणिंदा अतो अचेलता सुंदरत्ति. देव्हसभ्जा  
 वेवि कसाया मुञ्जाइया कस्सइ जवंति. तो देहोवि परिच्चइयव्वो-  
 त्ति. अपरिग्गहत्तं च सुए जणितं धम्मोवगरणेवि मुञ्जा ए काय-  
 व्वत्ति. जिणावि एगेते ण अचेलो. ततो जणियं सव्वेवि एग  
 दूसेणंणिग्गता जिणवरा इत्यादि-एवं थेरेहिं कहणा. सेकतत्ति  
 गाथार्थः एवं पणवितो कम्मोदएण उमिता गतो. तस्सुत्तरा  
 जणिणी उज्जाणेतितस्स वंदिता गता. तं दंदूण तोयवि चीवराणि  
 उमिताणि. ताए जिख्वं पविठा. गणिताये दिठा मो अम्ह लोगो  
 बिरच्छिहित्ति उरे से पोत्ती बद्धा. तहा सा एठति. तेण जणितं. अउउ  
 एसा तव देवताए दिन्ना. तेणय दो सीसा पव्वाविया. कोठिणो  
 कोट्टवीरोय. ततो सीसाण परंपरा फामो जातो एवं बोमिया उपन्ना.

अमुमेवार्थं ज्ञाप्यकारोऽप्पाह. [मूलज्ञाप्यकारः]-गाहा,-

ऊहाए पन्नत्तं बोमियसिवभूइ उत्तराहिं इमं

मिउदंसणमिणमो. रहवीरपुरे समुपन्नं. १,

ऊहया स्वतर्कबुद्धा प्रज्ञप्तं प्रणीतं बौटिकशिवभूत्युत्तराभ्या-  
 मिदं मिथ्यादर्शनं. इणमोत्ति-एतच्च क्षेत्रतो रथवीरपुरे समुपन्न  
 इतिगाथार्थः-बौटिकशिवभूतिसकासात् बौटिकलिंगस्य जवत्युत्ति  
 र्वत्तमाननिर्देशप्रयोजनं पूर्ववत् पाठांतरंवा. [गाहा.]

कोमिन्यसिवभूर्इयो वोमिन्यलिंगस्त होइ उत्पत्ती.

कोमिन्नकुठवीरा-परंपरा फास उत्पन्ना. (१)

ततःकोमिन्यश्च कोटिवीरश्चेति सर्वो द्वंद्वो विज्ञापया एकवच-  
वतीति कोमिन्यकोटीवीरं तस्मात्परंपरां स्पर्श आचार्यशिष्य  
संबंधलक्षणामधिकृत्य उत्पन्ना संजाता बोटिकदृष्टिरध्याहरणी  
येतिगाथार्थः—

(अर्थः)—रथवीरपुरनगरके दीपकउद्यानमें आर्यकृष्णनामके  
आचार्य ग्रामानुग्राम विहार करतेहुवे पधारे. इसनगरमें शिवभू-  
तिसहस्रमल्लनाममें एक प्रसिद्ध गृहस्थ रहताथा. एकरौज इसकी  
स्त्री अपनी सामसें कहनेलगी आपकें पुत्र रातकों इतनी अवेरकरके  
आतेहैं जितनीदेरतकमें जाग्रत नहो रहशकती. सासने कहा अच्छा  
बहु ! आज तुम मत जागना मैं जागुंगी. शिवभूति रौज दैरसें आते  
ही थी उसीमुजब बन्दीदैरसें घरआये. आवाज दियी कि-किबाम  
खोलो. जीतरसें माताने जवाब दिया इतनीदेर जहां किबाम बंद  
न किये जातेहो वहां जा. इतनीबात सुनकर शिवभूति गोस्ता  
खाकर उलटे लोटे, नगरमें फिरते फिरते साधुजनोंका उपाश्रय  
खुजा देखा. जीतर जायकर बंदना कियी और कहाकि-मुझे साधु  
किजीये. गुरु दीक्षा देनेको इनकार हुवे तब डसरे दिन शिवभू-  
तिजीने आपसेआप छोच करके पुनःप्रार्थना कियी. अधिक  
आग्रहदेखकर गुरुने शिवभूतिजीकों साधुपनेका वेष देयकर दीक्षा  
दियी और वहांसे विहार कर गये. देशांतरमे फिरते फिरकजी  
उन्होंका आना रथवीरपुरनगरमें हुवा. तब शिवभूतिमुनिकों राजावे  
एकरत्नकंबल दिया. रत्नकंबल लेकर शिवभूतिमुनि जब गरुकेपास

पहोचे गुरुने कहा ऐसे रत्नकंबलसें अपनेको क्या प्रयोजन है ? बहु मौलका रत्नकंबल रखना व्याजब नही ऐसा कहकर बिना पूजे उसरत्नकंबलके बड़े बड़े टुक करदिये और पोंछने प्रमार्जनेके काममें लगादिये. शिवभूतिमुनिने इसबातसें बहोतरोष माना. यूं होतेकितनेक दिन बतीत हुवे एक दिनकी बात है गुरु जिनकल्पी मुनियोंका अधिकार कथन कररहेथे शिवभूतिमुनिने गुरुसें पूछा कि-आपांजो ऐमे क्यों नही होते ?-उपधि क्यों रखते हैं ? जिससे जिनकल्पमार्ग नही बन आता, गुरुने उत्तर दिया इस कालमें जिनकल्पमार्ग व्यवच्छिन्न होगया उपधि बिना स्थिर रहना अशक्य है. शिवभूतिमुनिने कहा कैमे व्यवच्छिन्न होगया ? मैं करुंगा. परलोक अर्थीको उपधिपरिग्रहसें क्या प्रयोजन ?-उपधिके होनेसें कषाय मूर्छा और ज्ञयआदि बहुतेरे दोष पैदा होते है. अपरिग्रहपना सूत्रमें कहा है. जैमे-“अचेज्जयजिणिंदा” अर्थात् जिनेश्वर अचेलक ( बख्ख रहित. ) थे. इस लिये अचेज्जपना ही सुंदर है. गुरुने कहा जैमे उपधि परिग्रहके सद्ज्ञावमें कषाय मूर्छाआदि दोष स्वीकार है तो शरीरके सद्ज्ञावमेज्जी कषाय मूर्छाआदि दोष क्यों नही स्वीकार होंगे, ?-इससेंतो शरीरज्जी ठोरु देना चाहिये. परंतु यह तुमारी समझका फर्क है. सूत्रमें जो अपरिग्रहपना कथन किया है वह धर्मके उपगरणमेंजो मूर्छा नही करना चाहिये इस अपेक्षासें है, जिनेश्वरभी एकांत अचल (बख्ख रहित) नही थे. आगमवचन है कि-“सध्वेवि एगदु-सेणा णिग्गता जिणावरा”—मज्जीजिन एक देवदूष्य बख्ख सहित दीक्षा लेकर निकले. इत्यादि कथनसे गुरुने बहोत सम-

जाये परंतु कर्मोदयसें शिवभूतिमुनिकी समझमे नही आया. अलग होकर पात्र और वस्त्र वगैरा सर्वउपधि छोड़कर नग्न विहार करने लगे. बहार उद्यानआदिमें स्थिति करते रहे. इधर उनकी बहैन जो कि-दोहिता थी शिवभूतिमुनिकों वंदना करने गयी उनकों वस्त्ररहित देखकर आपन्नी वस्त्ररहित होकर विचरने लगी. एकदिनकी बात है. जब जिह्वा निमित्त वह शहरमें आयी तो एक गणिकाने इसको देखकर सोचा कि-जोक हमारेपर विरक्त न हो जाय एकमाडी लेआयो और उसें पहना दियो. साध्वी सा-डी लेनेको यद्यपि इनकार थी तो जी गणिकाने कहा तुमारे दे-वने तुमको दियो है लेना चाहिये ऐसा कहकर चली गयी.

शिवभूतिमुनिके कोडिन्त्य और कोटिवीर नामके दो शिष्य हुवे. क्रमसें शिष्य परंपरा बढ़ती गयी. [मूलजाण्यकारने जी कहा है कि-] यह मिथ्यादर्शन रथवीरपुरनगरसें शिवभूतिमु-नि और उत्तरासाध्वीसें उत्पन्न हुवा. जबकि-विक्रम संवत् (१३७) चलता था और महावीरके निर्वाणको उमबरूत (६०७) वर्ष हो चुके थे. क्योंकि-महावीरके निर्वाण हुवे बाद (४७०) वर्ष पिछे विक्रम संवत् चला है. श्वेतांबर आम्नायके शास्त्रोंमें बहुत जगह लिखा है कि-विक्रम के संवत्सें (४७०) वर्ष पहिले महावीर का निर्वाण हुवा. दिगंबर आम्नायके शास्त्रमें लिखा है कि- (६०५) वर्ष पहिले महावीरका निर्वाण हुवा. यह जो (१३५) व-र्षका फर्क दोनों आम्नायवालोकी गिनतीमें पड़ा यह विक्रमके संवत् और शालिवाहनके शाकेका है. क्योंकि-दिगंबराचार्योंने शालिवाहनका मचार किया हुवा शाका-“संवत्”-करके माना



है. और इसी शालिवाहनको विक्रमार्क करके लिखा है. इसकी साक्षी त्रिलोकसार और हरिवंशपुराण आदिसे मिल सकती है.

शिवभूतिमुनिसँ जबकि—इसमतकी शरूआत हुयी उसको आज (१८११) वर्ष हुवे और महावीरके निर्वाणको आज (२४२०) वर्ष हुवे, महावीरके गणधर आदि शिष्योंसँ लेकर शिवभूतिमुनितकके बीच बीच सँकड़े जैनाचार्य हुवे उनमेसँ किसी आचार्यका रचा हुवा ग्रंथ या किसी ग्रंथका स्थल दिगंबरआम्नायमें क्यौ नही मिलता ? क्या ! किसी आचार्यने कोई ग्रंथ नही रचा ? इस लेखका तात्पर्य यह है कि—बीचके पांचसो ठसो वर्षके आचार्योंका कोई ग्रंथ दिगंबरआम्नायमें नहो मिलता और श्वेतांबर आम्नायमें मिलता है इससँ कह सकते है दिगंबर मतको शरूआत पिछेसँ हुयी.

कोइ कोइ दिगंबर ऐसा कह देते है कि—जछबाहुसंहिता जछबाहुस्वामीकी रची हुयी है, जो महावीरके निर्वाण पिछे (१६२) वर्ष देहांत हुवे है, परंतु यह कहना ठीक नही. क्यौकि वह जछबाहुसंहिता हमारे पास है, उसके उत्तरखंडके प्रारंभमें चतुर्थ—पंचम और षष्ठम श्लोकमें लिखा है कि—छादशांग वेत्ता जछबाहुको, नमस्कार करके उनके शिष्य उनसँ विज्ञप्ति करते है कि—महाराज ! हमको दिव्यज्ञान विदित करो, (जछबाहु संहिताका पाठ.)

तत्रासीनं महात्मानं ज्ञानविज्ञानसागरं,  
तपोयुक्तं च श्रेयांसं जछबाहुं निराश्रयं, ४  
छादशांगस्य वेत्तारं निर्ग्रन्थां महाद्युतिं,  
वृक्षशिष्यैः शशिष्यैश्च निपुणं तत्त्ववेदिनां, ५

प्रणम्य शिरसाचार्यं, इति,

फिर अठारहमें अध्यायके (१४) में श्लोकपर लिखा है कि—  
“जङ्घबाहुवचो यथा”—इन प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि—  
जङ्घबाहुस्वामी इसके रचयिता नहीं है, किंतु और कोई है.

कोई कोई दिगंबर कहते हैं, यह संहिता पिठले जङ्घबाहु-  
स्वामीकी रची हुयी है जो कि—महावीरस्वामीके निर्वाणसे (४९१)  
वर्ष बाद हुये है. परंतु हमारे विचारमें क्या ? किंतु अनेक दिगंबर  
लोकोके विचारमें जी यह संहिता दोनों जङ्घबाहुमुनियोंकी ब-  
नायी हुयी नहीं है. पिठले जङ्घबाहुस्वामीकी रची हुयी माने  
तो इसके प्रथमाधिकारके तिसरे श्लोकमें लिखा है कि—गोवर्ध-  
न गुरुकों नमस्कार करके और गौतम संहिता देखकर मैं यह  
संहिता बनाता हूं. (तत्पाठः)

गोवर्धनं गुरुं नत्वा दृष्ट्वा गौतमसंहितां,

वर्णाश्रमविधियुता संहिता वर्ण्यतेधुना. ३,

जब पिठले जङ्घबाहुस्वामीकी रचित यह संहिता ठहरे तो  
उनके गुरु गोवर्धनजी कैसे कह सकते हो ?—क्योंकि—पिठले  
जङ्घबाहुजी—श्रीगुप्तिगुप्तआचार्यके गुरु हुवे और पहले जङ्घ-  
बाहुजी—श्रीविशाखाचार्यके गुरु हुवे लिखे है, शंसय हो तो दि-  
गंबर पट्टावलीमें देख लो. श्वेतांबर आमनायमे श्रीजङ्घबाहुस्वामी  
एक ही हुवे लिखे है. निदान ! उक्तसंहिता न पहले न दूसरे  
दोनोंमेंसे किसी जङ्घबाहुस्वामीकी रचित नहीं है. क्योंकि—स्वोप-  
ज्ञ ग्रंथमें वे कैसे लिखे कि—जङ्घबाहुवचो यथा,—अर्थात् ज-  
ङ्घबाहुका वचन इसमें प्रमाण है. ऐसा लिखना खुद जङ्घबाहु

स्वामीका कैसे हो शक्ता है ?—इसलिये यह तो नहीं सिद्ध हुआ कि—यह संहिता जछ्वाहुजीकी रचित है. कोइ दिगंबर महाशय प्रमाणद्वारा साबित करदेवे तो हमको वैसे माननेमें जी इनकार नहीं.

दिगंबरआम्नायके पुस्तकोमें लिखा है महावीरके निर्वाण पिछे (६०३) वर्ष बाद श्री पुष्पदंत और भूतबलमुनिने पुस्तका रूढ किया, अर्थात् दिगंबर मतके शास्त्र पुस्तकाकार लिखे. और कहते हैं उमवरुत विक्रमार्क कहिये विक्रमादित्यका शत्रु—“शक” मवर्चक शालिवाहन राजा गर्जमें था. कुंदकुंदाचार्यके पश्चात् उ मास्वामी पट्ट बैठे. उमास्वामीकी पट्टपर लोहाचार्य बैठे. काष्ठासं यकी उत्पत्ति इन्हीसें हुयी ऐसा मूलसंयकी पटावलीमें लिखा है.

श्वेतांबर आम्नायके पुस्तकोमें लिखा है महावीरके निर्वाण बाद (९८०) वर्ष पिछे वल्लभीनगरीमें श्री देवार्द्धिगणिकमाश्रमण आचार्यने पुस्तकारूढ किया. याने अंगशास्त्र (जितने उस वरुत मौजूद थे.) वगेरा जैनशास्त्र पुस्तकाकार लिखे. समीक्षक—जब श्वेतांबरशास्त्रोंसें दिगंबरशास्त्र पहेले लिखे गये तो वे अधिक जरूरत रखने योग्य क्यों नहीं ?—इसका हेतु सोचते हैं तो कुछ पहेले लिखे जानेपर अधिक जरूरतके पात्र नहीं ठहर सकते. क्योंकि जिसकी धारणाशक्ति कमजोर हो उसको लिखलेनेकी जरूरत प्रथम होती है जिसकी धारणाशक्ति पुख्ता हो उसको क्या प्र-योजन है शिघ्रता करे. यह दोनों आम्नायमें मान्य है कि—संपूर्ण जैनशास्त्र गणवर—आचार्य—उपाध्याय—और सामान्यमुनियोने रचे. जिनोंने जबतक काम चलवा रहा अपने असमयकी

धर्मध्यानके अतिरिक्त लिखा पढीमें नही लगाया. परंतु जब धारणा शक्तिकी न्यूनता होने लगी तब लाचार ग्रंथ लिखनेका श्रम उठाया.

धवल-जयधवल-और महाधवल-यह तीनशास्त्र दिगंबर आम्नायमें आद्यके गिने जाते है. इनके पहले दिगंबर आम्नायमें कहते है कोइ शास्त्र नही गुंथा गया. इनमेंसे उच्चार करके नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्त्तीजीने चामुंडराजाके पढ़नेकेलिये संस्कृत [११३३] में गोमटसार ग्रंथ बनाया.

दिगंबर पुस्तकोंमें यह बात जोरके साथ लिखी है कि-स्त्री को मोक्ष नही. वस्त्रधारी चाहें स्त्री वा पुरुष कोइ क्यों न हो ! बिना नम्र हुवे उनकी जी मोक्ष नही होतो. तीर्थंकर वा अन्य मुनि कोइ हो जब वे केवलज्ञानी हो जाते है आहारपानी बिल्कुल नही लेते, उनोसवे तीर्थंकर मल्लिनाथको पुरुष बताते है श्वेतांबर मल्लिनाथको स्त्री बताते है. छादशांगवानीमेंसे एक दृष्टिवाद अंगको ओडकर शेष ग्यारहअंगशास्त्र जो अब विद्यमान है उनको श्वेतांबर मानते है दिगंबर लोग नही मानते. इनमे जो [१०] आश्रय हुवे लिखे है वह जी दिगंबर नही मानते. किंतु दूसरे प्रकारसे मानते है. वगेरा बहोतसी बातेंका अंतर दोनो आम्नायमें है. मल्लिनाथको दिगंबर आम्नायके शास्त्रमें पुरुष लिख दिया इसका कारण यही विदित होता है कि-यदि वे इनको स्त्री मान लेते तो उनका अपने ग्रंथोंमें स्त्रीका मोक्ष नहोना ऐसा जो लिखना है व्यर्थ हो जाता.

श्वेतांबरमुनि वंदन करनेवालेको धर्मलाज कहते है दिगंबर

मुनि धर्मवृद्धि कहते हैं, परंतु वर्त्तमानक लमें दिगंबरमुनि कोइ जगह नहो है, केवल मनको धीरज देनेके लिये उत्तराखंडके दिगंबरश्रावक कहदेते हैं दखनमें होयगें, दखनवाले कहते हैं उत्तरमें होयगें. सारे हिंदुस्थानमें [जोकि-आर्य तरीके गिना जाता है] तो हैं नही, अनार्यदेशमें होवे तो वे दिगंबरशास्त्रोके कथन मुजब मुनि नही कहे जायगें. क्योंकि-वहां कोइ श्रावक नही जिससे उनको निर्दोष आहार मिले. श्वेतांबरमुनि (४१) दोष त्याग के जिह्वा लेते हैं दिगंबरमुनि [ ३२ ] अंतराय त्याग के लेते हैं. श्वेतांबरआम्नायमें जिनकल्पी और स्थविरकल्पी दो प्रकारके मुनि माने जाते हैं, परंतु जिनकल्पीमुनि अब नही रहें. जंबूस्वामीके मोक्षहोनेवाद व्यवहिन हो गये, वर्त्तमानका लमें स्थविरकल्पी मुनि विद्यमान है, वस्त्र पात्र आदि [ १४ ] उपकरण इनके लिये रखने कहे हैं. श्वेतांबरका कहना एसा है कि-जब मुक्तिमार्ग शुरुथा तब वस्त्रआदि उपधि धारण करनेवा ले मुनिको जो मुक्ति होती थी. क्योंकि-वस्त्र पात्र आदि उपधिमें अगर ममत्वजाव नहो है तो मुक्तिको कौन रोक सकता है? दिगंबरको इन बातोंसे इनकार है और कहते हैं मुनिको वस्त्र पात्र आदि उपकरण रखने हो न चाहिये. मूर्धा हांगी. श्वेतांबरमुनि रजोहरण उनका रखते हैं दिगंबर मयूरपिठोंकी पीठो रखते हैं.

तत्त्वार्थ सूत्रको दिगंबर आम्नायमें मान्य रखा है परंतु इसके कर्त्ता उमास्वातिजी दिगंबर नही थे. क्योंकि-ये दिगंबर थे इस विषय प्रमाण देनेको दिगंबराचार्य रचित कोइ प्रमाणीक ग्रंथ

नहीं. केवल पट्टावलीके आश्रय उनका दिगंबर होना विद्वानों-  
को मान्य नहीं हो सकती. सबकि-दिगंबर आमनायमें जितनी  
पट्टावली है जट्टारकोंकी बनायी हुयी है. जट्टारकोंकी उत्पत्ति  
संवत् [१३१६] के पश्चात् है, क्योंकि-इसी संवत्में फिरोजशाह  
बादशाहकी आज्ञासें जट्टारक प्रजाचञ्चने वस्त्र अंगीकार किया  
लिखते है, जितनी पट्टावली है सब इसीके पोछे जट्टारकोंकी ब-  
नायी हुयी है. इसमें पुरानी कोई पट्टावली नहीं है, जट्टारको  
का वचन नवीन होनेमें अप्रमाण है. इनका नाम उमास्वाति  
किस हेतुसें रखा गया था ?-कौनसे समयमें ये हुवे ?-कितने ग्रंथ  
रचे ?-यह सब वर्णन श्वेतांबर पुस्तकोंमें मिल सकता है.

महावीरके सातमे पट्टपर जड्वाहु हुवे, जड्वाहुके पट्टपर  
स्थूलजड्वा जो महावीरके बाद [२१५] वर्ष पोछे देहांत हुवे है,  
स्थूलजट्टाजीके आर्यमहागोरी और आर्यमुहस्तो दो शिष्यहुवे  
दोनोंकी अलग अलग पट्टावली चली, जिसमें आर्यमहागिरि  
को पट्टपर बजिस्तहसूरि हुये, बजिस्तहसूरिके बाद स्वातिसूरि-  
स्वातिसूरिके बाद श्यामाचार्य जो महावीरनिर्वाणके पश्चात्  
[३७६] वर्ष बाद देहांत हुवे है.

उमास्वातिजी इन्ही श्यामाचार्यके शिष्य और पूर्वधारी  
थे. दिगंबरआमनायकी पट्टावलीमें उमास्वातिजीको कुंदकुंदाचा-  
र्यके शिष्य लिखे है. और लिखा है विक्रमार्क संवत् [१४३] में  
ये देहांत हुवे. दोनोंके कहनेमें बहुत फर्क आया. दिगंबर पट्टा-  
वली संवत् (१३१६) से पहलेकी न होनेसें प्रमाण योग्य नरही.  
श्वेतांबर आमनायकी पट्टावली नंदीसूत्र और कल्पसूत्र वगैरामें

मिलसकती है जोकि—अधिक पुरानी होनेसे अधिक प्रमाण योग्य है.

उमास्वातिजीने [५००] ग्रंथ रचे. जिनमेंसे वर्त्तमानमें केइ भिन्नते है जैसेकि—हमारे ही पास उमास्वाति रचित पूजाप्रकरण है जिसको दिगंबरलोग नही मानते. इसी प्रकार औरको जी नही मानते. इन्होंका बनाया एक तत्त्वार्थसूत्र ही दिगंबरमतमें मान्य रहा दूसरे नहो रहे इसमें विदित होता है उनमें स्त्रीको मोक्ष और केवलीको आहारका होना लिखा है. अंगशास्त्र जी इसी लिये अस्वीकार हुवे.

मूलसंघकी पढावलोंमें लिखा है कि—सेनसंघ—सिंहसंघ—नं-दीसंघ—और देवसंघ—इनइन मुनियोंने किया. सेन और सिंह संघ जिनसेनमुनिने (जो १०४ में हुवे है) किया. जिसमें सेनसंघ पहला और सिंहसंघ सिंहकी गुफामें रहनेसे हुवा. नंदीसंघ मा-घनंदीमुनिने किया जो कि ( १६० ) में हुवे है. देवसंघ देवदत्ता नामकी बेइयाके घर योग धारा इस लिये कहा गया. नंदीसंघमें पारिजात गड्ढ बलात्कार गए—और मुनियोंके नामपर नंदी—चंद्र कीर्ति—और भूषण—ये ( ४ ) उपनाम स्थापित किये गये. तथा मूलसंघ नंदीआम्नाव सरस्वती गड्ढ बलात्कार गए—और मुनि-योंके नामपर पूर्वोक्त (४) प्रकारके उपनाम स्थापित किये गये. सजी दिगंबर पढावलोंके गुम्फक जट्टारक है और जट्टारकोकी छत्तचि (संवत् १३१६)में हुयो ऐसा वसुनंदीश्रावकाचारमें लिखा है.

मूलसंघ—काष्ठासंघ—माथुरसंघ—और गोप्यसंघ—ये चार संघ जी दिगंबर आम्नायमें हुवे लिखे है. मूलसंघमें और गोप्यसंघमें

मयूरके पीठेकी पींठी रखते है, काष्ठासंघमें चमरीवालकी रखते है. और माथुरसंघमें कोइ प्रकारको जी पींठी नहीं रखते. जब वर्तमान समयमें कोइ दिगंबरमुनि ही नहीं रहे तो पींठीकी स-क्षास हमको क्यों करनी होमी !-इनमें गोप्यसंघवाले स्त्रीको मुक्ति होना मान्य रखते है. केवलीकों आहारपानी करना तो चारों संघवाले नहीं मानते.

स्याघादन्यायकेलिये श्वेतांबर दिगंबर दोनोंकी एक सडक है. सम्मति तर्क-घादसारनयचक्र-अनेकांतजयपताका-स्वाघाद-रत्नाकर-स्याघादरत्नाकरा वतारिका-स्याघादमंजरी-बगेरा श्वेतांबरआम्नायके तर्क ग्रंथ है. अष्टसहस्री न्यायकैरवचंछमा-और सिद्धांतसार आदि तर्कग्रंथ दिगंबर आम्नायके है. और कस्या-णमंदिर ज्ञतामर सिंदूरप्रकरआदि स्तोत्र दोनों आम्नायमें मान्य है जिनके रचनेवाले श्वेतांबराचार्य है.

दिगंबरआम्नायमें वीशपंथ-तेरहपंथ-गुमानपंथ-और समै-यापंथ-ये ( ४ ) जेद अब मौजूद है. जो वीशप्रकारकी \*धर्मक्रियामें पाबंद है वे वीशपंथी कहलाते है. वीशमेंसे सातप्रकारकी क्रिया छुथ्यापन कियी निसमें तेरहपंथी कहलावे. कहते है वीशपंथमेंसे फटकर संबत् (१७३६) में ये अलग हुवे. जबपुरके तेरहपंथीयोंसे \*टोडरमल्लके पुत्र गुमानीरामजीने संबत् (१७३७) में गुमानपंथ निकाला.

प्रतिमाकों स्नानकरानेका निषेध इन्हीने किया. समैयापंथ

---

\* सिंदूर प्रकरके (८) में—काव्यमें देखो. कहते है टोडरमल्लजीने जायकासारग्रंथ बनाया है.



मिलसकती है जोकि—अधिक पुरानी होनेसे अधिक प्रमाण योग्य है.

उमास्वातिजीने [५००] ग्रंथ रचे. जिनमेंसे वर्त्तमानमें केइ भिद्यते है जैसेकि—हमारे ही पास उमास्वाति रचित पूजाप्रकरण है जिसको दिगंबरलोग नहीं मानते. इसी प्रकार औरको जी नहीं मानते. इन्होंका बनाया एक तत्त्वार्थसूत्र ही दिगंबरमतमें मान्य रहा दूसरे नहीं रहे इसमें विदित होता है उनमें स्त्रीको मोक्ष और केवलीको आहारका होना लिखा है. अंगशास्त्र जी इसी लिये अस्वीकार हुवे.

मूलसंघकी पटावल्लोमें लिखा है कि—सेनसंघ—सिंहसंघ—नं-दीसंघ—और देवसंघ—इनइन मुनियोंने किया. सेन और सिंह संघ जिनसेनमुनिने (जो १०४ में हुये है) किया. जिसमें सेनसंघ पहल्ला और सिंहसंघ सिंहकी गुफामें रहनेमें हुवा. नंदीसंघ मा-घनंदीमुनिने किया जो कि ( १६० ) में हुये है. देवसंघ देवदत्ता नाबकी बेश्याके घर योग धारा इस लिये कहा गया. नंदीसंघमें पारिजात गच्छ बलात्कार गए—और मुनियोंके नामपर नंदी-चंद्र कीर्ति—और भूषण—ये ( ४ ) उपनाम स्थापित किये गये. तथा मूलसंघ नंदीआम्नाव सरस्वती गच्छ बलात्कार गए—और मुनि-योंके नामपर पूर्वोक्त ( ४ ) प्रकारके उपनाम स्थापित किये गये. सजी दिगंबर पटावल्लोके गुम्फक जटारक है और जटारकोकी उत्पत्ति (संवत् १३१६)में हुयो ऐसा वसुनंदीश्रावकाचारमें लिखा है.

मूलसंघ—काष्ठासंघ—माथुरसंघ—और गोप्यसंघ—ये चार संघ जी दिगंबर आम्नायमें हुवे लिखे है. मूलसंघमें और गोप्यसंघमें

मयूरके पीछेकी पींठी रखते हैं, काष्ठासंघमें खमरीबालकी रखते हैं. और माथुरसंघमें कोई प्रकारको जी पींठी नहीं रखते. जब वर्त्तमान समयमें कोई दिगंबरमुनि ही नहीं रहे तो पींठीकी सल्लास हमको क्यों करनी होगी !—इनमें गोप्यसंघवाले स्त्रीको मुक्ति होना मान्य रखते हैं. केवलीकों आहारपानी करना तो चारों संघवाले नहीं मानते.

स्याघादन्यायकेलिये श्वेतांबर दिगंबर दोनोंकी एक सड़क है. सम्प्रति तर्क—घादसारनयचक्र—अनेकांतजयपताका—स्याघाद-रत्नाकर—स्याघादरत्नाकरा वतारिका—स्याघादमंजरी—बगेरा श्वेतांबरआम्नायके तर्क ग्रंथ है. अष्टसहस्री न्यायकैरवचंछमा—और सिद्धांतसार आदि तर्कग्रंथ दिगंबर आम्नायके हैं. और कल्याणपंदिर नक्तामर सिंदूरप्रकरआदि स्तोत्र दोनों आम्नायमें मान्य हैं जिनके रचनेवाले श्वेतांबराचार्य हैं.

दिगंबरआम्नायमें वीशपंथ-तेरहपंथ-गुमानपंथ—और समैयापंथ—ये ( ४ ) जेद अब मौजूद हैं. जो वीशप्रकारकी \*धर्मक्रियामें पाबंद हैं वे वीशपंथी कहलाते हैं. वीशमेंसे सातप्रकारकी क्रिया लुब्ध्यापन कियी जिससे तेरहपंथी कहलाये. कहते हैं वीशपंथमेंसे फटकर संवत् ( १७३६ ) में ये अलग हुवे. जयपुरके तेरहपंथीयोंसे \*टोडरमल्लके पुत्र गुमानीरामजीने संवत् ( १८३७ ) में गुमानपंथ निकाला.

प्रतिमाकों स्नानकरानेका निषेध इन्होंने किया. समैयापंथ

---

\* सिंदूर प्रकरके ( ८ ) में—काव्यमें देखो. कहते हैं टोडरमल्लजीने कावकाचारग्रंथ बनाया है.

संवत् [१०७९] निकसा. मूर्त्तिपूजन ये लोक बिल्कुल नहीं मानते शास्त्रको ही वेदोपर रखकर पूजते हैं. कहते हैं शास्त्रहीसे सब बात चली इस लिये इन्हींका पूजन ठीक है. इसागढ-खास मुकाम मल्हारगढ-नागपुर-जेजसा-वासोदा वगैरा स्थानपर ये लोक ज्यादा हैं.

वीशपंथीयोकी पूजन इस प्रकार-(१) जलमें स्नान कराते हैं और पूजनके समय मूर्त्तिके सामने धारा देते हैं. [ २ ] चंदन केशर प्रतिमाजीके चरणोंपर लगाते हैं. (३) अर्घ्य शफेद चाबलको धोयकर पुंज ( ढेरी ) प्रतिमाजीके सामने स्थालीमें बनाते हैं. (४) पुष्प-प्रतिमाजीके चरणोंपर तथा स्थालीमें किये हुये चावलको पुंजोपर चढ़ाते हैं. (५) चंदनादिक सुगंधद्रव्यको कुटकर एक धूपायनमें मूर्त्तिके आगे धप देते हैं, निदान ! हुताशनमें धूप डालते हैं. (६) दीप-कर्पूरका तथा धृतका दीपक जलाकर आरती उतारते हैं और मूर्त्तिके आगे पुंजोपर रख देते हैं. ( ७ ) नैवेद्य जैसा कुछ पकान मिठाई मिले उसको प्रतिमाजीके सन्मुख चढ़ाते हैं ( ८ ) फल जिसरुतुमें जैसा फल मिले वैसा चढ़ाते हैं. वीशपंथी लोग उपासनातिकृत एक ग्रंथमें ऐसा लिखा होनेका विश्वास करते हैं कि पुष्पके स्थान चावलोंको केशरमें रंग दिया जाय तो वह ज़ी समयानुसार ग्रहण करने योग्य है. परंतु आजतक कोई महाशयने उक्तग्रंथका प्रमाण प्रकाशित नहीं किया. बिना प्रमाण चाहे जैसा विश्वास करलो परीक्षकतो कज़ी प्रमाण नहीं करेगे. जब पुष्पकेलिये चावलों की कल्पना कियी गयी तो फलकेलिये न मद्धम कौनसी चीज

हुंढनी होगी ? तच्चत् नैवेद्य दोष जल धूप और केशर बगेरामे जो तर्क वितर्क क्यों नहीं ? उक्त (७) छव्यको एक थालीमें रखकर प्रतिमाके सम्मुख जेट करनेकों अर्घ्य बोलते है.

तेरहपंथीलोग जिसप्रकार पूजन करते है वह वीशपंथीयोकी पूजनसेजो दूसरीप्रकार है. ( १ ) प्रतिमाको स्नान नही कराते किंतु जलनाममात्र पूजनकेसमय एकजारीसे चरोमें गरते है,( १ ) चंदन नाममात्र घीसकर एकजलके लघुपात्रमें मिलाते है और आवश्यकताके समय जलकी तरह जारीपर गीडकते है.(२)अर्द्धत- इसमें तेरहपंथी वीशपंथी बराबर चलतेहै. (४) पुष्पोंके स्थान कहीं कहीं केशरसे और कहीं कहीं हारशृंगार अथवा केथुकेफुलोंसे रंगकर चावल चढाते है. (५) धूप-इसविषयमें जिनजिन विश्वास है.किसी नगरमें धूपायन होता है और किसीमें नहीं, और किसी नगरमेतो थोडासा धूप धूपायनमें और थोडासा पूर्वोक्त पुंजो पर ढालते है और किसी नगरमें धूपायनमे नहीं ढालते. ( ६ ) दीपक-ये लोक नहीं जलाते इसके स्थान नालियरकी गीरीका बहोत गेटा टुकडा पोला रंगकर पुंजोपर चढादेते है. ( ७ ) नैवेद्यके स्थान नालियरकी गीरीका बहोत गेटा खंड बिनारंगा श्वेत चढाते है. ( ८ ) फलको जगह नालियर बादाम छुहारा इत्यादि सूके फल चढाते है. अर्घ्य ये लोकजो वीशपंथीयोंके समान आ-गेही द्रव्यका बनाते है परंतु द्रव्यमें जो कल्पना करलियी है उ सीमाफिक चढाते है. कितनेक इनमें ऐसेजो है जो प्रतिमाकों स्नान कराते है कितनेक नहीं, और केशर वा चंदन चढीहुयी प्रतिमाको देखकर दुखो होतेहै और बचते है.

श्वेतांबरआम्नायमें त्रिषष्टिशलाका पुरुषको पदवीधर मानते है जिनमें (१४) तीर्थंकर तद्भव मुक्तिगामी (११) चक्री अगर संयम आराधन करेतो देवलोक वा मुक्ति जाय अन्यथा नरक गामी [ ६ ] बलदेव नरकगामी नहीं किंतु देवलोक वा मुक्तिगामी [ ६ ] वासुदेव ( ६ ) प्रतिवासुदेव निश्चय नरकगामी होते है. क्योंकि वे पिछले जन्मकी तपक्रिया पांच इंद्रियोंकें विषयनिमित्त संकल्प करके उक्तपदवीकों पाये हुवे है. दिगंबर आम्नायमें [ १६६ ] पुरुषकों पदवीधर मानते है. [ १४ ] कुलकर [ १४ ] तीर्थंकरके पिता [ १४ ] तीर्थंकरकी माता [ १४ ] तीर्थंकर [ १४ ] कामदेव [ ११ ] चक्री ( ६ ) वासुदेव [ ६ ] प्रतिवासुदेव ( ६ ) बलदेव ( ६ ) नारद और ( ११ ) रुद्र इनमें कितनेक जीवदोदो तीनतीन पदधारी हुवे जिसमें ( १६६ ) की संख्यामें कमी हुयी. और हुंदावसर्पिणीकालदोष करके अच्छेरा हुवा मानते है.

दिगंबर आम्नायमें तीन अष्टान्हिका-फाल्गुन-आषाढ-और कार्तिक महिनेकी सुदी(८) से (१५) तक और ज्ञाष्टपद सुदी(५) से आसोज वदी (१) तक दशलाक्षणिकपर्व अथवा सोलहकार ए ज्ञावना व्रत आदि बडे पर्व गिने जाते है.

श्वेतांबर दिगंबरके वादानुवादमें मुख्य करके (८४) बोलका फर्क है, इसका असली कारण यह है कि दिगंबराचार्योंने छादशांगबानीके पुस्तक [ जो शेष रहे है. ] नहीं मानें और वृथा बारीकी ग्रहण कियी.

दिगंबरोके शास्त्रमें जगह जगह श्वेतांबरका खंभन किया है और श्वेतांबरोंके छादशांग शास्त्रमें दिगंबरका नाम जी नहीं.

इस प्रमाणसे जाना जाता है कि-श्वेतांबरशास्त्रसे दिगंबरके शास्त्र पीठे बने हैं, क्योंकि पहलेवालोंका खंभन पीठले करते हैं, पिताके विवाहका तमासा पुत्र नहीं देख सकता. हकीकतमें जब द्वादशांगवानी गणधरोने गूथन किया थी तब दिगंबरमत कहाँ था ? जिससे उसका विवेचन किया जाय.

यद्यपि-श्वेतांबर दिगंबर दोनों कह रहे हैं कि-रिषभदेवसे लगाकर आजतक जितना जैनसंघ हुआ हमारे संघमें हुआ अर्थात् श्वेतांबर अपनेमें और दिगंबर अपनेमें हुआ बतलाते हैं. इसमें कौनका कहना सच और कौनका झूठ इस बातका नतीजा आजाय तो क्या ! अच्छीबात है ?-श्वेतांबर दिगंबर दोनोंको गोट कर तिसरा कोइ परीहक इसके नतीजेपर खयाल करे तो प्रथम यही प्रश्न करेगाकि-तुमारे जिनेंद्र कितने ज्ञानी थे ?-उत्तर यही कहना होगा कि-अनंत ज्ञानवान थे याने सर्वज्ञ सर्वदर्शी थे. उन्होंने जब धर्मोपदेश दिया तो किस किस पदार्थका दिया था ? उत्तरजी यही कहना होगा कि-द्वादशांगवानीके पुस्तकोमें जो जो पदार्थ कहे हैं उसका-जिस उपदेशकों उनके शिष्य गणधरो ने-(१) आचारांग-(२) सूत्रकृतांग-[३] स्थानांग-(४) समवायांग-[५] \*विवाह प्रज्ञप्ति-( ६ ) ज्ञाताधर्मकथा-(७) उपासक दशांग-(८)अंतकृतदशांग-(९) अनुत्तरोपपातिकादशांग-(१०) प्रश्नव्याकरण-(११) विपाक-और [१२] दृष्टिवाद-ये द्वादशांग सूत्रोंमें गूथन किया. श्वेतांबर इनको मान्य रखते हैं और इनके कथमानुसार सब कथन और प्रवृत्ति करते हैं. दिगंबर इनको

नहीं मानते और न उसवमुजब चलते हैं, किंतु धवल-महाधवल जयधवल-गोमटसार-आदिपुराण-हरिवंश पुराण वगेरा ग्रंथ जो उन्हीके कहने मुजब (६०३) वर्ष महावीरनिर्वाणके बाद बनाये गये हैं उसमुजब चलते हैं उनमें जो जो कथन है उसीको सब मानते हैं, अंग शास्त्र जो उपर लिख चूके कहते हैं श्वेतांबरोंने नये बना लिये, जब सवाल किया जाता है कि-वे अंगशास्त्र बतला उ जो गणधरेने रचे हैं, तब उत्तर देते हैं वे सब विच्छेद हो गये, सोचनेकी जगह है जब द्वादशांगवानी ही विच्छेद हो गई तो जैनसंघ कैसे बना रहा ?-क्योंकि-द्वादशांगवानी जैनका मूल है, जब मुळ न रहा शाखा समूह कैसे रहत ?-धवल-जयधवल-महाधवल-गोमटसार-आदिपुराण-हरिवंशपुराण-वगेरा ग्रंथ किसवानीके अनुसार बनाये गये ? अगर द्वादशांगवानीके अनुसार बनाये हैं तो द्वादशांगवानीका विच्छेद होना कैसे कह सकते हो ?-अगर यह कहा जायकि-संपूर्ण द्वादशांगीके शास्त्र नहीं रहे अवयव हैं इसलिये वे मान्य नहीं हो सकते तो सोचो कि-चौदह पूर्वके आगे एक पूर्वजी एक अवयव होनेसे मान्य न हो सकेगा, और वर्तमानमें जितने जैनशास्त्र हैं वे एक पूर्वपाठी मुनियोनेही [जितनापाठ उस वस्तुमें शेष रहगयाथा] अनुसंधान किये हैं, फिर संपूर्ण जैनशास्त्रकोही क्यों मानना ? इनकार ही करने बैठे तो थोड़ा बहोत क्या ! सजी इनकार करदेना चाहिये.

आचारांग सूत्रकृतांग आदि, [११] अंगशास्त्र, जो अब मौजूद है इनको अगर कोई महाशय नये ठहराना चाहे तो नहीं ठहर सकते, क्योंकि इनमें जो आर्यावंद लिखे हैं [ ११०० ]

वर्षकी ंद रचनासें पुराने है. चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ग्रीकलोकोके हिंदुस्थानमें आये पहलेके है, इनमें जेसा कुछ ज्योतिष संबंधी वर्नन है ग्रीकलोकोके ज्योतिष् ग्रंथमें नही. कि-तनेक दिगंबर कहते है गोशालामंखपुत्र महावीरका शिष्य नही था, अगर था तो हमारे ग्रंथोंमें उसका वर्नन क्यों नही ?-इसका तात्पर्य यह है कि-जब दिगंबर ग्रंथ सब पीठोंसे ही बने तो उन-में असलीहाल कहांसें हो? बौधपीठकोमें देखिये! जहां महावीर कों और सुधर्मा गणधरकों बौधोंके प्रतिपक्षी लिखे है वहां गो-शालामंखपुत्रका हालजी लिखा है वा नही? बौधपीठक (१०००) वर्षसें अधिक समयके बने हुवे है. क्या ! इनकोंजी नयें ही कहना होगा ?

दिगंबरआम्नायमें माना है महावीरके निर्वाणको जब (६८३) वर्ष बतीत हो चूकेथे तब धवल—जयधवल—महा-धवल आदि शास्त्रकी रचना हुयी. इसके पहले कोइ ग्रंथ नही रचा गया, सोचनेकी जगह है कि—दिगंबरपट्टावलीमें जंबूस्वामीके पीठे-विष्णुकुमार--नंदीमित्र--अपराजित गोवर्धन-और भद्रबाहु ये (५) श्रुतकेवली हुवे लिखे है. भद्रबाहुके पीठे-विशाखाचार्य--पोष्टिलाचार्य--क्षत्रियाचार्य-जयसेन, सागरसेन-सि-द्धार्थाचार्य--धृतिसेनाचार्य-विजयाचार्य-बुद्धालिंगाचार्य देवाचार्य—और धर्मसेनाचार्य-ये (११) कों-दशपूर्वधारी लिखेहै. धर्मसेनाचार्य के पीछे-नक्षत्राचार्य--जयपालाचार्य--पांडवाचार्य--ध्रुवसेनाचार्य--कं साचार्य--सुभद्राचार्य--यसोभद्राचार्य--दूसरेभद्रबाहु-और लोहाचार्य-ये (६) कों-एकादस अंगधारी लिखेहै. लोहाचार्य महावीरके नि-



बाणसे ( ५६५ ) बाद देहांत हुवे क्या ! इन सभी दिगंबराचार्योंने पूर्वोक्त ज्ञानको विछेद जाता देखकर दिगंबरसंघके हितार्थ कोई शास्त्र नहीं रचा ?-ज्ञानीपुरुष संघके हितमें न प्रवर्त्ते यह संभव नहीं होता सच है कि-जो मनुष्य एकजगह बिना विचारे बात कहता है उसको अनेक जगह इसीतरह करना पमता है.

( १००० ) वर्ष पहलेकी नशाकार दिगंबरमूर्ति आजतक को इ नहीं मिली. दिल्लीके पंमित शिवचंझजी ( आम्नाय वोशपंथ ) अपनी बनायी प्रश्नांतरदीपिका नामकी किताबमें प्रथमपृष्ठपर लिखते हैं कि-मांगीतुंगीके गजपंथके पहाडमें- बमोदेकेपास पावा गिरिमें-बमवाणीके पहाडमें-दखनमें गिरिनारी गांवमें-कारकुलन-गरकेपास पटामके उपर-और रंगनगरके तालावबीच मंदिरमें-वगे रास्थानोपर दिगंबर आम्नायकी बहोतप्राचीन मूर्ति है. हमको यहां इतनाही लिखना बहात है कि-संवत् तिथि-प्रतिष्ठाचार्यके नाम बिदुन चाहे जितनी पुरानी और चौथेकालकी कह दो दिगंबर आम्नायके श्रावकसंघ सिवाय इतर मनुष्य नहीं मान सकते. जगवानधर्मादर्श किताबमें रचायिता लिखता है दिगंबर आम्नायके मंदिर ( १०००० ) हजार-( १५००० ) हजार वर्षके बने अब मौजूद है. और लखनऊके दिगंबरमंदिरमें विक्रम संवत् [१]की बनी हुयी मूर्ति धातुमय मौजूद है. हम यहां बहोत खुश होकर उस महाशयसे निवेदन करते हैं कि-बे बीश पचीशहजार वर्षके बने मंदिर अब किस जगह खडे है ?-हमको जी विदित कर दिजिये. उसी किताबमें पतेवार अगर आप लिख देते और

\* ( १४ ) पृष्ठकी किताब रसिककाशीप्रेस दिल्लीमें उपा है.

शिलालेखआदिकी सबूतिं देते तो हमको मुंह खोलनेकी जगह न रहती. और लखनऊके मंदिरकी मूर्तिके प्रतिष्ठाकरनेवाले कौन आचार्य किसके शिष्य थे लिखदेते तो अलबते ! हमको मान्य करते इनकार न होता. महाशय ! पांचहजारवर्षकी इम्मारत वर्तमानमें मिलनी मुश्किल है. तो फिर बीस और पच्चीस हजारवर्षकी इम्मारतकों बतानेका दावा करना आपहीकी ताकाद है. हां ! अलबते, संवत् तिथि और प्रतिष्ठाचार्यके नामसाहित कोई नग्न स्वरूप खमीमूर्ति दो अठाइहजारवर्षसे पुरानी निकल आवे. और उसप्रतिष्ठाकरनेवाले आचार्यका नाम कोई प्राचीनग्रंथमें पाया जाय तो मान्य हों. परंतु आपके दिगंबरवसुनंदाश्रावका चारमें जहां मुनियोंकी पट्टावली लिखी है वहां ( ४ ) संघके अतिरिक्त और किसीकी प्रतिष्ठितप्रतिमा पूजनेयोग्य नहीं कही. उनसंघके नामके साथ नंदी-चंद्र-कीर्ति-और भूषण-ये चार उपनाम लगाये हैं, सो इनकी पट्टपरंपरायसे विमुख जो प्रतिमा दिगंबर लोक प्राचीन मानेंगे उसका क्या प्रमाण देयगे ?-इसबातकों सोचो. क्योंकि-ये चारसंघतो विक्रमसे बहोत पीछेके हैं. अर्थात् इसके पहलेकी प्रतिमापर किसका नाम होना चाहिये. जिसको वो मान्य रखेंगे ऐसा कीसी मीगंबर ग्रंथमें होना चाहिये. सो है नहीं.

पंक्ति शिवचरणजी कारकुल नगरके पास पहाडपर बहोत पुरानीमूर्ति बताते हैं उसका जेद डालिचंद्रपाहिकश्रावक जयपुरवालेकी रची जैनयात्रादर्पणकी किताबसे खुल जाता है. दूसरे जाग पृष्ठ ( १० ) पर देखो क्या लिखा है ?-“इहांसे कारकुल

नगर दक्षिणी है, उतरनेका ठिकाना जैनके मठमें है, इहां मंदिर अठारा बड़े है और यहां छोटा पर्वत है उसके उपर कोट बना है. इसके भीतर पथ्थरकी बड़ी वेदी है इसीके उपर बाहुबली स्वा मीकी प्रतिमा कायोत्सर्ग उंची अंदाज नौ धनुष्यकी है, इनका पार्श्वका पंजा सवातीन हाथका लंबा है इनकी प्रतिष्ठा संवत् ( १३५३ ) के सालकी हुयी है—”

जैनबन्दी मोडवन्दीतीर्थके पास श्रवण बेलगुलगांवके नजदीक बाहुबलीजीकी प्रतिमा खड़े आकार ( १८ ) धनुष्य उंची जैनया आदर्पणके दुसरे भाग ( १५ ) पृष्ठपर लिखी है. गोमटस्वामी बाहु बलीजीकाही नाम दिगंबर आम्नायमें प्रसिद्ध है, उनकी प्रतिमा खड़े योगकी होती है. चौइसतीर्थकरोंकी प्रतिमा पद्मासन होनेका लेख दिगंबर शास्त्रोंमें है और खड़े आकारकी बनाना यथापि शास्त्राज्ञासँ विरुद्ध है तथापि जो प्रवृत्ति एकदफे चलपड़ी रुकनी मुश्किल है. इसप्रवृत्तिकेलिये केइ दिगंबर पांडितोंसे दर्याफत किया जाता है तो बताते है केइतीर्थकर खड़े खड़े ( खड्गासन ) मुक्त हुवे है इसलिये यह प्रवृत्ति हुयी, जो प्रतिमा जैनबन्दीमें गोमटस्वामीकी पहाडमें उकेरी हुयी है उसमें कारिगरने यह बन्नी उत्तमता रखी है कि—उसकी छाया उसीमें रहती है इधर उधर नही पडती. इसमें कोई देवकारण नही किंतु कारिगरकी चतुराई है. इसी गोमटस्वामीके बारेमें कितनेक दिगंबरपांडित एसाजी कहते हैं कि चामुंडरायके समयमें दिगंबराचार्य नेमिचंद्र—सिद्धांतचक्रवर्ती गोमदसारग्रंथके कर्ता विद्यमान थे. एकरोजकी बात है चामुंडरा यने प्रतिज्ञा लियी थी कि—मैं तीर्थकरभगवान्के दर्शन किये बिना

भोजन नहीं करूंगा. इसपर नेमिचंद्रजीने चक्रेश्वरीका आराधन किया तो उसने स्वप्न दिखाकि--चामुंडराजा इसपहाडपर बायां मारेगातो पर्वत फटकर एक प्रतिमा निकलेगी. सो तबहीकिम गया. उससमयकी यह प्रतिमा है और यही कारण है जो इस प्रतिमाकी ढाया नहीं पडती और कायी नहीं जमती. परंतु यह विश्वास उनका भोले लोकोकों भूलमें डालनेकेलियेहै. गोमट स्वामीकी प्रतिमाके निकट इज्ञान और नैरुत्यकों पहाड उंचा होनेके कारण सूर्यके उदय अस्त और थोडे दिन चढेचकतो पहाडकी ढाया बनी रहती है. जब मध्यान्ह होताहै तो प्रतिमाकी उंचाइ उच्चरकों झुकी हुई होनेके कारण संपूर्णढायां उसकी उसीपर रहतीहै, इधर उधर नहीं पडती. और उसपर कायी इसलिये नहीं जमती कि-वह एकही पाषाण है यदि टुक टुक जुडे हुवे होते तो जोडके उपर अवश्य कायी जमती बाले पाषाणभी ऐसा होता है जिसपर कायी नहीं आती, इसमें चक्रेश्वरी आदि देवताकी करामात कहना ठीक नहीं है.

कितनेक दिगंबर एसानी कहते है कि-हमारा एकमंदिर दखनदेशके एक सरोवरमें है वहां हमलोक थालीमें पूजाकीसाम ग्री रखकर प्रवाहित करदेते है तब वह थाली मंदिरमें जायकर सामग्री बेदीमें चढाती है और आप खाती होकर पीछें लोट आतीहै. सो इस बातको देवताकी करामात समझना बहोत बड़ी भूल है. प्रथमतो जो बात सुनी होती है जब उसकों बुद्धिमान् आंखोंसे देखते है बहोत थोमी होजाती है. और यदि अनुमान द्वारा उसकों ठीकज्जी मानलिया जावे तो ऐसा समझमेंभी आ

शकता है कि-यदि चूबकपाषाणकी प्रतिमा बनाकर किसी सरोवरमें बेदीपर उंची रखी जावे और दूर खड़ा होकर लोहेकी थाली या पात्रमें कोईवस्तु उसके सन्मुख ओम्देवे तो उसपाषाण की आकर्षणशक्ति उसको अवश्य मूर्तितकी तर्फ खेंच लेयगी और यहभी निश्चय है कि-जब वो पात्र मूर्तितक पहुँच जायगा तो उंचा नीचा होकर खालीज्जी हो जायगा परंतु इसमें इतना असंभवहैकि-थाली लोटकर नहीं आशकती परंतु जिसमनुष्यने यह चतुराई रखी है कि-वह थाली वहाँ चली जाय तो जलके बहाव की तर्फ ध्यानदेनेसे यहजी निश्चय होशकता हैकि-थाली निश्चय लोटकर आजाती होगी. क्योंकि-बहावके सन्मुख आनेपर कोई वस्तु रुक नहीं सकती. बराबर प्रवाहमें वह चलती है.

हवनकुंडमेंसे बहुधा भट्टारक और उनकेचले पंमित लोक भोली मनुष्योंके भ्रमानेकेलिये जो वस्तु उनके सन्मुख होते हुवे अग्निमें डालदेते है जैसेकि-चूंदमी नालियेर वगेरा. और पुनः बिना जली नीकाल देते है सो इसमेंजी कोई करामात नहीं.केइ वस्तु एसी है जिसको पानीमें जलमय करके उसमें भाँगोकर जिसवस्तुको जलाया जाय वह प्रगटपने सबको जलती दिखेगी. परंतु असलमें उसका आग्निसंस्कार न होगा. जैसी है बेसी बनी रहगी. इसीप्रकार कोई दवाइके योगमें वेह-लोकभी जलीवस्तुको पुनःनिकालकर अपनी करामात सिद्ध करते है.

निदान !-दिगंबरमतके--जनबद्री मोडबखी मांगीतुंगी मुक्ता गिरि सोनागिरि वगेरा-तीर्थोंमें ( २००० ) वर्षसे पहलेकी कोई मूर्ति नहीं. गांपाचल दुर्गमें याने ग्वालीयरके किलेमे पहाडपर

उकेरी हुयी खड़े और बेटे आकार जितनी है सब संवत् [१४९७] से लगा-(१५२०) तककी है. सासबहुके मंदिरमें दोनों फाटकपर जो दोशिला लेख आमनेसामने दिवारमें जड़े हुवे है उसमें लिखा है संवत् [ ११५० ] आश्विन शुक्ला पंचमीके रौज यह पद्म प्रभुका मंदिर बना, परंतु हकीकतमें यह मंदिर दिग्बरमतका विदित नहीं होता, बौधमंदिरमें दिग्बरोंने पिछेसे अपना दखल किया अनुमित होता है, क्योंकि दिग्बर आम्नायकी कोई मूर्ति इसमें न दिवारपर और न वेदीमें है चारों ओरकी दिवारमें उकेरी हुयी जो जो मूर्ति है सब बौधमतकी है. जैनबोधके वर्णनमें बौध मूर्तिके चिन्ह जो लिख चूके उनमें केवल इतना फर्क है कि—ये खड़े आकार और चारहाथवाली है. इसरा दिग्बर वेदिकाका कोई आकार नहीं न कोई चिन्ह. किंतु बौधमतके मंदिर और वेदीका पूरापूरा आकार है. बौधमें यह रिवाज है कि—एक मूर्ति गौतम बुधकी ठीक बीचमें बैठे आकार स्थापन करके चौफेर मौदगलायन शौरीपुत्र आनंद वगेरा शिष्यसंप्रदायकी मूर्ति उपदेश सुननेके लिये स्थापित कीयी जाती है. इस रिवाजका हेतु यही ज्ञात होता है कि—कच्ची दंगाफीमात होजाय तो उन मूर्तियोंको शिघ्र उठा लियी जावे. सो इस मंदिरमें जो वेदिका है इसका देखनेसे सारा मंदिर बौधका विदित होता है दिग्बरोंने अपना दखल करके पिछेसे लेख लगवाये है. दखनकी तरफके दरवाजेको पीछामोसे बंद करके एक कोटड़ी बनायी है जो कि—मंदिरबर्नक बाद बनी हुई है, इसकी दिवारमें कोई चित्र नहीं अगर मंदिरबना तत्कालीन यह कोटड़ी होती तो उसमें चित्रजी जरूर होते, जैसेकी—मंदिरमें

शकता है कि-यदि चून्त है कोटडी पिछेसें बनी और मंदिर पद्म  
वरमें घेदीपर उंची एक मंदिरसें दाहने पासे जो दूसरा छोटा मंदि  
थाली या पात्र मंदिरकी कतावजामें मिलता होनेसें बौधोंका ही  
की आकर्षण. मूर्ति दोनों मंदिरमें नहीं खाली पडे है. गंगोला  
यहभी " सामने जो तेलीकीलाट कही जाती है इसमें न जैनकी  
जुन बौधकी किसीकी मूर्ति स्थापित नहीं. किंतु चौफेर जो थंजे  
जमीनमें गाडकर खडे किये है उनमें केइ मूर्ति जैनकी और बौ  
धकीजी है.

शीशमहेलक नीचे होकर जिसदरवजेसें गवालियरको उत-  
रते है वहांपर दाहनेपासे जो चतुर्भुजका मंदिरहै उसमें गौतमबुध  
को खमे आकार मूर्ति अंदाज गजभर उंची है, मौद्गलायन  
शौर्यपुत्र दोशिष्य दोनोंतर्फ खमे है. औरजी केइ चले वास्ते  
धर्मोपदेश सुननेको बैठे है. इसके दरवजेपर और मंदिरके भीतर  
की दिवारपर शिला लेख लगे हुवे है. इन प्रमाणोमे कह सकतेहै-  
कि-इस दुर्गमें बौधोका जलसानी पहले बीत चुका है.

शहर लश्करमें चंपावागके दिगंबर मंदिरमें संवत् (१२२६)

आश्विन शुक्ल (६)की- प्रतिष्ठित मुनिमुत्रतस्वामीकी प्र-  
तिमा पद्मासन है इसमें पुरानी कोइ नहीं.

श्वेतांबर आमनायकी प्राचीनताकेलिये अन्वेषण करते है  
तो प्रथम श्रीमहावीरके निर्वाणसें कुल [७०] वर्ष बादकी श्री  
रत्नप्रज्ञसूरी प्रतिष्ठित महावीरस्वामीकी प्रतिमा कोरंटनगरमें  
मिलती है. कोरंटनगर मारवाडमें एरणपुरकी ठावनीसें (६) को  
सपर जिसको आजकल कोरटागांव बोलते है मौजूद है. रत्नप्रभ

सूरि उपदेश गङ्गमें हुवे जो कि-पार्श्वनाथकी पट्टपरंपराकेये इस विषयको सबूती उशियानगरीके शिला लेखसें मिलती है. उशि या नगरी जोधपुरके पास पुराना गांव उजडप्राय यहांपर श्वेतांबर आमनायका मंदिर और लेख उसवरुतके बने हुवे विद्यमान है. महावीरके बाद ( १६० ) वर्ष व्यतीत होनेपर उज्जयिनीका राजा संप्रति हुवा. उसके बनाये श्वेतांबरमंदिर, शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थपर मिलते है. राजावामुदेव संवत् [ ६० ] की प्रतिष्ठित प्रतिमा महावीरस्वामीकी जो सर, ए, कनिंगहामसाहबने इस्वीसन ( १८७६ ) में मथुराके जैनटीलेसें पायी है. उसके नीचेका लेख पालीभाषामें इतिहास तिमिरनाशकके [ ६ ] पृष्ठपर उपा है. पाली भाषा दाअग्रदाइ हजारवर्ष पहले लिखोजातोथी यह इतिहास कारोंका मत है. कनिष्कराज्यके संवत् [ ६० ]-प्रथममास-तिथि पंचमी-महावीरस्वामीकी प्रतिमा प्रतिष्ठा कौटिकगण वाणिज्यकुल वयरीशाखाके आचार्यनागनंदीकी कियी हुयी-मथुराहीके जैनटी लेसें उक्त कनिंगहाम साहबने पायी और उसके लेखकी नकल बुल्लरसाहबने अपनी बनायी-"आर्थेंटीसिटी औफ धीजैनदेमी शन"-किताबमें लिखी है, कनिष्कराजा इस्वीसन ( ४० ) के आसन्न हुवा यह हंटरसाहबरचित हिंडस्थानके इतिहासमें लिखाहै.

हिंड थान और सिथिया बीचके राजाउसें पहलेके राजेका संवत् ( २० ) की बनी महावीरमूर्तिभी उक्त कनिंगहाम साहबने मथुराके जैनटीलेसें पायी और उसका लेखजो बुल्लरसाहबकी बनायी हुयी पूर्वोक्त किताबमें उपचूका है. जिनको शंसय हो देखलेवे. बस ! इनप्रमाणोसे श्वेतांबर आमनायको प्राचीनताको



कोई इनकार नहीं कर सकता, उदयपुरकेपास उडगांम जिसकों  
 सस्रमें आघाटपुर लिखा है यहां राजाभीमसेनका बनाया हुआ  
 मंदिर है, जिसका लेख मंदिरके बहार हनुमानकेपास दिवारमें  
 लगा हुआ है. मारवाममें शिरोहीकेनिकट नादियागाममें महावीर  
 के बने भ्राता नंदीवर्धनकी बनायी महावीरकी प्रतिमा विद्यमा  
 न है. जिसकों देखकर अछेमेअछे कारिगरजी कहते है अपूर्व  
 मूर्ति है. शत्रुंजय गिरनारसंम्मेतशिखर और राजगृहीक पंचपहाड  
 ये जैनके सबमें ज्यादा पुराने तीर्थ है इनपर सबजगह श्वेतांबर  
 आम्नायकी मालकी है. श्वेतांबराचार्य हीरविजयसूरिके बाद  
 शाह अकबरने जो फुरमानं तावेपत्रपर-लिखदिये है उनमें लिखा  
 हैकि-सिध्दाचलका पहाड-गिरनारका पहाड-तारंगाका पहाड  
 केशरियाका पहाड-आबुका पहाड-(जो गुजरातमें है)-राजग्रहीके  
 पंचपहाड-संम्मेत शिखर उर्फ पारमनाथ जो बंगालेमें है यं सजी  
 पूजाकी जगह और पहाडके नीचेकी जगह जो मेरेराज्यमें है चाहो  
 किसी ठिकाने जैनश्वेतांबर धर्मको हो वह श्वेतांबर धर्मके आचार्य  
 हीरविजयसूरिको देनेमें आइ है, हकीकतमें ये पूर्वोक्त सभीजगह  
 जैनश्वेतांबर धर्मवालोकी ही है. जबतक सूर्यसे दिनप्रकाशमान रहे  
 और चंद्रमासे रात रोशन रहे तबतक इसफुरमानका हुकम श्वेतांबर  
 धर्मके लोकामें सूर्यचंद्रमाकी तरह प्रकाशित रहे, कोई आदमी  
 इनको हरकत न करे, कोई इनपहाडोपर-नीचे चारों ओरकी  
 पूजाकी जगह-और तीर्थकी जगह जानवरकों न मारे, इसहुकमपर  
 अमल करे, इसहुकममें न फिरे, नयी सनंद न मागे. लिखा  
 तारिख [७] मो-माहे उर्दा बहेसमुताबेक माहे रबीयुल-अवजसने

( ३७ ) जुलसी.

इसमें अकबर लिखता है कि-“हकीकतमें ये पूर्वोक्त जगह जैनश्वेतांबरवालोंकी ही है” सोचोकि-अगर ये पुरानेतीर्थ-दिगंबर आम्नायके होतेतो बादशाहका लिखना ऐसा क्योंकर होसकता?

विना प्रमाण शंखनाद करनेको सब मुस्तेज हो जाते हैं लेकिन प्रमाणद्वारा किसीवस्तुके नतीजेपर खयाल किया जाय तो जो सच्चे हैं वही सच्चे रहेंगे. सोचोकि-अंगशास्त्रोंको जब दिगंबरने न मान्य किये तजो [८४] बोलोंका अंतर पडा और पेंम पेंमपर वादानुवाद पैदा हुवा. अगर अंगशास्त्रको मान्य रखते तो काहेको कोइ बातका अंतर आता ? अगर उतर दिया जाय कि-अंगशास्त्र पूरे नहीं रहे थोड़े हिस्से रहगये इसलिये मान्य नहीं हो सकते-परंतु यह कहना बड़ी भूलहै. केवलज्ञानके आगे मति श्रुत अवधिज्ञान आदि थोड़े हिस्से हैं. ( १४ ) पूर्व-दृष्टिवादका तिमरा अध्ययन है. चौदहपूर्वमेंसेभी (१) पूर्व रहगरा तब जैनशास्त्र पुस्तकाकार लिखे गये. एकपूर्व चौदहपूर्वका एक हिस्सा हुवा अगर हिस्सेको न मानना इसीबातपर पाबंद हो तो सभी सिद्धांतोंको मानना मोकुफ करदो. धवल-जयधवल-महा धवल-गोमटसार-आदिपुराण-हरिवंशपुराण वगेरा ग्रंथभी काहेको मानने ?-एकपूर्वपाठी मुनि अपने ज्ञानका हिस्सा प्रगटकरगयेहैं और हिस्सेको अपने मान्य रखना मंजुर नहीं. बस ! यही बात विवादकी जड हुयी. श्वेतांबरने इस जमको मूलसे नासकर दिया और दिगंबरने इसको पुष्ट किया. (८४) बोलका फर्क आया इसी जडका फल है.

(१)-दिगंबरकहते हैं श्वेतांबरमत हमारेमेंसे निकसा है. दुर्जिन क्षसमय आचार न पालनेमें शिथिलाचार धारन किया श्वेतांबर हुवे. श्वेतांबर कहतेहैं महावीरके निर्वाणमें (६०९) वर्षवाद हमारे श्वेतांबरमतमेंसे आज्ञाभंगकर छादशांगवाणीकों उथ्थापन किया दिगंबरहुवे जो इसहालकालमेंअभीतक पलता नहीं और नसाधु रहे. देखलियाजावेकि, जो सर्वज्ञकी आज्ञाभंगकर मनोकूलमत चलावे उसको हानीहीहो. श्वेतांबरमें दिगंबरमत निकला इसका प्रमाण यह है दिगंबरोंके शास्त्रमें जगह जगह श्वेतांबरका खंडन कियाहै, और श्वेतांबरोंके मूल आगमोंमें दिगंबरमतका नामभी नहींदीखता. इसप्रमाणसे जानाजाताहै श्वेतांबरशास्त्रमें दिगंबरके शास्त्र पीछे बने. क्योंकि—पहलेवालोंका खंमन पीछले करते है, पिताकेबिवाहका तमासा पुत्र नहीं देख सकता.

(२)-दिगंबरलोक श्वेतांबरको कहतेहैं ये शंमय मिथ्यादृष्टि है. उनके गोमटसागरग्रंथ [जो नेमिचंद्रआचार्यने संवत् [११३३] में बनाया है ] में कहा है—“इंदोविय शंसेयो”—परंतु यह कहना केवल पक्षपातकरके है. छादशांगवाणीकों माननवाले सदासम्य गृह्णै वे दिगंबरोंके कहनेमें मिथ्यात्वी नहीं होशकते. मिथ्यात्वी वो है जो छादशांगवाणीकों उथ्थापते हैं. नयेग्रंथबनाकर खंडदतामें चलतेहैं, और इसीसबबसे दिगंबरकों एकांतमिथ्यादृष्टि एकपक्ष पकड़नेवाले कहतेहैं, मबबकि—छादशांगवाणीमें जो जिनकल्प और स्थविरकल्प दोषकारके मुनि होने कहे हैं जिसमें कहतेहैं जिनकल्पमुनियों हम मानते हैं लेकिन उनकाभी यथार्थ स्वरूप नहीं जानते, न उनकी बराबर चलसकते, वृथा इठकरना

इसीलिये एकांतमिथ्यादृष्टिसंजी अधिक मिथ्यात्वी है. और स्थ-  
विरकल्प मुनिकों मानना कहाहै उनकों नही मानते. अपनी  
पक्षपातसे जैनसंघका उथ्थापन इसकालसे करदिया, और जि-  
नेद्रोंने पंचमकालके अंततक-साधु—साध्वी--श्रावक--श्राविका--  
( चतुर्विधसंघ ) रहना कहाहै. और दिगंबरके श्रावक श्राविका  
दोही संघ रह गये. सोजीपूरे नही.

(३) नाजिकुलकर और मरुदेवीकों श्वेतांबर कहतेहै युगली  
ये थे, और दिगंबरकहते है युगलीये नही थे, अन्यअन्य मातापिताके  
जन्मे हुवेथे इसका समाधान यहहैकि—नाजीकुलकरके वरुतमें युग  
लधर्म निवारण नही हुवाथा, क्योंकि-उसवरुत राजानही राणी  
नही दासनही दासीनही खेतीनही वामी नही असीमषीकृषी  
तीनप्रकारके कर्मनही और विवाहका होना नही था. इत्यादि  
अकर्मभूमिका व्यवहार वर्त्तनेसे युगलीयापनाही सिद्ध होताहै.  
अगर कहोगे नाभिकुलकर और उनकी स्त्री मरुदेवीके अन्यअन्य  
मातापिता थे तो दिखलाउ ! नाजिकुलकरके पिताका नाम क्या  
था ? और मरुदेवीके पिताकानाम क्या था ?—कोई शास्त्रमेनही  
है तो वृथा हठ क्यों करना !—युगलधर्म कब दुरहुवा ? इसका  
विवेचन देखते है तो विदित होता है, जब रिषभदेवभग-  
वान् राज्यगादीपर बैठे, असीमषीकृषी तीनप्रकारकेकर्म जब  
उन्होंने प्रकाशितकिये—पुरुषकी ( ७२ ) कला—स्त्रीकी ( ६४ )  
कला—और ( १०० ) प्रकारके शिल्प जब प्रचलित किये, और  
कर्मभूमिपनेका प्रवर्त्तन शुरू हुवा तब युगलधर्म निवारण हुवायह  
सबकोई जैनी मान्य रखतेहै, इसके पहले युगलधर्मका निवारण

हुवा मानना युक्तिविकल है. अगर फिरभी दृढ रखना मंजूर है तो बतलाओ ! रिपभदेवभगवान्‌के विवाहसमय इंद्रदेव क्यों आये? और विवाहकीरीति क्यों करवाइ? क्योंकि-दिगंबरके कहनेमुजब तो नाञ्जिकुलकरके वखतसेही विवाहकी रीति शुरू होचूकीथी फिर उनके वखत इंद्रदेवोंके आनसें क्या प्रयोजनथा ? अगर कहोंगे भक्तिकेलिये आये तो अन्यतीर्थकरीक विवाहमें क्यों नहीं आये इसलिये श्वेतांबरका कहना सत्य ठहरताहैकि--नाभिकुलकरके वखत युगलधर्म निवारण नहीं हुवाथा.

(४)—मुनिसुव्रततीर्थकर जब केवलीअवस्थामें ग्रामानुग्राम विचरतथे तब भृगुकुञ्ज (जरुच) नगरमें अश्वमेधयज्ञ ब्राह्मणोंने कियाथा, जिसघोमेकों होमनेकेलिये लायेथे वहघोमा पूर्वजन्ममें मुनिसुव्रतस्वामीका मित्र था, केवलज्ञानसें इसबातकों जानकर स्वामी भृगुकुञ्जनगर आये. घोमेकों प्रतिबोध दिया, उसकों जाति-स्मरण ज्ञानहुवा और अनशनकरके आठमेंदेवलोकमें देवपने उत्पन्न हुवा, यहबात शत्रुंजयमहात्ममें लिखीहै, देवगतिका आयुष्य पुरा करके फिर वह मनुष्य होगा तब अनागतकालकी चौविशीमें गणधरपदवी पावेगा. इसबातकों विनासमझे दिगंबराचार्य कहतेहै कि-श्वेतांबरमें मुनिसुव्रतस्वामीका घोमा गणधर हुवा मानते है, परंतु इसमें दिगंबराचार्यकी समझका फर्क है श्वेतांबरमान्य शास्त्रमें कोइजगह नहीं लिखाकि-घोमा गणधर हुवा.

(चोपाइ).—मुनिसुव्रतकों गणधर घोरो-एसो कहे सो जाने थोरो, बुझे नहीं असमंजस बोले-सां संतनमें तृणके तोले,  
कुन गणधर इहां घोरो भाख्यो-भूठो आल मुगधने दाख्यो,

आसिको औषध काने बाँहे- ताकों कुन गहि बाँह निभावे,  
अगर किसी दिगंबरभट्टारक-पंमित-या-श्रावकों यह गर्व  
रहता हो कि-हमारे आचार्य झूठ कैसे कहे? तो उचित है कि-श्वेतां-  
बरके किसी शास्त्रमेंजी मुनिसुव्रतस्वामीका गणधर घोडा हुवा  
औसापाठ लिखलावे.

(५)-श्वेतांबरलोग-अंतराय (५)-दान, लाज, जोग, उपजोग,  
और वीर्य (पराक्रम)-हास्य-जय-रति-अरति-शोक-डगंढा-काम-  
मिथ्यात्व-अज्ञान-निष्ठा-अविरति-राग और द्वेष-येह (१०) दोष-  
करके केवलीकों रहित मानते है, दिगंबर ये (१०) दोष विपर्यय  
मानत है, जैसे-क्षुधा-तृषा जय-शोक-रोग-जरा-मरण-जन्म-मद-मोह-  
स्नेह-प्रस्वद नींद-विस्मय-चिंता गद-रति-और विषाद-येह अठाराह  
दोष मानते है और कहते है येह अठारा दोष केवलीमें नहोने चाहिये.  
परंतु यह कहना वृथा है, क्योंकि-केवलज्ञान जो हुवा है सो (४)  
घातीकर्मके दूरहोनेसे हुवा है सो इन (४) घातीकर्मके दोषोंका  
अज्ञाव केवलीमें होना चाहिये अघातीकर्मके दोषोंका अज्ञाव  
न होना चाहिये दिगंबरने अघातीकर्मके दोषोंका अभाव माना  
है. जैसे क्षुधा-तृषा-मरण-रोग आदि ये अघातीकर्मके दोषोंका  
सदज्ञाव है सो केवलज्ञानहोनेसे दूर नही होसकता. क्योंकि-  
केवलज्ञान हुवेबादजी-वंदनीकर्म-नामकर्म गोत्रकर्म-और आयुष्य-  
कर्म-ये (४) अघातीकर्म बाकी रहते है सो येह दोषतरीके गीने नही  
जाते, क्योंकि ये दोष चारगतिमें रुलानेको समर्थ नही. अगर  
इनकों दोष मानतेहो तो नरगतिप्रमुख अन्यजी केइ दोष मानो.  
(६) दिगंबर केहते है केवलीके (४) कर्म जरीजबरी याने दग्धरज्जु-

सम्मान विफल है, सांबर कहते हैं मोहकर्मके अज्ञावसे संसारमें न रुलानेकी अपेक्षा वे विफल है, लेकिन उदयकी अपेक्षा विफल नहीं, अगर उदयकी अपेक्षाभी विफल ही है तो आयुष्यकर्म विफल होनेसे उसी वखत मुक्ति चलेजाना चाहिये, नामकर्मके विफलहोनेसे यशःकीर्ति न होना चाहिये, गात्रकर्मकविफलहोनेसे तीर्थकरणोत्रका अज्ञाव होना चाहिये, वेदनीकर्मकविफलहोनेसे निरावाधपना होना चाहिये, परंतु ये बातें जबतक वे मुक्त नहीं हुवे हैं तबतक हैं नहीं, बल्कि-चारों अघातीकर्मक उदयसे चारोंहो बातें उनमें प्रत्यक्ष विद्यमान हैं. फिर कैसे कहें शकत हैं कि-केवलीके चारकर्म विफल है केवलीको ज्ञानावरणकर्म क्षयहोनेसे अनंत-ज्ञान-दर्शनावरण क्षयहोनेसे अनंतदर्शन-मोहनीकर्मके दोषेद जिसमें दर्शनमोहनोके क्षय होनेमें क्षायिकशुद्ध मन्मय और चारित्रमोहनीके क्षय होनेसे क्षायिकशुद्ध चारित्र-और अंतरायकर्म क्षय होनेसे अनंतबोध्य-ये ( ४ ) गुण प्रकट हुवे हैं, जब अघाती कर्मक्षय जायगं तब सिद्ध अवस्थामें (४)गुण और प्रकट होयगें जैसे वेदनो कर्मके क्षयसे अनंतसुख अव्यावाधपना) नाम कर्मके क्षयसे (अगुरुलघुत्व)-और आयुष्य कर्मके क्षयसे आह्वयस्थिति-ये (५) गुण सिद्धोंके हुवे.

(७)-दियंबर कहते हैं केवलज्ञान होतेही केवलीकी काया सातधातवर्जित होजाती है, इसपर श्वेतांबर पूछते हैं सातधातवर्जित होनेका कारण क्या ! केवलज्ञान हुवा !-तो पांच या चार धातवर्जितका कारण मनःपर्याय ज्ञान की होना चाहिये, अगर मनःपर्याय ज्ञानभी कहोमें होता है तो मलकरोकी भी पांच

का चार घातवर्जित कल्पा कहना चाहिये, और कही नहीं, इस लिये यह कहना ठीक नहीं कि—ज्ञानके प्रकाश होनेसें शरीरकी घातवर्जित हो जाय अगर ऐसा होता तो एक एक ज्ञानकी वृद्धिमें एक एक या दोदो घातकावर्जित होना सब जीवोंको होता. ज्ञानका लाभ यह है कि—ज्ञेयपदार्थका जानना सात घातका और संहननका नाश होना ज्ञानावरणकर्मके नाश होनेसें नहीं होता. केवलज्ञान हानेसें ज्ञानका प्रकाश हुआ शरीर शोधन नहीं हुआ, जो सातघात न रहे. उदारिक शरीरमें संहनन होता है, संहननका होना अस्थि मांस बिना नहीं होता वैक्रियशरीरमें संहनन नहीं इसी लिये वह हारु मांस करके भी वर्जित होता है. उदारिकशरीरको सातघातकरके वर्जित कहना ठीक नहीं.

(७)—दिग्बन्ध कहते हैं तीर्थकर केवलज्ञान हुये पीछे आकाशमें चलते हैं अर्थात् जमीनपर दवरचित कमल और कमलके ऊपर अस्पृश्य होकर आप चलते हैं. सोचनेकी जगह है कि अगर तीर्थकर जगवान् आकाशमेंही चलतेहैं तो देवोंकी कमल रचना एक व्यर्थसी हुई. तीनज्ञानके धारक देव मूर्ख नहीं है, जब वे जानतेथेकि जगवान् आकाशमें चलतेहैं तो व्यर्थ कमल रचना क्यों करते ? कमलकी रचना करनेका प्रयोजन यही कहा जाताहैकि—जमीनकी रज भगवान्के चरणोंको न लगे. जगत्ताम्र स्तोत्र दिग्बन्ध श्वेतांबर दोनों आम्नायवाले मानते हैं उसीमें क्या!

जिज्ञासु ! देखो ! } पादौ यदनि तव यत्र जिनेच्छ ! अतः  
प्रमाने तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति.



इसपाठके अर्थपर दृष्टि देतेहैतो श्वेतांबरका कहना ठीक यथताहैकि-कमलपर भगवान् पैर देकर ही चलतेहै.

[७]-दिगंबरकहतेहै केवलीके शरीरसें द्रव्य हिंसा नहीं होती; श्वेतांबरकहतेहै होतीहै, क्योंकि- केवली सयोगीहै. योगहै सो सकंपमान सव्यापार है. सव्यापार होनेसें सक्रिय है. जो जो सक्रियहै उससें द्रव्यहिंसा बच नहीं सकती. दिगंबर आम्नायके द्रव्यसंग्रहकी वृत्तिमें जहां चारित्रका अधिकार चज्ञाहै ज्ञिखाहै कि-योगत्रयके व्यापारसें जिनेश्वरजी चारित्रकों मलीन करतेहै. इसका पाठ इस प्रकार है. संयोगि केवलीनो यथाख्यातंचारित्रं-ननुपरमयथाख्यातं चौराज्ज वेपि चौरसंसर्गिणत् मोहोदयाभावेपि योगत्रयव्यापारश्चारित्रमलं जनयतीतिद्रव्यसंग्रहवृत्तौ-कोऽ इसमें तर्क करेकि-केवलज्ञानी सब जीवोंको ज्ञानमें देखरहेहै फिर कैसे हिंसा करेंगे ?-इसका उत्तर-केवलज्ञानसें बेशक देखरहेहै उनका इरादा हिंसा करनेका नहीं इसलिये उनको पापजी नहीं लगता परंतु कायाकरके पाचस्थावरोंकी जो हिंसा होरही है उसको कैसे बचाय सकते हैं ?-इसपर कहाजायकि-द्रव्यहिंसा तो होती है लेकिन कहनेमात्रही है तो कहिये ! क्या ! ! उनस्थावरजीवोंका मृत्यु नहीं हुवा ?-फिर यह कहाजायकि--उनको पाप नहीं लगता इस अपेक्षा कहने मात्र है तो श्वेतांबर और क्या कहते हैं ? वही तो यही कहतेहै कि-द्रव्यहिंसा हुयी याने उनजीवाका मृत्यु हुवा परंतु पाप नहीं लगा याने ज्ञाव करके हिंसा नहीं हुयी परंतु द्रव्य हिंसाका अज्ञाव तो नहीं हुवा ?-अर्थात् इर्यापथिकी क्रिया तो लगी. क्योंकि-तेरहमें गुणस्थानपरजी इर्यापथिकी क्रिया कही है.

(१०)-दिगंबरकहतेहैं केवली कबलाहार नहीं करते नोकर्म वर्गणाहार करतेहैं, श्वेतांबरकहतेहैं कबलाहारही करते हैं, इसका समाधान-अगर कबलाहार केवली नहीं करतेहैं तो सोचोकि-छोटी उमरमें किसीमनिकों केवलज्ञान होगया और उनकी उमर विशेष है तो उनके शरीरकी वधवारी किसकागणमें होगी. दोनों आम्नायमें यहबात मंजूरहैकि-जघन्यमें आठवर्षकी उमरवालेकों केवलज्ञान होजाय और उनकी उत्कृष्ट आयुस्थिति किसीकिमीकी क्रोडपर्वकीज्जी होती है. अगर कहेंग कबलाहार नहीं करते और वृद्धि होती है तो सवालहोनेकी जगह है क्या ! शरीरकी वृद्धि ज्ञानमें हुयी ? अगरजो ज्ञानमें हुयी तौ क्या ! चैतन्य स्वभावमें शरीरकी वृद्धि मानतेहो ?-ऐसा मानो तो आत्मस्वभाव जड हुवा, क्योंकि-जडमें जडकी वृद्धि होती है, ज्ञानमें जडकी वृद्धि नहीं, ज्ञानमेंतो ज्ञातृत्वशक्तिकी वृद्धि होतीहै जडकी वृद्धि नहीं होता. इसलिये केवलीकों कबलाहारही कहना ठीक है.

[ सवेया. ]

केवलीआहारकरे जागेअग्निअंतरकी वेदनीआहारशक्ति ताकी-नहीहीनता, हेतुकेसमाजमें घटेजुंकाजसाजथुअ लाजे तहांआज खुंक ज्ञानीकहादीनता, अन्यथा न अष्टवर्ष बालकेवली विशाल पूर्वकोटिआठपाल ताकूंष्टाक्षीनता वृद्धि पोषदाइजाइ वर्णा कहांमुपाइ ? ज्ञानते जू आइ तामें मुक्तिकी प्रवीणता.

नो कर्मवर्गणा आहार कहना ठीक नहीं. कर्मोंकी प्रकृतिका जो उदय-उसका जो भोगना उसीको दिगंबर लोग ने,कर्मवर्गणा,अहार कहते है. यहां सवाल होनेकी जगह

है कि इसके आहार करनेसे क्षुधातृषादि जो शरीरको लग रहे है उनकी तृप्ति कैसे हो सकती है ?—इसलिये कबलाहारही कहना ठीक है. उदारिक शरीरकी स्थिति कबलाहारहीसे है. अभ्यथा प्रत्यक्षविरोध होता है. तत्त्वार्थसूत्रके नवमें अध्यायमें जहां परिसहोका वर्णन है वहां लिखा है. मोक्षाच्यवननिर्जरार्थं प रिषोढव्याःपरिसहाः—क्षुतापिपामाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यरातिस्त्री चर्यानिषद्यःशय्याक्रोशवयाचनालाभरोगतृणस्पर्शमजसत्कारगुर स्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि सूक्ष्मंपराय उद्गमस्थवीतरागभोक्षनुर्दश एकादशाजिने-बादरसांपराये सर्वे—ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने-दर्शनमो हांतराययोःदर्शनालाजौ—चारित्रमोहे नाग्न्यरातिस्त्रीनिषद्याक्रोश वाचनासत्कारपुरस्काराः वेदनीयेशेषाः—एकादयोभाज्याः—गुणप देकास्मिन्नेकोनविंशतेः—अर्थः—ज्ञानावरण-दर्शनावरण-मोह-अंत- राय—और वेदनी इन पांच कर्मोंके उदयसे परिसह उत्पन्न होते है और इनको मोक्षार्थीजीव निर्जरार्थ और मोक्षमार्गसे अच्य वनार्थ सहन करते है. सूक्ष्मसांपराय और उद्गमस्थवीतराग गुण स्थानवर्त्तिकों—क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, अला भ, प्रज्ञा, अज्ञान, शय्या, वय, रोग, तृण-स्पर्श, और मल, ये (१४) परिसह होते है,—एकादशाजिने—अर्थात् तेरहमें गुणस्थान वर्त्तिकों—क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, शय्या, वय रोग, तृण स्पर्श, और मल,—ये (११) परि-ह होते है. क्योंकि तेरहमें गुणस्थानपर परिसह उत्पन्न करनेवाला एक वेदनी ही कर्म रहा है. बादरसांपराय गुणस्थानवर्त्तिकों ( १२ ) परिसह उत्पन्न होते है. किसीको एक—किसीको दो—किसीको तीन—इ-

सी प्रकार किमीको संपूर्ण परिसहोका उदय हो जाय तो (१४) परिसहसे अधिकका उदय न हो. क्यों कि—जहां शीत वहां उष्ण नहीं और जहां उष्ण वहां शीत नहीं. जहां चर्या वहां शय्या निषद्या नहीं; जहां शय्या वहां चर्या निषद्या नहीं, और जहां निषद्या वहां शय्या चर्या नहीं. बाइसपरिसहोंमें मज्ञा और अज्ञान यह दो परिसह ज्ञानावरण कर्मके उदयमें होते हैं दर्शन और अज्ञान यह दो दर्शनमोह और अंतरायकर्मके उदयमें होते हैं. नाग्न्य-अराति-स्त्री-निषद्या-आक्रोश-याचना-और सत्कारपुरस्कार—यह सातपरिसह चारित्र मोहकर्मके उदयमें होते हैं सुधा-तृषा-शीत-उष्ण दंष्ट्रमशक-चर्या-शय्या-वध-रोग-तृष्णस्पर्श-और मज्ज ये (११) ग्यारहपरिसह वेदनीकर्मके उदयमें होते हैं. केवलीकों वेदनीकर्म मौजूद है इसीलिये उनको ग्यारहपरिसह का सद्भाव कहा. फिर सुधा तृषाका अभाव कैसे कह सकते हो ?—क्यों कि—केवलज्ञान हुवे पहले भी वेदनीकर्मजन्य ग्यारह परिसह उनका थे वेही ग्यारहपरिसह केवलज्ञान हुवे पीछे भी रहे तो कवलाहार करना सिद्ध हुवाही. बिना कवलाहार जैसे पहले कायाकी स्थिति नहीं होसकतीथी तद्वत् केवली अवस्थायें भी नहीं होशकती. अगर कहोगे केवलज्ञानमें शरीरकी स्थिति होती है तो यह बात कृथा है. केवल ज्ञानकाविषय ज्ञेयपदार्थके ज्ञाननंका है. शरीरकी स्थिति या वृद्धि करनेका नहीं.

दिगंबर इसपर कहते हैं ग्यारहपरिसह जो तत्त्वार्थसूत्रमें लिखे हैं वे बेवक ! केवलीको है लेकिन उपचारमात्र है कुञ्जाकर्मावसारी नहीं. भोतांबरकहते हैं यह कहना ठीक नहीं. ग्यारहपरिसह

उनके शरीरपर वर्तते है जबतक वेदनीकर्म नहीं छूटाहे तबतक उपचारमात्र कैसे कहसकतेहो ?-उपचार उसको कहतेहै जो बात वास्तवमें न हो और आरोप करके कहीजाय-उपचारका लक्षण ए. अन्यत्र नसिद्धस्य धर्मस्य अन्यत्रारोपणमुपचारः सो क्या ग्यारहपरिसह केवलीमें नहीं है?—वृथाही कहना पडता है?—अगर वृथाही कहते हो तो वेदनोआदि चार अघातीकर्म है वेनी वृथा कहो जब अघातीकर्म वृथा हुवे तो चारघातीकर्मके नाश होतेही मुक्ति होजाना चाहिये. और होते नहीं—बतलाइये ? फिर मुक्त होतको रोकनेमें दूसरा कौन कारण रहा ?—इसलिये चारअघाती कर्मको कार्यकारी मानना चाहिये. जो उनको मुक्ति जानेसे रोक रहेहै. इनको उपचारमात्र कहना वृथा है. दिगंबरने केवलीको अठाराह दोष करके रहित माना उसमेंजी विरुद्धता है. सोचो कि—एकदशजिने-अर्थात् केवलीको (११) परिसहजी बतलातेहै. और सुधा, तृषादिकदोष रहितभी कहते जातेहै. ऐसा विरुद्ध वचन कैसे संभवे ?—हकीकतमें तो दिगंबरोंने छ्वादशांगवानीके सिद्धांत उद्घापन किये तब ऐसी कल्पितवातोंका सहारा लेना पडा सब है कि-जो मनुष्य कल्पित शास्त्र गुंथे उनका ऐसाही विरुद्ध आशय होता है. और बातबातमें अटकना पडता है. इसलिये केवलोको कबलाहारकरना सिद्ध हुवा. इसबातमें दिगंबर वृथा हठ करते है.

फिर दिगंबरोंका कहना यहहैकि-केवली आहारकरतेसमय जब घ्रास उठायें तो मूर्छा आयी, इसपरश्वेतांबरका कहतेहै केवली विहारकरतेसमय जब कदम उठाते है समयसरणमें सिंहासन

परबैठतेहै तबजी कहो मूर्छा आयी. तो ऐसा कहना ठीक नहीं, मोह कर्मकेनाशसें मूर्छाका अज्ञावतो उनको पहलेही हो चुकाहै. फिर मूर्छाका कहना पापबंधका कारणहै. वृथाकुतर्क करना ठीक नहीं. दिगंबरआम्नायमें तत्त्वार्थसूत्र प्रमाणहै सो वोजी श्वेतांबर आचार्य उमास्वातिका रचाहुवा है. हठकरके दिगंबरोंने अपना मानलियाहै उसके अक्षरार्थ देखनेसेंजी क्षुधा तृषादि परिसह केवलीकों रहे और कवलाआहार सिद्ध हुवा. फिर न मालूम दिगंबरलोक कौन ग्रंथके प्रमाणकरके कवलाहार नहीं मानते है?—फिर दिगंबर कहते है क्या ! अशातावेदनी कर्मजी केवलीकों है ?—उत्तर-शाता अशातावेदनी दोनों केवलीको है. अगर अशातावेदनी कर्म न होता तो किसकर्मकी निर्जरार्थ उनको परिसहसहन करना कहा !—अलबते ! इतना जरूर हैकि—उनको शातावेदनी कर्मका उदय ज्यादाहै अशातावेदनीका थोडा है, लेकीन है दोनों-फिर दिगंबरका कहनाहै कि-जब उन्होंनें कवलाहार करलिया तो क्षुधा तृषादि परिसहकासहना कहां रहा ?—उत्तर-क्यों नहीं रहा !—सोचोकि-केवलज्ञानमें उन्होंको ज्ञासन हुवा अमूक समयमें हमको आहार लेना होगा. जबतक वहसमय नहीं आयाहै उससें पहले समझो उनको अशातावेदनीके उदयसें क्षुधातृषाका सद्भाव हुवा उतनाकाल वह उसको सहन करेंगे वही उनको क्षुधा तृषा परिसह सहना है. अगर इसबातको नहीं मानते हो तो (११) परिसहभी न मानना चाहिये. बस ! तत्त्वार्थसूत्रके एकादशजिने—इसपाठपर कलम फेरदो. केवलीको क्षुधातृषाका सद्भाव सुनकर नाराजी आतीहै तोशीत

उभयपरिसहके लियेजी इनकार करदो. और यहभी कहदो कि-दंष्ट्रामशकजी उनके शरीरपर नही बैठने पाते. फिर चर्या-शय्या-अध-रोग-तृणस्पर्श-और मल ये परिसहजी काहेकों कहना? जब धुधातृषा उत्थापन कियी तो और परिसहजी नही मानना चाहिये. जब और परिसहभी नही माने तो आज्ञाभंगका दूषण आया और तत्त्वार्थसूत्रकी सनंद नही रही. अगर फिर यह तर्क कियीजायकि-आहारकरलिया तो परिसह सहना कहां रहा?-इसका उत्तर-केवली जब उद्यस्थ थे तबजी आहार करतेथे और परिसह सहन होता था तद्यत् केवल अवस्थामेंभी आहार किया और अज्ञातावेदनीकी निर्जरार्थ परिसह सहन करते रहे इसमें विरोध क्या ! हुवा ?-विना विचारे तर्क करना वृथा है. अगर कहोगे उनका अनंतबल कहां रहा? हमकहते है अनंतबल क्यों नही रहा ?-बलका अस्तित्व जो है सो उनमें मौजूद है जो अंतरायकर्मके क्षयमें हुवाहै उसकों आहारके पुद्गल आवरण नही करशक्ते जिससे अनंत बल घट जाय, आहार अनंतबल घटाने बढ़ानेका कारण नही. अंतराय कर्मके नाश होतेही अनंत बल प्रकट होताहै वह क्या ! आहारकरनेसे घटवढ शकताहै ?-इसलिये कवलाहार करनेसे अनंतबलमें कोई विरोध नही आता, न सर्वज्ञतामेंभी कवलाहारके साथ विरोध है. प्रमाणनयतत्वलो कालंकारके प्रथम अध्यायमें--कवलाहारसर्वज्ञत्वयोरविरोधात्-इससूत्रपर टीकाकारने बहोतकुछ समालोचना कियी है. यहां कितना लिखें ?-

( १.१. )-दिग्गंबर कहतेहै तीर्थकरोके निर्वाण हुवेबादउनका

शरीर कर्पूरवत् खीर जाता है, फिर देवते आनकर नयाशरीर रचके उसका अग्निसंस्कार करते हैं. श्वेतांबर कहते हैं तीर्थंकरों का शरीर खीरता नहीं. उदारिकशरीरका स्वभाव खीरनेका नहीं. क्योंकि-वह बंधन संघातनसहित है. सो कैसे खीरे?—खीरजानेका हेतु क्या?—

(१२)—श्वेतांबर कहते हैं तीर्थंकरोंके निर्वाण हुवे बाद इंद्रदेव उनके शरीरका अग्निसंस्कार करके उनकी डाढा ( फुल ) देव लोकमें लेजाकर रत्नटीपारोंमें रखके पूजते हैं. दिगंबर कहते हैं तीर्थंकरोंका असलीशरीर कर्पूरवत् खीरजाता है केवल नख के श नहीं खीरते, उन नखकेशोंको देवलोकमें लेजाकर रत्नटीपारोंमें रखके पूजते हैं.

( १३ )-दिगंबर कहते हैं केवली बोलते नहीं किंतु शिर से नाद पैदा होता है. धर्मोपदेश वगेरामेंजी इसी प्रकार शिरसेही नाद उठता है.—श्वेतांबर कहते हैं केवली बोलते हैं. शिरसे नाद होनेका कोई प्रयोजन नहीं. अगर प्रयोजन है तो उसमें हेतुक्या? धर्मदशनामें मालकोस जीमपलासी वगेरा मधुरी रागरागणीसे धर्मोपदेश करते हैं यह बात युक्तिद्वारा सबकिसीको मान्य हो सकती है. जिसको साहूरी वाणी बोलनेकी शक्ति है वे निरक्षरी वाणी क्यों बोलेंगे?—क्या ! उरः—कंठ—शिर—जीव्हामुल—दंत—नाशिका—ओष्ठ—और तालु—ये आठ स्थान जिनसे वर्णाक्षरकी उत्पत्ति है केवलीके नहीं रहे ? जो शिरसे नाद उठे?

[१४]—महावीरस्वामीका विवाह हुवा उनको पुत्री हुयी और वह जमाली जातके मालीको विवाही यह बात कहकर दिगं



बरलोक श्वेतांबरकों आलोचना देतेहैं. परंतु इसमें उनकी समझका फर्कहै. श्वेतांबरलोक महावीरका विवाह हुवा-उनकों पुत्री हुयी और वह जमाली नामके राजकुमारकों विवाही गयी-जरूर मान ते है. कौनकहता हैं जमाली मालीजातिका था ? विना प्रमाण कोई बात कहदेना धर्मीजनोंका काम नहीं. कौनसे शास्त्रमें जमालीकों माली लिखा है ? प्रमाण देना चाहिये.

(१५)-दिगंबर कहतेहैं जिनप्रतिमाका स्वरूप वीतराग कहा सरागकरके क्यों पूजते हो ?-गेहना आभूषणमें श्रृंगारी हुयी प्रतिमामें वीतरागपना कहाँ रहा ? श्वेतांबर कहतेहैं क्यों नहीं रहा ! जब वे निरागी हैं हम उनकी उचितभक्ति करके गेहने आभूषण पहनाने हैं इससे उनके वीतरागभावकी हानी क्योंकर होशकती है?-हमारे जोले जाइ दिगंबर प्रश्रुतों कर बैठते हैं परंतु तत्वकों नहीं विचारते. वीतरागभावका अज्ञाव आभूषण आदिकसें नहीं होता. समवसरणमें रत्नसिंहासनपर जब बैठतेथे छत्र चवर होतेथे तब गणधर और इंद्रदेवआदि वीतराग कहकर उनकी स्तुति करतेथे. सोचोकि-अगर उनका वीतरागज्ञाव चला गया होतातो वे उनकों वीतराग कहकर क्यों मानते पूजते !-इसलिये वीतरागज्ञावका अभाव आभूषणादिकसें नहीं होता जैसाकि-कंगालदशा दर्शनसें होताहै, भाववस्तु बाह्य नहीं किंतु अभ्यंतर है यही मानना मुनासब है, अगर केवल वीतरागभावकोंही मानना स्वीकार है तो स्नान कराना-केशरधंदनपुष्प चढाना-रथारोहन करना-तुमारी अपेक्षा वृथा है न करना चाहिये. वीतरागहुवे बाद कौनसें रौज वे रथपर चढेथे ?-कब सचित्त जलसें स्नान

कियाथा ?—और केसरचंदनविलेपन करायाथा ? तुम लोक क्यों करते हो ?—सिंहासन छत्र भामंडलआदि जिनप्रतिमासें मिलाकर रखते हो क्या ! यह आभूषण नहीं है ?—निर्ग्रन्थअवस्थाही मानना प्रमाण है तो कहिये ! उस अवस्थाको प्रतिमाकों रथमें सवार करके फिराना किस आगमका लेख है ?—अगर कहोंगे भक्तिप्रभावना है तो सोचो ! श्वेतांबर और क्या कहते है ? वेज्जी तो भक्तिप्रभावनाही कहतेहै. अगर कहोंगे सबकुछ किया परंतु शरीरका रूपतों हमने नहीं बदला ? हम कहतेहै यह तर्क मूर्खोंकी है बिघा नोकी नहीं. किसीने हेयवस्तुके त्यागीकों हेयवस्तुके समुहपर बिठाया और किसीने हेयवस्तु उनके शरीरपर रखी-ज्ञातापुरुषों की समज मुजब तो दोनों एक सरस्वीबात है. हठवादीयोंकी बात अलग है.

क्षुल्लकधर्मदासजीके उत्तरमें पंडितऊरगदलाल लिखते है हम तो वीतरागभावकी वर्द्धक प्रतिमा मानते है. हम पूछते है जब वीतरागज्ञाव वर्द्धक प्रतिमा ही मान्य है तो प्रतिष्ठा समय जन्मसंस्कार-विवाहसंस्कार-कलशारोपण-वगेरा क्यों करना ? क्या उससमय रागभाववर्द्धक वह मूर्ति नहीं है ? वीतरागकी मुर्त्तिपर ऐसेकार्य करने और दूसरा करेतो उसका उपहास्य करना यही तो मुख्तताका कारण है. सोचो तो वीतरागज्ञाव उससमय उत्पन्न होताहै जब केवलज्ञानका उदय आवे. उससें पहले तो संपूर्ण कार्य सरागज्ञावका कारण है, अगर एसाही आग्रह है तो एक निर्वाणकोंही मानके अन्यसंपूर्णकृत्य छोड दो. महाशय ! कहना तो सहज है लेकीन उस मुजब चलना सहज नहीं. देखो ! जिस

मूर्तिकों श्वेतांबर पूजते हैं उसके और दिगंबर मतिमाके मध्य केवल आभूषणआदिका अंतर है, इसके शिवाय समयलब्धि पायकर औरजी केइ अंतरपडते गये. जैसे खम्हे आकारनग्नमूर्ति जिसका पुरुषचिन्ह लटकता हुवा महाविज्रत्साकार नजर आताहे देखकर मारीडनिया नाक चढाती है एसी जिनमूर्ति बनाना कोइ दिगंबर शास्त्रमें नही लिखा गडरीया प्रवाह चलपमाहै, दिगंबरलोक इसवातकोंविशेष पुष्ट करतेहै और कहतेहैकि-केइ तीर्थकर खडगासन मुक्ति हुवे है उनकी नकल हम बनातेहै. हम पूजते है वे नग्न दिसते थे ?नही दिसतेथे-तो फिर एसी नीचमूर्ति क्यों बनाना ?-जिसमें उज्जयलोक विरुद्धता प्राप्त हो. जबकिसी शहरमें दिगंबरोंकी रथयात्राका महोत्सव होताहै सज्जी मनुष्य नोंदा करते है और कहते है बडी अयोग्य बात है कि-नग्नदेव मूर्ति नगरमें फिरायी गयो. देखिये ! छादशांगीके सिद्धांतोंको उ थापन किये-मनःकल्पित सिद्धांत बनाकर उस मुजब चलना शुरूकिया-तो एसी नोंदाका पात्र होना पडा. छादशांगवाणीके सिद्धांतोंमें पद्मासन जिनमूर्ति बनाना लिखा है, जिसमें उनके नग्नस्वरूपमें और लोक व्यवहारमें दोनोंमें विरोध नही आता.

दिगंबर कहते है अरिहंतदेव वस्त्रके त्यागी थे उनकों अंगीयां पह्राना ठीक नहीं. ( उत्तर )-अरिहंतदेव स्नानविलेपनके त्यागी थे सो भी कराना ठीक नहीं. अगर भक्तिसें कराते हों तो अंगीयां भी भक्तिहीसे पह्रनायी जाती है अगर भोग्यवस्तुके त्यागीकों भोग्यवस्तुका संबंध कराना नामंजूरही है तो तुमकों अरिहंतदेवके सामने नैवेद्यजी न चढाना चाहिये. केवल ज्ञान

हुवे बाद अरिहंतदेवकों तुम आहारके त्यागी मानते हो. जो बात शास्त्राज्ञासँ प्रतिकूल हो ओमना चाहिये. जैसे रात्रीको देव पूजा करना कोइ शास्त्रमें नही लिखा आरात्रिका (आरती) कराना यही सायंकालकी पूजा है. दिगंबर लोक-अनंत चौदश (जो भाष्पद सूदीमें आती है) -शरदपुनम-और दीपमाला (दीवाली) के रोज-रात्रीकों अष्टध्व्यसँ जिनपूजा करते है यह शास्त्राज्ञाविरुद्ध है. और दुसरा एक यह ब्रह्मा अनर्थ करते है कि-जब कभी बड़ीपूजन करायी जाती है तो मंदिरमें प्रतिष्ठा की हुयी प्रतिमाजीके होते हुवे पूजनके समय एक ठवणा रखकर वहां भगवान्का आह्वान ओर विसर्जन करते है यह कितना बड़ा अनर्थ है कि-जगवान्के साक्षात् विराजमान होते हुवे आह्वान विसर्जन किया जाय. इससँतो प्रतिमाजीका होना सर्वथा व्यर्थ समझा गया. क्योंकि-पूजा तो उस देवकी हुयी जिसका आह्वानकरके विसर्जन किया.

फिर दिगंबरलोक जिनप्रतिमाकों नेत्र लगे हुवे देखकर उपहास्य करते है. कहतेहै क्या ! जिनमूर्ति अंधी है जो नेत्र लगाये जाय ? ( इसका उत्तर )-महाशय-जिनप्रतिमा अंधी नहीहै कहने वालेही अंधे है जो जिनप्रतिमाकों तदाकार नही देखते. जिनेद्र देवकी भ्रूश्यामरंग थी सो श्वेतांबरलोक उनकी प्रतिमामें श्यामरंगकी भूवनाते है, अधर लालरंग थे सो लाल बनाते है, हाथपांव के तल्लें लाल थे सोजी लाल बनाते है, नेत्र उनके चमकते थे जैसे रत्न चमकते है अब उसजगह उसी रूपका स्वरूप बनानेके कारण नेत्रजी स्फटिकरत्नके चमकते लगाते है. कहिये ! इसमें

कौनसी विपरीत बात हुयी ?-वृथा हंसी करना मूर्खोंका काम है. दिगंबरलोक कहते तो हैकि-जिनेन्द्रकी प्रतिमाकों हम तत्सदृश बनाते है लेकिन कहनेहीमात्र है. बनती नही. जबतदाकार नही बनी तो तदाकार कहना वृथा है. क्या ! नग्नस्वरूप लटकता हुवा पुरुषचिन्ह बनादिया इसीसे तदाकारता हो गयी ?-सोचो ! जिनेन्द्र नग्न होते हुवे भी दूसरेकों नग्न दिसते थे ?-विशेष क्या ! लिखे ?-छादशांग बाणीके सिद्धांतोमे जो कुछ लिखा है उसी मुताबिक श्वेतांबरलोक करते है दिगंबर नही करते. शास्त्रमें वीतरागज्ञावका वर्नन इसप्रकार किया है.-

( मालिनी वृत्तं )

प्रशमरसनिमग्नदृष्टियुगं प्रसन्नं,  
वदनकमलमंकःकामिनीमंगशून्यः,  
करयुगमपि धत्ते शस्त्रसंबंधवंध्यं,  
तदसिजगति देवो वीतराग ! त्वमेव, १

मित्रवर ! पक्षपात त्यागकर कहना उपर लिखा हुवा वीतरागज्ञाव श्वेतांबर प्रतिमामें है या नही ? यदि है तो तुमारे तर्क व्यर्थ है.

( १६ )-दिगंबरलोक कस्तूरीकों अपवित्र कहते है और मंदिरमें छेजाना बुरा गिनते है परंतु इन्हींके ज्ञाई वीशंपंथी बुरा नही गिनते. सोचनेकी जगह हैकि-अगर कस्तूरी अपवित्रही है तो मृदंग-सारंगो-बगेरा चमडेके बाजे जो मंदिरमें बजाये जाते है वे कैस पवित्र हुवे ?-यहां कोइ तर्क करेकि-तेरहपंथी चमडेके बाजे मंदिरमें नही छेजाते तो एसा कहनाभी व्यर्थ है. क्योंकि-तेरहपंथी

लोक अंग्रेजीके बने हुवे कपडे पहनेकर मंदिरमें जाते है. जिसमें अनेक रंग रुधिरके सहारेसे रंगनेमें आते है. और बहुधा तेरहपंथीयोंकी स्त्रियों अपनेबालकोंके गलेमें सिंह-बीजुआदिके नस्लोंका तथा कोडीयोंका-हार मालती है और उसकों मंदिरमें लेजाते है. हम पूछते है क्या! ये कस्तुरीसें अच्छे है ?-अगर उत्पत्तिकी अपेक्षा कस्तूरी त्रस जीवका अवयव होनेसें अपवित्र मानते हो तो मुनिकों मयूरपींठी-और चमरी गायके केशकी पींठीजी अपवित्र होनेसें न रखना चाहिये. क्योंकि त्रसजीवका अवयव है. और इसी प्रकार रेशम-लोह-कंबल-दूशाला-आदिजी समष्टो. परंतु हकीकतमें दिगंबरोकी समष्टका फर्क है. जो वस्तु व्यवहारमें पवित्र है वह पवित्रही मानी जाती है जिनप्रतिमाकों चढाना अयोग्य नहीं. यदि उत्पत्तिकी अपेक्षा वस्तुकी पवित्रतापर खयाल रखना मंजूर है तो प्रतिमाजीकों स्नान करानाभी बंद करदो. क्योंकि-सर्व अपवित्रतासें जल संमीलित है. अनेक-मूत्र-कण्डू-मांस-आदि जीवोंका अवयव करके सहित है. थलचर-खेचरजीवोंका उत्सृष्ट है और मूत्र-पूरीष-हाड-मांस आदि करके संयोजित है. इसलिये आप लोकोंकी बारीकीके आगे जलजी अपवित्र ठेरता है.

(१७) चर्मकी मशकका नीर-और चर्मके भांडेका घृत-खानेसें दिगंबर कहते है मांसभक्षणका दोष लगता है. श्वेतांबर कहते है शुष्कचर्मकी मशकका नीर और शुष्कचर्मके भांडेका घृत-खानेसें मांसका दोष नहीं लगता. मांसका दोष तो जब लगे अगर मांस वा-मांसमिश्रित पदार्थ खाया जाय शुष्कचर्म न मांस है न मांस मिश्रित है. इतनेपरन्ती इसमें मांस भक्षण दोष मानना मंजूर है

तो चीनी खांडकी खांची जिसमें अनंत निगोदराशि पड़ती है पंचेंद्रियआदि जोवका शरीरभी गलता है-क्लेवर उसमें प्रत्यक्ष दिसते हैं-न खाना चाहिये, सांवरलौनकी उत्पत्ति देखते हैं तो महा अपावन है, यहां हम अपनी आंखोंसे देखी हुयी हकीकत लिखते हैं कि-जब हमने संवत् ( १९४७ ) के मार्गशीर्षमहिनेमें दिल्लीमें विहार किया और मथुराकों आतेथे, रास्तेमें फरुखनगर के निकटवर्त्तास्थानोंमें खारीनीमक बनता देखा था. जो गौ-महिषो-आदि पशुओंके खोपड़ेकी हमीके सहारेसे जमाया जाताथा. और पूछनेपर उनलोकोंने कहाथाकि-बिना हमीके ये नीमक नहीं बनता. उत्पत्तिकी अपेक्षा अगर खयाल किया जाय तो यह नीमकजी न खाना चाहिये. उधकी उत्पत्ति कच्चा मांसमेंसे प्रत्यक्ष है इसमेंभी कहदो मांसभक्षणका दोष है. क्या बतावे ! दिगंबरलोक-चीनीखांड-खारी ( सांवर ) नीमक-आदि तो खातेहैं और सूकेचर्मकी मशका नीर-तथा सूकेचर्मके जामेका घृतमें न मालूम किस हेतु परेज करते हैं, सो विदित न हुवा.

( १० )-दिगंबर कहतेहैं अव्यचारित्र बिना मुक्ति नहीं होती; श्वेतांबर कहते हैं जावचारित्र उदय आजाय तो अव्यचारित्र हो चाहे न हो मुक्ति हो सकती है. अगर अव्यचारित्रही कार्यकारी है तो कहो ! अव्यचारित्र जीवका स्वस्वभाव है या परस्वभाव है. अगर स्वस्वभाव है तो अभव्यजीवकोंभी द्रव्यचारित्र उदय आता है मुक्ति होना चाहिये. और परस्वभाव है तो परस्वभाव बिना मुक्ति न हुयी ऐसा मानो. परंतु हकीकतमें दिगंबरोंकी समझकाही फर्क है. जबतक विषयोंसे मन नहीं

निवर्त्ता है चाहे साधु होजाउ या गृहस्थ रहो मुक्ति न होगी जब मन शुद्ध होजायगा अर्थात् जावचारित्र उदय आयगा मुक्ति होतेको कोई न रोक सकेगा.

( १.ए )-दिगंबर कहते है शुद्धकों मुक्ति नहीं होती, श्वेतांबर कहते होती है. मुक्तिका रस्ता सम्यक्ज्ञान दर्शन और चारित्रहै. तत्त्वार्थसूत्रके प्रथम अध्यायमें क्या कहाहै ? सम्यक् दर्शनज्ञान चारित्राणि-मोक्षमार्गः-जो मनुष्य इसमार्गपर चलेगा उसकी मुक्ति कौन रोक सकेगा ?-जन्मकी अपेक्षा जो जातिहीन है वह उत्तम क्रिया करने परज्नी उत्तम न समझा जाय यह कोई प्रमाणकरने योग्य बात नहो. किसी दिगंबरशास्त्रमें जातिभेद जन्मकी अपेक्षा नहीं लिखा किंतु गुणकर्मकी अपेक्षा लिखाहै. जिसकों श्वेतांबर भी मानते है. क्या ! कोई ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न होकर चांडाली-कर्म स्वीकार करे वह ब्राह्मणही रह सकता है ?-कभी नहीं. इसी प्रकार जो शुद्धकुलमें जन्म लेकर शुद्ध आचरणसे विचरे उसकी किसी दिगंबरशास्त्रमें दीक्षा निषेध नहीं कियी, जबतक कोई ठीक प्रमाण न होगा विद्वान् नहीं मानेंगे दिगंबरोंको पांचमें जिनसेनाचार्यके लेखोपर पूरा विश्वास नहीं करना चाहिये क्योंकि-एक ब्राह्मणका पुत्र एक भट्टारकका रसोदया था. कुछ दिनपीठे चेला होकर कितनेक ग्रंथोंकी रचना कियी, जो दिगंबर मतके शास्त्रोंसे बहुधा प्रतिकूल है. जैसेकि-हरिवंशपुराणमेंलिखा हैकि-जरासिंघके तथा कृष्णजीके मरनेपर इनके पीछलोंने श्राद्ध किया और तिलांजलि दियी. इसमें सर्वथा अपने ब्राह्मणधर्म कों स्थापन किया है.



( १० )—दिगंबर कहते हैं जैनीके शिवाय इसरे मतावलंबीके घरका बनाहुवा आहारपानी मुनिकों लेना उचित नहीं. श्वेतांबर कहते हैं जो मनुष्य (चाहे वो जैनी हों वा अन्यधर्मी हो) शुद्धआहार व्यवहार रखता है उसके घरका हरेक पदार्थ मुनिकों लेना उचित है. यदि ऐसाही हो जैसाकि-दिगंबरलोक कहतेहैं तब तो प्रथम उनकों जैनीके शिवाय अन्यकिसीसे संबंधही नहींरखना चाहिये. दूसरी यहभी बात है कि-जैनी-जैनधर्मपालने और श्रद्धा रखनेवालेका नाम है. आजकल अनेक दिगंबरी ऐसे देखनेमें आतेहैं जिनोंने जन्म समयसे लगा आजतक अपने धर्मका तत्व नहीं जाना, कोरे नामके जैनी हैं, यदिकोई जैनमुनि इसके घरका आहार ग्रहण करे तो सोचना चाहिये, वो शुद्ध क्योंकर हो सकता है? क्योंकि-उसकों तो शुद्धाशुद्धका ज्ञान नहीं, इसलिये पक्षपातरहित मनुष्योंकों यथार्थ वस्तु जहांसे मिले विन रागद्वेष ग्रहण करलेनी योग्य है. यदि मुनि किसी घर प्रवे करनेसे द्वेषभाव करे तो छषण लगता है. असत्तत्त्वतो यहहै जिसपात्रमें मांस पकातेहैं उस पात्रका आहार नहीं लेना, ३ मांसके संघट्टनसेज्जी आहार नहीं लेना यह मुनियोंका व्यवहार है. शुद्ध आहार अलग पड़ा है उसकों गृहस्थ शुद्धभावसे देवे तो लेनेमें कुछ दोष नहीं. यदी फिरज्जी यही आग्रह है कि—अन्यधर्मीके घरका बनाहुवा आहार मुनिकों और श्रावककों न खाना चाहिये तो संपूर्ण दिगंबर श्रावक ब्राह्मणके हाथका पका हुवा जोजन ग्रहण करते हैं ठोम देना चाहिये. क्योंकि-वे जैन धर्मसे विमुख हैं. सोचो ! एक ब्राह्मण मिठाई बनानेका कार

करता है उसने अनछाने जलसे मिठाई बनाई और कोई दिगंबर श्रावक उस मिठाईको अपने खानेके निमित्त मॉल लेगया इधर उसीदिन कोई जैनमुनि उसके घर भीक्षाको आये और श्रावक-ने उस मीठाई लेनेकी निमंत्रणा कियी. कहिये ! मुनि उसको लेवे या नहीं ?-यदि कहोगे लेवे तो अनछाने जलको बनी चीज कैसे खायें ? न लेवे तो उसमें हेतु क्या ?-महाशय ! एकांतपवित्र आहार उत्पत्तिकी अपेक्षा कच्ची नहीं मिल सकती. देखो ! जल कैसा अपवित्र है जिसमें-मछ-कछपके अवयव-थलचरजीवोंके मूत्र पुरीष-हाड-चाम-रुधिर-वगेरा संमीलित है. दूध बछड़ोंका शूठा और हारुमांसकी पेसीमेंसे नोकसा हुवा है. दही-छास-मखन-इनमें बलोणा करते बरत शुद्धलोक अपने घरका जल अनछाना मीलाते हैं. बहोत दिनका मखन इकठाकर तपाते हैं. तिलपिल तेवरत तेली अपने घरका जल मीलाता है. अन्न और पत्र शाक आदिमें अकसरकोइनकोई जीव पतन होही जाता है. इसी प्रकार वस्तुकी उत्पत्तिकी अपेक्षा अपवित्रता मानोगें तो फिर आहारपानी लेना योग्यही न ठहरेगा, हमारे इसलिखनेका यह अभिप्राय नहीं है कि-मुनि अपवित्र आहार ग्रहण करे. जो वस्तु व्यवहार मार्गमें पवित्र गिनी जाती है-शिष्टपुरुषों जिसको अपवित्र नहीं कहते- उसको व्यवहारसे पवित्रमानकर मुनि और श्रावक ग्रहण करे. दातारकी शुद्धाशुद्धि तो उसके आचार व्यवहारसेही विदित होजाती है. जिसको अशुद्ध देखनेमें आयगा उसका आहार तो मूर्ख और अन्यधर्मावलंबीजी ग्रहण नहीं करते. फिर जैनमुनि कैसे लेवें ?-और हम पूछते हैं जिसमुनिकों

जैनीके शिवाय अन्यके घरका आहार नहीं लेना ऐसाही प्रणहै तो रिषभदेव भगवान्ने चतुर्विध संघस्थापन करनेसे पहले कौन सा जैनी था जिसके घरका आहार उन्होंने जैनी समझकर लिया. एक श्रेयांसकुमारको जातिस्मरण ज्ञान था सारीदुनियाकोतो नहीं था. यहां यही सिद्ध होता हैकि-जहां शुद्ध आहार मिले वहांही से लेलेना योग्य है. सोचोकि कुछ समय जब सुविधि [ पुष्पदंत ] नाथजीके पीछे धर्म विवेक हो गया था तो शीथलनाथ दशमेंती धीकरने कौनके घरसे आहार लिया होगा ?-क्योंकि उस समय कोई श्रावक तो था नहीं. यदि कहोगे श्रावकके घरसे नहीं लिया, तो अब क्यों हठ करते हो ?

अग्रवालकी उत्पत्तिका विचार करते है तो यह बात सिद्ध हो चुकी है कि-राजा अग्रसेनने (१७) दफे पशुमेध यज्ञ कराया. परंतु अठारहमें यज्ञके समय दयाने उसके हृदयमें प्रवेशकर यज्ञ को अपूर्ण रखा. और उसने मांस जह्णका त्याग कर क्षत्रियों से पृथक् होकर वैश्यधर्म स्वीकार किया. इसी कारणसे उसकी कुल आमनायके ( १७॥ ) साढे सतराह गोत्र हुवे. जिनकी जन्मादमें जितने अग्रवालजैनीहै सब काष्ठासंधीलोहाचार्यके किये हुवे दिवाकरनामा एक पुरुषके संघाती संबंधी है.

(११)-भरतचक्रीको दर्पणघरमें केवलज्ञान हुवा श्वेतांबर मानते है दिगंबर नहीं मानते. हकीकतमें भावचारित्र आनेपर केवलज्ञान उत्पन्न होना आश्चर्य नहीं. मनसे जब मूर्छाजाव न रहा तो वन और घर एक तुल्य है. गोमटसारमें गुणस्थानमार्ग का अधिकार कहा है वहां कर्मप्रकृति खपानेको जीव द्रव्यचारि

त्रयिनाभी गुणश्रेणी चढताहै. केवलज्ञान आदि पानेमें गुणस्थान ही प्रधानकारण है. द्रव्यचारित्रकी नियमता नही. होवेभी नही भी होवे. ज्ञावचारित्रकी नियमता है, देखो ! बाहुवलीजी ख्य-चारित्र करके दीक्षित हुवे, तप किया, लेकीन मनःशुधिमें कसर रही तबतक केवलज्ञान नही हुवा. मनः शुद्धि हुइ तब केवलज्ञान हुवा. सोचो ! तो ज्ञावचरित्रही प्रधान रहा.

( ११ )-दिगंबरने स्थविरकल्प उत्थापन करके-जिनकल्प मार्ग जो जंबुस्वामीके मोक्षहुवे बाद विच्छेद हो गया है उसीकों पकडरखा परंतु दोनोंसें गये, न स्थविरकल्प न जिनकल्प एकजी नही बन सका. कहाँसें बने ? जो क्रिया वज्ररिषज्जनाराचसंहन नवालोंके करनेकी है वह हीनसंहननवाले कैसे कर शके ?-जो शस्त्र शक्तिसे अधिकबोज उठावे वह गिरेहीगा. जिनकल्पीमुनि नवकल्पी विहार करते थे, नेत्रमें तृण और पैरोंमें कंटक लगेहुवे कों निकालते नही थे, हाथी-सिंह-चीत्ता-व्याघ्र-आदिके भयसें पीछा नही हठतेथे, -रोगहुवे औषध नही खातेथे, -छमहिनेतक आहार न मोले तोभी किलामना नही पातेथे, -जघन्यसें नवमापूर्वकी तीसरी आचारवस्तुतक सूत्रार्थके पाठी-उत्कृष्टसें दशपूर्वके पाठी होतेथे, -संहनन उनका वज्ररिषज्जनाराच था-हरहमेश तीसरे प्रहर भीष्माकों उठते थे-नय होते हुवेभी दूसरोंकों नग्न नही दि-सते थे, व्याणिपात्रआदि लब्धिके धारक थे. दिगंबरने ऐसेमुनियों की बराबरीकरनेकों श्रादा किया परंतु लाभके बदले हानी उठाइ. न स्थविरकल्प रहें न जिनकल्प हुवे. भट्टारकलोक जिन की उत्पत्ति विक्रमसंवत् ( १३१६ ) में हुयी-कहतहै हम उस आ

चरणके प्रतिकूल जो दिगंबर मुनियोंने किया है केवलवस्त्रही ग्रहण करते है और सबकृत्य उनमुनियोंके अनुसार ही है. सो क्या ! यह कहना ठीक है ? नहीं नहीं ! हर्गिज नहीं. जिनक ल्पीमुनि तो दुर रहे स्थविरकल्पीमुनिकी बराबरीजी नहीं करशकते, दिगंबर मुद्रामंडन नामकी किताब-जो दिल्लीनिवासविशिषंथर्षिं दित शिवचंद्गीने बनाइ है जिसके कुल (१५) पृष्ठ है उसके[७] में पृष्ठपर लिखाहैकि-जिनकल्प अनादि सिद्ध है जिनकल्प है सोही दिगंबरहै, इसका उत्तर-प्रथमतो जिनकल्पमुद्रा है उसकों दिगंबर मानना यही भूल है. दूसरे जिनकल्पका जंबुस्वामीके पीठे विच्छेद होगया, जैसेकि-मोक्षजाना विच्छेद हो गया. सो दिगंबरलोग यदि जगतखंभमें जिनकल्पका वर्तमान समय सद्भाव समझते है तो उनकों मोक्षकाभी सद्भाव समझकर दिखलाना पड़ेगा. जंबुस्वामीके पीठे-१, मनः पर्यायज्ञान-२, परमावधिज्ञान ( जिसके बाद केवलज्ञान अवश्य पैदा हो, )-३, पुला कलन्धी-४, आहारकलन्धि-५, कृपकश्रेणी-६. उपशमश्रेणी-७ जिनकल्प-८, परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसंपराय-यथारूपात चारित्र-यह संयमत्रिक-९, केवलज्ञान-और १०, मोक्ष-यह दशवस्तु विच्छेद हुयीहै उसमेंसे ( ८ ) बात शेष रही उनकाजी सद्भाव मानना पड़ेगा. यह कहांकी चतुराई है कि-एक जिनकल्पनातो सद्भाव और शेष ( ९ ) का अभाव माना जाय. और जो जिन कल्पमुनिकी क्रिया श्वेतांबरशास्त्रमें लिखीहै उसके प्रतिकूल दिगंबरमंडा है. हम महाविदेहमेंजी उसी जिनकल्पकों मानते है जो श्वेतांबर शास्त्रानुसार अर्थात् द्वादशांगवाणीके आगमानुसार

यत् छद्दशांगवाणीके आगमानुसार इसवर्त्तमान कालमें यहां नहीं रहा. इसमें यह सिद्ध करना कि-दिगंबर महाविदेहमें है सो वृथा है. जिसको हम विद्भेद मानते है वह दिगंबरोंके शास्त्रानुसार दिगंबर नहीं. केसरीसिंहके करनेका काम हिरन चाहे मैं कर लू तो कच्ची हों सकताहै? क्या! दशपूर्वका ज्ञान-पाणिपात्रादिलब्ध-और वजरिषजनाराचसंहनन विनाज्जी जिनकल्प मुनि बन सकते हो? फिर इसी दिगंबरमुद्रामंडनके (११) पृष्ठपर कल्प सूत्रका पाठ लिखकर यह सिद्ध किया है कि-महावीर(१) महिनेतक वस्त्रधारी रहे फिर नग्न पाणिपात्र हुवे और इसीप्रकार सर्व तीर्थंकर देवदुष्य वस्त्रके दूर होनेपर पाणिपात्र नग्न हुवे. इसमें दिगंबर सिद्ध है, और फिर (१३) पृष्ठपर यहभी लिखाहै कि-अगर कोई तीर्थंकर श्वेतपटधारी हुवाहो तो शास्त्रमें दिखलावो? इसका उत्तर-प्रथमतो तीर्थंकर महाराजकी बराबरी सामान्य मुनिसें नहीं हो सकती. और वे जो नग्न स्वरूपभी थे तो अति शय करके नग्न नहीं दिखते थे. इसमें क्या! सिद्ध हुवा कि-जिसको नग्न रहते हुवेभी दूसरेको उसका नग्नस्वरूप दिखलाइ न देवे ऐसे अतिशयका धारी नग्न रहे तो कुछ हर्ज नहीं. सर्व साधारण मुनिकों नग्न रहना उचित नहीं और यह कोई आवश्यकताकी बात नहीं कि-श्वेतपटही शास्त्रमें लिखाहो, पटनाम वस्त्रका है जिसका लेख विद्यमान है. फिर पंडितजीने अकलंकदेवके येहुवे अष्टका एककाव्य लिखकर नग्न सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है, इसका उत्तर यथार्थरूप हम क्षुल्लकधर्मदासजीकी तर्क के उत्तरमें लिख चुके है.

[३३]—दिगंबर कहतेहैं मुनिकों नग्न रहना चाहिये वस्त्र पात्रादि उपकरण रखना ठीक नहीं. परिग्रह होताहै,—श्वेतांबर कहतेहैं मुनिकों वस्त्रपात्रादि उपकरण मूर्छा रहित रखनेसें परिग्रह नहीं होता परिग्रह वो है जिसपर मूर्छाभाव हो तत्त्वार्थसूत्र ७)अध्यायमें कहाहैकि-मूर्छा परिग्रहः-इति यदि ज्ञानदर्शन चारित्रिके उपकरण मूर्छाका हेतु बतलाकर न रखना मंजूर है तो शरीरभी मूर्छाका हेतु है न रखना चाहिये. अर्थात् दीक्षा लेतेही त्याग देना चाहिये. संथारा करके अनशनव्रत लेलेना उचित है. क्योंकि-कषाय मूर्छाआदि जितने दोष हैं सब शरीरहीसें होते हैं. क्याकहे? और कौनकों समझावे? जिनकों एकांतपट्ट खेंचनाही प्यारा लगता है उनकों कौन समझाशके?—मूर्छा मूर्छा—पुकारतेहैं लेकिन मूर्छाका स्वरूप नहीं जानते. क्या वस्त्रकें ग्रहण करनेहीसें मूर्छा आगयी?—हम पूछते हैं यदि दिगंबर मुनि ऐसेहो त्यागी बनते हैं तो जिज्ञासकों क्यों उठते हैं?—ज्ञानध्यानकों छोड़कर आहारके उपायमें क्यों प्रवर्तना?—तुमारी अपेक्षा तो मूर्छा आयी जभी भिक्षाकों उठे फिर गृहस्थीके घर जब खड़े खड़े आहार करने लगे तो यदि मूर्छा न होती तो कबलकों क्यों उठाया? और मुखमेंही क्यों धरा?—परंतु हकीकतमें दिगंबरोंकी समझकाही फेर है. जैसे ध्यान करनेमें भोजन साहायक मानतें हैं वैसे निर्वाण पदके साधनमें वस्त्रादि धर्मोपकरणजी साहायक मानना चाहिये. यदि यहवात नामंजूर है तो फिर भोजनजी त्यागकर अनशन करदेना मुनासब है.

[ दुहा. ]—मूर्छा बाह्यप्रवृत्तिमें-जो तुम कहो कुपस

जो जन तज अनशन भजो-एसे होत जु दख १

ध्यानदीपकों तैल जो-भोजन करो प्रमान,

तो निर्वातपद उपकरण-मानो क्यों न अजान. २

यदि कहा जायकि-आहारकी मर्यादा (३२) कबलकी है हम कहतेहै क्या! वस्त्रकी मर्यादा नहीं है ?-दो चोलपट्टे-दो चादर एक कंबल-एक मुखवासिका-एकरजोहरण-और एक झोली-इत्यादि मर्यादा आगममें देख लो यदि वस्त्रोंमें यूका पतनहोने से अयतना होगी ऐसा माने तो जो जनजीमनेसेंभी पेटमें घींद्रिया दिजीव पैदा होंगे-इसमें क्या अयतना न होगी ?-यदि वस्त्रकी रक्षा करनी पमती है इसलिये ममता आयगी कहोगे हम पूछतेहै आहारकीभी गवेषणा करनी पमती है इसमें क्या ममता न आयगी? हकीकतमें आहार और वस्त्रादि उपकरण देह और संयमके साहायकारी है. इनमें एकको मानना एककों न मानना यह एकांत मिथ्या दृष्टिका लक्षण है. यदि यही आग्रह हैकि-मुनिकों धर्मोपकरणजी नहीं रखने तो कहिये ! घोंछोकमंडलु रखना कैसे मंजूर हुवा ?-क्या यह मूर्च्छाके हेतु नहीं है ?-यदि मूर्च्छा नहीं है तो शायशाय क्यों लिये फिरते है ?-जब एक स्थानसें दूसरे स्थान जानेकी इच्छा होती है तो चलते समय पाँखो कमंडलु हाथमें क्यों लेंतेहै. यदि बिलकुल त्यागी है तो वहांही ठोड जाते परंतु हकीकतमें दिगंबरोंकी समझका फर्क है. संयम और देहनिर्वाहके उपकरण मूर्च्छा रहित रखनेसें व्रतभंग नहीं होता. कुंदकुंदाचार्य रचित मूलाचारमें-ज्ञान उपाधि-संयमउपाधि-और अन्यउपाधिभी-रखना कहाहै. उसका पाठ-



नाणुवाहिं संयमुवाहिं-तउच्चुवाहिं अएणमवि उवाहिंवा,  
पयदं गह्णिलेवो-समट्ठी आदाणं निखेवो. (१)

दिगंबरोंको खयाल करना चाहिये कुंदकुंदाचार्य क्या कह रहे हैं ?—इसी तरह ज्ञानार्णव और समाधितंत्रमें भी उपाधि रखना कहा है. भगवती आराधनासारमें कंबल रखना कहा है. आजकलके दिगंबर पंथित और श्रावक घमंडके मारै छाती फूलाये हुवे कह रहे हैं कि—मुनिकों किंचित्मात्र परिग्रह न रखना चाहिये एन्होसे पूछा जाता है आपके पूर्वाचार्योंने क्या कहा है ?—इसको सच मानते हो या झूठ ?—

यदि-पीठीकमंमलु और पुस्तक-दया शौच और ज्ञानके उपकरण कहकर रखना मंजूर करते हो तो-बस्त्रपात्र रजोहरण मुखवासिका आदि जो छद्मशांगवाणीके पुस्तकोंमें ज्ञानदर्शन चरित्रके उपकरण कहे हैं उनको रखना इनकार कैसे कर सकते हो ?

[ १४ ] दिगंबर कहते हैं मुनिकों एकही घर खड़े खड़े आहारकरना चाहिये—श्वेतांबर कहते हैं घरघर भिक्षाटन करके अपने स्थान आयकर करना चाहिये,—इसबातकेलिये दिगंबरोकों अपना भगवती आराधनासार ग्रंथ देखना चाहिये. जिसमें लिखा है कि—आचार्य-या-संघाधीश-जिस ग्रामनगरमें जाय वहां अपने संघके मुनियोंको—इस सप्रकार विज्ञाजित करे कि—जिससे कोई प्रकारकी व्यग्रता न होने पावे. अर्थात् कितनेक मुनि आहारको जाय-कितनेक आहारके शिवाय दूसरे कार्यमें लगे—और कितनेक उससे जिनकार्यमें लगे—इससे क्या सिद्ध हुआ कि—जो मुनि अन्य कार्यमें लगाये गये हैं उनके वास्ते भी जोजनलानेवाले

मुनिही आहार लावेगें. जब आहारलाना आवश्यक हुवा तब उनकों पात्रेकीजी चाहना होगी. जब पात्रा रखना सिद्ध हुवा तो जोलीरखना इनकार कैसे करशकेगें. कितनेक दिगंबर पांडे और श्रावक-श्वेतांबर मुनिकों वस्त्रपात्ररखते देखकर मुहमरोमकर हंसी उमातेहैं औरनींदा करते हैं परंतु हकीकतमें कुपात्रहो पात्रकी निंदा करते हैं. सोचोकि-कोइ ग्लानमुनि ऐसे अशक्त हो गये हैं जिन-कों चलनेफिरनेकी शक्ति नहीं रहीहै उनकों दूसरामुनि आहार लादेना चाहे तो पात्र बिना किसमें लायगा ?-क्या ! हाथोंमेंही लायकर खीलावेगा ?-अगर कहोगे उनकों भूखेहो रखना परंतु पात्र ग्रहण नहीं करना. तो यह बात ठीक हुयी. अपने हठकेमारे वैयावृत्यपद बाहो उन्थथापन हो गया तो होजाउ परंतु हठ नहो छोड़ना. इसीका नाम जैनमार्ग है. रजोहरणकों बदलकर पीछी धारण कियी- और पात्रकों छोड़ कंमंडलु लिया, सोचो! इससे सार क्या निकला?-जैनका वेष ठोमकर मिथ्यात्वका वेष अंगीकार किया और नंगे हुवे-इसी करतूतपर जिनकल्पी मुनि होगये ?-

[ ३५ ]-दिगंबर कहते हैं मुनिकों दंड रखना न चाहिये. श्वेतांबर कहते हैं रखना चाहिये. इससे आत्म और संयमकी रक्षा होती है. जैसे बिहार करते हुवे मुनि समझो अटवीमें पहुँचे हैं वहाँ कोइ नदी आयी. कनारेपर दूसरा कोइ मनुष्य नहीं है जिसकों पूछलिया जायकि-नदी कितनी उंडी है ? उस जगह दंमसे देखलेवेकि जल इतना उंडा है. जहाँ थोडा जल हो उस राह नदीके पार होना. यदि तर्क किया जायकि-देहरक्षाकरनेमें मुनिकों मूर्छा आइ-तो यह तर्क वृथा है. क्योंकि-इंद्रियोंके विषय

पुष्टिनिमित्त रक्षा नहीं कियी किंतु धर्मकार्यके लिये कियी है. यदि धर्मकार्य निमित्तजी देहरक्षा न करना यही बात मंजूर है तो दीक्षा लेकर आहारनिहारही क्यों करना ? वस ! उसीवस्तु शरीरकों त्याग देनाही ठीक है. एकांत मिथ्यात्वीयोंका यही तो चिन्ह है जो बातबातमें एकांत पक्ष खेंचना.

( १६ )-दिगंबर कहते हैं मुनिकों रात्रीके समय चतुर्विध आहारका परित्याग है तो जल रखनेमें क्या प्रयोजन ?-न रखना चाहिये. श्वेतांबर कहते हैं चतुर्विध आहारका परित्याग जरूर है छेकीन शौचकेलिये याने मलमुत्रकी शुद्धि अर्थ रखना चाहिये. यदि जल न रखाजाय तो मलमुत्रकी शुद्धि काहेमें करेंगे ?-इसलिये उसमें क्षारक्षेपन करके रखनाही ठीक है.

( १७ )-दिगंबर कहते हैं मुनिकों दिनमें एकही दफे आहार करना चाहिये. श्वेतांबर कहते हैं एकदफे-वा-अनेकदफे जबतक सूर्यअस्त नहो तबतक आहार करनेका मुनिकों अधिकार है. जैसी शक्ति हो उसमाफिक करे. उत्सर्ग और अपवाद इनमें एककों मानना एककों नहीं मानना यह ठीक नहीं.

( १८ ) मुनिकों कोई गृहस्थ मांस बहारा दे तो उसकों खालेवे और फिर गुरुके पास आनकर पायछित लेके शुद्ध हांवे ऐसा कहकर दिगंबरलोग श्वेतांबर संघको नींदा करते हैं. और कहते हैं देखो ! श्वेतांबरोंमें क्या क्या गप्प है ? परंतु हकीकतमें यह दिगंबरोंहीकी गप्प है. बाइस अभक्ष्य श्रावकोंके लिये जी त्याज्य है तो मुनिकेलिये उपादेय कैसे कहेंगे ?-विना प्रमाण कोईबात मुंहसे निकालना बड़ी भूलका काम है. यह तो विचारना

थाकि- श्वेतांबर मुनि आहारकों मकानपर लाकर खाते हैं, गुरु वा दुसरा साधु वहां मौजूद है तो खानेसें पहले क्या ! उनकी सम्मति नहीं ले सकते हैं ? जो पीछेसें दंडप्रायश्चित लेना पड़े ?- यह दिगंबरमुनि तो नहीं ! जो गृहस्थके घर खड़ेहोकर जो मीले सो खावे. जिस मनुष्यकों भोजन अपने मकानपर लानेकी आज्ञा है वह स्वतंत्र है. यदि जानबुझकर भ्रष्ट होना चाहे तो उसका दंडप्रायश्चित नहीं है और अनजाने ऐसाकरे तो स्वतंत्रताके होते हुवे ऐसा कर नहीं सकता.

[ २९ ]-दिगंबर कहते हैं-श्वेतांबर मुनिकों उश्रोदकका योग न मीले तो मूत्र पीइ लेना कहाहै. इसका उत्तर,-यहबात मिथ्या है. श्वेतांबर मुनियोंमें यह प्रवृत्ति नहीं है. झूठादोष आरोप करना उर्गतिका कारणहै. अगर यहबात सच्च हो तो श्वेतांबर आम्नायके कोइभी शास्त्रमें पाठ दिखलाना चाहिये. विना प्रमाण कोइबात कहना लिखना मूर्खोंका काम है. और जो कोइ ऐसा करता है उसकों चांडाल समझना चाहिये.

( ३० )-दिगंबर कहते हैं धर्मकी हानिकरनेवालेकोंजी मुनि ताडना तर्जना शिक्षा सज्जा न देवे-तेजुलेश्याम वगेरा शक्ति होतेभी न चलावे-विराधक होजायगा. श्वेतांबर कहतेहैं धर्मकी हानिकर्त्ताकों मुनि ताडना तर्जना शिक्षा सज्जा देवे-तेजुलेश्याम वगेरा शक्ति हो तो चलावे-विराधक न हो. क्योंकि-इरादा उसका धर्म रक्षा करनेके लिये है. इन्द्रियोंकी विषय पुष्टिकेलिये नहीं सोचो ! कोइ अन्यायीराजा-मंत्री-या-गृहस्थ-देवमंदिर आदि

धर्मस्थानकों तोड़मालता है, मूर्तियों खंभन करता है. मुनि आर्यिकाको तकलीफ देता है. प्राणलेनसेंजो नहीं डरता. वा-धर्मपुस्तक जलाता है, पानीमें डबोता है, वगेरा धर्म हानिका काम करता है और प्रजा उसकों सजा देनेकों शक्तिमती नहीं है उसवरुत मुनि वहां विद्यमान होते हुवे उनके सामने ऐसा अनथकाम होरहाहो उसकों रोकनेके लिये प्रथम मीष्ट वचनसें उपदेश देवे-फिर कठोरवचनसें ताडना करे-इतनेपरभी न समझे तो नेजुजेस्यादि शक्तिमें सजा देवे, थोड़ी सजासें न माने तो फिर जालकर जस्म करडाले, इसका दंडप्रायश्चित कोइजो आग-ममें नहीं लिखा. हकीकतमें धर्मकी हानि करनेवालेकों सजादेना अनुचित नहीं और इसीलिये दंडप्रायश्चितभी नहीं. जब दंड प्रायश्चित नहीं तो वो आराधक है विराधक नहीं. दिगंबरशास्त्रोंमें लिखाहै कि-विष्णुकुमारजी मुनिने-नमुचिकों अन्याय करते हुवे रोकनेके लिये अपनो जंघा चारिणलब्धिसें कामलेकर रात्रिके समय गमन किया. यह कार्य उनका धर्मरक्षानिमित्त होनेसें उत्तम समझा गया.

(३१)-दिगंबर कहतेहैं-श्वेतांबरमुनि जिनमंदिरमें आहारपानी खाते हैं, परंतु यहबात असत्य कहतेहैं. श्वेतांबरके शास्त्रोंमें नहीं लिखाकि-जिनमंदिरमें आहारपानी खाना, न कोइ खाताहै. झूठा कलंक देना समदृष्टिजनोंका काम नहीं. यदि अज्ञानसें कोइ मुनि जिनमंदिरमें आहारआदि खाता हो तो उसको भूल है-छद्मस्थजीवोंकी प्रकृति जुदी जुदी है, एक मनुष्यकी भूलपर सर्व संघकों कलंक देना योग्य नहीं.

( ३२ )—दिगंबरलोक दीवालीके रोजही चौमासा पूर्णहुवा मानबे है, जबपूर्वकालमें उनके नग्नमुनि विद्यमान थे तब वे कार्तिकसुदी एकमकोही विहार करजाते थें. अब जो उनके शिष्य जट्टारकलोक है वे कहतेहैं एक वस्त्र ग्रहणके अतिरिक्त अन्य जितनेकार्य हम करते है पूर्वमुनियोंके कार्य मुजब है, परंतु यह कहना जाननेही योग्य है. आगे चलके इसी बोलमेंउनका कुञ्जवर्नन लिखेंगे. उसमें जो समझना हां-समझ जेना. यहां हम कों इतनाही कहना है भट्टारकलोकजी कार्तिकसुदी एकमकों विहार करते है. श्वेतांबर लोक कार्तिक शुक्ल पौर्णमासीके रोज चौमासा पूर्ण होना मानते है और मार्गशीर्षवदी एकमकों विहार करते है. इसमें दोनों आम्नायवाले अपने अपने शास्त्रकी साक्षी देतेहैं. जो द्वादशांगवाणोंके सिद्धांतोंकों उच्छ्थापनकरके नयेग्रंथोंपर श्रद्धा रखते है उनकी कथनीसे तो अलबते ? द्वादशांगवाणोंके सिद्धांतोंकों माननेवालोंकाही कथन प्रमाणभूत माना जायगा. ( भट्टारकोंका चाल चलन, )—जट्टारकलोक वस्त्र लाल पहनते है. काष्ठासंघ ( दिछोवाले ) पोलेभी-पहेनतेहैं. जाहेरातमें जोजन एकही दफे जीमते हैलेकीन गुप्तपने अपने मकानमें रसोइ बनवाकर दोवाराजी जीमते है परंतु कहनेमें यही कहेंगे हमने एकहीदफे जोजन किया है. ऐसा न कहे तो उनके श्रावकलोक थोडा आदर करके रहे जाय-दिगंबरोंमें यहरीति ज्यादा देखी गयीकि-जो उंची उंची बात प्ररुपे वह अधिक आदर पावे. जो शिथिलाचारकी बात कहे उसका आदर नहो. जोजनके लिये भट्टारकलोक जब शास्त्रवांच चूकतेहैं तब एक श्रावक उनकों

भ्रामरीके लिये प्रार्थना करता है. जट्टारकजी अपनी पीछी उसके हाथ छुवाते है अर्थात् निश्चय हो गयाकि भट्टारकजी आज इसके घर भोजनजीमने जायगे. फिर भट्टारकजीके शायका कोइ श्रावक या-पंडित-उसभ्रामरीवालेके घरजाकर विधि पूर्वक भोजनका तयारी कराता है. रसोइ तयार हो चुकी तो सब प्रकारकी चीजें एक थालमें धरके जट्टारकजीको दिखाके मंदिरमें चढाता है. बाजे गाजेके साथ फिर भट्टारकजी उसके घर जातेहै. वहां शास्त्रकी पूजा उस श्रावकसे कराके-रसोडेमें बैठ भोजनजीमना शुरू करते है. भोजनमें कबलकी गिनती रखना चाहिये. कोइ ( ३० ) कबल-कोइ ( ३२ )-कोइ ( ४० ) और कोइ ( ४५ ) कबलतक खाते है. रसोइकी चीजमें यदि-केश-मलखी-या साबत अनाजका दाना-आजाय तो भोजन छोड देना पडे. कुत्ता-बिल्ली गधा-जंगी-कसाइ-चांमाल-इनमेंसे किसीका शब्द भट्टारकजीको सुन पडे तोभी भोजन छोड देना, यह कायदा उनका सबसे अधिक पाबंद है. इसीलिये उनके श्रावकलोक-भट्टारकजीके जीमते समय झालर-घंटा-वा-थाल-बजाते रहते है. याने कोइ प्रकार अंतरा य न होने पावे. पानी कच्चा पीते है. असवारीमें-म्याना-पालखी-और रैलमें-चढते है. गुप्तपने जंगलमें-गड्डीपर-वा-घोडेपरजी-चढते है. धन्य-धान्य-मकानात-वगेरा सर्वप्रकारका परिग्रह सर्व भट्टारक रखते है. नोकर-चाकर-छडी-चवर-वगेरा सबकाम राज्य वर्गी जैसा है. और कहते है कि-हम पूर्वकालके मुनियोंका-अनुकरण करते है. समझ शको तो समझ लो ! यह बात सत्यहै या असत्य ?-शास्त्रानुकूल है वा मनःकल्पित है ?-एकबात लिखनी

और रहगयी जब भट्टारजी भोजन जमीने लगते है तब कोइतौ बिल्कुल नम्र होकर जीमते है, कोइ कोइ शर्मके मारे नम्र नही होशकते वे धोती थोड़ीसी ढीली करके कमर खुली करदेते है. सबबकि-उनके नम्र मुनियोंने जो किया सो इनोंनेभी करना.

[ ३३ ]-दिगंबर कहतेहै-स्त्रीकों पंचमहाव्रत उदय नही आते श्वेतांबर कहते आते है. दिगंबरआम्नायके-गोमट्टसार-आश्रव त्रि भंगी-और चर्चाशतक ग्रंथमें लिखाहै कि-स्त्रीवेद पुरुषवेद-और नपुंसकवेदका उदय नवमें गुणस्थान तक है सोचोकि-यदि स्त्रीमें सर्व विरति चारित्र न होता तो नवमें गुणस्थानतक कैसे पहुच शकती?—महाव्रतविना गुणस्थान कैसे चढी ?-यदि गुणस्थान चढी तो दिगंबरकेही वचनसे स्त्री पंचमहाव्रतकी अधिकारिणी हुइ या नही ?—दिगंबरआम्नायके अष्टपाहुड ग्रंथमें स्त्रीकों पंचमहाव्रत उदयआना लिखा है. उसका पाठ-जइदंसणेण शुद्धा-उत्ताणमगोणसाविसंजुत्ता घोरं चरियचरित्तं इत्यादि. फिर द्रव्य संग्रहकी दृष्टिमें सीताकों पंचमहाव्रत उदय आये लिखे. यदि स्त्रीकों पंचमहाव्रत नही मानना मंजूर है तो कहिये ! चतुर्विधसंघमें साध्वीपद किसमें रहा ? और पंचमहाव्रतविना धर्मवृद्धि कहनेका अधिकार उसकों कैसे हुवा?—यदि कहाजायकि-स्त्रीसें शर्म नही छांभी जाती-वस्त्र रखना पडता है-और वस्त्र रखा तो मूर्छा हुइ-फिर पंचमहाव्रत कहां रहे?-इसका उत्तर,-मूर्छाका स्वरूप प्रथम लिखचूके है. दुर्विदग्धोंको कोइ समझा नही शकता. धर्मोपकरण मूर्छारहित रखनेसें पंचमहाव्रत चले नही जाते. विना पदार्थ यदि मूर्छा है तो वही मूर्छा परिग्रह है पदार्थ है और उसमें मूर्छा नही है तो वह परिग्रह नही, यदि ऐसा न



माने तो संसारमें जितने दरिद्री मनुष्य हैं, कोमी पेसा जिनकों बिल्कुल नहीं मिलता, नंगेही रहते हैं, क्या ! उनकों त्यागी कहेंगे ?--नहीं ! कहेंगे ! !--क्योंकि-उनके पास मूर्छा ( चाहना ) रूप बड़ा भारी परिग्रह है. इसलिये यहो सिद्ध हुवाकि-जहां मूर्छा नहीं वहां त्यागभाव है.-जहां त्यागभाव है वहां महाव्रत है. इस बातकों कोइ इनकार नहीं कर सकता. दिगंबर लोक वृथा हठ करते हैं. इसहठकों यदि वे छोड़ देवे तोभी ठोक नहीं. क्योंकि-पंचमहाव्रत जब स्त्रीकों मान ले तो मुक्तिभी मानना पड़े और स्त्रीकों मुक्ति मानलियीतो दिगंबरमतकी जड़ही उठ जाय.

( ३४ )-दिगंबर कहतेहैं-स्त्रीकी उभीभवमें मुक्ति नहीं होती. श्वेतांबर कहते होती है. क्योंकि-मुक्तिका-मार्ग-सम्यक् ज्ञानदर्शन, और चारित्र्य है.इमपर जो चले वो मुक्ति पाशके, चाहे स्त्रीहो या पुरुष हो. यदि कहाजायकि-उममार्गपर चलनेकी स्त्रोमें शक्ति नहीं है तो यह कहना प्रमाणसें बाधित है. क्या ! ब्रह्मचर्यव्रत जोकि-सब व्रतोमें शिरोमणि है स्त्री नहीं पाल सकती ?-आगमके वचनकी श्रद्धालाना अतिदुष्कर है क्या ! स्त्री नहीं लाशकती ? तनमनघन कों क्या ! धर्मपर नहीं लगाशकतो?-तीर्थकरकी माता-और ब्राह्मी सुंदरी-सीता-दमयंती-राजीमती- कुंती-रुक्मणी-सत्यभामा-द्रोपदी-धारणी-रेवती-सुभद्रा-चंदनबाळा-और मृगावती वगेरा सतीर्थोंकों क्या उत्तम न कहना चाहिये ?-ये मुक्तिसाधनका कामकरे और मुक्ति न पाशके इसमें प्रमाण क्या ? दिगंबरलोक स्त्रीकों अधम ! अधम ! ! कहते तो हैं लेकिन यह नहीं विचारतेकि-हम कहने वालेहो अधम हैं जो जिन-राणीकों उद्ध्यापन करके मनमानी कह

रहेहै. यदि स्त्रीकों मुक्ति नहीं होती तो दिगंबर आम्नायके त्रिलोक सारमें ऐसा क्यों कहाकि-( २० ) नपुंसकवेदी-(४०) स्त्रीवेदी-और [४८] पुरुषवेदी-कुल (१०८) एक समयमें मोक्ष जाय. (उ० पाठ)

बीस नपुंसकवेद्या-द्व्यविवेयाय हुंति चालीसा.

पुंवैया अढयाला समय एगेण सिद्धांति.

१

इसपर दिगंबर कहते है-स्त्रीवेदीकों जो मुक्ति कही सो द्रव्य स्त्रीवेदीकों नहीं, किंतु भाव स्त्रीवेदीकों समझना. भावस्त्रीवेदी वह होके-जैसे किसी पुरुषकों इच्छा हुयीकि-मैं स्त्रीवत् कामसेवन करु उससमय वह पुरुष-ज्ञावस्त्रीवेदी है. ऐसे पुरुषकों-( अर्थात् भाव स्त्रीकों ) जो मोक्ष होना यही भावस्त्रीवेदीका मोक्ष दिगंबरआम्ना यमें कहाहै. इसपर श्वेतांबर पूछते है क्या ! दिगंबरमतमें ऐसे भाववर्त्तते हुवेभी मोक्ष होजाती है ? कामसेवनके ज्ञाव होतेभी ज्ञावस्त्रीकों मोक्ष कहतेहों तो फिर द्रव्यस्त्रीकों मोक्ष कहते क्या बाधक था ?-सोचो ! जब पुरुष ऐसा बुराविकल्पमें पडाहै तो धर्मशुद्ध्यान कहाँ रहा ?-जिसमें केवलज्ञान और मोक्षहो, यदि ऐसेही मानते हो तो समझो ! किसी स्त्रीकों इच्छा हुयी कि-मैं पुरुष वत् कामसेवन करुं,-उससमय वह स्त्री-भावपुरुषवेदी आपके मान ने मुजब है तो उसकोंभी मोक्ष कहना चाहिये. जब ऐसा मानना मंजूर है तो तुमारेही मुखमें स्त्रीकों मोक्ष कहना लाजम हुवा. कि-तनेक तर्क करतेहै कि-स्त्री अधोगतिमें छठी नरक जाती है सातमी नरक नहीं जाती. जब उत्कृष्ट पापकरनेकी ताकात नहीं तो मोक्षजानेकी ताकात कहाँसे आयो ?-इसका उत्तर-यह कोइ व्याप्ति नहींकि-जो सातमी नरक जावे सोही मुक्तिजानेकी ताकात

रस्ते, उत्कृष्ट पापकरके सातमी नरक-और उत्कृष्ट पुन्यकरके अ  
नुत्तरविमान जाना होता है वैसे मुक्तिजानेमें वही न्याय लगाना  
ठीक नहीं. क्योंकि-मुक्तिजानेमें पुन्यपाप दोनों क्षय करनेके न्यारे  
ही अध्यवसाय है. जोकि-शुद्धध्यानरूप है. इसका संबंध देवलोक  
वा-नरक जानेके साथ नहीं, न्यायवानोंको इसमें विनपक्षपात  
सोचना चाहिये.

( ३५ )-दिगंबर कहते हैं-श्वेतांबर आम्नायमें उत्कृष्ट (५००)  
धनुष्यकी अवगाहना वालेको मुक्ति होना कहा. और मरुदेवाजी  
( ५२५ ) धनुष्यकी अवगाहनावालेथे, इनको मुक्तिहोना कैसे  
संभवे ?-उत्तर, -(२००) धनुष्यकी कायावालोंका मुक्ति जाना  
कहा सो बाहुल्यता आश्रित वचन है. कोई सवापांचसे धनुष्यकी  
कायावाला मुक्ति हो जायतो निषेध नहीं. बहोतसेतो पांचसे  
धनुष्यकी कायावालेही गये. लेकिन कोई कोई सवापांचसे धनु  
ष्यके धारकभी गये. इसमें क्या विरोध हुआ ?-नाभिकुलकरसें  
मरुदेवीजो किंचित् न्यून अवगाहनायुत थे. क्यों कि-उत्तमसंस्था  
नवतीक्ष्णी उत्तमसंस्थानवान् पुरुषसें किंचित् न्यून प्रमाणवाली  
होता है. दिगंबरको यदि यह बात नामंजूर हो और मरुदेवीजीका  
शरीर सवापांचसे धनुष्यका मानना होतोभी क्या? जब आगमका  
वचन बाहुल्यता आश्रित है तो फिर विरोधही क्या रहा ?-अल  
बत ! जिनको स्त्रीकी मुक्ति सुनतेही नाराजी पैदा होती है उनके  
तो विरोधही है.

( ३६ )-दिगंबर कहते हैं-त्रिषष्टीशलाका पुरुष आहार तो  
करत है लेकिन निहार नही करते. अर्थात् भोजन जीमते है परंतु

मलमूत्र उनकों नहीं आता. श्वेतांबर कहते हैं जो आहार करेगा मलमूत्र उसकों कैसे न आयगा ?-अगर कहाजायकि-उनके खल पुदगल शरीरमें जल जाते हैं तो सोचो ! रसपुदगल भी उनके जल जाना चाहिये. जब ऐसा हुवा तो. भस्मरोग पैदा होनेमें क्या न्युनता रही ?-वृथा तर्क करना मुखोंका काम है. अच्छा ! यह तो बतलाइये !-स्त्री संज्ञोग करते समय उनकों वीर्यस्खलन होता था या नहीं ?-यदि कहोंगे हांताथा तो फिर तुमारेही वचनसें निहार सिद्ध हुवा. वीर्य खीरना निहारहीका भेद है. यह कोइबात नहीं जो वीर्य तो निकसे और मूत्र न निकसे. जब मूत्रनिकसना सिद्ध हुवा तो मलभी निकसना युक्तियुक्त है.

( ३७ )-दिगंबर कहतेहैं यादवंशी मांस नहीं खातेथे, श्वेतांबर कहते हैं जिनोंने श्रावकव्रत लियाथा वे नहीं खातेथे दूसरे खातेथे. यादवोंपर श्वेतांबरकों क्या द्वेषभाव था ? जिससें वे उनकों मांस भक्षी ठहरावे ! जरतकुमार जिसने कृष्णजीकों मृगसमक्षकर बाण मारा-यदि मांस भक्षी नहींथातो आखेट क्यों करताथा ? और यह निश्चय हैकि-कृष्णजीके पीछे इसी जरतकुमारसें यादवंशका नाम चला है.

[ ३८ ]-तत्त्वार्थसूत्रमें नय [ ७ ] कही-और दिगंबर देवसेना चार्य अपने बनाये नयचक्र ग्रंथमें ( ९ ) नय कहतेहैं, याने द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिककोंभी नय कहतेहैं. श्वेतांबर द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिककों नय नहीं किंतु नयकेअंश याने उपनय कहते हैं. नैगम-संग्रह-व्यवहार-रिजुसूत्र-शब्द-समजिरुह और एवंबूत नय तो ये सातही हैं, यदिनयके अंशकों नय माने तो प्रमाणके अंश जो-

अवग्रह-इहा-अवाय-घारणा-और अनुमान आदि मतिज्ञानके जेद है उनकोंजी प्रमाण मानना चाहिये. सो तो मानते नहीं और नयके अंशको लेकर नय कहते हैं कितनी भूल !-यदि कहाजाय कि- तत्त्वार्थमें तत्व सात कहे और हैं नव-इसी प्रकार नयजी नव होना चाहिये. परंतु यह बात युक्त नहीं, क्योंकि-विभक्तविभाग न्यारी बात है और कारणजात न्यारी बात है. यदि नयांशकों नय मानना मंजूर है तो अर्पित अनर्पितकोंभी ( जो नयके अंश हैं ) नय मान लो. फिर नवही क्यों ग्यारह नय कह दो-

( ३९ ) दिगंबर निश्चयनयकों पहले और व्यवहारनयको पीछें कहते हैं. श्वेतांबर व्यवहारनयकों पहले कहते हैं. क्योंकि-प्रथम व्यवहारनयको परिणमन होता है. जबतक आंखोंसे देखा न जाय क्या ! मालूम ?-इस पुस्तकमें क्या लिखा है ?-दिगंबर अपने पक्षकों पुष्टता करनेमें कसर नहीं रखते परंतु शूठकी दोड़ कितनी !-निश्चयनय हृदयमें स्थापनकर व्यवहारा में प्रवर्तना यही जैनागमका रहस्य है. यदि व्यवहारकों पीछेंही मानना मंजूर है तो प्रथम गुरुशिष्यभाव क्यों मानना ?-निश्चयनयमें तो अपना आत्माही गुरु है.

( ४० )-दिगंबर कहते हैं-गुणके स्वभाव और विभाव दो पर्याय हैं. श्वेतांबर कहते हैं गुण-द्रव्यमें भिन्न नहीं फिर उसकों पर्याय कहाँसे ? इकीकतमें द्रव्यके सहजावीपर्यायोंकाही नाम गुण है. इसलिये स्वभाव विभाव दो गुणके पर्याय नहीं किंतु द्रव्यकी परिणति रूप है.

( ४१ )-दिगंबरलोक-हुंदाअवसर्पिणी कालसें इतनी बातेंअन

होती हुयी मानते है. (१)-तीर्थकरोँकाजन्म अयोध्यामेंही होना चाहिये और अन्य जगहसें हुवा. (२)-तीर्थकरोँकी मुक्ति सम्पेत शिखर से होना चाहिये कितनेककी अन्यक्षेत्रोंसें हुयी. (३)-तीर्थकरोँके पुत्री होपुत्री नहो-रिषभदेवके घर पुत्री जन्मी. (४)-चक्रवर्तीका मान खंडन नहो-और भरतचक्रीका मान बाहुबलीजीने खंडन किया. (५)-तीर्थकरकोँ किसी अवस्थामें उपसर्ग न हो पार्श्वनाथजीकोँ हुवा. (६)-तीर्थकर अवधिज्ञानकोँ छदमस्थअवस्थामें प्रकाशित करे नहि-रिषभदेवने किया. (७)-वासुदेवका मृत्यु भाइके हाथसें नहो कृष्णजीका मृत्यु जरतकुमारमें हुवा. (८) ब्राह्मणकुलकी उत्पत्ति अन्यकालमेंनही होती-इसकालमें हुइ. (९)-त्रिषष्टीशलाका पुरुष (६३) होने चाहिये-(५८) हुवे. (१०)-नवमेंतीर्थकरसें लगा सोलहमें तीर्थकरतक साततीर्थकरोँके अंतरमें धर्म विच्छेद होगया-अन्यकालमें नही होता. (११)-रुद्र और नारद अन्यकालमें उत्पन्न नही होते-इसकालमें हुवे. (१२)-(११) कल्की और (२१) अर्द्धकल्की अनागतकालमें होयगें.-यह वर्नन सिद्धांत सार-त्रैलोक्यप्रज्ञप्ति-और भाषाके पार्श्वपुराणसें देखकर लिखाहै,-

श्वेतांबरलोक हुंडाअवसर्पिणीकालदोषसें इतनावाते अनहोती हुयी मानते है. (१)-उत्कृष्टअवगाहनाके धारक (१०८) एक समयमें मुक्ति न जाय और इसकालमें गये. (२)-सुविधिनाथ और शीतलनाथके अंतरमें धर्म विच्छेद हुवा और असंयतिकी पूजा हुयी. (३)-मल्लिनाथतीर्थकर स्त्री हुवे. धर्मनायक पुरुष प्रधान होने चाहिये. (४)-वासुदेव वासुदेवोंका शंखशब्दसें मीलना हुवा. (५)-युगलीये मरके नरक न जाय और इसकालमें दो युगलोये नरके मये. (६)-तीर्थकर तुच्छकुलमें न आवे-महावीरस्वामी

आये-और उनका गर्भ संचार किया गया. ( ७ )-तीर्थकरोंकी धर्मदेशना निष्फल न जाय और महावीरस्वामीकी प्रथमधर्मदेशना निष्फल गयी. ( ८ )-केवलज्ञान हुवेबाद उपसर्ग न हो और महावीरस्वामीका हुवा. ( ९ )-चंद्रमा सूर्य मूलविमानसे मनुष्य लोकमें आये. ( १० ) चमरेंद्रका उत्पात उर्द्धलोकमें हुवा-यह वर्णन कल्पसूत्रमें लिखा है.-

दोनों अम्नायवाले यह मंजूर रखते हैं ये अनहोतीबाते जो उपर लिखी गयी हैं मुख्य मुख्य हैं. इसके शिवाय और भी केइ एसी अनहोतीबात याने आश्चर्यजनक हुयी हैं जिनका वर्णन बहु-श्रुतज्ञानीयोंमें जानना चाहिये.

दिगंबरलोग-नीचेलिखेहुवे सातसवालोंको चौरासीबोलोंमें गिनकर ज्यादा तकरीरमें लाते हैं, ( ४२ ) जैसेकि-उत्कृष्टअवगाहनाके धारक ( १०८ ) एक समयमें मोक्षकैसे गये ?-( ४३ ) तीर्थकर स्त्री-कैसे हो ? ( ४४ ) युगलीये नरक कैसे गये ?-( ४५ ) तीर्थकरकी धर्मदेशना निष्फल क्यों ? ( ४६ ) तीर्थकरकों उपसर्ग क्यों ? ( ४७ ) चंद्रसूर्य मूलविमानसे कैसे आये ? और ( ४८ ) चमरेंद्रका उर्द्धलोकमें उत्पात कैसे हुवा ?-( इसका जवाब. ) श्वेतांबरलोग द्वादशांगवाणीके अंगशास्त्रोंके अनुसार चलते हैं, उनमें फरमायाकि-हुं-डासर्पणीकालदोषमें ( १० ) दसबाते अनहोतो हुइ, उपर लिखे हुवे ( ४२ )-से-लगाकर ( ४८ ) तकके-सातसवाल-उनदस आश्चर्योंमें दाखिलहै, इसलिये कालदोषके कारण उक्तबातेहुइ कहनाचाहिये, तीर्थकरका-स्त्री स्वरूपमें होना युक्तिद्वारा सबुतहोतेहुवेभी अनहोतीबातमें इसलिये कहागयाकि-धर्मकेनायक बहुतकरके पुरुषही होते हैं लेकिन ! इसकालमें एकतीर्थकर-स्त्री-हुवे-यह-एक अचं-

भेकी बातहुइ, बहुधाकरके-पुरुषही-राजा-होते है लेकिन ! कोई समय स्त्रीभी-राज्येश्वरी-होजाय तो-ना-नहीकहसकते,

मल्लिनाथतीर्थकर-स्त्री-हुवे-इसमें प्रमाण यहहैकि-स्त्रीवेद-और तीर्थकर नामकर्मका बंध-एकजीवकों-गुणस्थानोंके आकर्षणसे हो-सकताहै, जैसेकोइ-जीव-जब-मिथ्यात्व-या-सास्वादन गुणस्था-नपर मौजूदथा-उमदग्गत-स्त्रीवेदका बंध-किया-और-फिरजब उपरकेगुणस्थानपर पहुंचा-तब-तीर्थकरनामकर्मका बंध किया-सौ-चो ! इसमें क्या हर्ज हुवा !-असलपुछोतो कांडहर्जनही, जैसे-श्रे-णिकराजाने मिथ्यात्वगुणस्थानपर थे-जब-नरकगति-बांध लिइ-और जब-चतुर्थगुणस्थानपर पहुंचे-तब-क्षायिकसम्यक्तीहुवे-और तीर्थकरनामकर्म-उपार्जनकिया-वैसे-मल्लिनाथजीके जीवने पहिले स्त्रीवेद-और-पोछेंसे तीर्थकरनामकर्म-बांधाथा-कहिये ! इसमें क्या बाधक आया !-सौचकर जवाब दो-वृथा शंखनादकरना मूर्खोंका कामहै. किसकी ताकात है जो सच बातकों-तोड सके ?-

( ४९ )-दिगंबर कहते है वसुदेवजीकों बहत्तरहजार स्त्रीका होना असंभव है. चक्रवर्तीसे अधिकपुन्यप्रताप सिद्ध हुवा, इसपर श्वेतांबर कहते है जैसे बाहुबलीजी बलपराक्रममें भरतचक्रीसे अधिक हुवे इसीप्रकार स्त्रीप्राप्तिके सांभाग्यमें वसुदेवजी अधिक हुवे. इसमें शंखयलाना वृथा है.

( ५० )-दिगंबर कहते है गौतमस्वामीकों स्कंधकपरिव्राज-कके सामने चलाकर जाना बानचीत करना उचित नहीं था. श्वेतांबर कहते है ज्ञानी पुरुष जैसा भाव होना अपने ज्ञानमें देखते है वैसे करते है गौतमस्वामीका इरादा उसकों धर्म प्राप्ति करानेका था. इसलिये कोई दोषकी बात नहीं. महावीर स्वामीकी



आज्ञासे गये थे,—एकांत पक्षकों खेंचते रहना इसीमें तो दिगंबरोंका नाम एकांत मिथ्यादृष्टि कहा गया, सौचोकि—जिसक्षेत्रके रहनेवालेजीवोंका पुन्योदय आता है उस उदयकी आकर्षण शक्तिसे ज्ञानीयोंका उसक्षेत्रमें जाना निमित्त कारण है.

( ५१ )—दिगंबर कहते हैं—द्रौपदीके पांचभर्तार हुवे फिरसती कैमे रही?—श्वेतांबर कहते हैं जैमे चक्रवर्ती—बलभद्र वासुदेवआदि पुरुषोंको संकडे हजार स्त्रीयां थी और फिर वे शीलवान् और सतेकरहे इसीप्रकार द्रौपदीभी सती रही पांचोकी साक्षीमें पांच पांडवोंके साथद्रौपदीका विवाह हुवा यह सर्व शास्त्रोंका लेख है. द्रौपदीने छठे पुरुषकी पहना न कियो इसलिये सती कही गई. यदि पांचोंके स्वरु एककों पतिकरके चारके साथ विषयसेवन करती तो अलबते असती कहसकते. यदि स्वाल किया जायकि—संसारमें अन्य अन्यस्त्रीयोंने एकपतिसें ज्यादा पति क्यों न किये?—इसका उत्तर—द्रौपदीने पूर्वभवमें नियाणा किया थाकि—मेरो तपस्याका फल होतो मुजे अगले जन्ममें पांच भर्तार मिले—सो मिले और पांचके शिवाय छठे पुरुषको उसने भोग्या नही फिर दिगंबरलोक इसको कुसतीका दोष किसलिये लगाते हैं सो विदित न हुवा?—यदि एक पतिसें ज्यादापति होनेसे लगाते हो तो चक्रवर्ती बलभद्रादिकों एकस्त्रीसे ज्यादास्त्री हुयी उनकोभी दोषित कह दो.

( ५२ )—दिगंबर कहते हैं देवता मनुष्यणीके साथ—और मनुष्य देवांगनाके साथ—काम भोग नही सेवते, श्वेतांबर कहते सेवते हैं. कामभोग मोहकर्मका भेद है. मोहके उदयसे उंचजाति का पुरुष—चांडालजैसी नीचजातिकी स्त्रीसे—और कभी तिर्बचणीके

आयभी कामसेवन करलेता है. इसी प्रकार देवता-मनुष्यकी शाय-और मनुष्य देवांगनाके शाय यदि अनुकूल हो तो विषय सेवन कर सकते हैं, भरतचक्रीने गंगादेवीके शाय संभोग किया द्वादशांगवाणीके सिद्धांतोंमें लिखा है. दिगंबर इसबातको सुनकर हंसी उड़ाते हैं लेकिन मुखोंकी हांसीसे ज्ञानीयोंके वचन अन्यथा नहीं हो सकते. यदि प्रश्न किया जाय कि-क्या उन्होंने गर्भोत्पत्ति भी होती है ?-इसका उत्तर,—वैक्रियवीर्यसे—उदारिक और उदारिक वीर्यसे—वैक्रिय शरीरमें गर्भोत्पत्ति नहीं होती, परंतु कामविकारकी शांति जरूर होती है.

[५३]—सुलसा श्राविकाके शाय देवताने विषयसेवन किया जिससे उसको [ ३२ ] लड़के एक शाय पैदा हुवे. ऐसा कहकर दिगंबरलोक श्वेतांबरोका उपहास्य करते हैं. परंतु इसमें उनकी समझका फर्क है. सुलसाको रोगादि दोषसे गर्भस्थंभन नहीं होता था, उसने देवताका आराधन किया जब उसदोषके मिटानेको देवताने [ ३२ ] गुटिका दियो. और कहा कि—एकएक गोली खानेसे एकएक गर्भस्थंभन होता रहेगा. सुलसाने भोलेपनसे [ ३२ ] गोली एक शाय खाली. दैवयोग [ ३२ ] गर्भस्थित रहे. और बड़ी वेदनाका समय पैदा हुआ. देवताने आनकर कहा तुमने बड़ी भूल किया. जो ऐसा किया. निदान !—प्रसूतिसमय देवने साहाय्य किया जिससे ( ३२ ) पुत्र प्रसूत हुवे. वर्तमानकालमें भी देखते हैं बड़ेवैद्य आपनी चिकित्सा विद्यासे स्त्रीको गर्भस्थंभन हो ऐसा उपाय करते हैं और औषध जड़ीबुटीद्वारा साहाय्य करते हैं. किसीकिसी स्त्रीको दोदो तीनतीन लड़के एक शाय जन्मते हैं. क्या ! दिगंबरको यह बात पंजूर नहीं ?-उनके गुरुभट्टारक-

पादों-और तेरहपंथीयोंके भाइजी--तो इसीव्यवहारसे अपना गुजारा चलाते हैं.

(५४)-महावीरस्वामीकों मातापिता विद्याशालामें पढ़ाने केलिये लेगये दिगंबर इस बातकों नही मानते. तर्क करतेहैंकि-अवधिज्ञानी होकर पढ़नेकों कैसे गये ?-इसका उत्तर,-अवधिज्ञानी जरूर थे लेकिन मातापिताके मनोरथकों खंडित कैसे करे ? जैसे नेमनाथ भगवान् जानते थेकि-मेरा विवाह न होगा कुमारअवस्था मेंही संयम उदय आयगा. लेकिन मातापिता भ्रातादिककी प्रेरणासे उनका मनोरथ अखंडित रखनेकेलिये विवाहनेकों गये. और पीछे लोट आये, इसी प्रकार महावीरस्वामी विद्याशालामें गये-और पंडितका संसय निवृत्तन किया,-मातापिताका मनोरथ अखंड रखा-और पीछे लोट आये. दिगंबर नेमनाथको विवाहने केलिये जानातो मानते हैं, और महावीरस्वामीकों पाठशालामें जाना इसपर संसय लातेहैं-कहिये ? संसय मिथ्यादृष्टि कौन हुवे ? सोचो ! अवधिज्ञानीने अपनेज्ञानसे यहभी तो देखा होगा कि-मेरा जाना पंडितके घर वास्ते पढ़नेकेलिये होगा.

(५५)-दिगंबर कहते हैं श्वेतांबरआम्नायमें मानाहै कि-पेहले देवलोकका इंद्र मरकर दूसरे-और दूसरे देवलोकका इंद्र मरकर पहले देवलोकमें इंद्र होवे, इसका उत्तर,-यह बात असत्य है. क्या ! दिगंबरमतमें-अंधेरनगरीबेंबुझराजा-यही न्याय चलता है ?-विना प्रमाण कोई बात कहना बड़ी भूल है.-

(५६) धातकीखंडका कपिलवासुदेव जंबुद्वीपके भरक्षेत्रमें आया-उसकों केवलज्ञान हुवा और फिर आनंदसे-नृत्य किया. इसका उत्तर,-यहभी दिगंबरोंकी इषाका एक नमूना है,--

कोई शास्त्रमें नहीं लिखा.-उन्मत्तोंकों कौन समझावे ?

[ ५७ ]-दिगंबरकहते हैं श्वेतांबर आम्नायमें यह बात मान्य हैकि-कोई श्रावक-वृद्धसाधुकों स्त्रीका योग मीलाकर उनका मन स्थिर करेतो दोष नहीं किंतु पुन्यप्राप्ति हो. इसका उत्तर, यह बात मिथ्या है, स्त्रीसेवन साधुजनोंके लिये बिल्कुल निषेध है ऐसी ऐसी बातोंसेही तो दिगंबरोंकी उत्तम विद्वत्ता झलक रही है. मनमें समझ रहेहैं जो हमकों सुझीसों किसीकों नहीं सुझी. हमारी समझ के अगाड़ी किसीकी समझ ठीक नहीं. द्वादशांगी माननेवाले सभी मुनिमहर्षि अविद्वान् हुवे. नम्रहोकर पीछीकमंडलु पकड़ लीया. बस ! मुनमहाराज बन गये. सोभी कुवेका जल पीछा कुवेमें चला गया. न मुनि रहे न आर्यिका रही, स्थविरकल्पमार्गके नींदक होते द्वादशांगवाणीका नींदक बनना पड़ा, दूसरोंकी नींदा और अपनी तारीफ शिवाय बात नहीं. स्त्रीकों मुक्ति नहीं केवलीकों आहार नहीं यह दो बातें दिगंबरोंकी परमसमाधि है. दिगंबरोंकी स्त्री रात्री समय-अपने पतिकों नम्र देखे-सवेरे देवदर्शनकों जावे वहां देवमूर्त्तिकों नम्र देखे-और मध्यान्हमें उनके नम्र मुनि भिक्षाकों आवे तो उनकोंभी नम्र देखे-रातदिन पुरुषचिन्ह मेंही उसका ध्यान रहे मुक्ति कहाँमें हो ? अनेकजगह शास्त्रर्थमें लाजबाप होते हुवेभी निर्लज्जोंको लज्जा नहीं आती. रत्नकंबलके लिये गुरुसें लड़ाइ करके तो शिवभूतिमुनिने मत निकाला-आज उसकी औलाद असली जैनसंघकी बराबरी करनेको उमेदवार हुयी है. देखिये ? स्यात् ! !

( ५८ )-दिगंबरकहते हैं-तिविहार उपवासमें जलकों उष्ण बनाकर पीनेसें आरंभ होगा, इसलिये कच्चाजल पीना ठीक है.

श्वेतांबर कहते हैं त्रिविहारउपवासमें उष्णजल पीना चाहिये, क-  
ष्णजल पीनेसे उपवास नहीं होता-यदि आरंभहोनेका हेतुबताते  
होतो-कुर्वेसँ जल निकालके-पीनेमें-क्या ! आरंभ नहीं होता ?-  
आरंभका त्यागतो फिरभी न बना. और सचित्तजलपीनेसँ उप-  
वास नहीं बना. वृथा भूखे मरे.

( ५९ )-दिगंबर कहते हैं व्रतधारोमनुष्य व्रतमें शिथिल हो  
जाय और वो खानेको मांगेतोभी देना नही. व्रततोड़ानेका दोष  
लगता है. श्वेतांबर कहते हैं यह बात ठीक नहीं. जब सर्वप्रकार  
की धैर्यतासँ मनुष्य रहित होचूका-अन्नजल मागता है तो उसको  
एक दो दफे व्रतकी यादी दिलाना. यदि बिलकुल शिथिल है  
तो अनुकंपासे अन्नजल देना. इसमें व्रत तोड़ानेका दोष नहीं  
लगता. समाधिधैर्यताके अभावसँ उसका व्रतही रहा नहीं तो  
फिर तोड़ानेका दोष कहासँ आया ?-अन्न ! अन्न ! जल ! जल !  
पुकारता है और तुमको अनुकंपा न आयी तो धर्म कहा रहा ?-  
यह जिनाज्ञा नहिंकि-अनुकंपासँभी रहित होजाना. उसके परि-  
णामही पलट गये तो क्या उसका व्रत तुम रख सकते हो ?-परंतु  
सच्चे ! एकांतमिथ्यादृष्टियोंको समझाना मुश्किल है,

( ६० )-दिगंबर कहते हैं श्वेतांबर आम्रायमें शास्त्रको जड  
मानते हैं. इनका अविनय होजाय तो दोष नहीं. इसका उत्तर,-  
श्वेतांबरलोक शास्त्रको उत्तमप्रकारसँ आदरकरते हैं. सोनाचांदी  
इनकेपर चढ़ाते हैं. उंचे आसनपर रखते हैं. तुमने क्योंकर जाना  
जड मानते हैं, क्या ! मुद्रितकराना-देशविदेशमें जहां जहां धर्मवृद्धि  
हो वहां भोजना जिससँ हरकोई सच्चैतत्वको चीने, इसबातको दे-

खकर जड माननेका दोषारोप किया ?-पक्षीकी तरह दिगंबरलोक उभास्वातिकृततत्त्वार्थ सूत्रकों और भक्तामर कल्याण मंदिरआदि स्तोत्रको कंठ याद करलेते है और चतुर्दशी आदिक पर्वके दिन इनका पाठ करजानाही परमधर्म समझते है, सोचोकि-यह जडता नही तो और क्या है ?-प्रथमतो बिना व्याकरण विद्याके शुद्ध उच्चारण नही होशकता. दूसरे जबतक श्रोतागण वक्ताके कथन को यथार्थ न समझ ले-तो उसका संपूर्णश्रम व्यर्थ है. यदि कोई भेंसके आगे भेरवीरागिनी गावे तो उसको क्या लाभ ?-इसीप्रकार जानना चाहियेकि--शास्त्रको जड कहना श्वेतांबरका हुवा-या-दिगंबरका ?-

( ६१ )-श्वेतांबर नमस्कार मंत्रको ( ९ ) पद और [ ६८ ] अक्षरमय मानते है. दिगंबर ( ५ ) पद [ ३५ ] अक्षरमय मानते है. पीछले ( ४ ) पद नही मानते.-इसका उत्तर,-असंलभ [ ४ ] पद कम करनेसे अधूरा मंत्र हुवा. यदि कहा जायकि-संक्षेपसे हम पढते है तो संक्षेपसे उंकारमेंभी-पांचपद आजाते है उसीको पढलो. पांचपदपढनेकी तकलीफ क्यों उठानी ?-यदि तर्क कियाजायकि पीछले [ ४ ] पद अनुष्टुप्छंदमय है इसलिये ( ३२ ) अक्षर होने चाहिये और है ( ३३ ) इमलिये छंदोभंग हुवा अमान्य है, इसका उत्तर-यह कोइवात नही मंत्रका कवच ( ६० ) कोठेमें है. यदि एक अक्षर कम होतो कवचका ( १ ) कोठा खाली रहे, फिर मंत्रका विधान खंडित हुवा. खंडित मंत्र पढना या खंडित विधान करना शास्त्राज्ञासे विरुद्धहै. दिगंबरलोकभी देवपूजामें इस मंत्रको चालिकासहित उच्चारण करते है, और रिषिमंरुलस्तोत्रभी चालि-

का सहित पाठ है. द्वेषभावकर हठवाद करना दूसरी बात है.

[ ६२ ] दिगंबर कहते हैं श्वेतांबरोंके शास्त्र सब नवीन और पूर्वापर, विरोधसे भरे हुए हैं. इसका उत्तर.-श्वेतांबरके शास्त्र नवीन नहीं. जो द्वादशांगवाणीके अंग शास्त्र हैं उनको नवीन कहना उन्मत्तताका कारण है. दिगंबरके शास्त्र सब-शिवभूतिमुनिके पीछे बनेहुए हैं. द्वादशांग वाणीके अंगशास्त्रको मानते नहीं. सोचो ! अब कौनके शास्त्र नवीन ठहरे ?-श्वेतांबर शास्त्रोंमें पूर्वापर विरोध बताना दिगंबरोंकी इर्षा शिषाय दूसरा कोई कारण नहीं, पूर्व पाठी मुनियोंका अभाव हुआ-बारहवर्षीकालमें भूखकेमारे कंठाग्र ज्ञानकोभी मुनिजनो चितार न शके जिसमें ज़ी बहोतकुछ न्यूनता हो गयी-बाद एकपूर्वपाठी श्रीदेवर्द्धिगणीकृमाश्रमणजी जितना ज्ञान उनको याद था सब आचार्योंकी संमतिसे लिखगये कोई बात पाठांतरथी सो पाठांतर कहकर लिखी, मतांतरथी सो मतांतर कहकर लिखी.-इन बातोंको बिना विचारे यदि कोई कहे कि-इनके शास्त्रोंमें विरोध है उसे कोई नहीं समझा सकता. दिगंबरोंके शास्त्रोंमें पूर्वापर विरोधकी दोचार बातें यहां लिखते हैं. सीता चरितमें लिखा है कि-सीता जनकराजाकी बेटी थी. जनक राजाकी स्त्रीका नाम विदेहा था. उसकी कुक्षीसे सीता और जामंडल दोनूं एकसाथ जन्मे, छोटा पद्म पुराणमें लिखा है कि-सीता रावणकी बेटी थी छोटे बड़े दोनूं पद्मपुराणमें रामचंद्रजी का मारीचहिरणको आखेट रूप मारनेजाना नहीं लिखा. किंतु उत्तरपुराणमें लिखा है मारीचाविद्याधर स्वर्ण मय हिरण बनकर आया और रामचंद्रजी धनुष्यबाण लेकर उसको मारने गये,-

छोटा हरिवंश पुराणमें नेमनाथजीका गर्भ तथा जन्मकल्याणक शौरीपुरमें लिखा और बड़े हरिवंश पुराणमें दोनों कल्याणक शारिकामें हुये लिखे. शारिकामें शौरीपुर नामका एक महोलाबताया.

(६३)-चोतीस अतिशय दिगंबरलोक इस मुजब मानतेहै.-

(१०)-जन्मके (१०)-केवलज्ञान हुवे बाद-और (१४)-देवकृत. श्वेतांबरलोक चोतीस अतिशय इसप्रकार मानते है, (४)जन्मके (११)-केवलज्ञान हुवेके और [१५]-देवकृत.

(६४)-मल्लिनाथ और नेमनाथकों श्वेतांबरलोक बालभ्रम-चारी मानते है याने इनोंका विवाह नही हुवा. दिगंबर कहते है बामुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमनाथ-पार्श्वनाथ-और महावीर-ये (५) तीर्थकर बालभ्रमचारी रहे. विवाह इनोंका नही हुवा.

(६५)-छद्मस्थ अवस्थामें महावीर स्वामीका विहार अनार्य देशमें हुवा दिगंबर नही मानते. श्वेतांबर मानते है.

(६६)-रिषभदेवस्वामीकों [१००] पुत्र-और (२) पुत्री-श्वेतांबरलोक मानते है दिगंबरलोक-(१०१)पुत्र-और [२]पुत्री मानते है.

(६७)-तीर्थकर भगवान् गृहस्थ अवस्थामें दीक्षासे पहले एक वर्षतक सावत्सरीयदान देते है इसबातकों दिगंबर नही मानते.

(६८)-रिषभदेव जगवानने चारमुष्टीलोक किया दिगंबरलोक नही मानते. पंचमुष्टि किया मानते है.

(६९)-तीर्थकरकी माता-श्वेतांबरलोक कहतेहै (१४) स्वप्न देखे, दिगंबर कहते है (१६)देखे.

(७०)-दिगंबर-(१६)-देवलोक मानते है श्वेतांबर-१२-मानते है.



(७१)—देवलोकमें श्वेतांबरलोक-(६३)-प्रतर मानते है, दिगंबर (६३)-मानते है.

( ७२ )—श्वेतांबर-[ ५६ ]-अंतर्द्वीप मानते है, दिगंबर-[५६] मानते है.

(७३)—श्वेतांबर(६४)—इंद्र मानते है दिगंबर (१००) मानते है.

( ७४ )—श्वेतांबर कहते है तीर्थंकरके जन्मसमय शक्रेंद्र पाल-कविमानमें बैठकर आता है, दिगंबर कहतेहै नही !-ऐरावण हस्तीपर बैठकर आता है.

( ७५ )—श्वेतांबर चक्रवर्त्तिको [ ६४००० ] स्त्री मानते है, दिगंबर [ ५६००० ] मानते है,

( ७६ )—श्वेतांबर—पांचो पांडवोंको मुक्ति गये कहते है. दिगंबर कहते है कोइ मुक्ति गये कोइ नहीभी गये.

( ७७ )—शास्वते चैत्यालयोंकी गिनतीमें दोनोंकी संख्या कयीबेंसी है.

( ७८ )—दिगंबर चंडरुद्राचार्यके शिष्योंको विहार करते हुवे केवलज्ञान उत्पन्न हुवा नही मानते. कहते है दोघडी एक जगह स्थिर बैठे विना केवलज्ञान नही होता.

( ७९ )—महावीरस्वामीने दारिद्र्यी ब्राह्मणको अनुकंपासें अथ पना देवछुष्य वस्त्र दिया दिगंबर नही मानते कहते है दीक्षा लिये पीछे वस्त्रही नही रखना तो देना किसको?-

( ८० )—महावीरस्वामीको केवलीअवस्थामें रोग हुवा दिगंबर नही मानते.-श्वेतांबर मानते है, तत्त्वार्थसूत्रमें—एकादश—जिने-(११) परिसह केवलीको क्यौं कहा? उसमें रोग परिसहजी कहा

है. रोग होना अशाता वेदनीकर्मके उदयसे है, केवलीकों अशाता वेदनीकर्मका बिल्कुल अभाव नहीं इसलिये केवलीकों रोग होना असंभव नहीं कह सकते किंतु संभव है.

(८१)-कालिकाचार्यने साध्वीजीका शीलव्रत खंडन करने वाले गर्दजिह्वा राजाके साथ संग्राम किया इस बातकों दिगंबर नहीं मानते. कहते हैं साधुहोकर संग्राम करना ?-परंतु इतना नहीं सोचने धर्मरक्षाकेलिये संग्राम करनेसे महाव्रत नहीं जाता धर्मरक्षा केलिये छष्ट राजेकों या हरकिसी छष्टकों सजा देनेसे-शक्ति होतो तेजुलेश्या वगेरासे जस्मकरढालनेसे भी महाव्रत नहीं जाते. अल बते! पांच इंद्रियके विषयनिमित्त कोई कार्य किया जाय उसमें दोष है यदि इसबातकों नहीं मानते होतो-विष्णुकुमारजीने नमुचिको ताडनादियो क्यों मानते हो ?-

(८२)-दिगंबर भरतक्षेत्रके ७ खंडोंमेंसे बीचला एकखंड जो दखनदिशाकों है उसकों आर्य मानते हैं. श्वेतांबर उसमेंके साठे पच्चीस आर्य देश मानते हैं. जहांकि-तीर्थंकर-चक्रवर्ति-और-वासु-देवका जन्म हुवा है.

(८३)-सतराष्ट्रकारी-वीशप्रकारी-वगेरा पूजा-दिगंबर नहीं मानते. केवल अष्टप्रकारी पूजाही मानते हैं.

(८४)-दिगंबर कहते हैं-दीक्षालेकर श्वेतांबरमुनि कान वीं धाते हैं. व्याख्यानवाचते समय उसमें मुहपत्ति बांधकर व्याख्या करते हैं. कोइकोइ सदा बांधरखते हैं. इसका उचर,-जैनआगममें सदा-या-व्याख्यानवाचते समय-मुखपर मुखबस्त्रिका बांधना नही कहा. ढंढियेपंथके साधुकों जोकि-जैन नहीं और जैन कहलाया चाहते

हे देखकर दिगंबरने यह तर्क किया हो तो श्वेतांबरसंघकों क्या ? जैसे दिगंबर जैनभास वैसे दुंदिये जैनजास-जैसे-दिगंबरने छद्मशा गवाणीके सिद्धांतोंको उठापन किये-पीछो कमंडलुलेकर अन्य लिंग धारा वैसे दुंदियापंथीयोंने जिनप्रतिमा उठापन किया-और मुखपर मुखवस्त्रिका बांधकर अन्यालिंग धारा. टीका-जाण्य-निर्युक्त चूर्णि-अवचूर्णकों ढोडकर मनमाना अर्थकरना शुरूकिया और जाहेरातमें दयाधर्मीका चांद छेनाचाहा परंतु झूठ कहांतक चले !- अंतमें सवेरके सितारेकी तरह तेजरहित होनापड़ा. व्याख्यानवाच तेसमयभी मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना जैनागममें नहीं कहा, बल्कि- यह कहा है कि-व्याख्यानवाचनेवाला साधु अपने दांतोंको साफ रखे-सभामें अनेक प्रकारके श्रोते अकसर आतेहैं, दांतोंको मलीन देखकर कहेंगे बड़े मूर्ख है ! इनका धर्मजी मूर्खतालिये है जो दांतोंकोभी साफ नहीं रखते !! धर्मभी साफ नहीं होगा !!!-इस लिये दांत साफ रखना कहा. यदि मुखवस्त्रिका बांधकर व्याख्यान वाचना जैनआगमकों स्वीकार होता तो दांतोंको कौन देखता !- जिसकेलिये साफ रखना कहा गया.-नम्रमुनि जब उपदेश देते होंगे तब क्या हाल होता होगा ? अनुमान तो यही होता है कि-सबलोक उनके पुरुषचिन्हपर दृष्टिदेकर उपहास्य करते होंगे. फिर उपदेशमें कौन ध्यान देता होगा ?

( ८४ ) बोलोंका वर्णन पुरा हुआ. कितनेक बोल व्यर्थ वा दानुवादके देखे उनको ओरकर जो शास्त्रार्थ करनेके योग्य थे केवल उनकेपरही समालोचना किया. यूँतो पेंडपेंडपर विरोध है. कहांतक और कितना लिखें ?

[ वीशपंथी और तेरहपंथीयोंकी क्रियाका तफावत ].

( वीशपंथीलोक )-जिनमंदिरमें क्षेत्रपाल देव-देवी-बगेराकी स्थापना करते हैं.

( वी-पं- )-जिनप्रतिमापर पंचा मृतसँ कलशामिषेक करते हैं.

( वी-पं- )-पुष्पमाला छूटेफुल प्रतिमापर चढ़ाते हैं.

( वी-पं- )-सांजकों मंदिरमें आरती करते हैं.

( वी-पं- )-हरैफल पुजनमें चढ़ाते हैं.

( वी-पं- )-चवरी गायके बालका चवर उपयोगमें लाते हैं.

( वी-पं- )-मंदिरमें जब बड़ी पूजा बगेरा विधान होता है जवारा आरोपण शकली करण-बगेरा करते हैं.

( वी-पं- )-गुरुओंके चरणका धूम मानते हैं-जैसे-नेमिचंद्राचार्यके, बगेरा.

( वी-पं- )-प्रतिष्ठाबगेरामें नवग्रह पूजन करते हैं.

तेरहपंथी लोक नहीं करते.

तेरहपंथी नहीं करते.

तेरहपंथी नहीं चढ़ाते.

तेरहपंथी नहीं करते. किंतु केवल पाठमात्र उच्चारण करलेते हैं तेरहपंथी नहीं चढ़ाते.

तेरहपंथी उसजगह रेशम-या-गोटेके-चवर उपयोगमें लाते हैं तेरहपंथी नहीं करते हैं.

तेरहपंथी नहीं मानते.

तेरहपंथी नहीं करते.

(बी-पं-)- व्रतके ग्रहण और स  
माप्तिमें गुरुकी पीछी-वा-माला  
रूप—गुरुस्थापनाकों हाथमें  
लेकर नमस्कार करते हैं.

( बी-पं-)-निर्गन्धगुरुकोंभी गुरु  
मानते हैं और सग्रन्थ अर्थात्  
परिग्रहधारी--भट्टारक--और  
उनके शिष्य पांडेकोंभी गुरु  
मानते हैं.

तेरहपंथी नहीं करते.

तेरहपंथी- भट्टारक-और पांडे  
कों गुरु नहीं मानते. लेकिन  
इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाकों मा  
नते हैं. क्यों ? जब उनको  
गुरुही नहीं माना तो उनके  
प्रतिष्ठा कैसे मानी गयी ?-  
और बीशपंथी जब परिग्रह  
धारी भट्टारक पांडे आदिकों  
भी गुरुमानते हैं तो उनके  
शास्त्रकी यहजो प्रतिज्ञाथोकि  
निर्ग्रन्थकोंही गुरु मानना वह  
कहां रही ?-

इकीकतमें दोनोंकी भूल है. जब द्वादशांगवाणीके सिद्धां  
तोंको उध्यापन किये-और विच्छेद होये हुवे जिनकल्पकों स्था  
पन किया-द्रव्य क्षेत्र काल भावके परिवर्तनकों सोचा नहीं-इसी  
सबबसे-पदपदपर विरोध हुआ.

बीशपंथी कहते हैं जिनमंदिरमें विवादकर तेरहपंथीयोंने  
नवीन पंथ निकाला,-गुरुओंको बिल्कुल उध्यापन करदिया,-  
देवपूजा पुरानी छोड़कर भाषाछंदमय मनोमति बनायी,-अष्ट

प्रकारी पुजामें पुष्प, फल, दीप, पंचामृत, सब बदल दिया, और-  
खोपरेकी गिरिकोंही नैवेद्य और दीपक बगेरामें प्रधान कर दिया-  
( क्षेत्रपाल देवीदेवताकों जडा मूलसे उच्चापन करदिये—बहोत क्या  
कहे ! जैसे श्वेतांबरमेंसे विना गुरुके मुंडे टुंडिये पैदा हुवेवैसे दि-  
गंबरमें तेरापंथी पैदा हुवे.

( दोहा. )—श्वेतांबरके घातकी—प्रकट भयाछे टुंडया.

वीसपंथमें तेरापंथी विना गुरुका मुंडया. (१)

( सबैया. )

नाममात्र तेरापंथ चाले न सुपंथपंथ कहा जयो ग्रंथनकी करतेहै पठापठी,  
तत्त्वकी न सुझे काहु बलज्ञानी बने फिरे कहे हमारे देवगुरु धर्मकी घटाघटी,  
रामा धन मोहके विलासनमें मग्न रहै कुटिल कुबाते करे धर्मसे हठाहठी  
देवधर्मपूजाहुमे डलके स्वभाव धरे देखो भाइ जहांतहां करतेहै लटालठी.

[ अथ-रागनी होरी. ]-

कहा भयो जैनी कहायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, -(एटैर.)-

धरके कपटकी गठ्ढी शीरपें-तेरापंथ कहायो,

कर विवाद जिनमंदिर माहे-पापबंध उपजायो,

कहे हम धर्म बढायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, १

छहु रुतके फलफूल गुरुने-जिन आगममें गायो,

तामें दोष बतावेरे भाई !-धर्म नजर नही आयो,

कहां ? तेरो ज्ञान नसायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, २

पद्मावती क्षेत्रपाल तिनोंकों-रक्षाकार बतायो,

यह तो रक्षक जिनशासनके-ताहे उच्छेद करायो,

तैं परिवार बतायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, ३,

सात तरहके गुरुजन भाखें-भेदभेद कर गायो,  
 जैसेकों तेसा लख भाई !-यह सतगुरु फरमायो,  
 तेरे हिरदे न समायो-जिनमत तेने अजहु न पायो. ४,  
 इतिपदं.

तेरहपंथी कहतेहैं-वीशपंथीयोंने नये ग्रंथबनाकर जिनमुद्राकों  
 अविधिसे पूजाया-रागीदेव स्थापनकर हिंसामें धर्म बताया-दीन  
 डुर्बलबुभुक्षित कुलका पुत्र मौल लेकर उसका नाम पंडित रखा-  
 और नग्रवेशकों भ्रष्ट कर दिया-यह सब हुंदाअवसर्पिणीकालका  
 दोष है-ऐसा कहकर निम्नलिखित लावणी गाते हैं.

हुंदासर्पणीकालदोषतें-जिनमतमें पाषंड भये,  
 तिनकी अब कुछ कहूं हकीकत-सुनकर भवी प्रतिबोध थये, १  
 दीनडुर्बलका पुत्र मौल ले-ताका पंडित नाम धरा,  
 फिर ताकों जिनदीक्षा दंकर-नग्रवेश तें भ्रष्ट करा, २  
 शालडसाला ओढ़ पालखी बैठ-बहोत अभिमान भरा,  
 पंचपापमें मग्न होय शठ-श्रावकजनपर हुकम करा, ३  
 (जंद.)-तिनें कल्पित ग्रंथ बनाये-जिनमुद्रा अविध पूजाये,  
 बहुरागी देव थपाये-हिंसामें धर्म बताये, (१)-  
 भोरेजन बह्काय बाचकर-डुर्गतिकों तिन संगलिये,  
 अनंतानुबंधिमिथ्याती-धरकर ईतर निगोद गये, ४.  
 हुंदासर्पणीकालदोषतें-जिनमतमें पाषंड भये,  
 तिनकी अब कुछ कहूं हकीकत-सुनकर भवी प्रतिबोध भये

यदि कहा जाय कि—तेरहपंथीयोंने इसी लावणीमें श्वेतांबरकों भी तो पाखंडी कहे हैं.

( इसका उत्तर—) मित्रवर ! कुछ हर्ज नहीं. तेरहपंथी-बी शपंथी-या-अन्यपंथी-कोइ हो ! किसीके कहनेसें कोइ बुराजला नहीं होशकता. अलबते ! युक्तिप्रमाणद्वारा जो शरूश झूठा हो जाय वही झूठा है. सोचो कि-जब दिगंबरके शास्त्रोंमें-जगहजगहपर श्वेतांबरका खंडन लिखा है. और श्वेतांबरके मूलसिद्धान्तोंमें दिगंबरका नामतक नहीं, कहिये ! फिर क्या सिद्ध हुवा :-बस ! यही सिद्ध हुवा कि-श्वेतांबरशास्त्रसें दिगंबरके शास्त्र पोछे बने. क्योंकि—पहलेवालोंका खंडन पीछले करते है. पिताके विवाहका तमाशा पुत्र नहीं देख सकता. इतनाही लिखना समझदारोंकेलि ये बढात है,—

( श्वेतांबर दिगंबरकी निन्नताका विषय समाप्त. )—

[ मुल्ताननिवासी दिगंबर श्रावकोंके (१६) प्रश्नोंका उत्तर. ]—

(१)—प्रश्न—केवली जगवानकों आहार कौनसा है ?-श्वेतांबर कहते हैं कवलाहार है. इच्छा रहित है ? वा सहित है ?-इच्छारहित है ?-इच्छारहित है कहोगे बने नहीं.

( उत्तर. )—शास्त्रके लेखपर जो मनुष्य कुतर्क करते है वे ज्ञानप्राप्तिके अधिकारी नहीं. सोचो ! एक मनुष्यकी अभिलाषा उग्रधोनेकी है. और पुछता है इध क्योंकर उत्पन्न होता है ?-



किसीने उत्तर दिया गौ महिषी और छालीआदिसैं उत्पन्न होता है, तब डुग्धाभिलाषी पुरुषकों यह प्रश्न करनाकि-इन तीन प्रकारके पशुओंमें किनका डुध उत्तम है ? यहतो सार्थक है, परंतु यदि वह इसप्रश्नकों छोड़कर ऐसा कुतर्क करेकि-गौ तो श्वेत होनेसैं उसका डुध श्वेत होना यथार्थ है लेकीन माहिषी-छाली-जो श्याम होतीहै उनका डुध श्वेत क्यों ?-ऐसा कुतर्क करनेसैं शंसयमिध्यात्वी होता है. सूर्य विना इच्छा प्रकाश करता है और उसके प्रकाशमें आर्द्रवस्तु शुष्क हो जाती हैं, संपूर्णसंसारकों प्रकाश लाभकारी होताहै लेकीन उलुका नहीं होता. इस कहनेसैं क्या ! सिद्ध हुवा कि-केवली जबतक शरीरयुक्त रहें तबतक उस शरीरका स्वभाव स्वाज्ञाविकर्म्म आहार करनेका है. उनकों इच्छा होना या न होना इसके सिद्ध करनेमें केवल कुतर्क है, जो शास्त्रसैं विमुख है, देखो ! विहारकरना-समवसरणमें आसनपर बैठना-धर्मोपदेश देना-इत्यादि सभी हांतेहै. जो इनकों इच्छासैं कहोंगे तो संभवे नहीं, यहां कोई तर्क करेकि-जिन जीवोंका पुन्योदय होकर तीर्थंकर या केवली महाराजका दर्शनलाभ होनेवाला है उनकी पुन्यप्रकृति ऐसा कराती है तो यह उत्तर होशकताहै कि-जो वस्तु आहारमें दीयी जावेगी वोभी देनेवालेकी ( याने ) दानीकी पुन्यप्रकृतिका फल है, विशेष देखनाहोतों चोरासीबोलों मेंसैं (१०)-मा बोल देखो.

(१)-प्रश्न,—सूत्र किसके रचे हुवे है ? ऊनकी श्लोक संख्या कम क्यों मिलती है, ?-

( उत्तर, )—सूत्र गणधरआदिकोंकें रचे हुवे है. बारावर्षी

मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके [१६] मन्त्रोका उत्तर. १७७

कालदोष करके बहुधा विच्छेद होगये. इसलिये श्लोकसंख्या कम मिलती है.

(३)-प्रश्न, -अन्यलिङ्गी-गृहस्थ-और चांडालादिकों को मोक्ष कहेहैं सो किस तरह ?—

( उत्तर )—दिगंबरमतके पदमपुराणमें लिखा है कि-राजा सोमदत्त-नित्य प्रत्ये एक बालकका मांस खाया करता था, यह काम चांडालोंका है, परंतु अंत्यसमय दीक्षालेकर मोक्ष गया. तथा अन्यलिङ्गीभी अनेक कथाओंसे मोक्ष गये सिद्ध होचूकेहैं. जिसको अंतकृतकेवलो कहेहैं. पुन्याश्रव-कथाकोश-और-आराधनासारआदिकमें-अनेक कथाएँ भरी हैं. जिनमें पूर्वोक्त वचनकी सिद्धि होतीहै. विशेष तर्क वितर्क देखना हो तो पूर्वोक्त श्वेतांबर दिगंबरकी भिन्नताका विषयमें-(१८)-(१९)मा-बोल देखो.

(४) प्रश्न—केवलीकों उपसर्ग कैसे हो ?—

( उत्तर. )—केवलीकों उपसर्ग न होना चाहिये. परंतु हुंमा अवसर्षणी कालदोषसे अनहोतीबात हुयी है जो दश आश्चर्यमें गिनी गयी है.

(५) प्रश्न—मल्लिकुवरीकों मल्लिनाथ कहते हैं.

( उत्तर. )—यह यथार्थ है. समाधान इसका जहां स्त्रीको मोक्ष सिद्ध कियाहै वहांसे जानो अर्थात्-(३४)-और-(४२) में-बोलके विस्तारमें देखो.

(६)-प्रश्न—वर्द्धमानस्वामी देवानंदाब्राह्मणीकी कुक्षीमें रहे सो गर्जकल्याणक कहाँ हुवा ?—

( उत्तर. )—पंचकल्याणक तीर्थकर महाराजके होतेहैं सो व

१७८ मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके [१६] प्रश्नोका उत्तर.

ईमान तोर्थकर जब देवानंदाब्राह्मणीकी कुक्षीमें गर्जपने आये तब वहांही गर्जकल्याणक हुवा, और जहां जन्में वहां जन्मकल्याण क हुवा, फिर-दीक्षा-ज्ञान-और-निर्वाण-ये ( ३ ) कल्याण और हुवे, एसा जानना.

(७)-प्रश्न-युगलियाकों श्वेतांबर नरकगति कहते है. सिद्धांतो देवगतिसे दूसरी नही कही.

( उत्तर. )-एक युगलयुगलनीकी कारणवशात नरकगति हुयो सिद्धांतमें लिखाहै. जिसमें हरिवंशकी उत्पत्ति हुयी. सब यु गलीयोंके लिये यह बात नही, हुंडाअवसर्पणीकाल दोषमें यह एक अनहोती बात हुयी है. इसका क्या कहा जाय ?-जैसे कोइ मैलेमें हजार आदमी चले जारहे है-उसमें एक पुरुष काणा भी चला जारहाहै. इनकों देखकर सब सही कहेगेंकि-हजारो आ दमी सुजाके जारहेहै. एक काणेकी अलग गिनती कोइ नही क रता, बस ! इसीतरह एक युगलयुगलनोके नरक जानेंसे सब नर कगामी नही हो सकते.

(८)-प्रश्न-प्रतिमाका स्वरूप वीतराग कहा सराग करके क्यों पूजते हो ?—

( उत्तर. )-आभूषणआदिकसे वीतराग भावका अभाव नही होता. दिगंबर लोक जो अमूल्यसिंहासन-छत्र-भामंडल-आदि प्रतिमासे मिलाकर रखते है क्यों ! यह आभूषण नही है ?-वीत राग हुवे पीछे कौनसे दिन भगवान् रथमें चढे थे ? रथमें चढाक र फिरानेमें भी दिगंबरके वीतरागका वीतरागभाव बना रहा तो आभूषण पहेरानेसे वीतराग भावका नाश कौन कर शकता है ?

मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके (१६) प्रश्नोका उत्तर. १७॥

विशेष वर्नन देखना होतो चोरासी बोलोमें (१५)मा-बोछ देखो.

(॥)-प्रश्न-केवलीकों केवली नमस्कार करे या नही ?

( उत्तर. )--केवलीकों केवली मिले तब नमस्कार करे, दिगंबरकी तरह केवली एक नयकों उन्हापतें नही. किंतु निश्चय और व्यवहार दोनों नयकों स्वीकार रखते हैं. अलबते ! दिगंबर तो यही हठ करेंगेकि-केवलीकों केवली न मिले. समवसरणमें ज़ी न्यारी न्यारी गंधकुटी ( कोटडी ) में बैठे. आते जाते रस्तेमें कभी न मिले.

(१०)-प्रश्न-महावीरस्वामीने अपने निर्वाणसमय गोतमगण धरकों देव शर्माब्राह्मणके संबोधनार्थ भेजा. उसमें मोहका भय सिद्ध होता है कि-मैं मुक्ति जाऊंगा तब यह मोह करेगा. सो भगवान्‌कों रागभाव आया.

( उत्तर. )--यह कहना ठीक नही. जबजब समवसरणमें अनेकजीव एकत्रित होतेथे तो भगवान्‌की देशना होतीथी, यदि यही समझा जायकि-उनजीवोंके आनेमें भगवान्‌ देशना देतेथे तो यहांज़ी राग सिद्ध होता है, परंतु ज्ञानीमनुष्य ज्ञानिदृष्टज्ञावकों राग नही समझते, किंतु जेसाजेसा ज्ञानियोंके ज्ञानमें ऊलकता है तद्वत् होनेकी आज्ञा ज्ञानियोंके मुखसें होती है. रागभावसें नही. कुतर्क करना न्यायीबातहै. सोचो ! वीतरागकों राग कहां ?

(११)-प्रश्न-साधुकों दंडा रखना किस वास्ते कहा ?—

( उत्तर. )--शास्त्रोंमे मुनिकेलिये दंडा केइ विशेष कारणोंसें रखना लिखाहै जिसमें एक यहभी है कि-जब मुनिको किसी नदी पार होना हो तो जलपरीक्षाकेलिये इसकी आवश्यकता हैकि-

२०० मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके (१६) प्रश्नोका उत्तर.

जल इसदंडेसे अधिक उंचा तो नहीं है ? जिसको मैं पार न कर सकूँ, ?—

(१२)-प्रश्न-दादाजीके चरणकों पूजना क्यों कहा ?

(उत्तर.)-शास्त्रमें पदपदपर गुरुके चरणोंकी पूजा करनी लिखी है. जब दादाजीने पंचमहाव्रतपालन किये तब वे साधुपद में गिनेगये साधुकी सेवा भक्ति करना गृहस्थका मुख्यधर्म है, फिर हमके चरणपूजनेमें क्या दोष हुआ ?-अलबते ! संसारिककार्य बन-स्त्री-पुत्र-परिवारकी वांछा-वगेरा करके पूजना न चाहिये. दिगंबरलोक जब तीर्थयात्राकों जातेहैं वहां अनेक चरणपादुका पूजते हैं तथा मालवा-गुजरात वगेरा देशोंमें-नेमिचंद्रआचार्यकी चरणपादुका हरेक मंदिरमें बनीहूयी स्थापित है उसकों पूजते हैं. क्या ! मुल्तानकेदिगंबर श्रावकों अपने घरकीजी मालुम नहीं-कनारेपर बसते हों इसालिये ?-

(१३)-प्रश्न-तीर्थकर निहार कैसे करते हैं ?-

[उत्तर.]—जो आहारकरेगा निहार अवश्य करेगा. आहार और निहार शारीरिकधर्म है. जबतक शरीर रहेगा छूट नहीं सकते. दिगंबरने (६३) शलाकापुरुषकों आहार माना और निहार नहीं माना. यह एकांतमिथ्यादृष्टिका लक्षणहै. विशेष वर्नन घोरशो बोलमें (३६) मा-बोल देखो.

(१४)-प्रश्न-मोक्षमें कोनसा संहननवाला मनुष्य जावे ?-

(उत्तर) वज्ररिपभनाराच संहननवाला.

(१५)-प्रश्न-स्त्रीकों कितने गुणस्थान प्राप्त हो ?

(उत्तर.)—जब हम स्त्रीकों मोक्षहोनाही मानते हैं तो गुण

( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) ३०१

---

स्थानजी चौदह क्यों नहीं मानें ?

( १६ )-प्रश्न,—श्वेतांबर किसको कहना ?

( उत्तर )—श्वेतनाम है निर्मलका-सो निर्मल है वस्त्र और  
आचरणजिनके-उनको कहना श्वेतांबर—

---

[ लश्कर गवालियरनिवासी दिगंबरश्रावक-फतेहलाल  
जीके प्रश्नोंका उत्तर. ]

---

उक्तश्रावक-फतेहलालजीके साथ-स्वरूपमें जां जो प्रश्नोत्तर  
हुवे उनकी नकल,-फतेहलालजीने आतेही वंदन नमन करके कहा  
में दिगंबरविशंपंथ आम्नायका श्रावक हूं, पंक्ति चमनलालजी  
जयपुरवाले कइ रौजसें यहां आये हुवे है, उन्होंने आपका नाम  
लेकर कहाथा कि-उक्तसाधु अच्चे विद्वान् पुरुष है, कइदिनोंसें  
मैं चाहताथाकि-आपकेसाथ ज्ञानगोष्ठो करके कइ बातोंके नती-  
जेपर खयाल करूं, परंतु आजतक ऐसा मौका नहि मिलाकी-मैं  
बो-उभेद पुरोकरता, इसवरुत आपको यदि तकलीफ नहोतां  
कइबातोका दरयाफ्त करना चाहताहूं. इसपर कहा गया कि-  
जो कुछ दरयाफ्त करनाहो खुशीकेसाथ करें, मुनियोंका धर्म  
है कि-जिज्ञासु पुरुषोंके प्रश्नका यथार्थ उत्तर देना.

( फतेहलालजीने )-कहा-मैं-अल्पज्ञहूं, यदि कोइबात अयो-  
ग्य कही जायतो आप कृपा करना. ( हमनेकहा )-चर्चाबार्तामें  
एसा वरुतजी आनपमता है कि-कोइ बात जोरके साथजी क-  
हनी पमती है इसपर नाराज होना नचाहिये.

१७३ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

( फतेहलालजीने कहा )-मैं इसबातको स्वीकार करता हूँ कि झूठीबातके पक्षकरनेसें सबको नाराजी और गुस्सा आताहै, अलबते ! एक केवलीकों नही आता. क्योंकि-वे-रागधेष रहित है. हमजी जब किसी डकानदारके सामने जाकर कहते है कि-अंग्रेजो रुपया-चौदह आनेका होता है तो वो इस बातको कब कबूल करता है ?- इसी प्रकार झूठी बातकों ज्ञानी जन कब सच कहने लगें ?

( हमनेकहा. )-जो शरूख-साधुजनोसें चर्चावार्त्तामें हारजाता है और कोइ युक्ति नही पाता-तो-कहने लगता है आप ! साधु महात्मा है आपको गुस्सा करना ठीक नही, क्षमा रखना चाहिये इत्यादि इत्यादि,-परंतु यह नही आता कि-इसमें मेराही अपराध है जो-वक्रता करके सत्यकों झूठ कह रहाहूँ. ठंमा जलजी अग्निपर धरनेसें उष्ण जाता है फिर सत्यवादीके सामने झूठ बात कहनेपर उनव तमोगुण कैसे न आयगा ?-किंतु जरूर आयगा, आवश्यक का जैनागमजी कह रहे है कि-जो शरूख वक्रताकरके प्रश्न प्रश्नको तामना जरूर देना, अलबते ! जो विनयसें पुछे उसव तामना देनेकी कोइ जरूरत नही, जैसे छलटे चलनेवाले घोंको चाबक लगाना पमता है वैसे वक्र-श्रिष्यकों वचनरूप ताबक लगानाजो न्यायमार्ग है, अगर इस बातकों बिना समय कोइ शरूख-साधुजनोंको दोष देवेकि-आप-कों गुस्सा करना यहां कहा है ?- तो उसको कोइ समजा नही सकता. सोचो किसत्यबातके इनकार करनेवालेको यदि तामना न दीयी जाय तो क्या धन्यवाद दिया जाय-यदि कहा जायकि-

न-धन्यवाद-न-ताड़ना-कुछ नहीं देना चूप होजाना चाहिये तो इसमेंजी दोष प्राप्ति है. क्योंकि “ नानिषिद्धं अनुमतं— ” इस न्यायसे असत्य बातका स्वीकार हुवा, अज्ञानीयोंके अज्ञानवादकी वृद्धि हुई-और चारजनोंके सामने वक्ताको मूर्खताका दोष आया कि-ये अविद्वान् है. इसलिये असत्यके स्थापनकरने वालेको तामना देना कोई अन्यायकी बात नहीं. इस बातको बिना समझे जो लोग साधुजनोंसे-या-गृहस्थ विद्वानोंसे कहदेते है कि-गुणीजनोंको गुस्सा करना नचाहिये वे हकीकतमें मूर्ख है. शास्त्रोंमें जगह जगहपर लिखा है कि-धर्मके अर्वावाद बोलने वालोंको शिक्षा देना, इतनेपर न माने और कुतर्क करेतो तामना तर्जना देकर उसकी कुयुक्तियोंका खंमन करना. हा ! अलबते ! बिना प्रयोजन उसको ठेमठाम करके क्लेश पैदा करना ठीक नहीं, परंतु जब सामने आकर धर्मतत्वको-झूठा कहे तो फिर चूप खेंच जानाजी अच्छा नहीं.

( फतेहलालजीने कहा. )—यह आपका कहना बहुत ठीक है कि-असत्यबातके उद्घापन करनेमें चूप रहना योग्य नहीं, किंतु सत्यका मंमन और असत्यका खंमन करना-जरूर-चाहिये जो शरुस हृदयसे मखीन है बेही मुखमीठी बात करके अपनी खोटी वाहवाह कराते है. अब-मैं-आपसे जो कुछ पुछने आयाहुं आझा हो तो प्रारंज करूं.

( हमने कहा. )—खुशीसे किजिये !—हमको इसमें कोई तकलीफ नहीं.

( अब-फतेहलालजीका-प्रश्न. )—परवस्तुका संग त्यागने योग्य



है-या-अंगीकार करने योग्य ?

( इसपर हमारा उत्तर. )-त्यागने योग्य है.

( फिर फतेहलालजीकी तर्क. )-फिर चौदह उपकरण श्वे-  
तांबर मुनि क्यों रखते है,

( उत्तर. )-जैसे दिगंबरमुनि मूर्धारहित-पींठीकमंमलुं-रखते  
है तद्वत्श्वेतांबर मुनि चौदह उपकरण रखते है.

( ३ )-तर्क-वस्त्र रखना मूर्धा होनेका कारण है, न रख-  
ना चाहिये.

( उत्तर. )-योर पींठी और कमंमलुजी मूर्धाका कारण है  
न रखना चाहिये. यदि कहा जाय कि-ये तो साधुके चिन्ह है  
तो क्या चौदह उपकरण साधुके चिन्ह नहीं है ?-असल पुठो  
तो शरीरहो मूर्धाका कारण है, शरीरहोकेलिये मुनियोंको आ-  
हारआदिकी गवेषणा करनी पमती है.

( ४ ) तर्क-शरीर अपरिग्रहित है और वस्त्रपरिग्रहित (या-  
ने ) ग्रहण किये जाते है,

( उत्तर. )-जैसे वस्त्र-ऐसं-शरीर-दोनो परिग्रहितही है. श-  
रीर माताके उदरमें ग्रहण किया वस्त्र पोर्सेमें ग्रहण किये, आ-  
त्माके लिये तो दोनों परवस्तु है.

( ५ ) तर्क-मुनि-वस्त्र उठेमें तो मूर्धाआयी सिद्ध होगी.

( उत्तर. )-चलतेवस्तु पींठीकमंमलुं उठायमें तो नी मूर्धा  
आयी सिद्ध होगी, आहारके लिये उठना और कवल लेकर  
मुखमेंहो धरना इसकोंनी मूर्धाका कारण कहो.

( ६ ) तर्क-पींठीकमंमलुं-जीवरक्षा और शौचक्रियाके लिये

रखे गये हैं। पुस्तक पंखे-ठवणी कबली-पुस्तकका बंधन-योगपट्ट-क-आसनपट्ट-और कोपीन-बसेरा उपकरणजी चारित्रनिर्वाहके लिये समयानुसार रखने योग्य है, परंतु जब ओढ़नेके लिये वस्त्र रखलिये तो अचेलपरिसह सहन करना कहां रहा ?—

( उत्तर. )—अचेलपरिसह सहन करना उसका नाम नहीं है जो वस्त्र त्यागकर बिल्कुल नग्न होजाना, बहु मूल्यकेवस्त्र त्याग कर थोमे मॉलका कुत्तितवस्त्र रखना इसकानाम अचेलपरिसह है। अचेलशब्दमें जो अकार है वह सर्वथा निषेधवाचक नहीं, व्याकरण शास्त्रमें कहा है कि—

द्वौ नजौ समाख्यातौ—पर्युदासप्रसज्यकौ,

पर्युदासः सदृग्ग्राही—प्रसज्यस्तु निषेधकृत्. ?

यदि इस प्रकार अचेलशब्दके अकारकों नहीं मानों तो जहां लिखा है कि-मुनि-अज्ञानपरिसहकों सहनकरे-वहां-क्या ! बिल्कुल ज्ञानके अज्ञावको सहन करना कहोगे ? चेतनालक्षण ज्ञानका अज्ञावजी मुनियोंमें मानते हो क्या ?- यह दिगंबराचार्योंकी बहुतबड़ी भूल है जो-जिनकल्प-और-स्थविरकल्पकों एक बनादिया, और फिर दोनोंमेंसे एककाजी निर्वाह न कर सके। एकांत पट्ट खेंचनेवालोंका यही हाल होता है, और जो तुमने कहा कि-योगपट्टक रखना समयानुसार ठीक है तो फिर उसीपर खयाल कर लिजिये !- कि-योगपट्टक किसका नाम है ?- दिगंबरमुनि योगपट्टक आवरण वस्त्रकों कहते हैं। और कहते हैं पंचमकालमें लज्जापरिसह जितना मुश्किल है इस लिये एक आवरणवस्त्र याने उढनेकावस्त्र रखना चाहिये। इसपर सवाल होनेकी

३५६ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

जगह है कि-फिर आपका दिगंबर पना-कहां रहा ?- और आप-  
पलोंकोंकी आर्या जो सोलह हाथकी सामी पहेनती है क्या वह  
दिगंबरा नही रही ?- श्वेतांबरा होगयी ?- सत्य है कि-अपनी  
शक्तिकों विना विचारे कार्यकरनेवाला अखीरमें खताही पाताहै.

( ७ ) तर्क-जिनकल्पमुनिकों आप मानते हो-या-नही ?

( उत्तर. )-मानते है परंतु महाविदेहक्षेत्रमें-यहां-नही रहे ज-  
बसें जबूस्वामी निर्वाण हुवे है ज्ञारतवर्षमें उक्त मुनि नही रहे  
व्यवच्छिन्न होगये.

( ८ ) तर्क-जिनकल्पमुनि किसकों कहते है ?

( उत्तर, )-जिनकल्पमुनि उसको कहते है जो-वरिषज-  
नाराचसंहनवाले हो-थोमेसे थोमा नवपूर्वकी तिसरीआचार व-  
स्तुतके और उत्कृष्टसें दशपूर्वतक पढे हुवे हो-तीसरेपहेर जिज्ञा-  
टन करे-आंखमें तुणखा-और-पावमें कंमा लगें तो जी निकाले  
नही और-चोता-और-व्याघ्र-बगेराके मरसें पीडे हूवे नही-रोगहो  
जाय तो जी दवा न खावे-और-नवकल्पी विहार करे, अगर उ  
महिनेतक आहार नमिले तो जी दीनता न लावे-सूत्रसिद्धांतके  
बलसें सबबातको मालूम करे-लोच करे-सर्वथा अप्रतिबंध होनेके  
कारण किसीकों धर्मोपदेश न देवे-और पाणिपात्रआदि अनेक  
लब्धिके धारक हो-वे-मुनि जिनकल्पमार्गके अधिकारी है. जिनके  
हाथमें सो ( १०० ) घंमे जलके गेरदिये जाय और एक बिंड  
जो उसमेंसें निचे न गिरनेपावे ऐसे लब्धधारी आज कहां रहे!-

( ९ ) तर्क-न रहे तो क्या हुवा ?- जितना बनशके : उत्त-  
नात्तो जोर लगाना चाहिये.

( उत्तर )-असमर्थ होकर समर्थका दावाकरना लाजके ब-  
दले हानि उठाना है. एकमात्र नंगे रहनेहीसे जिनकल्प बनना  
चाहते हो तो अलग बात है. वर्तमानकालमें लब्धिहीन मुनि रह  
गये उनको उचित है कि-स्थविरकल्प मार्गको ही स्वीकार रखे.  
वृथा इठकरके दोनों बातोंसे भ्रष्ट होना कोई चतराईकी बात  
नहीं. देखिये ! आपके आचार्योंने-रजोहरण-मुखवस्त्रिका-गोमकर  
पीठीकमंडलुं धारा परंतु इसमेंजी लाजके बदले हानि उठाई.  
याने जैनलिंग त्यागके अन्यालिंगी हुवे. सर्व शास्त्रोंका कथन है  
कि-मुनियोंको घरघर जिह्वाटन करना परंतु पात्रके अज्ञावसें  
आपके मुनियोंने-विचाराकि-यहतो न बनेगा, लाचार ! एक ही  
के घर खमेखमे आहार खाना कबुल रखा, जब एकके घर आ-  
हार लेना होगा तो सोचनेकी जगह है कि-आधाकर्मिक दोष  
कैसे हठ शकता है ? वस्त्रके अज्ञावसें जब ठंम लगने लगी तो  
जिनमंदिरके गृहमंडपमें जाकर सोनापमा, कहिये ! इससें देवकी  
अवज्ञा हुई-या-सेवा ?- पात्र रखना बंद किया इससेंजी सोचो !  
तो लाजकी जगह हानिही हुई, बिमारसाधुको पात्रविना आहार  
छादेना नहीं बना, उनकी वैयावच करनेमें अंतराय हुई, गृहस्थीके  
घर खमे खमे आहार जोगनेसें जी कह बातोंके दोष लगने शुरू  
हुवे, अंतराय न हो जाय इसलिये गृहस्थलोक स्थाल-या-परात  
बजानेलागे. अनेक प्रकारके कबल बनाकर हाथमें देते जाय और  
आपके मुनि खाते जाय-यहजी खूबसराहनीय बात हुई कि-जि-  
सको खेखकर लमकेजी हंसी करे, कहिये ! जिनकल्पकी स्पर्धाकर  
आपके गुरुजने क्या सार निकाला, ?- देखिये ! श्वेतांबर मुनि

६८८ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

पात्र रखते है तो उससे-बै-कितने प्रकारके लाज उठा सकते है, अवलतो ! गुरुको प्रक्ति करसकते है, विमार साधुको आहार देकर बैयावच करसकते है, तपस्वी-बाल-वृद्ध-प्राधुर्णिक-वगेरार्क. आहारपानीद्वारा-वैयावच करसकते है, कच्ची अनजानसें कोइ अभुक्त वस्तुआजाय तोपात्रद्वारा बहार ले जाकर उसको परठ सकते है. और हिंसाके जागी नही होते है, पात्र रखनेसें इतने लाज हुवे.

( १० ) तर्क-यूंही तो शिथिल होते होते आपलोगोंमें यति श्रीपूज्य-शिथिलाचारी हो गये.

( उत्तर, )-धर्म और प्रीत जोरा जोरी नही होसकते. तीर्थंकरोंके बैठेहुवे जी जो शख्स धर्म करना नही चाहतेथे उनको जोराजोरी कोइ नही करा सकता था, जैसे श्वेतांबरमें यति-श्री पूज्य-वैसे-आपलोगोंमें जटारक और क्षुल्लक-दोनो एक तुल्य है. जटारक-लाल वस्त्र रखते है श्रीपूज्य श्वेत रखते है. रसोइया जैसे जटारकोंके लिये शाथ रहता है श्रीपूज्योंकेलियेजी इसी तरह समझलो. श्रावकोंके घर धाजेगाजेकेसाथ जैसे जटारकलोग आमरीके लिये जाते है इसी प्रकार श्रीपूज्यजी गोचरीके नामसें जाते है, पानी जैसे जटारक लोग कच्चा पीते है. श्रीपूज्यजी कच्चा पीते है. म्याना-पालखी-रेलगम्भीवगेरामें सवारहोना-हाथी-घोडे-घनधान्य-मकानात रखना दोनोंका एकसा है. नोकर-चाकर-बम्नी-चवर सबकाम राजवर्गी, बतलाइये ! फिर किसकों जैनाचार्य और किसकों शिथिलाचार्य कहा जाय ?- रहे क्षुल्लक सो जी इन्हीके ठोटे जाइ है, जैसे यतिलोग सवारीपर चढते है क्षुल्लकजी चढते

है. गृहस्थोंके घर जोजन जीमना-कच्चापानी पीना-धनरखना-बगेरा जो जो आचरण यतिजनोंके दिखलाइ देते है क्षुल्लकोंकेजो वैसे हो है. दूर क्यों जाते हो यहां लश्करमेंही क्षुल्लकरामचंडजी-जो कि-धर्मदासजीके-चेले बताते है-देख लो !- क्या ! आप इन्हीके जरोसें अपने आम्नायकी तारीफ कर रहे हो ?- शास्त्रोंका वचन है कि-पंचमकालमें-ऐसे ऐसे-साधु-उपाध्याय-और आचार्य होयगें कि-जो-मरकर उर्गतिमें जायगें, इसीसें कहशकते है कि-पंचमहा-व्रत बिना एकीला वेष कार्यकारी नही. जैसेकिसी नटने साधुका वेष पहने लिया तो क्या वह पंचमहाव्रत बिदून पूजनोक हो शकता है ?-जब नही हो शकता तो फिर एकीले वेषसें क्या गरज सरी ?—

( ११ ) तर्क—जिनकी श्रद्धा ठीक हो चाहे वे क्रियासेंरहित हां कोई हर्जकी बात नही. शास्त्रोंका वचन है कि-सम्यक्तरहित पुरुष संसारकापार नही पाशके. इस बातके कहनेसें तात्पर्य यह है कि-हमारे जट्टारक लोग यद्यपि चारित्र रहित बेशक है लेकीन श्रद्धासेंतो शुद्ध जैनी है. आपलोगोंकी तरह संसयमें नही पड़े.

( उत्तर. )—शुद्ध जैनी कहलाना कुछ हमारे तुमारे आधीन नही, किंतु सर्वज्ञ प्रणीतशास्त्रोंके आधीन है, शास्त्रवचनसें जो कोई श्रद्धालुठहरशके वही शुद्ध जैनी है. छ्वादशांगवानीके असली सिद्धांत आचारांग सूत्रकृतांग-आदि-माननेवाले कज्जो संसयमें नही पड़ते, संसयमें वही पड़ते है जो उक्तसिद्धांतोंको बिभेद गये कहकर-धवलजयधवल-गोमदसागर बगेरा नवीन ग्रं-

३५७ ( दिवंबर आषाढ कृतेहजालजीके मन्त्रोंका उपर.)

धोंकों असली सपजते है, जिनमेंकि-सोमोक्त-और-केवलीके-कवल आहारपर तकरार जठाइ गयी है.

( १२ ) तर्क-केवलीको कवल आहार आप सिद्ध कर सकते हो ?

( उत्तर. )-क्षुधा तृषा उदारिक शरीरका धर्म है. जबतक शरीर रहे तबतक यह जी रहेंगे. ये दोष केवलीके अतीन्द्रियज्ञानकी घात नहीं कर सकते. क्षुधा तृषा वेदनीय कर्मके उदयसे होते है. वेदनीय कर्मका अज्ञाव केवलीकों है नहीं. फिर क्षुधातृषाका अज्ञाव कैसे होशकता है ?-आहारपर्याप्तिनामकर्म-तथा-वेदनीयकर्मके उदयसे-जठराग्नि-प्रज्वलित होती है (यदुक्तं)-रत्नाकरावतारिकायां-आहारपर्याप्तिनामकर्मोदयवेदनीयोदयप्रबलप्रज्वलदौ दर्यज्वलनोपतप्यमानोहिपुमान् आहारं आहारयतीति- कहिये ! ये-(१) दो-प्रकृतिकेवलीको नहीं है क्या ?-यदि है तो क्षुधा तृषाका अज्ञाव क्यों ?-अगर कहा जायकि-वेदनीयकर्मका उदय तो है लेकिन उससे आकुलता नही होती, माना !-हमकब कहते है कि-होती है ?-प्रदेशउदय केवलीको नहीं लेकिन विषाकोदय तो है अलबते ! सातावेदनीय कर्मका अत्यंत उदय है असाताका थोमा परंतु बिल्कुल अज्ञाव नहीं अगर असातावेदनीयका केवलीको अज्ञाव होतातो तत्त्वार्थसूत्रमें(११) परिसह क्यों कहे?

( १३ )-तर्क-सर्वार्थसिद्धीकामे-न-संति-पद उपरसे

लाना कहा है ( ज्ञावार्थ ) एकादश जिने-न-संति-याने ग्यारहपरिसह केवलीको नहीं ऐसा जानना.

( दिगंबर श्रमक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) २२१

( उत्तर- )—यह व्याख्यान प्रपाणसेबाधित है, तत्सार्थसूत्रमें परिसहके स्वामीकी गिनतीका अधिकार बलाहै, वहां अज्ञाव कहना असंभवहै, परिसहकेस्वामीको अस्वामी बतलाना मृषा-वादीयोंका काम है,

( १४ )—तर्क, केवलीको ग्यारहपरिसह उपचारमात्र है, याने कहनेहीमात्रहै असत्त्वमें नहीं, यद्यपि वेदनीयकर्म केवलीकोजरु रहै परंतु इससे क्या होशक्ता है, ?

( उत्तर. )—स्वाभिलाषितांके वर्ननमें उपचारकहना बन्नी भूलहै, इतनेपरन्ती यदि हठकरना मंजूरहै तो मोहनीकर्मके होनेसे उपशांतमोह गुणस्थानवालेकोन्नी बाइसपरिसह कहना चाहिये.

( १५ )—तर्क-केवलीको अगर क्षुधा लगती होतो उनके बलकी हानी होजाय, फिर अनंतवली कहना कैमे बने, ?—

( उत्तर. )—शारीरीकबल-अलबते ! क्षुधालगनेसे घटजाता है इसको कौनबुद्धिमान् इनकार करशक्ताहै, सबबकि-शारीरी-कबल नामकर्मको परिणति रूप है, नामकर्म केवलीका क्षीणहुवा है नहीं, क्षीणहुवाहै अंतरायकर्म जोकि- अंतरंग शक्तिरूपवीर्य अर्थात् पराक्रमकोरोवानेवाला था. इसलिये केवलीकी अंतरंग शक्ति कन्नी नहीं घटती. हकीकतमें बल-और-वीर्य अलगअलग है, शरीरके पराक्रमकानाम बल है और अंतरंगशक्तिका नाम वीर्य है, शास्त्रोंमें जगहजगहपर कहाहैकि-बलं शारीरं वीर्यं चांतरं-इति, उदारिकशरीरका धर्म है कि आहारपानी न मिल-नसें कुमलाइ जाव, यह एक प्रत्यक्ष प्रपाण है. प्रत्यक्षकोछुठा बतलाना दुर्यतग्राहीयोंका काम है.



## १७२ ( दिगंबर आचक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

( १६ )-तर्क,-आहारकरनेवालेकों निद्राजी जरूर आती है, इससे कहना पड़ेगा कि-केवली निद्राजी लेते होंगे.

( उत्तर )-यहकोई नियमनही कि-जो जो शरूश आहारकरे वह निद्रा जरूरलेवे, निद्रा दर्शनावरणीकर्मके उदयसे आती है, आहार निद्राका कारण नहीं, दर्शनावरणी कर्म केवलीको क्षीण होगया इसलिये उनको निद्रा नहीं आती.

( १७ )--तर्क,-शास्त्रोंमें लेखहै कि--आहारथोमा खाना. सोचो !-इससे क्या सिद्ध हुवा ?-यही सिद्धहुवा कि--आहारका खाना वास्तवमें बुराही है.

( उत्तर )-अगर आहारका खाना बुराही होतातो-पुरुषकों (३३) कवल प्रमाण आहारखाना शास्त्रकारोंने क्यों फरमाया ?-यह तुमारोही समझका फर्कहै कि-आहारका खानाबुरा कहतेहो तुमारेमुनिजी जब विद्यमानथे ( ३३ ) कवल खातेथे कहोयेजी बुराहीकाम करते थे. परंतु यह तुमारा समझना वृथा है, हकीकतमें स्वाभाविक आहार प्रमाणसे खाना बुरानही, अजीर्ण पेदा हो इसप्रकार खाना बुरा है.

( १८ )-तर्क,-आहारकीकथाकरनाजी मुनियोंके लिये प्रमादका हेतु कहा तो, खाना प्रमादका हेतु क्यों नहीं ?-

( उत्तर. )-आहारकी कथा दो प्रकारकी, एकतो लंपट होकर आहारकीतारीफ वर्नन करे, और एक साधारणरूपसे आहारका यथार्थवर्नन करे, इसमें प्रथमजेदवालेकों अलबते अतिचारदोष लगता है, दूसरेजेदवालेकों तो अतिचारदोषजी

( दिग्बर आषक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) ३५३

नही लगता फिर मूर्खरहित आहारखानेवाले-मुनिकों-प्रमादकैसे कह सकते हो, !-अगर फिरजी हठवादकरना मंजूर है तो पहिले अपनेगुरुओंकोही प्रमादी कहो जो बत्तीस केवल प्रमाणआहार खातेथे.

( १.ए )-तर्क,--मातमेंगुणस्थानपर आहारसंज्ञा नही रहती, फिर अगले गुणस्थानपर कहाँसे आयगो ?-और बिना आहार संज्ञाकेवलीकों आहार करना कैसे संजवे, ?

( उत्तर. )-अप्रमत्तसाधु आहारसंज्ञाबिना यानेअजिलाषा रहित आहार करते है. शास्त्रोंमें अजिलाषहीको आहारसंज्ञा कहीहै देखो !-तुमाराही गोमटसारग्रंथ क्या कहता है ? टीकाकारने आद्यमेंही लिखा है कि-आहारसंज्ञा खड्वाहारानिलाषः

( १० )-तर्क-आहारखानेसे शूलरोगजी कबलोकों हो जाता होगा ?-

( उत्तर. )-प्रमाणयुक्त पथ्यआहारखानेमें शूल क्या ! को-रोग नहीहोता,

( ११ )-तर्क-आहारखानेसे--दिशाजंगलजी जातापरुता होगा, सजामेंसे उठकर जाते हुवें क्या ! अछे दिखते होंगे ?

( उत्तर, )-नम्रस्वरूप जिनेंछदेव सभामें क्या ? अछे दिखते होंगे ?—

( १२ )-तर्क-यहतो अतिशयकीबात है कि दूसरोंकोनमनदेखे.

( उत्तर, )-फिर आहारनिहारमें अतिशयका प्रभाव कहाँ जायगा ?-क्या ? चोतोशअतिशयोंमें यह बात नही लिखिहैकि-

१५४ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

जिनेश्वरोंकी आहार निहारक्रिया दूसरोंको न दिखाइ दे, ?

( १३ )-तर्क-केवली जिह्वालेनेको खुदजाते होंगे-या-उनके चेले लादेतेहोंगे,

( उत्तर, )-सामान्यकेवली-कजी खुदजी जाते है कजी चेलेजी लादेतेहै

( १४ )-तर्क-जब खुद जिह्वाको जाय और आहारनमिले तो कितना मानजंग होताहोगा ?—

( उत्तर, )-केवलीका अंतराय होनेका क्या काम ?—अंतरायकर्म तो उनका पहलेही कृत्य होचुका है, विशेषआवश्यक सूत्रमें लिखाहैकि-केवलीको जिज्ञा प्राप्तकरते अंतराय न हो.

( १५ )-तर्क-तीर्थकरदेवजी जिह्वालेने जाते होंगे ?-

( उत्तर, )-तीर्थकरको शिष्यसमुदायके होतेहुवे खुद जिह्वाटन करना असंभव है. सामान्यकेवलीकेलिये अलबते ! कथंचित् जाना न जाना कहा,

( १६ )-तर्क-जिसको शरीरपर मूर्छा हो वो आहारकरे मुनियोंको मूर्छा रखना ठीक नही,

( उत्तर. )-यह कोई नियम नहींकि-जिसको मूर्छा होवही आहारकरे. और यह जो कहाकि मुनियोंको मूर्छा रखना ठीक नहीं इसमें दो बातहै. अगर पांचइंद्रियोके विषयपुष्टिनिमित्त शरीरपर मूर्छा रखेतो अलबते ! उचित नहीं, परंतु धर्मपालनको रखे तो पापबंधका कारण नहीं. कहिये !-अगर सर्प-या सिंहके सामनेसे-कोइमुनि-हठकर पीछे लोटे तो उनको तुम योग्य मानो या अयोग्य, ?-अगर कहोगे वे मुनिकाहेके जो सर्पसिंहसे मरते

रहे ?- ( इसका उत्तर )- ठीक है ! महाशय ! !-कुछ कहनाही जानतेहो या करदिखलानाजी जानतेहो ?-सोचोकि-अगर मरजी उन्होंने रखा तो क्या पांचइंद्रियोंके विषयपुष्टिनिमित्त रखा या धर्मपालनकेलिये ?-अगर धर्मपालनकेलिये रखा तो फिर वे मुनि रहे वा भ्रष्टहोगये ? यूँहीतो तुमारे आचार्योंने उंचीउंची बातपकडकर धर्मको निर्मूल करदिया. और तुमको बिनागुरु के रखदिये. अंतमें तुम आपही आप शास्त्रवाचने लगगये और मनोमति हुवे.

( १७ )-तर्क, मोहकर्मके नाशहोनेसे केवलीका शरीर सप्तधातु वर्जित होजाता है जैसे अबरकका पटल हो वेसा तेजमय रहजाताहै. उसको कवलआहारकरनेकी कोई जरूरत नही रहती.

( उत्तर. )-मोहकर्मकेनाशसे केवलीकेशरीरको सातधातुदूर नहीहोती. मोहकर्म अलग है नामकर्म अलग है, शरीर नामकर्मकी प्रकृतिके अंतर्गत है, क्या !-वज्ररिषज्ञ नाराचसंहनन-नामकर्मकी-प्रकृति-केवलीको उदयमें नही रही जो सातधातु उनको दूर होजाय ?-अगर- कहोगे रहो है तो सोचोकि-अस्थि पुदगलबिना वह प्रकृति विपाकफल किसमें दिखलायगी ?-अगर-कहाजायकि--दृढसंस्थानमात्र पुदगलमें वह विपाक दिखलायगी तो देवताकोजो वज्ररिषज्ञनाराचसंहनन कहना चाहिये. केवलज्ञानके होनेसे शरीरमें कुछ विशेषता नही होती शरीरनामकर्मके उदयसेही शरीरमें विशेषता होतीहै. इसलिये केवलीके शरीरको सप्तधातुवर्जित नही किंतु सहित कहना चाहिये, क्या ! हारु-मांस-रुधिर-जो केवलीको पहिलेथे वे केवलज्ञान होतेही

**३७६ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )**

नाशहोगये ?-अगर कहेंगे हां ! नाशहोगये तो कहाँ उसका कारण क्या है ?-

( १८ )-तर्क-मुनाहै श्वेतांबरआम्नायमें पनरांहमकारसेसिद्ध होते है उनमें स्त्रीकीजी मुक्ति होती है. ?-

( उत्तर, )-श्वेतांबरआम्नायमें स्त्रीकी मुक्तिहोना कुछ बीपी-बात नहीं, घंटांनादकेसाथ कहरहेहै कि-स्त्री-यदि ज्ञानदर्शन चारित्रका आराधनकरे तो उमीजत्रमें मुक्ति होजाय,—कौन रोक शकताहै ?—

( १९ )-तर्क--ब्रह्मआश्चर्यकी बात है जो महानिघबस्तुकों उत्तमपद प्राप्तहो, ?

( उत्तर )-साध्वीपद उत्तम है-या-निघ ? यदि उत्तम है तो तुमारे आचार्योंने बनी भूल कियीकि--चतुर्विधसंघमें स्त्रीकों साध्वीपद प्राप्तहोना कहा, उनकों उचितथाकि-तीन या-दो प्रकारका संघ कहते.

( २० )-तर्क-हमलोग स्त्रीकों पंचमहाव्रत नहीं मानते.

( उत्तर, )-फिर चतुर्विधसंघ नहीं मानना चाहिये. त्रिविध संघही कहना ठीक है.

( २१ )-तर्क, स्त्रीलिंग आप किसको कहते हो ?-

( उत्तर. )-स्त्रीलिंग हम तीनप्रकारसे कहते है. [ १ ] वेद [ २ ] शरीर [ ३ ] और नैपथ्यजिसमें वेदजक्षणस्त्रीलिंग वो है जोअधिकेदाहकीतरहपुरुषकी चाहना हो.-शरीरनिर्वृत्तिलक्षण स्त्रीलिंग वो है जो-स्तन-जग-आदिआकार संयुक्त हो,—तिसरा नैपथ्य-तिलक-तंबोल-नेत्रांजन-हार-कंकण-और-झांझर-बगेरा

( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) १५७

वासकृतशृंगाररूप हो. इनमें वेदलक्षणलिंग अर्थात् ज्ञावस्त्रीवेदको केवलज्ञानकी प्राप्ति नहीं कही. नवमेंगुणस्थानपर जब स्त्रीवेदका अज्ञाव होजाय तभी अगामीके गुणस्थानपर चदश के फिर धातिककर्मोंका कृत्य करे. इसलिये वेदलक्षणलिंग-केवलज्ञानकी प्राप्तिमें-वर्जनीय—कहा. अगर स्त्रीकों पंचमहाव्रत नहीं मानतेहो तो नवमेंगुणस्थानपर तीनोंवेदका जो गोमदसार वगेरामे कृत्य लिखा है वो क्योंकर होशके ?- अगर कहोगे ज्ञावकरके पुरुषमें जो स्त्रीवेद है उसको कृत्य करते हैं तो यह कहना जो झूठ है. क्योंकि- अग्रमत्त अवस्थामें पुरुषकों-स्त्रीका-और-स्त्रीको-पुरुषका-भाव मानना यह विरुद्ध है.

( ३२ ) तर्क-वस्त्र आभूषण पहनी हुईस्त्रीजी मुक्ति होजातीहोगी?-

( उत्तर )—महाशय !-वस्त्र आभूषण क्या !-सोलह शृंगार सजी हुई स्त्री-अगर-सिंहासनपर बैठ करके जो ध्यानारुढ हो जाय-और-अनित्य अशरण ज्ञावना भावे तो वहांजी उसकों केवलज्ञान हो सकता है, आप किस ख्यालमें भूले हो ?-केवल ज्ञान और मुक्तिका रोधक शिंजार नहीं किंतु रागादि लक्षण अशुद्ध उपयोगही केवलज्ञान और मुक्तिका रोधक है, यह हम नहीं कहते हैं कि-शृंगारही मुक्तिका प्रधान कारण है. शृंगाररहित स्त्रीजी यदि उक्त अवस्थाकों प्राप्त हो तो उसकोंजी केवलज्ञान और मुक्तिकी प्राप्ति होशकती है, शरीर लक्षण स्त्रीलिंग तो विशेष करके मुक्तिका रोधक होही नहीं सकता, सबबकि-जबतक मनुष्य गतिमें मनुष्यका आयुष्य विद्यमान है तबतक वह चिन्ह तो रहताही है,

३६७ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

( ३३ )-तर्क-स्त्रोके अंगोपांग पुरुषके लिये अज्जिनवकारी याने प्रीति उत्पादक होते हैं वे खुल्ले नहीं रखजाते, उनको ढांकनेके लिये बस्त्र रखने पड़ेगें. बस्त्ररखनेसें परिग्रह होगा, जहां परिग्रह होगा वहां चारित्र्य नहीं. चारित्र्यनहीं तो मुक्तिकहांसे होगी?

( उत्तर. ) संयमनिर्वाहके लिये बस्त्र रखना परिग्रह नहीं, सोचनेकी जगह है कि मूर्छा बिना परिग्रह कैसे होशकता है, ?-शास्त्रोंमें मूर्छाहीको परिग्रह कहा. अगर इस बातको नहीं मानते होतो अखंड पृथ्वीके जोक्ता-जरतचक्रवर्ती-बगेराको निष्परिग्रही क्यों कहते हो ?-छादशांगवाणोका कथन है कि-परिसह होते हुवेजी यदि मूर्छा नहीं है तो परिग्रह नहीं. और नहीं होते हुवे यदि मूर्छा है तो परिग्रह है, अगर दिगंबराचार्योंके इतवाद्द पर ख्याल करे तो संसारमें सर्व दरिद्री मनुष्य नंगेही फिरते हैं उनको जो त्यागो निष्परिग्रही कहना चाहिये, सबबकि-उनके पास शरीरके शिवाय दूसरा कोई बाह्य परिग्रह नहीं, परंतु इससे क्या हुवा ?-हकीकतमें उनके पास इच्छारूप ब्रह्मा जारी परिग्रह है, इसका नतीजा यह हुवाकि-केवल नंगेही होनेसे काम नहीं चलता. किंतु मूर्छाका त्याग करनेसे काम चलेगा. निश्चय नय पकड़कर बैठ रहना यही मिथ्यात्वका कारण है.

( ३४ )-तर्क-स्त्री जातिकों आप पापको बाहुल्यता मानते हो या नहीं ?—

[ उत्तर. ]-मानते हैं लेकिन जिस प्रकार तुम लोग मानते हो उस प्रकार नहीं मानते.

[ ३५ ]-तर्क-वो प्रकार क्या है ?-

( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) १६५

( उत्तर. )—जिसवरुत जिस जीवने स्त्रीपना बांधा उसवरुत यद्यपि अधिक पाप प्रकृति मिथ्यात्वादिरूपही थी, लेकीनजब-बे प्रकृति—जन्यत्वपरिपाकसें सम्यक्त गुणपाकर द्वायकियो जाय उसवरुत स्त्रीकों पापप्रकृतिकी बाहुल्यता हम नही मानते, अगर जबतक स्त्रीका शरीररहे तबतक बंधकेकारण मिथ्यात्वादिक बने रहते हो तो स्त्रीकों सम्यक्त गुणजी न पानाचाहिये, और मानते हो, फिर ! बरमे अंधेरकी बात है !!-कि-स्त्रीकों--चारित्र और मुक्ति-न मानना.

( ३६ )—तर्क,—स्त्रीका शरीर परमअशुचिहै इसलिये उसकी मुक्ति कैसे हो ?

( उत्तर. )—शरीरकी अशुचि जैसी पुरुषको वैसी स्त्रीकों है. मुक्तिका संबंध जावचारित्रके साथ है, जिसकों जावचारित्र होशके उसकी मुक्तिका इनकार करना युक्तिप्रमाणसें बाधितहै. अगर कहाजायकि-स्त्रीको योनिमें बहुधा करके सन्मूर्तिमजोवोंकी उत्पत्ति रहती है. सोचनेकी बात हैक्या !-पुरुषके शरीरमें रोगादिकारणसें जीवोत्पत्ति नही रहती ?-अगर कहोगे रहती है तो उनकों जी मोक्ष न मानो.

( उत्तर )—तर्क,—मल्लिनाथ तीर्थकर स्त्री हुवे यह बन्नी अयोग्य बात है,

( उत्तर )—हुंमासर्पिणीकालदोषसें कइबाते आश्चर्यजनक हुइ इसकों श्वेतांबर दिगंबर दोनों मानते है, आपलोगोंके शास्त्रोंमें लिखा है कि-हुंमासर्पिणीकालदोषसें कइ अणहोती बाते हुइ. तीर्थकरोंके घर पुत्र पैदाहो, पुत्री नहो, लेकोन रिषजदेवके घर पुत्री



## ३३० ( दिगंबर आषक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

पैदाहुयी-चक्रवर्त्तिका मानसंमन नहो और जरतचकीका पान बाहुबलीने संमन किया. तीर्थकरोकों किसी अवस्थामे उपसर्ग नहो लेकीन पार्श्वनाथजीकों हुवा. तीर्थकर उदमस्थअवस्थामे अवधिज्ञानकों प्रकाशित नकरे लेकीन रिषजदेवने किया, -बामुदेवका मरना किसीके हाथ न हो लेकीन कृभबामुदेवका मरना जरतकुमारके हाथसे हुवा. ब्राह्मणकुलकी उत्पत्ति दूसरेकालमें नहीं होती लेकीन इसकालमें हुइ, सोचो !-जब कालदोषसे ये अनहोतीबातका होना आपलोग मानते हो तो-मल्लिनाथतीर्थकर स्त्री हुवे एक युगलीया मरके नरक गया तीर्थकर तुल्लकुलमें न पैदा हो लेकीन महावीर हुवे-तीर्थकरोकों की धर्मदेशना खाली न जाय लेकीन महावीरकी पहेली देशना खाली गइ.- केवलज्ञान हुवे बाद उपसर्ग नहो लेकीन महावीरकों हुवा--ये बात न मानना इसमें क्या कारण है ?-पह्णपात करके अपनी बातकों सच्च और-दूसरेकी-झूठ कहना यह कोइ चतराइ नहीं. चौराशी बांलोका जवाप कवित्तमें उपाव्याय यशोविजयजीने दिया है उसमें लिखा है कि-

(दोहा.)-तिहुंकर थीवेदको-क्यों एकनकों बंध, ?-

गुनथानक आकर्षथी-यहू हमारी संध,(१)

( ३० )-तर्क,-तत्त्वार्थ सूत्रके बनानेवाले उमास्वामीजी श्वेतांबर थे या दिगंबर ?—

( उत्तर. )-उमास्वातिजी श्वेतांबराचार्य थे. ( ५०० ) पांचसे ग्रंथ उनोंने बनाये जिनमें तत्त्वार्थ सूत्रजी एक ग्रंथ है. पूजा प्रकरण-प्रशमरति-बगेरा कइ ग्रंथ वर्त्तमान समयमेंजी हमारे पास

मौजूद है. जिनको तुमलोग नहीं मानते. यदि तुमारे कहने मुजब उमास्वातिजी तुमारेही आचार्य थे तो उनके अन्यग्रंथ तुमारे संघमें क्यों न मान्य हुवे ?-तत्त्वार्थ सूत्रकी रचना बहुत उत्तम और चमत्कारी देखी इसलिये तुमलोकोने इसको वाचना पढ़ना स्वीकारलिया, लेकीन इससे क्या हुवा ?-हकीकतमें यह ग्रंथ श्वेतांबर आम्नायहोका है, तुमारे आचार्योंको गंधजी इसमें नहीं. फिर देखिये !-एकादश जिने इस सूत्रमें केवलीको कवलाहार कहा, क्योंकि-ग्यारह परिसहमें-भुधादृषा पहेलेही गिनेहै, और तुमलोक केवलीको कवलाहार मानते नहीं, सोचो !-फिर किसका पक्ष सिद्ध हुवा ?-परिसहोंकी हेरफेर करनेमें-तुमारे आचार्योंने बहुतेरे उपाव किये लेकीन एक नहीं चला, तत्त्वार्थ सूत्रकी सर्वार्थसिद्धटीकामें टीकाकार कह रहे है-एकादशजिने न-संति-अर्थात् ग्यारहपरिसह जिनेंछोंमें नहीं कहना. इधर प्रमेयकमलमार्तंड ग्रंथके रचयिता कह रहे है-एकेन अधिका न-दश-एकादश-अर्थात् एक और दश-ग्यारहपरिसह जिनेंछोंमें नहीं, एसी एसी कुतर्क करनेमें तुमारे आचार्य अलबते ! चूके नहीं, परंतु झूठी दोम कितनी ?-अखीरमें झूठे आदमी सच्चे नहीं होशकते, प्रशमरति ग्रंथमें मुनियोंको धर्मोपकरण रखना कहा, सोचोकि-अगर उमास्वातिजी तुमारे आचार्य होते तो मुनियोंको नंगाही रहना न कहते ?-जब तुमलोकोके आशयसे उनका आशय जिन था तो वे खुदजी दिगंबर नहीं थे इस कहनेको कौन रोक सकता है !—

( ३९ ) तर्क, केवलीकों-विहार-धर्मोपदेश-और-उठना बैठना वगेरा क्रिया ही नहीं होती तो ज्ञोजन क्रिया करना कैसे संजवे?-

( उत्तर, )-यह बात गलत है, सबबकि-केवली चलतेवख्त जरूर कदम उठाते है, धर्म देशना देते शब्द उच्चारण करते है, और समवसरणमें सिंहासनपर बैठना वगेरा क्रियाजी जरूर करते है, इसका निषेध करना तुमारे आचार्योंका दृढवादहीसे हुवा, आजतक किसीने इस विषयमें कोई प्रमाणीक युक्ति नहीं बतलाई,

( ४० ) तर्क, -केवलीकों सबक्रिया स्वज्ञाव सिद्ध है, प्रयत्न सिद्ध नहीं, प्रयत्नका होना मोहविना नहीं होता.

( उत्तर, )-यदि सबक्रिया केवलीकों स्वज्ञावसेंही होतीहो तो प्रयत्न निरर्थक ठहरें, और प्रयत्नविना क्रियाका होना निर्मूल है, अगर कहाजायकि-केवलीकी चेष्टा प्रयत्नजन्य नहीं किंतु एक विलक्षण स्वज्ञाववतो है तो सवाल होनेकी जगह है कि-जैसे चेष्टा विलक्षण मानते हो वैसे प्रयत्नजी विलक्षण क्यों नहीं मानते ?-और विलक्षण चेष्टा जैसे मोहविना कहते हो वैसे विलक्षण प्रयत्नजी मोहविना क्यों न कहो ?-अगर कहाजायकि केवलीकी चेष्टा मनःपूर्वक नहीं तो इसीप्रकार प्रयत्नजी मन पूर्वक नहीं ऐसा माननेमें क्या दोष है ?—

( ४१ ) तर्क, -केवलीको रागका अज्ञावहोनेसे वचन व्यापारकाजी अज्ञाव है, धर्मोपदेशके, वख्त वे खुद नहीं बोलते किंतु श्रोता पुरुषोंकी पुण्यप्रकृतिके प्रज्ञावसे केवलीके मस्तकमेंसे आपोआप एक प्रकारकी ध्वनि पैदाहोतीहै, सोजी निरक्षरीनाद

अर्थात् अक्षररूप वाणी नहीं किंतु एक बड़े ज़ारी अवाजका गोंला जानना.

( उत्तर )—धन्य महाशय ! धन्य !!—आपकी तर्कज़ी तारीफ करने लाइक है जब बिना राग केवलीके मस्तकसे उपदेशरूप अवाज निकसना माना तो अक्षररूप वाणी न माननेका क्या हेतु है ?—क्या-ज्वाषपर्याप्तिनाम कर्मका उदय केवलीकों नहींहै ?—जो निरक्षरीनाद पेदा हो.

( ४१ )—तर्क, बीतरागकों रागज्ञावसे पूजना यह कौनसे जैन आगमका वचन है, ?—

( उत्तर. ) अंगशास्त्रोंमें पूजा दो प्रकारकी लिखी है, एक ध्व्य पूजा—दूसरी ज्ञावपूजा—ध्व्यपूजा—केशर चंदन और पुष्पवगे-राकी—और—ज्ञावपूजा—शुद्धमनसे गुणानुवाद करनेकी—पूजा—पूजक पुरुषकों हितकारिणो है पूज्यकों उससे कोइ प्रयोजन नहीं, पूज-कका रागज्ञाव पूज्यकों अनर्थका हेतु नहीं, तुमलोक अगर केवल बीतरागज्ञाववर्द्धक प्रतिमाही मानते हो तो उस प्रतिमाकों रथपर क्यों चढ़ाते हो ?—क्या मुनिहुवेवाद वे कज़ी रथपर चढ़ेथे, ?—प्रतिष्ठाके समय—अंकुरारोपण—नादीमंगल—वास्तुपूजा—कलशारोह—जलयात्रा—शांतिचक्र—चर्चनभूषण—नाटकगीत—दोहावृद्ध—अभूता-लोश संस्कार—तिलकदान—और—अधिवासना—वगेरा—सरागज्ञाव-की क्रिया क्यों करते हो, ?—अगर कहोगे पीछले ज्ञाव जो उन्होंने अनुभूत किये है उनका अनुकरण करना चाहिये तो सवाल होनेकी जगह है कि—बीतरागपर सरागज्ञाव करना तुमनेही खुद मंज़ूर रखा या नहीं ?—अगर कहोगे प्रतिष्ठाके बाद तो हम सराग

ज्ञावकी कोई बात नहीं करते ?-तो फिर सवाल पैदा होता है कि जो चीज बुरी है वो बीतरागकी प्रतिमापर एकवार जी क्यों करना ?-

अगर तुम-बीतरागज्ञाव वर्द्धक प्रतिमाके सच्चे ज्ञात होते तो एक निर्वाण कल्याणकके शिवाय पहेलेके चार कल्याणककी कोई क्रिया जिन प्रतिमापर न करते अथवा तो पांचो कल्याणककी पांचो प्रतिमा अलग अलग बनाते, सचित्तजलमें स्नान करना-चरणोपर तीलक लगाना क्या यह सरागज्ञाव नहीं है ?-सिंहासन-उत्र-जामंमल-वगेरा आभूषण क्या सराग ज्ञावके चिन्ह नहीं है ?-परंतु क्या किया जाय !-तुमारी समझकाही फरक है दिगंबरलोकोंका हठ विशेष करके इसबातपर ज्यादे देखागया कि-बड़ी बड़ी बातें करना लेकीन उसपर चलना नहीं,--मंदिरमें ओछव करना--गाना बजाना नाचना-क्या यह रागज्ञावके चिन्ह नहीं है ?-इनकोजी ओम्दो-केवल मूर्तिके सामनेबैठकर ध्यानही करलिया करो, परंतु फिरजी मंदिर तो बनवाना जरूर पड़ेगा, अलबते ! हुंढियापंथी बनजाओ तो न्यारी बात है, परंतु फिरजी शास्त्रवाचनेके लिये तो मकान बनानाही पड़ेगा, जंची जंची बात खेंचकर तो गुरुओंका विनाश किया अब औरजी धर्मकार्य उठाते जाओ,--कितनेही दिगंबर श्रावक हममें कह चुके हैं कि-क्या करे !-हमारे धर्माचार्योंने वस्त्रपेहनना छोड़कर खबर नहीं क्या सार निकाला ?--क्या शरीर--आत्माके लिये वस्त्र नहीं है ?--इस कालमें अगर हमलोक मुनिबनना चाहे तो नंगे हो नहीं सकते, वस्त्र रखे तो शिथिलाचारी कहलावे, गृहस्थपनेमें सोच फिकरके मारे बेसा धर्म पालन नहीं होशकता, आपलोगोंमें जैसा स्थविर

कल्पमार्ग इसकालमें मौजू है देशकाल मुजब बहोत ठीक है,-

फिर मुनियोंके संबंधमें कहते हो जो जिनेंद्रने किया सो उनके चेलोंको करना चाहिये, परंतु इतना नही सोचतेकि-कहां केशरी-सिंह और कहां हिरन ? तोर्थकरोकेलिये समवसरणकी रचना होतीथी मुनियोंकेलिये न हुइ न हो, पीछीकमंडलु जैसे मुनिको रखना कहते हो तोर्थकरजी रखते थे क्या !,-फिर प्राचीनताके बारेमें कहते हो कि-हम-श्वेतांवरोसें पहेलेके है लेकोन जब पुजा जाता है कि--तुमारे ग्रंथोंमें जिस आचारांग सूत्रकृतांगवगेराके नाम है वे अंगशास्त्र अब कहां है दिखलाइये !-तो-उत्तर नही मिलता, कोइ पंम्मित-या-तेरहपंथोयोका भाइ जो-अभिमानमे आनकर कुछ कहता है तो-विच्छेद होगये-इसके शिवाय औरकुछ नही कह सकता, परंतु सोचोकि-अंगशास्त्रही विच्छेद हो गयेथे तो जैन-संघ कैसे बनारहा ? दो हजारवर्षसें पहेलेके ऐसे मंदिर और मूर्त्ति बतलाना चाहिये जिनके उपर संवत् मीति-प्रतिष्ठाचार्यका नाम-लिखा हुवा हो, और वो प्रतिष्ठाचार्य दिगंबरपट्टावलीके शाखागणमें दाखिल हो.

स्त्रीको उसीजवमें मुक्ति होना इनकारकरके फिर ( २० ) नपुंसक-( ४० ) स्त्री और ( ४८ ) पुरुष-एकसमयमें मुक्त होना मंजूर रखा, क्या ! ऐसे ऐसे पूर्वापर विरोधी वचन सर्वज्ञप्रणीत हो सकते है ?-क्या संसारमें सजी स्त्रीयां अजन्म ही है जो उन-मेसें कोइकी मुक्ति न होशके ?-क्या सभीस्त्री अपूर्वकरण न पाशके यही नियम है ?-भावचारित्र किसी स्त्रीको प्राप्त न हो यहजो क्या दिगंबराचार्योंने ठेका लिया है ?

इसप्रकार प्रश्नोत्तर हुवे--चौरासीबोलोंका वर्णन पुछा-शास्त्रा-नुसार उनका उत्तरदेकर संसयदूर किया, जितने तर्कवितर्क होते रहे तबका वर्णन यहां लिखना चाहे तो कहांतक लिखे, ?-

( दिगंबरश्रावक-फतेहलालजीके प्रश्नोका उत्तर )

॥ समाप्त ॥

## [ चिकित्साविद्या. ]

वैद्य वैद्यकों उचित है कि-किसी प्रकारका नशा नखावे. बहचलन न चजे. धर्मपर श्रद्धा रखे और रोगियों हिम्मत देता रहेकि-आप कुछ चिंता नकरे बीमारी जल्दी आराम होगी, लोज ज्यादा न रखे-ठलकपटसे कोई आंशधि बीमारको न लि-लावे. और खूबहेत्रकाल जावको विचारकर परहेज उनचो-जोंका करावे जो उसरोगकों हानिकारक हो. जो जो चीजें उस बीमारीकों हठानेवाली हो उसकों दवाकेंसाथ खानपानमें मदद-गार रखे.

विचारकों चाहियेकि-वैद्यके वचनपर श्रद्धा रखे औषध खा-नेमें कमीबेसी न करे-और दवाके लिये जो कुछ सर्व पद सुझे दिलसें करे, धन माल और सजाना शरीर तंडरास्त नहो तो किसी कामके नहो कुछ बीमारोको उत्पथि मिथ्याआहार-और मिथ्याव्यवहारसें होतो है, आदमोंकों चाहियेकि-उत्तसें बचे,

क्यादे कमजोम सेवनेसे बीर्य कम हो जाता है, अजोर्ण-बमेह-क-  
मजोरो-कमेरा अनेक बीमारी पैदा होते है,

थोड़ीसी कुछ नाडी परीक्षा लिखते है, वैद्य नाडी बर्दकी  
जीमणो हाथकी और स्त्रीकी बामे हाथकी देखे. और इसी तरह  
पांवकीजो नाडी-मर्दकी जीमणी-स्त्रीकी-बामे देखे यहां कोई तर्क  
करेकि-स्त्री पुरुषके लिये तो ठीक समझलिया लेकीन जब नपुं-  
सककी नाडी देखना तो क्या करना चाहिये ?-(इसका खुलासा-)  
नपुंसक दो तरहके होते है, एक पुरुष नपुंसक-इसरा स्त्री नपुंसक;  
पुरुष नपुंसककी जीमणो हाथकी-स्त्री नपुंसककी डामें हाथकी दे-  
खना. बिमारके हाथकी नाडीपर वैद्य अपनी तीन अंगुलीयां र-  
खकर इसबलाइमतासे देखेकि-जिससे रोगोको तक्रोजीफ न हो  
और रोग पहेठानमें आजाय, नाडी सर्प या जोंककी-तरह टेढ़ी-  
वांकी चले तो वैद्य उसे वातवृद्धि समझे, अगर मेंढककी तरह  
कूंदती हुई चले तो पित्तवृद्धि-और कबूतरकी-या-हंसकी-तरह  
लचकाखाकर चले तो कफवृद्धि समझे,

डाक्टरलोक नाडी इसरीतरह देखते है-वें कहतेहै एक वर्षके  
बच्चेकी नामी एक मिनिटमें ( १४० ) खटके देती है, दो वर्षके  
बच्चेकी नामी ( १३० ) और तीन वर्षके बच्चेकी नाडी ( ११० )  
खटके देती है, तीन वर्षमें लमा सात वर्षके बच्चेकी नाडी ( १०० )  
खटके देती है, सात वर्षसे लमा चौदह वर्षके बालककी नामी  
( ८५ ) खटके देती है, चौदह वर्षसे लमा सतराह वर्षके लड-  
केकी नामी ( ८० ) खटके और सतराह वर्षसे लमा पचास वर्षके  
पुरुषकी नामी ( ७५ ) खटके देता है. पचास वर्षसे लेकर असी



वर्षके बुढ़ेकी नामी ( ६० ) खटके देती है. इससे कमी खटके देवेतो वैद्य उसे शीत-याने-वातहृष्टि जाने. और ज्यादा देवेतो पित्तहृष्टि जानें.

रोगीकों सुंदर साफ वायुयुक्त मकानमें रखना चाहिये, पलंग कोमल बीठोंना साफ-और-नर्म हो, -मुखलोग रोगीकों ठोटे और अंधेरे घरमें मालदेते है इसमें उसकों बहुत तकलीफ होती है, बिमारी जी बढ़ती है, रोगीके बीठोंनेकों रौज धूप और हवामें मालदेना चाहिये. हरइमेश-या-दो तीन दिनकेबाद रोगीके बीठोंनेकी चदर बदलदेना ठीक है. पहेननेके कपमे जी निर्मल होना चाहिये, मलीन कपमेसे रोगीका चित्त बिगमता है. हरव-रुत रोगीकेपास बहोत आदमीओंका रहना अच्छा नही. लेकीन रोगीकों एकीला रखना जी योग्य नही. अत्यंत असाध्य रोग जी होजाय तोजी रोगीमें न कहे कि-तुम इस बीमारीमें मर जा-उंगे. बल्कि-कहता रहे कि-तुम जलदी अच्छे हो जाउंगे. यह बीमारी थोमी और ठोटी है. रोगीके सामने सदा शास्त्रकी बात सुनाता रहे, रोगीकेपास बैठकर रोवे नही. रोगीकों बहोतदिनतक एक घरमें न रखे, बीचबीचमें घर बदलता रहे. अगर उस जग हका-वायु-या-जल अनुकूल न हो तो दुसरे नगरमें लेजाय. रोगका इलाज मुझवैद्यमें कराना, मुख्य वैद्य जानका जोखम है. वात पित्त और कफ जबतक सम रहे बीमारी पैदा नही होती, जो रोगी पथ्यसेवन करता है उसकों बिना औषधही अच्छा होताहै. दिनमें थोमीसी देर हांसी खुशीकी बातें करना-परिश्रम ठोम-कर आराम जोगना-और-प्रमाणकेसाथ जोजन खाना-शरीरके

जिसे हितकारी है. दिनमें सौना-रातको जागना-बहोत खाना-ज्यादे नसा करना-अधिक मैथुन सेवना-अधिक बोलना-ज्वादे बाँज उठाना-अधिक गर्मी और शीतमें फिरना-मलमूत्रकी बाधा-कों रोकना-और गीले घरमें रहना बीमार होनेकी निशानी है.

जो शरूश दातून नही करता उसके मुंहमें बदबू आती है. दांत मज्जीन रहते हैं, मसूमोंमें दर्द पैदा होता है, दांतोंकी जम शिथिल होजाती है, माढ़ दूखने लगती है, जीव्हापर और ग-लेमें बमेबम रोग पैदा होते हैं. अगर मुखमें कोई ज़ारी रोग-हुवा हो तो न करनाजी ठीक है, खटाइ-करमी वस्तु-और-रुखाअन्न-मुखरोगीकों खाना अच्छा नही.

वाताधिक प्रकृतिवाले पुरुषकों किस तरह बर्तना चाहिये ? क्या ! क्या ! चीज उसे पथ्य और अपथ्य है !-सुनिये !-प्रथम तो बादीके शरीरवालेकों हवामें बचाव रखना ठीक है. नागरवे-लकापान-केशर-पीपरा-मूल-सतावर-गोखरु-अरनी-खसका जल-सूँठ-बगेरा जितने बादी शांत करनेसे पदार्थ है और चांदीसो-नेकी खाख बगेरा जितनी रसायन इस रोगकों दूरकरनेवासी है वैद्यकी सलाहसें उपयोगमें लाना अच्छा है, बहोत बोलना-अभि-का तापना-और-ज्यादे कामजोग करना इस रोगवालेकों अच्छा नही, वर्षा रतुमें बादीवाले मनुष्य सुखी नही रहते. बूढ़ेपनमें बादीरोगवालेकों जीनेकें मरनाही अच्छा मालूम देताहै. ठंमाजो-जन-बरफ-चने मूंग-सुपारी-बादीरोगवालेकों हानिकारक है.

पित्त प्रकृतिवालेकों तरगरम शरबत-इक्षुरस-मिश्री-केले-अ-नार-करेले-बदाम-पीस्ते-कड़ूवे और मीठेरस-सेवन करना अच्छा

है: चंद्रमाकी चंद्रनीमें सोना-नीतमान सुनना-बागवनीचेमें बूझ-ना-बागवंग-देखना-पित्तप्रकृतिवालेको विशेष आनंदकारी है. नदी-समुद्र-सरोवर-कनारे बैठकर हवाखाना-फूलखंयना-शरीरपर उंढे-लेंप लगाना-और-जलाशयको देखते रहना-पित्तप्रकृतिवालेको बहोत रुचता है, बलिकुन्-स्वप्नमें जी यही हाल रहता है कि-आज-तो हम खूब नहायें, आज पहामकी हरियालीमें और जलके ऊ-रनोमें खूब मोलतेफिरे, -जापण करना-चर्चावार्तामें घंटोंतक म-गजपत्ती करना यह तो पित्तप्रकृतिवालेकी जीवनग्रंथी है. बा-तोबें लमादो तो खानापीनाजी भूल जाय. घी-दूध-गैहू-चावल-दाख-सोनेचांदीकी जस्म-लोहेकी जस्म-बगेरा औषधी-बैद्यकीस-लाइसे खाना अच्छा है हवादार मकान-या-तलघरमें रहना पि-चाधिकको हितकारा है, तपाखुपीना-धूपमें मोलना-और अधिक कामजोग करना पित्ताधिकको बुरा है, मलमूत्रके वेगको कजी न रोकना चाहिये. क्रोधकरना-द्वारमिलेपदार्थ खाना-रास्ता च-लना-इस रोगवालेको बहोतही बुरा है परंतु क्या किया जाय!-पित्तवालेकी प्रकृतिहां तामसी होती है तेल-गुम-हींग सरसों-इ-मली-और-संपूर्ण विदाहकारी पदार्थ पित्तरोगवालेको हानिका-रक है. नागरवेदके पानजी बहोत खाना ठीक नहीं.

जिनका शरीर कफप्रधान है उनको परिश्रम करना-रास्ता-चलना और-प्यास लगी हुईको रोकना अच्छा है. चने-भूंग-जव-कुलथी-राइ-द्वार-चरपरे और कसाबलेरस-सरसोंका तेल-सोंठ-कालीबीरच-पीपर केरा चीज कफप्रकृतिवालेको पथ्य है. उम-व-बूझके पदार्थ-केस-सठे-विमकीन-जारी-कीतल-और-यावन्पाथ

कककारी स्नानपान और औषध-कफरोगवालेको विष समान है, ठोम देना चाहिये.

जो लोक पढ़नेलिखनेके अभ्यासी है उनके मस्तकमें जरूर कमजोरी होजाती है, उन्हेंको चाहियेकि-उमासे बादाम-उमासे मिश्री उमासे ताजाधी-और-दोरति केशर-इन चीजोंको बारीक पीसकर मल्हममाबनाके एक मीचीमें रखे, और दो दिनतक सूँघते रहे, मगजको ताकात पहुँचेगी. तमाखूपीना ठंमेजलसे स्नान करना-और-ज्यादे रास्ता चलना-मस्तकरोगीको बुरा है. धी-दूध-और-गेहूँके बने पदार्थ खाना अच्छा है, तालवेपर चमेलीकातेल खूब मसलके उसपर गुलाबजल ढाँटना-या-चमेलीके फूल सूँघना-मस्तकरोगीको लाजकारी है, जिसकी आंखोंका तेज मस्तककी खूशकीके कारण घटगयाहो उसके सीरपर ताजा मरुखन मलना अच्छा है. मलमूत्रकी बाधा रोकनेसे और मस्तकके केश न सुधारनेसेजो सीरमें दर्द पैदा होता है. मस्तकको ठंडे जलसे धोकर जब केशोंको सवारना तो कंधीसे धीरेधीरे सवारना चाहिये. उल्टेबाज बहानेसे सीरके चमकेको इजा पहुँचती है. स्नानमिली कोई चीज मस्तकमें लगाना ठीक नहीं. शरीरकी शोभा वातो वस्त्रआभूषणसे-या-केश शृंगारसेही कियीजाती है, केशही मनुष्यकीसुंदरताका विशेष साधन है. स्त्रीकी खूबसूरतीकेलिये तो बालही मुख्यहै, बालबिगमनेसे मनुष्यका सबहीरूप बिगम जाताहै. जिसमनुष्यकी पिताधिकप्रकृतिहो उसके बाल जल्दी चेत हो जातेहै, कश्मनुष्योंको थोमीउमरमेंही बालउम्रजातेहै, जोबहुज्य मस्तके रंगरूपपरगयाहो उसके केश भीमे होतेहै, जि-

सको ढाढोमूछ बिल्कुल न आवे उसको नपुंसक समझना चाहिये.

सबप्रकारके रत्नोंसे नेत्रोंको अनमोलरत्न कहागया है, अधिक पढ़ना-अंधेरेमें बारीक चीजको देखना नेत्ररोगवालोंको बुरा है. अग्निकी तेजीकेसामने आंखोंकीज्योति बिल्कुल तबाह होजा-तोहै. लिखने पढ़नेवाले मनुष्योंको चाहियेकि-हरहमेश पांचसात तोले घी जरूर खायाकरें. एकीला घी न खाया जायतो रोटी-या-दालमें मिलाके खाना-या-तोलेजर बादामकी गिरी-तोलेजर ताजाघी-और चारतोले मिश्रीमिलाकर सवेरेही खाना अच्छाहै. लेकीन लालमीरच और हींग जबतक नओमोंमें फायदा नहोगा आंखके उपाव दो-यातो चश्मा लगाकर कामलेना-या वैद्यकी सलाहमें कोई औषध खाकर इलाज लेना. नेत्ररोग बहुधा न-जलेके कारण उत्पन्न होतेहैं, इस लिये जिस मनुष्यके नजलेका प्रकोप होकर नेत्रज्योति मंद होजाय-छालरहे-पानीऊरे-अथवा चकाचौंध लगजाय-इत्यादि रोग शांत करनेकेलिये निम्नलि-खित उपाव अति उपयोगीहैं. बादामकी गिरी तोले (३०) तीस कालीमीरच उमासे-बमो इलायचीके बीज उमासे-बंसलोचन उ-मासे-दालचोनी एकमासा-केशरदोमासा-प्रथम बादामकी गिरीको रात्रीसमय जलमें र्जीगोना, सवेरे उसका सुखे बीजका उतारकर बटेपर सफेदगिरीकी पीठी पीसना, जबबहोतबारीक होजाय उसमें कालीमीरच-इलायचीके बीज-बंसलोचन-और-केशर पीस कर मिलादेना, परंतु केशरको पानीमें धीसकर मिलाना चाहिये जिससे संपूर्ण पीठीपर रंग आजाय. फिर उसपीठीकी एककड़ा-इमें गौका ताजाघृत चढ़ाकर पकोमीकीतरह ओटोओटी ढली भू-

नलेनाचाहिये. जब उसमें कषापन न रहे एकथालीमें जुदाउतारता जाय. सब पीठी इसीप्रकारधूनजाय तब उसमेंबराबर मिश्रीका चुराहालकर और पकोडीयांका चुराकर किसीमिट्टीके चीकने बर्तनमें रखना, तीनदिन हवासें बचाना. फिर सांज और सबेरको एकएक तोछा रौज स्नाना. सटाई-तेल-और-लालमीरचका बचावकरना-इससे नजलेकेसबप्रकारके नेत्र और मस्तकके रोग नष्ट होते है.

कानमें अंगुलीघालकर-या-तुणका बगेरासें बहोत उकेरना नही चाहिये, जगह नाजुकहोनेसें सहजमें बीमारी पैदा होजातीहै, सुटसुट शब्द होना-जलनहोकर पींव बहना-ये सब कर्णरोगके विन्है. इसरोगवालेको बहोतबोलना अच्छा नहीं. इसके उपाव अनेकहै लेकीन जिसको जो माफिकआजाय उसकेलिये वही अच्छा. आकवृक्ष जो जंगलमें होताहै उसके पीलेपत्ते लाना, और कपडेसें पुंछकर नाममात्र घी उनपर लगाना. और फिर गर्मतेव-पर-या-किसी और बर्तन थाली बगेरापर जिसके नीचे अभिशो उनको गर्मकरना और फिर कानमें निचोड देना. परंतु इतनाध्या नरहेकि-पत्तोंपर घी विशेषभी न लगे और रुखेभी न रहे. और पुंछनेमें उनपर मेलभी न रहनेपावे, पत्तेभी जो जमीनपर पडकर पीलेपडजातेहै वे कामके नही. जो वृक्षपरही पककर पीलेहोजातेहै वे लाना चाहिये.

अजीर्णरोग सबरोगोंकी जन्मभूमिहै, चिकित्साशास्त्रका-ब-बनहैकि-अजीर्णमें भोजन नहीजीमना. अच्छीतरहभोजनपचने-पर कोईरोग पैदानहीहोता. अजीर्णसें जबतकदूसरीबीमारी नशुद

हो उसके पहले इसका उपाय करना जरूरी है, पतला दस्त आना—पेट फूलना—खट्टी डकार आनी—ये अजीर्ण हुवेके चिन्ह हैं। अजीर्णकों मिटानेके लिये कोई चूर्ण—या—शंखवटीकी गोली—खाना चाहिये। भोजन थोड़ा जीमना—कोस दो कोसकी मजल करना—या—दो चार घंटे दिनमें वामेपासे सोरहेना अच्छा है। रातकोंभी नवघंटेसे ज्यादा नींद लेना चाहिये। इसपरभी अजीर्ण कम न होतो उच्चमवैद्यकीसलाहसे चिकित्सा करना लेकीन बेपरवाह न रहना।

अजीर्ण होनेसे बुखारकी पैदाश है, जबतक जठराग्नि तेजबनी रहे बुखार कभी नहीं आता। बुखार देखतमें कमजोर मालूम देता है लेकिन सब रोगोंका सिरदार यही है। इसके होते सभी बीमारीयां हाजर हो जाती है। रौज आनेवाला बुखार—दूसरे दिन आनेवाला—तीसरे दिन आनेवाला—चौथे दिन आनेवाला—ठंड देकर आनेवाला—मज्जागत—धातुगत—और हाडज्वर—बगेरा अनेक भेद इसके है। दस्त न आना—भोजन न पचना—शरीर दुबल होना—ये—सब ज्वरोत्पत्तिके चिन्ह हैं, जबतक ज्वर न छूटे—छूटनेपरभी जबतक शरीरमें ताकात न आवे तबतक कामभोग करना नहीं चाहिये। इससे स्त्रीकों और पुरुषकों दोनोंकों नुकसान है, बुखारमें एकादो दिन भोजन जीमना बंदरखा जाय तोभी कोई हर्जकी बात नहीं। स्निग्ध भोजन ज्वर रोगमें बुरा है, आधारभूत थोड़ा और हलका खानपान लेना बुरा नहीं।

बुखारकी दवा—संखीया शुद्ध तोला एक—इडताल शुद्ध तोला एक डीकामारी तोला दो—इनको बारीक पीसकर थोहरके पत्तेके रसमें तीन दिन तक खरल करे—बाद तीन दिन तक आकडेके पत्तेके रसमें खरल करे—फिर सींगरफ मासा (६) और—वचनाग शुद्ध मासा (६) भू-

रीकपीसकर उसमें सांभीलकरे. बाद तीनदिन गांजेके रसमें खरल करे, फिर तीनदिन नींबुकेरसमें खरलकरके एक पींड बनावे, बाद थोहरकेपत्ते (२०) तोले लेकर कूटके उसकी नुंगदी बनाके उस-पींडको उसमें रखदेवे, दो पीटोके सकोरे लेकर उसमें सबको बंदकरे, उसपर कपड़ाबांधकर मोटोलगाके दोशेर जंगलीछांणकी आंचमें फूकें, फिर उसीतरह आकड़ेके पत्तेकी नुंगदीमें और गांजे के पत्तेकी नुंगदीमें अलगअलग फूके. बाद निकालकर नींबुकेरसमें खरलकरे और मूंगजितनी गोली बांधे. बुखारवालेको—एकगोली शुभ्र और एक श्याम—देवे. शीतऔरवर्षारुतुमें अद्रककेरसमें—या सोंठके काढ़ेमें—और—उनालेमें घोंके साथ थोड़ी मिश्री मिलाकर देवे. सबजातके बुखार—और—त्रिदोष—इससे शांतहोंगे.

चिकित्साविद्या द्वादशांगवाणीकेज्ञानसे बहारनहीं. रसायण प्रकरणमें धातुओंकीभस्मबनानेका जहां अधिकारहै अनेकजड़ीबूटीकेरस निकालकर उसमें डाले जातेहैं, चूर्ण—गुटिका—औषधिभि-श्रिततेल—और—एकीशप्रकारके पाक बनानेमें अनेकप्रकारकी वन-स्पति—कूटपीसकरडाली जातीहै. अगरकोई महाशय समझेकि—ऐसे हिंसकप्रयोगसे मुनियोंको क्याजरूरतथी?—तो—उसके जवापमें यह कहतेहोकि—गणधर और पूर्वाचार्य—मुनि थे या गृहस्थ?—अमर मुनि थे तो बम !—इसीपर सोचलो! उन्होंने चिकित्साविद्यामें क्यों ऐसे प्रयोग लिखे?—कि—जिसमें अनेक जड़ीबूटीयोंका छेदनभेदन कर-ना/पड़े?—इकोक्त तुमारी समझकाही फर्कहै उन्को इरादा यहथा कि—दुनियादारोंसे ठीकठीकतोरपर धर्म—अर्थ—और—कामका—पालन होशके. शरीर एक—गाड़ीके—समान है उसके पैयेमें जबतक तैलब-



मेराभीर्जे नहीडालीजाय तो वह चले नही. उसकों चलानेके लिये चिकित्साविद्या एकपरमसाधनहै. आजकलके नयीरोझनीवाले जो कि अपनी अकलकेसामने दूसरेकों कुच्छमाल नही समझते उनकों समझानेकेलिये अगर हजारयुक्ति दियीजाय तोभी बृथाहै.

जिसकों श्वासरोग याने दमेकी बीमारीहोजाय उसे चाहिये कि-सबसे पहले काम भोग सेवना बंद करे. श्वासरोग जेसी कोई भयानक तकलीफ दुनियामें नहीहै. इसबीमारीसे शरीर दुबला होतेहोते क्षीणहोजाताहै. रातकों यहरोग पुरीतकलीफ देताहै, उसवख्त ऐसा विचारआताहैकि-इसबीमारीमें जीनेसे मरनाहीअच्छाहै. छातीमें बोजसा मालूम पडना-श्वासखींचनेमें जोर लगनामुंह फीका और हाथपैर ठंडे होजाना-शरीरमें पसीनाआने लगना-कफकेसंगखून गिरना. नींद बिल्कुल न आना-बगेरा उपद्रवहोनेलगते है. यदि शरीर तंदुरस्त रखनाचाहतैहो इसरोगके होते ही ईलाजकराना शुरू करो. रोग और शत्रुकों बढनेदेना बिल्कुल मनाहै. श्वासरोगकी औषधी,-हडतालबरकीतोलाएक-इसकों(१०) दक्षनींबुकेरसमें खरलकरे-जब सुकजाय-बाद अबरखके दो टुकडे बीलस्तभरलंबे लेना, उनमेंसे एकटुकडेपर वह हडतालका घुटा हुवा चुरा बीचमें फेलादेना. दूसराटुकडाउसपर धरके कोयलेकी थोड़ीसीआग नीचे और थोड़ीसीउपर रखना, जब धुआंनिकलना शुरूहो और बंदहोजाय देखनाकि-हडतालका क्यारंगहै?-अगर सुर्खरंग होगयाहो तो निकाललेना और पीलारहाहो तो फिरआंच देना. इसप्रकारबनीहुई हडतालतोलाएक-मोतीबारीकमासादो-चांहीकेबरकमासेछ-सोनेकेबरकमासाएक-कालीमीरबमासादो-अज-

बायनकेफुलमासाएक-लोबानकेफुलमासेतीन-इनसबको आकड़ेके पचेकेरसमें तीनदिन खरल करे. जब गोलीबाधनेकेलाइकहोजाय भूंगसमानगोली बाधे,-एकगोली भुभइ और इयाम पानबीडीमें खावे. शरीरमें लाक्षादितेल-या-चंदनके तेलकी मालीस करे. स्नानमें तरचीजखावे. आराम होगा.

कोषवृद्धिरोगवालेको हरबख्त-जांधिया-या-कोपीनसें-कसा हुआ रहना चाहिये. बहोतठंडाइपोनेसें-इसरोगकी पैदाशहै. भोजनजीमके तुरत पुष्कलजलपीन-चारेदिन बैठेरहना-और-ज्यादे खटाइखाना-इसरोगवालेको बुराहै. ग्रंथीमें दर्द होना-चलतेबख्त तकलीफ पाना-और-नामर्दहोजाना-इसरोगके चिन्हहै, कोषवृद्धिरोगकी चिकित्सा-लाजवंतीकेपत्तेतोलाएक-वचशसेछ-सरसोंमासे छ-कूठमासे छ-पींपरछोटीमासेतीन-सोंठमासे छ-अकलकरातोला एक-एलवा तोला दो-अफीमका तेलतोला एक-पहेत तोला दो-इनसब चीजोंको आकड़ेकेपत्तेके रसमें दोदिनतक खरल करे.बाद तोलेतोलेभरकी गोली बनावे. जब जरूरपडे पानीमें धीसकर थोडासागर्मकरके कोषग्रंथीपर लेप करे, और अग्निका सेंक देवे-तमाखूका पत्ता उपर बांधे. फायदा होगा.

सुनीबवासीर-याने-अर्शविकाररोगहोनेसें गुदामें पीडा होती है, लोही बढना-दस्तआतेसमय बडेबडे कष्ट भोगना-और-गुदामें जलन होना-सब इसीरोगके चिन्ह है. इसरोगवालेकों देरमेंपचनेवाली-और-गर्म-वस्तु खाना ठीक नही. जलदीपचनेवालीचीज दर्हाका-मठा-और पकेफलखाना अच्छाहै. गुदामें बहोतपीडा होतो लोबान-या-धांगका-धुंवा लेना ठीक है, भोजनमें बदामका तेल

खाना गुणकारी है. नींबोलीकेबीजतोले पांच-रसोंततोले पांच-हा रज्जुंगारके बीज तोले पांच-कालीमीरचतोला सवा-मीलजाय तं हडतालकी भस्ममासा एक-इनसबचीजोंको गेंदेकेपत्तेके रसमें-३ यवा भांगकेपत्तेके रसमें-एकदिन खरल करे. फिर चनेके बराब गोली बांधे-बादीबवासीर होतो दोगोली शुभह और दोगोली श्याम ठंडे पानीकेशाथ खावे. और वही एकगोली घीमें घीसके गुदापर लगावे. और एकगोलीको आगपरधरके धुनी देवे. बादी बवासीर दूर होगा. खुनीबवासीर होतो एक गोली सवेरे और एक श्यामको खाकर उसपर पवाडेकेपत्तेका रस तीन तोला पीइ ज्ञाय, उपर लिखेमुजब धुनीदेना और लगाना शुरुखे. आराम होगा. यह औषध (७) सातरौज जरूरलेना चाहिये. कुच्छबीमारी बाकी रहेतो (११) रौज लेवे.

एसा कोइमनुष्य नही दिखता जो वीर्यरोगसेपीडित न हो, सबको एकनएक वीर्यरोग लगाहीरहताहै, इमरोगकेपैदाहोनेकी जड कइ है, ज्यादा कामचेष्टासे वीर्यक्षीण होजाताहै, अधिकइंद्रिय चालना आदि दोषोंसे वीर्य पतलापडजाताहै, वीर्यमें कमजोरीहो-नेसे स्वप्नदांष होनेलगताहै, स्त्रीयोंके देखने-छूने-और-यादकरने मात्रहीसे वीर्यपातहोजाना-मगजमें कमजोरी-स्पर्णशक्तिकी न्यून-ता-और चलतेवरत चकर आना-बगेरा बढीबढी तकलीफें पैदा होतीहै. इसका उपाय न लियाजाय तो अखोरमें-आदमी सीरडो होजाताहै. इसरोगवालेको सबप्रकारसे बलबढानेवाली चीज खा-नाचाहिये. चावल-घी-दूध-सबप्रकारका मेवा-घीमेंपकी खीचडी-गेहूकी रोटी-पुरी-या ताजीमीठाइखानाअच्छाहै. लेकिन बहुतदेरमें

पचनेवालोचीज एकवारही पेट भरके नहीं खानी चाहिये. दही-खटाई-वासीअन्न-बीगडी-हुइमीठाई-वीर्यरोगवालेको हानिकारक है, स्त्रीविषयकचिंता-अथवा-उसकेमीलनेका उत्साह-बिल्कुलछो-डदेना चाहिये. सवेरे जंगलकी हवामें घूमनेको जाना-शरीरको सुगंधि तेलसें मर्दनकरके स्नानकरना-और-उसीसमयभारीकपडा ओढलेना अच्छाहै, इसका उपाव न लियाजाय तो प्रमेहरोग पैदा होजाता है, पेशाबकेसंग धातु-या-रुधिर-गिरना-बारंवार पेशाब-आना-पेशाबके रास्तेमें घाव होना-और हाथपांवके तलवोंमें जलनहोना-य सब प्रमेहरोगके चिन्हहै, मैथुन-इस्तमैथुन-शक्तिसें ज्यादा मिहनत-और-रातको जागना-इसरोगवालेको बुराहै. उत्तमवैद्यसें इसकी चिकित्साकराना व्याजबहे, आगेचलकर इसका उपावभी लिखेंगे लेकिन मुखवैद्यसे इलाज करायाजायगा तो जानका जोखमहै, गुड-तेल-लालमीर्च-सोंठ-तमासू-खट्टे और निमकीनपदार्थ-खाना अच्छा नही.

स्त्रीको बहोतसे रोग ऐसे होतेहै जो लज्जाकेपारे दूसरेको क-हनहीशक्ती, रुतुशूल-या-महिनारुकनेकेशिवायअधिक रज गिरना पेटमें पीडाहोना-गर्भधारण न करसकना-बेसमयगर्भ गिरना-प्रदर श्वेतप्रदर-रक्तप्रदर-गुल्म-वगेरा-अनेकरोग ऐसे होतेहै जिससें रात्रीको चमक उठना-आलजंजालस्वप्न दिखने-नींदमें गुडगुडाना-शरीर दुबला होना-छातीमें गभराट-वगेरा कइ तकलीफें पैदा हो-ताहै, मुखलोक कहदेतेहै भूत पिशाचकी इसपर छाया है लेकिन नही सोचतेकि-इसको रोग क्या है!-रोगको देवकारण समझना बड़ीभूलहै, कितनीक स्त्रीयां एसीभी होतीहै जो कोरापाण्ड क-

रती है, घरका धंदा नहोशके तो कहदेती है मेरा शरीर भारी है मुझे भूतणी आनकर सताती है, महाशय ! अगर इसकी परीक्षा करना चाहो तो एक छोटी शीशीमें छ मासा ताजा चुना-और-छ मासा न-बसादर पीसाहुवा मोलाकर उस स्त्रीकी नाकको मुंघाना, भूत होगा तो कुछ परवाह न करेगो-और-पाषंड होगा तो चिल्ला उठेगी. जिसके शरीरमें सबेही देवछाया हो ऐसा समझा जाय तो उसे भ-विष्यत् वृत्तांत पूछना-या-मुठीमें कोई चीज लेकर कहना बतला ! इसमें क्या चीज है ?-अगर फोरन उस चीजका नाम बतला देवे तो अलबते ! देवकारण समझना, और फिर पुछना कि-आजसे दश-रौजके बाद क्या बनाव बनेगा ? अगर जैसा कहे वेमाही उसरौज बने तो निश्चय देवकारण समझकर उसका इलाज करना.

बहुधा स्त्रियोंके रुतुधर्म रुकजाता है और बहुधा स्त्रियोंके बच्चे-दाहोनेके पीछे मल साफ न होनेके कारण भी उदर-तथा-नलोंमें वि-कार उत्पन्न होजाता है, बाद वह स्त्री शरीरसे पीली पड़जाती है. हाथ पांव फुटते रहते हैं, शिरमें दर्द और भोजनपर अरुची होती है, कोई वस्तु प्यारी नहीं लगती, इसका साधारण इलाज लिखते हैं, मुलेठी ( जेठीमध ) छ मासा-गुडवच छ मासा-पोस्त ( अफीमडोडा ) एक मासा-हलदी दो मासा-पुराना तोनवर्षका गुड देढतोला-और दे-शीचूना एक मासा-इन सबको (२०) तोला जलमें अग्निपर चढ़ाना, जब एकतेपकते (१५) तोलारह जाय-अग्निपरसे उतारकर कपड़ेसे छाने और ठंडा करके स्त्रीको पीला देवे, एमातीनरौज सबेरे कर-नेसे रुकाहुवा मल पुनः प्रवाह होकर शरीर शुद्ध होजायगा. यदि दबा गर्मी ज्यादा करे तो एक एक दिन तथा दो दो दिनका अंतर दे-

कर पिलाना, और जो एकदिनमेंही दवा देनेमें मलशुद्ध होजाय तो फिर दूसरी दफे देनेकी कोई जरूरत नहीं. यह रोग कि-जिसकी दवा (उपरलिखी गयी है) दो कारणोंसे उत्पन्न होता है, एक तो किसी स्त्रीके बालक पैदा हुआ हो और वह अपनेपतिसे भोग करनेकी शिघ्रता करे. कमसे कम बालकके जन्मदिनसे लेकर चालीश दिन भी पुरे न होने देवे तो इस रोगकी जड़ लगे, चिकित्साशास्त्रोंका वचन है कि-बालक जन्म बाद (४०) दिन कामभोगमें बचाना चाहिये. जो नहीं बचाते हैं वे जरूर रोगी होजाते हैं. दूसरा कारण-यह भी है कि-रुतुधर्मवती स्त्री तीनदिनके बीच-बीच अगर पुरुषके पास जाय तो उक्त रोग पैदा हो जाय, रुतुवती स्त्रीसे संभोग करनेमें पुरुषको भी बड़ी तकलीफ पड़ती है, पुरुषचिन्हमें अनेक तरहके कष्ट और गर्मीके रोग पैदा होते हैं.

स्त्रीको वीर्यरोगका चिकित्सा-मुख्य दो-या-सफेद हो-इसद्वारे दोनो रोगोंको फायदा है. मुशलीसफेद तोले दश-गौकाता-जायी तोले दश और-मिश्री तोले दश-दोनोंको कूटपीसकर कपड छीनकरके घीमें मिला देना और-चाँडसपहर एककलाइकियेहुवे दवेमें रख छोडना-बाद वीर्यरोगवाली स्त्रीको चाहिये कि-हरहमेश तोले तोले भर खाते रहना. खानपानमें तेलमीरचका परहेज रखना, सात रोजमें आराम होगा, (दूसरी दवा) मुशलीकाली-मुशलीसफेद-उटंगनके बीज-सेबलकी जड़का छीलका-गोखरुछोटे-ये चीज तोले तोले भर लेना और कूटपीसकर बारीक कपडेसे कपड छाणकरके छमासे सुभह और छमासे श्याम-गौके ठंडे दूधके साथ फाकना, परंतु इतना याद रहेके-छमासे एकदम न फाके-थोड़ा थोड़ा हथेलीमें लेकर फाकने जाना और दूधके घुटकेसे उतारते जाना, वीर्यरोग

प्रदर-दूरहोगा. ( अगर किसीको यह मंजूरहोकि-स्त्रीको गर्भ रहे तो ) इसीदवाको रजस्वलासे साफहोनेकेबाद याने पांचमें रौजसे लेकर आगे पांचरौजतक उसीतरीकेसे खावे जो उपर लिख चुके है. अकेलीस्त्रीकेलियेही यहदवा नहीं बल्किन् उसका पतिभी बराबर पांचरौजतक खातारहे, कामभोगसेवना पांचरौज मोकुफरखे. बाद संभोगकरनेमें गर्भस्थितिभी हो सकती है.

( गर्भस्थितिहोनेकी दूसरी चिकित्सा )-छमासे आसगंध कूटकर एकीश तोले पानीमें इतना औटानाकि-साढेदशतोले रह जाय उसको चूलेसे नोचे उतारकर उसमें दशतोले कचागौकादूध और अढाइतोले घी-सामीलकरके रुतुधर्मवतीस्त्री जिसदिनरुतुधर्म आवे उसदिनसे लगाकर पांचरौजतक सवेरे सवेरे पीयेतो उसको गर्भरहनेकी संभावना है.

( दूसरी चिकित्सा )-पारमपीपल अर्थात् सफेतपीपलकीजड या-उसके बीज-सफेतजीरा-आंग-शरपुंखा-ये चीजे आठ आठ मासे लेना-कूटछानकर-छछमासकी चारपुडियां बनाना-अगर रुतुधर्मके दिनमें लगाकर चाररौजतक कोईस्त्री एकीशतोलेगौकेकचे दूधके साथ सवेरेसवेरे पीयेगी गर्भरहनेका संभवहै. कितनेक कहते हैं रुतुधर्मके दिनोंमें स्त्रीको दूध पीना अच्छानही, लेकीन दवामें मीलाकर पानेकी कोइमना नहीं, अलबते !-यूं खानपानमें चाहे मत प्रीओ.

अगरकिसीको अपने शरीरमें वीर्यवृद्धिकरना मंजूर हो तो नीचेलिखाहुवा केशरपाक बनाकर खावे, [ केशरपाकबनानेकी तरकीब. ]-केशरतोलाएक-कस्तूरीमासे दो-अमरमासाएक-छोटेयो-

तीमामा दो-शिलाजीतशोधाहुवा तोलाएक-इनसबर्चाजोंको लेकर गुलाबजलमें तीनघंटेतक खरलकरे, और एकतरफ रखे, फिर बादामकी मीजी पचास तोले-तींस्ते पनराह तोले-गर्मपानीमें धोकर छीलकर उतारडाले-और कूटकर मावासा बना लेवे-पांचतोले छोटीएलायची छीलकेउतारके कूटपीसकर उस मावेमें सामील करे और एकतरफ रखे, पारा शोधाहुवा तोलाएक-गंधकशोधा हुवा तोलाएक और धनूराकेबीजतोले दो-लेकर तीनदिनतक खरल करे, जब चूर्णहोजाय एकतरफ रखे. फिर उरदका आटा तोला चौदह-धोलीमुशलीतोले तीन-सतावर तोलेतीन-आसगंध तोलेतीन-बेहमनसफेद तोलाएक-बेहमनसुख तोलाएक-तोदरीसफेद तोलाएक-तोदरीसुखतोलाएक-तोदरीपीलीतोलाएक-जायफल तोलापांच-इनसबको कूटपीसकर चूर्णबनाके कपडछान करे और एकतरफ रखे. बाद-गुलाबका इतर उमदा मासे छ-चांदीके बर्क तोला एक. मोनेके बर्क मासेदो मीश्रीतोले (२००) दोसे और-गौका घी तोले (१००) लेकर एकतरफ रखे, फिर एक कडाइ पीतलकी-या-तांबेकी-लेकीन कलाइकियीहुयी हो लेना, और पचासतोलेघी उममें डालकर चूलेपर धरके थोड़ीथोड़ी आंच लगाना, बाद बीशतोले भीलावें लेकर उस कडाइमें डालना, जब सुनमुंनकरना बंद होजाय और धुवांदिने लगे सभी भीलावें निकाललेना, लेकीन आंचका ऐसा खयालरखनाकि-भी जलकर कोडा न होनेपावे, अगर कोडा होगयातो सबपाक खराब होजायगा,

बहोतमे वैद्यलोक पाकबनातेहै लेकीन वो ठीकनहीबनता



और सेंकडेरूपये मीट्टीमें चलेजातेहै इसका यही सबब है कि-बनानेकी क्रियामें चूकते है. इसलिये बहुतहुशियारीसें पाकबनाना चाडिये.

निदान ! उसभीलामेंके तलेहुवे पचासतोले घीमें उडदकाआ-टाबगेरा काष्ठादिक औषधीयोंका चूर्ण ( जो कपडछानकरके एक तरफ रखाथा. ) सेक लेना. सोभी एसा सेकनाकि-थोडासा सेक लगे और जलने न पावे. फिर उसको दूसरे वर्त्तनमें डालकर उ-सकडाइको खूबमांजकर साफकरना. और चूलेपर धरकर उसमें ( १०० ) सोतोले मिश्रीकी चामनी बनाना, चामनी गुच्छाबंध याने अंगुलीऔर अंगुठेपर देखनेसे छसातनार उठतहो एसी हो जाय तब नीचे उतारकर उसमें वो जो पचासतोले घी बाको रखा था डालदेना और खींचेसे धीरेधीरे हिलातेजाना. जब मोतीकी माफक रवे पडजाय उसमें केसर-कस्तूरी अमर-पोती-और-शी-लाजीत जो गुलाबजलमें खरलकरके एकतरफ रग्वेथे डालदेना बाद बादाम-पीस्ते-और-एलायर्चाका-जो मात्रामा बनारखाथा वो-और-उडदकाआटाबगेराकाष्ठादिक औषधोंका चूर्ण जो भी लावेकेतलेहुवे घीमें सेककर एकतरफ रखाथा-सब-उस चामनीमें डालकर धीरेधीरे बहोतयन्नकेशाथ मीलादेना. बाद पारा-गंधक और धतूरेकेबीज जो खरलकरके एकतरफरखे थे वे भी उसमेंसा-मीलकरदेना, चींदीकेवरक और गुलाबका इतर डालकर जब सं-पूर्णपाक तयार होजाय दोतीनथालमें-घीवोपडकर डालदेना और उपरसें सोनेकेवरक चीपकाना, उमदा क्लेशरपाक होजायगा.

इसपाक पुरुष या स्त्री जोखायगा दशगुना बलवीर्यबढेगा ३ " रीरकी रंगत और फुरतीबढेगी. अंगअंगमें चपलता और उत्स

जोरदेगा. [इसको खानेका तरीका] प्रथम पांचसातरौज दोदो तोले शुभह और श्याम-खानाचाहिये, उपरमें बीस तोला दूध पीइकर देखना, जब इतना पचजाय तो फिर पांचपांच तोले पाक और उपरमें चालीशचालीशतोले दूध पीना, उनालेमें यहपाक खाना मनाहै गर्मी करेगा, शियाले चौमासेमें-खाना बहोत अच्छा. दूध एकपरमऔषधी है, इसका पीनाकोइवरत मनानही लेकीन इतना यादरखना चाहियेकि-कोरा पीनेमें पेटमें जाकर गुच्छासा बंध जाताहै. इसलिये उचितहैकि-इसतरकीबसें बनाकर पीये. दूध तोलाचालीश-गुलाबजल तोलावीस-और मीथी तोलेपांच एक कलाइदार वर्तनमें-डालकर-अग्निपर धरना, और वेदानेमासे (६) एकसफेदकपड़ेकी षोडशीवांधकर उसमेंडालना-जोश इतनादेना कि-पीछा चालीशतोला रहजाय, जब ठंडाहोजाय पीडलेना. चलनेफिरनेका अभ्यास हर्षवर्त्तन बनाये रखना चाहिये. गद्दीतकी-याकेनोकरबने रहनाठीकनही. खट्टाई और तेल खाना मना है, (४१) दिनतक अगरकोइ इसपाकको सावधानीमें खायगा बहोत कुच्छ फायदा उठायगा. जो लोक उदार प्रकृतिवांलहै और शरीरको तंदुरस्तरखना चाहतहै उनकेलिये यह निहायत उपयोगी चीजहै. जो शरत्स महाकंजूममखीचुस है उसकेलिये मेथीका आटा तेल-और गुडही अच्छे है.

जिसको मूत्रकृच्छ्रब्याधि हो उनकोचाहिये शतावरीकी गीली डका रस तोलेभर और छमासामीथी मिलाकर पीये, तीनदिन बरे इसप्रकार पीनेसे आशाहै आरामहोगा. शतावरी न मिले तो ग्रीगिलोय तोलेभर लेना. जिसको बिनाइच्छा पेश निकल जाता

हो-या-उपकृताहो-उनकोउचितहैवि-हालेतिल-और-अजवायन-तीनतीन तोले-कूटपीसकर गुडमें मिलाके नवनवमामेन्ती गोलीयां बनावे, और सवेरेही एकगोली खावे आरामहोगा, नागकेशरके फुल-गांके घोंमें मीलाकर रजस्वलाहोनकेबाद चौथेरोजसें तीनदिनतक अगर कोइ स्त्री खावे और क्षीरकाभोजन करे तो गर्भस्थिति होनेका संभवहै, लेकिन दवालेनेके दिनोंमें कामभोगसेवन नकरे.

पुहषभी यही दवा शायशाय लेता रहे, मुशलीपाक अगर ठीकठीकविधिते बनाहा हरहमेश चारतोले खायाजाय तो धातुकी क्षीणतामिटै-पंदाग्रि-श्वास-अरुचि-विषमज्वर-और नपुंसकता-दूर करे, प्रमेहकों शांतकरे, शरीर पुष्टहो. स्त्रीकोभी यह पाकखाना अच्छाहै. सबतरहसें तेजी बढ़ायगा. लेकिन सवामहिनेतक खाना चाहिये,—

जिसको अपनीबुद्धितेजकरना हो मरस्वतीचूर्णबनाकर(४१) दिनखाय. (सरस्वतीचूर्णबनानेकी तरकीब.)-विद्याब्राह्मीतोला-एक-शंखावलीतोलाएक-शतावरीतोलाएक-शुंठतोला एक-आं-धानाडतोलाएक-गिलोयमुकीतोलाएक-वायवर्डींगतोलाएक-वच-तोलाएक-अकलकरातोला दो-आमगंधतोला दो-कस्तूरीमासादो केशरतोलाएक-जाय रुलतोलाएक-जवत्रीतोलाएक-बादामकी गिरीतोलादश-पीस्तातोलापांच-चीरोंजीतोला पांच-ककडीकेबीज-छीलेहुवे तोलाअढाई-तरबुजकेबीजछीलेहुवे तोलाअढाई-आलके बीजछीलेहुवे तोलाअढाई-खरबुजकेबीजछीलेहुवे तोलाअढाई-ए-लाचीछांटीतोलाएक-मोतीकीखाखमासा दो-सोनेकेवरकमासाएक चांदीकेवरक ( ७५ )-घृततोला एकीस-( ताजा और गौका )-मी

श्री तोला साठ-इतनीचीजे लाकर इनमेंसेकाष्ठादिकऔषधियें अच्छीसाफकरके हमामदस्तमें खूबकूटे-और-कपडछानकरके ए-तरफ रखे.

बादाम-पीस्ते-चीरोंजी-गरमपानीमें धोकर छीलके निका-लकर चकुसें हतर रखे. केशर-कस्तूरी-मोतीकीखाख-गुलाबजल-केशाथ घंटेतीनतक घोटकर एककटोरीमें निकाललेवे, एलाची अथकचरी कूटकर रखे, सोनेकेवरक-चांदीकेवरक-कडाहीतावेकी या-पीतलकी-खोंचा कलाइ किया हुवा. मिश्री-और-घृत-ये-सब चीजेनजरकेसामने तयाररखे, फिर चतरवैद्य-या-कारीगर पहले कहाडी चूलेपरचढाकर ( २५ ) तोलपानीकेशाथ मीश्रीकोंगलाकर छान लेवे, उसकीचासनी गुलाबंद-छसाततार अंगुलीपरनिकले वेसी-लेकर जमीनपर रखे, और उसएकशि तोले घीमेंसें ( १० ) दशतोलेलेकर चासनीमें डाल दे, और धीरेधीरे खोंचेसें हीला-ताजाय-जब रवापडजाय-केशर-कस्तूरी-मोतीकीखाख-घुटीहुइ-उसचासनीमें डाल दे. और-खोंचेसें हीला देवे, बाकीरहाहुवा ( ११ ) तोले घी-लेकर-काष्ठादिकऔषधियोंमें डालदेवे-अथवा चासनीमें डालकर खोंचेसें हीलादे, फिर बादाम-पीस्ते-और-ए-लाची-उसीचासनीमें डालकर हीलाता रहे, बाद चांदीकेवरकभी उसकेभीतरडालकर एकमेक करदेवे. बस!-फिर साफ थालीमें घी चोपडकर-तयार होयाहुवा पाक-उनमें फैलादेवे, औरसोनेके-वरक उसपरचोटाकर रुइके फुएसें दबादेवे. उमदासरस्वतीपाक तयार होगा.

हरइमेशपांचतोले पाक-खाकर उपरसें ( १० ) दशतोलेतता

दूध भीश्रीकेशाथपीनेसे निश्चयहैकि—(४१) दिनमें बुद्धि तेजहोगी. लेकीन!—भोजन एसाजिमनाचाहिये जो हलका और जलदीपच-  
नवाला हो. दातूनकुरला करके मुंहकोसाफ रखना—हरहमेश शरी-  
रमें पसीनाआजाय इतना परिश्रम लेंतरहना और—शाथशाथ दो-  
चारकाव्य कंठाग्ररुतजाना ठीकहै. कुपथ्यखाकरपाकको दोषदेना  
बड़ीभूलहोगी. चतरआदमी—वां—है—जोलिखे—मुताधिक—बर्तावरखे.

सर्पकाटनेकीजगह यामाभरसंखीया घीसकरलगानेसे तुरत्त-  
आरामहोगा, जिसकोसर्पकाटे दोचारघंटेहोचूकेहै उसकोलालफी-  
टकरी कच्चीहीलेकर बानीकेशाथ तीनहिस्से बनाके आधआधघंटे-  
कीदेरीसे पीलादेना आरामहोगा, कंगुदीकीजडघीसकर पीलाने-  
सेभी सर्पकाझेर दृढ़होताहै, नागदमनीऔपधि तो सबसे ज्यादा  
फायदेमंद है. ( गर्भवतीस्त्रीको कष्टमिटानेकेलिये )—तीजयपट्ट-  
स्तोत्रमें जिसकीविधि लिखीहै वह थंय—केशरमें कांसेकीथालीमें  
लिखकर भूपदेना और पांचतोलेजलकेशाथ धोकरपीलानेसे पी-  
डादूरहोगी आंग गर्भ कोरन छुटजायगा. अगरएकदफे पीलानेसे  
न छुटेतो दोतीनदफे पीलाना,

चिकित्साविद्या अगरपूर्णरूपसेलिखीजाय तो बहोतकुच्छ वि-  
स्तारबढशक्ताहै, जिसतरफनेगाहकरो वही विद्या अपारहै, कइत-  
रहकेग्रंथ छपेहुवे मौजुदहै, रगरगकेमाहितगार वैद्यलोग दुनियामें  
थोडेनहीं, इसलिये इसकाज्यादे बढावबढानाभी जरूरतनहीरहा.  
ग्रंथकारोंका नियमहैकि—जो बात सदाकेलिये सर्वोपयोगी अपूर्व  
हो लिखदियाकरे, वैद्य और ग्रंथकार आयुष्यकेमालिकनही, आ-  
रामहोना न होना कर्माधीनहै. निश्चयनयकों दिलमें रखकर व्य-

बहारनयसें बर्चावकरना सज्जनोंका काम है. कितनेक आदमी कर्मोंपर भरसाधरके कह देते हैं कि—जो हो नहार होगा आप अच्छा हो जायगा हम दवा नहीं खायगे, लेकिन! यह बात शास्त्रसें बखिलाफ है, आजकल वैसे शरीर नही रहै, अब के आधार प्राण रह गये, इसलिये मुनासब है अच्छे वैद्यसे चिकित्सा करावे और उसके कहने मुजब खानपान करे, रोग बेंमनका ढंगा चलाना अच्छा नही. शरीर एक अंधेरी कोठरी है, इसमें चिकित्सा विद्या हीका चांदना काम देता है. कइद फेदे खा गया कि—साधु लोग हरेक गृहस्थ की दीयी हुई औषधि बिना वैद्यकी सलाह खालेते हैं, लेकिन!—सोचना चाहिये कि—हरेक आदमी वैद्य नहीं हैं, साधु लोग धर्मशास्त्रके जानकार हैं, लेकिन!—शारीरीक विद्याके जानकार तो वैद्य ही होते हैं. एक बारीष्ठर एक डाक्टर के पास गया और कहने लगा मेरे पांवमें दर्द है इसका इलाज बतलाइये!—पास बैठे हुवे पांचचार बेवकुफ कहने लगे क्यों जी!—दो दो हजार रुपये एका दिन की तनखामें पाते हो—क्या!—पांवका इलाज भी नहीं जानते!—बारीष्ठरका जवाब हुवा कि—मैं—बकालत करनेमें अबले! होशियार हूं, लेकिन! शारीरीक विद्यामें नहीं हूं, यह तो डाक्टरोंको भी चाहिये कि—जब अपना रोग अपनी पहेछानमें न आवे तो दूसरे की सलाह भी लेवे. सब बात कानतीजा यह आया कि—हरेक आदमी रोग पैदा हो तुर्त वैद्यके पास चला जाय और जो कुछ वह दुकम दे उसमाफिक बर्त्ते. अपनी बुद्धि की कुतर्क न करे. दवाका दाम उसी वख्त दे दिया करे, दाम न देनेसें—या—देरीसें देनेसें वैद्य लोग शर्मके मारे बोलेंगे नहीं लेकिन!—ध्यान देकर इलाज नही करेंगे. पै-

सारूपया शरीरसें बढकर नहीहै. इसबातमें बल्किन्!-ज्यादे उ-  
दारता रखनीचाहिये. उदारआदमी हरतरहसें सुखी रहताहै.

[ इति चिकित्सा प्रवाहपूर्ति-समाप्त,— ]

इतिश्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-  
शांतिविजयजीमहाराज-विरचित-  
शांतसुधानिधिग्रंथका प्रथमतरंग समाप्त.



## [ स्वरोदयज्ञान,— ]

स्वरोदयज्ञानकावर्नन मूलसूत्रोंमें-प्रकीर्णकग्रंथोंमें-और-भाषामयकवित्तछंदोंमें कइजगहदेखागया, विवेकमार्तण्डयोगग्रहस्प-हे-मधंद्राचार्यरचितयोगशास्त्र-और कपूरचंद्रजीरचितस्वरोदयज्ञानभी स्वरशास्त्रहीकेग्रंथहै, अगग्रस्वरशास्त्रका अभ्यासकरनाचाहतेहो-स्वरोदयज्ञानीकों मिलकर इसकेभेदानभेदपुछो-सीखो-पढो-और-जो कुछ हुकमदे उसमाफिकचलो. स्वरोदयज्ञानसीखनेवाला आहार और नींद-थोड़ीले, संसारमें लिपटा न रहे. हरहमेशहृदयमें नव-पांखडीकाकमलबनाकर-अरिहंत-मिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-दर्शन-ज्ञान-चारित्र-और-तप-इनका ध्यानकरे, प्राणायामयोगकी दशभूमिहै उसमें पहलीमजलस्वरोदयज्ञानहै, जिसकेबडेभाग्यहो उसको इसकारास्ता मिलताहै, जिनेंद्रदव-और-गणधरमहाराज-संपूर्णप्राणायामयोगके पुणेमाहितगार थे. महावीरअरिहंतकेबाद-चौदहपूर्वकेपोठी-भद्रबाहुस्वामी-जबहुवे-उनोंने सूक्ष्मप्राणायाम-ध्यानका जब परावर्त्तनकियाथा श्रावकमंघने मीलकरउनोंकों विज्ञप्तिकियीथी-वगेराबातें जैनागममें कइजगह वांचने सुननेमें आती है, इससेंभो मालूमहोताहैकि-पहेलेकालमें साधुलोग इसकाखूब अभ्यासरखतेथे, अबशरीरकीताकात कमहोगइ, धर्मश्रद्धा उतरने लगी, और कुछलोभनेभी अपनापंजा ज्यादाफेलाया,—कहिये ! अब-स्वरोदयज्ञानकाटंटा किसे अच्छा लगे ?—यहकाम निर्लोभी और आत्मज्ञानीयोंकाहै, दशभूमितक न बने तो दोतीनचारभी



बनामाचाहिये. मेहनत करनेसें मुश्किल बात भी सहेज होजाती है.

( दोहा. )—नाडीतो तनमें घनी—पिनचौइस प्रधान,

तिनमें नवफुनताहुमें—तीनअधिककर जान. १

इंगला पींगला सुखमना—ये तीनोंके नाम,

भिन्नभिन्न अब कहतहुं—ताके गुन अरु धाम. २

भ्रकुटिचक्रसें होतहै—स्वासाकों परकास,

बंकनालके दिगथइ—नाभिकरत निवास. ३

नाभितें फुनि संचरत—इंगला पींगला धाम,

दक्षिणदिशहै पींगला—इंगला नाडी वाम. ४

इनदोउकेमध्यमें—सुखमना नाडी जोय,

सुखमनके परकाममें—स्वर फुन चालत दोय. ५

ढावास्वर जब चलतहै—चंदउदय तब जान,

जबस्वर चालत जोमना—उदयहोत तब भान. ६

सोमकाजकों शुभशशी—करकामकों मूर,

इनविध लखकारजकरत—पामे सुख भरपूर. ७

दोउस्वर समसंचरे—तब सुखमन पहिचान,

तामे कोउ कारजकरत—अवश होतकच्छु हान. ८

चंदचलत कीजे सदा—थीरकारज स्वरभाल,

चरकारज सुरज चलत—सिद्ध होतततकाल. ९

कृष्णपक्ष एकमदिने—प्रातमूर जो होय,

तो ते पक्ष प्रबीननर—आनंदकारी जोय. १०

शुक्लपक्षके आदिदिन—जोशशी स्वर उद्योत,

तो ते पक्ष विचारिये—सुखदायक अतिहोत. ११

- चंद्रतिथिमें आय जो-भानुकरत प्रकाश,  
तो क्लेश पीडा हुवे-किंचित् वित्तविनाश. १२
- सूरज तिथि पडिवा दिने-चले चंदस्वर भोर,  
पीडाकलह नृपभय करे-चितचंचल चिह्न और. १३
- दोउपक्ष पडिवादिने-सुखमन स्वर जो होय,  
लाभहान सामान्यथी-तो निश्चे करी जोय. १४
- सन्मुख वामी उर्द्धदिश-रहीप्रश्नकरे कोय,  
चंदयोग हो तासमें तो कारज सिद्ध होय. १५
- नीचे पीछे जीमणे जो कोइ पुछे आय,  
भानुयोगस्वर होय जो-तसकारज होजाय. १६
- अष्टभेद है यागके-पंचम प्राणायाम,  
ताके सप्तप्रकार है-सकल सिद्धके धाम. १७
- वायु पांच शरीरमें प्राण समान अपान,  
उदानवायु चोथो ह्यो पंचम अनिलअव्यान. १८

स्वरोदयज्ञानकों सीखने-वाला पहले नाशिकासें चंद्र और सूर्यस्वरकी पहचानसीखे, नाककेडावेछेकमेंसें हवा निकलतीहो चंद्रस्वर समझना चाहिये जीमनेमें निकलतीहो सूर्यस्वर समझे, हरमहिनेकी सुदीएकमकरौज सवेरे सूर्योदयकेवख्त अगर चंद्रस्वर चलताहो अच्छाहै, पनराहरौज आनंदसें गुजरेंगे, इसीतरह हरमहिनेकी वदीअकेमकरौज सूर्योदयके वख्त सूर्यस्वरचलताहो अच्छाहै, पनराहादिन आनंदरहेगा. अच्छंनिरोगमनुष्यके दिनरात घंटेघंटेभर चंद्र और सूर्यस्वर अदलबदलहोतेहुवे चलतेरहतेहै, रोगीकों यहनीयम नही रहता, ज्यादे कमभी होजाताहै.

## [ चंद्रस्वरचलतेवस्तु जो जो कामकरनेचा- हिये उसकी यादी. ]

जिनमंदिग्बनवाना शुरूको तो बनानेवाला अपना चंद्रस्वर चलताहो नींव डाले, प्रतिष्ठाकेवस्तु प्रतिमाजीको स्थापनकरे तो चंद्रस्वरमें करे, पूजाप्रभावना दिनपरदिन बढ़तीरहेगी. मंदिरकेशि स्वरपर कलशचढ़ावे चंद्रस्वरमें अच्छाहै, पोषधशाला-धर्मशाला-दानशाला-पाठशाला-घर-हाट-हवेली-महल-कोट-और-किला-नयाबनाना-या-उनमें प्रथम प्रवेशकरना चंद्रस्वरमें करना, तोर्थया-त्राकौजाना चंद्रस्वरमें अच्छाहै, सुखचैन रहेगा. दीक्षादेनेवालागुरु जब चेन्नेकों दीक्षादे तो चंद्रस्वरचलतेवस्तु देवे, मंत्रवतलाना चंद्रस्वरमें ठीकहै, लेनेवालेकाभी चंद्रस्वर हो तो निहायतउपदावा-तहै, लेकिन ! जब देवसाधनकरनेकेलिये बैठना तो सूर्यस्वरमें ठीक है, याते जलदी सिद्धहो. नयेधरमें-या नयेनगरमें प्रथम प्रवेशकरना चंद्रस्वरमें करनाअच्छाहै आनंदरहेगा. नयाकपडा-और-नयागेहना-पहनना चंद्रस्वरमें अच्छाहै गाम-और-देश-इजारेलेना चंद्रस्वरमें ठीकहै, फायदाहोगा. बीमारआदमी औषधखावे चंद्रस्वरमें अच्छाहै. बागडगाना-और खेतमें बीज डालना चंद्रस्वरमें बहुतठीक होगा.

राजासें पहेलीमुलाकातलेना चंद्रस्वरमें अच्छाहै फायदा होगा, लडाई और मुकद्दमेकेलिये-जाना तो सूर्यस्वरमें अच्छाहै. राजा-जब गद्दीपरबैठे तो चंद्रस्वरमें बैठे, बहुतदिनोतकराज करेगा. नयीदुकानखोलनेवाला चंद्रस्वरमें दुकानखोले लाभ होगा

नदीनालेका पुलबांधना गुरुकरे-ता चंद्रस्वरमें कामचलावे, बहोत कालतक बनारहेगा. जवाहरातका काम पहेलेचंद्रस्वरमें गुरुकरना अच्छाहै.

## [सूर्यस्वरचलतेवरुत जोजो कामकरनेचाहिये उसकी यादी. ]

विद्यापढ़ना गुरुकरेतो सूर्यस्वरमें करे जलदी कंठ हो. राजाकों-या-किसीहाकिमकों अरजीदेना सूर्यस्वरमें देना, दूश्मनकों हरानेकेलिये बीडा उठाना सूर्यस्वरमें अच्छाहै, भूतउतारनेजाना या-सांपकेक्षेत्रउतारनेकेलिये झाडा देना सूर्यस्वरमें ठीकहै, जलदी फायदा होगा. वैद्यलोग जब रोगीकों दवा खीजावे अपना सूर्यस्वरचलताहो उसवरुत खीलावे जलदी कारकरेगी. बीमार अलबते! चंद्रस्वरमेंही खावे. लडाइकी तयारीकेलिये हथियार खरीदे-या-हाथीघोडे-मौललं-ता सूर्यस्वरमें ले. स्नान-और भोजन सूर्यस्वरमें करे.

( दोहा. )—दक्षिणस्वर भोजन करे-डाबे पीवे नीर,

ढाबीकरवट सोवतां-होय निरोग शरीर. १

चलत चंद भोजन करे-अथवा नारी भोग,

जलपीवे सूरज विषे-तो तन आवे रोग. २

पांचसातदिन इनपरे-चले रीत विपरीत,

होय पीडा तनमें कलु-जानो धरी परतीत. ३

कामभोगसेवनकरना सूर्यस्वरमें योग्यहै, पुरुषार्थकी हानि न होगी. चंद्रस्वरमें करनेसे हानिपहुंचतीहै, नयीपुस्तकमें-या-न-

यीवहीमें लिखाण शुरूकरना सूर्यस्वरमें अच्छाहै. राजा-लडाइके-लिये सूर्यस्वरमें चढ़े जलदीफतेहपावे. समुद्रमें जहाज चलाना-या जहाजमेंबैठकर पारहोना सूर्यस्वरमें ठीकहै,—जलदी पार हो दुश्मनके घर जाना सूर्यस्वरमें अच्छा. उधारदेना-या-लेना-वगेरा जितनेजलदीकेकामहै सूर्यस्वरमें करने चाहिये.

मुख्यमनास्वर उसकों कहतेहै जो दोनोंस्वर एकसाथ चलने लंग-जब चंद्रबदलकर सूर्य हो-या-सूर्यबदलकर चंद्रहो-तब-पांच सातमिनीट-मुख्यमनास्वर चलताहै. इसवख्त कोईकाम नहीकरना चाहिये. फक्त ध्यानस्मर्ण-और परमात्माकानामही उच्चारन करना अच्छाहै.

चैतमुदीएकमकेरौज सबेरे सूर्योदयके वख्त-चंद्रस्वर चलताहो तो बहोतअच्छाहै पनरांहरौज आनंदसे गुजरेगें, जिसकों तत्वोंकी पहिछानकरना मालूमहोगइहां और देखेकि-चंद्रस्वरमें पृथ्वी-या-जलतत्व चलताहै तो बारांमहिनेका ज्ञान उसकों मालूम होशक्ता है. लेकिन!-गुरुगमसे सीखनाचाहिये. आपहीआप कोईबिद्या नहीं जानीजाती, मंषराशिपर जिसदिन सूर्य आवे उसवख्त अगर जिसका चंद्रस्वर चलताहो तो समझलेवे वर्षभर आनंदरहेगा, अखात्रीजकेरौज सबेरे सूर्योदयहोतेवख्त चंद्रस्वरचलना बहोतअच्छाहै, वर्षतक आनंदरहे,-

चैतमुदीएकमके रौज दिनभरमें जिसका घंटाभरभी चंद्रस्वर न चले उसकों तीनमहिंनक रोगकीतकलीफ उठानीहोगी, चैतमुदीदुजकेरौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी नचले उसकों परदेशमें जानापड़े और वहांभी तकलीफरहे.-चैतमुदीतीजकेरौज

दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकेशरीरमें पित्तज्वरका खेद रहे,—चैतसुदीचोथकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले वो उसीवरसमें मरजाय,—चैतसुदीपंचमीकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसको राज्यकीतरफसे जरीमाना भोगनापड़े,—चैतसुदीछठकेरौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकाभाइ उसीवरसमें मरजाय,—चैतसुदीसप्तमीकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकी स्त्री उसवर्षमें मरजाय,—चैतसुदीअष्टमीकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसको उसवर्षमें लाभ और मुखथोड़ा मिले,—वर्षदिनका भलाबुरा-नतीजा-आठदिनमें देखना चाहो तो देखसक्ते हो, ये आठदिन वर्षदिवसका मानों बीज है, जैसे जन्मग्रह सारीजीदिगीका बीज है—स्वरोदयज्ञानमें उक्त आठदिन बीजरूप है.

शरीरमें—हाड—मांस—नस—चाप—और—रोम—ये पांचपार्थिवतत्त्व याने पृथ्वीके अंशहै. लाला—पूत्र—पसीना—वीर्य—और लोही—ये पांचजलके अंशहै. भूख—प्यास—निद्रा—आलस—और—शरीरकी—कांति ये पांच अग्निकेअंशहै, धावन—वलगन—रोध—संकोच—और—प्रसारण ये पांच वायुके अंशहै, आकाशकाअंश—सबशरीरमें व्याप्तहीहै,—विवेकमार्त्तंडयोगरहस्य—ग्रंथकेआधारसे उक्तबातलिखीगयीहै, स्वरोदयज्ञान जाननेका और उसमुजबबर्त्ताव रखनेका सबब यही हैकि—मन एकाग्रताको पकड़े, जबतक मन एकाग्रनहीहुवा पापका अंत न आयगा, शुद्धध्यानभी न होसकेगा, ध्यानकी निर्मलता बिदून जीवकी मुक्ति होना मुश्किलहै. योग उसीकानामहै जो

मनकी एकाग्रता लावे, भरतचक्री-और-मरुदेवाजी ध्यानकी एकाग्रताहीसे ज्ञानपाकर संसार तीरेहै, योगशास्त्र-जो श्री हेमचंद्र आचार्यका बनायाहुवाहै उसका लेखहैकि-

( अनुष्टुप्वृत्तम्. )-

अहो योगस्य महात्म्यं—प्राज्यं साम्राज्यमुद्वहन्,

अवाप केवलं ज्ञानं—जरतोपि जरताधिपः ?

पूर्वमप्राप्तधर्मापि—परमानंदनंदिता,

योगप्रजावतः प्राप—मरुदेवा परं पदं. ३

जिनकों भोगकेवलतभी योग याद आवे उसकों धन्यवाद समझना चाहिये, स्वरोदयज्ञानी होलेहोले उसपदकों पहुचशक्ताहै जो आत्माकोंहितकारीहै. योगसाधनकरना चाहो तो पहले स्वरोदयज्ञानीकों मिलकर उससे माहितगार बनो चंद्रस्वरमेंपानी और-सूर्यस्वरमें भोजनग्रहण करो. भोजनका न बन शके तो खेर! लेकीन-पानी तो चंद्रस्वरमेंही पीया करो अगर जिनको चतुर्विध आहारका रात्रीकेसमय त्यागहै वह सांजको चोविहारकरतेवलत पुष्कलजल पीना चाहे तो लाजिमहैकि-पहेलेजब चंद्रस्वरचलताहो ज्यादेपीइले कोई हर्ज न होगा-सांजको थोडानाममात्रपीइकर कामचलाशक्ताहै, इसीसेतोकहाकि-स्वरोदयज्ञानीकों शरीरसे मोह उतारना पडेगा, विवेकमार्चंडयोगरहस्यका लेखहैकि-

( अनुष्टुप्वृत्तम्. )

ब्रह्मचारी मिताहारी—योगी योगपरायणः

अब्दादुर्द्धं नवेत्सिद्धो—नात्र कार्या विचारणा. १

आसनानि च यावन्ति—यावत्यो योगजातयः

एतेषामखिलान् ज्ञेदान्—विजानाति जिनेश्वरः ३

आसनेज्यः समस्तेभ्यो—द्वयमेतदुदाहृतं,

एकं सिद्धासनं नाम—द्वितीयं कमलासनं. ३

न गंधं न रसं रूपं—न स्पर्शं न च निश्चनं,

नात्मानं न परं वेत्ति—योगी युक्तसमाधिना. ४

दुग्धे क्षीरं घृते सर्पि—रग्नौ वह्निरिवार्पितः

तन्मयत्वं ब्रजत्येव—योगी लीनः परेपदे. ५

हरेकस्वरमें अदलबदलहोतेहुवे—पृथ्वी—जल—अग्नि—वायु—और आकाश—ये पांचतत्त्व चलते रहते हैं, इनकी पहिछान बहोत मुश्किलसें होतीहै.

(दोहा.) श्रवणअंगुठा मध्यमा—नासापुटपर थाप,

नयन तर्जनीसें ढकी—भ्रूकुटिमें लख आप. १

पद्यासनलगाके दोनोंहाथके दोनोंअंगुठे कानमें लगाना,और दोनोंहाथोंकी मध्यमाअंगुली नाकके दोनोंपडदोंपर टीकाना,दोनों आखोंके पडदे तर्जनी अंगुलीसें ढांककर भ्रूकुटिचक्रमें देखनाकि किसरंगका बिंदु पडता है, ?—अगरपीलेरंगका पडे तो पृथ्वीतत्त्व समझना, सफेदरंगका पडे तो जलतत्त्व—लालरंगका पडे तो अग्नितत्त्व हरेरंगका हो वायुतत्त्व—और—श्यामरंगका हो आकाशतत्त्व जानना. पृथ्वीतत्त्वकावेग (१२) अंगुल—जलका (१६) अंगुल—अग्निका (४) अंगुल—वायुका आठअंगुल—और—आकाशतत्त्वकावेग नाककेभीतर ही चलताहै, बहार नहीं निकलता. पृथ्वीतत्त्व नाकके सामने च-



लताहै. जल-नीचा-अग्नि-उंचा-वायु-देबा-और आकाशतत्व-  
नाककेशाय लगाहुवा चलताहै, पृथ्वीतत्वका आकार चोखूटा  
जलका गोल-अग्निका त्रिकोन-वायुका धजापताकाकेआकार और  
आकाशतत्वका शून्यआकार जानना. पृथ्वीतत्व (५०) पलतक  
चलताहै, जल-(४०) पल-अग्नि (३०) पल-वायु (२०)-और-  
आकाशतत्व (१०) पल चलताहै. पांचौतत्वकी कुल गिनती करे  
तो (१५०) पल हुवे, साठपलकी एकघड़ी-इसहिसाबसे देठसेपल-  
की अढाइघड़ी हुई, अढाइघड़ीका एकघंटा हुवा.

पांचतत्वोंमें पहले वायु-फिर अग्नि-पृथ्वी-जल-और-पांचवा  
आकाशतत्व-चलताहै, पृथ्वी-और-जलतत्व-अच्छे, अग्नि साधा-  
रण-और वायुआकाश-निष्फल होते है, लढाइमुकइमेंकेलिये घ-  
रसेंचले सूर्यस्वरमेंचले, अगर दुश्मनभी सूर्यस्वरलेकर चलाहो  
तो जो पहले चलाहो उसकी फतेह हो. सुखमनास्वरमें भूलकरभी  
नही चलना. नुकसान होगा, स्वरोदयज्ञानी अगर शुभाशुभप्रश्नका  
उत्तरदेनाचाहै तो देशत्ताहै, सामने-बायीतर्फ-या-उंचे-रहकर कोई  
प्रश्नकरे उसवस्तुतः स्वरोदय ज्ञानीका अगर चंद्रस्वर चलता हो-और  
पृथ्वीके प्रश्नका अक्षर समहो-कइदेवेकि-फतेहहोगी. पीछाडी-जीम  
ने-और-नीचे-रहकर कोईप्रश्नकरे उसवस्तुतः स्वरोदयज्ञानीका यदि  
सूर्यस्वर चलता हो और-पृथ्वीके प्रश्नका अक्षर विषम हो तो-कइदेवे  
जरूरफतेह होगी. अक्षरोंके समविषमका विचार नभी कियाजाय तो  
भी कुछहर्ज नही, फतेहकहना, -पूर्णदिशामें-रहकर-कोइमुख-दो-  
नोंकेनाम एक साथलेकर प्रश्नकरे उसमें जिसका नाम पहले लिखा  
हो उसकी फतेह कहना.

(सोई) — इसशब्दका अर्थ यह है कि—बड़ी धात्वा में ई- जो अजर अमर है—इडा—पिंगला—और—सुख्मनाका जब पुरा साधन होजाय—और तत्त्वोंकी पहचान ठीकठीकतौरसें मालूम देने लगे,—फिर आगे चलना चाहिये. शरीरकी बड़ीबड़ी नाडीयें कितनी और किसतर्फ बहती है?—यहभी जानने योग्यहै, नाभिसें ( १० ) नाडी—उर्द्धगामिनी—(१०)—अधोगामिनी—और—चार चक्र गामिनी—सबमीलकर (२४) नाडी बड़ी है, इनमें दशनाडी प्रवाही संज्ञाकीकहीगयी जिनके नाम (१) इडा—(२) पिंगला—(३) सुख्मना—(४) गंधारी—(५) हस्तजीवहा—(६) पृषा—(७)—यशस्विनी—(८) अलंबुखा—(९) कुहू—और—(१०) शंखनी—है, इस चक्रकोंमी अच्छी तरह पहचानमें लावे. ज्युंज्युं इसका वर्ताव बढ़ाते जाओगे आनंदका अनुभव मिलता जायगा. जिनको ज्यादा माहितमारहोनाहो बड़े ग्रंथोंका अवलोकन कर. यहां नाममात्र बर्नन लिखानयाहै.

## अष्टांगनिमित्त.

अष्टांगनिमित्त चौदहपूर्वकेज्ञान सें अलगनही. लेकिन ! पूर्वोंकाज्ञान अब नही रहा. एकपूर्वकेपाठीभो अबनही रहे. तथापि !—समयानुसार अबभीबहोतकुच्छहै, जैनमत सोताहुवाभी सिंहहै, निमित्तशास्त्र इसवरुत कइ देखनेमें आये—परंतु ओ—अंगविद्याशास्त्र आठहजारश्लोककेअंदाजकाहै इसके आगे दूसरे निमित्तशास्त्र—सब-तरहसें कमजोरहै, अंगविद्याशास्त्र इसवरुत—मनहूअधमें—चांच-का-

सातसें ज्यादा नही रहे, सबब कि—कठिनशास्त्रके जब पढ़नेहीवाले थोड़ेरहेतो शास्त्र ज्यादा कहाँसे आशकतेहै? अंगविद्याशास्त्र हमारेपास मौजूदहै, प्राकृतपाठ इसकाहरेकके समझमें नही आशकता. एसीएसी विद्याये और आम्नाय इसमेंलिखीहै जो बहोतथोड़ोंके जाननेमेंहोगी. हमको इसका सोलहवाहिस्साभी नहीआता, न उसका आधावर्न-नभी हम खोलशकते है, जितना खोलशकते है उसका पुराबयान लिखनाभी—यहां मुनासिब नही समझते. जितना मुनासिब समझा लिखेहींगे, लेकीन !—समयबडाविचित्र है, मनुष्योंके दिल कमजोर होतेजातेहै, पुन्य पतले पड़तेहै अधर्मकी वृद्धि और धर्मश्रद्धाकी हानि देखकर कोइबात इसवख्त न लिखनाभी फायदेमंद समझते है. सुबेकेपात्र बिदून जवाहिरात दूसरेमें नही जडी जाती.

निमित्त कइतरहकेहै लेकीन !—आठ उनमें बडे है, इसलिये इनका नाम अष्टांगनिमित्तभी बोलदो कोइहर्ज नही. जैसे—अंगका फुरकना-स्वप्नदेखना-स्वरविज्ञान-याने मनुष्य-पशु-पक्षीकी बोलीसें भविष्यतज्ञानका भेद जानना. जमीनके ढीलनेसें थलाबुरा नतीजा सोचना. उत्पात-अंतरिक्ष-व्यंजन-और-लक्षणसें जोजो भेद जाननेके है आगेचलकर सबका खुलासा लिखेंगे.

## [१]—[ अंगफुरकन निमित्त ]

(१)—जीमनीतर्फका मस्तकफुरके राजासें इनाम मिले, फिकर दूरहो और दोलत जरूरमिले, बायीतर्फ फुरकेतो फायदाहो लेकीन थोडा. (२)मस्तकका पीछलाभाग फुरकेतो परदेशमें दोलत मिले,

(३)—जीमनाकान फुरके अपनीतारीफ सुनाई दे, बामा फुरकेतो बुराह जाहिर हो,

(४)-कपाल फुरकेतो राजाकाबुलानाहो-या-हुकमहोदामिले.

(५)-जीमनागाल फुरके सुंदरस्त्रीसैं मिलाप हो. वामा फुरकेतो लडाइ हो.

(६)-जीमनी धू फुरके खुशीपैदाहो, वामी फुरके तो दोस्तोंसैं लडाइ हो.

(७)-दोनों भूवोंके बीच फुरकेतो प्यारेका मिलाप हो.

(८)-जीमनी आंख उपरसैं फुरके इरादा पूर्णहो, वामी आंख-उपर-या-नीचेकहींसैं फुरके फिकर पैदा हो.

(९)-उपरका होठ फुरके लडाइ हो.

(१०)-नीचेका होठ फुरकेतो सुंदरस्त्रीसैं मिलाप हो.

(११)-डाढी फुरके मुकद्दमा हारजाय,

(१२)-जीमनी गर्दन फुरके दोलतमिले. वामी फुरकेतो रंजहो.

(१३)-जीमनी छाती फुरके दुश्मनसैं फतेहपावे, वामी फुरकेतो फिकर पैदाहो.

(१४)-जीमनाखभा फुरके भाइका मिलापहो, वामा फुरकेतो फिकर पैदा हो.

(१५)-जीमनाहाथ फुरके मुकद्दमाजीतजाय, वामा फुरकेतो तकलीफ पैदा हो.

(१६)-जीमना पडखा फुरके खुशी पैदाहो वामा फुरकेतो रंजहो.

(१७)-पेट फुरकेतो फिकर दूरहो.

(१८)-नाभिफुरकेतो अपने-होदेसैं-गिराया जाय. .

(१९)-गुदा फुरकेतो दुश्मनकी हार हो.

(२०)-जीमनेहाथकी हथेली फुरके दोलत मिले. वामेहाथकी

फुरकेतो नुकसान हो.

(२१)-पुरुषविन्दु फुरकेतो स्त्रीसें मिलापहो.

(२२)-स्त्रीका जीमनास्तन फुरके भर्त्तारसें वियोग हो. बाया फुरकेतो मिलाप हो.

जो जो फल पुरुषकेलिये जिमने अंगका कहा वही स्त्रीकेलिये बायें अंगका जानना. और जो पुरुषकेलिये बायें अंगका कहावही स्त्रीकेलिये जीमने अंगका जानना, निदान !-स्त्रीका बाया अंगफुरकना अच्छा. पुरुषका जीमना अच्छा.

## (२)--[ दूसरास्वप्ननिमित्त ]

१-अनुभूतकियीहुइ चीजका स्वप्नआताहै. लेकिन !-वह झूठा समझना चाहिये. कुछ फल न देगा.

२-सुनीहुइबातका स्वप्नआताहै. वोभी झूठा.

३-देखीहुइ चीजका स्वप्नआताहै वोभी झूठा.

४-सोचफिकरसेंभी आताहै वोभी झूठा.

५-प्रकृतिकेविकारसे आताहै, जैसे पित्तप्रकृतिवालामनुष्य-पानी-फूल-अनाज-भोजन-जबाहिरात-मुँगे-और-छाछपीलेरंगकी वस्तु ज्यादादेखताहै सारीरातसेंरुडे बागवनीचे और फुहारेकीशैर करतारहताहै. लेकिन !-यहभीझूठासमझनाचाहिये. सबबकि-प्रकृतिकेविकारसें इसको पैदाश हुइ, इसलिये फायदा-या-नुकसान कुछ-न-होगा.

६-बादीकीप्रकृतिवाला मनुष्य स्वप्नमें-पहाडपरचढ़जाताहै-  
 वृक्षोंकेशिखरपर जाबेठताहै-मकानके ठीकउपरजाकर सरकजाताहै.  
 कुदना-फांदना-सवारीपरचढ़करहवाखोरीकों जाना-आकाशमें उ-  
 डना-बगेरा बनाव उसेस्वप्नमें ज्यादा दिखलाइदेतेहैं, लेकिन!-यहभी  
 झूठा समझना चाहिये. सबबकि-प्रकृतिकेविकारसें इसकी पैदाश  
 हुई इसलियेइसकाफल न होगा.

७-स्वप्न-वो-सच्चाहै जो धर्म और कर्मके प्रभावसें आयाहो-  
 चाहे भलाहो-या-बुराहो-इसकाफल जरूर होगा.

८-रात्रीकेपहेलेपहरमें देखाहुवा स्वप्न (१२) महिनेमें फलदे-  
 ताहै. दूसरेपहरमेंदेखाहुवा (९) महिनेमें-तीसरेपहरकादेखाहुवा(६)  
 और चौथेपहरकादेखा(३) महिनेमें फल देताहै. दोघडीरातरहते-  
 यासबरेमूर्योदयहोतेवस्तुका देखाहुवा-स्वप्न जलदीफलदेताहै.

९-दिनमेंसोतेपडेहै और स्वप्नआया-वो झूठाहै, इसका फल  
 न होगा.

१०-अच्छा स्वप्नदेखा-और-नींदखुलगइ तो फिरसोनानही:  
 बर्मध्यानकरतेहुवे जागतेरहना चाहिये-याते फिरकोइ खोटा स्वप्न  
 आकर पहेलेका फल बीगाड न डाले.

११-बुरास्वप्नदेखकर जागगये औररातवाकी रहीहै तो सो-  
 जानाठीकहै. लेकिन ! अपशोष इसबातकाहैकि-भलेबुरेकी पहेछा-  
 नभीतो सबलोग नहीं जानते.

१२-पहेलेअच्छास्वप्नदेखा-और-पीछें-बुरादेखा तो अच्छेका  
 फल माराजायगा, बुरा फलेगा, सबबकी-वो-पीछें आया है.

१३-पहेले बुरादेखा-और-पीछेसें अच्छादेखा-तो-पिछलाही

फलेगा-याने अच्छा फलहोगा. क्योंकि पीछला पहेलेका फल उडादेता है.

१४-अच्छा-या-बुरा-जैसास्वप्न-आया जिनप्रतिमाकेसामने जाकर बयानकर दो-रस्तेमें किसीने कुच्छदन थोले देखभुकेसामने खाली हाथजाना मनाहै. फल-यानेवैद्य. प्रतिमार्जकेसामनेधरके स्वप्नका बयानकरना चाहिये. बाद निर्ग्रथमुनि शहरमें मौजूद होंतो उनके सामनेभी अदपकेगाथजाकर बयानकरना. और जो कुच्छ-वे-फरमावे उसपर गौर करना. पहलेकालमें पूरगत आम्नायकेजानकार निमित्तिये हाजरथे, लेकिन अब वे नहीं रहें. भित्थ्यावादीयोंके सामने जाकर दरयाफ्तकरनालाभकंवदले हानि उठानाहै.

१५-स्वप्नमें जो हाथीपरचढ़कर समुंदरमें प्रवेशकरे वो थोड़े रौजमें राजा बने.

१६-मफेदहाथीपर सवारहोकर जो नदीकिनारे चावल्लोका भोजन जीमें बांधो थोड़ेदिनोंमें राजाहोजाय.

१७-स्वप्नमें समुंदरको हाथोंसेतीरकर पारहोजाय वो थोड़े दिनोंमें राज्य पदवी पावे.

१८-तीर्थकरकों-निर्ग्रथमुनिकों-और-तीर्थकीजगहकों-स्वप्नमें देखना निहायत उमदाहै, इरादापूर्ण होगा. तीसरीकलमें लिख चुकेहैकि-देखीहुइ चीजका स्वप्न आताहै वो झूठाहोताहै, सोचोकि किसीने कोई तीर्थको पहलेंदेखाहै और फिर उसीकास्वप्न आया, बतलाओ! उसे क्याफलहोगा? ( इसका उत्तर. )-यद्यपि-यहबात सचहैकि-देखीहुइबातका स्वप्नआना दृयाहोताहै लेकिन!-तीर्थकर की-मुनिकी और-तीर्थभूमिकीचिंतनाबनारहनाभी तो अच्छाहै.

फिर उसका स्वप्नमें भी दर्शावहोना क्यों न अच्छा हो, जरूर फायदेमंद होगा.

१९-हाथी-बैल-सिंह-लक्ष्मीदेवी-फूलोंकीमाला-चंद्रमा-सूर्य  
ध्वज-कलश-पद्ममरोवर-समुंद्र-देवविमान-जवाहिरातकाढेर-और-निर्धूमअग्नि-ये चौदहस्वप्न तीर्थंकरकीमाता जब तीर्थंकरकाजीव  
गर्भमें आवे देखतीहैं. तीर्थंकर उनको कहतेहैं जो साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-इनचारोंतीर्थकों स्थापनकर, जैसे रिषभदेव-अजि  
तनाथ-वगेराचौदहसहोगयं. उनकोमाताने यहचौदह एक साथ एक  
हीरात्रीमें देखेथे. बड़ेभाग्यवाला जीव गर्भमें आवे उसकी माता  
उत्तमवस्तुस्वप्नमेंदेखे उसमें आश्चर्यही क्या ?-भरतचक्रीवगेरा १२  
चक्रवर्त्ती हुवे उनकीमातानेभी यही ( १४ ) चौदहस्वप्नदेखेथे, ले  
कीन !-साफनही सबवकि-चक्रवर्त्तिका तक्रटीर तीर्थंकरकी बरा  
बरी नहींकरसकता, वाग्देवराजा जो आधेभारतखंडका मालिक  
होताहै जवगर्भमें उत्पन्नहो उसकीमाता इनचौदहमेंसेसातस्वप्न दे  
खकर जागतीहै. जैसे लक्ष्मणजी-और-कृश्रजी-आधेभारतवर्षके  
अधिकारीहुवे-वैभे सातवाग्देवराजे इनसेपहलेभी होचूकेथे, कुछ  
नववाग्देव हुवे हैं. कृश्रजीको जैनसूत्रमें एकप्रतापीराजाहुवा लि-  
खाहै, वाइसवैतीर्थंकर नेमनाथजीके चाचाकेबेटे भाइ थे. जैनसूत्र  
मुआफिक कृश्रजी-जैनप्रणीश्रावक हुवेहै, वेदधर्मकेकहनेमुजब-कृ-  
श्रजी-इश्वरपरमात्मा-नवज्ञ-सर्वव्यापी हुवे.-बलदेवकीमाता बलदे  
वगर्भमें आवे उमवग्न इनमेंसे चारस्वप्न देखे, रामचंद्रजी-लक्ष्म-  
णजीकेबेटेभाइ थे जैनसूत्रोंकेकहनेमुजब-रामचंद्रजीको बलदेवकी  
पदवीथी-कृश्रजीकेबेटेभाइ बलभद्रजीहुवे इनकोभी बलदेवपदवी-



थी. रावण-और-जरासिंध-प्रतिवासुदेव थे. नववासुदेव-नवप्रति-  
वासुदेव-और नवबलदेव-हरककालचक्रके-आधेहिस्सेमेंहोतेहैं, मं-  
दलिकराजा-गर्भमेंआवे उसकीमाता चौदहमेंसेएकस्वप्न देखे.

२०-स्वप्नमेंजिसकों वीणा इनाममें मिले उसको सुंदरस्त्रीसें  
मुलाकात होगी.

२१-धजापताका-या-छडी-जिसकोंइनाममें मिले उसकों थो-  
ड़ेरौजमें दोलत मिलेगी.

२२-स्वप्नमेंजिसकों लालरंगकापैशाब-और-लालहीरंगका-  
दस्तलगे-उसका दिवाळा निकलजाय.

२३-मीटीके हाथीपरसवार होकर जो समुंदरमें घुमे और  
हुवे नही वो थोड़े दिनोमें राजा बने.

२४-स्वप्नमेंजिसकीगोंद-फूलोंसेंभरजाय उसे दोलत मिलेगी.

२५-कोइपुरुषस्वप्नमें-स्त्रीवनजाय-और-स्त्री-अगर पुरुषवन  
जाय-उनको हरमुरतसेंलाभहोगा-अच्छेदिनभोगेगे-और-परवा-  
रकी वृद्धि होगी.

२६-जिसके जीमणेहाथकों-सफेदरंगका सांपकाटजाय-उसे  
थोड़ेदिनमें दोलत मिले.

२७-स्वप्नमेंजिसके-हाथ-पांव-मुंह-कान-या-नाक-लंबे बढ-  
जाय उसकी-दुनियामेंतारीफबढेगी.

२८-स्वप्नमेंजिसकेहाथी-घोडा-रथ-आसन-गाड़ी-और-वस्त्र  
चौर लेजाय-उसकामानभंग होगा. इज्जतमें बटालगोगा.

२९-स्वप्नमें सिंह-हाथी-घाडे-या-नाहर-जुतेहुवेरथपर सवार  
होकर मुसाफरीकरे वो थोड़ेरौजमें राजा बने.

३०-स्वप्नमें जिसपुरुषका लिंग-और-जिसस्त्रीकी-योनि-छेद नहोजाय-उनको थोड़ेरौजमें विषयजन्य सुख मीले.

३१-गांवनगर-पहाड-या-मकान-अग्निसे जलरहाहै और उसके शिखरपर तुम सहीसलामत खड़े हो तो थोड़ेदिनोंमें खुशी पैदा करोगे.

३२-स्वप्नमेंजिसके नख-और-केश-लंबे-बढ़जाय उसे कइ तरहकेफायदे होंगे.

३३-स्वप्नमेंजिसका-मुन्ना-चांदी-जवाहिरात-या-हथियार-चौर आनकर चोरीकर जाय-उसकी इज्जतमें धब्बालगे.

३४-स्वप्नमें-नदी-मरोवर-कुंड-या-समुंदर-पानीसें भरेहुवे देखे उसकोगहेराधनमीले, पांचमीकलममें लिखचूकेहै कि-पित्तप्रकृतिवाला जलकेनिवाण बहोन देखताहै. अगर पित्तप्रकृतिके विकारसेदेखाहोतो फल न होगा.

३५-स्वप्नमें उल्टीहोना बुरेदिनोंकी निशानी है.

३६-स्वप्नमें गाना गावे उसे रौना पड़े.

३७ स्वप्नमें नाटककरे वो बुरेदिन भोगे.

३८-स्वप्नमें गहनेआभूषण-कपड़ा-मकान-सवारी-या-आशन-जिसको इनाममें मीले-उसकाइरादा पूर्णहो.

३९-स्वप्नमें जिसके सफेदमलमूत्र आवे उसकी इज्जत बढ़े.

४०-सजेहुवेमकान-और-शिगारे हाथीघोड़ेदेखना अच्छेदिनोंकी निशानी है.

४१-स्वप्नमें-सर्प-या-बिलू-देखे और डरेनही उसे धन मीले.

४२-कालेकपड़ेपहेनीहुइ-कालेरंगकीऔरत-स्वप्नमें जिसको

दख्खनदिशातरफ घसीटलेजाय उसका मरना नजीक आया जानना.

४३-जिसके माथेमें खजूरका पेंड उगे वो थोड़े रौजमें मरजाय.

४४-कालेकपड़े पहनकर कालेघांड़ेपरसवारहोके-जो-शख्श दख्खनदिशाकों जाय उसे बुरेदिन भोगने होंगें.

४५-स्वप्नमें-शाल्मली-या-कैलेकेवृक्षपरचढ़जाय उसे दो-लतमीले.

४६-स्वप्नमें कोईशख्श-गरमगरमपानी-पीइजाय-उसकों ब-दइजमीरोगपैदाहोगा.

४७-स्वप्नमेंकालेरंगकी जितनीचीजदेखीजाय-बुरीहै, लेकी-न!-हाथी-घोड़ा-गौ-और-देवीदेवता-कालेरंगकेदेखनेभी-बुरेनही.

४८-सफेदरंगकीजितनीचीजदेखीजाय-अच्छीहै, लेकीन!-क-पास-और-नमक-देखनाअच्छा नहीं.

४९-स्वप्नमेंजिसकी-जवान हथियारसें काटदियीजाय यद्य-पि-जाहिरातमें बुरीबात है, लेकीन!-इसकाफल अच्छाहोगा.

५०-सूर्यचंद्रकों जो शख्श हाथोंसें स्पर्श करे उसे हुकम होदा मिले.

५१-स्वप्नमें सूअर-भैंसे-गधे-या-उंटजुतेहुवे रथपरसवारहोके जो-दख्खन दिशाकों जाय-वो-जलदी मरे.

५२-स्वप्नमें मशानकेलकड़ेपर-सूकेवृक्ष-या-धनुष पर जो शख्श-चढ़बैठे उसकामरना नजीक आया.

५३-स्वप्नमें जिसकीस्त्रीकों चौर लेजाय उसेजाननाचाहिये किसीतरहकानुकशान होगा.

५४-स्वप्नमेंजिसका-पलंग-या-जूता चोराया जाय-उसको-

औरत जलदो मरे.

५५-स्वप्नमें जो पुरुष अपने घरके दरवाजेकी अर्गला-दूटीहुइ देखे-उसकी स्त्री जलदी मरे.

५६-स्वप्नमें-बादाय-पीस्तेबगेरामेवा-जिसको-इनाममें मीले उसे खुशी पैदा हो, बीमारीसे आराम पावे.

५७-स्वप्नमेंजिसको-अंगुठी-मीले उसको स्त्रीसे फायदा हो.

५८-स्वप्नमें-अंगुठी-वेचदीयीजाय-उसको स्त्रीसे बिगाडहोजाय.

५९-स्वप्नमें सेलडीकासांठा-या-रस-देखना अच्छा है खुशीपैदा होगी.

६०-स्वप्नमेंकोइ-आकाशमें-उडे उसको बडाहोदा मीले.

६१-सितारे चमकतेदिखाइदे-तो-राजामहेरबान हो, इज्जतबढे.

६२-स्वप्नमें रोवे तो खुशीपैदा हो. हसे तो रौना पडे.

६३-अगरकोइपुरुष-स्वप्नमें-स्त्रीका-आलिंगनकियादेखे-उसको स्त्रीसे फायदा हो, स्त्री-अगर किसीपुरुषका-आलिंगनकिया देखे-तो-उसको पुरुषसे-फायदा हो.

६४-स्वप्नमें-मोर-देखेतो राजासे मुलाकातहो.

६५-स्वप्नमें-जिसको-मिश्रीकाढेर दिखलाइ देतो उसे खुश खबरीके-समाचार-मीलेंगे.

६६-स्वप्नमें कुत्तेका भोंकना देखे तो रंज पैदा हो.

६७-स्वप्नमें घोडेसवार होकरचले उसका इरादा पूर्णहो.

६८-स्वप्नमें गेंदसे खेलना देखे उसे थोडेदिनमें दोलतमीले.

६९-अगरकोइपुरुष-स्वप्नमें-किसीस्त्रीका-मुत्तचुंबनकिया देखे उसको हरतरहसे फायदाहो.

७०-स्वप्नमें-मोतियोंकेधरे थाल-दूसरोंको बांटदेवे वो दूसरोंको विद्या पढायगा-या-उपदेशदेकर धर्मकीतेजी बायगहा.

७१-स्वप्नमें नाचरंग देखे तो खुशीपैदाहो.

७२-स्वप्नमें अपनहाथोंसे-समुंदरको तीरगयादेखेतो उसी भवमें उसकोमोक्षहोजाय-लेकीन !-इसकालमें मोक्षहोना रहानही. इसलियेदेवलोक जाना कहो.

७३-स्वप्नमें अपनेआपको मरगयादेखेतो बुरा है तकलीफ होगी.

७४-स्वप्नमें-अपने आपकोगंदगीसें भरगयादेखे उसे फायदाहो.

७५-स्वप्नमें-छत्र मीले तो राज्यतरफसें फायदाहो.

७६-बागबगीचेकी हरियालीदेखना अच्छा-खुशीपैदा होगी.

७७-स्वप्नमेंजिसके जूत्तेगमजायउसेतकलीफकेदिन भोगनेपडेगें.

७८-स्वप्नमें-जिसके-दांत गिरपडे उसे रंज पैदाहो.

७९-स्वप्नमेंजिसके-केशखिर जाय उसे तकलीफहो.

८०-स्वप्नमेंजिसश्शस्त्रकी हथेलीपर केश उगे उसे कर्ज केना पडे.

८१-स्वप्नमें-महेल-कोटकीला-या-उचानकीजगह-चढना देखे उसकीइज्जत बडे, लेकीन !-छठीकलममें लिखचूकेहैकि-बादी-कीप्रकृतिवाला-ऐसेस्वप्नहमेशादेखताहै उसका उसे फल न होमा.

८२-स्वप्नमें-रींछजानवरका देखना नुकसानकारी है.

८३-स्वप्नमें-अपनेको पकडनेकेलिये आदमी चलेआते दिखलाइदेतो-राजकाजरीमाना भोगना पडे.

८४-स्वप्नमें-गधेपरसवार देखे उसको रंजपैदाहो.

८५-स्वप्नमें-अपनेपरकिसीने छाछ छीटकदिवी देखे उसको

बुरेदिन भोगने होंगे.

८६-सफेदकपड़ेवाली-स्वप्नमेंदिखाइदे-तो-अच्छी है, कालेकपड़ेवाली बुरी. लेकिन !-हितकारिणी-चाहे-जिसरंगके कपड़ेवालीहो-बुरी नहीं.

८७-स्वप्नमें-उंट-या-बकरे पर-सवारहुवादेखे-उसेनुकशानहो.

८८-बीमारशस्त्र-चंद्रसूर्यका-स्वप्नदेखेजल्दी आरामपावे.

८९-स्वप्नमें उत्सव देखेतो खुशी पैदाहो.

९०-स्वप्नमें-दूध-दही-या-घी-दिखाइदे अच्छा है इज्जत बढ़ेगी. दूधकेशायधमीलाकर-पीनाभी-अच्छेदिनोंकी निशानीहै.

९१-स्वप्नमें-सुंदरलडका-दिखाइदे-तो-अच्छाहै फायदाहोगा.

९२-स्वप्नमें-उल्लुका देखना अच्छा नहीं.

९३-अपनेपर वीजली गिरीदेखे उसे केंद हो.

९४-स्वप्नमें-अंधीआइ-दिखाइदे-उसकों-टंटेगडमें फ-सनापड़े.

९५-स्वप्नमें-जिसके दांत सोनेकेहोजाय उसकों एश आराम मिले.

९६-स्वप्नमें-गेहू-यव-और-सफेद सरसोंका देखनाफायदेमंदहै.

९७-स्वप्नमें-जिसकेपेटपर वृक्ष उगे उसे रोगपैदाहो.

९८-स्वप्नमें-जिसकों-नागरवेलकेपान-कपूर-चंदन-तगर या-सफेदफूल-दिखाइदे-या-एसामालूमपड़ेकि-ये-चीजें मेरेघर पैदाहुइ-तो-उसे-जाननाचाहिये फायदा होगा.

९९-स्वप्नमें-हाडके-और-राख-देखना बुरेदिनोंकी निशानीहै.

१००-स्वप्नमें जलसे भरे हुए सरोवरमें बैठकर जो शरुश खीर-का भोजनजीमें वो थोड़े रौजमें राजा बने.

१०१-स्वप्नमें-जो शरुश-अपने आंतोंसे-गांव-या-नगरकों-छपेट डाले वोभी थोड़े रौजमें राजा बने.

१०२-स्वप्नमें अपनेकों कोइ केदमें डाले-या-रसोंसे बंधन बांधे-तो-अच्छा है, फायदा होगा.

१०३-स्वप्नमें सफेद कपड़े वाली-स्त्री-जिस पुरुषको-आलिंगन करे-या-लेंप लगावे उसे दोलत मिले.

१०४-स्वप्नमें कोइ शरुश-ऐसा देखे कि-मैंने-तेल-या-घीसे माछीस करवाई-उसे बुरे दिन भोगने होंगे.

१०५-स्वप्नमें-कनेर-या-केशुके वृक्षपर चढ़ना टंटे फिसादकी जड़ है.

१०६-स्वप्नमें-वीणा-चवर-और-आरीसा देखेतो अच्छा है, हुकम होदा मिले.

१०७-स्वप्नमें-सींही-भेंस-और-गौके आंचलसे दूध पीयेतो हकुमत मिले.

१०८-स्वप्नमें-जो-शरुश-पहाड़ोंको उखेड़ डाले-वो-थोड़े दिनोंमें राजा बने.

१०९-स्वप्नमें-उंदरा-बिलाव-गोह-और-नोलिया देखना अच्छा नहीं. तकलीफ होगी.

११०-स्वप्नमें-सुन्नाचांदी के थालमें-खीरका भोजनजीमें उसे खुशी पैदा हो.

१११-स्वप्नमें-जो शरुश अपने शीरसे लोहीकी धारा गिरती देखे

बो-थोदेरौजमें राजा बने.

११२-स्वप्नमें-दिया देखेतो इरादा पूर्णहो.

११३-स्वप्नमें-आमकेवृक्षको-फल-लगेदेखेउसको हरतरहसे फायदाहो.

११४-स्वप्नमें-मखीयां-या-डांसमच्छर-जिसको काटे-या-चौफेरघेरले-बो-थोदेरौजमें साधु बनेगा.

११५-स्वप्नमें-पकाहुवाफल-छत्र-कन्या-और-धजा-देखेतो इरादापूर्ण हो.

११६-स्वप्नमें-जहाजपरचढ़े-उसे दोलतमीले.

११७-(१९) नंबरकी कलममें लिखचुकेहैकि-बिनाधुंएकी अग्निदेखना अच्छा है, लेकिन! यहां इतना तफावत है कि-धुंए सहित अग्नि-या-एकीला धुंआ देखना अच्छा नहीं.

११८-स्वप्नमें-हजारपांखडीके कमलपरबैठकर-जोशस्त्र-स्त्री रकाभोजन जीमे वो थोडेदिनोंमें राजा बने.

११९-स्वप्नमें-लंबेलंबेशींगवालेजानवर जिसको भगायेफिरे-या-मूअर औरवानर-जिसको डरावे उसे राज्यकीतरफसे भयहोगा.

१२०-स्वप्नमें-कालेपीलेरंगका आदमी डसावनीमुरतबनाके-जिसको डरावे उसका मरना नेडे आया.

१२१-स्वप्नमें-यांसोपर अंजन लगावे उसे रोग पैदाहो.

१२२-स्वप्नमें-जो शस्त्र-मस्तकतक कीचडमें डूबजाय वो थोडे रौजमें मरजाय.

१२३-स्वप्नमें-खंजकदारगांवनगर दिसताइसे उसे खुशी पैदा हो.



१२४-स्वप्नमें-वानर-और-गींदड-दिखलाइदे बुराहै. फि-  
साद बढेगा.

१२५-स्वप्नमें-दावानल-लडाइ-बरसात-या-गर्जना-देखेतो  
राज्यकीतरफसें तकलीफ पैदा हो. जिसको-पित्तप्रकृतिकेविकारसें  
बरसात-गर्जना-दिखलाइदियी हो उसे इसका फल न होगा.

१२६-स्वप्नमें-तारेंखीरना-उल्कापात-या-जमीनकंपनी-दि-  
खलाइ दे-उसे क्लेश पैदा होगा.

१२७-स्वप्नमें-केलेके वृक्षपरचढना दिखाइदे तो हुकम-  
होदामीले.

१२८-स्वप्नमें-जिनप्रतिमाकोंहसती-रोती-या-खंडित होगइ  
दिखाइदे उसकों तकलीफ पैदाहो.

१२९-स्वप्नमें-हराघास-चावल-और-तांबूल-दिखाइदे उसे  
दोलत मीले.

१३०-स्वप्नमें-खीरनीवृक्षपरचढजाय उसे हरतरहसें फायदाहो.

१३१-स्वप्नमें वीणालेकर जहाजपर चढे उसे सुंदर स्त्रीसें  
मिलाप हो.

१३२-स्वप्नमें-वीर्यपात-होना अच्छानही. नुकशान होगा.

मलमूत्रकी बाधापीडासेंभी-कंड स्वप्नजाल दिखाइदेते है.  
लेकीन ! वह सच्चा नही समझना. सच्चा वही है जो ( ७ ) मी  
कलममें लिखचूके है. अगर कोइतर्क करे कि-इनमेंसे पांचदशस्वप्न  
हमनेभी कइदफे देखे लेकीन ! फल नहीं मिला, इसका समाधान  
यहीहै कि-जिसकाफल मिले वह सच्चा-और जिसका न मिले-  
प्रकृतिकेविकारवगेरासें आया जानना.

१३६-स्वप्नमें-अपने दिलपसंदगीकी चीज दिखाइदेना अच्छा है, फायदा होगा. नापसंद वस्तु दिखाइदेना अच्छानहीं.

१३७-स्वप्नमें-अपनीआंखकों जोजोचीज अच्छीलगतीहो-उन का दिखाइदेना किसीसुरतसें बुरानहीं, बुरीलगतीहो-उसका दिखाइदेना अलबते!-बुरा है.

१३८-स्वप्नमें-अपनेकानकों-नाककों-जबानकों-और-शरीरकों-सुहातीचीजका-इस्तिमाल करना दिखाइदे-तो-अच्छाहै, फायदा होगा.

## (३)-[ स्वरविज्ञान ]-



१-षडज-रिषभ-गांधार-मध्यम-पंचम-धैवत-और-निषाद-इनसातस्वरोंसें स्वरविज्ञाननिमित्त देखाजाताहै, जितनेमनुष्य-और-पशुपक्षीहै इनसातस्वरसें अलग नहीं बोलते. किसीकीअवाज षडजमें-किसीकी रिषभमें-और-किसीकी गंधारवगेरास्वरमें होतीहै.

२-मौरकी अवाज षडजस्वरमें निकसतीहै मुरधेकी-रिषभमें,-हंसकी गंधारमें,-गडरियाकी मध्यगमें,-कोकिलाकी पंचममें,-क्रौंच पंखीकी धैवतमें,-और-हाथीकी अवाज निषादस्वरमें निकसतीहै.

३-जिसमनुष्यकी स्वाभाविक अवाज षडजस्वरमें निकसती हो-उसकेपास दोलतझलाझल रहे, स्त्री उसे बहोत चाहे, और खानपानसें खुश रहे, अगर सवालकियाजायकि-मौरकीअवाजभी षडजस्वरमें कहीगयीहै, क्या!-उसेभी-यहफल होनाचाहिये!-(इस

का-जवाप,)-यह बात ठीक नहीं. सबब कि-मनुष्य और जानवर के नर्सीबेका बड़ा फर्क होता है, जो बात मनुष्यके लिये कही गयी जानवरोंके लिये नहीं समझना चाहिये.

४-जिस मनुष्यकी स्वाभाविक अवाज रिषभस्वरमें निकसती हो-उसे हुकमहोदा मीले, उसका खजाना तर रहे, इतरफुल्ले-गेहनेगांठे-और-उमदाकपडे उसकों पहनेके लिये मीले. स्त्री उसके ताबेमें रहे. और फुलोंकी शय्यामें शयन करनेवाला हो.

५-जिसमनुष्यकी स्वाभाविक अवाज गंधारस्वरमें निकसती हो-वो-गायनकलामें हुशियार-या-कवीश्वर हो-धर्मशास्त्रकामाहित गार-और-दूसरोकों तालीमदेनेवाला होगा.

६-जिसको स्वाभाविक अवाज मध्यमस्वरमें निकसती हो-वो बड़ा खरचीला खुशमिजाज-और-एशआरामभोगनेवाला होगा-आप-हिंममतवान् और दूसरोकों हिंममत देता रहेगा.

७-जिसकी स्वाभाविक अवाज पंचम स्वरमें निकसती हो-उसे राजाधिराजपदवी मीले, सारीदुनिया बदलजाय डरे नहीं, बेपरवा ह एसा कि-किसीसे दवे नहीं, फोजका मालिक होकर इनाममें ज हागिरी पावे.

८-जिसकी स्वाभाविक अवाज धैवतस्वरमें निकसती हो-वो-दूसरोकों लडादे और आप अलगनिकलजाय-दगलबाज पूरा-और-जिसबातकों पकड ले उसकों छोडे नहीं, कुस्तीलडबेमें खे लारी-उसका जोर चलेतो दूसरेकों जानसे मारडाले, मदिराके न-शेमें मतवाला रहे. धर्मकी बात उसे सुहावे नहीं. और दाव लगेतो चौरीकरतेभी चूके नहीं.

९-जिसकी स्वाभाविकअवाज निषादस्वरमें मिकसतीहै-वो-हमेशां टंटेझगडोंहीसें राजी रहे, हिंसाके काममें कसाईसेभी बढकर पापीहो नोकरी करके पेटभरे, और-मजूरीकरके बडी तकलीफ उठावे. सातोस्वरोंका बयान, ठाणांग-और-अनुयोगद्वारसूत्रमें-बडे विस्तारसें लिखाहै, यहां हमने उसीसे उताराकरके लिया है, ज्यादा विस्तार देखनाहो उक्त आगमोंको देखलेना.

१०-षड्जस्वरकास्थान जवानका अग्रभाव-रिषवस्वरका छाती-गंधारका कंठाग्र-मध्यमका जवानके मध्यभाग-पंचमका ना-शिका-धैवतका दांत होठ-और-निषादस्वरका स्थान भ्रुकूटिजानना.

११-परदेशजाते-या-किसीअछेकामकी नींव डालतेवरत-मनुष्य-या-पक्षीकी-षड्ज-रिषव-और-गंधारस्वरमय-अवाज सुनाईदे तो जानना फतेह होगी.

१२-जिसघरके उपर रातकों सातदिनतक उल्लु बोले उस-घरमें रहनेवाला जलदी उजाड होजाय. घरके दरवजेपर बैठकर रातकों तीनदिनतक उल्लु बोले तो उसघरमें रहनेवालाका दिवा-ला निकल जाय.

१३-परदेशजातेवरत पालेहुवे तोतेकी अवाज बामीतर्फ-और घरआतेवरत-जीमनीतर्फ सुनाईदे तो अच्छाहै खुशी पैदा होगी. प्रयाणके समय घरसें निकले और पांचपचीसकदम अगाडीबढेबा-दवनके तोते उडउडकर सामने आनगिरे निहायत उमदा है. इरादा पूर्ण होगा. पिछाडीसें क्रांक्रांकरते रोतीअवाजसें अगाडीआनकर गिरे अच्छा नही. मुसाफरीमें फिसाद होगी.

१४-प्रयाणकेवरत-या-अछेकामकी शरुआतकरतेवरत-हं-

सकी अवाज सुनाईदे-या-हंस खुद नजरआजाय निहायतउमदा है काम फतेह होगा.

१५-परदेशजातेवरुत जिसका घोडा हनहनाटकरे-या-जीमने पांवसें जमीनको उकरेतो सवारकी फतेहहोगी. आराम मिलेगा.

१६-प्रवेशकरतेवरुत-जीमनीतर्फ गधा भोंके तो अच्छाहै खु-शीपैदा होगी.

१७-परदेशजाते-या-अच्छेकामकी शरुआतकरते वरुत-पो-रकीअवाज सुनाईदे तो ईरादापूर्ण हो, नाचताहुवा मौर दिखाई-देतो-निहायत उमदा है.

(१८)-परदेशजाते-या-अच्छेकामकी नींवडालतेवरुत-चको-रकी अवाज सुनाईदे-या-खुद चकोर वहांपर नजर आजायतो बहोतअच्छा है. कामजलदीफतेहहोगा, दुसराशख्श चकोर एसा-नाम मुंहसें बोलदे और तुमारेकान अवाज सुनाईदे तोभी निहा-यत उमदाहै.

(१९)-भारद्वाजपक्षीकि-जिमको मारवाडदेशमें रुपारेल बोलते है इसकी अवाजभी अच्छेकाममें-चकोरकीतरह अच्छी गिनीगई है.

(२०)-परदेशजातेवरुत-गींधपंखी-बामा-जीमना-या-सामने बोले तो अच्छा नही. जानेवालेको तकलीफ उठाना होगी. पिछाडी बोले तो अच्छा है.

(२१)-चलतेवरुत-या-अच्छेकामकी नींव डालतेवरुत-रौने-की अवाजसुनाईदे तो बुराहै. घंटेघडीयाल-सारंगीतबले-या-सुरी-लेवाजोंकी अवाज सुनाईदेना अच्छाहै, ईरादापूर्णहोगा.

(२२)-षडज-रिपभ-गंधार-मध्यम-पंचम-धैवत-और-निषा

द-येसातस्वर जो पहले लिखचूकेहैं ईनके बिना पहेछाने संगीत कला एसोहै जेसा आस्मानमें चित्र बनाना-तीनग्राम-एकीसमुच्छ-ना-और-गुनंचासतान-बिनातालीस पाये नही आशकते. डरतेड-रेतगाना-या-बेताला गाना-गवैयोंकेलिये शर्मीदेहोनेकी बातहै. मो-ठीअवाजसें तालस्वरमें गाना ईसीमें गवैयोंकी तारीफ है.

(२३)-(सा-रि-ग-म-प-ध-नि-) ये सातस्वरकेबीजहैं. छराग-छत्तीसरागनी-और अड़तालीस पुत्र-कुलुपरिवार (९०) हुवे, भे-रव-मालकोश-दीपक-हिंडोल-मलहार-और-श्रीराग-इनछहोंरागों कीपहलेजमानेमें बहताहसीरथीकि-असलीभेरवरागसें बिनाबैलघां-णीचलजातोथी-मालकोशमें पथ्थर पानीहोजाता था-दीपकसें दियाजल उठना,-हिंडोलसें झूलना खुद चलने लगजाना-मलहा-रसें बरसात बरसने लगना,-और-श्रीरागके गानेसें-घरमें लक्ष्मी बढना सहजबातथी. नैयायिकोंके मतमें शब्दकों आस्मानका एक-गुण माना है लेकीन ! जैनमतमें यहबात मल्लत समझीगईहै, क्यों-कि-शब्द आकाशका गुण किसीसुरतसें नही बनशकता. किंतु पुद्-गलका गुण बनशकताहै, ईसका खुलासा देखनाहो तो-रत्नाकरा-वतारिका-ग्रंथ देखो. निदान ! रागके पुद्गल उसत्रुलत ऐसे छा-जातेहैं जो उपरलिखे बनाव आपही आप बनपडते थे. इसमें देव-कारण समझना भूलहै, अगर कोई सवालकरेकि-आजकलके गवैये क्या !-असलीराग नही गाशकते ?-अगरचे गाशकतेहैं तो फिर भेरवसें घाणीका चलजाना-मालकोशसें पथ्थर पानी होजाना-व-भेरवबनाव क्योंनही बनपडते ?-(ईसका जवाब.)-आजकल जमाना एसा आगयाकि-अच्छीबस्तु अपने-अक्षेपतकों-छोडती जारहीहै,

मंत्राकी ताकात कमजोर होनेलगगई-सच्चकी जगह झूठने आनकर दखल किया-और-धर्मका नाशहोकर अधर्म छागया-गानेवाले ऐसे नैक और पाक-न रहे-बस !-यही सबबहैकि-अच्छीबस्तुमें अब-अच्छापन नहीं रहा जैसा पहले था.

(२४)-धैरव-कालिंगडा-भैरवी-सिंधभैरवी-ललित-बिभास बेलावल-गुजरी-पटमंजरी-देवगिरि-रामगिरि-टोडी-आसउरी-हिंडोल-सारंग-गोडसारंग-नट-सिंधु-मारवी-मुल्तानी-धनासिरि-भीमपलासी-गोडी-पूर्वी-श्रीराग-दीपक-कल्याण-सुवासोगराई-कानडा-वागेसरी-जेजेवंती-केदारा-भोपाली-हमीर-अडाणा-विहाग-खमाच-सारठ-मालकोश-परज-सोहनी-जंगला-झींझोटी-जीला-जोगिया-वसंत-देवगंधार-मल्हार-गोडमल्हार-सामेरी-तिलंग-छाया-वहार-ईमन-बिलासखानीटोडी-जोनपुरीटोडी-गुनकली-माधवी-वेराडी-बंगाली-नटनारायण-छायानट-केदारनट-कोकभ-जेतसीरी-मालसीरी-देशकार-धुलियासारंग-शुद्धसारंग-बरवा-बडहंस-लछासाग-देवसाग-भवसाग-पुरिया-दरबारीकानडा-पंचम-राग-पंचमवहार-कामोद-तिलकामोद-मारुविहाग-काफी-जलकेदारी-गोंडमल्हार-सुरकीमल्हार-मियाकीमल्हार-धुलियामल्हार-और-मालगुंज-वगेरा (३२०००) बत्तीसहजार देशीयरगणी दुनियामें अब मौजूद है, जिनको ईसकाशौख है हजारोलाखोंरुपये खर्चकर सीखते और सुनते है. कंजुसोंकी ताकातनहीकि-रागरागणीका आनंद उठाशके. जो देवलोककी गति भोगकर आयेहै उनको गानेबजाने और सुननेका शौखहोताहै. उत्तम गाना-मध्यमबजाना-नेष्ट नाचना-विकट-बताना-यह मसाल उस्तादोंने ठीक-

ही है कि-गाना-सबसे उत्तम है, तालस्वरसे ईश्वरकी स्तूति कियी-जायतो यकीन है कि-पापोंका नाश होकर पुन्यानुबंधी पुन्यका लाभ होशके, बड़े बड़े गवैये दुनियामें मौजूद है जिनोंने सारी जींदगी इसी-में पूरी कर दिई-लेकीन ! अब तक उसके खोजी बनेहुचे कह रहे हैं हम कुछ नहीं जानते. बाजोमें सबसे बढकर देखना चाहो तो-बीन-से सब नीचे है, जितनी गुंजास इसमें रही है और बाजोमें नहीं. लेकीन !-गलेसे तो बोभी नीची है, सबब कि-गवैये लोग जितना काम गलेमें करते हैं साजेंद-बाजोमें नहीं कर सकते. हां !-अगर चे-दों-नो-एकसे मील जाय तो अलबते !-अच्छा आनंद आ सकता है. गानेके मंगमें जो कुछ काम सरंगी देशकती है दूसरे बाजे नहीं देश-कते. बीन-भीतार-दिलरुवा-ताउस-मुरसींगार-रबाव-सरोद-ज-लतरंग-नशतरंग-या-हारमोनियम-कोई साज हो-लेकोन ! जो कु-च्छ काम गवैयेके साथ सरंगी देगी दूसरे नहीं देशकेगें. इसीलिये सरंगीका दूसरा नाम दूती भी कही गई है, सबब कि-गलेकी नकल करना इसीको आता है, अगर सवाल किया जाय कि-दूसरे बाजे फिर क्या कामके रहे ?-तो-इसके जवापमें कह सकते हो कि-दूसरे बाजें-गत तोड़ा-और-आलाप-देनेमें बहुत ठीक लेकिन ! गानेके संग तो वही दूती काम देगी-अपशेष है तां. इतना ही है कि-दूसरे बाजोंके सामने इसकी आबरू बहुत कम है.

(२५)-गानेमें-और-बाजोमें-बो-ताहमीर रही है कि-जिसके बे गसे लड़ाईमें नामर्द भी-मर्द-हो जाते हैं. करुणा-वीर-या-शींगार रसम य गाना बजाना होता हो वहां अलबते ! कह सकते हो कि-आदमी का-दिल-और ही-हो जाता है, बाजे बाजे ऐसे बजानेवाले हैं कि-मु-



हसे बोलेनही और बाजोंमें बजाकर दूसरेको समझा सकतेहैंकि-तु-  
म-उसजगह जाकर वो चीज ले आओ.

(२६)-गानेमें आदमीके कंठसे औरतकेकंठकी नाजुकता  
ज्यादे वर्ननकिइगइ है. एलममें अलबते ! जीतनी हदको आदमी  
पहोचशकताहै औरत हरगिज नही पहुँचशकती-लेकीन !-कंठमें  
उसके ज्यादा मुलामीयत रहतीहै. जवान औरत-मीठा गाना गाती  
है. श्यावलेरंगकी तेज गातीहै. गौरीऔरत स्पष्ट-कांणी ठहरठहरके  
और-अंधी-जलदीजलदी गाती है.

(२७)-बंशरी-अलगोजा-तूती-बेहला-और-नफ़ीरीभी-गाने  
के साथ अच्छासंग करती है, तीर्थकरदेव जब मालकोश-और-भी  
मपलाश-रागरागणीके जरीये धर्मोपदेश देतेथे-देवते उसवरुत दि-  
व्यबाजोंसे संगतकरतेथे. सोचोकि-तीर्थकर जैसे मुझगानेवाले  
और इंद्रादिदेव जैसे स्वरोकी संगतकरनेवाले जहां मिलजाय वहां  
फिर किस बातकी कमी रहशकतीहै ?-जिनशरुशोंके बड़े भाग्य  
हो-उनहीकों जिनेंद्रोंकी वाणीसुननेका मौका मीलताहै, आर  
श्रद्धामें लाशकते है.

## ( ४ )-[भूकंप.]-

(१)-भूकंपके बारेमें कइकहतेहैं जमीनकेनीचे खारीपदार्योंमें  
समुद्रकाजल घुमजानेसे-वे-उभरजातेहैं और उसकी भापसे जमी  
न कांप उठती है. कइ कहते है शेषनाग मथा हिछादे तो जमीन

कांपउठे. स्कोटलैंडमें सन ( १७०८ ) में भारी भूकंपहुवाया, भूकंप क्यों हुआ !—इसका भेद जाननेके लिये—एवरडीननगरमें—कृष्ठां नपंडितोकी सभा जुडीथी, सभामें कइतरहके मत जाहिरहुवे—कोइकुच्छ और कोइ कुछ कहनेलगे—लेकीन ? सबबाते ऐसीथी जो माननेमें न आशके, सचहैकि—सर्वज्ञोंके कथन बिदून सीखे पढे सच्चापार्ग कैसे पाशकताहै ?—सर्वज्ञपणीत धर्मशास्त्रके मुताबिक—भूकंप—एकभारी उत्पात है. सब चीजका आधार जमीन—जब जमीनही कांप उठे इससे ज्यादा उत्पात और क्या होगा ?—भूकंप का होना धर्मशास्त्रमें इसकारणसे लिखाहैकि—जबकभी—पाताल वासीदेवते आपसमें लडाइलडे—या—गुस्सा खाकर—जमीनपर छात मारे—तो—जमीनकांपउठे. अलबते—हजार दोहजार कोसतक कांप उठना कोइ आश्चर्यकी बात नही. क्योंकि—बडेदरजेकेदेवकी ताकात कम नहीं होती. यहवात जरूरहै कि—जब बुनियादारोंका नसीबा कमजोर आवे तभी ऐसे भारी उत्पात होताहै.

( ३ )—अगर निमकीनपदार्थोंकी भापसेहि जमीन कांप उठती होतो—बतलाइयें ?—उछलकर उंची क्योंनही आजाती ?—कइदके देखाजाताहै गांव के—गांव—फटकर—बल्किन् पातालमें गायब होजाते है, सोचो !—अगर उक्तबात सच्च होतीतो यह बनाव कैसे बनता ! दूसरामत—शेषनागका कहा वहभी जूठहै. सबबकि—अगर जमीन शेषनागके मथेपर ठहरी हो तो बतलाना चाहिये !—शेषनाग—कि सके मथेपर ठहरा है ?—यह सबबाते लडकपनकी है, सच्च बात वही है जो धर्मशास्त्रका प्रमाण देकर पहले लिखचूके.

( १ )—जमीनकंपनेका—फल,—राजाओंमें लडाइदंगे—बडे-ब-

खार-हैजा-महामारी वगैरा रोग फैले-बरसात थोड़ा बरसे और हरतरह दुनिया दःख पावे,-अन्न न मिलनेसे हजारों आदमी भूखे मरजाय-लेकीन!-सारी दुनियाके लिये यह बात नहीं समजना. जिस चौखरेमें जमीन कांपी हो उसी चौखरेके लोगोंको फल होगा, ऐसा जानना.

( ४ )-जमीनकंपनेसे-लोग-त्राहित्राहि करदेते हैं-पांच सात बीमटी बजावे उतनी देरका भूमिकंप भी-गजब करडालता है अगर ज्यादा बरततक भूकंप होता रहे खबर नहीं क्या अनर्थ होजाय?-पहाड-नदी-सरोवर-वृक्ष-और-घर-टूटकर चूरचूर हो जातेहैं. कभी ऐसा भी होजाताहैकि-गांवके गांव जमीनमें दबजाते हैं. नदीयोंका जल उछलकर कहींका कहीं जागिरताहै, घरआंगण रास्ते-और-बागबगीचे फटकर बड़ेबड़े-जंगल-होजाते हैं, बेशुमार रौनापीटना-हाहाकार और जानका जोखम-इसी उत्पातसे उठाना पडताहै. कइ विज्ञानवाजोंने इसका भेद जानना चाहा, लेकीन ! चालाक भूकंपने अपनाभेद किसिसें जाहिर नाहि किया और क्यों करे ? संसारमें अपनाभेद किसीकों कौन बतलाता है !-यह तो सर्वज्ञोहोकी ताकातहै कि-बंपरवाहरूपसे सबचीजोंके गुणदोष और उत्पात विनाश अपने ज्ञानसे स्वतःजानशक्ते है.

## ( ५ )-[उत्पात.]—

( १ )-जबदुनियादारोंकानसीबा कमजोर आताहै अनहोते

बनाव बनने शुरू होतेहैं, इनहीअनहोतेबनावोंका दूसरानाम उत्पात कहदो कोइहर्जकोबातनही, जो जो उत्पात जमीनके तालुकहै / उनको यहां पांचवे निमित्तमें लिखलर-अंतरीक्षनिमित्तमें आकाश के उत्पात दिखलाये जायगे.

( २ )-जो जो उत्पात आमलोगोंकेलिये कहदेना मुनासिबहै वेंही इसपुस्तकमें लिखेजायगें, बाजे ऐसे योगभी है-जो-बड़ेही योग्य शरुशोर्कों बतलानेके है-वें-यहां नही लिखेजायगें, उत्पात के कइतरीकेहैं जो संपूर्ण लेखकों पढलोगें मालूमहोजायगें. हकीकतमें जब खोटे दिन आतेहैं निमित्तभी उल्टे मीलना शुरूहोतेहैं.

( ३ )-जिसदेशके-जंगलमें-गांवमें-या-शहरमें-उत्पातकाहोना देखो वहां यकीन करलोकि-खोटेदिनोंकी निशानीहै.

( ४ )-जिसशहरकेदरवजेपर-या-देवमंदिरके शिखरपर बिजली गिरे-वहां-छमहिनेपें दुश्मनका जोर बढे.

( ५ )-जिसदेशमें नदीयोंकाजल जिसतरफ बहताहो-बदल कर-उल्टा बहनेलगजाय वहां एकवरसके भीतर राज्यकी बदली होजाय.

( ६ )-जहां देवमूर्ति-खुद्दहसनेलगजाय-या-रोतीहुइ दिखाइ दे-सिंहासनमें बिदून उतारे आपही नीचे उत्तरजाय-वहां-राजा ओमें तलवार चले-हजारों आदमी लडमरे-देशलूटजाय-या-आग लगे, और खजाना जलकर खाख होजाय.

( ७ )-जहां किसी दिवारपरबनीहुइ चित्रामकी पुतली रौने लगे-हसतीहुइ दिखाइ दे-या-भ्रकुटिचढाकर गुस्सा करे-वहां-उजाड होजाय. और आदमीयोंको घर छोडकर भगना पडे.

( ८ )-जहां रात्रीकों कागडे बोले वहां दुकाल पड़े-या-रा-ज्यमें हीलवल पैदा हो. सवेर हाने लगें जबतो कागडे हमेशां बोलतेही है. यहां उसका विचार नहीं किंतु आधीरात बगेरा की बात है.

( ९ )-जिस देशके राजेका-डंका निशान-लडाइके लियेचढते बख्त-बिदूनचोटलगे टूट जाय-उसकों बुरेदिन भोगने पडेगें.

( १० )-जहां देवमंदिरके-या-राजाके चवरमेंसें-बिदून अग्नि आगके इंगारे झरनेलगे वहां टंटेझगडेहोकर बहुतोंके मस्तक फुटेंगें.

( ११ )-जहां दिनकों शियाल और रातकों तीतर बोले वहां दुकाल पडेगा. तीतर दोरंगके होते है. यहां काले रंगका लेना.

( १२ )-दृक्षोंमेंसें लोहीकीधारा छुटना लडाइ होनेकी निशानी है.

( १३ )-जहां राजाके छत्रमें बिदूनअग्नि-आग-लगजाय-वहां राजविरोध जरूर हो.

( १४ )-जिसराजेके कोठारमें-या-आयुधशालामें-बिना अग्नि धूआं-निकलने लगे-वहां गदरहोगा.-और-हजारों आदमी-तलवारसें कट मरेगें,

( १५ )-जहां दृक्षोंमेंसें-दूध-दही-घी-या-सहेतकी-धारा छूटे वहां रोग चाला फैले.

( १६ )-जिस उत्पातका फल-छ-या-बारांमहिनेमें-नहो-वह उत्पात झूठा जानना.

## ( ६ )-[अंतरिक्षनिमित्त.]—



( १ )-जो जो उत्पात-आकाशके तालुक है-उनका बयान सुनिये !—

( २ )-चंद्र-सूर्यकी-चौफेर मंडल दिखाइ देना किसी सुरत अच्छा नहीं.

( ३ )-धूमकेतु-यानी-पूँछडीयातारा-दिखलाइ देना बहोत बुरा है, जिसदेशमें धूमकेतु दिखाइ दे उसी देशवालोंको तकलीफ होगी दूसरोंको नहीं.

( ४ )-लोही-मांस-हाड-तेल-घी-दूध-चरबी-सांप-बीजू-और-कीड़े मकोड़ोंकी वृष्टिहोना-भारी उत्पातका-कारण है, दु-कालपडे-देशलूटजाय-या-रोग फैले, लोहीका वरसात फक्त लाल पानीहीसें नहींसमझना-सफेदवस्त्रपर गिराहुवा जल-अगर सुकेबा दभी लालरंगका बनारहे उसको लोहीका वरसात कहना ठीकहै.

( ५ )-ग्रहोंमेंसें धुए छुटना-सूर्यमंडलसें इंगारे झरना-दुका-लकी निशानी है. चंद्रसूर्यका अकाले ग्रहण होना-किसी सुरतसें अच्छा नहीं.

( ६ )-संध्याके वरुत-सूर्यअस्तहोनेकेपीछे-और-चंद्रोदयसें पहेले-अगर आकाश एकदम-लाल-होजाय-और कुच्छ समय बना रहेता पृथ्वीपर प्रचंड युद्धका कारण जानना और उसमेंसें-एकमूर्ति-आदमीके आकार हाथोंको पसारकर निकले-बाद-छीपजाय और-फिर मथेपर हाथदेकर रोतीहुइ-निकले-वहां छपाहिनेये तल

वार चले. उजाड होजाय-या-हजारें आदमी वहां बैठकर रोवे.

(७)-जहां दिनमें सूर्यकी तेजीहोतेभी-तारें-दिखाइ दे-और रातकों बिल्कुल न दिखे-वहांके मनुष्योंकों-बुरोदिन भोगने होंगे.

(८)-आकाशमें-नकली बाजे-वज वहां गदर होगा.

(९)-उल्कापात उसकों कहते हैं जो जाजुल्यमान अंगारे-की तरह आकाशमें पैदाहोकर बढ़ती हुई-लंबी शिखा बनजाय और-पीछें-लॉप होजाय, अगर धजाके आकार होकर लॉप होतो अच्छाहै. हाथी-या घोड़ेकेआकारभी अच्छा-हंसकेआकार-चंद्रमाके आकार-पाहाड-शंख-वज्र-कमल-श्रीवत्स-और-मच्छके आकार होकर लॉप होनाभी अच्छाहै. इसके शिवाय दूसरी तर-हकी-उल्का-बुरीहोतीहै, उल्कापात अक्सर दिनके अंतमें और रातके पहिलेही होताहै.

(१०)-उल्कापात-देवप्रातमापर-या-नगरके दरवजेपर गिरे तो बुरा है.

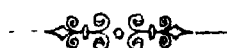
(११)-उल्कापात जहांसे पैदाहुवाहों-वहां-पीछा लोट जाय अच्छाहै, लोटाहुवा-फिर पीछा आवे तो-बुरा, उंचानीचा-या सांपकी तरह बलखाता हुवा दिखाइदे बहोत बुराहै. जिसदिशाभे जाकर उल्कापात गिरे उसदिशाके मनुष्योंकी हरतरह हारहोतीहै.

(१२)-तारे आकाशमें बड़ेजोरसें हीलते दिखाइ दे-या-उन-भेमें धुआं छूटता दिखपड़े-वहांके-मनुष्योंकों खोटेदिन भोगने पड़ेंगे.

(१३)-गांधर्वनगर-उसकों कहते हैं जो आकाशमें कइतरहके पुदगल-तदाकार-परिणमन-होकर-रंगबेरंगमें नगरके आकार-दिखाइ दे-कालेरंगका दिखाइ दे-तो-बुराहै-लालरंगका दिखाइ

दे तो जानवरोंको तकलीफ होगी. चाहे किसीरंगका हो पूरव पश्चिम-और-दखनदिशाका गांधर्वनगर अच्छा नहीं होता. उत्तर दिशाका-गांधर्वनगरकि-जिसमें गेहरा-साफ-और-चमकीला रंग हो-किला-तोरण-वृक्ष-और-पशुपक्षीके-आकार-जिममें उमदात-रीकेसे दिखाइदेतेहो-वह-अलबते !-अच्छाहै. लोगोंको सुखके दिन उपस्थित होंगे. ये संपूर्ण अंतरीक्षनिमित्त-जो-उपर लिख आये-जिस चौखरेमें दिखलाइ दे उमी चोखरेके-मनुष्यो-उक्त फल-होगा-सारी दुनियाको नहीं.

## ( ७ )-[ व्यंजननिमित्त. ]-



१-व्यंजनशब्दकरके तील-मसा-और-लहसन-तोनोही जाननाचाहिये.

२-शरीरकीचमडीपर तीलजैमे आकारका श्यामरंगचिन्ह जो होताहै उसको तील बोलते है.

३-चमडीसे कुछ ऊंची बढ़कर मांसकी छोटीसीगोलगांठ-राइ-या-बाजरीके-मुताबिक हो-उसको मसा बोलतेहै, इससे बड़ा मसा खूबसुरतनहीकहलाता.

४-लहसन-उसको कहतेहै जो कुंकु-या-कसुंबेके रंगमाफिक लालवर्णका चिन्ह-चमडीपर होताहै. तील-मसा-या-लहसन-को इहो-अगर खूबसुरत और अखंडित होगा अच्छाफल देगा. बढ़-



सुरत-खंडित-या-छिन्नाभिन्न-होगा-अच्छाफल न देगा-महानिशी-  
य-और-प्रवचनसारोद्धारमें-व्यंजनशब्दका-अर्थ तील-और-मसा  
लिखा है. तील-मसेका-रंग श्याम-और-लहसनका रंग-बहोतक-  
रके लाल और कुच्छ श्याम हांताहै.

५-मस्तकपर-या-कपालमें-तील-मसा-या-लसनहो-वो-हर-  
जगह मान पायगा.

६-भ्रूपर-तीलहो-देशांतरमें फायदा उठायगा.

७-आंखपर-तीलहो-नायकपदवी पावे.

८-मुंहपर-तील होतो दोलत झलाझल मिले.

९-गालपर-तील हो खूबसुरत औरत मिले.

१०-नाकपर-तील हो-इतर बहोत सुंदर.

११-होठपर-तील हो-उसकीबात सवाइ रहे. नीचलेहोठपर  
हो तो कंजूस रहे.

१२-कानपर-तील हो उसे गेहने आभूषण बहोत मिले.

१३-गर्दनपर-तीलहो उसे ऐशआराम ज्यादा मिले.

१४-छातीपर तील हो-उसको अच्छी औरतमें फायदा हो-  
ता रहे.

१५-हाथपर-तीलहो-अपने हाथकी कमाइ भोगे, दुश्मनसें  
फतेह पावे.

१६-हथेली-या-पंजेपर-तीलहो-बडाखरचीला हो.

१७-पुरुष चिन्हपर-तील-होतो अच्छी स्त्रीसें मुलाकात ब-  
नी रहे.

१८-कोषग्रंथीपर-तीलहोतो-प्रतापी हो.

१९-जांघपर-तील हो उसे सवारीचढ़ना बहोत मिले.

२०-पांवपर-तीलहो-वो-परदेशमें ज्यादा फिरे.

२१-अगर कोई सुवालकरेकि-हमारे-उक्तजगह-तीलहोतेहु-  
वेभी-फलदायक क्यों नहीं होता?-(जबाब.) अखंड और खूबसु-  
रत-नहोगा इसलिये फायदा नहीं पातेहो, पुरुषकों जीमनेअंगपर  
तील-मसा-या-लहसन-अखंड और खूबसुरत होगेतोजरुर अच्छा  
फल करेगें, हां !-इतनाजरुरहेकि-नामर्द और कंजूस आ-  
दमीके कोईचिन्ह फलदायक नहीं होते, सबबकि-उसके अच्छे  
लक्षण भी कमजोर होजाते है, हिंममत और उदारता पुन्यवानो  
के लक्षण है.

(अथ,)-[ स्त्रीकों-वामेअंगपर-तील-मसा-या-लहसन

अखंड-और-खूबसुरतहो-उसका-फल,- ]-

१-माथेपर-तीलहोतो राजाकी रानी हो.

२-कपालपर-तीलहोतो-बडेघरानेकी स्त्री हो.

३-आंखपर-तीलहोतो-निजपतिकों अतिवल्लभ हो. ३

४-गालपर-तीलहोतो-ऐशआराम बहोतकरे.

५-नाकपर-तीलहो-फुलगजरे सुंघती रहे.

६-कानपर-तीलहो-जेवरबहोत पहने.

७-गलेपर-तीलहोतो-घरमें हकुमत चलावे.

८-स्तनपर-तीलहोतो पुत्रवतीहो.

९-स्तन का-मुखलालरंगका हो-उसकेपास दोलत झलाझ-  
ल बनी रहे.

१०-हाथपर-तीलहोतो घरवालोंकों प्यारी लगे.

- ११-योनिपर-तीलहो-नो-मैथुनकिया बहोत चाहे.  
 १२-जांघपर तोलहो-उसकेपास दासदासी बने रहे.  
 १३-पांवपर-तोलहो तो परदेशमें बहोत फिरे.  
 १४-जीमनेअंगपर-तील-ममा-या-लहसन-होतो कमजोर  
 फल देगा, सबबकि-स्त्रीका बामाअंगही प्रधान गिनागया है.

## ( ८ )-[ लक्षणविज्ञान, ]-



१-शरीरके लक्षण कइतरहसैं देखेजातेहै. जिसकेशरीरका रंग-चंद्रमा-सूर्य-बीजली-हीरा-माणक-मोती-मुन्ना-हींगलु-मूंगे-हरताल-मणसील-अग्नि-जल-चंदन-कमल-वरमात-प्रियंगु-शंखया चंपेकी तरह-रंगदार और चमकोला-हो वह प्रतापी होता है, चाहे मर्दहो-या-औरत-उमदाशरीरपाना भाग्यवानीका चिन्ह है—

अगले जमानेमें जैसा कुच्छ रुपरंग था अब वैसा नही रहा, इसलिये कहसकतेहैकि-पुन्यवानी अब विदा होतीजातीहै, उपर लिखे-मुताबिक-रंग रुपवाला-अलबते!-खानपानसैं-मुखी होताहै, इतरफुलेल-गेहने आभूषण-और-फुलजगरोसैं-मुशोभित रहताहै,

२-मेघध्वनि-बुंदुभि-हाथी-सिंह-शार्दूल-भ्रमर-सारस-कोकिल-चक्रवाक-क्रौंच-हंस-बीणा-सरंगी-और-घुंघरुकीतरह जिसकी मीठीअवाज हो-वह प्रतापी और मुखी होता है. चाहे मर्दहो-या-औरत-मीठीअवाजवाला हरजगह मानपाताहै, उसकी इज्जतआबरू अच्छी फैलतीहै. गधा-सूअर-और-काककेसमान जि-

सकी अवाज हो-वो-पापी-और दुखी होता है.

३-जिसकी चाल हंसकीतरह-या-सिंह-व्याघ्र-वृषभ-और-हाथीकीतरहहो-वह विजयीपुरुष होताहै. नोकरचाकर-और-मित्र परिवार उसकी सेवामें सदा बने रहेगे.

४-खूबसुरतरुपवाला चाहे मर्द हो-या-औरत काइ हो-अकसर!-सुखी और दोलतमंद होते हैं. उमदारुप पुन्य विद्वान् नहीं मिलता. दुनियामें सबमेंभारी वशीकरणरुप है, शास्त्रमें बयान है कि-अमूककुमारका रुपदेखकर अमूककुमरी मोहित हो गइ, अमूक कुमरीका रुपदेखकर अमूककुमर मोहितहोगया बल्किन्-रुपवान् प्राणीपर देवतेभी मोहित होजाते हैं, पुख्तासंठाण. और संघातन भी पुन्यविना-नहीं मिलता.

५-सत्त्व-नाम-हिंमत्तका है. जो शरुश बहोत हिंमत्तवान् हो वो-बडाभाग्यवान् होताहै, खालीबडाइमारनेवाले दुनियामें बहोत है लेकिन!-तकलीफ के वख्त-हिंमत्तरखे-हम उसे हिंमत्तवान् कहते हैं. तीर्थकर गणधर-चक्रवर्ती-वासुदेव-और-महर्दिकराजे-अवनहीरहे, सारीदुनिया दुग्मन होजाय और डरेनही वैसेभी कम है, आजकल जैसेकुच्छ हिंमत्तवान् रहे हैं आपलोगों किसीसे छीपे हुवे नहीं, बस!-हमे यहां इतनाही कहना बहोत है कि-तकलीफके-वख्तभी गभराय नहीं और हिंमत्तरखे-उसीकों सत्त्वावान् की पंक्तिमें गिनलो. एकतर्फ एकत्तीस लक्षण-और-एकतर्फ-धीरजगुण सबसें बढकर कहा, अगर तुमकों सुखीरहनाहै-तो-हिंमत्तरखो-या-हिंमत्तवान् कहे उस माफिक चलो, दुनियामें क-इलावतभी मशाहूरहैकि-मर्दकी गिर्दमें रहना-लेकिन!-नामर्दकी

उगेहो-वो-बड़ाप्रतापीपुरुष होताहै. ललाटपर केशका होना जो उपर लिखआये वह आजुबाजुकीबात उपरकी नही. जिसका मस्तक बड़ा और खूबसुरत हो-वो-राजा-या-साधु होगा. छत्रके आकार मस्तक होना निहायत उमदा है.

१४-जिसकी आंखका सफेद भाग स्वभाविकरूपसे कुछ लाल हो-स्त्री उसको-चाहकर मीलेगी. जिसके नेत्रकी पुतली कुछ पीलासलियेहो उसकेपास दोलत बनी रहेगी. जिसके नेत्र-चमकी ले-यानी-तेजस्वीहो उसके बड़ेभाग्य समझना चाहिये, मुरघेके जै-से नेत्र हो वो-मूर्ख होताहै, बिलाइके समान मांजरी आंखवाला बड़ा दगाबाज और पीली आंखवाला खूनी होताहै. सर्पके नेत्र जैसे नेत्रवाला रोगी-स्निग्धलोचनवाला सुखी-दीननेत्रवाला निर्धन-उंडी आंखवाला दीर्घायु-और-टेढी आंखवाला मतलबी होता है. कमलसमाननेत्र उमदा होते है.

१५-जिसके-बत्तीसदांत हो-वो-मुनि-राजा-या-प्रतापी गृहस्थ होगा. एकत्तीस हो-वो-दिवान-तीसहो-वो-सुखी-और-इससे कमहो-वो-सुखी कम रहता है.

१५-जिसके कपालमें पांच रेखा होवो-(१००) वर्ष-जीयेगा. चार रेखावाला-(८०) वर्ष-तीन रेखावाला-(६०) वर्ष-दो रेखावाला-(४०) वर्ष-और-एक रेखावाला-(२०) वर्ष-जीयेगा. जिसका कपाल उंचा और बड़ाहो उंचीपदवी पायगा, अर्द्धचंद्रमाके आकार कपाल उमदा कहा. जिसके कपालमें खड्डा हो-वो-अच्छा नही. बीचमेंसे थोडामा उंचा होतो अच्छा है.

१७-जिसकी दाढी मांससें पुष्ट हो-दोळतमंद-होता है, जि-

सकी पतली और लंबी-हो-वो-दूरीद्री जानना.

१८-जिसका मुख सदा हसता रहे-वो-कभी दुखिया न होगा. आंखों मीचकर हसनेवाला पापी होता है. जिसके आंखोंके पर्दे कनारेपरसें लाल हो-वो-द्रव्यवान् होता है. जिसकेकान लंबे और खूबसुरत हो-वो-सुखी रहेगा. छोटे कानवाला कंजुस होता है. जिसके गालमें हसते बरूत खड़े पड़ जाय वो-परायेधनसें धनवान् बने-और पराई औरतसें दोस्ताना करे तात्पर्य यह है कि-वो-निज मातापिताका सुख न भोगे.

१९-जिसकी छाती सपाट हो बड़ेबड़े आनंद भोगेगा. जिसकी बीचमेंसें उंडी हो-वो-रूपये पैसेसें तंग रहे.

२०-हरमनुष्यके हाथमें जो तीनरेखा-बड़ी होती है उनमें कनिष्ठा अंगुलीके नीचेसें चलकर तर्जनी अंगुली तक जानेवालीका नाम आयुष्यरेखा जानना. बीचलीका नाम विभवरेखा-और-मणिबंधसें निकलकर अंगुठे और तर्जनीके बीच जामीलनेवालीका नाम जशरेखा है. विभवरेखाका दूसरा नाम मातृरेखा-और-जशरेखाका दूसरानाम पितृरेखाभी बोलते है, ये तीनोंरेखा अखंडित और लंबी होतो उसकी-इज्जत आबरू-दोलत-और उमर-पुरीजानना. खंडित होतो खंडित, कइ जगह विभवरेखासेंभी आयुष्यका विचार करना कहा है, अगर विभवरेखा छोटी हो-तो-छोटा-और लंबी हो-तो लंबा आयुष्य जानना.

२१-जिसके हाथमें शंखका चिन्ह हो-वो-दोलतमंद रहेगा. जिसके हाथमें छत्रका-या-धजाका चिन्ह हो-वो-देवकीतरह सत्कार पाता रहेगा. जिसके हाथमें-केशरीसिंहका-या-हाथीका चि-

न्ह हो-वो-राजा-या-राजकी तरफसे हुकमहोदा चलानेवाला होगा. जिसके हाथमें अंकुशका चिन्ह हो उसके घर हाथी बंधे. जिसके हाथमें सूर्यका चिन्ह हो-वो-हिंममतबहादूर होगा. जिसके हाथमें सिंहासनका चिन्ह हो-वो-उंच आसनपर बैठेगा. जिसके हाथमें चंद्रमाका चिन्ह हो-वो-भोगविलासी होगा. जिसके हाथमें बैलका चिन्ह हो-वो-बहोत मनुष्योंको पालन करेगा.

२२-जिसके हाथमें देवमंदिरका-या-नंद्यावर्तका-आकार हो वो-बडेनसीबेदार हांगा, धर्महीके प्रभावसे उसके सबकाम फतेह होते जायगे. जिसके हाथमें तलवारका आकार हो-वो-बडा जीही होगा, जिसके हाथमें धनुष्यका आकार हो दुनिया उसे बहोत चाहेगी, दूसरोको उसके दर्शन होना भी मुश्किल होगा. जिसके हाथमें फुलमालाका आकार हो-वो इज्जतदारोसेंभी बढकर पूजा-यगा. जिसके हाथमें चवरका आकार हो-वो-राजाका दिवान होकर अपनेपर चवर ढुलायगा. जिसके हाथमें मुकुटका आकार हो वो-पूज्यपदवी पायगा. जिसके हाथमें रथका आकार हो उसके घर रथ बंधेगा. जिसके हाथमें कलशका चिन्ह हो उसके इरादे पूर्ण होते चले जायगे, जिसके हाथमें कमलका आकार हो-वो-भोगविलासी होगा. जिसके हाथमें सांपका आकार हो प्रकृतिका जल्लाद, लेकीन !-दोलतमंद जरूर बना रहेगा.

२३-जिसके हाथमें स्वस्तिकका चिन्ह हो-वो-पीछली उमरमें सुखी रहेगा, जिसके हाथमें पदमका चिन्ह हो-वो-बुद्धिमान सहस्रावधानी होगा. जिसके हाथमें मृदंगका चिन्ह हो-वो-धीरजवान् होगा. जिसके हाथमें भालाका चिन्ह हो-वो-लडाइखोर-और

तीरका चिन्हहो-वो-पंडित होगा. जिसके हाथमें विमानका चिन्हहो-वो-जिनमंदिर बनानेवाला होगा, जिसके हाथमें-वृक्ष-या-तोरणका-चिन्हहो-वो-जहागिरदार होगा. जिसके हाथमें जहाजका चिन्हहो-वो-कोटीध्वज-होगा. जिसके हाथमें हल-मुशल-या-त्रिकोणका चिन्हहो-वो-किसानहोगा-या-जमीन उसे इनाम मिलेगी. जिसके हाथमें पुष्करणीका चिन्हहो उसकीबात सवाई रहेगी. जिसके हाथमें समुंदरका चिन्हहो-वो-राजाओकाभी राजा बनेगा. जिसके हाथमें त्रिशूलका चिन्हहो-वो-धर्मध्वज होगा. और धर्मचर्चामें बड़ेबड़े पंडितोंकाभी लाजवाब करेगा. जिसके हाथमें चक्रका चिन्हहो-वो-हरजगह फतेह पायगा. जिसके हाथमें मोरका चिन्हहो-वो-विजयी होगा, जिसके हाथमें कच्छुवाका चिन्हहो-वो-शांतस्वभावी होगा.

२४-जिसके हाथमें वज्रका आकार हो-उसे-बड़ाहोहा मिलेगा. जिसके हाथमें योनिका आकार हो-वो-प्रतापी हागा, जिसके हाथमें पहाडका आकार हो-वो-राजाका मंत्री होगा. जिसके हाथपर बहोतकेश उगे हुवे हो-वो-दुखसे जींदगी तैरकरेगा. जिसके हाथको दशअंगुलीयोमें दशचक्र हो- १-साधु-या-छत्रपतिराजाहोगा. नवचक्र हो-वो-राजा-दोलतमंद गृहस्थ होगा, आठचक्रवाला हमेशा रोगी रहेगा. सातचक्रवाला सुखी छचक्रवाला कामी-पांच-चार-तीन-दो-या-एकचक्रवालाभी-गणवान् होताहै, जिसके दोनों हाथोंकी अंगुली-और-अंगुठोंमें-जीमनेमें दक्षिणावर्त्त-और-बामेंमें बामावर्त्त-शंख हो-वो-हरतह सुखी रहेगा. जिसके हाथकी अंगुली और अंगुठोंमें साँपका चिन्ह हो-वो-तीनो अव-



स्थामें दुखी रहेगा.

२५-जिमने हाथकी आयुष्यरेखा जितनीअंगुली लंघजाय एकएक अंगुलीपर वीशवीश वर्ष गिनकर संख्या लगाओ. जैसे किमीकी तीनअंगुलीये लंघगइ हो उसकी साठवर्ष आयुः जानना. एकएक अंगुलीपर पचीस पचीस वर्षकी संख्या लगाना भी ठीक है, वीश वर्षकी बात कालहानिके सबब किइ गइ है. जिसकी आयुष्यरेखा बीचमेंसे दूटीफूटी हो उमर उसकी बहोतकम होतीहै.

२६-आयुररेखामेसें अंगुलीयोंकी तर्फकों जितनी रेखा निकसीहो-उतनी उस पुरुषकों विपदा भोगनी पड़ेगी. मणिबंधकी तर्फकों जितनी निकसीहो उतनी उसे धनसंपदा मीलेगी.

२७-मणिबंधसें पांचतरहकी उर्द्धरेखा-जो-अंगुली और अंगुंठेकी तर्फकों जाती है उसका बयान सुनिये!-प्रथम उर्द्धरेखा-जो-मणिबंधसें निकसकर अंगुंठेके नीचे तक जामीले उसकों राज्यकी तर्फसें फायदा होगा. जिसकी दूसरी उर्द्धरेखा मणिबंधसें चलकर तर्जनीतक जामीले-वो-राजा-या-राजका दिवान होगा. इसी तरह जिसकी तृतीय उर्द्धरेखा मणिबंधसें चलकर मध्यमातक जामीले-वो-अगर साधु हो जायतो आचार्यपदवी पावे गृहस्थ रहेतो सेनापति बने. इसी तरह जिसकी चतुर्थ उर्द्धरेखा-मणिबंधसें चलकर अनामिकातक-जा मीले-वो-दोलतमंद होगा और बहोतसें मनुष्याकों पालन करेगा. इसी तरह जिसकी पांचमी उर्द्धरेखा मणिबंधसें लगाकर कनिष्ठा अंगुलीतक जामीली हो-वो-बड़ा इज्जतदार और द्रोसलेवाला होगा.

२८-जिसके जिमनेहाथकी विभवरेखा-अखंड बेधवर्जित-

और लंबी हो-वो-अपने खानदानमें-सबसे बढकर प्रतापी होगा, विभवरेखासे अंगुलीतर्फ जितनी पछवरेखा निकसी हो उतने उसके दुश्मन-और-जितनी अंगुठेकी तर्फ निकसी हो उतने साहाय्यकारक होंगे.—

२९-जिसके मणिबंध-यानी-पहोंचेकी जडमें तीनरेखा आडी पड़ी हों-वो-बड़ा प्रतापी होगा. अगर मणिबंधके उपरभी तीनरेखा पड़ी हो-तो-बहुत बड़ा राजा होगा. जिसके दोरेखा हो-वो-दिवान होगा, जिसके एकरेखा हो-वो-सामान्य मनुष्य गिना जायगा.

३०-अंगुठेके मध्यभागमें जिसके यवका आकार हो-वो-दो-दोलतमंद होगा, अंगुठेके उपरलेभाग-यानी-पिछलेपासे जिसके यवका आकारहो-वो-सदा सुखी रहेगा.

३१-जिसकी अनामिका अंगुलीकी अंत्यरेखासे कनिष्ठा-अंगुली-और-मध्यमा अंगुलीकी अंत्यरेखासे-तर्जनी-बढगइहो-वो-दोलतमंद होगा. कमहोतो रुपये पैसेसे तंग रहेगा.

३२-जिसके हाथकी अंगुली खड़ीकरके देखो और परस्पर मिली हुई देखाइ दे-वो-दोलतको इकठी करेगा और जिसके बीचबीचमें अंतरपड़ा दिखाइ दे-वो-हरकार्यमें बहुत कुछ स्वर्च करेगा, याने दिलका दलेर होगा, अनामिकाके मूलसे-कनिष्ठा-अंगुलीका मूल कुछ नीचेको हो-वो-बुद्धिमान् होगा. इसी तरह जिसका मध्यमासे तर्जनीकामूल नीचेको हो-वोभी-अकलमंद और उपदेशक होगा. अनामिका अंगुलीके नीचे और आयुरेखाके बीच जीतनी खड़ी-या-तीरश्चीन रेखा हो उतना उसपुरुषको ध-

र्मज्ञ और शास्त्रवेत्ता जानना, कनिष्ठा अंगुलीके ठीक नीचे और आयुररेखाके सामने जितनी खड़ीरेखा हो-उतनी उस पुरुषको सुखसंपदा मिलेगी.

३३-अनामिका अंगुलीके-निचलेपोरवेमें-जितनी-आड़ीरेखा हो-उतनी-वो-पुरुष ठकुराई भोगेगा. जितनी खड़ीरेखा हो-उतनी उसकी धर्मश्रद्धा पृष्ठ रहेगी. मध्यमा अंगुलीके निचलेपोरवेमें जितनी आड़ी और उभी रेखा हो-उतनी उस पुरुषकी-ठकुराई-और श्रद्धा-कम-होगी. अनामिकासे मध्यमाका फल शास्त्रोंमें उलटा कहा है. कनिष्ठा अंगुलीके निचले दोपोरवेमें उर्द्धरेखाका होना अच्छा है.

३४-जिसके हाथमें अंगुठेके निचे-और-पितृरेखाके सामने जितनी आड़ीरेखा-हो-उतनी उसको आरामकी जगह मिलेगी.

३५-जैसे जिमनेहाथके लक्षण-पुरुषके देखते हैं वैसे वामेहाथके भी देखने चाहिये, जिमनेहाथके लक्षण संपूर्ण फल देते हैं, वामेहाथके न्यूनदेते हैं, बिल्कुलव्यर्थ नहीं जानना, कृष्णपक्षमें जन्मे हुवेके वामेहाथके लक्षण दाहनेहाथके लक्षण समान फलदायक होता है, इसलिये निश्चय है कि-वामेहाथके लक्षण भी कार्यकारी हैं, जैसे जिमनेहाथमें-पितृ-विभव-और-आयुरेखा सबके होती हैं वैसे वामेहाथमें भी होना स्वाभाविक नियम है, वामेहाथकी पितृरेखा जिसके निर्दोष हो-वो-देवलोककी गतिभोगकर आया जानना. इसी तरह विभवरेखा निर्दोष हो तो मनुष्यकी गति-और आयुरेखा निर्दोष हो-तो-अधोगति भोगकर-यानी-तिर्यच होकर आया है ऐसा समझो. जिमनेहाथकी पितृरेखा जिसके निर्दोष हो-वो-यहांसे मरकर देवलोक जायगा, विभवरेखा निर्दोष

हो-वो-मनुष्यगतिमें-और-आयुरेखा निदाष हो-वो-तिर्य्यच-  
तिमें जायगा.

३६-जिस पुरुषके वामेहाथकी विभवेरेखा अखंड निर्दोष और लंबी हो उनको भद्रवाहा भोगविलास मिलेगा, जिसके वामेहाथमें कृपाणि अर्थात् खुरपीका आकार हो उसे बुद्धि मिलेगा. जिसके बजाका और चंद्रमाका आकार हो उसे चंचल और गौरवर्णका स्त्री मिलेगी. जिसके वामेहाथकी आयुरेखा और कनिष्ठा अंगुलीकी जडके बीचमें जितनी आड़ी रेखा हो उतनी उस पुरुषके स्त्रीयें मिलेगी. जिसका विवाह सारी उमरतक नहुवा हो और उसके उक्तेरेखा मौजूद हो तो जानलोक उतनी स्त्रियोंसे उसकी मोहवत हो चुकी है, जिनको दीक्षारेखा और स्त्रीरेखा दोनों मौजूद है-तो-कहदो-जो-अखंड और निर्दोष होगी. वही फलदायक होगी. दीक्षारेखा पुरुषके वामेहाथमें स्त्रीरेखाके अग्रभागमें होती है, दीक्षित हुवे बाद स्त्री संगमका अभाव होता है इसलिये उक्त स्त्रीरेखा उनका दूसरी तरहकी प्रभुता देती रहेगी. स्त्रीको पतिरेखा उसके जिमने हाथमें आयुरेखा और कनिष्ठाकी जडके बीचमें होता है. उसको देखकर उसके पतिके सुखका विचार करना. जो स्त्री संसार छोडकर दीक्षा लेती है उसकी पतिरेखा उसे ज्ञानप्राप्तिद्वारा फलदायक होती है. पुरुषके वामेहाथकी कनिष्ठा अंगुलीके और आयुषरेखाके बीचमें जो राज्यरेखा होती है. उसमें भी दीक्षा-धर्म-और इज्जत आबरुका विचार किया जाता है. जिस पुरुषके वामेहाथकी आयुष्यरेखा अखंड और निर्दोष हो उसको अपनी स्त्रीसे अत्यंत प्रीति रहेगी.

३७-बामेहाथकी चारों अंगुलीयोंके बीचले पौरवेमें जितनी खड़ीरेखा हो उतने उसके बड़े दुश्मन-और जीमनेहाथकी अंगुली-योंके बीचले पौरवेमें जितनी खड़ीरेखा हो उतने उसके प्यारे मित्र होंगे.

३८-एकहजार आठ-एकमों आठ-या-बत्तीस लक्षणोंमें-एक भी लक्षण-पुंगेपुग स्पष्ट-जिसके हाथमें-या-शरीरमें हो-वो-एकही बहोत कुच्छहै, सारी उमर तक वही फल देता रहेगा, हां! इतना जरूर है कि-जो-सुलक्षण-या-कुलक्षण-बहोत माफ-और-बलवान होगा वह ज्यादा फल देगा.

३९-हस्तेरेखा दिखलाने वाला मनुष्य-उमदाफल-मीटाइ-या नगदरपया-हाथमें लेकर-रेखाज्ञानीके सामने जावे विनयके साथ-रूपया-या-फल-जो कुच्छ लेगया हो रेखाज्ञानीके मनुष्य रखे. यानी-भेट करे. रेखाज्ञानी उसकी जाति-कुल-और-धर्मश्रद्धा-देखकर फल कहे. पहले आयुष्यका हाल बयान करना चाहिये क्योंकि आयुष्य टुकी हो-तो-फल क्या काम आयगा. रेखाज्ञानी अगर-नास्तिक श्रद्धावाला हो तो धर्म पुरुषकों चाहिये उमकों अपना-हाथ न दिखलावे, अधर्मीओंकी विद्या सत्य नहीं होती. अधर्मीकों धर्मोंपुरुष हाथ दिखलावे यह योग्य भी नहीं है.

४०-जिस पुरुषके स्त्रीरेखा मौजूद है और कोई कुयोगसें उसका विवाह नहुवाहो तो अनुमान करलोकि-स्यात् इसने पराइ स्त्रीयोंसें संभोग किया है-या-करेगा. रेखाका फल मारा नहींजाता. क्योंकि-आठबरहके जो-कर्म जैन आगममें बतलाये है उनमें नामकर्मकी प्रकृतियोंमें रेखा लक्षण वगेराकी पैदाश कही, निका-

चितकर्म निष्फल कभी नहीं जाते. जरूर भोगने पड़ते हैं, इसलिये कहे सकते हैं कि-रेखाविज्ञान-बहुत ठीक और प्रमाण करने योग्य चीज है. लेकिन!-देखनेवाला होशियार होना चाहिये.

४१-जो पुरुष-अपने हाथकी अंगुलीयोंसे (१०८) अंगुल प्रमाण उंचा हो-वो-तेजस्वी होगा. क्योंकि-उत्तम पुरुष अपने हाथकी अंगुलीयों एकसां आठ अंगुल प्रमाण उंचे होते हैं (९.६) छतुं अंगुल उंचा-मध्यम पुरुष-और चोरासी अंगुल-उंचा हो-वो-सामान्य-और इसमें भी कम हो. वो दुखसे जींदगी तैर करेगा खड़े होकर लंबी दूर लेना और जीमने पगके अंगुठेसे डवाकर मस्तक तक नापना-फिर उमे दूरको अपनी अंगुलीयोंसे इस तरह नाप देखना कि-कितनी अंगुल प्रमाण दूर लंबी हुई,-इसतरकीबको कोई न समझ सके-ता-रेखाविज्ञानके भेदीको मिलकर पूछे. बिना शिखे पढ़े कोई काम ठीकठीक तौरसे मालूम नहीं होता.

४२-जिसके पांवके तलवेमें (९) नव अंगुललंबी उर्द्धरेखाहो वो-निश्चय-राजा-या-निर्ग्रंथमुनि बनेगा. जिसके पैरमें वज्र-हल या-कमलका-चिन्ह हो वो भी-राजा-या-निर्ग्रंथमुनि जरूर हो, जिसकी जंघापर थोड़े केश हो-और-रंगें-न दिखाई देती हो-वो-अच्छा आनंद भोगेगा. जिस पुरुषकी जंघा-हिरनजंघाकी तरह हो-पुन्यवानीकी निशानी है. जिसके पांवमें चक्र हो-उसके-बड़े भाग्य-समझना चाहिये जिसके पांवके अंगुठोंमें-या-अंगुलीमें-यवका चिन्ह उसे हकुमत मिलेगी. जिस पुरुषका-शुक्र-वर्जनदार-होगा-वो-प्रतापी-या-पंडित होगा. जिसका शुक्रपात जलदी होता हो-वो-लंबी आयुष्य-भोगेगा. जिसके पांवके तलवेमें-तोरण-

पद्म-अंकुश-और-वज्रका चिन्ह हो-वो-जहर राजा-या-मुनि हो-  
गा. जिस पुरुषकी चाल कागडेकी-उलुकी-या-कुतेकी तरह हो-  
वो-दुखसे जिंदगी तैर करेगा. जिस पुरुषका वीर्य सुगंधवाला  
हो-वो-स्त्रीयोंको-वल्लभ-लगेगा.

४३-जिसकी नाभी उंडी हो-वो-सुखी रहेगा.-कान-नाक-  
पैर-हृदय-हाथ-और-नेत्र-लंबे हो-उसकी आयुष्य लंबी जानना.  
अत्यंत बुद्धिमान्-अत्यंत कीर्त्तिमान्-अत्यंत शूरवीर-और-अत्यंत  
सुखी थोड़ी आयुष्यवाले होते हैं. सबबकि-इस कालमें ज्ञानीयोंने  
उमदावस्तुकी नास्ति फरमायी, जिसका नाक-तोतेके नाककी तरह  
अनीदार हो अच्छा है, नाकके दोनों छिद्र छोटे होना निहायत  
उमदा है. जिसका नाक हमेशा सुका रहता हो लंबी आयुष्य भो-  
गेगा. जिसका पुरुष चिन्ह वामीतर्फ झुका रहता हो-वो-स्त्री संभो-  
गको बहोत चाहे लेकिन! मिले नहीं. ललाटमें जिसके-एक-या-  
दो रेखा हो-उसकी उमर छोटी जानना. तीन-या-चार-रेखा हो  
उसके बड़े भाग्य-और-बड़ी उमर समझना चाहिये. जिसके शरी-  
रमें हाडके बजनदार हो-वो-दोलतमंद होगा. जिसके शरीरमें  
हाड-और-नख-न दिखाई देते हो-वो-सुखी रहेगा. जिसके शरी-  
रकी चमड़ी मुलाइम हो ऐश आराम ज्यादा भोगेगा. जिसकी  
आंखे लक्षणवती होगी उसे भोगबिलास बहोत मिलेगा.

४४-लक्षणवती आंखे उसको कहना चाहिय-कमलसमान  
खुबसुरत हो. दोनों कौने लाल-कीकी-श्याम-और-बीचमें सफेदी  
होना यही लक्षणवती आंखोके चिन्ह है. सफेदीकी जगह जिसके  
छाछी हो-उसे-स्त्रीकी तर्फसे आनंद रहेगा. हाथीके नेत्रकी तरह

जिसके नेत्र होंगे सेनापति पदवी भोगेगा. कबूतरकी आंख समान आंखवाला-कामी-होगा, मौरकी आंख समान आंखवाला शस्त्र न सुखी-न-दुखी. कागडेकी-और-मेंढककी-आंख-जैसी आंखवाला-पापी और चालाक होता है. लंबी आंखवाला लंबी उमर भोगेगा. सर्पके नेत्रकी तरह-नेत्रवाला-हमेशा रोगी रहेगा. दीन नेत्रवाला निर्धन-उंडी आंखवाला-दीर्घायु और-जल भरी आंखावाला दरिद्री रहेगा. एक आंखवाला दगलबाज-और-अँचाताणा-अपने मतलबमें पुरा हांगा. जिसकी आंखे विमारीके सववसे लाल-या-सफेद रहती हों-उसकी गिनती यहां नहीं है, यहां जितनी बात लिखी गई है स्वाभाविक नियमानुसार जानना.

४५-रेखा-चिन्ह-और-लक्षण-तीनोंको एक कह दो-कोई हर्ज नहीं. सबबकि तीनोंका मतलब एकही आता है, हां ! इतना जरूर कहेंगे कि-बाह्य लक्षणोंमें अंतःकरणका लक्षण ज्यादा फायदे मंद होता है. जिसका मन साफ और हिम्मपुरी है उसकी देव रक्षा करते हैं. चाहे उसके बाह्यलक्षण- कोई भी अच्छे-नहो-लेकिन! हिंमतमें पुरा हो-यानी-धीरजगुण करके निर्भय हो-उसको-अलबते! अच्छे लक्षणोंवाला कहना चाहिये. क्योंकि-सत्त्वगुण-सब लक्षणों से बढकर है. अनुयोगद्वारा सूत्रकी टीकामें कहा है कि-(सर्व सत्त्वे प्रतिष्ठितं.) सब लक्षण सत्त्वमें आजात है.

( पुरुषोंकेलिये रेखाविज्ञान-पुरा हुवा. )



## -[ अब स्त्रीयोंका रेखाविज्ञान सुनिये ]-



४६-जिसस्त्रीका मुख-गोल-और-केश-लंबेहो तो समझलो-पद्मनीके लक्षण है, जिसस्त्रीकेशरीरपर सौम थोड़ेहो-वो-दोलतमंद बनी रहेगी. पतले हृदयवाली-स्त्री-हरहमेश मीठाभोजन जीमेगी-और-स्वभावसे उदार होगी-जिसस्त्रीका कपाल छोटाहोगा-अच्छा नहीं, बड़े कपालवाली स्त्री-सुखी-रहतीहै. जिसस्त्रीके ललाटपर वामेपासे तीलहो-वो-हरजगह मान पावे. बहोत लंबी-और-बहोत ठींगणी स्त्री पतिका हुकम न मानेगी. और-कइतरहके दुःख उठायगी. जिसस्त्रीका नाक छोटा और खूबसूरत हो-वो-सुखसे जींदगी तैर करेगी. जिसस्त्रीके नाककी अणीपर तिलहो-वो-पतिका मुख थोड़ाभोगेगी. मांजरीआंखवालीस्त्री-बहोतबुरी होतीहै, कोइ शरूस उसकी संगतकर नफा न उठायगा. जिसस्त्रीकी-डाढी-या स्तनपर केश उगेहुवे हो-वो-पतिके सुखमेंरहित होगी.

४७-जिसस्त्रीके हाथमें धजा-चक्र-छत्र-तोरण-अंकुश-कुंडल हाथी-घोडा-रथ-तीर-चवर-जव-पहाड-मछली-चावल-वेदी-महे-ल-कलश-पद्म-त्रिशूल-तलवार-नगारा-और-मालाका-आकारहो उसकी दुनियामें तारीफ बढेगी-रानीकीतरह संसारमें उसका आदरसत्कारहोगा. और धर्ममेंभी उसकी श्रद्धा अडोल रहेगी. ये लक्षण यदि किसीस्त्रीके पांवमेंभी मौजूद-हो-तोभी-वही फल कहो जो उपर लिखचुके. जिसस्त्रीके शरीरपर केश थोड़ेहो-नींद-और पसीनाभी जिसके थोडा आताहो-पद्मनीस्त्रीके लक्षण है. जिस स्त्रीके स्तन गोलाकार-होठपतले-और-लालहो-वो-सदा सुखचैन

भोगेगी. जिसस्त्रीकी नाभी गंभीरहो-उसकेपास दोलत सदा बनी रहे, जिसस्त्रीके गालमें हसतेबख्त खड़े पडजाय-वो-सदा दूसरेकी ताबेदारी करती रहेगी. जिसस्त्रीकी जांघपर केश उगे हुवेहो-वो पतिकों दुःखदेनेवालीहोतीहै. जिसस्त्रीकी-जांघ-लोहीसेभरी-और-केशकरके-रहित हो-वो-बडेबडे ऐशआराम भोगेगी, जिसस्त्रीके हाथमें-काक-उल्लु-और-सर्पका-चिन्हहोगा बुरेदिन भोगेगी.

४८-कोयलके कंठसमान अवाजवालीस्त्रीके बडेभाग्य समझने चाहिये. उसका खजाना तर रहेगा. और-जहां जायगी आदर पायगी. जिसस्त्रीके दांत छोटे और पतले हो-वो-हरहमेश मीठाभोजन जिमेगी. जिसस्त्रीकी नाशिकाके दोनों छेक-छोटे-केश-पतले-और-गेहरेहो-जिसके नेत्रोंमें शर्म हो-ये-सब पद्मनीके लक्षण है. जिसस्त्रीके स्तनपर-और-मुंछकी जगह-केश-उगे हुवेहो-वो-जलदी विधवा होजायगी. जिसस्त्रीके पांवकी तर्जना अंगुली अंगुठेसें लांबी हो-वो-व्यभिचारिणी होगी. जिसके पांवमें सातअंगुललंबी उर्दरेखा-वो-राणीकीतरह हकुमत चलायगी. जिसस्त्रीके केश लालरंगके हो-वो-छोटी उमरमें विधवा होजायगी. जिसस्त्रीकी पीठपर केश उगे हुवेहो-वो-पतिके सुखसें थोडेरौजमें हीन हो जायगी. पद्मनी-हस्तिनी-चित्रिणी-और-शंखनीस्त्रीके-गुण लक्षण आगेचलकर-मानवधर्मसंहितामेंभी लिखना है इस लिये दिग्दर्शन-मात्र बतलाकर इसविषयकों यहांही खतम करते हैं.

( रेखांविज्ञान समाप्त. )

( इति अष्टांगनिमित्त संपूर्ण. )

## [ शकुनशास्त्र. ]



१-शकुन-दोतरहके है, एकदृष्ट-दूसराशब्द-दृष्टशकुन-वो-है जो कार्यारंभ करते वखत-या-परदेश जाते समय-नेत्रद्वारा दिखा-इदे, दूसराशब्दशकुन-जा-शब्दद्वारा सुनाइ दे.

२-जैनकेनिर्ग्रंथमुनि-राजा-हाथी-घोडा-मौर-बैल-राजहंस-और-पद्मनीस्त्री-या-स्त्रीपुरुषकाजोड़ला-परदेशजाते-या-घरआते हुवे मिले सबकाम फतेह होंगे, हुंठिये साधु-जोकि-मुंहके अगाडी कपडा बांध रखते है, वे-जैनकिताबोंकीरंहमें जैनी नही जैनाभा-सहै. सबबकि-जैनकिताबमें मुंहकेभागे कपडा बांधना किसी ज-गह नही लिखा.

३-परदेशजाते वखत-यदि-जिनप्रतिमा-फलफुल-मेहनेआभू-षण-घजापताका-छत्र-चषर-हाथी-घोडा-सुन्ना-चांदी-रथ-पाल-स्त्री-बाजा-वीणा-सरंगी-सितार-मृदंग-मलयागिरिचंदन-आरिसा जलभराघडा-रसोइकाबाल-दूध-दही-घी-मिठी-गोरोचन-सहेत-सुरमा-कमल-हथियार-पंखा-झारी-बैल-मौर-वनास्पति-सिंहासन रत्न-अंकुश-तांवा-विनाधुवेंकी अग्नि-चावल-सरसों-धोये हुवे क-पडे लेकर आता हुवा धोवी-तांवूल-मिठाइ-इतर-उमदा वर्णगंध-रस-और-उमदास्पर्शवाली कोईभी चीज हो-सामने मिले तो फ-तेह होगी. इरादा पूर्ण होगा-और-किसीतहरकी तकलीफ नही होगी. कोई किसीका भलाबुरा करनही सकता, जितने उपर लिखे-निमित्त है-सब-शुभाशुभके सूचक और द्योतके है. होना न

होना सब अपने पूर्वसंचितकर्मके आधीन है, लेकिन! हां!—इतना जरूर कहेंगे कि—अच्छे निमित्त मिलनेसे अच्छे होनेका—और बुरे निमित्त मिलनेसे बुरेका अनुमान किया जाता है, मनकी गति अस्थिर होनेसे अच्छे निमित्त पाकर कुछ धीरज आसक्ती है,—कोई अज्ञानी निमित्तज्ञानकों झूठा समझे तो उससे सर्वज्ञप्रणित तत्व झूठा नहीं हो सक्ता.

४—खुबसूरतपुरुष—या—स्त्री—अज्ञातपहने हुवे—सामने मिले अच्छा है, गर्भवती—रजस्वला—या—विधवा औरत—सामने मिलना अच्छा नहीं. माता विधवा हो और सामने मिलेतो कोई हर्ज नहीं. क्योंकि—माता—पुत्रकोलिये सदाहितकारिणी होती है. उंट—गधे—या भैंसेपर सवार हुवा—मनुष्य—परदेश जानेवालेकों सामने मिले निहायत बुरा है. हिजड़ा—या—रोता हुवा आदमी—अगर सामने मिल जाय तो बहुतही बुरा है. गांवनगरमें प्रवेश करते वरुत्त हसना गाना मना है. पेशवाइमें आये हुवे हसे—या—गायन करे कोई हर्ज की बात नहीं. लेकिन खुद गाना हसना ठीक नहीं. परदेश जाते वरुत्त अपने पीछे खालीघडालेकर कोई—स्त्री—या—मर्द आता हो निहायत उमदा है, जैसे—बो—जलभरकर घर आयगा देशाटन जानेवालाभी दोलत लेकर घर आयगा. सर्प—किरकाटिया—पछी—और—गोह—परदेश—जानेवालेकों आडे उतरे तो बुरा है. काम फतेह नहोगा. परदेश जानेवालेकी बायीतर्फ भ्रमरा आनकर गुंजार करे—या—फुलकारस पीतादिखाइदे अच्छा है कामफतेह होगा. परदेश जातेवरुत्त मुरघेकी अवाज सुनाइ देना—या—खुदनजरआना बहोत ठीक है इरादा पूर्ण होगा.

६-लडाइके लिये जानेवालेके-मिशान-या-रथपर-सखेरा-आनबैठे निहायत उमदा है जीत होगी. सखेरीको कइ लोग बाज-पंखीभी बोलते है. परदेश जानेवालेको चलते वरुत पहिलाकदम अटक जाय-हाथ पांवको ठोकर लगने-कपडा फंस जाय-या-बजा-बताका गिरपड़े-तो-देशांतरमें तकलीफ होगी. लुला-लंगड़ा-कां-णा-और-अंधा-सामने मिलना परदेश जानेवालोंके लिये तक-लीफकी सुरत है. लकड़ीका भारा लेकर कठिहारा मिले-बिछीयां दंगा करती दिखाइ दे-या-दुर्गंधकी चीज-सामने आना-किसी सु-रत अच्छा नहीं.

६-अंगारे-राख-हाडके-लकड़े-पथर-बिष्टा-तैल-गुद-चम-डा-चरबी-खाली और फुटा हुवा भांडा-नमक-सुकाघास-छाछ-कपास-अनाजके छीलके-रसे-केश-कालेरंगकीबस्तु-लोहा-वृक्षकी छाल-दवा-अर्गला-लोहेकी सांकल-खल-अकालवृष्टि-अशुभवर्ण गंधरस-और-अशुभस्पर्शकी चीज परदेश जाते वरुत सामने मि-लेतो अच्छानहीं. तकलीफ होगी.

७-हाथमें फल लेकर-औरत-या-मर्द सामने मिले-तो-देशा-टनीको जानना चाहिये फतेह होगा. सारसका जोडला चाहेकिसी तर्फ दिखाइ दे-या-दोनों एकसाथ अवाज करे-तो-देशाटनीको-फायदा जरूर होगा. एकीलासारस दिखाइ देना अच्छा नहीं. छत्री हाथमें लेकर तंबोल खाता हुवा कोई शरुर्ष सामनेचला आ-ताहो जानना चाहिये फतेह होगी. रोते हुवे आदमी शाय हा-वै-सा-मुर्दा-सामने मिलना बुरा है. कइ देशमें मुर्देका बाजेगाजेसें ले जाते है उसका मिलना बुरानहीं किंतु अच्छा है.

८-परदेश जाते वरुत पिछाड़ी और दाहनी तर्फका पवन चलता हो-  
तो अच्छा है फतेह होगी. घर आते वरुत भी मही पवन अच्छे जानना,  
सन्मुख-या-बायीतर्फका-वायु देशाटनकों जाते वरुत अच्छा नहीं.  
परदेश जाते वरुत-या-किसी कामकी नींव डालते वरुत-नोलिया  
दिखाइ दे-या-उसकी अवाज सुनाइ देतो-अच्छा है, काम फतेह  
होगा. चलते वरुत-तीतर-या-मुरघा-दाहने हाथकों मिलेतो फ-  
तेह होगी. गधा-बायेहाथकों-भोंके तो देशाटनीकों जलदी फायदा  
हो. बंधी हुई रोटी लेकर कोई सामने मिले तो निहायत उमदा है.

९-घरसे चलते वरुत अच्छा शकुन हुवा-और-जहां गये वहां  
पहुंचते वरुत भी अच्छे शकुन हुवे तो जानना चाहिये इरादा पूर्ण  
होगा. पहुंचते वरुतके शकुनसे चलते वरुतके शकुन ज्यादा ताक-  
तवर होते हैं. जब अपना चंद्रस्वर चलता हो उस वरुत वामे पाखे  
जो जो शकुन होयें पूर्णफल देयें. सूर्यस्वर चलते वरुत दाहने  
पाखे जितने शकुन होयें पूर्णफल देयें. खालीस्वरमें अच्छे श-  
कुन भी कमजोर होजाते हैं, पूर्णस्वरमें कमजोर भी ताकतवर होकर  
पूर्णफल देते हैं. घरसे निकसे और तुरत ही अच्छे शकुन हुवे तो स-  
मझ लो काम जलदी फतेह होगा, कोश दोकोश गये बाद चाहे  
जैसा शकुन हो वृषा है, शकुन उसीका नाम है जो अपने घर-या  
गांवके नजीकमें हो.-हां!-इतना जरूर कहेंगे कि-जो-शकुन नजीक  
दिखाइ देगा जलदी फल देगा. दूर गये बाद दिखाइ दे-वो-देरीसे  
फल देगा. एकदफे खोटे शकुन हुवे तो थोड़ी देर ठहर जाना ठीक  
है, दूसरी दफे भी ठहरना कोई हर्जकी बात नहीं, तिसरी दफे खो  
टे शकुन होतो जानना चाहिये मुसाफिरीमें जरूर बिगाड होगा,

शकुनशास्त्रका लेख है कि-सज्जन-शकुन-और-निमित्तिया-मना करे उसवरुत परदेश जाना अच्छा नहीं. तकलीफ होगी.

१०-शब्दशकुन उसकों कहते हैं जो शब्दद्वारा देखा जाय जैसे कोई शरूश किसी कार्यकी नींव डालने लगा-या-देशाटनकों चला-चलते ही किसी दुसरेके मुखसे सुनाकि-फतेह होगी बड़ा आनंद उठाओगे-तो-जानना चाहिये शब्दशकुन अच्छे हुवे. अ-गरचे-ऐसा सुनाकि-तुमारे काममें गलती है-दूब जाओगे-तुमारे भाग्यमें ही अंधेरा दिखता है-तो-जानना चाहिये शब्दशकुन अच्छे नहीं हुवे. इसलिये मुनासिब है कि-शब्दशकुन भी-खयालमें रखना. यह बातभी जानने योग्य है कि-निमित्त भी एकसे एक बलवान्-और-कमजोर-होते हैं. जैसे वारसें-तिथि-बलवान्-तिथिसें-नक्षत्र-बलवान्-नक्षत्रसें करण-करणसें लग्न, लग्नसें निमित्त निमित्तसें मनके भाव-मनके भावसें पूर्वसंचितकर्म-और-पूर्वसंचितकर्मसें धर्म-बलवान् होता है. सबबकि-धर्मके प्रभावसें सबकाम फतेह होते हैं. मुनासिब है कि-धर्मपर ज्यादा ध्यान रखे.

( इति शकुनशास्त्र. )

## [ कालज्ञान. ]



१-शुक्रके अस्त-और-बृहस्पतिके उदय अस्त-मंगलके च-  
 कित-और-बुधके उदय अस्त-तथा-राशिप्रवर्चनके समय-ज-

हर वृष्टिहों, इसमें संदेह नहीं. वृष्टिकालमें जब कन्याराशिपर मंगल और बृहस्पति-इकठे मिले वरसातकों रोके, चौमासेकेकालमें ऐसा भी कहते हैं कि-आगे मंगल पीछे भान-फिर वर्षाकी निश्चय हान,—

२-असाढ़ सुदी एकमके रौज-जितना पुनर्वसुनक्षत्र-हों-उतना उस चौमासेमें वरसात होगा, अर्थात् ज्यादा होंतो-ज्यादे-और-कमहोतो कम-जानना. (भावार्थ)-पुनर्वसुकों पीछली अमावास्यामें जितना व्यतीत हुवाहों उतना पडवेके पुनर्वसुमें मिलाकर-साठ घटाना अगर कुछ बचे तो उमदावृष्टि होगी-और-घटे तो कम होगी, चैत्रमहिनेकी पंचमीके रौज-रोहणी-सप्तमीकों आर्द्रा-और-नवमीकों पुष्य-हों-और-इनतीनों ही दिन वृष्टि होजाय तो जानना चाहिये चौमासा-सुका-जायगा.

३-आषाढ सुदी पुनमके रौज अगर पूरवकी पवन चले तो वरसात अच्छा होगा-घास ठीक पैदाहोगा-और-लोक आनंद भागेगे. अग्नि कौनकी पवन चले तो-वरसात थोड़ा होगा-अन्न भी थोड़ा-और-रैयतकों तकलीफ पड़ेगी. दखनकी पवन चलेतो घास नहोगा-और-राजाओंको-कलेश होगा. नैऋत्यकी पवन चलेतो-वरसात थोड़ा होकर दुकाल पड़ेगा. पश्चिमकी पवन चले तो सुकाल, वायव्यकी पवन चले तो सारावर्ष प्रचंडवायु चलता रहेगा. उत्तरकी-या-ईशानकौनकी पवन चले तो अन्नबहोत पैदा हो और रैयत सुखी रहे. जिस देशमें जैसी पवन चले उस देशमें वैसा फल जानना.

४-मंगलके निचे गुरु-आर-गुरुके निचे-शनि-आजाय तो



दुनियाकों भारी तकलीफ हों,—जैसे मेषराशिपर मंगल-मीनराशि पर बुध-और-कुंभराशिपर शनि हो—(अथवा)—मेषराशिके विश्वसे तीस अंशतक मंगल-दशमें विश्वतक गुरु-और-शून्यसे दशअंशतक शनि हो—उपर लिखा योग जानना. तुल-वृश्चिक-घन-मकर-कुंभ-और-मीन-ये संक्रांति अपनी अपनी तिथिके रौज लगे तो दुनियाकों तकलीफ रहे—दुकाल पड़े—और-देश लुटजाय, अर्थात् सप्तमी-अष्टमी-नवमी-दशमी-एकादशी-और-द्वादशीके रौज अनुक्रमसे लेना. मंगल-सूर्य-बृहस्पति-और-शुक्र ये-चारग्रह एकराशिपर इकठे हो-तो-दुनियाकों-तकलीफ रहे-रोग फैले-और-अन्न महँगा बीके. अगर कोई सवाल करेकि—संपूर्ण दुनिया कभी सर्वथा सुखी-या-दुखी-नही देखी जाती फिर उपर लिखी बात कैसे सच ठहरेगी! ( जवाब. )—यह बात ठीक है कि—सारी दुनिया एकसरस्वी नही होती उपर लिखी बात बाहुल्यता आश्रित जानना चाहिये,—और-ये उपर लिखे-तथा-अगाडी जो जो योग-योग लिखे जायगें-बहुधा करके आर्यखंडकेरी साथ ज्यादा संबंध रखते हैं. सबवकि—सूर्योदयद्वारा उपर लिखे योग ज्यादातर इसीसे संबंध धराते हैं, देशांतरकी गणित न्यायी भी है.

५-शनिश्चरके स्थानपर—( भावार्थ. )—मकर-वा-कुंभराशिये—सूर्य मंगल और शुक्र-तीनों इकठे हों—और-उनसे चंद्रमाभी जामिकेतो दुर्भिक्षका सूचक है. वृषराशिपर मंगल-और-राहु-इकठे होवो छठे महीने दुकाल पड़नेका संभव है. सूर्य-चंद्र-मंगल-बुध-बृहस्पति-और-शनि-ये छग्रह एकराशिपर इकठे हो तो राजा व-जाकों तकलीफ पैदा हो. बहसोम संवत् ( १९५६ ) में आगगा.

शुक्र-शनि-और-मंगल-ये-तीन ग्रह-वृषराशिपर आवे तो देशमें उपद्रव हो.

६-वृहस्पतिसँ सातमें शनि-बारहमें राहु-पाँचमें मंगल-और-दूसरे सूर्य-आजाय उस वख्त देशमें टंटे झगडे फैले-तकवार-चले देश लूटजाय-और-बुकाल पड़े. इनचारों योगोंमेंसे एकयोग मि-कनाभी बुराहै चारोंही मिल जाय फिर कहनाही क्या!-आर्द्रा तथा स्वातिनक्षत्रपर शनि और राहु बैठे हों और उस वख्त चै-द्रमा-रोहणी शकटको बंध डालेतो देशमें बुकाल पड़े. जिस संव-त्में कर्क-और-मकरसंक्रांति-रवि मंगल-या-शनिवारके रौज ऊँचे उस वर्षमें कड़ाई दंगे बहोत हो. और बड़े हाकिमोंको तकलीफ रहै. जबतक मीनराशिपर शनि-कर्कपर वृहस्पति-और-तुलापर मंगल रहे दुनियाके बहोतसे लोग तकलीफ भोगे, किसी वर्षमें तीनोंही योग मिल जाय तो बहोत ही बुरा है, अषाढ बदी (१०) मीके-रौज-रोहणीनक्षत्र हों तो देशमें अनाज बहोत पैदा हो. दु-मियाका तीनहिस्सा सुखी रहे. ग्यारसके रौज होंतो बरस ठीक ठीक-और-बारसके रौज होंतो-बुकाल पड़े. यह अषाढ बदी(१०) मी-गुजरात देशकी अपेक्षा है. दिल्ली मंडलके निकट श्रावणबदी दशमी जानना.

७-आर्द्रानक्षत्रपर-जब-सूर्य-और-केतु मिलकर आवे उसके आगे एक महिने तक अनाज मइया रहे, रेवतीनक्षत्रपर सूर्य हो-और-उस वख्त-स्वातिपर मंगल आजाय राजाओं द्वारा रेवतकों दुख भोगना पड़े. चैत्रमासमें-गुरु शुक्र-एकराशिपर इकठे होंतो-एकमास तक-धी-तैल-और-सूतका संग्रह करना चाहिये, अगले

महिनेमें फायदेमंद होगा. जब मीनराशिपर शनि-हों-उसवख्त कर्कका वृहस्पति और तुलका मंगल होतो-महादुकाल पड़े.

८-मूलनक्षत्रपर शनि आवे उन दिन<sup>१</sup>में अगर स्वातिपर बुध और-मघापर चंद्रमा आजाय-उस वख्तका संग्रह किया हुआ अनाज जरूर फायदेमंद हो. श्रवणनक्षत्रपर जब क्रूरग्रह-( भावार्थ ) सूर्य-मंगल-शनि-राहु-और-केतु-आवे तो अनाज और घास महेघा बीके, धनिष्ठानक्षत्रपर शनि-और-मंगल-दोनो इकठे होतो वृष्टिकी हानि-और-घासकों अभाव करे, यह योग संवत् ( १९३४ ) में-था. चोतीसाकाल छिपा हुआ नहीं है. वृहस्पति-और-शनि-एकराशिपर-या-एक दूसरेके सातमें धरपर होतो रैयतकों दुख-और-अनाजका क्षय जानना. यह योग संवत् ( १९५६ ) के-मृग-शीर्ष महिनेमें आयगा. वृहस्पति-सूर्य-शुक्र-शनि-और-मंगल-एकराशिपर इकठे होतो-राजाओंको पीडा-लडाइकी तेजी-और-अनाज-महघा होगा. यह योगभी संवत् ( १९५६ ) में-आयगा, शनि-और-राहु-एकराशिपर आवे जब अनाज महघा बीके-और राजे महाराजोंको-तकलीफ रहे, एकराशिपर कोईसे सातग्रह जब इकठे हो बहोतसे देश लूट जाय और दुकाल पड़े. जब वृहस्पति-का अतिचार हों तब राजाओंको भय-और-प्रजाकों पीडा जानना. अधिकमासमें-मंगल-या-वृहस्पतिका राशि प्रवर्तन होना अधिकवृष्टि होनेका सूचक है.

९-तेरह दिनका पखवाडा भयजनक होता है. हरेक महिनेके कुभ्रपक्षमें तिथिका बढना-और-शुक्लपक्षमें तिथिका घटना-अनाजकी तेजी होनेका द्योतक है. और कुभ्रपक्षमें तिथिका घटना

शुक्लपक्षमें तिथिका बढ़ना-अनाजकी मंदी होनेका कारण है, जेठ महिनेमें आद्रासें लमाकर नवनक्षत्र सूके जायतो चौमासेमें बरसात बहोत बरसे. एकदो-या-उपर कहे हुवे संपूर्ण नक्षत्रके दिनोंमें अगरचे बरसात बरसे तो चौमासेमें बरसात बिल्कुल न बरसेगा.

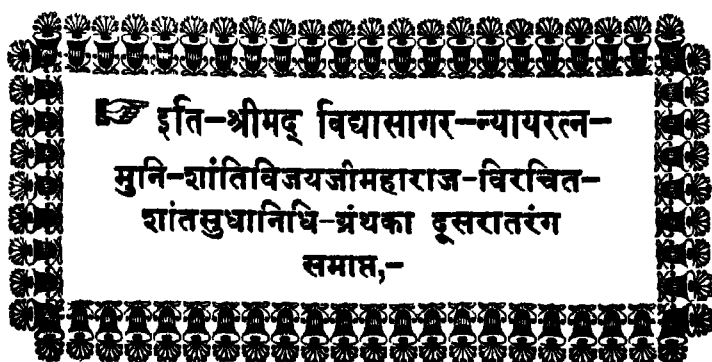
१०-आषाढ वदी पंचमी (गुजरातकी अपेक्षा जेठ वदी) के-रौज चंद्रमा बादलोंमें उदय हों-तो-बरसात अच्छा होगा. निर्मल आकाशमें उदय होतो बरसात थोड़ा होगा. तीज-चोध-अष्टमी-नवमी-और-चौदस-इन तिथियोंमें-(अथवा) रवि-मंगल-शनि-श्वर-कों-आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य आवे तो अच्छा नहीं, और शेष तिथिवा-रकों आवे तो अच्छा है तथा-भरणी-कृत्तिका-आर्द्रा-मूल-ज्येष्ठा-अश्लेषा-मघानक्षत्र-मूल-गंड-व्यतिपात-व्याघात-परिघ शिव-व-घृत-अतिगंड-इनयोगोंमें आवे तो अच्छा है और शेषमें आवे तो अच्छा नहीं. लेकिन!-जब सूर्य-आर्द्रानक्षत्रपर आवे और उसी रौज बरसात हो-तो अच्छा होतेभी देढ़ महिनेतक वृष्टिका अ-भाव जानना.

११-कार्तिक सुदी पुनमके रौज भरणीनक्षत्र हों-तो अच्छा नहीं. माघसुदी सप्तमी चंद्रवारी हो तो-बहोतसें देशोंमें दुकाल पड़े और-राज्यकी तर्फसें लेन रहे. फाल्गुन महिनेमें शुक्र अस्त हो तो भादवेमहिनेतक अनाज महंगा बीके. मघानक्षत्रपर-शनि बक्री हो-तो-छत्रपति राजाओंको भय पैदा होनेका कारण है. जिस महिनेकी पुनमके रौज मासनक्षत्र-घड़ीयोंमें-कमहो-तो अनाज व-गेरा सस्ते बीके. सय (अथवा) अधिक होतो महंगे बीके. जैसे

कातिकसुदी पुर्णिमा तीसघडी-बारांपल है उस दिन मासनसत्र पच्चीसघडी-सातपल हो-तो-अनाज बगेरा शस्ते बीके,-ऐसा जानना. अगर किसी समय एकराशिपर आठग्रह इकठे हो जाय-तो जानना चाहिये निहायत बुरा होगा.

१२-जितनी बातें उपर लिखी गई हैं भरसे करने योग्य है. इतनेपर भी कोई बात न मिले तो उसपर हठ करना मुनासिब नहीं. आजकल तादृशज्ञानी नहीं रहे-जो-भूल न जाय. भूल चूक सबके पीछे लगी हुई है. उपयोगी बात जानना और दूसरोंको विदित कराना यही ग्रंथकारोंको इरादा रहता है. इसलिये-मैं-आशा करता हूं कि-सज्जन पुरुष तात्पर्यपर ध्यान देयेंगे.

( इति कालज्ञान समाप्त. )



## [ मानवधर्म संहिता. ]

(१)—मानवधर्मसंहिता हजारों ग्रंथोंका सार है. इसके पढ़नेसें अलबत्ते !—थोड़ा पढ़ा हुआ भी—बहुत कुछ फायदा उठा सकेगा. ज्यादा करके इसमें गृहस्थ धर्मका बहुत हाल है. धर्म—अर्थ—और—काम—यथासमय पालनकरना गृहस्थोंका जरूरी काम है. इम लेख-में कई बातें ऐसी आयगी जिसको पढ़कर अज्ञानी लोग उल्टा विचार करेंगे. लेकिन ! हमको यहां उनकी कोई परवाह नहीं. तीर्थकर—गणधरोंने यह नहीं फरमाया कि—सच बात लिखते—अज्ञानी-को हानि पहुंचती होंतो नहीं लिखना. बल्किन !—घंटानादकेशाथ फरमाया है कि—सच बातको बेधड़क होकर लिखो. कई लोग कहेंगे—साधु होकर शृंगाररस वगेरा क्यों बयान किया ?—( इसके जवाबमें ) इतनाही कहना काफी है कि—तीर्थकर गणधर—साधुये-या—गृहस्थ ?—अगर—साध थे—तो—काह्ये !—उनोंने—शास्त्रोंमें शृंगार-रस क्यों वर्नन किया ?—क्या ! उसको वांचकर कोई शरुश काम भोगमें ज्यादा ध्यान देगा तो उसका पाप तीर्थकर गणधरोंको ल-गेगा !—कभी—नहीं !!—यथार्थ बात वर्नन करना ज्ञानीयांका धर्म है. समजनेवाले उल्टा समझे तो—बे—दूबेंगे. उनोंने ऐसा पाप—क्यों—कि-या ?—जिससे अज्ञानी हुवे ?—जो—जैसा करेगा वैसा फल पायगा, यह सिधि सडक है. इसे तोडनेवाला कोई नहीं जन्मा. जो बात सदाके लिये सर्वोपयोगी हों—उसका बयान करना ग्रंथकारोंका ज-रूरी काम है. दुर्जनोके नाक चढ़ानेसें क्या होता है ?—द्वादशांग-

बानीके ज्ञानसें कोई बात छीपी नहीं. हां ! इतना जरूर है कि—जो बात जिस वख्त पकड़ने योग्य है पकड़ना—और—छोड़ने योग्य है छोड़ देना.

(२)—मनुष्यों के कर्तव्य धर्मका जिसमें वर्नन किया गया हों उसीका नाम—मानवधर्म संहिता—है, बस !—हमको यहां पहिले यही कहना मुनासिब आया कि—गृहस्थोंको किस वख्त—और—क्या क्या करना चाहिये ?—प्रतिदिनचर्या—जन्मचर्या—और—अंतिमक्रिया—इरे-ककों जानने योग्य है. सवेर वख्त—जब—चारघड़ी गत बाकी रहे नींद छोड़कर जाग्रत होना अवलदर्जेका काम है, दूसरा दर्जा दो घड़ी रात रहते—और—तीसरा सूर्य चढ़े बादका है. दिन चढ़े जाव और सौते रहना चतराईकी बात नहीं. जाग्रत होतेही पहिले—स्वरोदय ज्ञानका—विचारकरना चाहिये. चंद्रस्वर चलता होतो—बाया पांव—और—सूर्यस्वर चलता होतो दाहना पांव जमीनपर रखना अच्छा है. सुखुम्नास्वर चलता होतो पलंगपर ही बैठे रहकर परमेष्ठिका ध्यान करना ठीक है. सुखुम्नास्वर—दशमिनिटसें ज्यादा नहीं चलता—स्वरोदयज्ञानका भेद इसी ग्रंथमें लिखा गया है—दूसरेतरंगमें—बाच लो.

(३)—पलंगसें उतरकर मलमूत्रकी पीढाकों दूर करें—और—साफ होकर मंत्राधिराजका स्मर्ण करे. तीर्थबंदन—या—स्तोत्र वगेरा जो कुछ याद हो—मनमें पढ़े, कुछ भी याद न होतो निचे लिखे श्लोक पढ़ लिया करे.

( अनुष्ठुप् इत्तम्. )

मोक्षमार्गस्य नेतारं—भेत्तारं कर्मभूभृतां,  
ज्ञातारं विश्ववस्तूनां—बंदे तद् गुणलब्धये. १

जिने भक्ति जिने भक्तिः—जिने भक्ति दिनेदिने,  
 सदा मेस्तु सदा मेस्तु—सदा मेस्तु भवेभवे. २  
 नहि त्राता नहित्राता—नहित्राता जगन्नये,  
 वीतरागसमो देवो—न भूतो न भविष्यति. ३  
 वीतरागं स्मरन् योगी—वीतरागत्वमश्नुते,  
 सरागं ध्यायतः पुसां—सरागत्वं तु निश्चितं. ४  
 दर्शनेन जिनेन्द्राणां—साधूनां वंदनेन च,  
 न तिष्ठति चिरं पापं—छिद्रहस्ते यथोदकं. ५  
 अर्हमित्यक्षरं बह्व वाचकं परमेष्ठिनः,  
 सिद्धचक्रस्य सद् बीजं—सर्वतः प्रणिदध्महे. ६  
 मंगलं भगवान् वीरो—मंगलं गौतमः प्रभुः,  
 मंगलं स्यूलभद्राद्याः—जैनधर्मोस्तु मंगलं. ७

इन श्लोकोंको—पढ़कर जो कुछ व्रतनियम धारना हो दिल-  
 में धार लेवे. देवदर्शनको जाना तो शरीरसें साफ होकर जाना  
 चाहिये, संभोगके वखतकी अथुचि बिना साफ किये जो लोग द-  
 र्शनको जाते हैं अच्छा फल नहीं पाते, कइ देशोंमें ऐसी रक्षम भो  
 देखी जाती हैकि—स्त्रीयें नापाक ही उठकर देवदर्शनको चली जा-  
 ती है यह बात ठीक नहीं. संपूर्ण अंगका—या—पंचांग ज्ञान करके  
 जाना चाहिये.

(४)—सवेरके वखत जंगलकी हवामें घूमना बहोत फायदेमंद  
 होता है. दोलतमंद गृहस्थ—या—राजा—बादशाह हो—तो—हाथी घोड़े-  
 पर बैठकर—या—गडीपर सवार होके—जंगलकी—हवा लेना चाहिये.



साफ हवा सेवन करनेसे शरीरकी ताकत बढ़ती है. बीमारी मिटती है और दिलको आराम मालूम देता है. जो लोग पापके प्रभावसे दूसरेके ताबेदार-या-गरीब है उनको सवारीका योग नमिले तो पांवसे घूम आया करे. जो लोग गादी तकीयाके नोकर है उनको अलबते !-हमारी शिक्षा कभी नहीं रुचेगी, लेकिन !-उन्होपर हमारी निगाह नहीं है. हम यहां मनुष्योंके जरूरी काम लिखनेको बैठे हैं, जिनको न रुचे मत मानना. शास्त्रोंमें जो सुस्ती उठानेके लिये मल्लयुद्ध करना लिखा है उसीका दूसरानाम पहलवानोंकी कुस्ती कह दो कोई हर्जकी बात नहीं. ऐसी कुस्ती करना कोई जरूरत नहीं जिससे शरीरको भारी नुक़शान पहुंचे. गेंदखेलना-कोश दोकोश पैदल फिर आना-जलमें तैरना-या-जिस मेहनतसे शरीरपर थोड़ा मा-पसीना आजाय-वैसी कसरत करना मना नहीं. कसरतका नतीजा यही है कि-जिससे सवरगोंको मेहनत करना पड़े. सबसे अबल दर्जेकी कसरत वही है जो शुभह और व्याम-जंगलकी साफ हवामें घूमना. दंड पैलना लडकोंकी तरह उठ बैठ करना अच्छी कसरत नहीं. किंतु लडकपन है.

(५)-कसरत करनेसे अनाज अच्छी तरह पच जाता है, रक्त भ्रमण ठीक होता है. जिसदिन शरीरमें कफ ज्यादा मालूम दे उस दिन जरूर परिश्रम उठाना चाहिये. बिल्कुल भूखे-या-पेट भरकर भोजन जिमेबाद-तुर्त कसरत करना ठीक नहीं. बूढ़े आदमीओं-को-जोकि-खुद कमाता रूत हो चुके हैं उनको कोई जरूरत नहीं कसरत करे. कइ स्त्रीयें हरदम घरमें बंठी रहकर कोई काम नहीं करती यह भी एक बीमार होनेकी निशानी है. लाजिम है कि-घरके

काममें लगी रहे और चलती फिरती भी रहे. शरीरमें जब थोड़ा सा पसीना आजाता है उस वस्तु ठंडी हवासे बचना चाहिये. जैसे कामभोग सेवन करके बचते हो. पसीना आनेसे शरीरके बुरे द्रव्य बाहर निकल जाते हैं. अगर पसीना निकलना रुक जाय-तो-बे-बुरेद्रव्य शरीरमेंही रह जाय-और रोगकी जड़ लगे.

(६)—साफ हवा शरीरमें प्रवेश करे तो जानो लाख औषधि सेवन किइ, इसी लिये कहने वालोने कहा है कि—सो दवा—और एक हवा,—श्वासमार्गमें जब कोई रोग पैदा हो जाता है शरीर-का लोही भो बिगडने लगता है. इसी लिये साफ हवा लेनेकी जरूरत है. लोहीका खजाना हृदय है. वामे स्तनके निचे जठराग्नि तप्तमान हो रही है. उसीसे शरीरके सब द्रव्योंका जललन होता है. फेंफड़े छातीमें दोनों तर्फ स्वाश्वोस्वास लेनेके यंत्र है. बुरी ह-वासे इस यंत्रकों-और इस यंत्रसे संपूर्ण शरीरकों नुकसान पहुंच-ताहै . कुबे-बावडी-नदी-नालियां-पाखाने-गंदे जलका तालाब-और जहां-गधे-सूअर-बैठते हों-वहांकी हवा जरूर बिगडी हुई र-हेती है. कसाइ-रंगरेज-और-चमार-जहां बसते हों-मर्दे गाढनेकी या-जलानेकी जगह जहां गांवके पास हों-वहांकी हवा भो जरूर बिगडी हुई रहती है. बिगडी हवाके पास रहनेसे विस्फोटक-दाइ सिरमें चकर आना-बगेरा रोग पैदा होता है. इस लिये गंदी ह-वासे बचाव रखना बहोत ठीक है. यह बात सबसे अवल दर्जेकी है कि-पूर्व संचितकर्म रोग-किसीका रौका नही रहता. लेकिन!-यहां जो कुछ कहा गया है व्यवहार नयको आश्रितहोकर कहा है.

(७)—(मलमूत्र त्यागनेकी विधि)—दिशा जंगल जाना तो दूर

जगहपर जाना चाहिये. देवालयके पास-या-मशानमें दिशा जंगल जाना ठीक नहीं. मलमूत्रकी पीडाकों रौकनेसें आंखोंकी तेजी बंद होती है. सिरमें दर्द-बगेरा कइ उपद्रव पैदा होते हैं. छींक-उल्टी-चबासी-और-प्यास-रौकनेमें शरीरकी तंदुरास्ति बिगडती है. नींद बातोत्सर्ग-श्वास-वीर्य-और-आंसु-आते हुबेको रौकनेसें कइ त-रहके विकार पैदा होते हैं. जिसकों छींक आते ही एकशाय-वीर्य-पैशाब-और-मल-छूट जाय उसकों जानना चाहिये आयुष्य अब थोडा रहा धूपसें जलती हुई जमीनपर-छतपर-या-पथरकी शिलापैर-पेशाबकरना बहोत नुकशानकारी है. सबबकि-सूर्यके तापसें उसमें जितनी गर्म हवा इकठी हुई है इंद्रियद्वारा प्रवेशकरके बडेबडे रोग पैदा करती है. गुप्तमोरीमें जहांकि-सदा आर्द्रता ब-नी रहती हो पैशाब करना कोइ चइतराईकी बात नहीं. धर्मशास्त्र के कायदे मुजब बडा पाप लगता है. जो लोग नास्तिक श्रद्धावा-ले हैं इस बातको जूठ समझे तां उससें धर्मशास्त्र झूठे नहीं होसकते. सर्प-या-उंदरके-बिलमें पैशाब करना महामूर्खोंका काम है. नजरे देखी हुई बात है कि एक शरुशने एक बिलमें पैशाब करना थुरु किया. उसकी धार जब भीतर पहुंची तुरंत उसमेंसें एक सर्प निकल आया. इधरसें पैशाब करनेवाला मारे डरके ऐसा भगाकि-सब कपडे खराब हुवे और लोगोने हांसी किइ, कहिये! क्या!! फायदा हुवा!—

(८)-दांतूनकिये बिदूनकोई चीज मुंहमें डालनी नहीं चाहिये. जो लोग हरहमेश दांतून नहीं करते हैं उसके मुंहमें ऐसी बदबू आती है कि-उसके पास बैठनेकों जी नहीं चाहता. जिसके क-

पडे और शरीर मैला उसकी बुद्धि भी मैली होती है. इस लिये उचित है कि—हरहमेश दांतून करके पीछे कोई चीज मुंहमें डालना. जिसरौन मुखमें छालें पडे गये हो उस दिन दांतून करनेकी जरूरत नहीं. जिसके मुखमें दाह होता हो—कंठ बैठ गया हो—होठ फट जाते हो—उनको चाहिये धीके कुरलेकर—या—हरेनालियरकी गिरि चावे, जरूर फायदा होगा. दंतकाष्ठ बबूलका करना चाहिये. अगर नमिले तो निचे लिखा हुवा मज्जन बनाकर अंगुलीसें दांतो-पर घिसना—जिससें वात—पित्त—और—कफ—तीनों तरहके रोग दूर होकर आराम मिलेगा. (दांतोके लिये मज्जन) —हरडे तोलाएक—बहेडे तोलाएक—आवले तोलाआधा—माजुफल तोलादेढ—सफेदकथा तोलाएक—छोटीइलाची तोलादो—कपूरकाचली तोलाआधा—मोल-सीरीकीछाल तोलादो—पठाणीलेंध तोलाआधा—संखद्राव तोला-आधा—और—नागरमोथ तोलाआधा—इनचीजोंको—कुट पीसकरक-पडछान करना—और—बोतल भर रखना, सवेरबरत थोडासा ले-कर दांतोंकी जडमें मसलनेसें बिल्कुल आराम मिलेगा, बदबू मिट जायगी. और अनारके दानोंकी तरह दांत चमकीले बने रहेंगे.

(९)— दातूनकरके—चमेली—या—गुलाबके सुगंधि तैलसें शरी-रको मर्दनकर स्नानकरना चाहिये. तैलके मसलनेसें शरीरकी रंगें पुष्ट होती है, जिसको तैरना न आता हो गेहरे जलमें कुदना अच्छा नहीं. साफ और छाने हुवे जलसें नहाना और हरहमेश तिलक लगाना आर्यलोगोंका नित्यकर्त्तव्य है. नंगे होकर स्नानकरना म्ले-च्छोंका काम है, कितनेक देशोंमें ऐसी रसम देखी जाती है कि—स्त्रियों बिल्कुल नंगी होकर नहाती है, लेकिन!—यह रसम बहोत

बुरी है. एकसाड़ी-या-बुपट्टा-पहनकर पीछे नहाना चाहिये. नहान कर कपड़े साफ पहने-चाहे थोड़ी कीमतके हो-कोई हर्ज नहीं. लेकिन! मैले कपड़े पहनना बहोत बुरा है, जिसके कपड़े मैले उसकी बुद्धि भी मलीन रहती है. अगर कोई सुवाल करे कि-साधुओंके कपड़े बहुधा मैले होते हैं तो-क्या!-उनकी भी बुद्धि मलीन समझना चाहिये? (जवाब.)-साधुओंके लिये भी बस्त्रका धौना और साफ रखना धर्मशास्त्रोंने फरमाया है कौन कहता है मलीन रहना! अनसमझदारोंके लिये सभी जगह अंधेरा है. कोई धर्म-शास्त्र-या-लौकिक व्यवहार-यह नही कहता कि-मलीन रहो,-

(१०)-अच्छे कपड़ोंसे मनुष्यकी इज्जत बढती है. शहीरी-और-इतर बेचनेवाला-जितने साफ वस्त्र पहनेगा उसके मालकी तारीफ होंगी. इतर गुलाबका-सब इतरोंका सिरदार है, इसकी ताहसीर ठंडी होती है. बाराह आनेसेलेकर तीन-या-पांचरुपयेतीले तकका आजकल ज्यादा इस्तिमाल किया जाताहै. यूँतो जितना बढाओ बढ सकताहै, लेकिन!-इतरकी परीक्षा हरेकसें नहीं हो सकती. जिनोंने बहोत इतर मुँधे हों-खरीदे-या-बनाये हों-बेही-अच्छी तरह पहिचान सकते है. अच्छे इतरकी परीक्षा यह है कि-थोडासा लेकर कागदपत्र डालदिया जाय-और-निचे अंगुल देव अंगुल दूर अंगारा आगका दिखलाया जाय उसीदम मिनिट देव मिनिटमें उड जायगा. जिसमें रोसे बगेराका बेल होगा देरीसें-यानी-पांच सात-या-दस मिनिटमें उडेगा, चंदनकी तैलकीभी परीक्षा इसीबजह समझलेना चाहिये. जिस इतरका फुमा दीनोंका-नोंमें लगाकर रातको कपड़ा ओढकर सीजाओ और खरीद उ-

इसकी खुशबूसेतर होजाना वही अच्छा जानो. पनराह रोज जिस इतरके फुल्लेकी खुशबूवनी रहे उसकी जमावाच है, १-बहइतर चार पांच रूपये तोलेसे कम नहोमा. मदिनेतक खुशबूरहे-बो-सात आठ रूपये तोलेका होता चाहिये.

(११)-इतरचंपेका-इसकी ताहसीर गर्म-बारांआने तोलेसे लेकर पांचरूपये तोले तकका ज्यादा इस्तिमाल कियाजाता है. इतरकेबडेका-इसकी ताहसीर ठंडी और परोपकारी है, जो शरुअ केबडेकाइतर लमाताहै उसकी खुशबू उसेकम और दूसरेको ज्यादा मालूम देयगी, इतरमोतियेका-इसकी ताहसीर न-ठंडी-न गर्म,- इतरकेशरका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरचमेलीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरखसका-इसकी ताहसीर ठंडी,-इतरहीनेका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरसुइका-इसकी ताहसीर ठंडी और माहील, इतरमौलसीरीका-इसकी ताहसीर ठंडी, और माहील, इतर गुलदा-उदीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरपनडीका-इसकी ताहसीर न ठंडी-न गर्म, इतरसुमरेका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरमदनमाल-तीका इसकी ताहसीर ठंडी, इतरअरमजाका-इसकी ताहसीर गर्म, मंकीलोग इसको मुष्कअंबरकाइतर कहकर बेचते है. सबबकि-इसकी खुशबू अंबर और कस्तूरीसे कुछ मिलजाती है. इतर केतकीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरमंदेका-इसकी ताहसीर माहील, चंपेके इतरसे लेकर इतरगंदेतक जितने नामलिखे बासंआने तोलेसे लेकर तीज्जरूपये तोलेतक अच्छे मिलसकते है, ज्यादा दिन मदिनेतकरके उवाराजाना तो ज्यादा किमत भी होसकती है, अलम किमीके घरका नही, जोको उसीका है, जैसे आर्यखंडमें सभीदे-

श आबाद है युरप-एसिया-अमरिका-रुस-चीन-जपान बगेरामें भी है, सभीदेशमें इतर बनते हैं. जिसकों जहांसे मंगाना हो मंगा सकते हो. पूरब-पंजाब-बंबइ-गुजरात-काठियावार-दखन-मारवाड राजपुताना-दिल्ली-लखनउ-कंबोज-अजमेर-जौनपुर-और-जहां-सी-बगेरा-इतरके लिये मशाहूरस्थान है. गर्मीकी प्रकृतिवाला ठंडा इतर और वादीकी प्रकृतिवाला गर्म-इस्तिमाल करे अच्छा है. कंजुसोंकी ताकत नहीं कि-इतरका-आनंद उठासके. जो लोग उदार प्रकृतिवाले हैं-वेही-उमदाचीज खरीद सकते हैं.

(१२)-जिनकों अपनेशरीर-या-कैशोपर खुशबूदारतैल लगाना मंजूर हो चमेलीका तैल इस्तिमाल करे. इसकी ताहसीर ठंडी और-नरहै. तैल-हीनेका-गर्म होताहै, जिनकी वादीकी प्रकृति हो हीनेका तैल लगाया करे, अरगजाका तैल भी गर्म होताहै. इसकी खुशबू तीनदिन तक केशोंसें नहीं जाती. गुलाबका तैल जितनी सुगंधरखता है दूसरा नहीं रखता. इसकी खुशबू ठंडी और तरहोती है. तैल केवडेका बहोत उमदा और ठंडा होता है. जिनकों मोगरेका तैल पसंद हो-बहोत ठीक-और-ठंडा है. इन सब तैलोंको बनानेकी तरकीब बेही जानते हैं जो हरवख्त बनाया करते हैं. तिलोंमें फुलोंको बसाकर बड़ी महनतसें फुलेला बनाया जाता है. दोरुपये सैरपका तैल अच्छा होताहै. तीन-चार-पांच-सात-या-दसरुपये सैर लेना चाहो मिल सकताहै. लेकिन!-उसकी पहिचान करना बड़ा मुश्किल है. सैरभरपके चमेलीके तैलमें तोलेभर केवडेका-इतर-डालदिया जाय-वों-खुशबू-देगी सारा मकान महेक उठेगा. इसीतरह सैरभरपके तैल चमेलीमें-तोलाभर चमेलीका इ-

तर, हीनेके तैलमें हीनेका-अरगजेमें अरगजाका-गुलाबमें गुलाबका-और मोगरेमें मोमरेका इतर-डाल दिया जाय-खुशबू बढेगी. जिसको जैसा मंजूर हो करे. लेकिन! इतनायाद रहे-जितना इतर अपने शरीर-और स्त्रीपुत्रोंको-लगाते हो-उतना देवमूर्त्तिकों भी लगाया करो. आधा चोथाइ भी लगाओगे तबभी ठीक-जो लोग अकेले हाडमांसके पुतलेकों ही शिंगारना जानते है, उनके धन-माल और खजानेकों धिकार है.

(१३)-जिनमंदिरमें जाना हथियारकों और-उपानहकों-बहार छोडकर जाना चाहिये, देवमूर्त्तिकी दाहनी बाजुमें तीनपरकम्मा देना और तीननमस्कार करना नित्यकर्तव्य है. साफ पानोंमें सुकी जमीनपर बैठकर स्नान करना-और-उमदा कपडे पहनकर अष्टद्रव्यमें जिनमूर्त्तिका पूजनकरना सम्यक्तनिर्मल होनेका कारण फरमाया. पूजन करनेका जैसे पुरुषकों अधिकार है वैसे स्त्रीकों भी है. रजस्वला होनेके दिनोंमें अलबते! मना है, लेकिन! सदाकेलिये कोई शास्त्र मनादी नहीं करता, पूजामें मन-वचन-काया-और-पहेननेके कपडे पवित्र होना चाहिये. जिसकपडे पहनकर मलमूत्र किया हो-कामभोग सेवाहो-पूजाके वस्तु बिडकुल छीना नहीं चाहिये. नयेकायोग नहो-तो पुरानाही ठीक है. लेकिन! धोया हुवा और साफ होना चाहिये. पूजक पुरुष अपने शरीरमें चार जगह तिलक लगावे. ललाट-कंठ-हृदय-और-नाभि-इनके शिवाय दूसरी जगह तिलक लगाना नहीं कहा. जिनप्रतिमाके नवअंगपर तिलक लगाना इसतरकीबसे समजना चाहिये. पांवकेअंगुठे-जानु-हाथ-और-स्कंध-इनचार अंगमें तिलक आठ



हुने-होकिन !-गिततीमें त्रसरही गिनेजायगे. त्रस्तक-लक्ष्मण-कंद-  
हस्त-और-नाभि-ये-नवसंय और तेरह बिलक हुने. सूता-तीन  
मस्तारकी है. (१) अंगपूजा-(२) अग्रपूजा-और-(३) भावपूजा,  
नवसंगबिलक लगाना-विलेपन करना-कुल चक्राना-और-मेहने  
आभूषण धारन करना-सब-अंगपूजाके भेदमें है. धूप-दीप-नैवेद्य  
फूल-अक्षत वगेरा अग्रपूजामें दाखिल है. और-गीतगात-ताटक  
चवर करना वगेरा भावपूजाके भेदमें है. चैत्यबंदन करवे समय-  
पुरुष-जिमनीतर्फ-और-स्त्री-देवमूर्तिकी बायीतर्फ-बैठे,-बैठनेका  
अभिकार जसन्प सनाहाथ दूर-और-उत्कृष्ट साठहाथ दूर तक है,  
(भावार्थ)-मूलमर्भद्वारसें बहारके मंदपमें जितनी गुंजास देखे उ-  
तनी दूर बैठे. जिनमंदिरकी चौरासी आशातनासें सदा बचते  
रहना चाहिये. देवद्रव्य खाना महापाप है. देवमंदिरके रुपये पैसे  
अपनेको देने हो-तो-जल्दी देदेना चाहिये. जींदगीका भर-  
सा नही-देवद्रव्य देना रह जायगा तो अगले जन्ममें बड़े दुख  
भोगने पड़ेगें.

(१४)-जिनपूजामें मन्त्रः परिणाम-हिंसकरूप-नही इसलिये-  
भार्वहिंसा-नही. और भावहिंसा बिद्वन्पापबंध नही. अर्थात् पू-  
जाकरते हुमे अशुभकर्मोंकी निर्जरा और-मुन्यानुसंधी मुन्यका मा-  
ति होना सिद्ध हुका. कोइ मूर्ख-इस आशयको न समझे और कु-  
तर्क करे तो उसके छोटे भाग्य-समझना चाहिये. धर्म-और-श्रुत  
जोरजोरी नही होती. अमर सत्ताल किया जायकि-अत्रिधिसें  
पूजन करनेसें तो न करना अच्छा, (जवाब.) यह बात ठीक न-  
ही, कोइ शस्त्र जब किसी कामको करने लगता है तो पहिले ही

व्याख्य नहीं बनता। मिहनत करते व्याख्य भी बन सकता है। इसी तरह पूजनमें भी अविधिसे करते विधि प्राप्त ही सकती है। लेकिन ! अविधिके बरसे बिल्कुल छोड़ बैठना अच्छा नहीं। केशर चंदन फल नैवेद्य वगैरा हरहमेश नये बढ़ाना चाहिये। घर चैत्या लयमें-एकसे लगा-आरंभ अंगुलतक उर्चीप्रतिमा रखना ठीक है। इससे बड़ीप्रतिमा घरमें रखना ठीक नहीं। बडेमंदिरमें पंथरा देना चाहिये। घरमें रखा जाय-बीभी-धातुकी-था-चित्रामकी होना ठीक है। पाषाणकी मूर्ति-बडेमंदिरमें रखना अच्छा। परदेश जाते बंहेते सिद्धचक्रकार्यत्र साथ रखना बहोत ठीक है। बिंदून देवदर्शने भी-जन जिमना अच्छा नहीं। नया बनवाया हुवा-सिद्धचक्रवेत्र-बिंदून-गुरुकेवासक्षेप किये पूजनीक नहीं होसकता। जिनमंदिरमें स्तोत्र-लावनी-स्तवन-पढ़ना तो उमदा भावार्थवाला पढ़ना चाहिये। शास्त्राज्ञासे बखिलाफ-रचनाका-पढ़ना मुनासिब नहीं। पूर्वाचार्य रचित उमदा अर्थाशवाले-स्तवन-पद-थोड़े नहीं है।

(१५)-अगर ज्ञानी और-त्यागी गुरुका-योग होंतो-उनके पास-धर्मोपदेश सुननेको जरूर जाना चाहिये। शास्त्र श्रवणसे धर्मश्रद्धा दृढ़ होती है। जो-धर्मोपदेष्टा अधर्मी-और-नास्तिक है उसको पास धर्मोपदेश सुनना कोई जरूरत नहीं। असंख पूछती उसको उपदेश देनेकी योग्यताही नहीं फिर उसका वचन दूसरेकी कैसे असर करसकेगा !-पत्यक्ष देख लिजियेकि-अगर-बैद्याओं-को-वतिप्रतां धर्मका उपदेश देनेके लिये नियत किया जाय तो-क्या !-उमका उपदेश दूसरेकी असर करसकेता है ? कभी नहीं !! बस !-इसी उदाहरणसे-समजकीकि-धर्मोपदेष्टा गुरु कैसा होना

चाहिये ?—आजकल खुशामदीलोग रह गये. साधुजनभी अपने निस्पृह धर्मकों छोड़कर खुशामदी बनते चले जातेहैं, कहिये !—फिर सच्चे धर्म-का उपदेश कैसे हो सकेगा ?—दोलतमंदकों—और—गरीबकों—एकसा धर्मोपदेश देना मुनिजनोंका मुख्यधर्म है. शास्त्रके पाठकों उध्यापन करना इसके समान कोई पाप नहीं. जिनजिनलोगोंने धर्मशास्त्रों-का—पाठ—उध्यापन किया उन्होंने अच्छाफल नहीं पाया. इसभवमें बेइज्जती—और—परभवमें दुर्गति—होना इसोका फल है, कह ऐसे मायावी है जो साधु होकर भी दगाबाजीकों नहीं छोड़ते, साधुलो-गोंने संसार छोड़ दिया तो अब मुनासिब है साफ दिल रहे और सच्चेधर्मका उपदेश देवे.

(१६)—जीवोंकावध न करना—सच्च बोलना—चोरी न करना—स्त्री संभोग न करना—धन धान्य सुन्ना चांदी रुपया पैसा वगेरा न रखना—इन पांचोंका नाम—महाव्रत है. भिक्षामांगकर खाना—और—रात्रीकों अब पाणी न लेना—मुनिजनोंका मुख्य कर्त्तव्य है. साधु साध्वी—श्रावक—श्राविका—इनचारोंकी समुदायका नाम—संघ—बोलते है. एक आचार्यकी वाचनावाले साधुओंके समूहका नाम—गच्छ—और बहोतसे एकसरिखे सजातीय गच्छोंके समूहका नाम—कुल—कहते है. आजकल पंचमकालमें—बकुस—और—प्रतिसेवना नियंठेके—मुनि—विद्यमान है, इन्हीके जरीये पंचमकालके अंततकधर्म चलेगा. अगर सवाल किया जायकि—निर्ग्रंथ—सनातन नियंठेके उमदामुनि जब इस कालमें नहीं रहे—तो—औरोंकों—मुनि—क्यों कहना ?—(जवा-ब.)—पहिले दिनोंमें चौदह पूर्वके पाठीकों—गीतार्थमुनि—कहते थे—तो—क्या !—आजकलके जघन्य आचारमकल्प—निश्चीय—और—म-

ध्यम आचार प्रकल्प-वृहत्कल्पके-पाठीको-गीतार्थ न कहना चाहिये, ?-पहिले कालमें दश प्रकारके कल्पवृक्षकों वृक्ष कहते थे क्या! आजकल आम्रकों वृक्ष कहना न चाहिये, ?-पूर्वकालमें सहस्रमल्ल-यादोंकों-योद्धा-बोलते थे-क्या!-आजकल किसीकों योद्धा न कहना चाहिये, ?-पूर्वकालमें बड़ेबड़े मंत्र और अंजनधारी चौर थे क्या!-आजकलके साधारण चौरोंकों चौर न कहना चाहिये! बस!-इन्हीं दृष्टांतोंसे समझलो कि-आजकलभी मुनियोंका-अभाव नहीं है. हां!-इतना जरूर है कि-निस्पृहमुनि-थोड़े हैं. साधु होकर जो लोग-स्त्री-धन धान्य घर हाट हवेली मकानात-और-खजाना रखते हैं, और दुनियाकों मिथ्या उपदेश देते हैं उनकों साधु कहना मुनासिब नहीं.

(१७)-साधु-साध्वी-भ्रावक-भ्राविका-पुस्तक-प्रतिमा-और-जिनमंदिर-ये-सातधर्म-क्षेत्र-जो-शास्त्रोंमें बयान किये हैं इनके बचावके लिये धर्मोपदेश देकर साहाय्य करना मुनिजनोंके लिये उचित कार्य है, कोई गृहस्थ देव मंदिरका पैसा खाजाता हो उसकों रोकना-या-उसकों-संघबहार करादेना मुनियोंकों हुकम है. कोई धर्मशास्त्र नहीं फरमाताकि-इसमें बेपरवाह रहे. कोई जगह देव मंदिरका पूजारी खुद मालिक बनबैठा हो तो उसकों राज्यद्वारा प्रयत्न करके निकलवा देना, देव मंदिरमें मकड़ीकाजाल-या-शिखरपर-कोई वृक्ष-लग गया हो-तो-उसकों-दूर कराना.—भ्रावकसंग धर्मश्रद्धासे पतितहों तो खुद दूर करना. इसमें देव मंदिरकी रक्षाका इरादा होनेसे पुन्यानुबंधि पुन्य.—और-अशुभकर्मकी निर्जरा है पाप नहीं. अगर सबाल किया जाय कि-साधु त्यागी

है उसकों क्या गरजकि-मंदिरके काममें पड़े?-(जवाब.)-साधुने पांच इंद्रियके विषयका-और-पापारंभका त्याग किया है धर्मद्वेषीकों हठाना नहीं त्यागा है, साधु-धर्मके थंभ है धर्ममें साहाय्य न देवे तो उनकों अधर्मताका दोष आता है. भगवती सूत्रका-पाठ है कि-संघके लिये-साधु-अपनी-लब्धि-फोरवे, और-शक्ति मुआफिक धर्मकी रक्षा करे. जो-साधु-धनवानके-खुशामदी और धर्मका-सच्चा उपदेश नहीं देते-वे-साधु नहीं किंतु अधर्मी है.

(१८)-शास्त्र सुनने जाना तो हथियार-लकड़ी वगेरा छोडकर जाना चाहिये. राजा बादशाह वगेरा अपना राज्यचिन्ह-छड़ी चवर-मुकुट बहार रखकर जावे. गुरुद्वारभी एक पूज्यस्थान है, इसमें महत्त्वताके चिन्ह नहीं लेजाना गुरुकी अदप है, शास्त्र सुनते वख्त मनकों एकाग्र रखना चाहिये. बातचित और अवाज करनेसे चित्त डामाडोल होजाता है. श्रोते-तीन तरहके (१) जानकार (२) अजानकार-और-(३) दुर्विदग्ध-नंदीसूत्रका लेख है कि-दुर्विदग्धश्रोता-ज्ञान प्राप्तिका अधिकारी नहीं. जहां सभीश्रोते दुर्विदग्ध मिले हों उस सभाकों-शास्त्र सुनाना- कोई जरूरत नहीं, कागडेकों दूधसें नहलायाजाय कभी सफेद नहोगा इस तरह दुर्विदग्धश्रोता-भी कभी न सुधरेगा. शास्त्रवचनपर श्रद्धावान्-और-उदार-श्रोता धर्मकी उन्नतिकरसकता है, धर्मशास्त्रका अवर्णवादीश्रोता-अगर कुतर्ककरके-अपनी मूर्खता जाहिर करताहोतो मुनासिब है कि-उसकों ताडनातर्जना करना. आवश्यकसूत्रके पहिले अध्ययनका वचन है कि-विनय रहित शिष्यके साथ बलाभियोग (यानी) ताडना तर्जना करना. जो साधु-अपनी महत्त्वताके लोभी बनकर-

ताड़नातर्जना नहीं करते—वे अलबते!—इसलोगमें समतावान् कह-  
लाते हैं लेकिन!—ज्ञानीयोंके ज्ञानमें महाअन्यायी समझे जाते हैं.  
/क्योंकि—उनोंने—न्यायमार्गकों लोप किया और अपनी बाह बा-  
/ह!—करवाई.

(१९)—आजकल—वैसे—श्रोते नहीं रहे जो—बहुत बारीक बातें  
समझ शके,—इसलिये सूक्ष्म पदार्थोंका बयान थोड़ा—और—आव-  
श्यक—ज्ञाता—उवाइ—उपासकदशांग—उत्तराध्ययन—रिषभचरित—वा-  
सुपूज्य चरित—शांतिचरित—अरिष्टनेमिचरित—और—पार्श्वचरित व-  
गेरा—वाचना चाहिये. जिससे सबलोगोंको जल्दी समझमें आवे.  
शास्त्र सुनकर साधुजनोंको भिक्षाके लिये प्रार्थना करना चाहिये,  
साधुओंको भिक्षा देनेसे बड़ापुन्य होता है. अपना पेट तो सबलो-  
ग भरते हैं लेकिन!—साधुओंको—मातापिताको—और—अपने आ-  
श्रितलोगोंको—भोजन जीमाकर खानाखानेवाले बहुत थोड़े नि-  
कलेगें. एक दुर्विदग्धश्रोताकि—जिसका बयान उपर लिख चुके हैं  
एक साधुके पास जाकर कहने लगा—मैं—चेला होनेको आया हूं.  
कोइ उपाव ऐसा बतलाइये कि—दिल—साफ होजाय. साधुमहाराज  
बदे चतर थे, उसकी चालाकी पहिचान गये और तुर्त जवाब  
दियाकि—भैया! यह कौन बड़ी बात है! जुल्लाब ले डालो. या—नि-  
मकपानीसे एकदो उल्टी कर डालो. दिल क्या!—सारा शरीर  
साफ हो जायगा. साधु महाराजने ठीक जवाब दिया. ऐसे चा-  
लाकोंको यही जवाब काफी है.

(२०)—जैसे गड्डीके पैयोंमें तैल पहुंचाना जरूरत है देहरूपी  
यंत्रमें भोजन पहुंचाना भी जरूरी बात है. आटेमें थोड़ासा निमक—

और-घी-डालकर रौंटी बनाना-बहुत ठीक होता है, कच्ची रौंटी पचावमें बाधा डालती है मुनासिब है अच्छी तरह पकाकर बनाइ जाय. ताजा आटा मिले तो बहुत दिनका पुराना बिल्कुल छोड़ देना चाहिये. बाजरेकी-या-जवारकी-रौंटी भी अगर ठीक ठीक तौरसे बनाइ गइ हो अलबते!-ताकतवर होती है. जितने किसान लोग हैं इसीके आधार जीवन-बीताते हैं. काल दुकालमें यही जवार बाजरी-और-मक्की-सहारा देती है, गेहूँ अलबते!-पौष्टिक पदार्थ है, लेकिन!-सबलोगोंके खानेमें ज्यादातर जवार बाजरी-और-मक्की ही आती है. चावल बहुत हलका और जलदी पचने वाला अन्न है. बहुतसे देशोंमें चावलकाही खाना ज्यादा पसंद रखते हैं. बासमतीके-कमोदके-और-अंबामहोरके चावल अबलन-बरके गिने जाते हैं. उमदा चावल उसीको समझना चाहिये जं, पकनेकेबाद सुगंध देवे. चावलके शाख-दाल-घी-और सागभाजी ज्यादा फायदेमंद है.

(२१)-करेला-भींडी-तुरइ-परवर-सब तरहकी फलियां-व-गेरा कुलुभाजी-जो-खाने योग्य है इसलिये खाना चाहिये कि-इनमें सबतरहके क्षार रहते हैं. और-ये-क्षार शरीरको पुष्ट बनानेमें फायदेमंद हैं. जहां बिल्कुल सागभाजी न मिलती हो-वहां नींबुका रस सेवन करना जरूरी है. हरहमेश एक नींबुका रस सागभाजीमें मिलाकर खालिया जाय कोई बिगाडकी सुरत नहीं. हां!-दांत खट्टे पडजाय उतना खाना जरूर मना है. नींबुका रस-रोचक-और-पाचक-पदार्थ है. इसमें ऐसा गुण रहा है जो-शरीरके लिये उत्तेजक-और-बादीको-हरन करनेवाला-है, इसके पीनेसे तृषा

शांत होती है. सोडा और चोनी-नींबुके रसमें मिलाकर पीनेसे पित्त शांत होते है. तीनदिनके बाद कोई आचारखाना ठीक नहीं. धर्मशास्त्रका फरमाना है कि-तीन रौजबाद उसमें सूक्ष्मजीवोंकी उत्पत्ति हो जाती है. आमका-बांसका-कैरका-करोंदेका-इमलीका-ककड़ी-मीरच-और-गवारफलीका-वगेरा सब तरहके आचार-तीन रौजके बाद अभक्ष्य है. चौथेदिन इनमें बेइंद्रिय जीव उत्पन्न हो जाते है. अगर जूठा हाथ लगाया जाय तो सन्मूर्छिम जीवभी उत्पन्न हो जाय इसलिये अभक्ष्य कहा. नींबुका सुका आचारखाना बहोत फायदेमंद होता है.

(२२)-लाख औषधियोंका नतिजा दूध है. जो शल्श-हरह-मेश-दूध-पीता है कमजोरी उससे हजारकोश दूर रहती है. लेकिन!-दूध-ऐसा होना चाहिये जो जल मिलाया न हों,-बेचनेवाले जलमिला देते है इससे दोनोंकों बड़ा नुकसान पहुंचता है. गरम करते वरुत अगर उसमें मिश्री मिलादिइ जाय तो क्याही !-उय-दा बात है. वो-दूध-कभी अनपच न होगा. ताजामख्वन अंत मुहूर्त्तकालतक शास्त्रकारोंने जीवोत्पत्तिसे रहित कहा. अगर औषध भैषज्यकेलिये-ताजामख्वन (यानी) तुर्त्तका मथनकर निकाला हुवा-इस्तिमाल करे कोई हर्जकी बात नहीं. बाद अंतमुहूर्त्तके जीवकी पैदाश होजाती है इसलिये धर्मशास्त्रमें इसका त्याग रखना फरमाया. अंतमुहूर्त्तकालकी मर्यादा शास्त्रोंमें दो घड़ी तक कही,—

(२३)-अनाजकों पचानेमें दही ज्यादा फायदेमंद होता है, इसके खानेसे रुचि बढ़ती है, गर्मीके दिनोमें निमक और जीराडा-



लकर खानेसें बहोत जलदी फायदा पहुंचाता है, मिश्री-साफ-चमकदार-सुखी-और-सफेद-होतो शरीरके लिये बड़ी पौष्टिक चीज है. चाहकीपत्ती पानीमें गर्मकर उसमें थोड़ी मिश्री मिलाके पीना सुस्तीको दूर करता है. हृदयव्यापारको बढ़ाता है और मगजमें फुर्ती पैदा करता है. लेकिन !-इतना याद रहे चाइका बनानां हरेकको नही आता, चाइदानीमें पहिले पानीको खुब तपाना-बाद उसमें चाइकी पत्ती छोडकर तुर्त ढकनेसें ढांक देना. और पांच मिनिटमें जब उसका असर हो जाय-छानकर दूध मिश्री मिलाके पीना-यही इसकी उमदा तरकीब है. बाजे आदमी बहुत चाइ पीते है यह अच्छी बात नही. सबचीज मानप्रमाण अच्छी होती है.

(२४)-सवेर वख्त-थोडा खाना-खाकर काममें लगना अच्छा होता है. अच्छे लोग सवेर वख्त-चाइ दूध-या-बदामकी-रोटी-बगेरा कुच्छनकुच्छ-खाकर बहार निकलते है, सवेरवख्त-दूध-या-कोइ हलका-अन्न न खानेसें-पेट खाली रहता है और उसमें बुरी हवाका प्रवेश होकर बिमारी पैदा होती है. इसलिये सवेरवख्त कुच्छ चीज खाना जरूरी है. जिनको ब्रत नियम हों उनके लिये तो त्यागही रखना चाहिये. सागूदाना-दूध-और-मिश्री मिलाकर पकाना और थोडा ठंडा होनेके बाद पीना-तंदुरस्त-और-बोमार-दोनोंके लिये फायदेमंद है. नारियल खाना शारीरक परिश्रम करनेवालोंको बहुत फायदा पहुंचाता है. कई देशमें मजदूर लोग ज्यादा नारियलही खाते है. उरदकी दाल-घीकी-तरह-तर और-पौष्टिक बस्तु होनेसें शरीरकी ताकत बढ़ाती है. जिनको पसंद हो जरूर खाया करे.

(२५)-(रतुका खानपान)-वर्षारितुमें-निमक ज्यादा खाना अच्छा होता है. तरगरम भोजन-सीरा-मोतीचूरकेलाडु-मालपुवे-छुहारे-और-पानसुपारी-खाना ज्यादा फायदेमंद होता है. केशर-जायफल-लौंग मिलाकर-तता किया हुआ दूध पीना भी ठीक है. हीने-या-मोघरेके तैलकी मालिसकरके गर्मजलसें नहाना अच्छा है. (शरदरितुमें) शरदपुनमका चांद रितुका एक अनुपम शिंजार है. इनदिनोंमें-कडुवा-कसायला-और-मीठा भोजन-जीमना बहोत फायदेमंद होता है. जितनी तरहकी हरीवनस्पति इनदिनोंमें आती है गरममसालेके साथ-गहरेघी-या-तैलमें तलकर खाना ठीक है. जल डालकर खानेसें बिगाड लाती है. मक्कीके दानें घीमें-भूनकर-मसालेके साथ खाना-कच्ची ककडी-निमक जीरा और कालीमीरच-मिलाकर इस्तिमाल करना कोई हर्जकी बात नहीं. लेकिन !-इतना याद रहे-गलेतक भोजन जीमना इन दिनोंमें बहोत बुरा है.

(२६)-(हेमंतरितुमें)-दूध पीना बहोत ठीक होता है. गरम-चीकना-और-मीष्ठ भोजन-ताजी मीठाइ-घी-और-गहरेमसालेके साथ तली हुई भाजी तरकारी वगेरा जो चीज खाना-गरम गरम खाना चाहिये. जलकी कोताइ रखना ठीक नहीं, (शिशिररितुमें) गरम और चरपरा भोजन जीमना ज्यादा फायदेमंद होता है. सा मर्ध्य वृद्धिके लिये केशरपाक-आसगंध-मुशली-या-शालमपाक वगेरा-इन दिनोंमें खाना अच्छा होता है. जायफल-जवत्री-लौंग-और-केशर मिलाकर तताकिया हुआ दूध पीना भी बहोत ठीक है. चाह-मेंवा-बादामकी रौटी वगेरा उमदा खाना और उमदा कपडे

इन्हो दिनोंके लिये है. हरेचने-साठें-जामफल-सीताफल-ताजे पिस्ते-दाख-चनेकीमुनी ढाल-भजिये-और-सेब-बगेरा-इन्ही दिनोंकी सौकात है.

(२७)-(वसंतरितुमें)-वसंतराग गाना-रंगरंगके कपडे पहनकर बागबगीचोंमें घूमना-सबकों प्यारा लगता है, घृतका खाना इन्ही दिनोंमें फायदेमंद होता है. दूध घो-खाना सदाके लिये ठीक है लेकिन!-इन दिनोंमें-कुच्छ ज्यादा अच्छे है, खारा-और-थोडा मीठा भोजन जीमना इस रितुका शिंगार है. दही-गुड-इनदिनोंमें खाना अच्छा नही. कफ पैदा करते है! (गृष्मरितुमें) गर्मीकेपारे सबकों घबराहट मालूम देती है. कइसुकुमार शरीरवाले इन दिनोंमें निहायत तंग रहते है. अन्न खाना नही रुचता. पानी-या-शरबतपीनेहीपर मन ललचाता है. आवलेका सेंवका और-साठेका-मुरब्बा-इन्ही दिनोंमें अच्छा लगता है. मेंदेका सीरा-जिसमें मिश्री और घी-गहरेडाले गये हों शुभहके वख्त खाया जाय क्याही!-उमदा बात है, दिनभर प्यास नसतायगी. गृष्मरितु आमकीतो फसलही है, सबका दिल चाहता है कि-आम-खावे. लेकिन!-अकेला आम-या-उसका रस-बादी पैदाकरता है इसलिये मुनासिब है उसमें घी-और-कालिमीरच-डालकर खावे. कइ देशोंमें आम्रकेरसमें दूध मिलाकर खाते है. देशदेशकी ताहसीर अलग अलग है जिसकों जैसा रुचे वैसा करे. भोजन और कपडा दिलकी पसंदगीके ही ताबुक है. मीठाइ-केले-दही-और-घी-खाना इनदिनोंमें ज्यादा फायदेमंद है.

(२८)-गृष्मरितुमें क्या! गरीब-क्या!-अमीर-सभीलोग ब-

शरबत पीना चाहते हैं. अतारलोग जो सिर्फ मिश्रीकी चासनी बनाकर बेचते हैं उसकों फेंककर असली चिकित्सा मणालीसे बना हुआ शरबत व्यवहारमें लाना चाहिये, जिनकों प्रमेह वगैरा गर्मीकी बीमारी हो उनकों-चंदनका-गुलाबका-केवडेका-या-खसका शरबत इन दिनोंमें जरूर पीना चाहिये. लेकिन !-कितना पीना ? किस वख्त पीना ? इसकी सलाह हकीमलोगोंसे पुछो, चंदनका शरबत ठंडा और पीनेसे तबीयतकों खुश करता है, दस्त साफलाकर दिलकों कुब्वत पहुंचाता है. कफ-प्यास-पित्त-और-लोहीके फिसादोंकों दूर करके दाहकोंभी मिटाता है. दो तोले चंदनका शरबत-दसतोले पानीके साथ पीना चाहिये. गुलाबका-या-केवडेका-शरबत भी इसीतरकीबसे पीना अच्छा है, गर्मी शांत होकर कलेजा तर करेगा. दोतोले नींबुका शरबत-दसतोले जलमें डालकर पीया जाय तो गर्मी शांत होगी. और-भूख-दुगुनी लगेगी. बीस नींबुके रसकों-चालीस तोले मिश्रीकी चासनीमें डालकर बनानेसे नींबुका शरबत बन सकता है. अनारका शरबत-चारतोले भरलेकर बीसतोले पानीके साथ-पीया जाय तो नजलेंको मिटाकर दिमागकों ताकत पहुंचाता है. जिस गांवमें असली शरबत न मिलसकता हों और गर्मीका जोर बहोत दिखाई दे-तो-पच्चीस बादामकी गिरी-घोटकर एकगिलासभरजल बनावे-और-उसमें मिश्री डालकर पीइ जाय-गर्मी बिल्कुल न सतायगी.

(२९)-चंदन-केवडा-गुलाब-हीना-खस-मोंतिया-जुही-और पनडीके इतरोसे बनाये हुवे-साबुन-गर्मीयोंके दिनोंमें दिलकों खूबतर रखते हैं. जिनोंने पूर्वभवमें-देवगुरु धर्मकी सेवा किई है-इस

भवमें जिनोंका दिल धर्मपर-रजु है-और जो उदार स्वभाववाले हैं-उनहीका मनुष्यजन्म तारीफ करने योग्य है. शालदुशाल-कड़े कंठी-हुकमहोदा-और-मोंतियोंके हार-धर्महीकी बदोलत मिले है. लेकिन!-अपशोष है कि-इसवख्त उसकों तुम भूले हुवे-हो. इस कालमें ऐसा जमाना बर्त रहा है कि-धनवान् लोग-धनकेनशेमें-पडकर-धर्मकों छोड बैठे है. कहते है हमें क्या! परवाह है किसीकी? लेकिन!-यह सब उनकों पुरेपुरी भूल है. जिससें फल पाये हो-उसकों-नमते रहो, और-आगेके लिये परलोकका रास्ता साफ करो. जो धनवान् और धर्मवान् है उनकी दोनों लोगमें तारीफ है, जिनोंने पूरवभवमें धर्म किया है उनोंकों रोटी कपडेकी तंगी नहीं रहती. पुन्यवानोंहीकों खानपानका सुख रहता है, कइ ऐसे भी है जिन्होंकों खानपानका भी सुख नहीं. दुनियामें इससें ज्यादा तकलीफ और क्या होगी!-जिनकों रोटीका भी ठिकाना नहीं. आदमी सब तरहके दुख भुगत सकता है रोटीका दुख किसीसें नहीं सहा जाता.

(३०)-इमेश थोडी भूख रखकर भोजन जिमना अच्छा-गलेतक खाना कभी अच्छा नहीं होता-ताकतसें बढकर भूखे रहनेसें और भूखसें बढकर खानाखानेसें तंदुरस्तीमें बिगाड पडुंचता है. चौइसघंटेमें एकहीदफे पेटभर लेनेके बदले उतनाही अन्न-दो या-तीनवख्त करके खाना अच्छा होता है. पानी जैसे थोडा पीनेसें बीमारी आती है वैसे ज्यादा पीनेसे भी रोगकी जड लगती है. निमकके घडेमें ज्यादा जल गेरनेसें जैसे निमक जलमय हो जाता है वैसेही भोजन जिमकर तुर्च गहेराजल पीनेसें अन्न-जलमय

हो जाता है, कुवेका-या नदीका-चाहे जिसका मिले लेकिन!-साफ होना चाहिये. गंदाजल शरीरकी तैजी कम करता है. पानीकों खूबतपाकर ठंडाकर लिया जाय और उसीका पान किया जाय तो यकीन है उसकों-फोडा फुनसी या-वाला-कभी न निकलेगा. गंदाजल पीनेसें-और-गंदेजलसें-स्नान करनेहीसें-शरीरमें खुजली-दाद-और-फोडे फुनसी पैदा होते हैं. जिस-कुवे-या बावडीमें गंदी चीजे पड़ी रहती हो उसका जल पीना बीमार होनेकी निशानी है. कुवोंके मुंहपर ढकना रखा जाय तो बहोत ही अच्छी बात है. बुरी चीज उसमें गिरने न पायगी. कमरतक कठेरा होना-और-चौफेरकी जमीन उंची बनाना-कुवोंकी शोभा है. इससें जीव मरनेका-और-कींचड बढनेका-सबतरह बचाव रहता है. जिसकुवे-या-बावडीमें-मनुष्य थुकते और-कुरला करते हैं-लोट्टा साफ करते हैं-और-फिर वहीजल रसोइके काममें भी लाते हैं कहिये!-फिर रोग-क्यों न पैदा हो?—

(११)—जबकभी बदहजमी होकर-या-और-किसी सबबसें पेटमें दर्द होता है-तो-नाइकेपास पेट मलवाते हैं-और-कहते हैं-नाभि-ठिकाने-आजायगी. लेकिन!-यह जूठी बात है. इस तरह न करके अगर पेटपर अच्छी तरह सेंककरा लिया जाय-या-बातशारक-पाचक-और-रेचक-औषधियां-खाइ जाय-तो-निहायत उमदा बात है. पेटकों बहोत मसलनेसें आंतोंकों बड़ा नुकशान पहुंचता है. और-अक्सर कइवार देखा गया है कि-उनमें गांठभी पड जाती है. मुखके पीछे जहां अन्नमार्ग मुखसें लगा है वहीसें उपरकी तर्फ श्वासमार्ग शुरु हुवा है, वह आगे दोशाखोंसें फेंफड़ोंमें

खाकर मिल गया है. जहां अन्नमार्ग-और-श्वासमार्ग-मुखमें शुरु हुये है वहांपर-दोनोंके मध्यमें-एक तरहका-पर्दा है. मनुष्य जब कोई चीज निगलता है तब वह पर्दा श्वासमार्गके द्वारपर ढकना हो जाता है. और बाद निगलनेके उसी वस्तु श्वासमार्गको खोल देता है. कभीकभी कोई चीज खाते-या-पीते वस्तु-जलदी करनेमें जब उक्त श्वासमार्ग तर्फ चली जाती है उसवस्तु बड़े ही जोरसें खांसी उठती है. जीव घबराने लगता है, यह बात किसीसें छिपी हुई नहीं. इसलिये हरेकको खयाल रखना चाहिये कि-खानापीना बीरजके साथ करे. ठंडी रसोइ पेटमें दर्द पैदा करती है जहांतक-बने चुर्चकी बनी रसोइ जिमे.

(३२)-खाना खाकर मुंहको साफ करनेके लिये तांबूल-खानाभी-एक जरूरी बात है राजसभामें-या-जातबिरादरीमें-जाना-तो-पानबीड़ी खाकर जाना चाहिये. उल्टी हुवे बाद भी-पानबीड़ी खाइ जाय कोई हर्जकी बात नहीं, अच्छेलोग-रास्ते चलते भी-पानबीड़ी खाना बुरा नहीं समजते. जिनलोगोंको व्रत नियम हो-को-न-खावे-कोइ हर्ज नहीं. पानबीड़ी सभीलोग खाते है लेकिन! उसकी तरकीब क्या है उसको पहिले जानना चाहिये. पान-सुपारी-भीमसेनीकपूर-कंकोल-लौंग-जायफल-जवत्री-एलाची-बादाम-केशर-कथा-और-चुना इतनी चीज मिलाकर पानबीड़ी बनाइ जाय सभी तांबुलके गुण उसमें पैदा हो सकते हैं. श्रास्त्रोंमें तांबुलके जो तेरहुगुण-बयान किये-हैं-इस तोरसें बनाइ हुई पानबीड़ीमें समझना चाहिये. चुना ज्यादा लगाया जाय तो ज्वानको बिमाड समझ है, सुपासी ज्यादा होगी तो-रंग-अच्छा न आवेगा-इसलिये

कथा-बुना-और-सुपारी-माफिकसर होना चाहिये.

(३३)-खानपानकी चीजें देशदेशके लोगोंने अलगअलग पसंद किइ है. लेकिन!-यह बात सबकी मंजूर रखनी पड़ेगी कि-सुधा वेदनीकर्मके उदयसे ही-जीवकों-आहार संज्ञा पैदा होती. धर्मशास्त्रके पाठकों देखा जाय तो मांसखाना सर्वथा मना है लेकिन! कइ देशवालोंने इसीको अवल नंबरका खाना समझा है. दूध-दही-घी-मीठाइ-और-अन्न-ये चीजें-भोजनका शिंजार है लेकिन!-मांसखानेवालोंके मगजमें-ये-अच्छी नहीं मालूम हुइ. आर्यसिद्धांत आर्यलोगोंको-और अनार्यसिद्धांत अनार्यलोगोंको मंजूर हुवा, लेकिन! इतना जहर कहना मुनासिब आयाकि-आर्यसिद्धांत-सर्व प्रपणीत होनेसे सर्वथा प्रमाणीक है अनार्यसिद्धांत असर्व-प्रपणीत होनेसे सर्वथा प्रमाणीक नहीं. इसलिये कह सकते है कि-मांसखाना-अनार्यलोगोंका काम है.

(३४)-मांसखानेवालों दिलमें रहेम नहीं रहती, उमदाखाना छोडकर-मांसखाना-कौन तारीफ है?-कइलोग कहते है मंत्र पढकर जीव मारा जाय तो पाप नहीं लगता. जैसे मुसल्मानलोगोंके काजी कल्मापढकर हलाल करते है, इधर वेदमतवाले जब यज्ञकरते है तो मंत्र पढकर पशुओंको होयवे है. लेकिन!-मंत्र-वा-कल्मा पढकर जीवमारनेसे पाप नहीं लगता यह बात युक्ति प्रमाणसे सिद्ध नहीं होतो. धर्मशास्त्रोंका फरमाना तो ऐसा है कि-जीवकों मारनेवाला-मांसको बेचनेवाला-मांसको पकानेवाला-मांसखानेवाला-मांसको बिकात लेनेवाला-मांसखानेकी सलाह देनेवाला-और-मांसका दान देनेवाला-सुद घातक है. इसलिये कहाजा स-



कता है कि—मांसखाना अधर्म है. इसका रिवाज अनार्य—और—नास्तिकोंसे ही—थुरु हुवा, जैसे अपना शरीर अपनेको प्यारा है जानवरोंको भी उन्हींका शरीर उन्हींके नजदीक प्यारा है. शिकार खेल्कर—या—अपने घरमें—लाकर—जीवोंका मारना—या—कसाइकी दुकानसें मौललाना—धर्मशास्त्रके कायदे मुताबिक—सभी पापहीमें दाखिल है, जिनका खयाल धर्मपर रजु है मांसखाना कभी मंजूर न करेंगे. कइलोग दलील करते है कि—मांस अगर खाने योग्य पदार्थ न होता तो दुनियाका तीन हिस्सा इसको खाना क्यों मंजूर रखता?—(जवाब.) यह कोई नियम नहीं कि—जो—बहोतसें अधर्मी लोग—जिस बातको मंजूर रखे—वह—धर्मीयोभी मंजूर रखना चाहिये. निदान!—किसी युक्ति प्रमाणद्वारा यह सबूत नहीं हो सकता कि—मांसखाना धर्मका अंग है. जब धर्मका अंग न हुवा तो पापअंग आपही कहना मुनासिब आया. जो जो गृहस्थलोग—भावकव्रत अंगीकार करना चाहे उनको मांसखाना पहिले छोड़ना होगा.

(३५)—जमीनके भीतर जितने कंद होते है—सब अनंत कायके—सामोल जानना चाहिये. जैसे—प्याज—लसन—अद्रक—गाजर—सकर—कंदो—मुरण—रतालु—मूलीका कंद—अरबी—सलगम—हरिहलदी—और—गिरमीर वगेरा—कंदमूल—धर्मज्ञानोंको खाना मुनासिब नहीं. इनके खानेसें—शरीरमें—जितना फायदा पहुंचता है उससे ज्यादा नुकसान है. कइतरहके विकार पैदा होकर शरीरकी तंदुरस्तीमें भी फर्क आता है. और ज्यादा जीवोंका वध होनेसें पापभी ज्यादा लगता है. जिनको धर्मशास्त्रोंपर श्रद्धा है जबानका—रस छोड़कर—जीवोंकी रक्षा—

और-धर्मका पालन करते हैं. दही-छास-और-कच्चेदूधमें-द्विदल (यानी)-जिनकी दोदालहोती है जैसे-मुंग-मोठ-उरद-रवां-वाल तुअर-मटर-मसूर-और-चने वगेराकी चीज मिलाना इसकानाम द्विदल है. इसके संयोगसे फौरन उसमें बेइंद्रियजीव पैदाहोजाते हैं. कच्चेदही-और-छासमें-दालकेबड़े-या-पकोड़ी वगेरा डालकर बनायाजाय इसको भी द्विदलही समझना चाहिये. धर्मीमनुष्यको मुनासिब है कि-इसे नखावे. अगरचे सवालकियाजायकि-इसमें जीवपैदाहोते हैं इसमें प्रमाण क्या?-(जवाब.)-प्रमाण यही है कि-ज्ञानीयोंने इसमें जीवोंकी पैदाशहोतोदेखी. इसकोशिवाय दूसरा कोइप्रमाण नहीं. जिनको श्रद्धाहो माने. दही-या-छास-गरमकरके उसमें द्विदलचीज मिलाइ-जाय-कोइ हर्जकी बात नहीं.

(३६)-राइ-और-सरसों-द्विदलमें नहीं, सबबकि-इनमेंसे तैल निकसता है. जिनमेंसे तैल ननिकसता हों और दोदालहोजातीहो उसको द्विदल समझना चाहिये. रोटी-दाल-सागभाजी-खीचड़ी-नरमपुरी-खीर-और-सिरा-चारपहरकेबाद चलितरस होजानेसे अभक्ष्य है. जिनको बासीअन्नखानेका नियम है उनको मुनासिब है रात बासीरखीहुइ उपर लिखीचीजें न खावें. मीठाइमें जलका अंजनहोनेसे चौमासेमें पनराहरौजतक खानेयोग्य है. बाद अभक्ष्य होजायगी. पनराहरौजकाभीकुछ नियमनहीं-अगरचे दसदिनमें ही बिगडजायतो दसहीदिनमें फेंक देना चाहिये. उनालेमें बीस दिन-और-शीयालेमें-महिनेदिनतक-मीठाइ-नहीं बिगडती, कच्ची चासनी-हो-तो-तीनदिनमेंभी-बिगडजाती है. यहां जोबात लिखीगइ है बाहुल्यताको आश्रित होकर लिखी है. दही-और-छास

सोऽप्यहरवत् नही विगडते. बाद विगडजाते है. मरुत्तनकेलिये पहिले लिखचूकेहै कि-मथनकरके निकालेबाद-होषदीभीछे-उसमें जीवोंके उत्पत्ति होजानेसे अभक्ष्य है. नेमिचरितमें-हेमचंद्राचार्य-लिखते है कि—

( अनुष्टुप्चत्तम्. )

अंतर्मुहूर्तात्परतः—सुशूक्ष्मा जंतुराशयः

यत्र मूर्छति तत्त्याज्यं—नवनीतं विवेकिभिः १,

आचारकेसंबंधमेंभी पहिले थोडासावयानलिखागयाहै यहां और भी खुलासादियाजाता है कि-चाहे-घीका-हो-तैलका-हो-या चाहे-पानीका हो-सब तरहके आचार तीन दिनकेबाद अभक्ष्य है. तीनदिनतकभी-वो-आचार-भक्ष्य है जो खट्टीचीजका बनाहुवा हो या-खट्टीचीज-उसमें डाली गइहो-जो-आपखट्टी नहीं है-या-खट्टी चीज उसमें डालीनहीगइ है उसका काल एकही दिनका जानना.

(३७)—कितनेक कहते है-मिरच-या-नींबुवगेराका आचार तीनदिनकेबाद यद्यपि हरारहता है-और-अभक्ष्यभी होगया कहेगें लेकिन !-चोथेदिन अगर कोइतिथिपंचमी अष्टमीवगेरा आजाय-और-बनास्पतिकेत्यागवाला-वो-आचार खावे तो बनास्पतिस्वास्तेका दोष नहीं लगता. सबबकि-वो-तीनदिनकेबाद बनास्पति नहीं रही,—(जवाब.)—यहबात गलत है. कोइ जैनशास्त्रमें नहीं लिखाकि-तीनदिनकेबाद-वो-बनास्पति-नहीं रहती. अगर कहाजाय अचिच्छहोगइ—(जवाब.)—अचिच्छतो-शस्त्रलगेबाद दोषदीमें हो पावी है तीनदिनसे क्या मतलब रहा ?—तात्पर्ययह निकलाकि—

तिथिकेदिन बिनको हरीवनास्पति सानेका त्यागहो-यो-उसको खास और दोष नहीं यह बात गलत हुई. और सिद्ध हुआ कि-नहीं खाना चाहिये. अगर इस बातको नहीं मानो तो-बतलाओ !-यही-ही-खेरुवमेरा हरिवनास्पति-जो-चाकुसँकाटकर अक्षिपर पकाइ जा रही है उसका तिथिकेरौजवनास्पतिकायका सोगनवाला खासकत है-यस-नहीं, १-कहोमे नहीं खासकता-तो-पूर्वलिखितवात स-बूतहोचूकी कि-अचित्त होतेहुवे भी वनास्पतिकायका त्यागी उस-को नहीं खासकता. क्योंकि-उसमें हरीवनास्पतिका आर्द्ररस अबतक मिटा नहीं है. अगर कहाजायकि-तीनदिनका प्रमाण है-तो यह बात किसी शास्त्रमें बतलाना चाहिये. अगर कहोगे-शास्त्रमें भी नहीं लिखा-फक्त रुढ़ी-चलपड़ी है-तो-मनेकल्पितरुढ़ीको-मानना कोई न्याय नहीं. जोजो हरीवनास्पतिके मुरब्बे बनाये गये हो-तिथिकेरौजवनास्पतिकेसोगनवाला-न-खावे. अगरचे सुकाकर भु-रब्बाबनायागया हो-तो-तिथिकेदिनभी खासकते हो. क्योंकि-उ-समें हरारसनहीरहा. तात्पर्ययह निकलाकि-जबतकवनास्पतिकाय-केरसकी आर्द्रता बनी रहेगी-तबतक तिथिकेत्यागवाला नखावेगा मुरब्बे और शरबतका-काल-तबतक है जबतक-वै-चलितरस न होजाय. जबउनमें दुर्गंधआने लगे-बेस्वाद-होजाय-तब न खावे. अगरसवाल कियाजायकि-यह बातकहाँलिखी है!-(जवाब.)-शा-स्त्रोंमें जगहजगह लिखाहै कि-चलितरसहुवेवाद-वस्तु-अयक्ष्य हो जाती है. देखो !-प्रवचनसारोद्धार वगेरा.

( ३८ )-हस्टे-बहेडे-पीपर-बादाम-पीस्ते-दास-वगेरा मेंवा-जसामें-समुंदरद्वारा-सो ( १०० ) जौजन मधेवाद अचित्तहोजाता

है. गेहू-बाजरी-जव-और-कपासबगेरा तीनवर्षकेबाद अचिच,-  
मूंग-मौठ-चने-उरद-कूळथ्य-मसूर-वाल-तिल-तूअर-अलसी-को-  
द्रवा-कांगणी-जवार-और-मक्की-इनसबका खुलासा शास्त्रोंमें है दे-  
खलेना. भोजनजिमनेसे पहिले उसकोंनाकसे धुंधलेना अच्छा  
होता है. याते माछूमहोसके कि-इसमें किसीनेघेरतो नहीमिलाया !  
बहोतखटाभोजन-शरीरकेबलकों-नाशकरता है. ज्यादा निमक आं  
खकी तेजीकों घटाता है. जिनकों कफज्यादे रहता हो-कौंढा-और  
चरपरा-खानाखायाकरे, जिनकों पित्तज्यादेहो-कसायला-और  
मीठाखाना खायाकरे, जोलोग रुखाखाना खातेहैं उनकी अकल  
तेजनही रहती. मुनासिब है-पांचतोलेघी-हरहमेश खाते रहना.  
ज्यादेशाख खाना अच्छानही. भोजनजिमकर तुर्त-दिशाजंगल-  
जाना-या-स्नानकरना निहायत बुराहै. जूतापहने भोजनजिमना  
अनार्यलोगोंकाकामहै. रजस्वलाके हाथका बनाया-या-परोसा  
हुवा-अन्न-खाना बिल्कुलमनाहै. देवमंदिरमें-गुरुकों-और-राजा-  
कों-तकलीफहो-तो-भोजनजिमना अच्छा नही. चिकित्साशास्त्रों-  
का बारवार फरमानाहैकि-अजीर्णकेवख्त भोजन मत जिमो.

(३९)-ठाणांगसूत्रके सातमें स्थानमें भोजनसाततरहके बत-  
लाये है, मनगमता भोजन-मधुर-धातुकों बढानेवाला-जठराग्नि ते-  
ज करनेवाला-कामवर्द्धक-और-उत्साहबढानेवाला-इनसातोंमें म-  
नगमता भोजन-बो-है-जो-धर्मशास्त्रके कहनेसे बखिलाफ नहो-  
और-अपनेमनकों रुचता हो. जिसपर अपना मन राजीनही-बो-  
भोजनलाखरूपयेका क्यों न हो-खानानही चाहिये. बिगाडहोगा.  
बेटोंकों मातापितासे पहिले, और-स्त्रीकों पतिसे पहिले-भोजनजि-

मना मुनासिबनही. कइदेशोंमें सभीकपडे पहनेहुवे भोजन जिमने बैठ जातेहै लेकिन!—यहबात ठीकनही. धर्मशास्त्रोंमें—धोतोबुपट्टा—पहनेकरही भोजन जिमना कहा. एकदूसरेका—जूठापानी—पीना—या—सामीलबैठकर—जिमना रोगवैदा होनेकी निशानी है. भोजन जिमकर—तुर्च—ज्यादेजल नही पीना चाहिये. दोतीनघंटेबाद जितनी प्यास हो बेशक!—पीओ. लेकिन!—इतना यादरहे चंद्र-स्वरमें जलपीना—और—सूर्यस्वरमें भोजन जिमना—तंदुरस्तरहने—की निशानी है.

(४०)—भोजनजिमतेकों अंतरायदेना—या—उठादेना—बहोतही बुरा है, क्या!—गरीब—और—तवंगर—सबकों भोजनप्यारा है. भूखसबकों सताती है. अगर भूख नलगती—तो—कोइ किसीकी नोकरी न करता. कइजगह देखागयाकि—जबकभी कोइशास्त्र—विवाह—या मृत्युसंबंधी—अपनेघर जिमनहार करता है पांचदस बिनानौतंभी आजाते है, उनकों उठादेना कोइबहादूरी नही. सोचो कि—उन बिचारोंकों—भोजनकी सामग्री—नही मिली होगी तभी तुमारेघर आये. ऐसेदीनहीनोंकों उठादेना किसीसुरत अच्छानही. जब हजाररुपये खर्चकिये—तो—पांचपचीसकेलिये टोटा नहीआता. लेकिन!—क्या! कहा जाय!!—कंजूसोंका स्वभाव कभी उदार नही होता. दिलकेदलेर होंगे उन्हीकों यज्ञ मिलता है.

(४१)—जैसे—हवा—और—खानपानसें—शरीरकी हिफाजतकरना कहा—वैसे—कपडोंसेंभी—करना मुनासिबहै. ठंडी—और—गरमहवासें बचानेकेलिये कपडेंही कामदेवे है. मनुष्यकों—अन्न—जल—हवा—और—कपडोंका—बडाआसान मानना चाहिये. अगर—बे—नहोते—

तो-मनुष्यका जीना बुझिकरसे होता. शीतकालमें ठंढीकपड़ा ठीक होता है. होलतमंदखोम-फलाखेन-बुसाखे-बनात कबेरालें-और-बरीबखेन-कंबल-मुदहोंसे ठंड मिटाते हैं. बीमारोंको फलाखेनका कपड़ा अच्छाहोताहै. गरमीके-दिनोंमें सूतकाहलका-और-बारीककपड़ा पहनना चाहिये. सबरंगमें सफेदरंगका कपड़ा अच्छा होताहै. पद्मीस्त्री सफेदकपड़ोंहीसे खुश रहती है. देशदेशकी पोशाक देखोतो बढाही अचंभा होगा, लेकिन!-जिसदेशवालोंने जैसी पोशाक पसंद किइहै उन्होकेलिये वही ठीकहै. कहदेशोंमें-स्त्रीये-कांचली न पहनकर अंगीयां पहेंनतोहैं, लेकिन!-यह रसम अच्छेलोगोंने पसंद नहींकिइ. स्त्रीको तो कांचलीपहननाही मुना-सिब कहा. बहोततंग-या-बहोतढीला-कपड़ा पहनना अच्छानही. औढनेबिछोनेकेकपड़ोंकी-सफाईरखना चतरमनुष्योंका कामहै. द बपूजनके-रात्रीके-और-दिशाजंगलजानेके-कपड़ें अलगअलग रखना चाहिये. जोलोग अपनीइज्जतके मुआफिक मौलदारकपड़ें बहीपहेंनते हैं उनकोबराबर कोइमुख नही. चारचीजे दुनियामें खूबबुझतीकी निशानी है. केश-कपड़ें-फुलोंकाशिमार-और जवाहरातके मेंइने-शरीरकीदुमुनी खूबसुरती दिखलाते हैं. अच्छेकपड़ें पहेंननेसे-खजानाकम-नहीहोता. खजानाका कमीबेसीहोना नसीबके तालुक है, जोलोग-गरीबहालमें हैं उनको चाहे बोडेपौलका कपड़ा मिछो-कोइहर्जकीबातनही, लेकिन!-साफहोनाचाहिये. मैलेकपड़ेवालोंकी बुद्धि तेजनहीरहती.

(४२)-जसे-हवा-जल-अन्न-और-साफकपड़ें-शरीरको फा-वदा पहुंचते हैं. कैसे रहनेका यकानभी अगर फिरपश्चात्तकेफर-

माने कुत्सविक बना हुआ हो-निहायतउमदाबात है. तुरेमकानमें रहवा और रोगकों बुलाना एकसरखा है. जिसमकानमें बद्बू आतीहो-बहोतअंधेरा रहताहो-और-जिसकेभीतरसे गंदीहवा निकलकरसाफहवा-न-आसकतीहो-उसमेंरहना और नरककुंडमें पढ़ना कोईफर्कनही. मकानकी कुरसी गजभर उंची होना अच्छीहोतीहै. याते उसमें बहोतसरदी-या-बरसातका-जल-न-घुसने पावे. मकानकी-लिंपाइ-पोंताइ-हरसाल-करातेरहना चाहिये. वारीशकी-मोशममें-पानी-टपकताहो ऐसेमकानमे रहना बिल्कुलअच्छा नही. जिसमकानमें सदाउजाळाबनारहताहो-रौजमरे जिसमें बूहारी दिइजातीहो-और-जहांहरहमेश दानपुन्यकेकार्यकियेजातेहो-वो-घर-देवलोगका नमूनाहै.

(४३)-घरबनानेकी तरकीब देशदेशमें अलगअलग है. कहीं पथ्थरके-कहीं लकडके-और-कहीं लोहेके-घरबनायेजाते है. जिन लोगोंकों जो पसंदहुवा उन्हींकेलिये-वही ठीक है. अलबते!-लकडकेघरमें आगका बडाडररहता है. पथ्थरकेघरमें पथ्थरकी छत अगर अचानकदूटपडे आदमीयोंका बेमौतमरनाभी जरूरहोजाता है. इसलिये अगर-छत-लकडकीबनाकर दूसरासबकाम पथ्थरइंडका बनायाजाय कोईहर्जकीबातनही. लेकिन!-हमारे कहनेलिखनेपर कौन अपनेदेशकी रसमछोडता है!-जिसदेशमें जोजोबुरी रसम चलतीहै उसकोंछोडना बडेहीचतरमनुष्योंका कामहै. कइदेशोंमें चढावके भीतर-बडाहीअंधेरा और दरबजे बहोतनिचे रखेजाते है, लेकिन!-यह सबज्ञदारोंका कामनही. हरवस्तु माथेमें चोट लगे-और-निचानमनापडे-इससेतो पहिलेहीसे उंचेदरबजे रखे-



जायतो क्या बिगाड़है !—एकसोआठ ( १०८ ) हाथ-लंबा-घर-ब-  
होत अकलहुशियारीसे बनायागयाहो तो रहनेवालोंको बड़ाही  
आराम हासिल होतारहे, देवमंदिर-राजमहेल कचहरी-और-ध-  
र्ममाला-बड़ेहोनाही अच्छे, अकेलीलंबाइचौड़ाइसे कोइगरजनही.  
संगीन-उमदा-और-हवादारहोना तारीफकीबात है. पचास-चा-  
लीस-या-तीसहाथलंबे घरभी-अगर ठीकठीकतौरसे बनेहुवेहो-तो  
जमानादेखते-अच्छेही है. यूंतो छोटीछोटीकोठरीयोंमेंभी गुजरान  
करनेवाले करतेही है.

( ४४ )—घरकी उंचाइ उतनी बढ़ानाचाहिये. जितनी उसकी  
चौड़ाइहो. बहोतउंचे घर जल्दीगिरजाते है. सो ( १०० ) हाथसे  
ज्यादेउंचेघर अच्छेनहीहोते. सीढी चौड़ी-और-पावडीये-ऐसीब-  
नानाचाहिये जो-न-बहोतबड़ी-न-छोटी हो. क्या ! बुढ़ा-और-  
लडका-मजेमें चढशके. पहेलीमजलसे दूसरीमजल-बारहमाहिस्सा  
छोटीहोनीचाहिये. घरकी दिवारें जिनको साफरखाना मंजूरहो-  
साफ-रखे, चित्राम कराना पसंदहो-चित्रामकरावे. काक-बिनाग-  
र्दनका आदमी-सांप-या-लडाइका देखाव-बगेराबुरेचित्राम घरमें  
चित्राना कोइफायदा नही. अगर चित्रामहीकरानाहै-तो-स्वर्गवि-  
मान-सिंहासन-नाचतीहुइ अप्सरा-बागबगीचे-बगेराउमदाचित्र-  
कारी कराओ. जिसकेदेखनेसे दिलपसंदरहे. घरकेपास जिनको  
बड़ेदृष्ट लगाना मंजूरहो-एकसेदूसरादृष्ट-पनरांह-बीस-हाथदूर  
लगानाचाहिये. पासपामलगानेसे-एकदूसरेका स्पर्श होगा-और-  
उनकेमूल जमीनमें एकमेंकहोजानेसे अच्छीतरह फलेगेंभी नही.  
ठंडीहवा-या-धाम-लगनेसे दृष्टोंकोभी बीमारी होजाती है. अंकुरे

न-आना-शाखा सूकजाना-पत्ते-सफेदपडजाने-यही इनकेलिये बीमारी है. खजूरीका-बैरका-और-बबूलका-वृक्ष घरकेपास बीना अच्छा नहीं.

(४५)-जिनमंदिरके बामे-या-पिछाडीके पासे बसना फायदेमंद नहींहोता. जिमने-या-सामने-बसना ठीकहोताहै, लेकिन! तोभी-थोडादूररहनाही अच्छा, ऐसासामने-बसनाभी ठीकनही जो-घरमें-भोजनजिमते जिनप्रतिमा नजरआती रहे. इससे बैअदबी होती है. जिनमंदिरकेशिखरकी धजाछाया जिसघरमें दूसरेतीसरेपहरको छोडकर पडतीहो-वो-घर फायदेमंद नहींहोता. विष्णु मंदिरकी बामीतर्फ-ब्रह्माजीकेदाहने-और-चंडीदेवीके चौफेर-कि-सीतर्फ-घरहोना-गृहस्थोंकेलिये तकलीफहोनेकी निशानी है. घर-केकाममें-लकड-इंट-पथथर-या-चूनावगेरा जोजो मसाला लगाना मंदिर-उपाश्रय-मशाण-या-कुवावावडीका उतराहुवा-नहीलगाना चाहिये. इसमें दुनियादारलोग बुराइकरेंगे. और-धर्मशास्त्रकी हुकमअदुलीभीहोगी. अनार-इमली-और-बबूलका लकड घरकेकाममें पायेदारनही होता. जिसघरमें उमदागालिचे बिछायेजातेहो-तस्बीरोंसे-और-मुनहरीकामसे-दिवारें झलाझलबनीहुइहो-छतमें मोनाकारीकाम-तरहतरहके-झाडफनुस-और-रोशनदानोंके चटकी ले देखाव-जिसमें दिखपडतेहो-ऐसेघर-उन्हीलोगोंको हासिल हो सकते है जिनोंने पूरवभवमें धर्मकियाहै. कइलोग कहदेते है धर्मतो कुछछचीजहीनही. जैसा प्रयत्नकरो वैसासुख मिलताहै. लेकिन! यह उनकीबडीभूलहै. दुनियामें कौन अपनेलियेसुखीहोनेका प्रयत्न नहीकरता!-सभी करते है. लेकिन!-होतेनही. इससे क्यासिद्ध-

काकि-कर्म-(यानी) पुण्यपाप-सबसे ज्यादा बलवान है, पुण्यका उदय दबने और उसवरुत जो जो प्रयत्न किया जाय वही फलवान हो जाता है, पुण्यका उदय न हो तो-वही-उद्यम व्यर्थ हो जाता है, मरब सबतरहके-सुख-पुण्यके ताल्लुक है, और पुण्य-देवगुरुधर्मकी सेवा-के ताल्लुक है.

(४६)-जैसे मकानकी सफाई रखना फायदेमंद कहा-वैसे-शहरकी सफाईभी अगर रखी जाती हो-तो-क्याही!-उमदावात है, कचरा कुड़ा-और-मलमूत्र-जहां बहोत जमार होता होगा वहां जरूर दुर्गंध फैलेगी. बड़े बड़े शहरोंमें दिशाजंगल जानेकी बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है. घरमेंही कोठरी बनाकर काम लेते हैं. लेकिन!-कोठरीभी चतराई के साथ बनवाना चाहिये. नहीं तो सारे शहरमें बदबू छा जाती है. घर बनवानेके लिये हजार रुपये खर्च कर डालते हैं लेकिन!-मलमूत्र विसर्जनकी जगह इतनी बुरी हिकमतसे बनवाते हैं कि-कुच्छ पुछो नहीं. अवल तो!-उक्त जगह मकानसे अलग होना चाहिये. उपरसे हवा आती रहे और निकलती रहे-तो-दुर्गंध कभी न बड़ेगी. जमीनसे हाथ भर उंचे-दो-पथर इस वजहसे चिने कि-जिसके निचे एक पथरकी शिला ढल गयी बनी रहे. जिससे मलकों बहोत वरुत ठहरे रहनेकी दिकत न रहे. दूसरी तरफ एक छोटी भोरी इस ढबसे बनाइ जाय कि-जिससे गंदा जल-या-मुत्र वगेरा तुर्ब बहा निकल जाय. इस तरकीबसे कोठरी बनी होगी-तो-दुर्गंध कभी न बड़ेगी. और मकानकी खूब सुरतीभी बनी रहेगी. कइलोग ऐसी तुरी ढबसे उक्त जगह बनवाते हैं जहांसे बरसों तक बदबू नहीं उठती. बैलबगेरा-दो दो-दिन तकभी नहीं उठवाते. एक घरमें जहां बहोत आ-

दमी बसतेहो मुनासिबहै एकदिनमें दोदफे सफाई कराया करें। जिससे बदबू बढेनही। मलमूत्रकी बाधाको रोकनाअच्छा नही। ब-  
होतदेरतक रौके जायतो मलकीगर्मीसे बातपित्तमिलकर तमाम श-  
रीरमें विकारपैदाहोताहै। मुनासिबहै दिनमें दोदफे दिशाजंगलजा  
ना और पेशाबकोभी जिसवख्त बाधाहो रोकना नही।

(४७)-शहरके रास्ते छोटेछोटे और बाँकेटेढेहोनेसे बडाअन-  
र्थहोताहै। राजा-दिवान-सुबाजहागिरदारवगेरा जोकोई उसजगह-  
का अधिकारीहो मुनासिबहै रास्ते सिधे-और-चोटे बनवावे। ख-  
द्योंको पुरवाके दुरस्त करवावे। कुड़ाकचरा दूर फेंकवाकर  
नालियोंका-गानी-दूर-पहुचानेकी तजविज करे, चमार-रंगरेज-  
कसाई-और-मदिरावेचनेवालोंको-अलगअलग-निवास करावे। ब-  
जारमें बदबूदेनेवाला-या-आरोग्यविगाडेनेवाला कोईपदार्थ हो-  
उसीवख्त-दूर फेंकवादेवे। छोटेछोटेगांवमें सफाईकाकाम-पटेल या  
पटवारीकेजिम्मे-रखना चाहिये। राजाओंको-और-हाकिमोंको-मु-  
नासिबहै अपनेशहरके दुकानदारोंको बिगाडेनही। अच्छाव्यापार  
चलता होगातो हजारोंहतरहकी रवंभक बढेगी। अलबते !-श्रूठतो-  
लेमापे-रखनेवालोंको-और-घरमें-धन रखकर दिवालाफुंकनेवालो  
को जरूर शिक्षादेनाचाहिये। अईबीतिवगेरा न्यायशास्त्रोंका फर-  
मानाहैकि-न्यायमें दया रखनेसे कामनही चलता। हां !-बिदूनम-  
योजन किसीको तंगकरना अच्छानही। अपनेशहरकी रवंभकबडा-  
नेकेलिये अगरखजानेसेभी पैसाखर्चनापडे कोईहर्जकीबातनही।  
राजमहेल-कचहरीघर-और-कौतवालीका-मकान-रवंभकदार औ  
र भावेबंद-बनानाचाहिये। शहरमें सिपाहीखोगोंका पहरा हरव-

रुत चकलेचकलेपरतयार रहे-याते-दंगे फिसादकरनेवालोंकों तुर्चे शिक्षा मिलजायाकरे. और सज्जनगृहस्थोंकों तकलीफ नपहुंचे वैसेा प्रबंध बनारहे. कइराजे एशआराममें मस्त रहकर विद्याअलम नहीपढते और कहतेहै हमे पढकर क्यालेनाहै?—उनकीअज्ञानताका किस्सा सुनिये!—एकराजासाहबकेपास जाकरएकभाटने कवितसुनाया. राजाजीने खुशहोकर हुकमदियाकि—सवारूपया—इनामदियाजाय!—खजानचीने उसकों सवारूपया दिया. जब—बो—इनामलेकर लोटा तब राजानेपूछा, क्योंरे!—तुजे सवारूपया मिलगया. भाट बोला—हां!—महाराज!!—मुजे बोसआने मिलगये. राजा गुस्सेहोकर कहताहै खजानचीकों बुलवाओ!—खजानची आया, महाराज!—क्या! हुकमहै? राजाजी गुस्सेहोकर बेंतोंसें कुटने लगे. और कहतेहै हमनेतो तुजे सवारूपयादेनेकों कहाथा—बीस—आने क्यों दिये?—इसीतरह तेने मेरेखजानेका नाश करदिया. राजाजीकी बुद्धिमानीकों देखकर भाटसें न रहागया, हाथजोडकर बोला!—महाराज!—सवारूपया—और—बीसआने—एकहीबातहै. राजाजी खजानचीकों—छोडकर—भाटकों तंगकरनेलगे. क्योंरे!! तेने पहिलेहीसें क्यों नरुहाकि—सवारूपया—और—बीसआने—एकहीबात है. देखिये!—अनपढराज!ओंकी खूबी,!

(४८)—दुनियामें अतंरूपराजे बादशाह होगये—लेकिन!—ज—मोन किसीकेसंग नहीगइ, सबलोग अपनीकमाइ भोगकर रवाना होगये—इसीबातकों कोइ सौचले—तो—घमंड—कभी—न—करेगा. सबसें बलवान और दोलतपंद बढाराजा चक्रवर्त्तीहोताहै. अगरचे सारी दुनियाभी बदलजाय—क्या! हुवा!!—एकिलख सबकोंसिधा करस-

कता है. आजकल के राजे बादशाह कमताकत और इथियार सँल-  
डाइल डनेवाले रहगये. चक्रवर्ती किसीकी परवाह नरखकर भुजा  
बलसँ सबकों बधमें करता है. एकतर्फ सारी दुनियाका बल-और  
एकतर्फ एकीले चक्रवर्तीका बल-कहिये !-बिदून तकदीर एसा होहा  
कौन पासकता है ?-जिसने पूरव जन्ममें तप किया है-देवगुरुधर्मकी  
ताबेदारी किइ है-और-परोकार करके धर्मकी बढवारी फेलाइ है-उ-  
सीकों धर्मज्ञता और राज्यपदवी मिलसकती है, पुन्यकाफल राज  
और-पुन्यधर्म-नकरे-तो-नरकगति तयार है.

( ४९ )-जिनके घर-नवनिधान-चौदहरत्न-सोलह हजार देवते  
नोकर-बत्तीस हजार मुकुट बंदराजे मुजराकरे-खूबसुरतरानीयां-  
कौतलघोडे-हाथी-रथ-दिवान-नायबदिवान-डंका-निशान-चौघ-  
डीये-गांव नगर-बागवगीचे-राजधानी-रत्नोंकी खांण-मुनाचांदी-  
और-लोहेकी खांण-दासदासी-नाटकमंडली-रसोइये-भीस्ती-तंबो  
ली-भांड-गोकुल-खच्चर-हल-बंदूक-तापें-मसालची-म्यानेपालखी  
और-अष्टांगनिमित्ताये-सदाहाजर रहतेये, छडीचवर-गवैये-और-  
वारांगना-जिनकी ताबेदारीमें हरवख्त उपस्थित रहतेये-और-जि-  
नकी जुतियोंमें अमौलजवाहिरातके नग-झलाझल थे-वेभी-चले  
गये-तो-दूसरोंकी गिनकी कौन करे ?-चक्रवर्ती जैसे नरहे तो औ-  
रोंकी क्या चलाइ ?-जंबूद्वीप-जो-लाखयोजन लंबा चोडा है उसमें द-  
खनदिशा कीतर्फ-भारतवर्ष-एक-सबसँ छोटा दुकडा है. इसके दंडवि  
भाग गिनेतो छहखंड होवै है. चक्रवर्ती छहोंखंडका मालिक हो-  
ता है. वासुदेव तीनखंडका-मालिक-मंडलिक राजा-उससँ छोटा-  
मुकुटवर्ष उससेकम-और-छत्रवर्ति उससेभी छोटा होता है. सामंत

राजा-ठाकर-जहागिदार-और-सिरदारवगेरा अपनीअपनी जमीनके राजेही है. दिवान-नायबदिवान-मुबा-राजानही नोकरहै. लेकिन! हां! रैयतके लेखे राजातुल्यही हैं. गवरनरजनरल-गवरनरवगेराहाकिमभी राजानही-राजाकेभेजेहुवे-नोकरहै. बडोकेभेजेहुवे होनेसें अलबते! छोटेकों राजातुल्यही गिनना चाहिये. सबअधिकारीयोंकों मुनाभिबहै न्यायकी सडक चले. एकदिन-वोजमाना था-जो-आर्यखंडकेराजोंकों अनार्यखंडके राजे मुजराकरतेथे,-और-आज-वो-दिनहै-जो-अनार्यखंडकेराजोंकों आर्यराजे मुजराकरनेहै, जब जिसका सितारा तेजहोताहैउसीका जोरशोर फैलजाताहै, कइलोग कहदेते है अपनी अकलहुशियारीसें राज्य मिलताहै, लेकिन!-यहबातगलतहै. जिमका नसीबा तेज हो-उसीकों राज्यका मिलना ज्ञानीयोंने कबूल रखा. हजार अकलहुशियारीकरो और भाग्यमें हकुमत न होतो कभी न मिलेगी.

(५०)-आजकल कइलोग कहदेते है जमीन पचीसहजार मीलके घेरेमेंहीहै. आगे नही. लेकिन!-यह बात धर्मशास्त्रोंसें बर्खिलाफहै. उत्तरदिशाकों सिधे चलेजाओ तो बहोत जमीन-और-आबादी मिलेगी. लेकिन!-जानेवाले बर्फकेसबब-या-शक्तिकी हीनताकेकागण अगाडीजानही सकते. इसीलिये कहदेते है जमीन इतनीही है. लेकिन!-धर्मशास्त्रके फरमाने मुताबिक जमीन बहोत-और-उनकेमालिकराजेभी बहोतहै, राज्यके काममें हरेकों अकलहुशियारीसे चलना चाहियें, बिना दरयाफ्तकिये किसीके पक्षमेंसामीलहोना-या-बिदून तहकीकातकिये किसीलेखपर दस्तावेजकरना-बहोतबुराहै. वचनका घाव-तलवारके घावसेंभी

ज्यादेहोताहै इसलिये किमीकों कुच्छकहनाहोतो सौचकरकहो. जो आदमी दूसरेकों-रै-रै-तूं-तूं-करकेबुलाताहै वो खानदानके घरानेका नही राजाओंकोंभी-पुनासिबहैकि-जिसकों, बुलानातो उसके होहेंमुआफिककहकर बुलाना,—

(५१)—नमाकरना किसीकेलिये अच्छानही, लेकिन!—राजा ओकेलिये—तो बिल्कुलठीकनहींकहा. सबवकि-रैयतकेन्यायकीडोरी राजाकेहाथमें है. नमेके फंदमें पडकर कइलोग खराबहुवे है, अपनी फजिती और दुनियाकीहमी कराना मंजूरहो-वे-मदिरापान करे, संसारमें जितने कुव्यमनहै उनका आधाहिस्सा मदिरापान है. जिसने एकदफे मदिरा पीइली उसकों दूसरीदफेभी पीनकी इच्छा जरूरहोगी. जैसेकामभोगका सुख दूसरीदफे-जीकों-ललचाताहै मदिरापानभी दूसरीदफेलेनकीइच्छा जाहिरकरताहै. मगजमें और कलेजेमें दाहपैदाकरना और दिनरातजमीनपरलौटना कौन चतराइकीबातहै?—अगर मवालकियाजायकि-पहेलेजमानमें आर्यलोगभी मदिगपीतेथे-फिर बुराक्योंकर कहतेहो?—(जवाब.)—चाहे-आर्य-या-अनार्य-कोइहो मदिगपान किसीकेलिये अच्छानही. जो पियेगा बडेबडेअनर्थ पैदाकरेगा. मदिग कइची-जोंकी बनतीहै, जैसेगेहूकेआटका-सत्व-मेंदाहै-मदिराभी-एकतरहका सत्वहै. लेकिन! बनावटमें-और-पीनेमें जोजो नुकशानहै इसकेनतीजेपरखयालकर ज्ञानीयोंने इसकी मनादीकिइ, अगर को इकहे हमको भोगविलामका सुख मिलताहै इसलिये हम मदिरा पीते है. (जवाब.)—यहबात बिल्कूलगलतहै. वल्किन!—इसमेंतो वीर्यनाडीकों बहोतबडा नुकशान पहुंचकर साराशरीर निकामहोजा-



ताहै. बीर्यनाडीकों ताकतदेनेवालीचीजें दुनियामें थोडीनहीं है, दूध जायफल-जवत्री-केशर-आसगंध-और-शिलाजित-वगेराक-इचीजें ऐसीहै-जो-वैद्यकीसलाहसैं खाइजायतो आशाहै बहोतबड़ा फायदा पहुंचे, लेकिन! अपशोसहैकि-नसेबाजोकों यहचीज क्यों करपसंद होसकेगी?—जिनकों जबरजस्ती लडाइ मौललेना मंजूर है-वे-मदिरापीना कैसे छोडेगे?—

(५२)—अफीम-गांजा-भंग-और-तमाखू-वगेराजितनीनसी-ली चीजें है उसका खाना पीना-या-सुंघना-नसेबाजोकों-छोडकर कोइ अच्छानहीं कहता, नमीलीचीजें खानापीना पागल बनने-कीनिशानीहै. जिनकों अपनास्वभाव बिगाडकर सीरडीबननाहो वो-नसा-करे, कितनेक ऐमे शौकीनहैकि-अपनाव्यसन-अपनीस्त्री कोंभी-लगादेते है. हुका-चिलम-या-बीडी-आपपीइकर खुशीकेशा थ स्त्रीकोंभी पातेहै, न पीयेतो लोभलालचदेकर पाते है. लेकिन! सौचलो!—इसमें फायदाहै-या-नुकशान?—नसेबाजोंका-मुंह-हरब-रुत दुर्गंधवाला बनारहताहै. दूसराआदमी उसकेपासबैठना नहीं चाहता. अपशोषहै नसेबाजस्त्रीपुरुष जब पासबैठतेहोगें कैसे अच्छा मालूम देताहोगा. अफीम एकबड़ाविषहै, इसका बहोतखाना अ-लबते!—हानिपहुंचाताहै. जिसकों रिवाज पडगया हो उसकोंभी अफीमका छोडना कुच्छमुश्किलबातनहीं, अगरचे दिलमें धार ले-वे,—लेकिन!—एकदमछोडदेनाभी नहींबनपडेगा, इसलिये मुनासि-वहै थोडेप्रमाणसैं घटातेघटाते बिल्कुल छोडदे, दूध-और-उसमें थोडा केशरमिलाकर पीया जाय तो सबनसोंकों रदकरके शरीर-की दृगुनीतेजी बढायगा.

(५३)—एकअफीमची नसेकेतारमें छतसें गिरपडा. लेकिन ! यहमालूम नहींहुवाकि—कौनगिरा !—नोकरसें पुछताहै देखतो !—कौन गिरा !—नोकरने जबाबदिया, हज़ूर !—आपही गिरेहै, आपउठकर कहनेलगे—अच्छा !—कोइहर्जनही. मुजे तो तलाशकरना था सोहोगइ. फिर थोडीसीदेरकेबाद आप घोडेसवारहोकर जंगलकी हवाखोरो चले. रास्तेमें नोकर साथही था—आप पुछते है अबे !—सहीस !—घोडा किधरहै ?—सहोसने जबाबदिया. आपहीतो सवार होकर चलरहेहो, अफीमची कहने लगे—अबे !—तोभी खयालरखना अच्छाहोताहै, कोइ—ले—न—जाय !—एकअफीमची एकदिन सामकेवल्लत दूधलेनेकेलिये अहीरकेघर गये. लोटा अहीरनके हाथ सोंपकर कहनेलगे इसमें दूधदेना—आप !—अहीरनकेघरकेसामने थोडीसीदूर एकदिवारकेशाथ टेकालगाकर खडे होगये. अहीरनने दूधभरके पास रखदिया. लेकिन ! अफीमची नसेमें चकचूर हुवे कुच्छमालूमनहोकि—अहीरन घरकेभीतरसें दूध लाइ—या—नही !—नसेकेतारमें दिवारकेसहारे वहांहो खडेरहेगये. और सारोरात उंघतेरहे. सवेरका वल्लतहोनेलगा जब अहोरन पैशाबकरनेकेलिये घरसें बहार निकली, अंधेरेमें अफीमचीकेपास थोडीदूर पैशाबकरनेलगी. अवाजहोनेपर अफीमचीकी कुच्छनींद खुली. दिलमें सौचनेलगे हमारेलिये दूधमें पानी—न—मिलातीहों !—अवाजसें बोले अबे ! रंडी !!—हमारे लोटेमें पानो मतमिलाना. अहीरन हसकर कहने लगीआप यहांहो खडे हैक्या ! अफीमची शर्मिंदे होकर कुच्छनही बोले—और—घरकों चलेगये. अफीमचीयोंकी लोलाका कहांतकबयान करें.

(५४)-भंगपीनेवालाभी नसेमें चकचूर रहता है. लेकिन !-हां! मदिरा और अफीमसें कुछ इसमें नसा थोड़ा रहता है. भंगपीने-वालोंकी कोषग्रंथी पानीउतरनेमें बढनेलगती है. उसके वीर्यमें वि-कारहोनेसें औलादहोनेमें भी-स्वतरा है. और होभीजायतो किसी लाइक नहीं निवडती. राजाओंके वर्ननमें नसाकाबयानलिखना इसलिये मुनासिब आयाकि बहुधा राजेमहाराजेभी नसेमें पडकर बडीबडी तकलीफ उठाते है. अंग्रेजलोग-गांजा-और-भंगवगेरा-नसेकेपदार्थोंका व्यवहारकरनेवालोंमें कानून बनाते है और कमी-शन नियतकरते है. लेकिन! शराबपीनेवालोंपर कानूननहीं बनाते-इसकासबब-यही जानपडताहैकि-वै-खुद-शराबप्रियहै. विलायतमें इतनीशराब खर्चहोतो है-जितनीमिठाइवगेरा खर्च नहींहोती.

(५५)-शिकारखैलनाहोतो-हमकहे उमका खैलो. क्रोध-मान माया-और-लोभ-ये-आत्माके असलीशत्रुहै इनकों मारना-इसी-कानाम-अमलीशिकारहै, अगर तुमकोंशिकारही खैलनामंजूरहै इ-नहीका खैले. जैसे तुमाराशरीर तुमकों प्याराहै जानवरोंकों अ-पनाशरीरप्याराहै. उनपर हथियारचलाना कौनसी बहादूरीकी बात हुइ ?-कोइगुनेहगार मुहमें घासकेतुणकेलेकर सामने आजाय तो क्षत्रीपुत्र उसकों फौरन छोडदेते है-बिचारे खुद मुंहमेतृणलिये हुवे-उनकों मारना कितना अन्यायहै ?-क्षत्रीपना इसमेंनही जो बे गुनाहबेतकसीर किसीजीवका वधकरना, गुनेगारकोंभी उसके गु-नेमुआफिक ताडनादेना न्यायहै, लेकिन! शिकारखैलना कोइ न्यायनही. अगरकहाजायकि-पहिलेजमानेमें आर्यलोगशिकार क-रतेथे, (जवाब.)-यहबात गलतहै. हवाखोरीकों जाना शिकारन-

हीकहाजाता, राजे महाराजे-या-कोइ-दूसराहाकिम-हवालेनेकों-जाय और जीवोंकों नमारेतो-इसकानामशिकार नहीकहेगें. आब हवा बदलनाकहेगें. जिसजीवकों वधकियाजाताहै वह फिरकभी अपनेकों वधकरेगा, जिनकों इसबातपर यकीन नही बेही-अनस-मजलोग-शिकार खेलते है.

(५६)-कइ राजे-शिकारके फंदये-पडकर जानछोडके चले गये, कइ ऐसेघायलहुवे जो सारी उमरतक यादकरते रहे-सिंहके सामने जैसे वहबिनाहथियारहै वैसे हथियारछोडकर कोइ राजा शिकार नही खेलता, बडेबंदोबस्तकेसाथ-मकानके घेरमें छीपकर छलकपटसें शिकार खेलते है. लोभदेकर मारते है. कहिये!-यहकौनसी बहादूरी और क्षत्रीपनेकी बात है?-क्षत्रीपन उसकानाम है जो धर्मकीरक्षाकरना, और दुखीमनुष्योंकों शरणदाता होना.जानवरोंपर लालआखकर तीखेंभालोंकी मारचलाना कहोतो सही!-कौनसीबहादूरीका काम है?-दिलकों पथ्थरबनानाहै-तो-तुमारे खोटेकर्त्तव्योपर क्यों नही बनाते?-राजनीतिभी यह नहीफरमातीकि-बिनाअपराधीकों मारो, नीतिशास्त्रका वचनहैकि-अपराधीकों भी मारो तो न्यायसें-उसपर सबूतीपहुंचाकर मारो. प्रथम श्याम-दाम-दंड-बगेरान्यायद्वारा शिक्षादो-इतनेपरभी नमाने तो हथियारसें लडो, लेकिन! तोभी उसकों इतलादेकर-नकि-दगल बाजीकरके-छडना. अन्यायसें किसीपर कदम न उठाओ. कहिये!-हिरन-शशे-सुअर-और-मछलीओंने तुम्हारा कौनसा गुनाह कियाहै?-जो-उनके प्यारे प्राणोंका विछोहा करडालतेहो.

(५७)-आपकी चढीहुइ भूकुटोदेखकर जब बनचरपशु-इधर

उधर दौड़ते हैं-शरीर उनका थरथरकांपने लगता है-तब-आनंदत-  
 रंगे-आपको खूबदिबाना बनाती है. इसीकानाम आप लोगोने-  
 (जिनको शिकारखैलना मंजूर है)-शिकार समझरखा है, लेकिन !  
 असलपुछोतो यह शिकार तही कुव्यसन है. शांतनुराजा इसकु  
 व्यसनसे-बडादुखभोगचूका है. शिकारीआदमी किसीकी दिइनसी  
 यत नहीमानता. हां!-अगरशिकारमें गिरपड़े-या-कोइजानवर-  
 आनंकर फाडखाय तभी सिधाहोता है. अगर कोइज्ञानी आदमी  
 उसे मनाकरेतो-वह-कव मानता है ?-पापीआदमी बिनाशिक्षापाये  
 अपनापाप नहीछोडता. अगरसवालकियाजायकि-शिकारी-ह-  
 जारोंजीवोंको मारडालता है लेकिन !-इसजन्ममें उसको रोग क्यों  
 नहो सताता ?-या-उसकेशरीरमें कीडे क्यों नही पडते ?-(जबाब)  
 जबतक उसकेपूरवजन्मको खरची पुरीनहीहुइ है तबतक उसको  
 मुखकाअंभाव कैसे होशकता है ?-जब खरचीपुरी होजायगी-पाप-  
 का-फल-जरूर भोगेगा. वर्त्तमानमें चाहे नमानो-लेकिन !-अगा-  
 ढीको बडादुख भोगना पडेगा. जो लोग-गुन्यपाप-और-स्वर्गन-  
 रक-नहीमानते है उनको धर्मशास्त्रपर श्रद्धा बिल्कुल नही आती.  
 बिदून आस्ता धर्मकीजड लगना मुश्किल है, ऐसे नास्तिकलोग  
 अगर अपनीकुतर्कोंसे ज्ञानीयोंका-कहना-नमाने तो-उससे ज्ञानी-  
 योंका-कुच्छबिगाड नही, बिगाड उन्हीमूर्खोंका है जो-अपनेही पां-  
 वपर कुहाडा मारते है. सच्चानास्तिकहमउसको समझतेहैजो हमारे  
 इसनीचेलिखे सवालका जबाब देवे. (सवाल,) अगरचे पांचतत्व-  
 के संयोगसेही जीवकी पैदाशकहतेहो-तो-बतलाना चाहिये पांच  
 तत्व-जडहै-पा-चेतन?-अगरचे चेतनहैतो उनमें आत्माकीसिद्धि

विदूत पांचतत्वके संयोगसें हुआ?—तो तुमको मंजूर नहीं, अगर कहोगे जड़ है—तो—जड़सें चैतन्यकी पैदाशहोना असंभव है. इधर भी तुमको मुंहखोलनेकी जगह नहीं, बस ! इसीसें मालूमकरसकतेहो कि—नास्तिकोंका मत—झूठा है. शिकारखैलनेवालोंका इरादा सदैव जीवमारनेमें लगा रहता है, और धर्मशास्त्रका फरमाना यह है कि—भलेबुरेइरादेहीसें पुन्यपापकी पैदाश है, इसलिये हर आदमीयोंको मुनासिब है कि—शिकारखैलना पापसमझकर छोड़देवे.

(५८)—नसेका—और—शिकारका—व्यान—राजाओंके बर्ननमें इसलिये लिखदियागया है कि—बहुधाराजे महाराजे इसीव्यसनमें पड़कर दुखीहोते नजर आते हैं. अगरचे छोड़देवे तो निहायत उमदा बात है. आर्यावर्तके समस्त धर्मशास्त्र—और—इतिहासिक ग्रंथोंका—आशय है कि—अवलसें—यहां—क्षत्रीजातिका स्वतंत्र राज्य—चला आया. कि तनेका विदेशी इतिहासकार—चीन—जापान—वगेराकों पुराना राज्य बतलाते हैं लेकिन !—नहीं !—सबराज्य—और—रीति रसम—पहिले भरतवर्ष हीसें (यानी.)—मध्यखंड हीसें प्रचलित हुआ है. किसी जगह ज्यादा और—किसी जगह कम—लेकिन !—सबतरहके न्याय—कलाकौशल्य—विद्याविनोद—और—चतराई—इसी मध्यखंडसें जारी हुआ ऐसे कहनेमें कोई हर्जाना ही, धर्मशास्त्रोंका फरमाना है कि—सभी दिन एकसरी खे कि—सीके नहीं होते, पहिले जमानेमें आर्यराजाओंका ऐसा पुन्य था कि—वे—अनार्याधीशोंको अपनी छायामें रखते थे, और आज—वो—दिन है कि—आर्यराजे—अनार्याधीशोंकी छायामें डोर रहे हैं, इसीका नाम समयका—फेरफार है. जिस मुसलमानोंने इस जमीन पर इकुमत जमाई थी आज वही जमीन अंग्रेजोंकी इकुमतमें विराज रही है, सबे महरस-

जोकोँ जबतकन्यायका आधारबनारहताहै कभी उनकी पढतीदिशा नहीआती. जोराजा-न्यायसे-नाकचढाताहै-वो-श्वतरंजका राजा है. उसकोँ असलीराजा कोइनहीकहता. यह संपूर्णधर्मशास्त्रोंका फरमानाहैकि-जबकिसीआदमीकोँ हदसेज्यादे घमंडआजाय जाननाचाहिये-इसकीपढतीकेदिन आये, रावणनेँ घमंडकिया राज्य-सेभ्रष्ट हुवा. मुसल्मानीअमल्दारीमें-बादशाहोंने-वजीरोंने-मुल्ला-ओने-जबबिल्कुलअन्याय किया उसीदिनसेँ उनकीघटवारी होती गइ, बाद दरुल्लनकेपेंशवोंने कुच्छदिन अपनाप्रतापसूर्यप्रकाशित किया-लेकिन !-जब अन्यायपरपांव बढानेलगे उसीदिनसेँ सिकस्त खातेगये. कोइदिन पंजाबके सिखुओंका सितारा तेज रहा. लेकिन !-जब-उनलोगोंनेभी प्रजापर अन्याय चलाया-और-आसपासके राजोकोँ घासकेबतौर समझे-तभी-उनकाराज्य नष्टहोगया. निदान !-अन्यायकी सडकचलना किसीकेलिये अच्छा नही. जो चलेगा रंज उठायगा.

(५९)-अंग्रेजोका-निष्पक्षपातन्याय-इसवरुत जगत्प्रसिद्ध है. इनका अवलदर्जेकान्याय यहहै कि-जोशख्श जिसधर्मकाहै उसके शाय धर्मविरुद्धकाम नहीकियाजाता, संबत (१९१४) के बादगदरसेँ यहभीप्रतिज्ञाहैकि-हम-अपनेसभीधर्म-और-सभाजातिकीप्रजाकोँ-समदृष्टिसेँ देखेंगे. धर्म-तथा-रंगमें-किसीतरहका पक्षपात नहीकरेंगे. आजकल जो किसीकिसीन्यायमें अन्यायांश दिखपडताहै इसमें कानूनका दोषनहीसमझना चाहिये, दोषहैतो-अयोग्यन्यायकर्त्ताओंका है, जोकि-थोडेअपराधपर ज्यादे-और-ज्यादेपर थोडादंड देकर फैसलादेते है. कभीकभी यहभीहोजाताहैकि

न्यायकर्त्तागण-विनासंतोषदायकप्रमाण मिलेभी-पकडलायेहुवेश-  
रुशकों-अपराधी ठहरादेतेहै. यह भी कानूनकादोष नहीं कहेमें.  
न्यायकर्त्ताओंकाही दोष कहाजायगा. दूसरे-जबकोई आदमी-अ-  
पनीबदचलनऔरत-मारडालनेकेलिये-दोषित-ठहरायाजाता है-त-  
ब-न्यायकर्त्तागण-उसकेचित्तकेभावोंमें-उसव्यभिचारिणीस्त्रीके कु-  
कर्मसें उससमय क्या भाव उत्पन्नहुवाहोगा-उसपर गौर नकरके-  
उसकों खूनकरनेका-अपराधी ठहरादेतेहै इसपर धर्मशास्त्रका क्या  
अभिप्राय है इसकों सोचना चाहिये. खेर!-हजार आक्षेप पैदाहो  
कोइहर्जनही-लेकिन!-हां-वर्त्तमानमें राज्यनीतिप्रवर्तकोंका है इस  
कहनेमें कोई दोषनहीं है.

(६०)-इंग्लंडमें पार्लमेंटकीस्थापना इस्वीसन (१६४०) के  
अंदाजनहुइ. सन (१६६५) में-न्युजपेंपर निकलना थुरुहुवा. इ-  
स्वीसन (१६९४) में-डाकखानेजारीहुवे. सारीदुनियामें जितने  
डाकखाने अलगअलगराजे महाराजे-रानी-बेंगम-बादशाह-और  
शहनशाहवगेराकी तर्फसेंजारी है उनमें-(६०००)-छहहजारतरह-  
कीटीकीट चलरहीहै. किसीपर राजारानीकीतस्वीर-कोइपरहाथी  
घोडा-सिंह-सांप-सवारवगेरातरहतरहके चित्र बनेहुवे मौजूदहै.  
बोलीका हिसाब लगाकर देखागयाहैकि-जगतभरमें (३४२४) त-  
रहकी भाषा बोलीजातीहै, इनमेंसें (९३७) एशियाखंडमें (५८७)  
यूरोपमें-(२७६) अफ्रिकामें-और-(१६२४) अमरिकाखंडमें-बो-  
लीजातीहै. सबभाषामें पुरानीभाषा कौनहै!-इसकेनतीजेपर ख-  
यालकियाजाय तो संस्कृतसें कोइबढकर नहींहोसकती. कइभाषा  
इसकेसामनेपैदाहोकर गिरचूकी है, सबमें फेरफार होताचला आ-



या इसमें एकमात्राकाभी कोई फेरफारनहीं कर सका. इसकेनिय-  
मही एसेहैंजो इस तोड़कर कोई नया नहींबनासके, भारतवर्षके  
मध्यखंडकी यही मातृभाषा है, और जितने कलाकौशल्यके ग्रंथ  
हैं इसीभाषामें बने हुवे हैं इसीकेजरीये-कहसकतेहैं कि-जितनी-  
कलाकौशल्य-विद्याविनोद-न्याय-और-चतराई दुनियामें फैली-  
यहांमेही उत्पन्नहोकर फैलीहै. ज्यादातर ज्ञानीयोंकी पैदाश पूर्व-  
कालमें यहांहीहुइ, उन्हींकेज्ञानसमुद्रका बिंदु दूसरेदेशवाले लेगये  
और-आज-सभ्यताकाझंडा-उड़ानेके अधिकारी बनेहैं. और क-  
हते हैं संस्कृतवाणी-अंग्रेजी-और-उर्दूके-आगेकुच्छचीज नहीं. ले-  
किन!-अंग्रेजी-तो-क्या!-उर्दूभी-जो अपनेआपको साफवर्ननक-  
र रही है संस्कृतकेआगे बहोतकमजोरहै. संस्कृत-और-प्राकृत-दो-  
वाणीको-सबसें अवलदर्जेकी कहदो-कोइहर्जकीबात नहीं. इनके  
गौरवको कोईभाषा नहीं घटासकती. उर्दूअक्षर ऐसे अपूर्ण और  
कठिनहोतेहैंकि-अगर-आलूबुखारा-लिखाजायतो-उसे-उल्टु बि-  
चारा-पढाजाताहै, धन्य!-उर्दूमहारानी!! तुम!-देववाणीको ह-  
रानाचाहितीहो?-लेकिन!-तुम्ही हार जाओगी,—

(६१)-भारतके मध्यखंडकेअधिकारी आजकल-अंग्रेज-हैं.  
अंग्रेजोंको भारतकाही ज्यादा आसानमाननाचाहियेकि-जिससें-  
विकटोरियारानीको-राजराजेश्वरी (एम्प्रेस) की-पदवी-पासहुइ  
जितने उपद्वीप-अंग्रेजोंके-हाथमें हैं उनमें किसीकीताकतनहीं जो  
भारतके मध्यखंडकी बराबरीकरसके, जितनेधनकीप्राप्ति अंग्रेजों-  
को भारतसेंहोती है उससें अर्द्धांशभी दूसरे उपद्वीपोंसें नहींहोती.  
मिस्र-काबूल-और-आफ्रिका-बगेरा स्थानोंमें भारतीबीरोहीने ल-

डकर अंग्रेजोंको विजयप्रदान किइ, जिससे अपनेको फावदाप-  
हुंचे उसका आसान मानना चाहिये. रैयतसमझती है राजाओंको  
बड़ा आराम होता है लेकिन!—शायमें यह भी समझना चाहियेके—  
ज्यादेहकुमतवालोंको—तकलीफ भी ज्यादा ही रहती है. संसारके रा-  
जाओंकी आमदनी—और—करजतरफ—खयाल करो—तो—यही नाहिर  
होगा कि—बड़ोंको जितना आराम—उतनी चिंता भी—शायलगी है. रु-  
सके जारकी आमदनी—एकदिनमें पांचहजारपौंड—सुल्तानटर्कीकी  
(३६००) पौंड—शहनशाह आस्ट्रियाकी (२०००) पौंड—शहनशाह ज-  
र्मनीकी (१६००) पौंड—शाह इटली—भारतेश्वेरी विकटोरिया—और—  
शाहवेलजियममेंसे—प्रत्येककी (१३००) पौंड—प्रेसीडेन्ट फ्रांसकी  
(१०००) पौंड—और—प्रेसीडेन्ट युनाइटेड स्टेट्स (संयुक्त अमरिका)  
की—(२५०) पौंड—दैनिक आमदनी है. एकपौंड आजकल (१६) सो-  
लहरूपयेमौलका समझना चाहिये.

(६२)—अंग्रेजी राज्यका प्रबंध—लंडनमें जहां मल्कामहेजमा र-  
हती है दो स्थान है. एककानाम लार्ड हाउस—दूसरेकानाम कामन्स हा-  
उस—पहिलेमें जो गवर्नर जनरल भारतसे पीनसल पाकर जाते है  
दाखिल होते है. और दूसरेमें बहुसंमतिद्वारा चुने जाकर दाखिल-  
होते—और—ये—सब—पार्लमेंटके मेंबर कहलाते है. इनकेउपर मल्का-  
विकटोरिया—प्रेसीडेंट—है. (यानी)—प्रमुख है. उस पार्लमेंटके—आधीन-  
एकसेक्रेटरी औफ स्टेट्स है. जिसकानाम संस्कृतमें महामंत्री भार-  
तवर्ष है. उस पार्लमेंटकी तर्फसे भारतमें एक गवर्नर जनरल रहता है.  
और उसके साथ सेक्रेटरी ओफ स्टेट की लिखापढी होती रहाकर-  
ती है. भारतमें गवर्नर जनरल की तर्फसे एक सभा—(यानी)—कौन्सल

है. जिसमें बड़ेबड़ेशेरीराजेभी सामिलहै, और उसमें भारतसंबंधी कानुन बनायाजाताहै. गवर्नरजनरलके आधीन-एक कमांडरचीफ है. जिसको जंगीलाट कहतेहैं, यह संपूर्ण भारतमध्यखंडसेनाका अधिपतिहै. बंबई-और-मद्रासमें एकएक गवर्नर रहतेहैं. इनका पद-गवर्नरजनरलके पदसे-इतनाछोटाहै जितना पार्लमेंटके पदसे गवर्नरजनरलका-और-सबसामग्री-इनकेपासभी अपनेअपने हाते में स्वाधोनहै, इसकेशिवाय-कलकत्ता-इलाहाबाद-लाहोर-ये-तीनछोटेहातेहैं. इनमें एकएकलेफ्टेंटगवर्नर रहतेहैं, जो संपूर्णकार्यो-में गवर्नरजनरलकी आज्ञा पालन करतेहैं. और छत्तनौ-नागपुर-आसाम-ब्रह्मा-लंकामें-एकएकचीफकमीशर-रहतेहैं. इंदोरमें एक एजंटगवर्नरजनरलभी रजवाडोंपर रहतेहैं. ये-सब-गवर्नरजनरलके आधीनजानना. बड़ागवर्नरजनरल-और-कमांडरइनचीफ-शीतकालमें कलकत्ता-और-उष्णकालमें-शिमला रहतेहैं,-या-देशाटन-करतेहैं. और बंबई-मद्रासके-गवर्नर अपनेअपने इलाकेमें इसीतरह करतेहैं. लेकिन!-कलकत्तेका लेफ्टेंटगवर्नरनरउष्णकालमें कलकत्तेके किलेकी अंग्रेजीकमेटीका प्रमुख कहलाताहै और उसके इलाकेका नाम बंगाल-इलाहाबादके इलाकेका नाम पश्चिमउत्तर-लाहोरवालेके इलाकेका नाम पंजाब-ब्रह्माआसामका ब्रह्माआसाम-नागपुरका मध्यप्रदेश-लंकाका सिलौन-लखनौका अवध-और-इंदोरका राजपुताना-कहलाताहै. इनकेताबेमें कमीशर-और-उनकेताबेमें कहीं कलकटर-और-कहीं डिष्टीकमीशर-एकएकजिलेके मालिक होतेहैं. अपनेअपने सूबोंमें जैसे गवर्नर-या-लेफ्टेंटगवर्नर-बड़ेहाकिमहैवैसेही कलकटर-या-डिष्टीकमीशरको-समझों.

(६३)—कबीनविकटूरियाने इंग्लंडकाराज्य (६०) वर्षसे ज्यादा भोगा. साठवर्षसे पहिले इंग्लंडमें रैल नही थी. तार-न-था, ज-हाज-न-था, विकटूरीयाहीकेराज्यमें अंग्रेज-भारतके सर्वमय-कर्त्ता-हुवे. अफ्रिका-और-आष्ट्रेलियामें-प्रभुत्व-बढा, यहाँतककि-क्रि-मियाकी-लडाइमें-रुसकों-निचादेखाकर-अंग्रेज-दिग्विजयी होग-ये. जिसवरुत्त जिसकासितारा तेजहोताहै उसीकी रौशनी झला-झल चमकने लगती है. जगहजगह-रैल-और-तारकेहोजानेमें एक स्थानकीबनीहुइचीज-दूसरेस्थान जलदी पहुँच सकतीहै. कितनेक बहुदर्शी-अंग्रेजव्यापारी-कहरहे हैकि-विलायतका माल भारतमें-बंबइ-था-कलकत्तेमें-जाकर-जहाजकेजरीये उतरताहै, वहाँसे पं-जाब-राजपुताना-अवध-बुदेलखंडवाले-रैलद्वारा-अपनेदेशोंमें ले-जाते है, इससे उनकों दुगुनाकिरायावगेरा स्वर्च होताहै. अगरबि-लायतसे जहाजद्वारा माल-करांची-उतारदियाजाय-और करां-चीसे-दिल्लीतक रैल बनादिइजाय-तो-उक्तदेशवालोंकों-थोडेस्वर्च में-विलायतका माल पहुँचसके.

(६४)—अखबारोंमें जाहिर होचूकाहैकि-जगतमें रैलके अंजन एकलाख और नवहजार चलतेहै. इनमेंसे यूरोपमें (६३) हजार एशियामें (३) हजार-आष्ट्रेलियामें (२) हजार-आफ्रिकामें (७००) और-बाकीरहे-सो-अमरिकामें चलतेहै. कितनेक कहदेतेहै जो जो विद्या और ऐलम-आजहै-पहिलेजमानेमें नही थे. (जवाब.) यह बात गलतहै, बल्किन्! जोजो विद्या-चातुरी-पहिलेथी-अब नहीरही. त्रिकालप्रपुरुष पहिलेजमानेमें होगये अबनहीरहे. जोजो कलमकौस्त्य-और-चातुरीकेग्रंथ-पहिले कालमें थे उसकेहजारमें

हिस्सेभी अब नहीरहे. पहिलेकालमें रैलनहीथी तो मनुष्योंकों आकाशगामिनीविद्या सिद्ध थी. विद्याकेबलसे विमानबनाकर उसमें लाखोमनुष्योंकों बैठाके एकगांवसे दूसरेगांव लेजातेथे. शास्त्रोंमें सुनतेहीहोकि-अमूकविद्याधर-अमूकशस्त्रशर्को-यहांसे-वहां लेगया रामचंद्रजी-लंका-जीतकर अयोध्या आये जब विमानद्वारा आकाशमार्ग आये. सोचो!-अगर उसवख्त आकाशगामी विमान नही चलतेथे तो-यह लेख क्यों होता!-रैलकों रौकनेकेलिये एकपथ्थर काफी है विद्याधरके विमानकों पहाडभी नहीरौकसकताथा. देशनमास्तरोंकी असावधानीसे जब-दौनोंरैल-आपसमें-लडती है. या-पटरीसे गिरजाती है-उसवख्त-जोकुच्छतकलीफ उठानीपडती है विद्याधरोंके विमानमें यह बात कब होतीथी!-रहा-तार-घडी-फोटोग्राफ-और-छापखाना-सो-जैसे-दूसरीकइचीजे-चतराइकेता ल्लुकहै-येभी-चतराइसे बनाइगइहै. जिसकेपास-बुद्धि-और-दोलत-दौंचीजे-मौजूदहो बडेबडेसंचे-और-कारखाने-बनासकता है, इसमें चकितहोनेकी कोइबातनही, अनादिसंसारमें कइरीतिरसमें चलती-और-बंदहोती चलीआइ, हां! इतनाजरूर कहेंगेकि-कोइ रीति-मध्यखंडकेलोगोंसे जारीहुइ और-कोइ अन्यखंडकेलोगोंसे हुइ. कइ कलाकौशल्य और चतराई-आर्यखंडसे बंद होकर अनार्यमें-और-कइ अनार्यखंडसे-बदहोकर आर्यखंडमें चलती रही. किसीवख्त आर्यखंडकेवासीदोंका पुन्य प्रबल रहा-किसीवख्त अनार्यखंड निवासीयोका रहा. सदा एकसरीखे दिन किसीके नहीरहते.

(६५)-कइलोग समझरहे हैकि-रूपडेबूननेकी-कल-अंग्रेजोंसे चली है लेकिन! यहबात गलतहै, चीनदेशमें इसामसीहके जन्मसे

(३०००) तीनहजारवर्ष पहिले कपडेंबूननेकी कल मौजूद थी और इसमसीहसें(३०००)तीनहजारवर्षपहिले-चीनमें-नॉटभी-चलताथा, रुसके-अजायब घरमें-अबतक-एक-इसामसीहसें (२) दोहजारवर्ष पहिलेका-नॉट-रखाहुआहै. ये-नॉट-रेशमीकागजपर-नीलीस्याही-सें छपते थे. कइलॉग-समझरहे हैं-नॉटका-चलाना-अंग्रेजोंहीसें जारीहुवाहै. लेकिन !-नहीं !-पहिलेभी चलता था. इससें कहसकते हैंकि-अनादिसंसारमें अपारकलाकौशल्य चलाआताहै, कभी-कम-और-कभीज्यादेहोना यहतो एककुदरतीनियमहै, लेकिन !-जो लोग कहरहे हैंकि-पहिलेजमानेमें अंधेरा था अब उजाला हुवाहै उनकों सोचनाचाहियेकि-हमाराकहना कहांतक सचहै, ?—

(६६)-काठकेकबूतर उड़जाना-और-फिर वहांही आजाना-काठकी मरुखी-अंगुठेपरसें उड़कर घरमें घुमआना. बोलनेवाली पुतली-जिसकों कहो अवाजसें बुला ले, काठका वानर सारंगीब-जाकर गान करे, दरबजेपर काठका कुत्ता-बंदूकउठाकर पहरादे-वे. और कोई उसे हाथलगावे तो दांत किडकिडाकर उंचीअवा-जसें भौंके, शतरंजका खिलारी शतरंजबिछाकर संदूकपर बैठे और सच्चे आदमीके सामने खेलखैले. अगर आदमी भूलकरे तो काठका-खिलारी संदूकपर थापदेकरहंसे, जैसे-ये-चीजें-शिल्पशास्त्रोंके जान-नेवालोंने भारतमध्यखंडकी शिक्षासें बनाई है-वैसे-तार-फोटोग्राफब-गेराभी परमाणुओंके-संयोग-और-आकर्षणद्वारा बनाइगइहै. जैनशा-स्त्रोंका लेखहैकि-हरेकचीजमेंसें हरवरुत-आठस्पर्शीपरमाणुं निकसते और प्रवेशहोतेरहते हैं, अगर यह बात नहोतीहो-तो कालांतरमें जवान बूढ़ा-और-नयीचीज-पुरानी-क्योंकर हो सके ?-अरीसेमें जब-अज्ञान

मुखदेखाजाताह तो शरीरसे निकसेहुवे जो परमाणुं उसपर जा-  
गिरेहै वही अपनेको दिखते है. बस ! वही परमाणुं दवाकेजोरसे  
वहांहीलगारहनेकी तरकीब बनादिगइ-इसीकामाम-आलोकयंत्र  
या-फोटोग्राफ-कहागया.

(६७)-यह ज्ञानीजनोंका फरमानाबहोतठीकहैकि-मांसआ-  
हारीयोंकेदिलमें रहेमनहीहोती. अन्नपानीखानेवाले-अध्यात्मिक-  
यानी-धर्मी-ज्यादे-और-मांसाहारी-भौतिक-अर्थात् वैभवके चा-  
हनेवाले ज्यादेहोते है, ज्यादे पापारंभकरके दोलतपैदाकरना अ-  
ध्यात्मिकों को नार्मजुर और भौतिकोंको मंजुरहोताहै. ज्ञानीयोंके  
वचनोंपर खयालकरते है तो दौलत शाय नहीचलती-धर्म-शाय च-  
लेगा. देशका हितचाहना-और-वाणिज्य व्यापार अच्छाचले-वै-  
सा-प्रबंधकरना-राजाओकेलिये बेशक ! मुनासिबहै लेकिन !-धर्मको  
साबतरखकर-नकि-खोकर कोइ कामकरना, औरकुच्छ-नबनेतो  
मांस-मदिरा-शिकार-चोरीयारी-और-दगाबाजी-तो-जहर-छोडना-  
चाहिये-जोलोम-धर्मको कुच्छचीन-न-समझकर कोरीजवानजोरीक-  
रते है-वे-आदमी-नही-जानवर है, जोजो राजेमहाराजे नीतिसें  
चलते है उनकी सबलोग तारीफकरते है, धर्मशास्त्रके फरमाने मु-  
जब उनको स्वर्गलोककी गति मिलेगी. राजाओंको रानीयें कइ-  
होतेहै लेकिन !-अपशोष हैकि-वे-सबको एकसरखी खुश नहीर-  
खते. मुनासिबहै सबको एकसरखी-पोंशाक-गहने-और-जहागोरी  
देवे. कमीबेंसी करनेसे दुनियामें तारीफनहीहोती, यद्यपि किसी-  
पर-ज्यादे-और-किसीपर-कम-मोहबतरखना यहतो होसकताहै  
लेकिन !-तोभी-चाहियेकि-जिसकोइसपकडकर लायेहो-उसे-वे

गुनाह-बेतकसीर छोड़ना नहीं, हां!-जो-बदचलन-या-हुकम-अ-  
दुली-करती हो-उसे-बेशक ! छोड़देना कोईहर्जकी बातनहीं. ले-  
किन!-वैश्याओंके वशमें पड़कर खासरानीयोंको-तकलीफदेना  
किसीमुरत अच्छानहीं. कितनेक ऐसेभी देखेगयेहैंकि-वैश्याओंके  
ताबेदार बनकर बड़ेबड़ेअन्याय करचूके हैं, वैश्याओंको-गांव-न-  
गर-जमीन-या-अपने पहनेनेका गेहना देदेना कोई न्यायमार्ग नहीं.  
अगरचे आपको यहीमंजूर है कि-अपनी पासवनकों खुश करना-  
तो-खैर!-उसे-लाख-दोलाख-पांखलाखरूपये देदो, नोकरचाकर  
रखदो-अपनी मरजीकीबात है, लेकिन!-महैलसें अलग-और दू-  
ररखना अच्छाहै. याते अपनी खासरानी और बेटोंकों तकलीफ  
नपहुंचे. चक्रवर्ती-और-वासुदेव-वगेराकों हजारें रानीयें होतीथी,  
लेकिन!-वे-न्यायवान् किसीकों दुखनहींदेतेथे. उनके शरीरमें य-  
हभी ताकतथी कि-रात्रीकेवल-रानीयोंकेपास-वैक्रियलब्धिकेप्र-  
भावसें-एकहीवल-अनेकरूपकरके जाते थे. अर्थात् जितनी रा-  
नीयें उत्तनेस्वरूप-बनाकर-उनकेपास जाते थे. हजारोंरानीयोंके  
श्राथ भोगकरनेसेंभी उनकों रोग नहींहोताथा. आजकल वह पुन्य-  
वानी कहाँरही?-जितनी है उससेंभी घटवारी होतीचली जारहीहै.  
पुन्यकियाथा तो राजे-बनेहो-अब मुनासिबहै न्यायसें चलना. बें  
गुनाह-बेतकसीर-किसीकों कैद करना-गोलीसें मार देना-तल-  
वारसें कतल करादेना-या-जरीमाना लेकर उसकी इज्जतमें धब्बा  
लमाना. किसीमुरत अच्छानहीं है.

(६८)-इह्वाकुवंश-सूर्यवंश-चंद्रवंश-हरिवंश-यादववंश-मो-  
र्यवंश-चौलुक्यवंश-चावडावंश-शौलंकीवंश-कदंबवंश-परमारवंश



शकवंश-और-गुहिलवंश-वगेरा कइवंश दुनियामें मौजूदहै, लेकिन !-इनमें-इक्ष्वाकु-सूर्य-चंद्र-हरि-यादव-और-मौर्यवंश-ज्यादे प्राचीन है, रिषभदेव-इक्ष्वाकुवंशके थे. उनके (१००) बेटेहुवे. भरत सबसेबड़ाथा, उसके सूर्ययशा बेटाहुवा, उससे सूर्यवंशीराजोंकी शुरुआत हुइ. बाहुबली-जोकि-भरतसे दूमरेनंबरका था उसके चंद्रयशा बेटा हुवा. उसकी औलादमें जोजो राजेहुवे-वें-चंद्रवंशी-कहलाये, इसीतरह-अपनेबडेरोंके नामसे-या-उनकोकिइहुइ नैकीसे-उनकेवंशकी पैदाशहोतीचली आइ. जैसे श्रीपालजीके वख्तमें सातसेसुभटोंने बहादूरी किइ जिससे-राणे-कहलाये. इसीतरह असंख्यबातें है, कौन कहांतक गिनतीकरे ?-अपारसंसारमें वंश और गोत्र बेंगिनत होचूके. रिषभदेव-काश्यपगोत्रके थे. मुनिसुव्रत-और-नेमिनाथजीकों छोडकर-और तीर्थंकरभी-काश्यपगोत्रमें-हुवे, बारह चक्रवर्त्तीभी इसीगोत्रमें हुवे है, जितने यादववंशीलोगहुवे सब गौतमगोत्रमें समझना चाहिये.

(६९)-कइराजे-गायनकलामें लीन रहकर न्यायकों भूलजाते है, कइ-वैश्याओंके-नाटक देखनेमें राजीरहते है, कइ-कामभोगमें आसक्तहोकर हजारोंहऔरतोंसे महोबत करते है, कइ-चित्रांपदेखने बनानेहीमें लगेरहते है, और कइ-देशाटनकरनेमें सारी उमर पूरीकर राज्यकार्यकों एकतर्फ रखदेते है, लेकिन !-नही !-राजाओंकों सबसे ज्यादा यहीबात मुनासिबहैकि-प्रजाके-न्यायकरनेमें-हरवख्त खयाल रखे. नाटक-रंगराग-स्त्रीसंभोग-और-देशाटन-कौनकों अच्छानहीलगता ?-सभीकोंप्यारा लगताहै, कौन नहीचाहताकि-हम-ऐशआराम-न करे !-लेकिन !-तारीफ उनकी

है जो-ऐशआरामके वरुत ऐशआराम-और-न्यायके वरुत-न्यायमें उपस्थित रहे. राज्यमें जितनाधर्म होताहै-राजा-अगर उसका साहायक और रक्षकबना रहे-तो-शरीरसें बिनाधर्म किये भी-धर्मकाफल-पासकताहै. सबबकि-उसका इरादा धर्मपररजु रहा. अगर पापकेकाममें साहाय देगा तो इरादा अधर्ममयहोनेसें पापफल हासिलकरेगा, जिनको धर्म-प्याराहो-धर्मकेसाहायक बने, पाप-प्याराहो-पापके साहायकबने.

(७०)-न्यायसें किसीशख्शपर गुना सबूतहोजाय-और-राजा उसको बिनापक्षपात दंड देवे-तो उसमें पाप नहींलगता. सबबकि-न्यायमार्गभी-धर्ममें सामीलहै. दंडदेना-सोभी-धर्मकी रक्षाहीकेलिये देनाहै. जीवहिंसा-चोरीयारी-और-दगाबाजीवगेरा अन्यायकरनेवालोंको दंड न दियाजाय तो अधर्मकी वृद्धिहोकर धर्मकानाश होजाय, इसलिये कहाजासकताहैकि-न्यायधर्मसें बिनापक्षपात किये दंडदेना पापनही. हां!-अगर बेंगुनाह बेंतकसीर किसीको दंड दिया जाय-या-रागद्वेषकेप्रभावसें-कमीबैसी-कर-दिया जायतो अलबते!-पापहै. हरेकराजेमहाराजोंको-और-न्यायाधीशोंको-मुनासिबहैकि-सत्यपर खडे रहकर न्यायसें कामकरे. जीदगी थोडेदिनकी है, और सबको विदाहोनाहै. जो जो राजेमहाराजे और हाकिमलोग-धर्मको जूठा समझते हैं उनकेलिये न्यायसें चलतेभो कुच्छ धर्म नही होसकता. सबबकि-उनकेलिये-तो धर्म-कुच्छचीजही नहीं फिर किसकी रक्षाकेलिये न्याय करेंगे, असलमें उनसें न्यायहोनाभी मुश्किल है. एकमुसाफिरने किसी गांवके एकमसकरेसें पूछा कि-भैया!-इसगांवका मालिक कौनहै?

मसकरेने जवाबदिया-अपनेअपने-घरके मालिक सबहै, मुसाफिरने कहा नही !-भैया !!-मैं-यह पुछताहूँ इसगांवका ठाकुर कौन है ?-मसकरेने जवाब दिया-किसकिसकों बताउ, ?-अपनेअपने घरमें सबकेवहां ठाकुरजी है. किसीके शिवजी-किसीके घर कृष्णजी-किसीके घर रामचंद्रजी-और-किसीकेघर गणेशजी विराजरहे है, आप किसकों पूछते है, ?-उसने कहा !-भैया !-मैं-इनठाकुरोंकों नही पूछता, इसगांवका राजा कौनहै ? मसकरेने जवाबदियाकि-कल इसगांवमें एकचमार मरगयाथा-सो-उसकी स्त्री-यह कहकर रोतीथीकि-हाय ! मेरे राजा ! हाय मेरे राजा !!-इससें यह-मैं-जा नताहूँकि-अपनेअपने घरके सभीराजा है, मुसाफिरने कहा-यह क्याबातहै, ?-मसकरेने जवाबदिया-आप समझे !-इसगांवका राजा अन्यायी है इसलिये मुजे इतनी तरकीबे सुनानी पडी.

(७१)-जहां-राजा-न्यायवानहोगा उसकी रैयतभी अकसर न्यायवती होनीचाहिये. यह नहीकहा जासकताकि-सभी-लोग एकसे बनजायगें. लेकिन ! हां !-इतनाकहना बनसकताहैकि-जैसा राजा-वैसी रैयत-युंतो संसारमें ऐसेऐसे अधर्मी पडे है जिनका क्यान सुनकर कलेजा कांप उठताहै, लेकिन ! खैर !-यही कहना बनसकताहैकि-सभी एकसरखे नही होते. दौलतका भूखा संसार है. आदमी इरादे बडेबडे बांधताहै लेकिन ! पार पाना मुश्किल है. ज्ञानीलोग-उसका सौचफिकर नहीकरते-अज्ञानी करते है. बस ! ज्ञानी और अज्ञानीका यही तफावतहै. असलमें सौचफिकरनेसें कुछ बनता नही, बनता वहीहैजो-जिसके भाग्यमें है. कई लोग दौलतकों जोडजोडकररखते है लेकिन ! जबजानेवालीहो

एकपंटेमें चलीजाती है. बड़ेबड़ेराजे दौलतकेलिये लड़मरे औरमरते है रैयत बिचारी कौनगिनतीमे? लेकिन! तारीफ उन्हीकी है जो धर्ममें खरचकरते है. कइलोग ऐसे है जो आप खरचकरना चाहते है बैठे खरचने नहीदेते. कइ ऐसे है जो दूसरेकी दौलतदेखकर झूरेत है और अपनेकों कोडी एक नहीमीलती. दौलतकेलोभसें नकरनेकेकाम करगुजरते है, युवानीमें औरतसें और धनसें बेपरवाह रहना बड़ेहीनसीबेदारका कामहै. दौलत मोलना पुन्यकेताल्लुकहै. दौकतपाकर सबर नकियातो उसकेसमान कोइ बेबकुफ नही.

(७२)—धर्मीजीव-चंदनकीतरह अच्छे-और-पापीजीव भोहरकीलकडीकीतरह बुरे होते है. कइआदमी ऐसे है जो अपनेआपकों खोटेकचर्च्योंसें इठासकते है दूसरोंकों नहीहठा सकते. कइअपनीऔरतकों अपने हुकममें चलासकते है कइ नही चलासकते, कइ ऐसे है जो-आप-नाराजहै लेकिन! दूसरोंकों नाराज नहीकरते, जोसख्त विद्यामें और ऐलममें बढाहै उमरमें अगरछोटाहो-तोभी-उसकोबडा समझनाचाहिये. जैसे राजहंस जिसनदी-या-सरोवरेके कनारे पानी नहीदेखते वहांसे चलेजाते है तुमभी अगर जहां तुमारी कदर न होतीहो चलेजाया करो, दुनियामें इज्जतसमान कोइ धन नही, ऐलमदासेंकी कदर जितनी पहिलेजमानेमें होती-थी अब नहीहोती, बल्किन्!—आजकल ऐलमदारोंके दुश्मन बहोत, सारीजींदगी एकसरखे दिन किसीके नहीहोते. बंदेकों चाहिये सदाहिंम्मत रखे. हिंम्मत बराबर कोइचीज नही. एकतर्फ बत्तीस लक्षण-और-एकतर्फ धीरजगुण सबसें बढकर कहा. वें-बेबकुफ है

जा दौलतके चलेजानेपर बेहोश होजातेहै. हिंमतहारनेवालोंकी दूसरीदफे तेजी नहीहोती.

(७३)-कइ ऐसे शख्सहै-जो अच्छेखानदानकेघरानेमें-जन्मे-लेकिन! इरादा उनका हमेशां निचे कामोंमें लगारहताहै. कइ ऐसेहै-जो-निचेकुलमें पैदाहुवे लेकिन! इरादा उनका उंचेकामों-मेंरजु रहताहै. कइ रुपरंगमें बडेखूबसुरत-लेकिन!-विद्यामें रहित है. कइ दौलतमें झलाझल-लेकिन!-चलन अच्छानही. कइ चलन अच्छाचलतेहै लेकिन! दौलत उनकेपास नही. कइ परोपकारकरनेमें होशियार-और-कइ अपचेही पेंटभरनेमें मस्तहै. कइ आंखोंमें अंधेहै लेकिन! अकलमें अंधे नही. कइ अकलमें अंधेहै आंखोंमें अंधे नही. कइ ज्ञानगुणमें बढतेजातेहै लेकिन! मान गुमान बिल्कुल नही करते. कइ बिल्कुल मूर्खहै लेकिन! घमंड इतनारखतेहैंकि-कुछ पूछोनही. कइ ऐसेहै-जो-अपनी-औरतमें निगाहभी नही मीलाते-और-पराइऔरतमेंपसंद रहतेहै, कइ अपनीऔरतशिवाय दूसरीपर कभी खयालही नहीकरते. कइ-दूस-रोकों-सच्चाउपदेश देसकतेहै आप उसमुजब नही चलसकते. कइ शरीरमें कमजोरहै लेकिन!-घमंडमें कमजोर नहीहै, कइरुपवान् है शीलवान नही-कइ शीलवान् है रुपवान् नही.

(७४)-कइलोग-म्यानेपालखीमें बैठेहुवे तकलीफ मानतेहै-और-कइ पैदलचलनेहीमें-राजीहै. कइलोग घरमेंबहार कदमरखनाभी नही चाहते-और-कइ जंगलमेंही पडे मस्तहै. कइ-खूबसुरत औरतकेशाय पलंगमें सौतेहुवेभी दुखीहै कइ झोंपडीमेंही बैठे आनंदमानरहेहै. कइ हाथीघोडेपर सवारहोना नहीचाहते-और-कइ

उसीकीमाला फरतेरहते है कि-कब हमकों मीले. कोइकों हजाररु-पयेभी कुच्छचीजनही-और-कोइकों सोरुपयेभी बहोतकुच्छ है,दौ-लतमंद बाजरीकी रौटी खानाचाहताहै गरीब-मेंवेके-लहु चाहता है. कोइकों शहरका रहना पसंद-कोइकों बिल्कुल नापसंदहै. कोइ गुडसें राजी-कोइ मीसरीसें राजी, कोइकों एकरतिभर अफीम न-हीसुहाता-कोइ तोलेभर खाजाताहै. एककों लाठियोंसें कुटो-ले-किन!-कुच्छपरवाह नही, और एककों फूलकीछडीभी बहोत है, घमंडकरनेसें और ज़डीबातका इठकरनेसें आदमीकी इज्जतमें ध-न्वा लगताहै.

(७५)-आदमीकों हुकमहोदेका सुख उसवख्तमालूम देताहै जब उससें गिरजाय, इसीसें कहाजाताहैकि जोकुच्छकरनाहो व-ख्तपर करलो, नहीतो पीछेसें पस्ताना पडेगा. आजकलके जमा-नेमें सारीउमरतक भाग्योदयवनारहना बहोतही मुश्किल समझो. किसीके पहिलीउमरमें सुख-और-किसीके पीछलीमें सुखहोताहै, कइ ऐसेभी है जिनोंने सारीउमरतक तकलीफ उठाइ आराम एक दिनभी नहीपाया. जिसने पूरवभवमें पुन्यानुबंधिपुन्य उपार्जन कियाहै-वो-यहांभी सुखी-और-परभवमेंभी सुखीहोगा. जैसे अ-च्छेसाधु-अच्छा गृहस्थ-और-अच्छाराजा. जिसने पूरवभवमें पा-पानुबंधिपुन्य उपार्जनकियाहै-वो-यहां सुखी-और-परलोकमें पा-पकेप्रभावसें दुखीहोगा. जैसे वैश्या अन्यायीराजा-और-अन्या-यीगृहस्थ, इसका मतलब यहहुवाकि-पूरवकेपुन्यसें तो यहां सुखी हुवे लेकिन! उस पुन्यकेभोगतेभोगते बांधलिया पाप-इसलिबे उ-क्तपुन्यका नाम-पापानुबंधिपुन्य-कहागया. पुन्यानुबंधिपाप-वो-है

जो-पूरवकृतपापसें यहां दुखीहुवे लेकिन !-यहां पुन्यकेकामें कर-  
ताहै इसालिये अगलेभवमें सुखी होगा. जैसेकोई गरीबआदमी यहां  
खानेपीनेसेंभी तंग है लेकिन !-पुन्यकेकामकरनेसें अमाढीभवमें  
सुखी होगा. पापानुबंघिपाप-बो है-जो पूरवकृतपापसें यहां दुखी  
और यहांभी फिर पाप करताहै इसालिये परभवमेंभी दुखी होगा.  
जैसे कसाइवगेरा हिंसकजीव होते है,—

(७६)—जिसराजासें-या-बडेहाकिममें तुमारा विरोध हो  
गया-तो-मुनासिबहै उसकेराज्यकों छोडकर दूसरेराज्यमें च-  
लेजाना, बडेलोगोकेदिलमें गुस्साभी बडा रहताहै. जहां एक  
चीजपर दोशरुश मालिकहोंगे वहां कभीनकभी जरूर दंगाहोगा.  
इसलिये मुनासिबहैकि पहिलेहीसें उसके दोहिस्से करदियेजाय.  
अगर किसीस्त्रीसें दोशरुश मोंहवत रखना चाहतेहो-तो-यह कभी  
न-होगा, समझदारकों मुनासिबहै उसस्त्रीसें अपनी दोस्तीकों ख-  
तम करे. और यह सौचतारहेकि-मर्दकेलिये औरत-और-औ-  
रतकेलिये मर्द-प्रोतिहोनेसें इसीभवमें हितकारीहै, लेकिन !-पाप-  
बंधके हेतु होनेसें परभवमें हितकारी नहीं, कइ शरुश ऐसे है जो  
बोलीसेंमीठे-लेकिन !-कामपडे बुरे, कइ बोलीसें कठोर लेकिन !-  
कार्यपडे अच्छे है, और कइ दोनोतरहसें निकामहै. जहां बहोत  
लोग-गप्पमारनेवाले-बैठेहो वहां अकलमंदकों मुनासिबहै चूप रहे.  
जिसकों समझानेपर हसदेताहै उसे बैशरम समझो. जो मालिक  
नोकरोंका हक नहींजानता-बो-खता खाताहै. दौलत और जवा-  
नीका ठहरना बहोतदिन नहींहोता, मुनासिबहैकि-अपनीमेंकच-  
कन न छोडना.

(७७)-भारतकेमध्यखंडको छोड़कर इसवस्त्र जितनेदूसरेदेश मशहूरहै तरहतरहकेलोगउनमें बसते हैं, उनकी जातबिरादरी-और-कुटुंबकेभेद गिननेलगे तो कब पारपासकते हैं, उनकीचालचलन और-खानपानका-व्यौरा-यहाँलिखनाशुरूकरे तोभी-अंत न आ-सकेगा. एकदेशवाले जिसवातको पसंदकरते हैं दूसरेदेशवाले फौ-रन उसे नापसंद करदेते हैं. इसीसेकहाजाताहैकि-खानपान-और चालचलन-चाहे जिसतर्फसे लिखनाशुरूकरोगे पार न पासकोगे. इंग्लंड-अमरिका-अफ्रिका-आस्ट्रेलिया-न्युसौथवेल्स-चीन-होलांड बेलजियम-नरवे-स्वीडेन-युनाइटेडस्टेट्स-न्यूफाँडलैंड-डेनमार्क-स्पेन-रूस-ग्रीस-इटाली-पर्तुगाल-जामेका-बहामा-जंगरी-जर्मनी-जापन-इवाइ-हंगरी-वगेरा जोजो देशहै उनकी जातबिरादरी वंश और-चालचलन हजाराहतरहके हैं. कइदेशवाले झींगामछलीको जीतीही खालते हैं, एकगिलासमें जल भरके उसमें मछलीको डालदेते हैं, फिर उसमें शराबका सिरका और तैल डालकर थोड़ी सीदेरबाद जब मछलीयां नशेमें आके कूदनेलगती हैं उनको पक-डपकडकर जीतीहीको खाजाते हैं. धन्यहै ! उनके हृदयको-उनकी लीलाको कहांतक वर्नन करे ! जिनको जीतेजीव खानेसेभी नफ-रत नहीं. कइदेशमें बीमारघोडेको गोली मारदेना दया समझते हैं. कइ देशवाले पक्षीयोंकेअंडेको सुइलगाकर उसका रसपीजाना अच्छासमझतेहैं. कइदेशकी पढीगुनीस्त्रीयोंको-थियेटर-सैर-बा-बिल-सिंगार-बनाव-नाच-बाल-खेल-तमाशोंसे एकघडी फुरसत नहीभीलती. कइदेशकी स्त्रीयें-पतिसे-जरानाराजहुंकि-बलाकके लिये अदालतमें हाजिर होजाती है. कइदेशकीस्त्रीयोंने पुरुषोंकेकाम



छीनलिये है जैसे-डाक्टर-एडिटर-बारीष्टर-जज-कप्तान-इंजिनीयर-वकील-मास्तर-बलुमटेर-कलर्क-मजदूर-सबकुछ स्त्रीयां है। अ-मरिकाकी स्त्रीयें कइवातोंमें पुरुषकी बराबरी करसकती है। विलायतमें कुच्छपद ऐसेभी है जो अबतक स्त्रीयोंको नहीमीले, पार्लमेंटकी मेम्बरी-फौजकी करनेली-और-जहाजकी कप्तानी-अबतक उनको नही मोला है। हां!-फ्रांसकी स्त्रीयोंको मर्दाना कपड़े पहेंनकर निकलनेकी आज्ञा मीली है।

(७८)-कइदेशकी स्त्रीयोंने शराबपीनेमें पुरुषोंको मात दीइहै। कइदेशकी स्त्रीयोंने चुरटपीनेमें-और-पैरगाडीपर बैठकर शैरकरनेमें पुरुषोंको पीछाडी करदिये है, कइदेशवाले कहरहे है स्त्रीकी-स्वाधीनताको रोकना चाहिये, लेकिन! क्या करे! रुकती नही। देशदंशमें विवाहकी रीति अलगअलगहै। कइदेशमें सरेबाजार स्त्रीयां बिकती है। कइदेशवाले कुत्तोंको और कइ बिल्लीकों-पालना पसंदकरते हैं, चीनदेशके अनेकस्थानमें-लोग-कागजके बख्र पढ़े-नते है और कहते हैकि-कागजकेकपड़ेकी ताहसीर रुइके कपड़ेसे ज्यादा गर्महोती है। पानीसेतो सबलोग नहातेही है लेकिन!-कइजगह दूधसेभी नहाना पसंदकरते है-बतलाते है दूधसे नहानेसे शरीर स्वच्छ और खूबसुरत होजाता है, इमीमतलबसे आजकल अ-मरिकाके न्यूयार्ककी-मेमें-दूधसे नहायाकरती है, एकऔरतके नहानेकेलिये दससेरदूध चाहिये, कइदेशोमें गर्मजलकेकुंड-और-ज्वालामुखीपहाडोंको-करामात-समझते है, और कइदेशकेलोग-अम्रिकायकेजीवोंकी पैदाश वहां ज्यादासमझकर-करामात नही समझते। हमारी रायभी यही हैकि-करामात नही-जमीनकी ताहसी-

रहै. कइ देशकीजमीन हरसाल आधावर्ष बर्फसेढकी रहती है और कइदेशमें बर्फका नामनिशान तक नहीं, कहीं ढेरआबादी और कहीं बिरानपडाहै, कइदेशके वाशिदे कालेरंगके-और-कइके-लाल या-गौरेहै. कइदेशवाले-दूसरेदेशवालोंको नयीदुनियाकी पैदाशके कहते है और कइ अपनेआपको नयेकहकर दूसरोंको पुरानेबत-लाते है. कइदेशवाले खुलेमैदानपडी हुइ दूसरेकी चीज नहीं उठाते और-कइदेशकेलोग नजरकेसामनेसे चीजलेजाय और मालूम न-होनेदे. कइमहाशय फरमाते है-( जुओ-बडारोजगार-जो-हार-न-होती,)-( चोरी-बडाव्यापार-जो-मार-न-होती,)

(७९)-जगतभरमें मुसलमानोंसे इशाइलोग दुगुने है, इस्वीसन (१८८२) की-मर्दमसुमारीको-देखतेहै-तो-जगतभरमें-बारहकरोड चौदहलाख-मुसलमान-और-बाइसकरोड-सीत्तेरलाख-इशाइ-गि-नतीद्वारा मालूमहोतेहै, संपूर्णवंगालहातेमें सातकरोड आदमी ब-सते है और इंग्लैंडमें कुल चारकरोडही बसते है, लेकिन !-जिन-का पुन्यप्रबल उन्हीका जोरशौर पसारहोताहै, आदमी बडानही है तकदीर बडाहै. हां! किस्मत और उद्यमका जोडा जरूरहै ले-किन ! तोभी इतनाजरकरहेगेंकि-किस्मतबडा-और--उद्यमछोटा है. सबबकि-उद्यम झूठाभीहोजाताहै किस्मत झूठा नहींहोसकता-मनुष्यका भव-आर्यावर्तमें पैदाश-शरीरसे तंदुरस्त-लंबीउमर-ध-र्मपर आस्ता-और-न्यायमार्ग-इतनीबस्तु अच्छेपुन्यबिदून नहींमि-लती, जिन्होंने पुन्यकिये है सबतरहकेसुख-और-धर्म-उन्हीको प्राप्त होसकते है,—

( ८० )-भारतकेमध्यखंडमें-क्षत्रीय-ब्राह्मण-वैश्य-और-शुद्र-

येचार कौम अनुक्रमसे उत्तम-मध्यम-गिनीगड़है. इनकेभी भेदानु-  
 भेद कईहै लेकिन!-वे-सब-चारमेंआजाते-है इसलिये बड़ेभेद चा-  
 रहीकहे. जिनमेंभी क्षत्रीयजाति सबके सिरताज इसलिये कहीगइ  
 कि-वें-लोग हिम्मतबहादूर सबसेअवलदर्जेके होतेहै. क्षत्रीयोंका  
 यहधर्महो हैकि-अन्यायीपुरुषोंको धर्मका विध्वंसकरते रौके. देव-  
 मंदिर-धर्मकेस्थान-साधु-सती-और-दीनदुखीका जहांतकबने ब-  
 चावकरे. परमेष्ठीमहामंत्रका जाप-और-जिनेंद्रदेवका पूजन-हरह-  
 मेशा करतारहे. रातको खानपान न करे. धर्म-अर्थ-और-कामको  
 यथासमय पालनकरे. अन्यायकी लड़ाई-न-लड़े-और-न्याययु-  
 द्धसे कभी पीछा-न-हटे, देवगुरुधर्म-और-प्रजाकेरक्षणमें अपनी  
 जान देनेकोभी तयाररहे. शरणागतकी रक्षा करे-लेकिन!-अन्या-  
 यीका शरणदाताभी-न-बने, शिकार-न-खैले. अगर खैलनाहोतो  
 क्रोध-मान-माया-और-लोभ-जो-जीवकेअसलीदुश्मनहै उनकेसा-  
 थ खैले. कितनेही क्षत्रीयपुत्रोंने अपना कुलधर्म छोड़दियाहै. ले-  
 किन! दुनिया बिल्कुल निर्बीज नहीं, कई ऐसेभी हैं जो अपने व्र-  
 तनियममें अडौलरहकर सदा नैकीसे चलते हैं. बड़ेबड़े राजेमहा-  
 राजे-और शूरवीरपुरुष इसीवंशमें हुवै हैं. हरेकक्षत्रीयको अपनेवं-  
 शकी कीर्त्तिपर खयालरखना चाहिये.

(८१)-मांसखानेकेलिये आर्यधर्मशास्त्रकी किसीको संजूरी  
 नहीं है. चीड़ीया-तोते-कबूतर-हिरन शशे-सूअर-बगेराके-माणों-  
 का बिछोहाकरना और-उनकामांसढालकर पुष्टाईचाहना कौनसा  
 न्यायमार्ग है. जीवोंकी हिंसाकिये बिद्वान मांस उत्पन्ननहींहोसक्ता?  
 जीवोंकोभारना स्वर्गमुखको देनेवाला नहीं. इस वाक्यसे मांसखा-

ना पाप ठहर सकता है. जीवोंको बांधना-मारना-निर्दयोंका काम है, जिसके दिलमें रहेंम नहीं उसे-धर्मी आदमी-कौन कह सकता है? इसवाक्यसे मांसखानेवाले अधर्मी सबुत हो सकते हैं. बस!-इससे ज्यादा क्या कहे!-और कहेंगे भी तो बुरा मानेंगे. मांसखानेसे शरीरमें रोगभी पैदा होता है, सबबकि-वह-भारी चीज होनेसे ठीक-ठीक नहीं पचता. तर्क करनेवाले कहेंगे क्या! घी-दूध-भारी-नहीं है!-इसे भी नखाना चाहिये!-(जवाब.)-मांससे बढकर घी-दूध-भारी नहीं कह लोग कहते हैं यज्ञमें मांसखानेसे दोष नहीं लगता ऐसा मनुस्मृतिका वचन है-(जवाब.)-यह बात गलत है-सबबकि-दोष नहीं लगता इसमें प्रमाण क्या?-विना प्रमाण-कहना सुनना-वृथा है. क्या! जो कुछ मनुस्मृतिमें विना विचार के कह दिया वही प्रमाण हो सकता है? कभी-नहीं, देखिये!-मनुस्मृतिके कई वचन-अविचारशील-हैं, जहां पिछले अध्यायोंमें मांसका वर्णन लिखा है (५६) में-श्लोकमें पाठ है कि-मांसभक्षणमें दोष नहीं. मदिरा पीनेमें दोष नहीं, तथा-मैथुन करनेमें दोष नहीं-यह प्राणियोंकी-प्रवृत्ति है. इसमें दोष नहीं. लेकिन!-इनसे निवृत्तिकरना तो महाफलदायक है. इसपर सबाल किया जाता है कि-जिसकी प्रवृत्तिमें पाप नहीं लगता उसकी निवृत्तिमें पुण्यफल कहाँसे आया!-इसको गौरकर सौचना चाहिये, बड़ा नाम धराना सहज है लेकिन! पूर्वापर विरोध रहित वचन बोलना सहज नहीं. अगर कोई मनुस्मृतिकारागी-इससे-नाराज हो-तो-शास्त्र वचनसे लडे. कह लोग कहते हैं मनुस्मृतिका अभिप्राय आपने नहीं जाना, उसका अभिप्राय ऐसा है कि-मांसभक्षणमें दोष नहीं ऐसा नहीं कहना-बल्किन्! दोष है ऐसा कहना, (जवाब.)-मूल पाठमें ऐसा

र्थ नहीं निकलता-अगरचे निकलता होता-तो-प्रवृत्तिरेषा-भूतानां यह पाठ-न-होता. विनाप्रमाण प्रतिपक्षीलोग कब मानेंगे. अगर कहा जायकि-कस्तूरी गौरोचनभक्षणकरना मांसभक्षणमें आगया-इसलिये मांसभक्षण किससे छूटा है?-(जवाब,)-कस्तूरीगौरोचन-मांसनहीं, किंतु-जैसे केश-वगेराहें वैसे कस्तूरीगौरोचनभी-मांससे अलग चीज है. सोभी प्राणीकी बिद्वन हिंसाकिये मीलसकते है, लेकिन!-मांस-प्राणियोंकी हिंसाबिद्वन नहीं मीलता, अगर कहा जायकि-माहिंस्यात् सर्वभूतानि-यहवचनभीतो स्मृतिवमे-रामें मौजूदहै-(जवाब.) मौचो!-फिर क्या सिद्धहुवा?"-इससेतो यह पायागयाकि-किसीजीवकी हिंसा नहींकरना. फिर!-यज्ञमें हिंसा-करना किसस्वर्गकेलिये कहागया?-क्या पितृदेवताओंकी-पूजा-जलचंदनकेशर-और-घो-दूधवगेरासें नहींहोसकती? अगरचे हो-सकती है-तो-त्रसजीवोंकी हिंसाकरना कैसे मुनासिब ठहरसकता है. निदान!-त्रसजीवोंकी हिंसाकरना मांसखाना-शिकारखैलना और-मदिरापानवगेरा अयोग्यवर्तावरखना कोइ आर्यधर्मशास्त्र न-ही फरमाता. क्षत्रीयपुत्र वडेनसीवेदार और राजस्वीतेजवालेहोते है, मुनासिबहै आर्यधर्मशास्त्रके फरमाने मुताबिक चले, और अ-पनेवंशकी कीर्ति कायम रखे.

(८२)-ब्राह्मणोंको शिक्षा-आप-धर्ममेंपावंदरहे और दूसरों-को पावंदरहनेकी तालीमदेवे. अर्हन्देवकी-त्रिकालपूजा-करे, पर-मेष्ठिमहामंत्रका हरहमेशपाठकरे. और निर्ग्रंथमुनियोंकी सेवाभक्तिमें सदैव हाजिररह. गृहस्थधर्मके-जो-गर्भाधान वगेराह-सोलहसंस्कार है उनमेंसे एक-व्रतारोपसंस्कारको-छोडकर बाकीके पनराहसं-

स्कार गृहस्थलोगोंके घरजाकर करावे. सत्यबोले-प्राणीरक्षामें ह<sup>४</sup> रवस्तस्वयाल रखे-और-खेतीवारीका-काम-खुद नकरे. जलकों छानकर पीए-कंदमूलफल-न-खावे-रातकों खानपान न-करे-क्ष-त्रीय-और-वैश्यके घरका पवित्रभोजन जीमे-तो-कोइहर्जनही. ले-किन! बनतेप्रयत्न अपनेहाथकाही बनायाभोजन खानाअच्छाहै; जो ब्राह्मण क्रियावान् नहीं है उसकों ब्राह्मण कहना मुनासिबन-ही. तोनतंतु-गलेमें-गारखनेसं ब्राह्मण नहीं बनसकते. ब्राह्मणहो-कर-जो-मांसमदिराखातेपीते है उनकों कसाइकटना कोइ हर्जकी बात नहीं, शुद्रकेघरका अन्न-और-देवकेसामनेचढायाहुवा-नैवेद्य ब्राह्मणके लिये खाना मनाहै. जोलोग खातेहं शास्त्रके बखिलाफ कामकरते है. अपनीज्ञातांविरादारीका कोइशख्श मांसभक्षीहोजा-य फौरन उसे अलगकर देंवे. क्रियासं पाकरहनेहीसं अपनाउपदेश दूसरेपर असरकरसकताहं. राजेमहाराजे-और-दूसरेलोग-अगर क्रियासं नापाकरहोंगे कब इज्जत करेंगे?—इसलिये मुनासिबहै श-रीरसं और मनसं-साफ-रहे.

(८३)—अगर सवाल कियाजायकि-ब्राह्मण-किसकों सम-झनाचाहिये ?—क्या !—शरीरकानाम-ब्राह्मणहै ?—या-जीवका नाम ब्राह्मणहै ?—अगर जीवकानाम ब्राह्मणहै तो सारीदुनियाकों ब्रा-ह्मणकहनापडेगा. सबवाक-जैसाजीव ब्राह्मणकेहै-वैसा-सबकेहै, अगर कहोगे शरीरकानाम ब्राह्मणहै तो सभीदुनियादारोंकों शरी-रहै, इसलिये शरीरकानाम ब्राह्मण नहींबनसकता. अगरकोइ ब-होतहीठठकरबैठेकि-शरीरकानामही ब्राह्मणहै तो बतलावे!—जब ब्राह्मणकेबेटे अपनेमातापिताके मरजानेपर उनके मुर्दोंकों जालते

है तब क्या!—ब्रह्महत्याकरनेके पातकी बनते है?—अगर कहा जाय पातकी तो नही बनते फिर शरीरकानाम ब्राह्मणमानना कैसे सबुत होसकता है? अगर जातिकानाम ब्राह्मण माने तो यह बात भी नही बनसकती. क्योंकि—ब्राह्मणकी जातिके शिवाय दूसरेभी तपकरके ब्राह्मण कहलाये है. इसलिये ब्राह्मणपना जातिके तालुक नही ठहरसकता. महाभारतके शांतिपर्वमें—बयान है कि—

( अनुष्टुप्वृत्तम्. )

कैवर्तीगर्भसंभूतो—व्यासो नाम महामुनिः  
तपसा ब्राह्मणो जातः—तस्माज्जातेरकारणं १  
उर्वशीगर्भसंभूतो—वशीष्टु महामुनिः  
तपसा ब्राह्मणो जातः—तस्माज्जातेरकारणं २  
श्वपाकीगर्भसंभूतो पारासरमहामुनिः  
तपसा ब्राह्मणो जातः—तस्माज्जातेरकारणं ३

धीवरकीलडकीके पेटसे व्यासजी पैदाहुवे—लेकिन ! तपकरके ब्राह्मण कहलाये. उर्वशीके गर्भसे वशीष्टजी और—चांडालीके गर्भसे पारासरजी—पैदाहुवे, और तपके जोरसे ब्राह्मण कहलाये. इसप्रमाणसे जाहिरहुवाकि—ब्राह्मणहोना—नहोना—जातिके तालुक नही. अगर कहा जाय कि—पंडितकानाम—ब्राह्मण है—तो—यह कहना भी ठीक नही. सबब कि—क्षत्रीय—वैश्य—और—शूद्रभी—विद्यापढनेसे पंडित होसकते है. विद्या—जोकोइ—पढे उसीकी है, कुछ ब्राह्मणोंने उसका ठैका नही लिया इसलिये कहसकते है कि—ब्राह्मणपना—शरीरजातिवगेराके तालुक नही. किंतु व्रतके तालुक है. महाभारतमें बयान है कि—

( अनुष्टुप्वृत्तः. )

न योनि नापि संस्कारो-न श्रुतं नापि संततिः

कारणानि द्विजत्वस्य-व्रतमेव तु कारणं १

ब्राह्मणस्वभावः कल्याणि !-ममः सर्वत्र दृश्यते

निर्मलं सकलं ब्रह्म-यत्र तिष्ठति सद्बीजः २

एकस्मात् स्थानतो जन्म-क्रियाः षष्ठ्यादिकाःसमाः

पश्चात्तंतुत्रये क्षिप्ते-द्विजोहं इति किं मदः ३

उत्पत्ति-मंस्कार-विद्या-और-औलाद-ब्राह्मणहोनेका हेतुन-  
ही-ब्राह्मणहोनेका हेतु-ग्रन-है. जिसमें निर्मलब्रह्मस्वभावहो-वही-  
ब्राह्मणहै, तीनतंतु गलमें डालदिये उससे ब्राह्मणहोनेका दावा  
नही होसकता. किसी धर्मशास्त्रमें नहीलिखाकि-मरनेवालेकेपीछे-  
उसके निमित्त-दियाहनादान-उसे पहुंचमकताहै. लेकिन ! ब्राह्म-  
णलोग उसबानकों क्यों जाहिरकरे ?-इमसे तो उनकों चीजबस्त  
मीलनेकी हानि पहुंच-लेकिन ! हां ! दुनियामें सभीब्राह्मण एक  
सरखे नही है. कइ ऐसेभी हैं जो शास्त्रकेफरमाने मुजब चलते हैं-  
और मिथ्याउपदेश कभीनही देते, वैसे ब्राह्मणोंकों-अलबते !  
सज्जन समझना ठीक है,

(८४)-वैश्यपुत्रोंकों शिक्षा न्यायसे व्यापार करे, अन्यायसे  
पैदाकिइहुइ दौलत बहोन वरुततक ठहरतीनही है. झूठबोलना-या  
देवधर्मकी कसम खाना किसीसुरत अच्छानही, जिनप्रतिमाकी  
बिदूनपूजाकिये-दुकानपरजाना मनाहै, निर्ग्रंथपुनि-व्याख्यान-दे-  
तेहोतो-मुनातिवहै उनकीसभामें शास्त्रमुननेकों जाना, सबकाम  
शास्त्रमुननेकेनोचे है. जिनपूजाभी शास्त्रमुननेहोसें जानीजाबी है,



इसलिये अगर शास्त्र पहिले सुनलियाजाय और पूजन पीछे हो-  
तो-कोई हर्जकी बात नहीं. बड़ेबड़े पापारंभ-न-कर-थोड़ेमें अपना  
गुजरान चलसकताहो-तो-बहेत्तर है उतनेहोमें संतोष रखना, ऐसा  
देशहित-और-पापारंभकरना कोई जरूरत नहीं-जिससे अपना-  
जीव पापमें लिपटकर नरककुंडका अधिकारी बने-आठपहरमें तो-  
नघंटे-तो धर्मकाममें-जरूरलगाना चाहिये. इसकेबिना परलोकका  
रास्ता साफ-न-होसकेगा. किसीकी बुराइकरना अच्छानहीहोता.  
जिसमेंभी-राजाकी बुराइकरना बिल्कुलठीकनहीं. राजाकी अपने  
परबहोत रहेमनजरहो-तोभी-उनसेहंसवखन खोफरखना चाहिये,  
सबबकि-राजस्वीतंजवालोंको गुस्सा आतेदूर नहींहोती. होदेदा-  
रोसें हरबख्त बचकर चलना चाहिये. मांसमदिरा-रात्रीभोजन-  
और-कंदमूल-खाना बड़ेपापोंकी गिनतीमें-है, अगर औरकुछ  
न-बनसके-तो-बड़ेपापोंसें जरूर बचना मुनासिबहै.

(८५)-ओशवाल-श्रीश्रीमाल-श्रीमाल-पोरवाल-पल्लीवाल-जै-  
सवाल-खंडेलवाल-हुंबड-मोंढ-वायडा-गोलालारे-श्रावगी-पर-  
वाल-बीजावगी-मीमा-भटेरा-वगेरा-वैश्योंकेकईभेदहैं. जो जिस-  
भेदमें-हो-न्यायमार्गसें उल्टा न चले.-जींदगी थोड़ेदिनकी है.  
दौलत किसीकी थीर नहींरही. गृहस्थोंकेलिये दानपुन्यकरना नि-  
हायत उमदाकामहै. घरसें बहारनिकसना-तो-हमबख्त-पांचदस-  
रूपये-पासरखकर निकसना चाहिये. एकदोहपयेसें-तो-कम-कभी  
रहना ठीकनहीं. तुमको अछेगृहस्थ समझकर किसी दिनदुखीने  
कुछ याचना किइ और तुमारेपास कुछ-न-निकसा-तो  
कितमैशर्मादेहोनेकी बातहै?-राज्यका महसूल न देना चोरीकेभेद-

में दाखिल है. जो जिसचीजका व्यापार करता हो जैसे-जवाहिरात-सुन्ना-चांदी-कपड़े अनाज-रुई-अफीम-सराफी-तांबा-पीतल-कोहा-रेशम-हुंडी-घी-तैल-आटा-दाल-मीथी-सूत-दियासलाह-लौ-नमीरच-तमाखू मेंवा-मीठाइ-रंगरोगन-सालदुसाले-गोटे कीनारी पघडी-दुपट्टे-कागज-छापखाना-दवाबुटी-शेयर दलाली-इतर-फुल्लेल-घडी-चश्मे-नकलीसुन्नाचांदीकेगेहने-गालीचे-पानसुपारी-चीनीरुसी-या-अंगरेजीमाल-वगेरा-जिसजिसचीजकी दुकानदारी चलतीहो उसमें-दगाबाजी-हथफेंरी-या-अइलबदलकरना-अच्छानही, इज्जतके कांकरे-और-दौलतका नाशकरनाहो-तो दगाबाजी करो. दगाबाजो बहोतदीनतक नहीचलती, कोइनकोइदिन जाहिरात जरूरआतीहै. अपनीचौरी अपनेसें-तो-छीपीही नही रहती, दूसरे केवलज्ञानी देखतेहैं, तोसरे जब चौरीकाभेद खुलजाताहै तब दुनियाभी देखलेतीहै, इसलिये मुनासिबहैकि-चौरी दगाबाजी-न-करना.

(८६)-एक-बापबेटा-दूसरेकेखेतमेंजाकर हरहमेश चौरीकरलिया करतेथे. एकदिनकीबातहै दोनों मिलकर खेतमें चौरीकरनेकों गये. बापने चारोंतर्फ नजर फैलाकर देखा-जब-कोइ-नहीदिखनेमें आया चौरीकों हाथ चलाया. लडका कहनेलगा सबतर्फतो आपने देखलिया-लेकिन!-एकतर्फतो भूलही गये. पित्ताने बिचारा इसने किसीकों आते देखलियाहै, उसीविरुद्ध चौरीहुइ बहुत इधरउधर फैंकदिइ-और-पूछनेलगा किधर कौन आताहै?-बेठेने कहा उपरदेखना तो भूलही गये. परमेश्वर देखताहै-या-नही?-पिता ! बोला!-सचहै यहतो हम भूलहीगयेथे. बस ! उसदिनकी बात

है और फिरकभी चोरी नहींकिड़. इसतरह अगर हरकिसीकों  
असरहोनेलगे-तो-क्याही ! अच्छीबातहै.

(८७)-~~१७~~ (अकलके फुव्वारे.)

- |                         |                          |
|-------------------------|--------------------------|
| -सच्च बोलो,             | -वारुदसैं दूररहो,        |
| -विद्या पढा,            | -सांपकों छुओ मत,         |
| -धर्मपर श्रद्धा रखो,    | -दिलकों साफ रखो,         |
| -पूरा तोलो,             | -बकवाद मत करो,           |
| -बढेसैं अदप रखो,        | -दुश्मनसैं बंदोवस्त रखो, |
| -गातेबख्त खुलकर गाओ,    | -बहेंमी मतबनो,           |
| बढेकेघर बढाअंधेरहोताहै, | -शास्त्रकी बातें यादरखो, |
| -नकलोफमें होशियार रहो,  | -कालका भर्गोसा नही,      |
| -सोचकर बोलो,            | -बदनकों साफरखो,          |
| -गयाबख्त फिर नहीआता,    | -आंखें हृदयके आइनेहै,    |
- (८८)-सभामें जाते शर्म मतकरो, शास्त्रकेहुकमपर सबकोइ

लाचार है,

दुनियामें बोली सेंकडोंतरहकी है लेकिन!-चतराइबिदून एक  
भी कामकी नही,

दौलतमंदहोकर खानेपोनेमें कौताइकरे बडानालाइक है,  
किमीपागिरी आजकल बिदाहोगइ इसतीतलाशकरना सी-  
रहीआदमीयोंका कामहै.

दूसरेके मकानपर जाओ-तो-इतलादेकर जायाकरो, क्या  
जाने घरवाले किसतरहवेठेहो ?

जितनीताकत उतनाही बौजाउठाना चाहिये,

जो शस्त्र-लुगाइकेकहनेमें चलताहै, उसकी इज्जत नहींबढती.  
दिलकीबात दोस्तकोंभी एकदम मतकहो, नमालूम! किसव-

स्त दुश्मन होजाय,

एकदिन ऐसाभी आयगा जिममें दोस्तभी दुश्मन बनजायगें,  
आजका काम कलपर मतढालो एकदमकाभी भरोसा नही,  
इशारेसें न समझे-वो-आदमीनही गधा है,

जोशस्त्र बहोतमौलकीचीज थोडेमेंदेताहै-जाननाचाहियेचौ-  
रीका मालहै,

चलतीगाडीसें कुदना किसीसुरतअच्छा नही, अगर कुदना-  
ही है तो फुरती करो,

आदमी जैसा दुश्मनसें डरताहै अगर पापसेंडरे तो क्याही!

उमदा बात है!

(८९)-तकलीफदार कपडे-और-जूते-पहेनना समझदारोंका  
काम नही.

रजस्वलाऔरतसें भोगकरना रोगकों बुलानाहै,

मुख-बालक-और-बीमार-गालीदेबैठे उसपर खवाल मतकरो,

दौलतमीलनेपर बहोतआदमी भकलसें अंधे होजाते है,

दूसरेकों नंगाकरना-या-आप-नंगेहोना बडीबेइज्जती है,

कुच्छरूपयेपैसें हरवस्त पासरखनाचाहिये-नजाने किसवस्त

कामपडजाय,

दोआदमी बातकरतेहो बिनाबुलाये जानानही,

कोइशस्त्र-चीठो-या-खत-लिखरहाहो बिदूनहूकम उसेमतदेखो,

पैसेकेलालचसें इज्जत हलकी मतकरो,

बेवकूफोंके सामने जीदकरना ठीकनहीं, अगरचे अपनीबात सच्चीभी—हो,—

किसीके धमकानेसें दिलकों रंजमें डालना कोईजरतनहीं,  
अगर कोईशरूख तुम्हारीबहोतहीखुशामद करे—तो—समझलो !

कुच्छमतलबहै,

कदरदान अगरचे गरीबहै—तोभी—उसकेपास जानाचाहिये,  
(९०)—जैसे लडाइकेवरत सुभेसें—लोहा—ज्यादेकामदेताहै अ-  
कलभी वरतपर दौलतसें बढकर कामदेतो है,

गुनेहगारकों माफी जब देना अगर—वो—अपनीभूल कबूलकरे,  
स्त्रीकारुपदेखकर जिसपुरुषकों—और—पुरुषकारुपदेखकर जि-  
सस्त्रीकों विकारनहींआया उसकी तारीफ है,

भोगकेवरत योगयाद आवे उसे पक्का सम्यक्तवान् समझना,  
जिसकों बुरीबात समझकर छोडनाचाहो—और—छूटेनहीं तो  
उसमें—पापकाउदय—जानना,

हरहमेश दातूनकरना—और—हाथपांवधोकर रसोइजिमना—च-  
तरआदमीका कामहै,

मित्रकों—या—अपनेप्यारेकों—पहिनेमें एकदफे चीठीलिखना  
फायदेमंद होताहै,

धर्मादेके पैसैकों जलदी लगादेनाचाहिये, नालाइकबेटे पी-  
छेसें लगायगें नहीं,

घरमें गहेराधनहै फिर क्या ! चाहते हो ?—इतनेपरभी कंजूस-  
बननाहै—तो—तुम्हारे जैसा कोई मूर्ख नहीं,

मीठाभोजन—और—मीठीबोली सबकों प्यारी लगती है,

जोशस्त्र अपनेको नहीचाहता उसकी मुलाकातको जाना  
फजूल है,

धर्मकी बराबर कोई करामात नही,  
छोभीआदमीको बेवकूफ कहना सच्च है,  
हिंम्यववान् आदमी हजारोंमें एकहोता है,  
जहां बैमतलब अपना मानभंगहोताहो वहां रहना अच्छानही,  
बाहियातखर्च करनाभी मूर्खोंका कामहै,

(९१.)—जहां खुशो वहां नाराजीभी आयगी,

आगामी-संचित-और-प्रारब्ध-यहतीनाहिस्से कर्महोके सम-  
झना चाहिये,

भविष्यकालमें जो जो कर्म बांधोंगे उसकानाम आगामी-पू-  
र्वकालमें बंधेहुवेकानाम-संचित-और-वर्त्तमानमें मोहममत्वकर रहे  
हो-इसकानाम प्रारब्धकर्म है,

उत्तम-मध्यम-और-अधम-येतीनदर्जे हरवस्तुपर कायम हो  
सकते है,

दुस्तीको सताना कोई बहादूरी नही,

जिसको अपनीइज्जतबढाना मंजूरहो-नैकचलन-चले और  
हाथका उदार रहे,

जिसशरीरकी इतनीहिफाजत किइजातीहै-बोभी-अपनानही  
तो-दूसरेको अपना कैसे समझे, ?

नास्तिकलोग कहते है पृथ्वी-जल-वायु-अग्नि-और-आका-  
शके योगसे जीव पैदा होताहै, इससे न्यारा परलोकसे जीव नही  
आता, लेकिन ! यहकहना झूठहै,

सबबकि-पांचतत्त्वमें-जोजोगुणहै चैतन्यगुण किसीमें नहीं,  
यह सीधीसडक है कि-जोगुण जिसमें नहीं-बो-संयोगसेंभी नहीं  
पैदाहोता,

अपनेवस्तुकी नियमावलीबांधनेसें सबकाम फुरतीसें बन  
सकते है,

हाथमें लकड़ी रखनसें हरतरह अपना बचाव होसकताहै,  
पुरुषार्थ कमजोर होजानेसें कइरोग पैदाहोते है मुनासिब है  
इसे कमहोने न देना,

प्रेमकेबंधनकों हजारहाथी-और-हजारघोडेभी-नहीं तोडसकते,  
उल्टेअर्थकरनेवालेकों शास्त्र-शस्त्ररूपहै,

(९२)-जोलोग दुनियामेंभी नहोसमातेथे, तीनहाथजमीनमें  
समागये-बडे आश्चर्यकी बात है,

कामविकारसें फतेहपाना बडेहो भाग्यसें मिलता है,

रूपसें विद्याका दर्जा बडाहै,

दुश्मनकाभी दुखदेखकर हसना नहींचाहिये,

जिसका मालिक अंधा उसकी फौज कुवामें,

एकविद्याभी जिसकों अच्छीतरहआतीहो-दूसरी-उसे जल-  
दी आसकेगो,

धर्मका मूल श्रद्धा-और-पापका मूल कदाग्रह,

जिसकेपास पैसानही उसकों दुखीकहनाठीकहै-लेकिन!-

जिसकेपासहै और खर्चे नहीं उसकों अबलदर्जेका दुखी कह-  
ना चाहिये.

जिसकाममें इज्जत न बडे और धर्ममेंधक्कापहुंचे-बो-कामकर-

ना मुनासिब नही,

जोशस्त्र अपनेसें प्रीतिरखे उससें टूटे रहना अच्छानही, मू-  
खोंका कामहै,

रातको स्नान और भोजनकरना मनाहै लेकिन!-कामभोग  
करके स्नानकरना मना नहो,

जोलोग नंगेहोकर स्नान-और-शयनकरते हैं-वे-आर्यपुत्र  
नही है,

जैसे-दूधमें घी-तिलमें तेल-और-काष्ठमें अग्निरही है वैसे श-  
रीरमें आत्मा रहाहै,

आत्माको प्रत्यक्षपने संसारीजीव नही देखसकते, सर्वज्ञ दे-  
खसकते है,

जबतक रोंमरोंममें धर्म नही फरसा तबतक मुक्ति न होगी,  
अगर दुनिया इश्वरने बनाइहै-तो-एकदुखी-एकसुखी क्यों?  
क्या-वो-किसीपरनाराजभी रहताहै?-अगर सुखदुखकाहोना त-  
कदीरसें है-तो-फिरउसनामर्दन क्या किया?

मन-मोती-और-काच-ढूँटेपीछे मीलतेनही,

मन-तो-फिरभी मीलसकताहै अगर साफसाफ बातें हों,

एकअवगुणको देखकर बहोतगुणवान्को छोडनानहीचाहिये,  
अग्निमें धुआंनिकलनेका अवगुण है लेकिन?-छोडनेसें काम  
नही चलता,

देवमंदिरका पैसा जिसकेघरमें रहजायगा उसघरका नाश  
होजायगा,

(९३)-नयातीर्थ-और-नयेसाधुओंको-जरूरदेखने चाहिये,



लेकिन! कूतीर्थ-और-धर्मभ्रष्टसाधुकों देखना कोई जरूरत नहीं,  
अगर छायापुरुषदेखनेका ऐलम सीखेहो-तो-उसकादेखना  
भी बहोतठीकहै,

अधर्मीपुरुषकों छायापुरुषका ऐलम तकलीफ देताहै,  
किसीकामकेलिये स्थानसे चलना तो-जो-स्वरचलताहो-उ-  
सीतर्फकेपांवकों पहिले उठाकर चलना-जरूरफतेहहोगी. कर्मयोग  
फतेह न-हुइ-नुकसान-तो-कभी नहोगा,

जिसशहरमें बहोतकजुस-लोभी-और-क्रोधीआदमी बसतेहों  
वहां-धर्मकी तेजीहोना मुश्किलहै,

साधुलोगोंको वैसे शहरमें-न-जानाचाहिये-जहां बाहियातझ-  
गडे आनपडतेहो,

जहां दुश्मनोंका जोरहो-वहां-अकेलेजाना मुनासिबहै,  
सत्यधर्मके उपदेशकोंको जरूरसाहाय्यकरना चाहिये,  
अपने अवगुण आपहोसें हठते है दूसरेके हठाये नहीहठते,  
समुंदर अपनीलहेरआपही संकोचकरसकताहै. दूसरेकी ताकतनही.

औरतकी ताबेदारी और बेटोंको कुलधनमाल सोंपदेना अ-  
खीर पस्ताना होगा,

भाटलोगोंकी तारीफसें फुलजाय-वह-बिनापूंछका बैल है,

(९४)-बिदूनरोग दवाखाना क्या जरूरत?

नोकरोंसें डरे-वो-मालिक नही ताबेदारहै,

हांसीखुशीमें गुस्साकरे-वो-मूर्ख है,

माधुहोकर भोगविलासका सुख चाहे-बड़ीभूलहै,

बडेबडे ज्ञानीहोगये लेकिन!-अधर्म-किसीसें नही हठा-इस

लिये अधर्मभी बड़ा है ऐसा समझना बेवकुर्फोंका है, क्या! चां-  
डालकों कोइ स्पर्श नहींकरसकता इससे वह बड़ाहोसकताहै?-

काम ऐसाकरना चाहिये जिससे सज्जनलोग स्वतःअपनेपर ,  
भक्तिमान् बने रहे,

(९५)-जर्मनीवालोंके हिसाबसे-दुनियामें-एकअब्ज-(७०)  
करोड मनुष्यकी आबादी है,

इस्वीसन (३५०) में-पाणिनि नामके पंडितने अष्टाध्यायी  
व्याकरण बनाया,

इस्वीसन (७१०) में-शंकराचार्य जन्मे-और-बत्तीसवर्षकी  
उमरमें मरगये, कितनेक कहते है शंकराचार्यने जैनीयोंको हराये  
और देशनिकाला दिलाया था-लेकिन!-यह बात जूठहै, शंकरा-  
चार्यका वादानुवाद बौधसगोंसेहुवाहै, जैन-और-बौद्ध-एकनही  
न्यारेन्यारे है, जोलोग एकसमझते है बड़ीभूल करते है.

इस्वीसन (१०००)में-मुसलमानलोग-भारतकेमध्यखंडमें आये  
और-उन्होंने हिंदुस्थाननाम रखा, पहिले भारतवर्ष नामथा,

इस्वीसन (५७) में-विक्रमसंवत्-और-(७८) में-शालिवाहन-  
शक-जारीहुवा;

(९६)-उससभामें बिल्कुल नबोलनाचाहिये जहांअपनीधा-  
तकी कदर नहोतीहो,

बैमौके बातनिकालना मूर्खोंका कामहै,

अच्छेलोग तुमको वरसोंसे समझतेरहे लेकिन! तुमने अफ-  
नीबकवाद नहीछोडी,

तुम्हाराभगज कुत्तेकेभगज जैसाहो तो बेशक!-बकवाद करो,

लेकिन! याद रखो । भैंसके सामने भैरवीरागनीमाना कोई फायदानहीं,  
 जहां सुखोंका समाजमिलाहो-वहां-नसीयत-क्यों देना ?  
 शरीर थोड़ेदिनकाहै-दुखपड़े दुखसहो-सुखमें घमंड मतलाओ,  
 मनकों धीरजवाला बनाओगें बड़ा फायदा होगा,  
 वैश्याके साथ व्यापारकरना अच्छा नहीं,  
 कामीपुरुषके चित्तमें धीरजनहींहोती,  
 विरहिन लुगाइका मन उसके वशमें नहीं रहता,  
 तामसीआदमीके दिलमें छलकपट ठहर नहींसकता.

( ९७ )-सुनार-दरजी-लुहार-सुतार-नाइ-कुंभार-धोबी-क-  
 सारे-नीलगर-छीपे-घांची-कलाल-भील-चारण-भाट-सीकलीग-  
 र-पींजारे-भटभुंजे-गुजर-अहीर-माली-गंधी-रंगरेज-चूडागीर-नट  
 जुलाहे-मोंची-और-चमार-वगेरा कोई हो अपनेअपने ऐलममें द-  
 गलबाजीकरे उसकों अकलमंद नहीं समझना, अकलमंद-वो-है-  
 जो-नैंकीसें चले. जोलोग दगाबाजीकरके दौलत मिलाना चाहते है  
 वे-कभीनकभी पकड़ेजायगें, छलकपट जाहिरहोगा इतनेशर्मांदे  
 होनापड़ेगा-जो-उनका दिलही जानेगा.

( ९८ )-ज्योतिष्-चिकित्सा-स्वरोदयज्ञान-अष्टांगनिमित्त-  
 और-मंत्रविद्या जाननेवाले सबजगह-सन्मानपाते है. वैद्यलोगोंकों  
 मुनासिबहैकि-बीमारआदमीसें औषधकेदाम पहिलेसे लेलियाकरे  
 बीमारी मीटेबाद कोई नहीं पूछेगा, व्याकरण-काव्य-कोश-न्याय  
 और-अलंकारका पढाहुवा-सबशास्त्रोंका-अर्थ करसकताहै,-शास्त्र  
 पढकर सभाकों रंजनकरना-बहोतही तेजबुद्धिका कामहै, मूर्खलोग  
 मर्मकों नहींपहेचान सकते, बडेलोगोंने इसीलिये कहाहैकि-दाना

दुश्मन अच्छा-लेकिन ! मूर्खमित्र अच्छानही.

(९९)-मूर्खशब्द यद्यपि विद्याहीनोंकाही वाचकहै लेकिन !-  
न-मालूम-इनअढाईअक्षरोंमें क्या !-ताकतरहीहैकि-इसकेसुननेसें  
जगतभरके मनुष्य गभराजाते है, कभीकभी यहशब्द पंडितोंकीस-  
भामें लडाइभी करादेताहै, यह शब्द जितना उसके वाच्यार्थकों  
दुखदायी नहीहोता पंडितोंको होपडताहै, जरा किसी पंडितकों-  
मूर्ख-ऐसाकहदोकि-तुर्त्त-लडाइ होजातोहै, इसलिये कहसकते है  
कि-मूर्खशब्दमें एकतरहकी ऐसीबडीभारीताकत रहीहुइ है जो दू-  
सरेमें होना मुश्किलहै, एकरास्तेहोकर तीनमूर्ख कहींकोंजारहेथे  
थोडीदूरपर उन्होंको एकउंचा मीनारा दिखाइदिया, जबपासगये  
और उसके बननेका विचारकरनेलगे. एकमूर्खनेकहा-देखो ! अगा-  
डीकेआदमी कितनेलंबेहोतेथे जो ऐसी ऐसी ऊंचीमीनारे बनाकर  
तयारकरदेतेथे, दूसरेनेकहा तूं ! बडामूर्ख है !-कुच्छभी नही सम-  
झता, अगाडीकेआदमी इतनेलंबे नहीहोतेथे, बल्किन् !-पहिलेदि-  
नोंमें ऐसे ऐसे लंबेमीनारे जमीनपर बनाकर खडाकरादिया करदेते  
थे. तीसरेनेकहा तुमदोंनो मूर्खहो-तुमने इसकाभेद नहीपाया-अ-  
सलमें यह मीनारा नहीहै, किंतु कुवा है-जो उल्टाकरके खडा  
करदियागयाहै, अगर इसको सुल्टाकरदियाजाय तो बनाबनाया  
कुवाही है,

(१००)-(औरभी-मूर्खोंके दृष्टांत सुनिये-)-एकरौजकीबातहै  
एकआदमीकी भैंस मरगइ-जब उसको बहोतदिलगीरी आइ और  
रोनेलगा-पडोंसीने आनकर पुछाकि-भैया ! क्यों रोतेहो ?-वो-  
बोला !-मेरी भैंस मरगइ जो सारे कुणबेको पालतीथी-पडोंसी क-

हनेलगा-धीरजधरो-हमे तुमे कालेरंगकी वस्तुसें कायदा नही-मैरे भी आज काली हंडीया-फूटगइहै. इसबातकों सुनकर सबलोग-ह-सनेलमे, मूखोंकी लीला अपरंपारहै, (दूसरा दृष्टांत.) एकसमय-कीवातहै कचहरीमें जजसाहबके सामने एकशख्सका मुकदमाचलताथा, जजने पुछा! तुम व्याहेहो-या-नही? वो-कहताहै हजूर! मै तो नही व्याहा, मैरी औरत व्याहीहुइहै, जजने कह्य कया! अ-दालतसेंभी मश्करी करते हो?-वहकहताहै हजूर! मैरी क्यामझाक है?-जो मश्करी करूं? असलबाततो यहहैकि-मैरी औरतने मुमे छोडकर दूसरेसें पुनर्लग्नकर लियाहै. इसवकालकों सुनकर सब लोग हसने लगे.

(१०१)-बेटेकी-और-चेलेकी-तारीफ उसकेखरमें करना अच्छानही अलबते! औरतकी तारीफ उसकेखरमें करना ठीक है.-याते-बह-ज्यादे-ताबेदारी करतीरहेगी, बापकों-और-गुरुकों मुनासिबहै कि-बेटे-और-चेलेकों अपनासंपूर्ण ऐलम सीखला दे, हां!-अगर नालाइकहो कोइजरुरतनही, लाइकवरोहीकों ऐलम सीखलाया जाताहै. दुर्जनकों विद्यापढाना और सांपकों पालना एकसरखाहै, मुनासिबहै योग्यकों बिद्या देना,-किसी लेखककों या-पबंधकों लिखने बैठना तो एकचित्तहोकर बैठना चाहिये, ध्यानकों इधरउधर डोलानेसें अच्छालेख नही लिखा जाता. चीं-ठीलिखनेमेंभी बड़ीचतराइ चाहिये. बिनाविचारे कुच्छलिखदिया जाय तो पीछेसें शर्पीदा होनापडताहै, एकमहाक्य!-अपनी औरतकों चींठीलिखने बैठे. लिखते लिखते ऊपरसें चींड़ियाजे कागजपर बीठ करदिइ, आपने उसीतरफ ध्यान लगादिना-और गु-

स्तेमें आनकर पत्रमेंयी लिखादियाकि-क्या कर! दूरहै-अगर पा-सहोती तो टंगपकड़के सीधी करता-चीठी जब स्त्रीकों पहुंची-वांचकर बहोतनाराज हुइ-और जबपतिकेपास आइ ओलंभा दि-या-आपने चीठीमें क्यालिखा था,?-महाशय! शमींदिहुवे-और-कइनेलमे मेराध्यान उसवरुत चींड़ियामें था.

(१०२)-जिसकों वरुतपरजवाबदेना नहीआता-उसकों मू-खोंकीपंक्तिमें गिननाचाहिये. हाजिरजवाब आदमी बाजेवरुत बडे मौकेकों साधलेताहै, (एकवरुतकी बातहै)-बादशाहने हुकमदिया कि-रातकों कोइशरूश शहरमें रास्ता न चले. तमामलोगोंने बा-दशाहके हुकमसें मकानकेबहार पग नही रखा. लेकिन!-एकयु-वान-लडका-सस्ते चलता-सिपाइयोंकों मिला. सिपाइने टौका कि-क्यौरे!-तेने बादशाही हुकम नही सुना!-लडकेने कहा, बे-शक! सुनाहै, सिपाइ बोला!-फिर हुकम अदुली क्यौ! किइ!-लडकेनेकहा-तुजेमालूमभी है? मैं! किसका लडका हूं?-याद रख! मैं-उसका लडका हूंकि-जिसके सामने तमामबादशाह-सरदार-और-शाहजादे-गर्दम झूकातेहै. सिपाइकों मालूमहुवाकि-खलिफ-हजाम-नाउका-लडका था. हजामकी औलद बडीसैतान होतीहै. यहां उसके हाजिरजवाबकी तारीफ लीइयहै.

(१०३)-हरहमेश खुशमीअजरहनेकी आदतढालना बुद्धि-मानवखुशोंकामकामहै, हरबातपर बहोत फिकरकरना कोइजरुब नही, जैसा जिसकाभाग्य होगा अस्तीरमें वैसाहीबनाव बनेया. बाजेआदमी ऐसे बहेयीहोतेहैंकि-भूत-ढाकिन-या-जादूकेडरखो-फमेंही दिनराब दबेरहतेहै. किसीरौज-भेंस-या-गौने-दूध-नही

दिया तो बहेमलाते हैकि-नमालूम-इसपरकिसीनेजादू कियाहोगा, लेकिन! यहबात अच्छी नहीं. किसीका मुंह-टैडा-बांका-होजाय तो-कहदेते है किसी देवताका इसपर कोपहुवा है, लेकिन! यह नहीं सौचतेकि-इसकों रोग क्याहै?-ज्ञानीयोंने बारबार कहरखा हैकि-जबतक जिसकेभाग्य अच्छेहै-कोइ-रोग-या-तकलीफ नहीं होसक्ती,-रोगी-औषधमें अच्छानहो-तो-उसमें वैद्यका-या-औषधका-दोषनिकालना कोइजरुरतनहीं. वैद्यलोग इलाजकरनेके अधिकारी है आयुष्यके अधिकारी नहीं. एकतरहकी गर्मीके रोग-कों मूर्खलोगोंने शीतलाकारोग कहरखाहै लेकिन!-बड़ीभूलहै कि रोगकों-देवीका कोपसमझना. शीतलादेवीकापाखंड अकसर और तोंहीसे चलाहै, आजकल जमाना ऐसावर्तरहाहैकि-जिसमें औरतोंका कहना मंजररखनेवाले ज्यादा-और-उनकों अपने कहनेमें चलानेवाले थोड़े हैं. शीतलादेवीके नामसे मानता करना-सप्तमी-केरौज बासीभोजन जिमना-और-शीतलादेवीकों-औलाद बचानेवाली समझना बड़ीभूलहै, असलमें शीतलादेवी-कोइबस्तु-नहीं औरतोंने अपनीमूर्खतामें एककल्पितबात जाहिरकररखीहै. समझदार औरत कभी इसमें सामिल नहींहोती.

(१०४)-मुंन्ना-चांदी-मुंगा-हींगलु-पारा-हरताल-लोहा-कथीर-तांबा-पीतल-सीसा-मीटी-पथ्थर-सुरमा-नमक-अबरख-हीरा पंन्ना-मानक-नीलम-वगेरा पृथ्वीकायके भेदमेंहै, मतलबकि-इनमें पृथ्वी कायके जीव पहिले उत्पन्न होचूकेहै. हथियार लगनेसे जीव मरगये और कलेवर रहगया. कुवा-नदी-समंदर-कुंड-वगेरा के जितनेपानी है सब अपकायकेभेदमें जाननाचाहिये. धनोदधि-

एकतरहका जलपींड है, लेकिन !-जमेहुवे घीकीतरह पृथ्वीके नीचे रहाहुवा-यहभी-अपकायकेहीभेदमें समझना चाहिये. जलकों तताकियेबाद उसमें जीव नहीरहते, ( यानी)-अग्निकेजरीये जीव मरजातेहैं, दवाबुटी-मिश्रीवगेरा मिलानेसेंभी जल-अजीव-होजा ताहै. जोलोग उश्नजल बनाकर ठंडाकिये बाद पीतेहैं उनकों फौ-डेफुनसी-वाला-कभी नही निकसता. जगहजगहकेपानी उसकों बिगाडभी नहीलाते. सबबकि-उसकाविकार अग्निकेयोगसें नास होजाता है. उश्नजलपीनेवालेकों कामविकारभी नही सताता. सब तरहकी हवा-वायुकायके भेदमें जानना चाहिये. वृक्ष लता-ब-ल्लरी-सबतरहके छोटेछोटेपेड़-बीज-अंकुरा-फल-फूल-पत्ते-और जितनी औषधिये है-सब-वनस्पतिके भेदमें-समझना चाहिये-(यानी) उनमें जीव-उत्पन्नहोना-और-सुकजानेसें उनमेंसें नास हो जाना सहीबात है.

( १०५ )-पृथ्वीमें-अगर जीव नहोते तो-मृंगे-नमक-और-पथ्थरमें-जो समानजातिके अंकुर उत्पन्नहोतेहैं-न-होनेचाहिये. होते जरूरहै इसलिये कहसकतेहो कि-पृथ्वीमें-जीवकाहोना स-हीबातहै. पानीमें जीव-न-होते तो जमीनके खोदनेसें आपहीआप बहार-न-निकलआता. और दर्दूरकीतरह निकल जरूर आताहै. इसलिये जलभी जीवमयहै ऐसाकहना झूठबात नही. अगर-अ-ग्निमें जीव-नहोते तो घी-वगेरा उसमें डालनेसे उसकी बढवारी न-होती, और हांती जरूरहै इसलिये अग्निमेंभी-जीवका होना सही है. वायुमें जीव न होते तो-बिदून मेरणाकिये-उसमें नियत तीरथीनगति नहोसकती. और होतीजरूरहै. इसलिये इसमें जीव



मानवभी सहोदुषा-(यानी) जीवमय पवनहै ऐसा कहना-कोई कार्य की बात नहीं. बनास्पतिमें जीव-न-होतेतो-लाजवंशीजनेसके पैर हाथलगानेसे संकोच-न-होजाते, जलकेसंयोगसे लताचट्टरिबोंकी बढवारीहोना यहभी जीवकी पैदाशकों सबूतकरताहै. भिष्यसुहस-न-स्त्रीलाताहो ओर पदमनीस्त्री-उसे प्रोतिकेशाथ स्पर्शकरेतो स्त्री-लजायगा. अशोकवृक्ष-पदमनीस्त्रीके नैवरपहनेहुवेपांचके प्रहरसे विकासमानहोजाताहै, तोलक-और-कुरवकवृक्ष-पदमनीस्त्रीके-कटाक्षमारने-और-आलिंगनकरनेसे विकस्वर होजातेहै. कर्पिकवृक्षके नीचे पदमनी नृत्य करे तो आवादहोजाय. वगेरालक्षणोंसे जानाजाताहै कि-वनस्पतिमेंभी-एकइंद्रियजीवहै. एकइंद्रियजीव उ-सकों समझनाचाहिये जिसकों-जवान-नाक-आंख-और-कान-न हो, फक्तएकीलाशरीरधारीही हो.

(१०६)-अगर सवालकियाजायकि-जमीन-पानी-हवा-और वनस्पतिमें जीवहै-तो-वें-धूपकेबरल छांवमें और छांवकेबरल धूपमें क्यों नहीं चले आते?-(जवाब.) जीव दोतरहके-एकस्थायर दूसरेअस्थ-जो एकइंद्रिय-यानी-केवलशरीरधारीही होतेहै-वें-स्थायरजीव कहेगये, दूसरे अस्थजीव-वें-द्विंद्रिय-त्रिंद्रिय-चतुरिंद्रिय-और-पंचेंद्रिय-है. वें-धूपमेंसे तकलीफहोनेपर छांवमें-और-छांवमें से धूपमें चलेजातेहै, अस्थजीवोंका यही भेद हैकि-वें-वास-पाकर इधरसे उधर चलेजाय-स्थायर नहीं जाय. जंख-कुमि-पानीमें पै-दाहोनेवाले पूरे-और-जोंक-ये-द्विंद्रियजीवोंकेभेदमें है, शरीर-और जवाब-इनकोंहोती है, कनखजूरे-खटमल-जू-चौंटी-मकोंडे-कुंभुमें और-जोंवरकेकीड़े-वें-तीनइंद्रियवाले जीवहै, शरीर-जवान-और

नाक-इनको होते है। तेंछू-भवरा-भक्ती-डांस-मच्छर-तीड-पतंगीये-और-मच्छी-ये-चारइंद्रियवाले जीव है, इनको-शरीर-जवान-नाक-और-आंखें होती है, सांप-मच्छली-पौर-कौवा-चीलतोता-चींछा-चींछी-कुत्ता-गवा-भै-बैल-घोडा-हाथी-सिंह-और-बहु-एक-ये-पांचइंद्रियवालेजीवहै। इनको-शरीर-जवान-नाक-आंख-और-कान-होते है। जीव जैसीकरनीकरतहै वैसफल पाताहै, एकजन्मसे दूतराजन्म-और-दूसरेसेतीसरा-इसतरह जबतक निरुप-हृत्पकरके सबपापोसे मुक्त नहोगातबतक-वह-संसारमें अटक-रहा रहेगा, जीव अनंतहै यानी उनकी गिनतीकरे तो पत्तनही आता, एकसुखी एकदुखी-एकराजा-और-एकरंक-यहसब अपने अपने किये हुवे पुन्यपापका फलहै,

(१०७)-आकाशमें ग्रहण होताहै तब कइलोमकहते है चंद्र जब-पृथ्वी और सूर्यके बीचमें आताहै और उसवरुतजब चंद्रकी छाया सूर्यपर पडतीहै तब-सूर्यग्रहण होताहै। और जब पृथ्वी-सूर्य और चंद्रकेबीच आती है उक्तवरुत जब-पृथ्वीकीछाया चंद्र-पर पडती है चंद्रग्रहण होताहै। (जवाब.)-यह कहना मजत है, सबकि-यहबात तब बनसकती है जब पृथ्वीको अस्थिर यानी फिरतीहुइ माने। पृथ्वीका फिरना युक्तिप्रमाणसे साबीतनहीहोता को लोगे साबीतकरते है-वे-सूठेप्रमाणसे कुतर्कद्वारा करते है, पृथ्वीकी-दैनिक-और-वार्षिक-दोतरहकी गतिमानकर कहना कि-अपनी धूरीपर-वह फिरती है यह बात सही नही ठहरती, क्योंकि वह धूरी किसके आधार है! अबलसे इसका जवाब कोइ नही दे सकता, और-कोइ देताभी है। तोबताता है कि-वह धूरी-एक-

कल्पितरेखा-समझो-( जवाबमें ) कहनेवाले कहसकते हैं कि-जब धूरी कल्पितरेखाहै तो उसपर रहकर पृथ्वीका फिरना-कल्पित-क्यों नहीं?—बस! इत्यादि प्रमाणोंसे पृथ्वीका फिरना और उसकी छायासे चंद्रग्रहणहोना वगेरा सही नहीं होसकता. ग्रहणहोनेका सबबयहहैकि-आकाशमें-एकपर्वराहु-और-एकनित्य राहु-यहदो-विमान भ्रमण करते हैं जैसेकि-और-ग्रहोके भ्रमण करते हैं, उक्तदोनोराहुके विमान श्यामरंगके हैं-और चंद्रसूर्यके विमान तेजस्वी हैं, प्रकाशवाले विमानकी बराबरीमें जबश्यामरंगके विमान आजाय तो अलबते! उनपर श्यामताका प्रतिबिंब दिखाइदे, बस! ग्रहणहोनेका यही सबबहै दूसरा कोई नहीं, पृथ्वी स्थिर-और-चंद्रसूर्य वगेरा ज्योतिषचक्र-अस्थिर-(यानी)-आकाशमें फिरता हुआ है, पृथ्वी स्थालीके आकार गोल और इसके कनारे आकाशमें उपररहकर ज्योतिषचक्र-जैसे घाणीके चौफेर बेल फिरे-वैसे-मैरुकी चौफेर फिरताहै. जो लोग-पृथ्वीको-गेंदके आकार गोलमानकर मसालदेते हैंकि-अगर पृथ्वी गोल-न-होती तो समुद्रके जहाजकी धजा पहिले क्योंदिखती?—(जवाब.)-यह बातगलतहै, पहिलेधजाही नहीं-किंतु-जहाजही खुद एकछोटासा आकारका दिखाताहै, सबबकि-दूरकीचीज छोटी दिखना यह नेत्रोंकी ताहसीरही है, जैसे जंगलमें सीधीसड़कपर खड़ेहोकर दूरनिगाहसें देखोतो पांवोंकीजगह सड़क चौड़ी-और-दूरपरवही सड़क-सकड़ी मालूमदेतीहै, कहिये! सड़कतो वहांभी एक सरस्वी चौड़ी है फिर सकड़ी क्यों दिखी?-सौचो-तो-यही सबबहैकि-दूरकीचीज छोटी दिखना, मैदानमें खड़ेहोकर देखनेसें यहभी मा-

लूपहोताहैकि-आकाश-पृथ्वीके चौफेर मोलाहुवा-एकतंबुकी ब-  
राबर गोलहै, अगरकहाजायकि-पृथ्वीकी गोंलाइसँ आकाशभी  
गोल दिखताहै-तो-यहबात गलतहै, सबबकि-पृथ्वीकी इतनी दू-  
रमें इतनीगोंलाइ नहीहोसक्ती. बल्किन्! नेत्रोंहीकी ताहसीर है  
दूरकीचीज थोड़ीदिखना, इसीसबबसँ जिधर देखो! गोंलाकार  
मालूम देताहै,

(१०८)-तीर्थकर-चक्रवर्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव-और-मंड-  
लीक राजे जब मौजूदथे उसजमानमें उनकेनामसँ संवत् चलता  
था. इसलिये कहसकतेहैकि-दुनियामें संवत्-कइ-चलचूके. और  
आगेकों-कइचलेगें. जिसबख्तमें जो राजा मतापी हुवा-उसबख्त  
उसीकेनामका संवत् जारी होगया और अगला लॉप हुवा. कइ-  
लोग अपनेअपने धर्मप्रवर्तकोंके-नामकों अगाडीरखकर संवत् च-  
लाचूके है, इनदिनोंमें चारतरहके संवत्-भारतकेमध्यखंडमें जारी  
होरहे है. अवल-विक्रमसंवत्-बाद-शालिवाहनशक-इस्वीसन-  
और-हिजरी—

(१०९)-कोइशख्स जब कैद होजाताहै-या-दौलत-चलीजा-  
तोहै उसबख्त बडाही अचंभामानकर कहताहै हाय!-ये-दिन-मै-  
रेलिये कहांसँ आये !-लेकिन ! अगरसोचाजाय तो-सबदिन एक-  
सरखे किसीके नहीरहते. जैसेजैसे-कर्म-किये गयेथे-वैसे-सामने  
आये-अब घबडाना क्यों ?-कियेहुवेकर्मके उदयसँ रिषभदेवजीने  
वर्षदिनतक भोजन नही पाया, मल्लिनाथ-स्त्री-हुवे, रामचंद्रजीकों  
वनवास करना पडा, रावणकी लंका हाथसँ गइ, मुभूम चक्रवर्ती  
समुंदरमें डुबा, कलावतीसतीके; दोनोंहाथ छेदन हुवे, सब अपने

अपने किये हुये-कर्मोंका फलहै, खेतीकरो और किमडजाय-किसीकेघर भोजन जियने जाओ और-परोसनेवाला कंजूस मिले-अपनेकर्मोंका दोष समझना चाहिये. अच्छाखाना खाया और उसमें मरुखी-खाइगइ-सब उल्टानिकालना पड़ेगा. साधुलोग भिक्षामागनेगये-और-योग-न-मिला. किसीशख्शकों धनदौलत बहोतहै-लोकन!-अच्छी औरत-नही-मिली. अच्छी औरत मिली-तो-धनदौलत नही,-सब-अपनेअपने खोटे कर्मोंहोका फलहै. झानोशख्श दिलगिरी नहीलाते अझानी लाते है, बस!-समझदारोंमें और मूर्खोंमें इतनाही फर्क है,

(११०)-हरबात बोलनेसे पहिले सौच लेना चाहियेकि-जो कुछ-मैं-बोलता हूं-दूसरेलोग उसको समझ सकेंगे-या-नही?—अगर न समझसके वैसे लोग जहां मिले हो-वहां-उसबातका बयानकरना कोइजरुरतनही आदमीकों हरबात बोलते पहिले सौचलेना चाहियेकि मुजे इससे क्या फायदा-और-नुकसानहोगा ?-इसवख्त कौन मेरेदुश्मन और कौन दोस्तहै?—किसराजाके राज्यमें मैं बैठा हूं?—जमाना कैसाहै?—लोगोंकी हवा किसतर्फ चल रही है?—और कौनकौन मेरे यहां मदतगारहैं?—इनबातोंकों सौचकर बोलनेवा कभी खता नही खाता, सबबात बुद्धिके ताल्लुकहै. बुद्धिमान आदमी विकारकों प्राप्त होजायगा तो भी अपने आपको संभाल सकेगा. देशाटनकरनेसे-और-सभामें भाषणदेनेसे बुद्धि तेज होती है, देशाटन किये बिदून देशदेशकी चालचलन मालूमनहीहोती. लोकन! इतना यादरहेकि अपनाधर्म-खोकर-देशाटनकरनाभी कोइफायदा नही. धर्म रखा उसने सबकुछ रखा, दौलत धर्मकी

दासी है, एकशरूश-दौलतके घमंडमें अंधाहोयाहुवा-बगीपर स-  
वारहोकर हवाखोरीकों जारहाथा. रास्तेमें कुछ रातपडगइथी  
और दरबजेकेपास एक अंधा उसके सामने मिला, जो एकलडके  
के कंधेपर हाथदेकर दूसरहाथमें लालटेंनलिये हुवे आरहाथा. ब-  
गीपर बैठनेवाला धनाढ्यशरूश-उस-अंधेसे-पुछताहैकि-अबे ! अं-  
धे !!-तुझे-लालटेंन रखनेमें क्या ! फायदा पहुंचता है ?-अंधेने-  
जवाबदिया-लालटेंन-मैरेलिये नहीं है, लेकिन !-जो-पैसेके घमंडमें  
अंधे होरहे है उनकेलिये है. सबबकि-दौलतमंदआदमी आंखोंके  
होते हुवे भी अंधे होजाते है. वो-चूपहोकर-आगेकों चलागया.

(१११)-दोस्ती उसकेशाथ रखना मुनासिबहै जो-हिम्मत-  
बहादूर-उदार-और-चतरहो. मूर्खमित्र जानका जोखमहै. अपनी  
खूबसुरतीकी तारीफ करे-या-दुनियामें मैरी बराबर कोई अकल-  
मंद नहीं ऐसा घमंडकरे-वो मूर्ख है. दुनियामें एकसेएक बढ़कर  
पडे है, जो मनुष्य मनःपरिणामसें खोटेइरादे कररहाहै ज्ञानीजनोंने  
उसकों भावहिंसक कहा, अगर इरादाकरेकि मैरे दुश्मनके घर  
आगलगे. हैजा-होजाय, उसका धन चौर लूट जाय, वो-नदीमें  
डूबमरे, वगेरा खोटाध्यानकरनेसें उसका कुछ नहीं होता, ब-  
ल्किन ! अपनेकों पापलगतता है, मनवचनसें कियाहुवापाप-अगर-  
पश्चात्तापद्वारा-आत्मशास्त्रीसे-या-गुरुशास्त्रीसे-आलोचे-नींदे-नही-  
तो अगले जन्ममें कायासें भोगना पडे, जिसका मन विरक्तहै-वो  
सदा त्यागी है, क्रोध-मान-माया-और-लोभ-इनचारोंकों जिसने  
कमकिये-उसनेधर्मका रास्ता पहिचाना ऐसाकहनेमें कोईहर्जनही,  
देवमंदिर-या-धर्मका-पैसा देनाहो-तो-जलदी देनाचाहिये. न-

मालूम-कल क्या होगा?—देवके-केशरचंदनसें तिलक नहींकरना—  
 देवकजलसें स्नान नहीं करना—और देवके भांडेवर्त्तन-सारंगोत-  
 बले-भैरो-सितार-नगारेवगेरा कोइचीज-हो-अपने काममें नहीं  
 लानाचाहिये. इससें देवकी बेअदबी होती है, मनःपरिणाम मली-  
 न होनेसें पाप लगताहै, और लौकिकमेंभी बुराइ जाहिरहोती है.  
 देवकेसामने चढाहुवा-फल-नैवेद्य-चावल-बादाम-नालियेर-सोने-  
 चांदीकेवरक-गेहनेआभूषण-अंगीयां-छत्रचवर-और-नगदरूपये  
 पैसे-जोकुच्छहों देवमंदिरके भंडारमें रखनाचाहिये, फक्त-फल-  
 और-नैवेद्य-जोकि-रात्रीकों रखेनहीजाते-वे-मालीवगेरा जो देव-  
 केलिये फुलवगेरालातेहो उनकों देदेना चाहिये. सोभी एकहीकों  
 नहीं, आज एककों तो-कल-दूसरेकों-इसतरह जो नैकीसें काम  
 करताहो उसकों देना ठीकहै, एकहीकों देनेसें-वो-धमंडमें आकर  
 जहागीरदार बनजाताहै, कोइदिनपिछें कहनेलगेगा-मैंही-इसका  
 मालिक हूं-इसीलिये. धर्मशास्त्रोंमें फरमायागयाहै कि-देवमंदिरोंमें  
 पूजारीलोगोंकों रखो तो उनकी तनखाह मुकरर करके रखो,  
 चढापा उसकों देकर बें तनखाह मत रखो.

(११२)-कंजूसआदमी सबकों बुरालगताहै. उसकीतारीफ  
 कोइनहीकरता. कंजूसआदमीकों धर्मपाना बहोतमुश्किलहै, जबत-  
 कउसकों मिट्टीपर मोहब्बतहै धर्म प्यारा कैसे होसकताहै?—बिबून  
 धर्मके प्यारेबने मुक्तिहोना कोइधर्मशास्त्र नहींफरमाता, कंजूस-  
 और-लक्ष्मीके दोएक-सुवाल-जवाब-सुनलिजिये!—

## [ सोम-लक्ष्मीके-सुवाल-जवाब. ]

( लावनी. )

सोमलक्ष्मीदोनोंका झगडा-सुनजो पंचों! चित्तलगाय,  
 कहती लक्ष्मी सुनो! सोमसें-ना खरची ना खाइजाय, १  
 कहता सोम तूं! सुनवें लक्ष्मी!-तुजे कभी नहीजाने दूं,  
 खाडाखोदके रखूं तुजेकों-ना खरचूं ना खाने दूं, २  
 योगीजंगम आवे मांगने-ना मुठीभर दाने दू.  
 बजारमेंमें रे! कभी पैसेकी-चीज नही लाने दूं, ३  
 ऐसी जुगतसें रखूं तुजेकों-तूंभी जाने रखी छिपाय,  
 कहती लक्ष्मी सुनो! सोमसें-ना खरची ना खाइ जाय, ४  
 कहती लक्ष्मी सुनवें! सोम तूं-है मूरख पापी नादान,  
 परपुदगलका मोह त्याग दे-करले निज आतम पहिचान, ५  
 कहता सोम तूं सुनवे! लक्ष्मी-महापापिनी हत्यारी,  
 दौलतखातर वहेनने मारी-भाइपर कटहारी, ६  
 भाइभाइमें शिशकटावे-बेटा बापसें लडता री!,  
 तेरे कारने विचारे!-कइहुवे दुर्गतचारी, ७  
 तूं! पापी चंडाल सोम-तेरेसें कछु नही धर्मदेवाय,  
 कहती लक्ष्मी सुनो सोमसें-ना खरची ना खाइ जाय, ८

(११३)-बचनाचाहिये कंजूसोंकी दोस्तीसें-दुर्जनकी संगतसें  
 कुपढके व्याख्यानसें-वैश्याओंकी कीतानसें-बारूदकी कोठीसें-जु-  
 आरीओंकी मुठीसें अजीर्णरोगसें-और-बचनाचाहिये बदचलन  
 औरतके नखरोंसें,-जो शरूस फक्तजबान जोरीही करना जानते



है और-रूपथापैसाहोतेहुवेभी-खरचनहीकरते-वै-कभीनकभी-वैइ-ज्जतीका फल उठायगें. गृहस्थोंको चाहियेकि-वस्तुपर-धनखरच नेमें कंजुसपना नकरे, साधुओंको चाहिये कि-धर्मशास्त्रका पठन-करे याते कोइउसं धर्मचर्चामें लाजवाब न करसके, अखबारवाले हमेशा लेखनीकीलडाइलडते है, लेकिन!-हां ! तलवारोंकीलडाइसं लेखनीकीलडाइ-ज्यादेमुश्किलहै इसमें कोइशक नही. जो सभा-जिसकामकेलिये-उठीथी-वह-काम-न-करसकी तो उसको बिट्टि-योंकी बरात समझनाचाहिये. अखबारोंको पढ़नेवाले-बहुतकुच्छ अकलहोशियारी पासकते है इसलिये, सबमहाशयोंको मुनासिबहै कि-अखबार रोजमरें-पढ़ा-करे.

(११४)-आजकल भारतकेमध्यगंडकी खेतीकाव्यापार-और देशीचीजोंका-आदर इसलिये घटगयाकि-देशीचीजोंपर उनकी अरुचि-और-बिंदशीवस्तुओंपर रुचि बढ़ती गई, यद्यपि कमदामोंकी चटकीलीचीज-स्वदेशकीवढिया और पायेदारचीजोंकेआगे कुच्छभी ताकतवर नहीहै, लेकिन ! इसतर्फ उनका ध्यानही-नही-ठहेरता इसका क्या ! कहाजाय, !! पारिसशहरमें-दुपहिया-तीनपहिया-पैरगडीपर-बैठनेका बढारिवाज है, वियोसनामके मै-दानमें-इतबारकेरौज तीसतीसहजार पैरगडीयां देखीजाती है. इनमेंबहोतसी गाडियां स्त्रियोंहीकी-और-थोड़ी मर्दोंकी सबबकि-पुरुषोंमें-स्त्रियोंको-वहां-हरबातका ज्यादाशोक है, कइदेशोंमें लोग, कुत्तोंको पालकर हरवस्तुपामरखते है लेकिन ! ज्ञानीजनोंने-जानवरोको हरवस्तु पासरखना अच्छानही फरमाया. नमालूम कि-सबस्तु बैइज्जती-करबैठे ?-एकसभ्यबीबीको-कुत्तापालनेका-बहोत

ही शौक था. हरवस्तु उसकों प्यार करतीथी, लेकिन!—एकवस्तु बेंसमझकुत्तेने उसकेमुंहपर ऐसादांतमाराकि—उसविचारीकों दवा-खानेजाना पडा. यद्यपि पशुओंमें कुत्ता बहोतहीचतर-परिश्रमी-और-स्वामीभक्त-होताहै, मालिकका खोंफ रखना, सिपाहीके बतौर घरोंमें पहरा देना—जो मिले उसीकों सबररखके भोजनकरना, अपनेमालिककी हमेशा तर्फदारीमें—रहना—और—हमेशा—चौ-रोसें—मालिककों—बचाना वगैरा कइगुण—कुत्तेमें—मौजूदहै लोकेन!—अखीरमें जानवर जानवरही है, इसका बहोतसंगरखना फायदेमंद नहीं.

(११५)—बारहआदमीकाबल एकबैलमेंहोताहै, दसबैलोंकाबल एकघोडेमेंहोताहै,—और—बारहघांटोंका बल एकभैंसेमें होताहै. पांचसोभैंसाकाबल एकहाथीमें—पांचसोहाथीकाबल एकसिंहमें—दोसेंसिंहकाबल एकअष्टापद जानवरमें दोसेंअष्टापदोंकाबल एकबलदेवमें—दोबलदेवोंकाबल एकवासुदेवमें—नववासुदेवोंकाबल एकचक्रवर्त्तीमें दशलाखचक्रवर्त्तीका बल एकदेवतामें—एककरोडदेवताओंकाबल एकइंद्रमें—और—तीनकालके इंद्रोंकाबल एकअरिहंतमें होताहै, आजकल एसेबलवानपुरुष नहीरहे, कोइशख्श घमंडकरेतो उसका घमंड झूठाहै, आदमीओंमें—और—जानवरोंमें—जोजो—ताकत पहिले जमानेमेंथी अबनहीरही, पहिलेकालकेराजे ऐसे बलवानथे—जो—रै-षत बदलजायतो अकेले उसकों बशमें लासकतेथे, इसवस्तुकेराजे अगर फौज बदलजाय कुच्छनही करसकते, ताकतभी एकबहोत बडीचीजहै, कइ पहेलवान ऐसेभीमौजूदहै जो जमानादेखते उनकां दूसरेलोगोंसें बलवानकहना ठीकहै, लेकिन? वैसेनहीरहे जो पहिले कालमें थे.

(११६)—सातव्यसनोंमें जुआव्यसन सबकासिरदारहै, जिसको जाह्नममें जानाहो जुआकों खेलें। जुआरीआदमी जहां मिलते हैं आपसमें कहते हैं खेलो भाई! जुआ, जुआमें भाग्यकी परीक्षा होती है, आजतो दिवालीहै हम एकरात जुआ खेलकर वर्षभरके भाग्यकी परीक्षा नकरे!—अमृतमें मीठा जुआ, जुएमें मीठा संसारमें कौनहै!—दुनिया भूलमें पड़ीहै जो जुआ नहींखेलती। बेंमौके दूधकीमलाईभी फायदा नहींपहुंचाती। लेकिन! जुआ बेंमौ केभी फायदापहुंचताहै, किसीवस्तुमें जुआ बेंचैनी नहींदेता, हम-तो-राज्य-खजाना-औरत-और-बेटाबेटी-तिलांजलिकरदेवे, लेकिन! जुएकों न छोड़े। साबासीदेना चाँहये पांडवोंकीछातीकों-जिनोंने अपनीऔतरकोंभी धरदिइ, इसमें ज्यादा औरक्या होगा! हमारेपास हारनेजितनेकों क्याखाहै!—लेकिन!—तोभी—हम जुआ-तो जरूर खेलेंगे। जुएबाजोंकी लीला अपारहै, कहांतक समझावे! अगर जुआही उमदाहोता तो सारी दुनिया जुआही खेलैकरती, लेकिन! सबजहान मूर्खनहीं हैं, मूर्ख-वैही-हैं-जो-जुआ खेलते हैं, जुआखेलनेमें पांडवोंने जोजो तकलीफपाई उनकों-न-सौचकर द्रौपदी हारजानेकी बहादूरीपर जिनकों साबासीदेना मंजूर है उनकों कौन समझासकताहै!—जिनकों नीतिपर लातमारकर चौरीपारीकों मौललेनाहो-या जिनकों बेंइज्जतीका तकमाहासिलकरना हो-जुआको-खेले, नलराजा जुआकेखेलसेही राज्य हारगया था।

(११७)—(स्त्री-शिक्षा,)-(१)पत्नी (२)चित्रनी (३)हस्तनी और-(४)शंखनी—येचारभेद ज्ञानभरकी श्रीयोपरदाखिलहोस-

कते हैं, पदमनीस्त्रीकी बोली मीठी होती है, आंखोंमें शर्म-मुख चंद्रमाकीतरह गोल-नाक तोतेकाचंचसमान खूबसुरत-दांत अनारकी कली-केश पतले-शरीर चंपेकेरंगकीतरह, चमकीला-कमरपतली-नाभी विचमेंसे उंडी-हृदय खूबसुरत-शरीरकी चमडी मुलाइम अंगुलीलंबी-नख लाल-निलाड पांचअंगुल उंचा-अर्द्धचंद्रमाके आकार-होठ लाल-और-पतले-पसीनेमें चंदनकी तरह खुशबू आवे-हंसनीकीतरह अच्छीचाल-नींद थोड़ी-काम थोड़ा-घमंड विष्कुलनहीं-इतरफुलेल बहोत चाहे. पदमनी स्त्रीकेरजमें फुलोकीतरह खुशबू आवे-रातको पदमनीके शरीरकी झलक ऐसी दिखाइदे जैसी बीजलीकी चमक हो-शींगारपहेनना बहोतरुचे-गहने अच्छे लगे-स्वभावसे बडीदलेरहो-रुपयेपैसेको कंकरकीतरहसमझे-अवाजकरके कभीहसेनहीं-हसे तो थोड़ासा हसे-पदमनीके औढनेमेंभी खुशबू महेकती रहे-धोकर सुकावे तो खुशबूकेमारे भवरें उसपर आनबैठे-पदमनीका खजाना तर बना रहे-देवदर्शन-और-तीर्थयात्रामें खुशरहे-धर्मपर श्रद्धा अटल होय-साधुलोग बहोतप्यारे लगे धर्मस्नेही पुरुषोंको साहायदेतीरहे-शास्त्रसुनना और पुस्तकपंनेबाचना पदमनी बहोत चाहे-धर्मकेकाममें खर्चकरके पुरुषोंकोभी मातकरडाले-पदमनीस्त्रीको धर्मकीपुतली कहदो कोइहर्जकीबातनहीं पतिकेदिलको कभी नाराज नकरे दासदासीसें लड़ाइ न लड़े-बचन ऐसाबोले जो सबलोग खुशहोजाय-बामे अंगपर उसके अच्छे लक्षण मौजूद रहे. पदमनीस्त्रीके स्तन सुंदर-पोनि लक्षणवाली-और-आंखें-कमलकीतरह रसीली-होती है,-जिसके अच्छे भाग्य हो-पदमनीस्त्री-मिले,-पतिसें जुदाइ कभी नहींसमझती-रसोइबना

नेमें चतर-पानबीड़ी खायेचिदून चैन-न-पड-सदा-तावेद्वार बनी रहे-ये-सब पदमनीस्त्रीके-लक्षण वर्ननकिये गये. स्त्रीकेलिये पति-केकहनेमें चलना इसकेशिवाय दूसराकोइबशीकरण नही-पदमनी स्त्री-चौसठकलाकी पूरी जानकार होती है.

(११८)-चित्रणीस्त्रीको रंगरंगीलेकपडे अच्छेलगे-शरीर ब-होतसुंदर हो हिरनीकी तरह नेत्र उसके चकितरहे-स्वर्चकरनेमें दलेरहोय-चतराइकरके सबकामनमोहलेवे-मुख चंद्रमाकीतरह गोल-शरीर गौरा-छलाट चारअंगुल उंचा-भू-तीसन-फुलोंका शिंगार बहोतचाहे-चित्रणीका-वीर्य-सहेतकीतरह खुशबूवाला-केश पतले लंबे-चित्रकारी औढना उसको अच्छालगे-चित्रकारीकाममें चतर हो-दांत सुधसुरत-होठ पतले-स्तन गोल-बोली रसीली-बनास्पति खाना बहोत चाहे-कामकलामें चतर-कटाक्षमारकर पुरुषको वश करे-बातबातमें पतिकों रिझावे-नाटककरनेमें बड़ीचतर-बीणाब-जाकर मोहितकरे प्रेमकरना पदमनीसें चित्रणीको ज्यादा आताहै पतिका मन फुलकीतरह विकासमान करे-इतरफुलेलसें खुशबूदार रहे-बामेअंगमें तील हो-तरहतरहकेपाक बनावे-मोतियोंकेहार और जवाहिरातलगे गहने चाहकर पहने-देवदर्शन-और-तीर्थयात्रामें राजीरहे साधुलोगोंकी सेवाभक्ति बहोतकरे-धर्मशास्त्रका सुमना ज्यादा रुचे-जिसके अच्छेभाग्यहो उसके चित्रणीस्त्रीका योग मिले चौसठकलामें चित्रणीभी पुरीमाहितगार होती है-पदमनी मोले-स्वभाववाली चित्रणी कुछ स्वभावसें चालाक होती है.

(११९)-इस्तनीस्त्री-पदमनी चित्रणीसें-अलबते ! कमदनेंपर है, लेकिन ! तोभी अच्छीहोती है, इस्तनीस्त्रीका शरीरसुंदरहोता है,

हयनीकी तरह सदा मतवाली-और-मंदमंद चाल चले-शरीरका रंग-गँहूबर्ना-कामभोगसे तृप्ति नपावे-लाज घोड़ीरखे-हस्तनीका वीर्य-हाथीके मदकीतरह गंधवालाहो, धर्मभ्रष्टा होवेभी-ना-भी-होवे-जैसीसंगतमोले बैसाधर्मकरे-कला-और-चतराइ हस्तनी के मंद होय-(शंखनीस्त्रीका वर्नन छुनिये!)-शंखनीस्त्री सरलबो-लीबोले-प्रेम क्याचीजहै बिल्कूल पहिचानेनही-शरीरका रंग तथा अंगोपांक ठीकनही-लिखनापढ़ना न-जाने-लाज बिल्कुलनही-बे-धर्महोकर हसे-शंखनीका वीर्य मरीडुइमछलीतरह बदबू मारे-नींद बहोत-अच्छेलोगोंकी संगत उसे पसंदनही-अपना अवगुन-न-प-हिचाने-धर्मपर श्रद्धानही-साधुलोग उसकों बुरेलगे-दान-पुन्य क रना जाने नही प्रीतकरनेकी तरकीब यादनही-येसब शंखनीकेल क्षण है. आजकल पद्मनीस्त्री दुनियामें बहोतकमहै, चित्रणीभी कमही है लेकिन! तोभी जिनकेअच्छेभाग्यहो मिलभी जाती है,- आजकल ज्यादातर हस्तनी-और-शंखनीही नजर आती है, अस-कमें चाहे पुरुष-हो-या-स्त्री-हो रूपपाना पुन्यके आधीन है, अ-कलहुशियारीपाना उससेभी ज्यादा पुन्यके आधीन कहा; और धर्मपाना सबसे बड़े पुन्य हो तब मिल सकता है.-आजकल मनु-ष्य पुन्यहीन रहगये, अच्छे आदमी या अच्छीस्त्री ज्यादा कहां से मिलसके, ?—

१ (१२०)-पद्मनी चित्रणी हस्तनी और शंखनी इनके अर्धां-तरभेद गिने तो एकएकके सोलहसोलहभेद होते हैं. चारोंके सि-लानेसें (६४) भेद होसकते हैं, जाति लक्षण और गुण तरहतरहके हैं, विद्वान् ज्ञानी उसका पुरेपुराहाल कौन माळूमकरसकताहै ? इस

लिये बड़े चार-और-उसकेनीचे चौसठ कहेगवे वही बहोत है, ज्ञातयौवना अज्ञातयौवना प्रौढा मध्या धीरा वासकशय्या अभि-सारिका कामकंदनी मुग्धा विप्रलब्धा विस्रब्धा और प्रौषितभतृ-का वगेरा जिसजिसतरहकीस्त्रीये कामशास्त्रोंमें बर्ननकिइ है यहां कहांतक लिखे, ?-जिसशास्त्रकों बर्ननदेखा अपार है, और हमकों वहां थोडेमें बहोतकुच्छ कहनाहै इसलिये इतनाही लिखाण यहां पर ठीक समझा गया.

(१२१) स्त्रीकों विद्यापढना जरूरचाहिये, जैसे कच्चेघड़ेपर जोजो चिन्ह कियेजाय वह कभी नहीं मिट सकते वैसे छोटीउम-रकी पढीहुइविद्या जौंदगीतक यादरहती है, विद्याबिदून मनुष्य अंधाहै अगर अंधेकों अंधी मिलजाय फिर बिगाडकीसुरत पैदा-होगी या नहीं? स्त्रीकों पढानेवाली स्त्री होनाचाहिये, धर्मपुस्तक और कलाकौशल्यताकेग्रंथ स्त्रीकों पढना ज्यादा फायदेमंद है, जो लोग स्त्रीकों पढाना बुरावताते है वे असलमें मूर्खोंकोसिरदार है, अगरकहाजायकि स्त्री विद्यापढेगी तो खोटेकामोंमें खयाल करेगी, (जवाब.) पुरुष पढाहुवा अगर खोटेकामोंमें खयालकरेतो इससे पढना बुराकहसकते हो?—अगर नहींकहसकते तो फिर पढनेसे क्या!—बिगाड आया! हां! ऐसी स्वाधीनता स्त्रीकों न दो जि-ससे वो मतवाली बनकर पुरुषकों कुछ न समझे, आर्यलोगोंके कायदेही ऐसे है जो स्त्री कभी स्वाधीन होही नहींसकती, हमारा कहना यहनही हैकि स्त्री केवल अंग्रेजी और फार्सीही पढे, स्त्री-कों धर्मशास्त्र और कलाकौशल्यताके ग्रंथ पहिले पढना चाहिये जो कि-संस्कृतभाषामें-बनेहुवे है. स्त्रीशिक्षाका मतलब यह नहीं है कि-

स्त्री-किताबें बगलमें दबाकर मिशनस्कूलोंमें जाके बायबिल पढ़े, बी०ए०-एम०ए०पासकर हाइकोर्टकी वकालत और डाक्टरी करे, कांग्रेसकी डेलीगेंट बनकर स्पीचोंका गौला छोड़े, और विलापतजाकर सिविलियन बने, वरन्!-स्त्रीशिक्षाका यह मतलबहै कि-स्त्रीयां-संस्कृतपढ़कर धर्मग्रंथ बांचतीरहे, गृहस्थधर्मके कार्य सीखें, पतिसैं किसतरह बर्ताव रखना, अपने होनहारबेटाबेटीकों किसतरह बिद्यापढाना, धर्ममार्ग कौनसाहै-वगेराबातोंमें माहित-गारबने, माता पढीहुइहोगी तो अपनीऔलादकों खोटेमार्गमें रौ-केगी. और ऐसी शिक्षा देगी जिससे-वें-अंग्रेजीपढ़करभी होटलमें टोटल देकर बोतलकेवशीभूत नबनेगें. और ऐसा मंत्रभी-वह-उनके कानमें फुंकदेगी जिससे-वे-कभी-अपनेधर्ममें भ्रष्ट न होसकेंगें.

(१२२)-बहुतेरे अकलके अंध-जो-कहरहे हैकि-स्त्रीकों-पढना-अच्छानही उनसें पूछा-जायकि-बतलाइये!-उपरलिखे गुण पढनेसें हासिलहोसकते है-या-मूर्खरहनेसें-पढीलिल्लीस्त्रीयोंमें सेंकडे एक-बदचलन निकलेगी-मूर्खणीस्त्रीयोंमें सेंकडे ननानुं बदचलन निकलेगी.-कहिये! यह फायदा हुवा-या-नुकसान!-स्त्री-पुरुषकी अर्धांगनी कहलाती है और दुखमें मित्रवत् पतिकों सहायता पहुंचातीहै, कहिये! कौन ऐसा मूर्खहोगा-जो-आधेअंगकों साफ और आधेअंगकों, मलीन रखना मंजूररखेगा?-जो आपही कुवेकीमेंडकी है वह पतिकों क्या! फायदा पहुंचासकेगी? पुरुष तो चौदह बिद्याका खजाना और स्त्री कालाअक्षर भेंस बराबर गिने, कहिये! उनका मेल कहांतक ठहरसकताहै!-और-उनका-प्रेम कहांतक वृद्धिकों पहुंचसकताहै!-इनबातोंकों सौचकर अगरकोइ कुच्छ



कहेतो-असपर-औरभी होसकताहै, लेकिन! जो कोरा संस्वनाइ करजानते है उनका क्याकहाजाय?-सबशास्त्रोंमें लेखहैकि स्त्रीकों विद्या-जरूर पढना चाहिये, चौसठकलामां लिपिविज्ञान-एककला लिखी हुइहै, मूर्खोंके फरमाने मुजब अगरस्त्रीकों शास्त्रकारोंने मूर्ख रखना मंजूर था-तो-ऐसालेख क्यों लिखते?-अगेराप्रमाणोंसे सबूतपाया जाताहैकि-स्त्रीशिक्षाकी परिपाटी ज्ञानियोंकों मंजूरथी, मूर्खलोगही इसबातसे नाक चढाते है,

(१२३)-स्त्रीकों ऐसाखैल न-खैलनाचाहिये जिससें बेशर्म-भरीबात मुंहपर चढजाय. विद्यापढनेका बहुत छोटी उमरही है, छोटीउमरमें मातापिताके हुकममें चलना-और-विवाहितहोयेबाद पतिके हुकमकों शिरचढाना-स्त्रीकेलिये निहायतउमदाहै. पतिसें छलकपटकी बात कभी-न करना स्वामीकेदिपेहुवे धनकों बाहि-यातकाममें नही लगाना. मनसेंभी परायेपुरुषकी चाहना न रखना पतिहीकी सेवामेंदाखिलहै. पीठेंवचनबोलना-और-पतिके उपभोगमें अनुकूलरहना-खानदानस्त्रीकी निशानी है, कोईस्त्री अपनेस्वामीकों वशीकरणकरना चाहे सच्चीपतिव्रता होकर रहे, स्वामीके हुकमकों फूलकी तरह सिरपर चढावे. शय्या-रूपडें-और-मकान साफरखना-चतरस्त्रीयोंका कामहै. रूपवतीस्त्री-अगर अपनेरूपका धमंड-करेतो-पतिकों मुनासिबहै उससें अपना मन खेंचलेवे. बोलना बंदकर उससें अलगशय्यामें सोवे. बहस्त्री-कौनकामकी-जो स्वामीके हुकमपर-न-चले, वैसीस्त्रीकों-रोटीकपडें जितना खान-पान-देकर-अलगकरदेना चाहिये. सोभी-अमर-सदाचारिणी-रहे-तो-अगर-व्यभिचारिणी-होजाय-तो खानपान-देनाभी-मु-

नासिब-नहीं,—जो लोग स्त्रीकों अपने शिरपर चढा लेते हैं—वे—अंतमें बड़ी बेइज्जती—और—तकलीफ उठाते हैं, अच्छे लोगोंने बारबार फरमाया है कि—स्त्रीकों—बहोत—शिरपर—न—चढाओ, एक स्त्रीके मर जाने—पर जब कइपुरुष—दूसरी स्त्रीकों विवाहते हैं तब पहिलेवालीके बेटों बड़ी तकलीफ—पहुचाते हैं, नयी स्त्रीकों खुश करनेके लिये उस लडकेकों मारपीट करते हैं, घरसें अलगकर जितना हिस्सा उसकों देना चाहिये नहीं देते हैं. लेकिन!—यह बात न्यायमार्गसें बर्हिष्ठाफ है. संसारव्यवहारमें जितना नाम—बेटेसे—चलता है स्त्रीसें नहीं चलता मुनासिब है उसपुत्रकों—नयी स्त्रीसें—ज्यादे आनंदमें रखे, उसके पुन्य उदयमें—स्वामीयी—जो उसकी असली माता मर गई. अब बल्किन्! उसलडकेकों ज्यादे दिलासा देना चाहिये,—नयी स्त्रीके प्रेममें लंपट होकर जो लोग बेटोंकों कुछ चीज नहीं समझते उनकी दुनियामें बुराई—और—परलोकमें दुर्दर्शा होती है.

(१२४)—कामविकार मोहनीकर्मका—एक—अवांतरभेद है, इसमें फसकर—स्त्री—पुरुष—अंधे होजाते हैं. तारीफ उनकी है—जो—अंधे न—बने, हाव—भाव विलास और विभ्रम ये चार—कामविकारके बढानेके हेतु हैं, कामीमनुष्यका चित्त मलीन इरादोंसें—गर्क—रहता है, कइलोग कहदेते हैं कि—स्त्री जितना पुरुषकों नहीं चाहती उतना—पुरुष स्त्रीकों चाहता है. (जवाब.) यह बात गलत है, सबब कि—काम विकार—एसीवस्तु है—जो—इसमें पडकर दोनों बेहोश होजाते हैं, संसारमें निगाह फैलाकर देखलो—खुद मालूम होजायगा. हां! इतना कहसकते हो—कामविकार—जितना बढामुश्किल है. जिनोंने इसकों जीतलिया तारीफ उनकी है. अगर सवाल किया जाय कि—किसीने

जीताभी है?—जवाबमें—इतना कहसकते होकि—हां!—ज्ञानीजनोंने इसकों—जीतभी—लियाहै, जो लोग—कामविकारतर्फ दिल बहोतब-  
दाते है उनकों अलबते! इससें फतेहपाना—मुश्किल है. कोइइस दु  
नियामें ऐसा नही जिसकों हवा—न—लगीहो, जैसे यह मसाल ठीक  
ठीक सही है—वैसे कामविकारकी हवा लगनाभी मनुष्यकेलिये एक  
कुदरतीनियमहै, लेकिन! तारीफ उसकी है—जो—टूटेफूटे नही.

(१२५)—पूरवजन्मके—कियेहुवे—सुकृत्यसें मनुष्य रूपवान् होते  
है. चाहेस्त्री—हो—या—पुरुषहो,—जैसे अकल होशियारी एकतरहका  
वशीकरण है वैसे अच्छारूपभी एक वशीकरण समझो. रूपदेखकर  
कइपुरुष—और—कइस्त्री मोहित होगये हैं. घरछोडके एककेपोछे एक  
चलेगये—यहबात किसीसे छीपीहुइनही. जिसपुरुषकों जिसस्त्रीके-  
साथ रागहै उसकों धर्मशास्त्रका वचन जितना असर नहीकरता  
उस स्त्रीका वचन असर करता है. अगर कोइ—मुनि—उस-  
पुरुषकों धर्ममें धनखर्चनेका उपदेशदेवे तो खर्चे—या—नभी-  
खर्चे, लेकिन ! अगर वहस्त्री उसपुरुषकों—कहेकि—आप—इतने  
रुपये—इसकाममें देदो—तो—उसी वरत्त देदेगा. इसीतरह जि-  
सस्त्रीकों जिसपुरुषकेसाथ रागहोगा—उसकों—अगर—वहपुरुष कहे  
कि—तुम!—इसकाममें—इतनाधन देदो उसीवरत्त देदेगी. राग—बो-  
चीजहै—जो इसकेवशमें पडकर बडेबडे चकरा जाते है. संसारके  
तीनहिस्से ऐसे नजर आते है—जो ऐशआराममें गर्क है. मुठीमें पारा  
रखना और कामविकारसें दिलकों बचाना एकसरखाहै, जिसपु-  
रुषका या जिसस्त्रीका धर्म तुमने देखलियाहै उसकोंभी बनतेम-  
यत्त जाहिरकरनेसें बचाव रखो, दूसरेका धर्म जाहिरकरनेसें अ-

स्त्रीमें बड़े झगड़े आनपड़ते हैं। स्त्रीका पक्षकरके जो जो पुत्र अपने मातापितासें लड़ते हैं वे आदमी नहीं जानवर हैं, मातापिताकी बे अदबी करना या अपनी स्त्रीसें उनका मानभंगकराना बेवकूफों-का काम है, तुमको लाजिम है कि मातापिताकी ताबेदारी करो। उन्होंने तुमको पाला है, पैशावपाखाना उठाया है, रातरातभर तुमारे लिये जागे हैं, तुम अब उनके सामने बोलते हो या स्त्रीसें उनको गालीयां दिलवाते हो, —तुमारे समानकोइपापी अधर्मी और भाग्यहीन नहीं, शिरपर चढ़ाने योग्य पदार्थकों खाखकीबतौर समझते हो।

(१२६) — जो शल्लभ मातापिताकी ताबेदारी करते हैं उनकी स्त्रीभी मारे डरके साससुसरेसे कभी सामना नहीं करती लेकिन ! अपशोष है कि — आजकल ऐसे लाइकवर पुत्र बहोत थोड़े रह गये। स्त्रीकी और अपनी माताकी लड़ाइ होजाय तो मुनासिब है पहिले अपनी स्त्रीको हठाना। सबब कि माताका दर्जा बड़ा है, मातापिताका अन्याय हो — तो भी — आप — स्त्रीका पक्ष पकड़कर — उनके सामने — न बोलें — मुनासिब समझें तो — उनके दोस्तोंसें — ताबेदारी के साथ — कुछ बिज्ञप्तिकरावे कि — आप — क्षमा करे, जो — पुत्र — मातापितासें — ऐसा जवाब देता है कि — वह — छोटी है आप तो बड़े हो — समता करो, वह — पुत्र — नहीं — दुश्मन है, इससें तो अपनी स्त्रीका पूरे पूरा पक्ष सबूत होजाता है, स्थानांग-सूत्रके तीसरे स्थानमें लिखा है कि — मातापिताका — भौरे — धर्माचार्यका बदला — कभी — नहीं दिया जाता। अगर कोई पुत्र — मातापिताकों — फुलै-लतैलसें मालीस कराके — हर हमेश — स्नान करावे — अच्छे कपड़े पहनाकर छत्तीस तरहके भोजन जिमावे, और सारी उमर तक सेवा करे तो भी उनका बदला — न — दे सके हां ! — अगर चे ! सर्वज्ञ कथित धर्म मुनाकर

उनको धर्मश्रद्धामें पकड़े करे-तो-अलवते! उनका बदला देसकता है, जिनको ऐसे बचनोपर श्रद्धाहै कभी मातापिताका सामना न-हीकरते. कितनेक ऐसे शरूश है-जो-स्त्रीकेवशमें पडकर भाइका अपमान करते है, लेकिन!-तकलीफकेवरत-भाइही-कामआताहै, रामचंद्रजीको भाइनेही-कामदिया था. रामचंद्रजी ऐसे शूरवीर थे जो कभी कचेदिल नहीहुवे, लेकिन!-जब लंकायुद्धमें लक्ष्मनको मूर्छाआइथी-रों-दिया था, भाइहो-तो-ऐसेहो, बेटामरजायतो दूसरीस्त्री विवाहनेसें-दूसरा-पैदाहोसकता है, लेकिन!-सगीमातासें जन्माहुवा-भाइ-मिलनामुश्किलहै. वों-नालाइकहै-जो-भाइकेशाथ दुश्मनीरखते है. हरेकआदमीको मुनासिबहै देवगुरुधर्मको अवल नबरमें समझे-और-उनकेशाथ बर्तावभी ऐसाही रखे, बाद माता-पिताको दूसरेनंबरमें-समझे-भाइको तथा बेटोंको तीसरेनंबर और स्त्रीको-चौथेनंबरपर समझे. और उसमुजब बर्तावभी रखे. स्त्री-के-रागमेंपडकर उपरलेदर्जेवालोंको कुच्छचीज-न-समझना. बडी भूलहै.

(१२७)-एकशेठकेबेटेको एकवैश्यासें बडीमोहबतथी. सबधन उसको खीलादिया, जब खर्चसेंतंगहुए शहरछोडकर देशांतरको गये, नसीबकेकारण वहां नोकरी मिलगइ, तहसीलदारहोगये. दो चारमहिनेकेबाद अपनेनोकरसेंकहा-यह-(५००) रुपये लेजाओ.- इसमेसें-(४००)-हमारीवैश्याको-और-(१००) रुपये-हमारीघरबालीको देना, रसीद लेते आना. नौकर चतरथा पहिलेही वैश्याके घर गया. कहनेलगा तुम्हारे सबसें ज्यादाप्यारेदोस्तने-(४००)-रुपये-भेजे है, सो-लेलो!-और-उसकेनामकी रसीद देदो, वैश्या

बोली!-रूपये किसने भेजे है!-नौकर कहता है तुम्हारे प्यारे दोस्त ने-  
 वैश्या-बोली-उसका नाम-क्या-है?-नौकर बोला! क्या! तुम नहीं  
 जानती हो?-वैश्या बोली-मेरे बड़े प्यारे दोस्त तो नहै. नौकर ने उ-  
 नतीनों के नाम लिखलिये. लेकिन?-अपने मालिक का नाम नहीं आ-  
 या, वैश्या ने फिर-तेरह-और-फिर-छप्पन भी-नाम लिखवाये. ले-  
 किन!-किसी में अपने मालिक का नाम नहीं आया. नौकर ने फिर  
 पुछा कि-अब भी कोई बाकी रहता है?-वैश्या ने कहा!-यू तो-सैंकड़े  
 भडवे मैरी गली में फिरा करते हैं. नौकर चला आया, और-(५००)  
 रूपये ही अपनी मालकीनकों दे दीये. रसीद लेकर मालिक के पास  
 आया, रसीद दिइ, मालिक नाराज हुवे. कहने लगे उसके हाथ की  
 सही क्यों नहीं?-नौकर बोला!-हजूर! हिसाब सुन लिजिये!-न  
 तीन में-न-तेरह में, न-छप्पन में-बहत्तर में. बतलाइये!-आप किस ग-  
 ली के भडवे हो,? वैश्या की दोस्ती का यह नतीजा है जिसकों अप-  
 नी इज्जत में कलंक लगाना हो वैश्या की दोस्ती करे.

(१२८)-उपदंश वगेरा बीमारी जो-अक्सर मर्दों को-होजाती है  
 वैश्या का संग भी एक-रोग की जड है. बात सच्ची भी है कि-जहां बहोत सें  
 आदमीओं का वीर्य मिलेगा रोग क्यों-न-होगा?-जिस जगह उपदं-  
 शकारोगी पैशाचकरे उस जगह पर पैशाच करने वाले कों भी यही रोग  
 लगजाता है. इस बीमारी वाले कों चाहिये छिपावे नहीं. धर्म के मारे दू-  
 सरे कों-न-कहोगे-बीमारी बढ़ती जायगी. उपदंशकरोगी कों मुनासि  
 व है वैद्य की सलाह सें इन्द्रिय जुलाव लेकर रोग का इलाज करावे. जब-  
 तक आराम-न-हो-स्त्री के पास-न जावे, मन के ढंग सें खाइहुइ दवा-  
 कार-नही करती. वैद्य की दिइहुइ थोड़ी चीज भी फायदा पहुंचाती

है, मासिकधर्म कमीबैसीहोनेसे स्त्रीको-कमरमेंदर्द-वैचैनी-सिरमें दर्द-बगेराबीमारीजारीहोता है. कभी-काला-या-बहोतगर्म-रक्त-निकलना,-हमेशा शरीरगर्म रहना,-हाथपांवके तलबोंमें पसीना आना,-कलेजा धडकना-कमर और जांघमें दर्द-पेटकेनीचेभीदर्द रक्तजारीहोनेसे पहिले तकलीफहोकर फिर मीटजाना-ये-सब मासिकधर्म कमीबैसीहोनेके लक्षण है.

(१२९)-स्त्रीको-पुरुषकीबनीस्पत कामविकार ज्यादाहोना फरमाया. पुरुषकीतरह जाहिरातमें मुखसें नहीकहती, लेकिन! छलकपटकेजरीये आंखोंके इशारेसें मालूमकराती है, पुरुषका काम-विकार थोड़ीदेरतक-और-स्त्रीका-बहोतदेरतक रहताहै. स्थानांग सूत्रके तीसरेस्थानमें स्त्रीकी योनि तीनतरहकी बर्नन किइ,-(१)-कूर्मोन्नता-(२)-शंखावर्त्ता-और-(३)-वंशपत्रिका-जिसकी कुर्म्मान्नतर्यानिहो उसस्त्रीके-गर्भमें-तीर्थकर-चक्रवर्त्ती-बलदेव-और-वासुदेवबगेरा उत्तमपुरुष पैदाहोते है. चक्रवर्त्तीकी चौसठहजारस्त्री-बोंमें-जो-पटरानी-होती है उसको शास्त्रमें रत्नस्त्री कहा. रत्नस्त्रीक-हनेसें यह मतलबहैकि-दूसरीस्त्रीयोंसें उक्तस्त्री-ज्यादे-रूपवतीहोती है, इसकी योनि-शास्त्रोंमें-शंखावर्त्तके आकार फरमायी. इसके गर्भ नहीरहता, चक्रवर्त्तीराजा-जब-संभोगकेलिये इसकेपासआता है तब मूलशरीरसें आताहै, और दूसरी-जो-तेसठहजार-नवसें-ननानुंस्त्रीरही उसकेपास जाताहै तब वैक्रिय लब्धिकेजरीये न्यारे न्यारेरूपबनाकर जाताहै.

(१३०)-स्थानांगसूत्रके पाचवेस्थानमें विनासंभोगकियेभी-को-गर्भरहनाफरमाया, यद्यपि यहबनाव बहोतथोड़ीजगह बन-

ताहै लेकिन !-जोबात-बनने योग्यहै उसका बयानकरना कोई ह-  
 र्जकीबातनही, अगर सवाल कियाजायकि-विना-वीर्य-गर्भस्थिति  
 कैसेहोसकेगी,?-(जवाब.)-कौनकहताहै? विना वीर्य-गर्भ-रहे. अ-  
 लवते !-संभोगकिये बिदून-गर्भ-रहनाकहासो ठीकही है. सुनलि-  
 जिये !-कोइस्त्री-किसीपुरुषका-वीर्य-मंगाकर अपनीयोनिमें स्था-  
 पनकरे और वह गर्भाशयतक जाकरस्थितहोजाय-तो-गर्भरहना  
 संभवहै. दूसरा यहभी सबबहैकि-जबकभी-किसीमरोवरमें-या-कुं-  
 डमें-स्त्री-स्नानकरनेजाय वहां समझो कोइपुरुष-पहिले स्नानकर-  
 गयाहै और उसका स्खलितहोयाहुवा-वीर्य-उसजलमें तैररहाहो-  
 वो-वीर्य-लोहचूंवककीतरह आकर्षणहोकर गर्भाशयमें संचार हो-  
 जाय तो गर्भ रहना संभवहै. इसीलिये स्त्रीकों-नग्नहोकर स्नानकर-  
 ना मुनासिब नहीफरमाया. आदमीभी अगर नग्नहोकर स्नानकरे  
 तो उसेभी कौन अच्छा कहताहै,?

(१३१)-[अप्राप्तयोवना]-बारहवर्षसे कमउमरवाली-  
 स्त्री-आजकलकेजमानेमें-अप्राप्तयोवना-कहीजाती है, एसी कमउ-  
 मरवालीस्त्री-पुरुषकेसंयोगसेंभी-गर्भधारण-नहीकरसकती. सबब-  
 कि-छोटीउमरमें उसकों रितुधर्म नहीआता, पचवनवर्षकी उमर-  
 वालीस्त्रीकों आजकल [अतिक्रांतयोवना]-कही, उसकों रितुधर्म-  
 केअभावसें गर्भ नहीरहसकता. किसीस्त्रीकों खानपानकी सामग्री  
 अच्छीमिलनेसें ज्यादाउमरतक ताकतवर बनीरहे-तो-उसकों गर्भ-  
 रहभी सकताहै, लेकिन ! बहोतस्त्रीयोंकों-न-रहनेसें-यहीकहना मु-  
 नासिबआयाकि-पचवनवर्षके बाद-स्त्री-अतिक्रांतयोवना है. स्त्री-  
 पुरुष-दोंनों-युवाअवस्थाकेहो-गर्भाशय-मार्ग-रक्त-शुक्र-अनिल-



और-हृदय-येछहचीजनिर्दोषहो-तो-ताकतवरपुत्रपैदाहोनेकासंभवहै उक्त छहचीज दोषितहोतो कमताकत होगा. स्त्रीका-रजः-ज्यादेताकत बरहोतो गर्भमें-लडकी-और-पुरुषका-वीर्य-ज्यादेताकतबरहो-तो-लडका-होनेकासंभवहै. जन्ममें लगाकर-जो-स्त्री-निर्बीज-(यानी) बंध्याहो वह पुरुषकेसंभोगमेंभी गर्भ-न-धरेगी. सबबकि-उसने पू-रवभवमें एसेहीकृत्यकिये है जिसमें उसके गर्भाशयमें औलादहो-नेकी ताकत-न-हासिलहुइ. जिसस्त्रीकों हरहमेश रक्तप्रवाह बहता रहे उसकोंभी गर्भरहनेका संभवनही जानना. रितुधर्म-आयेबाद पनराहरौजबतीतहुवेपीछें बाकीके-जो-पनराहरौज-अगलेरितुधर्म-आनेकेबीचमें-रहे उनमें संभोगकरनेमेंभी गर्भ नहींरहता, स्त्रीकों जब रितुधर्म आवे तीनरौजतक संभोगकरनाठीकनही, करनेमें स्त्री और-पुरुष-दोनोंकों रोगपैदाहोताहै, कइ एनेभी है-जो-इनदिनों-मेंभी संभोगकियं विदूननहीरहते. और अग्नीरमें बीमारीपैदाकर हकीमोंके घर तलाशकरतेहैं, रितुधर्म-आयेपीछें तीनदिनकेबाद-जो-बारह-रौज-रहे उनदिनोंमें संभोग-न-कियाजायतो-गर्भ-नही रहे. सबबकि-गर्भस्थितिहोनेके-यही-दिनहै. जिसस्त्रीकों रक्त-पि-त्तकेप्रकोपमें गर्महोगयाहो उसकोंभी गर्भस्थिति नहींहोसकती. क-इस्त्री-जडीबूटीखाकर अपनेगर्भाशयकों शक्तिहीन करदेती है उस-कोंभी गर्भरहना संभवनही जैसे-कइवैश्या-और-विधवा-कामावि-कारकी चाहनामें ऐसा करलेती है,

(१३२)-बाजेआदमी कहदेतेहैंकि-दुनियामें-एक-स्त्रीही-उ-हा चीजहै. (जबाब.)-यहबात गलतहै, क्या?-स्त्रीकेलिये पुरुष चीज नहीं?-जब एकदूसरेकेलियं एकसरस्त्रीबातहै फिर-ए-

ककों उमदा-और-एककों नहीकहना कौन चतराइ, ?-कितनेक कहते हैं स्त्रीका-स्पर्शकरनेसें जब आरामपैदाहोताहै-तो-फिर-बो-अच्छीचीज क्यों नही ?-(जवाब.)-क्या ! स्त्रीकों-पुरुषका स्पर्शकरनेसें-आराम-नहीहोता ! अगरचेहोताहै-तो-फिर-एकहीकों अच्छीचीजकहनेसें क्या ! जरूरत ?-हां !-इतनाकहना मुनासिबहैकि कामजन्यमुख-दोनोंकेलिये एकसरखाहै. कितनेक कहते हैं पुरुषकी पैदाश-स्त्रीसें-है, इसलिये उसकीनींदा करना मुनासिब नही. जवाब.)-क्या !-स्त्रीकी पैदाश पुरुषसें नही ?-अगरकहाजाय एकदूसरेकोमिलापसें दोनोंकी पैदाशहै-तो फिर सौचो ! क्याबात सिद्ध हुई ? और नींदा किसचीजका नामहै पहिले उसे सौचलिजिये ! महाशय ! सच्चबातकों सच्चकहना नींदा नही. नींदा उसकानामहै जूठाआरोप कियाजाय, पुरुषकेपुन्यसें स्त्रीका-पुन्य हीन-है, इसलिये उसकों छोटेदर्जेपर कहीगयी. अगरइसबातकों नींदासमझे-तो-अलगबातहै, -या-आपकों स्त्रीकापक्षपकडनाही मंजूरहैतो-उससें हमे कोइपरवाह नही. कइलोग कहतेहैं-महिनेमहिने-स्त्रीकों-जो-रितुधर्म आताहै वही उसकेसबपापकों दूरकरदेताहै. (जवाब.)-यहबात गलतहै, अगर इसीसें उसका पाप चलाजाताहो-तो-फिर-उसे धर्मकरनेकी क्या ! जरूरत रही ?-महिनेमहिने रितुधर्म आना उसके रुधिरदूरहोनेका-हेतुहै-पापदूरहोनेका हेतुनही. नास्तिकलोग काम क्रीडाहीकों उमदाचीज समझे-तो-मरजीकीबात है. लेकिन !-धर्मशास्त्रके फरमानेवाले बेंजा बातकों सच्च नहीकहसकते. कितनेक कहते हैं संभोगकेवख्त-पुरुष-स्त्रीसें-प्रियभासन-करता है पीछेसें नहीकरता. (जवाब.)-क्या ! स्त्री-पुरुषसें-प्रियभासन-नहीकरती !

अगरचे करती है-तो-फिर-पुरुषकेही शिर बौज क्यों?-क्या! पुरुष-और स्त्री-सदा एकसे रहनेवाले बहोतथोडे निकसेमें. महाशय! जितनी धीरज पुरुषमें होती है उसके हजारदर्जेकमभी-स्त्रीमें नहींहोती. पतिकेपीछे जलमरना कोइउमदाबात नहीं. वरन्! खोटीगतिजानेका कारनहै,

(१.३३)-कितनेक कहते हैं-स्त्रीकेलिये-पुरुष-कइतरहेके मंतर जंतर करता है इससे-स्त्री-कुच्छअच्छीचीज समजना चाहिये, (जवाब.)-जैसे मंतरजंतरके उपाव-पुरुष करताहै-स्त्रीभी-करती है, यहबात दोनोंकेलिये एकसरस्त्री है, चाहे-स्त्री-हो-या-पुरुषहो इसबातमें एकदूसरेको कमीबेंसी कहना नहीं बनसकता. कितनेक कहते हैं दूसरेकेदोष-बयानकरे-वो-दुर्जन-और-गुणवर्नन-करे-वो, सज्जन जानना.-(जवाब.)-यहबात शास्त्रकेहुकमसें बरखिलाफहै, हरेकवस्तुके गुण-और-दोष-यथार्थ बयानकरना-ज्ञानीजनोका-कामहै. दोषवर्ननकरनेका नाम-मूर्खलोगोंने नींदा कहरखाहै, लेकिन! नींदा उसका नाम नहीं. नींदा-वो-है-जो-जूटीबात कही जाय. अगर एकीलेगुणही बयानकियेजाय-और-दोष-न-वर्नन करे-तो-वो-यथार्थवक्ताही क्या?-खुशामदीहुवा, -कितनेकलोग अपनीलडकीका मॉललेकर स्यादीकरते हैं लेकिन!-जिसने मॉल-लिया उसने कन्यादान नहींदिया-बल्किन्! लडकीवेचनेका-एक धंदा-शुरुकिया जानना. कहिये! शास्त्रज्ञपुरुष इसबातको कैसे अच्छाकहसकते है, ?-आजकल मनुष्य धर्मपरदृष्टिरखनेवाले थोडेरहे-ये, बूढेहोकरभी-लोग-विवाहकराना चाहते है इधर लडकीका चाहताहै-बेटी-बडीहो-और-मुजे धन मिले. लेकिन!-अच्छे

लोग इसबातको पसंद नहीकरते,

(१३४)—जापानदेशमें गेहूआरंगकी-स्त्री-बहोतरूपवती समझी जाती है. असलमें ज्यादागौरापनभी अच्छानहीहोता. ज्यादागौरीचांम कोढीमनुष्यों होती है-तो-वै-बुरेही-कहेजाते है. भारतकेमध्यखंडकी-स्त्रियों-अपनदांतोंको-मसाला-लगाकर-काले-करलेती है, और चीनदेशकी-स्त्रियों-हरें-और-पोलेंरंगोंसे रंगाकरती है. इसीसे कहा जाताहैकि-शींगार-और-पोंशाकमें-अपने अपने दिलकी रुचिहो प्रधानहै. रसोइबनाना-कुबेसें जललाना-और-शय्या बिछाना-बगेराघरकाकाम-स्त्रीके-तालुकहै, जो-लोग-स्त्रीको-इतनी महेनत-सेंरहित करदेते हैं उनकीस्त्रीये अभिमानके शिखरपर चढ़कर स्वा मीको यत्किंचित् गिननेलगजाती है, जोलोग दौलतमंदहोते हैं उन-केघर नौकरचाकरोंकी कमी अलबते! नहीहोती, लेकिन! तोभी उनको इतना जरूरचाहियेकि-अपनेखानेकी रसोंइ अपनीस्त्रीसेंही बनवावे, याते उसकेलिये एक-उद्योग-बनारहे, बिल्कुलबिठायेर-खनेसें दोनोंकेलिये बिगाडकीसुरतहै.

(१३५)—विषयसमुद्र अगाधहै, धीरपुरुषभी इसमेंपडकर का-यरहोगये, देवता देवांगना, नरनारी, सिंहसिंहनी, हाथीहथनी, शुकसारिका, हंसहंसनी, -और-चीडाचीडीतक-इसकेरंगमें गाफल होचूकेहै, जिनोंने कामविकार ज्यादा सेवन कियाहै उनको पि-छलीउमरमें बडीतकलीफउठानी होगी. आंखोंका तेज कमहोजाना कानोंसें बहेरेहोना-और-दम चढना-बगेरा इसीकेबुरे नतीजे है. जो-पुरुष-या-स्त्री-कामविकारसें बचनाचाहतेहो-मुनासिबहै एक मकानमें-इकठे-न-रहे, एक शय्यामें-न-सोवे, कामविकार पैदाहो

वैसे शब्दों से-पेम की बातें-न-करे, विकार की दृष्टि से-न-देखे, माजू-मवगेरा-न-सँकी चीज-न-खावे, और-जहाँ तक बने चित्तकों डामा-डोल-न-होने दे, तपकरना-जंगलवासी बनना-और-हजारों आदमीओं के सामने बहादूरी से लड़ाइलडना-मुश्किल नही, लेकिन!-युवानो में कामविकारकों जितना मुश्किल है, रूपवती स्त्री-पुरुषका-और-रूपवान् पुरुष-स्त्रीकों-मोहपैदा होने के हेतु है। तथापि जिनको मोह-नही-आता-तारीफ उनकी है।

(१३६)-पहिले काल में जैसे सुखी-गृहस्थ-होते थे अब नही रहे, लेकिन!-तो भी-नास्ति-नही कह सकते, कइसे सुखी भी है-जो-वर्त्तमान में-होने चाहिये। दौलत इतनी है-जो-स्नानपान से खुटेनही। नोकरचाकर-गँहने कपड़े-मेवामीठाइ-और-इतरफुलेल-सब है, शरीर तंदुरस्त-और-शींगार-जैसा करना-चाहे कर सकते है, किन! जिनका स्वभाव कंजूस है उनकी लीला-तीन लोग से-निराली है। दौलत पाकर जिनो ने धर्म में-और-शरीर के आराम में-खर्च-नही किया उनको पूछना चाहिये तुमको दौलत पाने का क्या फल हुवा?

(१३७) —[ अनुष्टुप् वृत्तम्. ]—

सुगंधो वनिता वस्त्रं-गीतं तांबूलभोजनं,

मंदिरं वाहनं चैव-अष्टौ भोगाः प्रकीर्त्तिताः १,

(अर्थः)-सुगंधिचीज-स्त्री-कपड़े-गीतगान-तांबूल-भोजन-मकान-और-सवारी-ये-आठ चीजें भोगविलासके अंग है, जैसे स्त्री-केलिये सोलह शींगार शास्त्रों में बयान किये है-वैसे-पुरुषों के भी-वर्णित है, लेकिन!-चतराइ-और-उदारता-दोनोंही शींगार सबसे बड़े समझे गये है। यूँ तो येभी शींगारही है-जैसे-स्नानकरना इतरफु-

लेल लगाना-केशोंको सवारकररखना-अच्छेकपड़े पहनना-हाथमें अमुठा रखना. सदा हिंमत्तबहादूर रहना-हाथका सस्तीहोना-बचनदेकर बदलनानही-सबशोलना-और-देशाटनमें होशियारहोना-बगेरा औरभीकइहै लेकिन! चतराई-और-उदारतामें सभी अंतर्गतहोजाते है. स्त्रीकेलिये-स्नानमज्जन-अच्छेकपड़े-कढ़ें-कंठी-बाजुबंद-कंकण-पांवोंमें नैवर-आंखोंमें लाजशर्म-और-चतराई-ये-सब-शींगारहीके भेदहै.

(१३८)-स्थानांगसूत्रके पांचमें स्थानमें-कामसेवन-पांचतरहमें होना फरमाया. (१) पुरुष-या-स्त्री-मनमें-कामभोगकी चाहना करे इसकानाम-मनःपरिचारणा-बयान किया, (२)-काम विकार जागे वैशेषब्दोंसे वार्तालापकरना इसकानाम-शब्द परिचारणा-कहा, (३)-परस्पर रागजागे वैसी दृष्टिसे देखना इसकानाम-रूपपरिचारणा-(४)-आलिंगन बगेरा केवलस्पर्शमात्रसे कामसेवना इसकानाम-स्पर्शपरिचारणा-और-(५)-एकशय्यामें संपूर्णअंगसे अंगामिलाकर-कामभोगकरना-इसकानाम-कायपरिचारणा-फरमाया. संभोगकियेबाद तुर्च जलपीना मनाहै, सबबकि-उसवस्तु-वीर्यनाडी-खालीहोजाती है उसमें जलगिरनेसे रोगपैदा होगा. शरबत-कहुआ-कसायला-और-खट्टाखाराभोजन जीमना भी उसवस्तु ठीकनहीं. तुर्च ठंडीहवामें चलेजानेसेभी रोगपैदाहोताहै मुनासिबहै कुच्छकाल ठहरकर जावे. उश्ररुतुमें कामभोग थोडासेवनकरना चाहिये, रुतुकास्वभाव गर्महानेसे शरीरमें कइतरहकेरोग पैदाहोजाते है.

(१३९)-संभोगकियेबाद गर्भमे लडका-या-लडकी-जोकुच्छ

होनाहो तुर्त आजाताहै, जोलोग-महिने दोमहिनेबाद जीव उत्पन्नहोना बतलाते है झूठे है, गर्भरहेबाद जिसस्त्रीकों अच्छेस्वप्न दिखाइदे-समजना चाहीए पुन्यात्माजीव गर्भमेंआयाहै सुरेस्वप्न दिखाइदे-जानना-बुराजीव गर्भमें आयाहै. गर्भवतीस्त्रीकों-सताना ठीकनही. ऐमेभी-जोस्त्री-अपनेकहनेमुजब चलतोहो-अपनेकों देखकर खुशहोतीहो-उससे नागजरहना मुनासिबनही. प्रसूतक्रियासें बिना तकलीफ पारहोना स्त्रीकेलिये-एक-दूसराजन्महै. इस अवस्थामें उसका गौररखना जरूरत है.

(१४०)-गर्भवतीस्त्रीकों बहोतमार्ग चलना-रातकों जागना-बातपित्तकों बढ़ानेवाली चीजखाना-दोमहिनेहुवेबाद मैथुनसेवना-और-जुल्लाबलेना किसीसुरत अच्छानही, गर्भवतीकों सातमहिनेहुवेबाद स्तनमें दूध पैदाहोनेलगताहै, आठनवमहिने होजाय-तो-भोजनदेखकरअरुचि आवे, भोजन जिमतेजिमते उल्टीहोजाय, वगेरा कइतरहकी बेंचैनी पैदाहोती है. हंसीकीजगह चूपहोजाना मौनकीवख्त हंसउठना-अकेलीरहनेकी मनसाहोना-और-मानसिकविकारसें कइतरहकी तकलीफरहना-एक-स्वभाविकनियमहै, इनबातोंसें-गभराना नहीचाहिये. किसीकिसीस्त्रीकों बालकजन्मनेमें पहिले शरीरमें मूँजन आजाती है, इसवख्त असलपुछोंतों स्त्रीकेलिये मौतकीनिशानी है, जिसके बड़े भाग्यहो गर्भप्रसूतहोतेसमय सुखचैन रहे. जिमस्त्रीके दहिनेस्तनमें दूध पहिले निकसे-चलतेसमय दहिनापांव पहिले उठावे-जिसके-पेटका दहिना पासा उचाहो-और-दहिनेपासेकी रोंमपंक्ति उठीहुइहो-जानना-चाहि इसके लडका पैदाहोगा, जिसस्त्रीमे-इससें उल्टेलक्षण पायेजाय-जानना इसकेलडकी पैदाहोगी.

(१४१)-स्त्रीकीनाभिके नीचे-दोनाडी-कमलफूलकीतरहबनी हुई अधोमुखकमलाकार है, गर्भका ठहरना इसीमेंहोताहै, इसके नीचे-जैसे आंमकीमांजरहो-एक-मांसमांजरहै. और उसमांजरके नीचे योनिहै, महिनेमहिने जो-स्त्रीकों-रुतुधर्म-आताहै इसीमांजर-सें लोही गिरकर योनिकेरस्ते बहार आताहै, रुतुस्नानकियेबाद चौथेदिनमें लगा बारहदिनतक गर्भठहरनेका काल पहिले लिख चुके है. कायपरिचारणामें कामभोग सेवेबाद-उस-वीर्यश्रोणितमें कच्चीचोइसघड़ी (नवघंटे और छत्तीसमिनिट) तक-गर्भठहरनेकी ताकत रहसक्ती है, बादनही. सबबकि-फिरजब दूसरीदफे संभोगकियाजायगा तब होगी. इसीमानवधर्मसंहिताकी (१३९) मी-कलममें जो-लिखआये हैकि-संभोगकियेबाद-जीव-उत्पन्नहोनेवालाहो-तो-तुर्त्त-होजाताहै इसका मतलब यहहैकि-महिनेदोमहिने-बाद नही किंतु चौइसघड़ीके भीतरभीतर उत्पन्नहोजाताहै, गर्भमें जीव आतेही-पिताके वीर्य-और माताकेरुधिरका आहार लेकर-अपना शूक्ष्मशरीर-जो-अगलेभवमें साथलायाहै जिसकेशायमें त-रहतरहकीकर्मप्रकृतिभी-है-उसको गर्भाशयमें डालकर उसकेजरीये स्थूलशरीरकी रचना शुरूकरताहै, जीव-एकगतिसें मरकर जब दूसरीगतिमें जाताहै तैजस-कर्मणरूप-शूक्ष्मशरीर-उसकेशाय रहता है. पुन्य-पाप-वगेरा कर्मभी उससूक्ष्मशरीरके साथ लगेरहते है. बस!-इसीतरह जबतक-संसारमें-जीव-भ्रमणकरताहै तबतक उसके उक्तशूक्ष्मशरीरका अभावनही होसकता. जबमुक्तहोकर शरीरहितहोगा जन्ममरण-शरीरवगेरा-न-करनेपडेगें. जिसके राग द्वेषमोहवगेरा उपाधि कमहोतीजाय उसकेपूर्वसंचितकर्म जल्दी झूट



सकते हैं, दुनियाकेपदार्थोंका-और-आत्मतत्त्वका-सच्चाज्ञान होनेसे सगदेषमोहवगेरा उपाधि कमपड़तीजायगी, किसीचीजकी-ममता न-रखकर-तपकियाजाय-तो-सबतरहकेकर्मोंकी उपाधि छूटसकेगी और-जीवकी मुक्ति होमकेगी जबतक कर्मउपाधिमें लिप्तहै तबतक जीव-संसार-यानी-दुनियादार है कर्मउपाधिसँ रहितहोजाय-तब वहीजीव-मुक्तहुवा-कहलाताहै। जीव-शरीरके संयोगवियोगकी अपेक्षा-अनित्य-और-आत्मधर्मकीअपेक्षा-नित्यहै। जैसे-दीयाका चाँदना छोटेमकानमें संकोच-और-बड़ेमकानमें-विस्तारमें फैलताहै वैसे आत्मा-पूर्वकृतकर्मनुसार छोटेबड़ेशरीरमें विकासमानहोता है, जब आयुष्यकर्मकी पूर्णताहोनेपर दूसरेजन्मका आयुष्य उपार्जनकरके इसशरीरको छोड़ताहै लोग कहते हैं-मरगया, जीव असलपूछोतो मरतानही है यानी उसका नाशनही होता। हाँ! स्थूल शरीरका नाश जरूरहोताहै।

(१४२)-गर्भठहरेबाद सातदिनमें उसवीर्यश्रोणितका गर्भाशयमें कुछ गाढ़ापन बनताहै, बाद सातदिनकेपीछे उसका और ज्यादातर कठिनपींड बंधकर आंमकीगुठलीकीतरह बनताहै, बाद सातदिनकेपीछे उसपींडकी कठिनमांसग्रंथी बनकर महिनेभरमें-बढ़-स्नेहहताले-वजनदार होजाती है, दूसरेमहिने कुछज्यादे कठिनहोकर तीसरेमहिने-दूसरेलोगोंकोभो-गर्भकाआकार मालूमदे-नेलगताहै, पांचवेमहिने हाथपांव-और-मुख-तयार होते हैं, छठेमहिने पित्त-और-लोहीबननेकीशुरुआतहोती है, सातवेमहिने छोटी नसें-और-आठवेमहिने पूरेपूराशरीर तयारहोजाताहै, नवमेंमहिने हाड-केश-और-नखवगेराबनते हैं। माता-जोकुछ खातीपीती है

उसका-रस-पहुचकर गर्भकों ताकतमिलतीरहतीं है. अंधेरकोठरीमें पड़ेहुवे आदमीकी तरह अकसर उसकों तकलीफही उठानीपडती है, गर्भकों गिरादेना बडाहीपापहै, कइस्त्रीयें-और-वैद्यलोग-इस-कामकों करते है और अपनेआपकों नरककुंडमें डालते है. गर्भमें जीव-रोमकेजरीये खानपानकरताहै. जैसेहमतुम खाते है-वैसे-नही करता. तीसरेमहिने गर्भवतीकों-दोहद-उत्पन्नहोनेलगते है, अर्थात् कइतरहके इरादे पैदाहोते है, पुन्यात्माजीव गर्भमेंआयाहो अच्छे इरादे होगे. पापीजीव आयाहो बुरेइरादे होगे, कितनेक कहते है ईश्वरने घुतलाबनाकर औरतकेपेटमें डाला और नवमहिनेबाद वह जन्मा-(जवाब,) यहबात जूठहै, सबबकि-सबजीवोंका शरीरबने-राबनाव उसके पूरव जवके कियेहुवेकर्मके जरीयेसे बनते है. ऐसा न-होताहोतो-एक-दौलतमंद-और-एक-गरीब क्यों!-एकराजा-एकरंक क्यों?-एकखूबसूरत-एकज्ञानी एकमूर्ख क्यों?-क्या ईश्वरका उन्होंने कुछ बिगाड-सुधार-कियाथा?-अगरचे नहीकिया था तो विचित्रबनाव क्यों?-अगरकहोगे जैसेजैसे जीवके कर्मये-वैसे-रूप-रंग-आकार-सुख-दुख-हुकमहोदा-ज्ञान-और-अज्ञान-उसकों प्राप्तहुवे-तो-बतलाइये? फिर उस ईश्वरने क्या! किया?-असलपुछोतो-काल-स्वभाव-कर्म-और-उद्यम-इनकेसमागमसे सब बनावबनते है, जिनमेंभी, पूरवकृतकर्म-सबसे-ज्यादेताकतबरहै, पूरवभवके कियेहुवेकर्मानुसार जैसा कर्मका संचा-जीव-शाथलेता आयाथा उसकेजरीये माताकेपेटमें अपना रूप बनाया, जैसे खां-डकोखेलौने संचेकेजरीये बनायेजाते है जीवभी अपनाशरीर पूरव संचितकर्मरूपसंचेद्वारा बनाताहै. ईश्वरकर्त्ता माननेवालोंको यहकथ

नापसंदहुइ-और-निर्दूषण परमात्मा रागीद्वेषी बनकर कुंभारकी तरह हमारातुमाराशरीर दिनरातबनाता रहे यह पसंद हुवा.

(१४३)-जगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामाननेवाले-नवीनवेदांती-नैयायिक-वैशेषिक-पातंजल-नवीनसांख्य-इशाइ-और-मुसल्मान है, जैन-बौध-प्राचीनसांख्य-वगेरा-जगतकाकर्त्ता इश्वर है, ऐसा नहीं मानते. अगरजगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामानाजाय-तो-पहिले यहस्वाल पैदाहोगाकि-इश्वर-देहधारी है-या-देहरहितहै?-अगर कहोगे देहधारी है-तो-उसके पुन्यपाप होनेचाहिये. बिदून पुन्य-पाप-शरीर-नहीबनसकता. अगरकहाजाय-देहरहितहै-तो-बिना हाथपांव किसीसें कोईचीजकी रचना नहीहोसक्ती. अगरकहाजाय इश्वरने लीलामें आनकर दुनियाबनाइहै-तां-वह-रागवानहै, इश्वर नहीकहाजायगा. सबबकि-रागद्वेषहोना इश्वरकेलिये दूषणहै. अगरकहाजाय कृपाकरके रचनाकियीहै तो एककोमुखी और एकको दुःखी क्यों बनाये? अगर कहाजाय मुखदुःख-काहोना जीवोंके कर्माधीनकीवातहै-तो फिर-बतलाना चाहिये उस इश्वरने क्याबनाया?-इतनेपरभी कोईइश्वरवादी हठवादकरे उसको यह सवाल पुछनाचाहियेकि-जब उसने जीवोंको बनाये तब-बतलाओ!-निर्मल-बनायेथे-या-मलीन?-अगरकहोगे सब-कों निर्मल बनायेथे-तो-बतलाना चाहिये फिरकौनकों निर्मलहो-नेकेलिये धर्मशास्त्र रचेगये?-अगरकहोगे मलीन बनायेथे-तो-बिनाही पापकिये उनकों पापरूपमलीनता क्यों लगादिइगइ?-ऐसे अन्यायीकों इश्वरकहनाभी नहीबनसकता. कितनेककहते है इश्वर अपनीइच्छासें सबजीवोंको मुखदुःखफल देताहै. (जवाब.)-वो इ-

छछा-इश्वरसें भिन्नहै-या-अभिन्नहै ?-अगर भिन्नहै-तो-वह-इश्वरका कुछ नहीकरसकती. अगर अभिन्नहै-तो-उसका घडीमेंउत्पन्नहोना-और-घडीमें नाशहोना-नित्यइश्वरमें नहीहोसकता.

(१४४)-अगर इश्वरवादीयोंकी खातिरसें जगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामाने-तो-उपादानकारण कौन रहा ?-अगर इश्वरकीशक्तिकों उपादानकारण माने-तो-सवाल पैदाहोताहै-बो-शक्ति-इश्वरसें भिन्नहै-या-अभिन्न ?-अगर अभिन्नहै-तो-बतलाना होगा बो-जडहै-या-चेतन ?-अगर जडहै तो-कहिये !-नित्यहै-या-अनित्य ?-अगर भिन्न-और-नित्यहै-तो-यह जो कहनाहोताहैकि-सबसें पहिले-एक-इश्वरही-नित्यपदार्थ था-यह झूठ हुवा, अगरकहोगे-बो-शक्ति-अनित्यहै-तो-उसका उपादानकारण कौन, ?-और-यह नियमहैकि-नित्यसें अनित्यकी पैदाश नहीहोती. अगर-बो-शक्ति इश्वरसें अभिन्नहै-तो-फिरसबवस्तुकों इश्वरहीकहानाचाहिये. उंच नींच-राजारंक-नरकस्वर्ग-धर्मअधर्म-सबइश्वरही बना. फिर इश्वरने जगत-क्या !-रचा-बल्किन् ! अपनास्वरूपही बिगाडलिधा, ठीकहै महाशय ! आपका इश्वर ऐसाही होनाचाहिये, जो अवतार बनकर सुंदर स्त्रीयोंसें भोगकरे. चौरबनकर चौरीकरे-दूसरेसें-सगाइकिइहुइस्त्रीकों भगाकर लेजावे-दूसरोंकों दिलासादेकर ठगाइ करे-बाजा बजावे-नाचेखैले-और-फिर-निर्मलज्योति स्वरूपबन जावे, धन्यहै !-ऐसे इश्वरकों !-अपनीस्त्रीकों-कोइ हरणकरजावे-तो उसकेपीछें रोताफिरे एकभाइबनाकर उसकों जब लडाइमें-घाव लगे-बहोतरोवे, उसकों आरामहोनेकेलिये जडीबूटी मंगावे-जो-इश्वर-बैलपर चढे-एकस्त्रीकों अपने अर्द्धांगमें रखे-किसीके आगे

नंगाहोकर नाचे किसीकों वर और किसीकों सराप देवे. तथा जो-अप्सराकारूपदेखनेके लिये चारमुखबनावे-और-अपनीबैठोसे भोगकरे धन्यहै जो ऐसे अन्यायीकों जगतकेकर्त्ता-हर्त्ता-तथा-इ-श्वर-मानते हैं, कइलोग कहते हैं इश्वरने जलमें अपनावीर्य छोडा उसका-अंडा-बना-फिर उसअंडेके-दोहिस्से-बनकर-एककानाम पृथ्वी और एककानाम स्वर्ग कहलाया, कितनेककहते हैं इश्वरही जगतमें घुसकर सबखैल खेलरहाहै.

(१४५)-कितनेकहते हैं-मनुष्योंकों अपनेउद्धारका कोइरस्ता नहीं मिलताव वें रौने लगे तब करुणानिधान विश्वपिताने उसकों सुनकर एक-वैदज्ञारिषिके हृदयमें प्रकटहुवे, ऐश्वरीयशक्तिसें बलवान्होकर महर्षि खडेहुवे और संसारकों कहनेलगे हे ! विश्वपुरवासीलोग !-सुनो ! मैने उसभनादिपुरातनपुरुषकों जानाहै, आदि-त्पकीतरह उसका वर्ण है. अज्ञानीलोग उसकों स्पर्शनही करसक-ते. उसकों जाननेसें तुमलोग मृत्युकेहाथसे छूटोगे. इसकोशिवाय दूसरामार्ग नहीं है. धन्यहै ! क्या ! कहना यहभी खूबढंगहुवाकि इश्वर रिषियोंकेशरीरमें घुसकर बोले-सत्यबातवही ठहरसक्तो है कि-जीव और-जड अनादिसें मिलेहुवे इनकों किसीने बनायानही. अगरबनायाकहे-तो--उसका मसाला (यानी) उपादानकारणरूपप-दार्थ कौन था जिससे वें बनाये गये ? अगरकहोगे मसाला पहिले बनाहुवा अनादिसें था-तो महाशय ! फिर इश्वरने क्या बनाया ? यौगिक-या-मिश्र पदार्थोंके सूक्ष्मअणु दो-तीन-हजार-लाख-करोड-संख्यात असंख्यात या अनंतपरमाणुओंके बने स्कंध कभी अल-गअलगभी होजाते हैं, लेकिन ! मूलपरमाणुओंका विश्लेष नहीं

होता. (यानी)-एकपरमाणुके दोहिस्से नहीहोते, इससे-सिद्ध हुवाकि-मिश्रपदार्थ विनाशशीलहै, असलीपदार्थ-विनाशशील-नही, जीवअनादिअमरहै-एकदेहसे दूसरीदेहमें जानेका नाममृत्युहै, वर्तमानअवस्था पूरवकृतकर्मके अनुसार-और-आगामीअवस्था-वर्तमानमें-जो-कियेजाते है-कर्म-उसके अनुसारहै. यह आत्मा जब तक-सबतरहके-कर्मोंसेरहित-न-होगा-जन्ममरणकेचक्रमें-घूमतारहेगा. शक्तिमान् होतेहुवेभी-मदिरापीये हुवे मनुष्यकीतरह निर्बल हो रहाहै.

(१४६)-कितनेककहते है-इश्वर-वायुचलाताहै-बरसात बरसाताहै-जीवोंको-जन्म देताहै-मारताहै-और-जोकुच्छकरताहै उसीकी रचनाहै.- (जवाब.)-क्या !-इश्वरको ऐसे करनेसे कुच्छफायदाहै-जो-इसतरहकी महनतको उठाताहै ?-अगर कहोगे-हां !-उसेफायदा है-तो-बतलाइये-क्या ! अबतक-उसके असलीस्वरूपमें कुच्छकमी रहगइहै-जो-इसफायदेसे पूरीकरना चाहताहै ?-अगर कहोगे बिनाफायदे ऐसा करताहै-तो-सोचो !-उसकेबराबर अज्ञानी कौन रहा-जो-फायदे बिदून तकलीफ उठावे. पुरुषविना-स्त्री-नही, स्त्रीविना-पुरुष-नही, बीजविना वृक्षनही, वृक्षविना बीजनही-हवा-पानी-जमीन-और-आकाश-इनकेविना-मनुष्योंकी-और-वृक्षोंकी स्थिति-होनामुश्किलहै, जड़-और-चैतन-इनदोपदार्थोंमें सबपदार्थ-अंतर्गत-होसकते है, हरपदार्थमें अपनाअपनागुण रहाहुवाहै, मिट्टीमें यहगुणरहाहै कि-चो-अग्निमेंपडकर कठोर-और लालरंगहोजाती है. लेकिन ! कागजको अग्निमेंजलाकर कोइ कठोर-नहीकरसकता, इसीतरह लकड़ीमें यह गुणहैकि-उसपर

दूसरी लकड़ीधरकर मेंख ठोंकदिइजाय-तो-दोनों जुड़जायगी, किंतु धूलपर धूलरखकर मेंख लगानेसें-जुड़ नहीसकती. इसीतरह संसारकेसंपूर्ण पदार्थोंकी परीक्षाकरनेसें सिद्धहोताहैकि-इनवस्तु-ओंमेंही जुदेजुदेस्वाभाविकगुण रहेहै, जिनके मिलनेविच्छेदनेसें अनेकनवीनभाव उत्पन्नहोते हैं, जैसे श्याम-और-पीतरंग मिलकर हरितभाव पैदाहोताहै, घासका बीज-जमीनमें-कौन-डालनेजाता है?-जैमे-वह-बरसातकायोगपाकर खुद पैदाहोताहै इसीतरह संसारमें पदार्थोंका अलट पलट प्रवर्तन होकर कइतरहके नवीनभाव उत्पन्न-और-नाशहोतेरहते हैं, बस!-इसीकानाम-थोड़ी बुद्धिवालोंने ईश्वरकीरचना समझ रखाहै. कइलोग कहदेतेहैकि-ईश्वरकों जगतरचनाकी क्यों इच्छाहुइ?-तथा-बैठेबैठाये किसीकीनिंदास्तु-तिका क्यों पात्र बना?-इसका भेद कौन बतासकताहै,-(जवाब.)-महाशय!-जब इतनाभी नहीबतासकते-तो-मालूमहोताहै तुमकों ईश्वरका कुच्छपक्षपातहै. न्यायप्रियहोतेतो-झूठबातको पकड़-न-बैठते. अगरकहाजायकि-निराकारहोकरभी-जगतरचनाकरनेकी उसमें ताकत-न-हो-तो-वह-सर्वशक्तिमान् कैसे ठहरे?-(जवाब.) सर्वशक्तिमान्-उसकानाम-नही-जो-अपना स्वरूपबिगाडकर-कोइ काम-करे, जगतरचनाकरनेसें उसकों रागीद्वेषीबननेका दोष आताहै, कितनेक कहते हैं जगतकों ईश्वरने नही बनाया-तो-क्या! आपहीआपबनगया?-(जवाब.)-हां-जैसे-तुमारा-ईश्वर-आपही आपबनाहुवा अनादिसिद्धहै-वैसे-जड़-चेतनपदार्थभी आपहीआपबने हुवे अनादिसिद्धहै, जीव-जैसेजैसे कामकरते हैं तदनुसार उनकों फलप्राप्त होते रहते हैं ईश्वरकों इसमेंफसनेकी कोइजरुरतन-

ही. कोई ऐसा न्यायीशस्त्र दुनियामें नहीं-जो-रागद्वेषरहित-इ-  
श्वरकों जगतका बनानेवाला सबूतकर सके, जोलोग पक्षपातरूप  
गुद्दी औढकर बैठे है युक्तिप्रमाणकों कुञ्चचीज नहीं समझते-वे  
अगर अपनी वक्तृतासें सबूतकरदेवे-तो-उसकों बुद्धिमान्लोग  
मान्य नहीं करसकते. इतना कहनाबनसकताहैकि-कारणरूप दु-  
निया-(यानी)-जड-चैतनपदार्थ-अनादिमें है-और-कार्यरूप दु-  
निया-(यानी)-तरहतरहकीचीजें जो बनीहुइ नजरआरही है उ-  
नके बनानेवाले सबसंसारजीवहै. इश्वर इनका कर्त्ताहर्त्ता नहीं.

[ अनुष्टुप् ]

स्वयं कर्म करोत्यात्मा-स्वयं तत्फलमश्नुते,

स्वयं भ्रमति संसारे-स्वयमेव विनश्यति, १

कर्त्ता कर्मभेदानां-भोक्ता कर्मफलस्य च

संमर्त्ता परिनिर्वाता-सह्यात्मा नान्यलक्षणः

(अर्थः)-आत्मा अज्ञानकेउदयसें बुरे-और-ज्ञानकेउदयसें  
अच्छेकर्म आपही करताहै. आपही संसारमें भ्रमणकरताहै और  
उमरपुरीहोनेपर आपही एकगतिसें दूसरीकों जाता है, जिसकों  
जाहिरातमें लोग कहते है मरगया. जब सबबातसें निस्पृहहोकर  
धर्मसाधनकरेगा जन्ममरणसें छूटकर सबकर्मोंसें मुक्तहोजायगा.  
और संसारमें न-रुलेगा.

(१४७)-निदान ! माताके-पैटमें-जीव-जब दूसरीगतिसें आ-  
ताहै-पूर्वभवके पुन्यपापानुसार भला-या-बुरा-शरीर बनाता है.  
शरीरपूर्णहोनेपर जन्मपाताहै. आयुष्य थोडाहोगा तुर्त्त मरजाय-  
गा-ज्यादेहोगा बहोतअसेतक-जीयेगा. अच्छेभाग्य होंगे-सुखी-



बुरहोगे-दुखी-होगा-यह सीधीसडकहै, इसको छोडकर चलेगा खता खायगा. इश्वरवादीयोंकी-चीं-पीं-इसलिखाणसें बंदहोसक-तो है, उनकी खौपडी ठंडीहोकर कंधेसें कुतर्करूपीभूत नीचे उतर सकताहै, व्यर्थबकवादमें बचनाचाहै तो बचभी सकतेहै, लेकिन! अपशोष इतनाही हैकि-हठवादीयोंका मन निर्बल होनेमेंभी-वें-मुखमें कब-हां!-करसकेगें?-खैर!-तोभी-इतनाफायदा जरूरहो-गाकि-जामेमें बहारहोकर-जो-पगज माराकरते है स्यात् नहीमा-रेगें. इश्वरलीलाकी-तान-नही उडावेगें, जिनका मस्तक खराब होगया होगा इसलिखाणमें कुच्छ दवा मिलसकेगी, कइमहाशय फरमाते है जो जो चीजें इश्वरने बनाईहै उसका सबबयहहैकि-उ-नको देखकर लोग मुजपर विश्वासलावे, लेकिन ! यहवातभी ग-लतहै सोचोकि-उसको दुनियासें विश्वासहासिलकरानेकी क्या ! जरूरत थी!-इतना विश्वासका लालची क्यों! बना?-दुनियाके विश्वास न लानेमे उमका क्या! बिगडता था?-अगरकहोगे-उस-का इसवातसें कुच्छ बिगाड था-तो-महाशय!-वो इश्वर नही हो-सकता. सबबकि-उसको परतंत्रताका दोष आताहै. इश्वर अपने स्वरूपमें स्वतंत्र होनाचाहिये.

(१४८)-[ गर्भाधानवगेरा सोलहसंस्कारोंका-बयान-]

संस्कारकरना एकधर्मरूपमर्यादाका किलाहै, इसकाविधान कइशास्त्रोंमें देखागया-आजकल कइलोगोंने भाषामेंलिखकर छप-वायाभी-लेकिन! लेखप्रणाली अच्छीनहोनेसें कइ लोग उसे स-मझभी-न-सेकें, संस्कृतसें भाषा किइ और उसभाषासेंभी-जब पुरेपुराफायदा-न-पहुंचा-तो-उसके बनानेसेंभी क्या लाभहुवा ?

निदान! भाषा ऐसी बनाना चाहिये जिससे हरकोई समझ सके. संस्कारकराना असलमें कुलगुरुका अधिकार है—जो—धर्मज्ञ—और—धर्मपर श्रद्धावान्—हो, धर्मभ्रष्ट—अनाचारी कुलगुरुसें कोई कार्य कराना मुनासिब नही, कुलगुरु गृहस्थ होता है, ऐसा धर्मज्ञ कुलगुरु—न—मीले—तो—जानकार श्रावक—ही—करादे कोई हर्जकी बात नही है, संस्कार गृहस्थ धर्मके सोलह होते हैं. (१)—गर्भाधान, (२)—पुंसवन, (३)—जन्म, (४)—सूर्यचंद्रदर्शन, (५)—क्षीराशन, (६)—षष्टिपूजन, (७)—शूचिकर्म, (८)—नामकरण, (९)—अन्नप्राशन, (१०)—कर्णवेध, (११)—केशवपन, (१२)—उपनयन, (१३)—विद्यारंभ, (१४)—विवाह, (१५)—व्रतारोप—और—(१६) अंतकर्म.

(१४९)—(१)—गर्भाधानसंस्कार गर्भठहरेबाद पांचवेमहिने कराया जाता है, गर्भस्थिति होनेकी मालूम चतरस्त्रीकों—तो—उसी वरुत होजाती है, लेकिन !—उसकानिश्चय जब एकमहिनेकी अस्त्रीमें रजस्वला—न—हो—पुरेपुरा होसकता है. दोतीनमहिनेबाद—नो—सभीकों—जाहिर होजाता है कि—इसे गर्भ—रहा. पांचवेमहिने—जिसरौज सोम—बुध—गुरु—या—शुक्रवार—हो,—दुज—तीज—पंचमी—सप्तमी—या—दशमी तिथी हो,—रोहिणी—हस्त—स्वाति—अनुराधा—श्रवण—शतभिषा—तीनों उत्तरा—या—रेवती—नक्षत्र हो,—उसरौज मेष—और—मकरलग्नकों छोडकर—दूसरे लग्नोंमें ग्रहशुद्धि देखकर गर्भाधानसंस्कार कराना चाहिये. अगर स्त्रीकों स्वरोदयज्ञानकी पहचान हो—तो—अच्छे रौज चंद्रस्वर चलते समय उक्त संस्कार कराया जाय निहायत उमदा है. जितने स्थिर और प्रभावशाली कार्य है चंद्रस्वरमें करने अच्छे होते हैं, गर्भाधानसंस्कार कराना हो उसरौज कुलगुरु—नहाधोकर अच्छे—

कपड़े पहनेंके केशरकातिलक लगाकर गृहस्थके घर आवे. गर्भव-  
तीस्त्री-और-उसकापति-साफजलसें-स्नानकर अच्छेकपड़े पहनेके  
जिनमंदिरमें जाय, उसवरुत अगर बाजेगाजे सहित-मंगलगान  
गाती हुई सोहागनस्त्रीयेंभी साथचले बहोतठीकहै. जिनमंदिरमें  
जाकर कुलगुरु-स्नात्रपूजनकरावे-और-जिनप्रतिमाका स्नात्रजल  
एक बर्तनमें लेकर सबलोग घरकों आवे. फिर गर्भवतीस्त्रीकों एक  
सोहागनस्त्री-केशरवगेरासुगंधीचीजका-विलेपनकरे, कुलगुरु-पतिके  
दुपट्टेकेशाथ-गर्भवतीके औढ़नेकी साडीसें ग्रंथीबंधनकरे. और इ-  
समंत्रको पढ़े-(ग्रंथीयोजन मंत्र)-ओं अर्ह-स्वस्ति संसारसंबंध-ब-  
द्धयोःपतिभार्ययोः-युवयोरवियोगस्तु-भववासांतमाशिषा, फिर ग-  
र्भवतीकों-और-पतिकों अलगअलग चोंकीपर पासपास बिठावे-  
आप उनकेसामने बैठकर-जिनप्रतिमाका स्नात्रजल-तथा-दूसराप  
वित्रजल जिसमें गुलाब या केवडेकापानीभी मिलायाहो लेकर कु-  
\*शाग्रसें गर्भवतीस्त्रीके शरीरपर थोडाथोडा सिंचन-करे. और  
नीचेलिखेहुवे मंत्रकों सातदफे पढ़े, [मंत्रः]-ओं अर्ह-जीवोसि जी-  
वतत्वं असि-पाणी असि-जन्मी असि-जन्मवानसि संसारादिसंसर  
न्नसि-कर्मवानसि-कर्मबद्धोसि-भवभांतोसि-भवविभ्रमिषुरसि-पूर्ण  
पिंडोसिजातोपांगोसि जायमानोपांगोसि स्थिरोभव नंदीमान् भव  
वृद्धिमान् भव पुष्टिमान् भव ध्यातजिनो भव ध्यातसम्यक्तो भव त-  
त्कुर्यात् न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवासं-गर्भवासं-प्राप्नोसि  
अर्ह ओं,-पढ़कर सातही दफे जलसिंचनकरतारहे. बाद ग्रंथीबंध-  
नकों छोड़कर ग्रंथीमोचनमंत्र पढ़े, [मंत्रः] ओं अर्ह ग्रंथौ वियोज-

मानेस्मिन्-स्नेहग्रंथिः स्थिरोस्तु वा शिथिलोस्तु भवग्रंथिः-कर्मग्रंथि  
दृढीकृतः-इतनाविधानहुवेवाद पहिले पति और पीछे स्त्री उठे, कु-  
लगुरुकों रुपया श्रीफल या मोहोर वगेरा शक्तिहो देवे, कुलगुरु  
इसमंगलकाव्यकों पढ़कर अपनेघरकों जाय [काव्यं]-ज्ञानत्रयं म-  
र्धगतोपि विदन् संसारपारैकनिबद्धचेताः-गर्भस्यपुष्टिं युवयोश्च तुष्टिं  
युगादिदेवः प्रकरोतु नित्यं, -इति०-सोहागनस्त्रीयें जो मंगलगीतगा-  
नेकों आइथी उनकों मेवामिठाइ बांटना और जिनमंदिरमें अंगी-  
रौशनीकराना मुनासिबहै.

(१५०)-(२) दूसरा पुंसवनसंस्कार गर्भवतीके आठवेमहिने  
करायाजाताहै. जिसरौज मृगशिरा पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-मूल-या-श्र-  
वणनक्षत्रहो, षष्टि-अष्टमी-द्वादशी-अमावास्या-रिक्ता-दग्धा-क्रूर-ब-  
ढीहुइ या दूटीहुइ तिथि न हो, किंतु दुज-तीज पंचमी-सप्तमी-द-  
शमी त्रयोदशी या पौर्णिमा तिथिहो, रवि भौम या बृहस्पतिवार  
हो उसदिन लग्नशुद्धिदेखकर पुंसवनसंस्कार कराना चाहिये. ल-  
ग्नशुद्धिमें-केंद्र-त्रिकोणस्थित-बृहस्पति-होना निहायतउमदा है.  
पापग्रह-केंद्र-त्रिकोण-अष्टम-और-द्वादशस्थानसें रहित-अन्यकि-  
सीस्थानमें बैठेहो-तो-बहोतठीकहै-बस !-इसतरहकीलग्नशुद्धिदेख-  
कर उक्तसंस्कार करायाजाय-बहोतअच्छाहै. जिसरौज पुंसवनसं-  
स्कारकराना मुकररकियाजाय उसरौज सवेरेही सोहागनस्त्रीयें  
गर्भवतीकेघर इकठीहोकर मंगलगीतगान करे, गर्भवतीकों चमेली-  
केतैलसें मालीसकरके अच्छेजलसें स्नानकरावे, और अच्छेमहने  
कपड़ें पहनाकर बाजेगाजेकेशाय जिनमंदिरकों दर्शनलिये लेजा-  
य, जिसगांवमें जिनमंदिर-न-हो-वहां-एक-अलगमकानमें-चांदी

या-पीतलका-बनाहुवा सिद्धचक्रयंत्र-काष्ठकीचौकीपर स्थापनकरके उसके सामने लेजाय. मंदिरमें-या-सिद्धचक्रयंत्रके सामने जाकर तीनपरकम्मादेकर गर्भवतीस्त्री नमस्कार करे, कुलगुरु-स्नात्रपूजन करावे, और जिनप्रतिमाका स्नात्रजल एक भाजनमें लेकर घर आवे, गर्भवतीके हाथमें एकश्रीफलदेकर एकचौकीपर बिठावे, और स्नात्रजल तथा दूसरा पवित्रजलकि-जिसमें गुलाबकेवड़ेका पानी मिलायाहो-लेकर-दूर्वासे गर्भवतीके शरीरपर थोडाथोडा छांटताजाय और इस मंत्रको पढतारहे. [मंत्र]-ओं अर्हन्मः-तीर्थ-करनामकर्मबंधसंप्राप्तमुरासुरेन्द्रपूजार्हते-आत्मन्-त्वं-आत्मायुःकर्मबंधप्राप्तमनुष्यजन्मगर्भावासमाप्तोसि-तद्-भव-जन्मजरामरणगर्भवासविच्छिन्नये-प्राप्तार्हदमो-अर्हबक्तः-सम्यक्तनिश्चलः-कुलभूषणः-मुखेन तव जन्म-अस्तु-भवतु त्वन्मातापित्रोः कुलस्याभ्युदयः-ततः शांतिः पुष्टिः तुष्टिः ऋद्धिः वृद्धिः कांतः सनातनी-अर्ह ओं-इसमंत्रको सातदफे पढे, फिर गर्भवतीस्त्री-चौकीपरसे उठकर-कुलगुरुको-रूपया-श्रीफल-मोहर-जोकुच्छेदेनाहो देवे. जिनमंदिरमें नैवेद्यका थाल भेजे, शक्तिहो-तो-उसरौज पंचकल्याणिककीपूजा अंगी-रौशनीवगेराधर्मके कामकरनेमें ध्यानदेवे, अपनीअपनी जातबिरादरीकी रसम सबलोग करतेही है लेकिन !-शाथशाथ धर्मकीबढवारीकेकामभी जरूरकरतेरहना चाहिये. गीतगाने आइहुइ स्त्रीयोंको मेंवामिठाइ बांटना-और-अपनेकुटुंबपरिवारको मिष्ठान्न-भोजनजिमना-गृहस्थोंके कर्तव्यकार्य है. जिनमहाश्रयोंको इस भोजनजिमनेका नियमहो-वे-न-जिमें.

(१५१)-(३)-तीसरा जन्मसंस्कार-जिसवख्त पुत्रकाजन्महो

अच्छे ज्योतिषीकों बुलाकर जन्मग्रहस्पष्ट कराना-और-उसकों-रु-  
पया-श्रीफल-मोहर-जो कुच्छमुनासिब समझाजाय देना गृहस्थध-  
र्मके उचितकार्य है. सूर्यवगेराग्रह-किसीका भलाबुरा नहींकरते.  
किंतु शुभाशुभके द्योतकहै. जैसेकिसीकार्यकों चले-और-सामनेही  
ढंकानिशन-मिला-तो-कहाजाताहै काम अच्छाहोगा, वैसेही ज-  
न्मके वरुत ग्रहोंकी अच्छीस्थितिदेखकर कहसकते हैकि-इसलडके  
के पुन्य अच्छे है. ज्योतिषी जन्मग्रहस्पष्टकरके उसकाफलादेश ब-  
र्ननकरे-और-आगेलिखेहुवेमंगलकारी वाक्य सुनावे, ओं अई-  
कुलं वो वर्द्धतां-संतु शतशःप्रपौत्राः-अक्षीणमस्त्वायुर्धनंयशः सुखं  
च-अई ओं-[काव्यं]-आदित्योरजनीपतिः क्षितिपतिः सौम्यस्तथा-  
वाक्यतिः-पृक्रः सूर्यमुतोविधुंतुद इतिश्रेष्ठाःग्रहाःपातुवः-अश्विन्पादि  
कमंडलं तदपरोमेषादिराशिक्रमः-कल्याणं प्रतनोतु वृद्धिमधिकं स-  
तानमप्यस्य च-१,-[दूसरा काव्य. ]-योमेरुगृंगेत्रिदशादिनाथै-दै-  
त्यादिनाथैस्सपरिछदैश्च-कुंभामृतैःमंस्नपितःसदेवः-आद्योविदध्या-  
त् कुलवर्द्धनं च,-[२]-इसतरह ज्योतिषीके मंगलवाक्य पूर्णहुवेबाद  
कुलगुरु-बालककोंस्नानकरानेकेलिये-नीचेलिखेहुवे मंत्रमें पानीकों  
मंत्रितकरके तयारकरे,-[मंत्रः]-ओं अई-नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्या-  
यसर्वसाधुभ्यः-[ काव्यं,]-क्षीरोदनीरैः किलजन्मकाले-यै मेरुगृंगे  
स्नपितो जिनेन्द्रः-स्नानोदकं तस्य भवत्व्विदं च-शिशोर्महामंगलपु-  
न्यवृद्धयै-१,-इसमंत्रकों (७) सातदफेपढकर जलकों अभिमंत्रित  
करे-और-सूतिकाकर्मकरनेवाली-कुलवृद्धा-इसजलकों लेकर सु-  
तिकाघरमें जाके पुत्रकों स्नानकरावे, और-नाल-छेदनकरे. प्रसू-  
तास्त्री-किंचित्उष्णजलसे स्नानकरे-इसहालतमें शरीर कमजोर

होजाताहै इसलिये मुनासिबहै सबतरहसावधान रहे, जन्माक्रियासे आरामकेसाथपारहोना-स्त्रीकेलिये-दूसराजन्महै. खानपानमें पौष्टिकपाकवगेरा-जोकुच्छ-वैद्यलोग सलाहदे खानाचाहिये, अशौचनिर्णयकेलिये-निशीथसूत्रके सोलहमे उद्देशमें-और-व्यवहारसूत्रकीभाष्यमें-जन्म-तथा-मृत्युकेघरकों-अशौचयुक्त-कहा. जिसके घर पुत्रजन्मे दसदिनतक अशौच-यानी-दसदिनतक उसघरमें भोजनजिम्मेनेवाले-मनुष्य-जिनेंद्रभगवानकी पूजा-नकरे, धर्मशास्त्र-नछुहे, और मुखसे स्तवनपाठवगेरा-न-बोले, अगरकोइशखश भोजन दूसरेकेघर जिम्मे-और-अलगरहे-तो-उसकों-अशौच-न-लगनेसे जिनपूजावगेरा करनेकी मनाद्वी नही. जिसकेघर लडकी जन्मे उसके वहां ग्यारहदिनका अशौच-सगेभाइके घर बालकजन्मे और पासपासरहनेसे कइतरहके खानपान वगेरामें-संयोगसंबंध-होतेहो-तो-मुनासिबहै सगेभाइकों पांचदिनतक अशौचमानना, अगर संयोगसंबंध-न-होताहो तो-अशौचनही, परदेशमें अपनी औरतकों बालकपैदाहो-तो-जिस दिनमुने उसीएकदिनका अशौच, जिसघरमें रहतेहो उसमें किसी दासदासीकों बालकपैदाहो तो-चौइसपहरका अशौच, गौ-भैंस-उंठणी-घोडी-या-बकरी-घरमें प्रसूतहो-तो-एकदिनका-अशौच मानना. निदान!-पुत्रजन्मका दसदिनतक अशौच कहा-इसलिये-जिनमंदिरमें पूजन-अंगी-या-रौशनीकरनेकों-नगदरूपये भेजने अच्छेहै, राजेलोग पुत्रजन्मकी खुशीमें-जितनाचाहे उत्सवकरसकते है. केदखानेसें केदीयोंकों छोडदेना-गरीबलोगोंकों भोजन जिमाना-और-कइतरहके राज्य कीय-महसूल-माफकरना-रैयतकेलिये-बडीखुशीकी बातहै. कुल-

गुरुकों दानदेकर खुशकरना-और-प्रभूतास्त्री-तथा-पुत्रकों-साक मकानमें-रखना बहोतठीकहै, याते उनकी तंदुरस्ति अच्छी बनी रहे.

(१.५२)-(४)-चोथा-सूर्यचंद्र दर्शनसंस्कार,-जन्मदिनसें दो-रौजबतीतहुवेवाद् तीसरेरौज कुलगुरु सूतिकाघरके नजदीक अलगमकानमें-जिनप्रतिमा-या-धातुमय सिद्धचक्रकायंत्र स्थापनकर अष्टद्रव्यसें पूजनकरे. पोछें एक दूसरीचौकीपर-सुर्जेकी-या-ताबें-कीबनी सूर्यकीमूर्ति स्थापनकरे-और-आगे-लिखाहुवामंत्र पढ़कर अष्टद्रव्यसें उसकी पूजाकरे.-[ मंत्रः ]-ओंनमः सूर्याय-सहस्रकिरणाय-जगत्कर्मसाक्षिणे-इहजन्ममहोत्सवे-सायुधः-सवाहनः-सपरिच्छदः-आगच्छआगच्छ-इदंअर्घ्यं-पाद्यं-वलिं-गृहाणगृहाण-सन्निहेतो भवभव स्वाहा जलं गृहाण-गंधं-पुष्पं-अक्षतान्-फलानि-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-मुद्रां-सर्वोपचारान् गृहाण-शान्तिकुरुकुरु-तुष्टिकुरुकुरु-ऋद्धिं-वृद्धिं-सर्वसमीहितंदेहिदेहि स्वाहा-इसमंत्रसें सूर्यमूर्ति-कीपूजाकरके-साक्षात्सूर्य-जो-आकाशमें उदय होरहाहै-पुत्रकों-मातासहित-उसका दर्शनकरावे. और-कुलगुरु-इससूर्य मंत्रकों-जो भगाडीलिखाहै पढ़े,-[ मंत्रः ]-ओं अहं-सूर्योसि-दिनकरोसि-तमोपहोसि-सहस्रकिरणोसि-जगच्चक्षुरसि-प्रसीद-अस्यकुलस्य-तुष्टिपुष्टिप्रमोदं-कुरुकुरु शान्तिहितो भव-अहं ओं,-और-इस भगाडीलिखे हुवे-छंदकों-पढ़कर-आशीर्वचन बोले, [ आर्या छंदः ]-सर्वसुरासुरबंधः-कारयिता पूर्वसर्वकार्याणां-भूयात्रिजगचक्षु-मंगलदस्ते स-पुत्रायाः-१,-फिर जिनप्रतिमाकी-तथा-सूर्यमूर्तिकी-स्थापना-जो किइथी विसर्जनकरे, अशौचके सबबसें-घरवाले उनकों छुवे नही.



फिर जब संध्यासम आवे-चंद्रदर्शनसंस्कारकेलिये-पुनः-उसीतरह जिनप्रतिमास्थापनकरके अष्टद्रव्यसें पूजनकरे. और-दूसरी चौकी-पर-चांदीकी-या-सफेदचंदनकी-बनीहुइचंद्रमूर्ति-स्थापके-अगाडी लिखाहुवा-मंत्रपढकर-अष्टद्रव्यसें उसकी पूजाकरे,-[ मंत्रः ]-ॐ नमश्चंद्राय-तारागणाधीनाय-मुधाकराय-इहजन्ममहोत्सवे-सायुधः-सवाहनः-सपरिच्छदः-आगच्छआगच्छ-इदंअर्घ्यं-पाद्यं-बलिं-गृहाणगृहाण-सन्निहितो भवभव स्वाहा-जलंगृहाण-गंधं-पुष्पं-अक्षतान् फलानि-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-मुद्रां-सर्वोपचारान् गृहाणं-शान्तिकुरुकुरु ऋद्धिंवृद्धिंसर्वसमीहितं देहिदेहिस्वाहा. इसमंत्रसें चंद्रमूर्तिकी पूजा करके साक्षात् चंद्र-जब उदयहोवै-पुत्रकों-मातासहित-उसकादर्शन करावे. और कुलगुरु इमचंद्रमंत्रकों जो-अगाडी लिखाहै पढे,-[ मंत्रः ]-ॐ अहं-चंद्रोसि-निशाकरोसि-नक्षत्रपतिरसि-मुधाकरोसि-औषधीगर्भोसि-प्रसीद-अस्य-कुलस्य-तुष्टिपुष्टिप्रमोदं-कुरुकुरु शान्तिहितो भव-अहं ॐ,-और इस अगाडीलिखेहुवे-काव्यकों-पढकर-आशीर्वचन बोले. [ काव्यं, ]-सर्वोपधीमिश्रमरीचिराजिः-सर्वापदांसंहरण प्रवीणः-करोतुवृद्धिं सकलेपि वंशे-युष्माकमिंदुः सततं प्रसन्नः-१,-फिर कुलगुरु जिनप्रतिमा तथा चंद्रमूर्तिकों विसर्जनकरे, घरवाले-रूपया-मोहरवगेरा-जो कुच्छ कुलगुरुकों देना हो-देवे. रूपये पैसेकों अशौच नहीहोता. आजकल-इस संस्कार कीजगह-लोग-आरीसाही-लडकेकों दिखलादेते है.

(१५३)-(५)-पांचवासीराशनसंस्कार-जिसरौज चंद्रार्कदर्शनसंस्कार करायाजाय-उसीरौज-या-उसके दूसरेदिन-बालकों स्तनपानकरानाचाहिये. जन्मकालमें तीनरौजतक प्रभूतास्त्रीकादूध

विकारवालारहताहै, इसलिये उनदिनोंमें औषधीद्वारा-या-गौके-  
दूधमें-बालकका रक्षणकरना ठीकहै, जोलोग जलदी करते हैं उ-  
नके बालककों-कइतरहके रोग पैदाहोते हैं. स्तनपानकरानेमें प-  
हिले कुलगुरु-इसमंत्रद्वारा-ओ-अमृते-अमृतोद्भवे-अमृतवर्षिणी-  
अमृतं श्रावयश्रावय-स्वाहा-(१०८)-दफे-पानीकों अभिमंत्रितक-  
रके प्रमूतास्त्रीकों-देवे, प्रमूतास्त्री-उसजलमें स्नानकरके-जिसत-  
र्फकास्वर-चलताहो उसतर्फका स्तन-लडकेकों-पहिले पिलावे.  
कुलगुरु उसवरुत एक चौकीपर सामनेवैठकर इसमंत्रकों पढे.-  
[ मंत्र: ]-ओं अहं-जीवोसि-आत्मासि-गुरवोसि-शब्दज्ञोसि-गंधज्ञो  
सि-रसज्ञोसि-स्पर्शज्ञोसि-सदाहारोसि-कृताहारोसि-अभ्यस्ताहा-  
रोसि-कावलिकाहारोसि-लोमाहारोसि-औदारिकशरीरोसि-अने  
नाहारेण-तवांगं वर्द्धतां-बलंवर्द्धतां-तेजोवर्द्धतां-पाटवं वर्द्धतां-सौ-  
ष्ट्रवर्द्धतां-पूर्णयुर्भव-अहं ओं.-तीनदफे इसमंत्रकों पढे, बस! इ-  
तनाहीविधान इससंस्कारमेंकियाजाताहै, कुलगुरुकों रुपया-मोहर  
जोकुच्छदेनाहो-देवे.

(१५४)-(६)-पष्टिपूजनसंस्कार-जन्मसेछठेरौज करायाजाता  
है. उसरौज श्यामकेवरुत-न्यातगोतकी-स्त्रीयें-इकठीहोकर प्रमूता  
स्त्रीके स्थानपर मंगलगीत-गानकरे, और काठकी एकचौकी ले-  
कर चांदी-या-कांसेका स्थाल स्थापनकर उसमें केशर-या-कुंकु-  
मका साथिया बनावे, फिर उसपर चावलोंद्वारा चक्रेश्वरी देवीके  
चरणोंकी स्थापनाकरे. फिर सोदागनस्त्रीयें कुंकुम अक्षत धूप दीप  
नैवेद्य फुल वगैरामें उनकी पूजाकरे, और प्रमूतास्त्रीकों सुगंधकी  
धूप देवे. फिर कुलगुरु-परमेष्टिमंत्रमें जलकों मंत्रितकरके बालक-

पर दुर्घासैं अधिवेक करताहुवा-इसमंत्रको पढे,-[ मंत्रः ]-ओं-अहं जीवोसि-अनादिरसि-अनादिकर्मभाक् असि-यत्त्वया-पूर्वे-प-कृति स्थितिरसमदैशैः-आश्रववृत्याकर्मवद्धं-तद्वंधोदयोदीरणा स-त्ताभिः-प्रतिभुंक्ष्व-माशुभकर्मोदयफलं भुंक्ष्व-उच्छेदंदध्याः-नचाशु भकर्मोदयफलभुक्तया-विषादमाचरे-तवास्तु-संवरवृत्या-कर्मनिर्ज-रा-अहं ओं,-कुलगुरुको-रूपया-मोहर-जोकुच्छदेनाहो-देवे.

(१०५)-७-सातवा शूचिकर्मसंस्कार-जन्मसमयसैं दशदिन बतीतहोनेकेबाद-ग्यारहमें-रौज करायाजाताहै. लेकिन!-अगर-उसरौज-भरणी-कृत्तिका-आर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-अश्लेषा-मघा-चि-त्रा-विशाखा-मूल-श्रवण-धनीष्ठा-और-पूर्वाभाद्रपद-ये-नक्षत्र-या रवि-मंगलवार-आजायतो उसरौजको बचाकर एकदोरौज आ-गेको करना चाहिये. जिसरौज शूचिकर्मसंस्कारकराना-हो-उस रौज-अपनेघर उमदावाजा बजवाना-और-दीनहीनलोगोको-अ-नुकंपादान-देना-जरुरीकामहै. जिसमकानमें जन्महुवाहो-उसको लींपापौताकर साफकरना-मबतरहसैं दुर्गधको हटाकार-सुगंधी धूपसैं पवित्रबनाना-और-प्रमृतास्त्रीको-तथा-पुत्रको-उवटनालगा-कर स्नानकरानाचाहिये. साफकपडें पहनकर अशौचदूरकरना-बहेनभाणेजको-वस्त्रआभूषण देना-और-न्यातबिरादरीको-मिष्टान्न भोजन जिमाना-गृहस्थधर्मके उचितकामहै. ज्यादेशक्ति-न-हो-तो श्रीफल-मोहर-मीठाइवगेरा देना, धनवान-और-राजेलोग-तरह-तहरके-भोजनजिमाकर-जातबिरादरीको-तथा-संपूर्णरियासतको-सत्कारकरनाचाहे-तो-करसकते है. लेकिन!-जितनाधन-संसारके कामोंमें लगागाजाय-उतनाही-धर्ममेंभी लगायाजाय तभी तारीफ

की बात होगी. पंचम कालकादोष बताकर कोइमहाशय !-कहना चाहे-आजकल-ऐसे धर्मीशुरूश कहां हैं ?-जो इतना धन धर्ममें लगावे ?-( जवाब. )-इतना-न-लगासकेतो-आधा-या-चौयाइ हिस्सातो अलबते ! लगाना चाहिये. क्या ! जिनमंदिरमें अंगीरौशनी कराना-स्वधर्मीवात्सल्यकरके-धर्मकों उत्तेजनपहुंचाना-इतना भी-न-बनसकेगा ?-जितनाबने उतना बनाना चाहिये, जगतमें सारबस्तु-धर्मही-है.

( १५६ )-८-आठवा-नामकरणसंस्कार-यह-संस्कार उसीरौज करदियाजाताहै जिसरौज शूचिकर्मसंस्कारकरना उपर लिख आये. अगर उसरौज लडकेकानाम-न-रखागया हो-तो-जिसरौज मृदु-ध्रुव-क्षिप्र-और-चर-संज्ञावाले नक्षत्र हो. चंद्र-बुध-बृहस्पति ) शुक्रवारहो-चौथ-अष्टमी-नवमी-चतुर्दशी-अमावास्या-पौर्णिमा-संक्रांतिकेदिन-तथा-पंचककेदिन. न-हो-और-लग्नशुद्धिमें-गुरु-शुक्र चौथे भुवनमें-बैठेहो-ऐसे-अच्छेरखतपर-नाम-रखना चाहिये. बहो तरौजतक बिदून-नाम-रखना अच्छानही. ज्योतिषशास्त्रके फरमाने मुताबिक-जिसराशिका-चंद्रमा-उसके जन्म समय-हो-उसराशिकेहफोपर-लडकेका नामरखना ठीकहै. चू,चे,चो,ला, (अश्विनी १) ली,लू,ले,लो, (भरणी-२) अ,ई,ऊ,ए, (कृत्तिका-३) ओ, वा,वी,वू, (रोहिणी-४) वे,वो,का,की, (मृगशिरः-५) कू,घ,ऊ, छ, (आर्द्रा-६) के,को,हा,ही, (पुनर्वसु-७) हू,हे,हो,डा, (पुष्यः-८) डी,डू,डे,डो, (अश्लेषा-९) म,मी,मू,मे, (मघा-१०) मो,टा,टी,टू, (पूर्वाफाल्गुनी-११) टे,टो,प,पी, (उत्तराफाल्गुनी-१२) पु,ष,ण,ठ (हस्तः-१३) पे,पो,रा,री, (चित्रा-१४) रू,रे,रो,ता, (स्वातिः-१५

ती,तू,ते,तो, (विशाखा-१६) ना,नी,नू,ने, (अनुराधा-१७) नो,  
या,यी,यू, (ज्येष्ठा-१८) ये,यो,भ,भी, (मूल-१९) भू,ध,फ,ढ, (पू-  
र्वाषाढा-२०) भे,भो,ज,जी, (उत्तराषाढा-२१) जू,जे,जो,खा, (अ-  
भिजित्-२२) खी,खू,खे,खो, (श्रवण-२३) ग,गी,गू,गे (धनिष्ठा-  
२४) गो,सा,सी,सू, (शतभिषक्-२५) से,सो,द,दी, (पूर्वाभाद्रप-  
दा-२६) हू,अ,झ,थ, (उत्तराभाद्रपदा-२७) दे,दो,च,ची,  
(रेवती-२८)

अश्विनीभरणीकृत्तिकापादे [मेषः] कृत्तिकाणां त्रयः पादारो-  
हिणीमृगशिरोर्द्धे [वृषः] मृगशिरोर्द्धे आर्दीपुनर्वसुपादत्रयं [मिथुनः]  
पुनर्वसुपादमेकं पुष्य-अश्लेषांतं- [कर्कः] मघाच पूर्वाफाल्गुनी उ-  
त्तराफाल्गुनी पादे [सिंहः] उत्तराफाल्गुनीपादत्रयं हस्तचित्रार्द्धे  
[कन्या] चित्रार्द्धे स्वातिविशाखापादत्रयं [तुला] विशाखापादमेकं  
अनुराधा ज्येष्ठांतं [वृश्चिकः] मूलं च पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादे  
[धनुः] उत्तराणां त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्द्धे [मकरः] धनिष्ठार्द्धे श-  
तभिषक् पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं [कुंभः] पूर्वाभाद्रपदापादमेकं उत्तरा  
भाद्रपद रेवत्यांतं [मीनः]-

इसतरह ज्योतिषकेकायदे मुजब नाम रखाजाय तो अच्छाहै,  
नामशब्दका संबंध जबतक आत्मा शरीरमें बनारहताहै तबतक  
रहताहै. इसलिये नाम ऐसा उमदा और सार्थक रखनाचाहिये-  
जो-बोलतेही खुशी पैदाहो. बहोतसे लोग-अपनेबालकका नाम-  
(यह समझकरकि-इसपर किसीकी खोटीनजर असर-न-करे)-  
कुडा-छीतर-गोबर-गांढा-पेला-बगेरा रखदेते है यह ठीकनही.  
बल्किन्!-उनको बडेहोनेपर संसारमें सदाकाल अयमानितशब्दोंका

सहन करना पड़ता है. इसलिये-नाम-बढ़-रखना चाहिये-जो कुम्भ-  
व्यक्त-और-आल्हादजनक हो. नामका निश्चयकरके पीछे स्वजन-  
कुटुम्बपरिवारके सामने बोलदेना चाहियेकि-इसबालकका नाम-  
यह-रखा गया.

(१५७)-९-नवमा अन्नप्राशनसंस्कार-लङ्केकों-छमहिने-  
और-लङ्कीकों-पांचमहिनेबाद कराया जाता है. जिसरौज-अभिनी  
रोहणी-मृगशिरः-पुनर्वसु-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनु-  
राधा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये-  
नक्षत्र-निर्दोष-(यानी)-कुराक्रांतवगेरा दोषवाले-न-हो, रवि-सोम  
बुध-गुरु-और-शुक्रवारहो, रिक्ता-अमावास्यातिथि और-व्यति-  
पात वगेराखोटेयोग-न-हो, उसरौज लग्नशुद्धिदेखकर अन्नप्राशन  
कराना चाहिये, [लग्नशुद्धिः]-लग्नमें सूर्य-मंगल-शनि-या-कृश-  
चंद्रमा-पड़ाहो-तो अच्छानही, बुध-पड़ाहोतो-लङ्का-ज्ञानवान्-  
होगा, शुक्रपड़ाहो-तो-एशआरामकरनेवाला-होगा. बृहस्पति-या  
पूर्णचंद्र-हो-तो-दातारहोगा. येही बुधशुक्रबृहस्पति-केंद्रत्रिकोण-  
या-आठमें-बारहमें-एकशाय-या-अलगअलग-पड़ेहो-तोभी-अच्छे  
है, चंद्रमा-छठे-आठमेंभुवनमें पढ़ना ठीकनही. जन्मराशिकी गि-  
नतीसमें चंद्रमा-चोथे-आठमें-या-बारहमेंहोनाभी अच्छानही. इस-  
तरह लग्नशुद्धि देखकर अन्नप्राशनका वस्तु मुकरर करना. जि-  
सरौज यहसंस्कारकरानाहो-जिनमंदिरमें स्नानपूजन कराना चा-  
हिये. नैवेद्यकीजगह-क्षीर-लड्डु-पैडे-पुरीकचौरी-या-चावलवगेरा  
जोकुच्छ-अपनेघर बनायाहो-एकथालमें रखकर जिनप्रतिमाकेसा-  
मने चढ़ाना, जिसगांवमें जिनमंदिर-न-हो-वहां-धातुमयसिद्धच-

क्रयंत्र-रखकर उसके सामने यह विधान करना, फिर घर आकर कुलमें जो बड़ेरीहो-लडकेको एकचौकीपर बैठाकर मुखमें भोजनका कवल देवे. और कुलगुरु उसवखत सामने बैठकर इसमंत्रको जो-अगाडी-लिखाहै तीनदफे पढे,-[मंत्रः]-ॐ अर्ह-भगवानर्हन्-त्रिलोकनाथः-त्रिलोकपूजितः-सुधारितशरीरोपि कावलिकाहारं आहारितवान्-तपस्यन्नपि पारणाविधौ-इक्षुरसपरमाभ्यभोजनात्-परमानंदात्-आपकेवलं-तद्देहिन्-औदारिकशरीरमाप्तः-त्वमपि-आहारय आहारं-स्ते-दीर्घमायुरारोग्यमस्तु-अर्ह ॐ,-इसतरह अन्नप्राशन-संस्कारकरायेबाद कुलगुरुको रुपया-श्रीफलवगेरादेना चाहिये. आजसे लडकेको-अन्न-खाना शुरुहुवा.

(१५८)-१०-दसमा-कर्णवेधसंस्कार-तीसरे-पांचमें-या-सातमें-वर्षकराना ठीकहै जिसरौज-अश्विनी-रोहणी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुण्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनुराधा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-या-रेवती-नक्षत्रहो-रिक्तातिथिको छोडकर अन्यतिथि-रवि-मंगल-बृहस्पति-शुक्रवार-और-अच्छायोग हो-उसरौज-लग्नशुद्धिमें-तीसरे-ग्यारहमें शुभग्रह बैठेहो-और-शुभग्रहकेस्थानमें पापग्रह-न-बैठेहो-एसेवखतपर-अच्छे-कर्णवेधक पुरुषको बुलाकर लडकेके कान वींधाना चाहिये. और-उसको रुपया-या-बख्त-देकर खुशकरना मुनासिबहै.

(१५९)-ग्यारहमा-केशवपनसंस्कार-जिसरौज-मृगशिरा-पुनर्वसु-हस्त-चित्रा-स्वाति-ज्येष्ठा-श्रवण-धनिष्ठा-और-रेवतीनक्षत्र हो-१-२-३-५-७-१०-११-१३-ये-तिथिहो-सोम-बुध-और-शुक्रवारहो-उसरौज चंद्रबल-तथा-ताराबलदेखकर-लडकेके प्रथमके-

श उतराना चाहिये. जिस रुमालमें केशपड़े उसमें रुपया वगेरा कुच्छद्रव्य लडकेकेशिरपर उवारकरके डालना-और-नाइकों शि-रोपावदेकर खुशकरना मुनासिबहै, क्योंकि-उसने-लडकेके-केश पहिलपहिले उतारे है, केशउतरायेबाद-दहीं-या-दूधसें-लडकेका मस्तक धुलाकर साफपानीसें उसकों नलहानाचाहिये. शक्तिहो-तो-जातबिरादरीकों मिष्टान्नभोजन-जिमाकर सत्कारकरना-और जिनमंदिरमें-अंगी-रौशनी-कराके-धर्मको उत्तेजन देना-जरूरी कामहै.

(१६०)-१२-बारहपा-उपनयनसंस्कार-आठवर्षकी उमरहुये बादकरायाजाताहै, जिसरौज-अश्विनी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-चित्रा-स्वाति-श्रवण-धनिष्ठा-और-रेवती-नक्षत्रहो-२-३-५-७-१०-१३-ये-तिथिहो-बुध-गुरु-या-शुक्रवारहो-उसरौज-त्यागी गुरुकेपास आनकर-स्वधर्मका मंत्र लेना चाहिये. पहिले कालमें जिनोपवीतरखनेका रवाज था-लेकिन!-इसकालमें वह रवाज रहानही, वर्त्तमानमें उसके मुकाबिला निग्रंथगुरुसें वासक्षेपकराके निजधर्मका मंत्रलेना यही रवाज देखाजाताहै इसलिये उसीमुआफिक वर्त्तना ठीकहै, कइलोग पहिले विद्यारंभ संस्कारकराना जरूरत समजते है, लेकिन!-नही!-पहिले उपनयनकराकर फिर विद्याध्वनकराना योग्यहै. जिसरौज उपनयनसंस्कारकरानाहो-लडकेकों-स्नानमज्जनकराके-अच्छे कपड़ेपहनाकर-बाजेगाजेकेशाय निग्रंथगुरुकेपास-लाना, और उनकेसामने नमस्कार कराके-एक चौकीपर चावल्लोंका स्वस्तिक बनाना-उसपर-श्रीफलवगेरा चढाकर ज्ञानपुस्तककी पूजाकरना, -(यानी)-पुस्तकपर-रुपया-मोहरव-



मेरा-कुच्छद्रव्य चढाना, निग्रंथगुरु त्यागीहोते है उसद्रव्यकों ज्ञानमें लगादियाजाय कोइहर्जकी बात नही. इतनेकार्य होजानेबाद निग्रंथगुरु जब अपनाचंद्रस्वर चले-वर्द्धमानविद्या-पढकर शिष्यपर वासशेष करे, और परमेष्ठिमंत्र सुनाकर उसकेमुखसे तीनदफे उच्चारण करावे. वर्द्धमानविद्या-और-परमेष्ठिमंत्र-यहां इसलिये नहीलिखेकि-वें-गुरुओंके कंठहीहोते है. हां!-परमेष्ठिमंत्रकी तारीफ सुनाकर-बयानकरेकि-यहमंत्र सबशास्त्रोंका-सार-और-सबतरहके पातककों दूरकरनेवालाहै, हरवरुन इसकों यादरखना, इससे तेरी धर्मश्रद्धा अचल रहेगी-और-धर्मकेप्रभावसे सबकाम अच्छे होते रहेंगे. जगतमें सारबस्तु धर्म है. मुनिसिबहै कि-हरहमेश जिनप्रतिमाका दर्शन-और-निग्रंथगुरुकों-नमस्कारकरके फिर दूसराकाम करना. जितलियेहो-रागद्वेषवगेरा-दुश्मन जिसने-उसकानाम-जिन है, और-निर्गता-( यानी ) दूरहोगइहो-लोभलालचरुप-ग्रंथि-जिसकी-उसकानाम-निग्रंथ-है. इसतरह उपनयनसंस्कार पूर्णहुयेबाद जिसतरह बाजेगाजेके साथ गयेथे-वैसेही-पुनःअपनेघरआना-और-जो-लोग-साथ-गयेथे-उनकों श्रीफल-या-मिठाइवगेरा बांटकर विसर्जनकरना चाहिये. इधर निग्रंथगुरुकों आहारकी निमंत्रणाकरके उनकों आहार प्रदान करना-और-जिनमंदिरमें अंगीरौशनी बनाकर धर्मकों उत्तेज्जन पहुंचाना-अवश्यकर्तव्य-है.

( १६१ )-१३-तेरहमा-विद्याभरसंस्कार, -जिसरौज-अग्नि-मृगशिरःआर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-अश्लेषा-पूर्वाफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति-मूल-पूर्वाषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-शततारका-और-पूर्वाभाद्रपद ये-नक्षत्रहो-२-४-५-७-१०-११-१२-१३-ये-तिथिहो-रवि-सोम-

बुध-गुरु-और-शुक्रवारहो-उसरौज अच्छेलममें-बालककों-विद्या पढाना ब्रुदकरना चाहिये. विद्यारंभकरतेवख्त-अगर-पढनेवालेका सूर्यस्वर-चलताहो-तो-अच्छाहै, विद्या जल्दी आयगी. जोछोग-पढानेवालेपंडितकों-अपने घरबुलाकर लडकोंकों तालीम दिलवा-तेहै उससे पाठशालामें भेजकर तालीम दिलाना ज्यादा फायदेमंद है, जितनीविद्या उसकों पाठशालामें हासिलहोगी घरमें बैठकर प-ढनेसें-न-होगी, विद्याविदून मनुष्य जानवर बराबरहै. विद्वान्म-नुष्य हरऐलमकों सप्रज्ञसकता है. विद्यासें बडेबडे होदे मिलसकते है, विद्याकों हानीलोगोने जवाहिरातसेंभी बढकर कहा. विद्याके बलसे आदमी दिग्विजय करसकताहै. पढनेकी मिहनत पहिलेतो तकलीफदेतीहै लेकिन! अखीरमें बडेबडेफायदे पहुंचायगी.

[ पाठशालामें लडकोंकों-ये-बातें जरूर सिखलाना चाहिये. ]

जीव अनादि है,-संसारकी आदि नहीं,-

दुनियाका बनानेवाला कोई नहीं.-

सुखदुख-अपने पूर्वभवके कियेहुवे-कर्मोंका-फलहै,

पुन्यकर्मसें स्वर्ग मिलताहै-पापकर्मसे दुर्गति होती है.

धर्मभवर्त्तक-तीर्थकर-सर्वज्ञ-होते है,

मनुष्य-आज-महेलमेंहै-कल-न-मालूम कहांहोगा,?

चाहे राजाहो-या-रंकहो-मरना सबकेलिये है,

दौलत विद्याकी दासी है-इसकाघमंड-न-करनाचाहिये,

राजे लोगोंने पूर्वभवमें पुन्य कियेथे-लेकिन! यहां-न-करेंगे तो-उनकेलिये बुराहै,

जिसवख्त जिसकाराज्यहो-उनकी विद्याकोंभी जरूरपढना चाहिये,

जितनी उमर-जीव-पूर्वभवसे-बांधलाया है उतनीही भोगेगा,  
 रास्तेचलते आकाशतर्फदेखना मूर्खोंका काम है,  
 बरूत चलाजायगा फिर-न-मिलेगा,  
 सोकर मोरही उठो-और-मुंहथ धोडालो,  
 मातापिताकों मुजरा करो. और-फिर-जंगलकी हवाखानेकों  
 जायाकरो,  
 सवेरकी हवा बडी फायदेमंद होती है,  
 कपडें साफ पहनों-और-माथेके केशोंकों चमकदार रखो,  
 भोजनजिम्मे बरूत बोले मतकरो-चवाचवाकर खाओ,  
 खाकर थोडीदेर सोजाओ-तुर्त्तही मत खैलो,  
 पिताका कहना हंसीमें मत उडाओ,  
 गहरेजलमें मत खैलो-डूब जाओगे,  
 तमाखूकी-डिब्बी-मत खोलो,  
 अफीम-भंग-माजूम-तमाखू-चिलम-और-हुका-मतखरीदो,  
 छतपर चढ़कर मतबैठो-छूरीकटारी मत खोलो,  
 झूठतुफानकरना नालाइकोंका काम है,  
 जैसीचातहो-वैसी-साफ कहो-झूठ मत बोलो,  
 दूधका गढवा खुला मतखो-बिल्ली-आकर पीइजायगी,  
 मांसखाना बढापाप है, मदिरापीना बडा दोष है,  
 शिकार खेलना पापीलोगोंका काम है,  
 आरामकेबरूत सब तुमकों चाहेगें-तकलीफमें कोई-नही-चाहेगा,  
 बहचरकलाजाननेवाले शरूश बहोत थोडे होते है,  
 चौसठकलाकी माहितगारस्त्री-हजारोंमे-एकहोती है,  
 बर्ताब पेसा रखो-जो-सदा एकसरसा चलाजाय,

अगरकोइसल्लू सिधादखनदिशातर्फ समुंदरमें चलाजाय-  
फिर-पिछा-न-आसकेगा-यानी-दोलाखयोजनतक समुंदरहीसमुं-  
दरहै-जातेजाते मरजायगा-उससमुंदरके आगे दूसरीदुनियाभी है,  
जिसको शास्त्रोंमें धातकीखंड कहा.

जिसमें हमतुम रहते है उसकानाम भारतवर्ष है, जो जंबूद्वीप-  
का एकछोटाभाग समझना चाहिये.

राजधानी उसको कहते है जहां राजा रहताहो,

शहर उसको कहते है जहां व्यापार-और-आबादी ज्यादाहो,

कस्बा उसको कहते है जो छोटीवस्तीहो, गांव उसको बो-  
लते है जहां फक्त पांचदस झोंपडेंही आबाद हो-व्यापारका नाम  
निशान नही,

जो राजा अपनीरैयतको तकलीफ पहुंचाताहै कभी स्वता  
स्वायगा.

आकाशमें जो सूर्य-चंद्र-तारावगेरा देखतेहो इश्वरकेबनाये  
हुवे नहीहै, द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा नित्य और पर्यायार्थिकनय-  
की अपेक्षा अनित्यहै, उनमें देवतालोग बसते है और-वैही-देव-  
उनको चलाते है, थोड़ी बुद्धिवाले उसकामका बौजा इश्वरकेमाये  
हालते है, शरीर-हाथपांव-कान-नाक-दांत सभी अपनीअपनी?  
तकदीरसें बने है, बंदेकी तकदीर और तदबीर उसे सबतरहके  
भलेबुरे नतीजेपर पहुंचाती है, अगर इश्वरमें ताकतथी तो सबको  
'एकसरसे सुखी बनाता, एको अंधा-और-एको-आंखोंवाला  
क्यों बनाया?-क्या! इश्वरभी पक्षपाती है?-जैसे रैलगाडी जमी-  
नपर चलती है पहिलेजमानेमें विद्याधरलोग आकाशमें विमान च-

लातेथे, लोगोंको एकगांवसे दूसरेगांव पहुंचातेथे. रैलमें जैसे मृत्युका खतराहै विमानमें नहींथा. जैसे डाककेजरीये चीन्नीयां आजकल एकगांवसे दूसरेगांव आदमी पहुंचाते है पहिलेकालमें विद्याधरलोग आकाशद्वारागमनकर पहुंचातेथे. जोलोभ कहते है दुनियामें पहिले अंधेरा था-अब-उजयाराहुवाहै बड़ीभूल करते है, बल्किन-पहिलेकालमें ज्यादा उजयारा था-बढेनसीबेदार और बड़ीउमरवाले आदमी होतेथे. धनदौलत रुपरंग और पुण्यवानी लाखदर्जे तेजथी, आजकल धर्मकेघटजानेसें सबतरहकीपुण्यवानी भी घटने लगगइ. भारतवर्षके-छह-खंड जो जैनशास्त्रोंमें लिखेहै उनमेंसें वैताढ्यकी दखनतर्फके जो तीनखंडहै इतनेहीकों आजकलके लोग संपूर्णदुनिया समझरहे है, सबबकि-वैताढ्यपर्वतकों छ-छंयके अंगोकों-आजकल कोई नहीं जासकता. असलमें भारतवर्षकी दखनहीकी तर्फ समुंदरहै, लेकिन!-सगरचक्रवर्ती नहेरस्नेदकर जब समुंदरकेजलकों उरे लाया-तबसें-उरछीखाडीकोंहीलोग समुंदर कहने लगगये. इसीसे भारतवर्षक्षेत्रकी मर्यादा चलविचल होगइ. जैसे आजकल नदीकों कांटकर अलग नहेर खेजानेसें-क्षेत्रकीमर्यादा छिन्न भिन्न होगइ है-वैसे-सगरचक्रवर्तीके बरतसें बडा फेरफार होगयाहै, पहिलेकालमें बारुदकों अभिचूर्ण कहतेथे, तोषोंकों सहस्रघ्नी कहते थे, अग्न्यास्त्र-वज्रास्त्र-मोहनास्त्र बमेरा कइतरहकेहथियार पूर्वकालमें होतेथे. जो आजकलके हथियारोंसें लाखदर्जे बढकर थे. भारतवर्षका मध्यखंड आजकल-दारा-कंदर मुसल्मान-और इशाइयोंके युद्धसें निर्बल होकर फसावीन हुवाहै. नकशा उसकों कहते है जिसमें देश, राजधानी, नगर,

गाव-पहाड-नदी-वन-भौर-जंगलका आकार बतायामवाहो.

पृथ्वी गेंदकीतरह गोलनही-स्थालीकी तरह गोलहै,

एकघडेमें बादाम भरीहुइथी एकलडकेने उसकों देखा और  
उसमेंसे बादाम लेनेकों हाथ डाला, मुट्ठीभरकर निकालने लगा,  
लेकिन ! घडेका मुंह छोटाथा, हाथ न निकल सका. उस्तादने  
कहा इतनीबादाम एकशाय कैसे निकलसकेगी ? थोड़ी ले, लड-  
केने आधीमुट्ठी छोडदीइ-और-हाथ तुर्त बहार निकल आया. इ-  
सीलिये कहते हैकि-लोभकों घटातेरहो.

देखो !-हाथी कैसा बडागंभीरहे. किसीकों मारता नही, चाहे  
कोइ पास जावे, आदमी तो उसपर बैठतेही है, गधा देखो ! कैसा  
खराबहै जो जरा उसकेपास जाओकि-छात मारदे, कहो ! तुम-  
कों हाथी बनना है ?-या-गधा ?-सौचकर जवाब दो, बिदून सौचे  
जवाब देना मूर्खोंका कामहै,

मातापिताकों गाली बोले सो मुर्ख,

बिदूनमतलब दूसरेके घर जाय सो मुर्ख,

तैरना न आताहो और जलाशयमें कुदे सो मुर्ख,

गुप्तबात करतेहो वहां बिनाबुलाये जावे सो मुर्ख,

सभाका काम सभाकी सलाह बिना करे सो मुर्ख,

नग्नहोकर श्रयनकरे सो मुर्ख,

दोस्तके साथ दगलबाजीकरे सो मुर्ख,

देवगुरुधर्मकी कसम खावे सो मुर्ख,

पंडित होकर मर्ब करे सो मुर्ख,

भयकी जगह एकीला जावे सो मुर्ख,

सर्पकेशाय खैल खैले सो मुख,  
 धर्मीपुरुषकी नींदाकरे सो मुख,  
 हांसीखुशीमें गुस्ताकरे सो मुख,  
 बातकरते आप हंसे सो मुख,  
 किये उपकारकों न पहिचाने सो मुख,  
 देवदर्शन बिना किये भोजन जिमे सो मुख,  
 अनमिलती वस्तुकी चाहना करे सो मुख,  
 देवद्रव्य भक्षणकरे सो मुख,  
 स्त्रीकों गुप्तबात कहे सो मुख,  
 बिना हुंकारा बातकरे सो मुख,  
 अजीर्णहुवे खाना खावे सो मुख,  
 बिना सवार उंठ घोडेपर चढ़े सो मुख,  
 वैश्याकेशाय व्यापार करे सो मुख,  
 नाइके घरजाकर हजामत करावे सो मुख,  
 धूपमेंबैठकर भोजन जीमे सो मुख,  
 मृत्युके दिनकों हरदम याद न रखे सो मुख,  
 तकलीफके वखत परमेष्टिमेंत्रकों भुलजाय सो मुख,  
 दुखआनेपर गभराजाय सो मुख.  
 बुखार खांसीवगेरा रोगमें मैथुनसेवे सो मुख,  
 ज्ञानदर्शनचारित्रके उपकरणकों परिग्रह समझे सो मुख,  
 न्यायाधीश होकर अन्यायकरे सो मुख,  
 नमस्कारकरनेवालेसे आकड़ रहे सो मुख,  
 पैशाचमें मुखदेखे सो मुख,

पैदाशर्मसें सोलहपा हिस्साभी धर्ममें न लगावे सो मुख,  
 व्याकरणपढ़कर संस्कृतबोलते न जाने सो मुख,  
 युक्तिप्रमाणकों न माने सो मुख,  
 भौजन जीमकर तुर्च दिशाजंगल जावे सो मुख,

पढ़ानेवाले गुरुसें हंसीमशकरीकरे सो मुख,—एकमास्तरसाहब  
 मदसेंमें लडकोंकों पढारहेथे, उनमें एकलडका ऐसाथा जो हरवख्त  
 सामनेबौलदियाकरता था—और—मास्तरकीबातकों कुच्छ खयालमें  
 नहीलाता था, मास्तरसाहब एकदिन बेंतकों सिधाकरके बोले!—  
 हमारे बेंतके कौनेके सामने एकगधा बैठाहै, जो लडका बेंतके  
 ठीकसामने बैठाहुवाथा बोल उठा, अजी! मास्तरसाहब! बेंतके  
 दोकौने होते है! आप किसतर्फके कौनेका जीकर करते है!—मा-  
 स्तरकों इस बेंअदबीसें ऐसा गुस्सा आयाकि—उसलडकेकों खूब  
 पीटा—और—मदसेंमें निकाल दिया. पढ़नेवालोंकों चाहियेकि—उ-  
 स्तादके सामने न बोलना—और—हरवख्त ताबेदारी करते रहना,  
 बिद्या जभी आयर्गी.

मनुष्य जितना दिनभर मजदूरीकरनेसें नही थकता उतना तीन  
 घंटे लगातार मानसिक परिश्रमकरनेसें थक जाताहै, जिनलोगोंकों  
 लिखने पढ़नेका—और—वाचनेका बहोतकाम पढता है, जो हरवख्त  
 धर्मशास्त्रका उपदेशदेते रहते है, लडकोंकों तालीमदेते है, अदाल-  
 तमें बकालतकरते है, समाधिळगाते है, और—जो—न्यायकरनेकी  
 मिहनत उठाते है, उनकों जरूर मानसिक परिश्रम उठाना पढता  
 है, उनकाशरीर ताकतवरहोनेसेंभी थक जाते है; उनकों चाहिये  
 कि—स्नानपानकी सावधानी—रखे, दूध—घी—भीथी—द्राख—केशर—शि-



लाजिद-बेदूकेबवे-प्रदार्थ-उर्दकीदाल-ताजीमिठाह-बाजीसीर-ता-  
जासीरा-पके फल-सनबीदी-और-तवी रसोइ-हरहमेश खायाक-  
रे; और चीजोंका समागम न मीले तो खेर !-लेकिन! रसोइ  
तो जरूर तवीजिमना चाहिये; ठंडीरसोइ बिल्कुल फायदा  
नहीं पहुंचाती,

हरहमेश आठघंटे शयन करो; बायीकरबट सोजाओ-जी-  
मनाकरबट सोना तो घंटा आधघंटाही सोना चाहिये, बहुधा बा-  
यीकरबट सोना फायदेमंदहै, सबबकि जठराग्निका स्थान इसी-  
तर्फकों है, सोनेकेमकानकी खिडकीयें खुली रखाकरो, पलंगकों  
दिवारसँ लगाकर मत बिछाओ, पगकों साफकरके बिछौनेपर  
बैठो, खारापानी कभी मत पीओ-अगर तुमारेशरीरमें अच्छीता-  
कतहै-तोभी-हरहमेश पांचतोले-धी-जरूर खायाकरो, शरीरके  
संचे इससँ तेज रहते है,

अबतक लोग जानतेथेकि-चीनदेशका-किनपान-अखबार  
सबसँ पुराना छपाहुवा मिलताहै, लेकिन !-अब मालूमहुवाहैकि-  
चीनराजधानी पेकिनका-स्थिपपाव अखबार उससँभी पुराना छ-  
पाहुवाहै, किनपानकों छपते अभी एकहजारवर्ष ही बीते है, परंतु  
स्थिपपाव बराबर (१४००) वर्षसँ छपरहा है. इसमें सब बादशाही  
खबरे रहती है,

चीनदेशमें अगरकोइ शरूब दूसरेको टोपीछतारकर खलाश  
करे तो मझकरी किह समझीजाती है, अमेरिकामें एकटुष ऐसा  
पायागयाहै जिसमेंसँ सत्रीकेवस्तु मसालकीतरह मकाश निकल-  
ताहै, सारा जंगल चांदनासँ-झलाझल बनजाताहै, कामिस्तके श

सबसे परिणमतलके दातनेपासे जो पायाव है वहाँ बन्धनशुद्ध-  
बुद्धी पैदाहोती है, वहाँ कइ कइ ऐसे है जिनसे रानीकेवल वी-  
येकीतरह अग्निकी लाट निकलती माखून होती है, मणिमंत्र-  
वीणां अर्चित्यःप्रभावः—ठीकहै, आसनोंमें मणिमंत्र और औषधी-  
योंका अर्चित्यप्रभाव इसीलिये जानीयाने बयान किया,

(१६२)—१४—चौदहमा विवाहसंस्कार तब कराया जाताहै  
जब स्त्रीपुरुष उमरछाड़क हो, जैसे कच्चाफल खाना ठीकनहीं वैसे  
कच्चीउमरमें विवाहकाहोनाभी ठीकनहीं फरमाया, विवाह दूरदे-  
नामें होना अच्छाहै, एकमात्रमें कन्याकों दिग्गहहोते—पिताकोंभी  
कइतरहकी तकलीफ रहती है, जबजब कन्या पित्तकेघर भायगी  
कुच्छनकुच्छ देनाही पड़ेगा. एकमात्रमें विवाहहोनेसे स्त्रीकों अपने  
पिताकी सहायताका भी धमंड रहेगा. जब जब लडाइ दंवा होमात्रुर्ष  
आपने पित्तकेघर चलीजायगी, पतिकेसंबंधी स्त्रीके संबंधीयोंसे लड़े  
में, जिनके मातापिताकों बवासीर—सय—दमा—पीरगी—और—कोठका-  
रोगहो उनके बेटाबेटीसे विवाहहोना ठीकनहीं, माजरीआंखवाली  
तथा भुरेनेत्रवालीकन्या कुलक्षणी होती, पुरुषभी मांजरीआंखवा-  
ला बड़ा दमलवाज होताहै, इसकालमें पनरांइ—सोलह वर्षकी कन्या  
और बीसवर्षका पुरुष अगर विवाहशृंखलासे योजितकिये जाय तो  
समयानुर ठीकहै, लेकिन !—अपशोष हैकिस्त्रहवर्षकी लडकी और  
बारहवर्षका लडका—विवाहितकरदिये जाते है, आजकल जगत्के  
हुकूमत कोइ खयाल नहींलाता, जमाना बारीक आरहाहै, इस  
क्रिये—कोइदिनोंमें यहभी बर्ताव देखोमे जो बहोतही—बेमुनास्त्रि  
होता, स्त्रीसे—पति—उमरमें सवाया—देवा—मा—हुकुमाहो—तबक वि-

वाहका होना फिरभी ठीकहै, लेकिन! पचास साठवर्षके बुढेसँ दश ग्यारवर्षकी लडकी विवाहदेना किसीसुरत अच्छा नही. अपशोषहै कि-आजकल इसबातकाभी कोई खयाल नहीकरता. अगर सवालकियाजायकि-जिसस्त्रीके भाग्यमें-जो पति-होनाहो-वो कैसे मीटे!-(जवाब.) तथापि व्यवहारमें तो यहबात अयोग्यही कहीजायगी. जहांतकबने व्यवहारनयभी प्रमाण करने योग्य है, असलमें-तो-निश्चयनय-मुजबही-बनावबनेगा लेकिन! तोभी बर्तावतो व्यवहारनयमुजबही रखनाचाहिये, निश्चयनय जाननेयोग्यहै और व्यवहारनय प्रवर्त्तिमार्गमें लानेयोग्यहै,

(१६३)-जिस स्त्रीकी बोली अच्छी-न-लगतीहो-और-जिसका रूप सोहावना-न-हो-उसकेशाय विवाहकरना ठीकनही, अच्छीबोली-और-अच्छारूपभी-भाग्यवानीकी निशानी है, आजकलके जमानेमें पुरुषकों अच्छीस्त्री और-स्त्रीकों-अच्छापुरुष मिलना वडाहीमुश्किलहै, जबतक स्त्रीपुरुषका मन नहीमिलता सुखकी स्थिति नही होती. मन जभी मिलताहै दोनोंमें चतराइ-या रूप-हो, इसलिये मातापिताकों-मुनासिबहैकि-अपने बेटाबेटीकों पहिले पुछलेवे, और उनकी रुचीमुजब विवाहकी बातकरे, अगर दोनोंमेंसँ किसीकी इच्छा बखिलाफ देखे तो उनकेशाय स्या दी न करे, अगर कोई सवालकरेकि-ऐसी-शर्मभरीबात-कैसे पुछीजाय!-(जवाब.)-अगर आप न पुछशके तो उनके मित्रोंसँ तलाशकरावे, बिदून इच्छा विवाहकरनेसँ अगाडीपर विरोधपेदा-होगा, जिनकों मित्रोंसँ दरयाफतकरातेभी शर्म आतीहो-उनकों-हमारा कहना-अलबते! न-रुचेगा, खेर!-उनकों चाहिये अपनी-

मरजीपर आधार रखे, हमको तो यहां जो पुनासिबवातहो लिख देनाचाहिये इसइरादेसें उक्तवात लिखीगइहै, जिसको मंजूररखनाहो रखे-न-रखनाहो-मत रखे, कइदेशवाले कहते है एकस्त्री-एकहीपुरुषकेसाथ-या-एकपुरुष-एकहीस्त्रीकेसाथ-उमरभर विवाह-की रस्सीसें बंधे रहे यहवात अच्छीनही, वल्किन्! जब अर्धमें फर्क आजाय तुर्त विवाहबंधन छूठजानाचाहिये, आर्यलोगोंने यह वात फिसादकी जड समझकर मंजूर नहीरखी, संसार अपारहै, यहनहीकहसकतैकि-अमूकरसमें अमूकदेशमें सनातनसें चलतीआतीहै कभी नही बदली, हरजमानेमें रीतिरसम बदलतीरहती है, लेकिन!-अच्छेलोगोंने पुनर्लगकी रसम फिसादकीजड समझकर अच्छीनहीकही,

(१६४)-पुनर्विवाहसें इतनेदोष पैदा होंगे. अबलतो स्त्रापुरुषमें पुरेपुरा प्रेम-न-रहेगा, जहचाहे तब पुरुषकों-स्त्री-और-स्त्रीकों पुरुष-छोडकर दूसरेसें विवाहकरलेगें, अगर एक दूसरेके मरनेके बाद दूसरा विवाहकरलेना ऐसानियम जारीकियाजाय तोभी क-इतरहके दोष पैदाहोंगे, स्त्री-जब विधवाहोकर दूसरेसें विवाहकरलेगी-तब-पहिलेवालेपतिकी चीजवस्तुकों उडालेजानेका-उपाव करेगी, उनकेकुटुंबीलोग उसस्त्रीसें लडेगें, बहोतसें धार्मिककुलोंका नामनिशान न रहेगा, और उनके पदार्थ छिनभिन्न होजायगें. अच्छेलोगोंने इसीलिये पुनर्विवाहकी मनादी किइहै, अच्छेलोगोंने जोजो कायदे बुरे समझकर नामंजूर रखे है उनकों अब चलाना चाहतेहो-तो-सौचकर चलाओ, अगरकहाजाय कि-पुनर्विवाहकी रसम जारी-न-होनेसें व्यभिचार दोष बढ़ताहै, ( जवाब. )-क्या!

पुनर्विवाह होनेसें व्यभिचार नहोगा?—अगर कहोगे—इस बातका ठै-  
का हम कैसे ले सकें?—तो—फिर सौचलो उक्त बातके जारी होनेसें भी  
क्या फायदा निकला!—अगर कहा जाय—गर्भपात होते बचाव होगा  
इसका जवाब भी—यही है कि—चाहे उत्तर सम जारी करो—या—न—करो,  
पापकर्म तो संसारमें सदा ही होता चला आया—यह तो जभी मीट  
सकता है धर्मपर श्रद्धा बढेगी, बिदून धर्मश्रद्धा पापकर्मका इठना  
मुश्किल है, अगर सवाल किया जाय कि—स्वदार संतोषव्रती पुरुष—  
किसी वेश्याको मौलदेकर कोइ काल तक अपनी स्त्री—बनावे—और—उ-  
सके साथ भोग करे तो उसके व्रतमें दोष लगे—या—नहीं?—( जवाब )—  
दोष जरूर लगे, क्योंकि—वेश्या अपनी स्त्री—नहीं. स्त्री—बो—है—जो पं-  
चोंकी साक्षीसें शास्त्रोक्त विधानद्वारा विवाही न हो. अगर कहा  
जाय कि—स्वदार संतोषव्रती पुरुष अपनी स्त्रीके मौजूद होते हुवे—या—प-  
र जानेके बाद दूसरी स्त्रीसें विवाह करे तो—उसको अतिचार—या—अ-  
नाचार—लगे—या—नहीं?—( जवाब. )—उसको अतिचार—या—अना-  
चार—न—लगे, सबब कि—उसको अपनी स्त्री—खुली है, ( सवाल. )—इ-  
सी तरह कोई स्वपुरुष संतोषव्रतधारणी स्त्री—अपने पतिके मौजूद होते  
हुवे—या—उसके मर जानेके बाद दूसरे पुरुषसें पुनर्विवाह करे तो उस  
स्त्रीको अतिचार—अनाचार—लगे—या—नहीं?—( जवाब. )—जैसे पुरु-  
षके लिये पुनर्विवाह करना मर्यादा है वैसे स्त्रीके लिये भी अगर पु-  
नर्विवाह करनेकी मर्यादा सर्वसंघ मिलकर जारी कर देवे तो स्त्रीको  
भी अतिचार—अनाचार न लगे,—( सवाल. )—सर्वसंघ मिलकर उ-  
क्त मर्यादा जारी न करे—और—कोइ स्त्री—अपनी स्वछंदतासें—पुनर्वि-  
वाह कर लेवे—तो—उसको कैसी समझना चाहिये?—( जवाब. )—उसको

बदचलन-समझना चाहिये, क्योंकि-उसने अच्छेलोगोंकी प्रशंसा उल्टंघन कीइ, अगर सवालकियाजायकि-आपने खूबब्रंधनहाला-सबसंघकी सलाह एकसरस्तीहोवे नही-और पुनर्विवाहकी रसम जारीहोनही. ( जवाब. )-श्रेष्ठपुरुषोंके बांधेहुवे कायदेकों रदकरके नयीरसम जारीकरना चाहतेहो-तब-इसतरहसबकी संपत्तिछिये बिदून समाधिकैसे रहेगी. चाचे-तायेकी-बेटी-या-मामा-फुफीकी बेटी-एकअपेक्षा बहेनही हुइ, लेकिन!-पहेलेजमानेमें ऐसे बहेन भाइयोंका विवाहना अच्छे कुलवाले लोगभी बुरा नही समझतेथे, और अब ऐसे बहेनभाइयोंका विवाहना बुरासमझते है, कहिये! पहिलेकालके कायदे जब रदकिये होंगे तो सबकीसलाहसैं किये होंगे-या-एकदोश्रुसोनेही मिलकर करदियेहोंगे!-अगर एकदो-श्रुसोनेही किये होते-तो-सब-संघ-कभी मंजूर न करता, इसीलि-ये कहाजाताहैकि-सबकी सलाहसैं कामकरना चाहिये, यहवात सबकोइ कहसकतेहैकि-पंचमकालके प्रभावसैं दिनप्रतिदिन-धर्मकी हानि-और-अधर्मकीवृद्धिहोना बढताजायगा, देवगुरुधर्मकों लोग कुच्छचीज नही समझेगें, सबबोलना छोड देयगें, राजेलोग रैयत-कों तकलीफदेयगें, साधुलोग लोभी होजायगें, अच्छेघरानेकीस्त्री व्यभिचारिणी होजायगी, पुनर्विवाहकेलिमे लोग हठवाद करेगें, बेटे बापका सामनाकरेगें, धर्मीलोग दुखी और अधर्मी मौज उ-ढायगें, कालदोषसैं ऐसेऐसे बनावबनेगें जो-बहोतहीबुरेहोंगें, ले-किन! तैर!-अबतकतो फिर भी दुस्वमयकालका पहिल्लाही-हि-स्सा-बर्त्तरहाहै, अबसेही-क्यों!-इतिश्री-करने बैठेहो-जहांतकबन पडे धर्ममर्यादाका पालन करनाचाहिये, इसन्यायसैंभी मुनासिब

आयाकि-वनतेप्रयत्न अच्छेकाममें पावन्द रहना.

(१६५)-कोइस्त्रीपुरुष प्रेमानुरागसें आसक्तहोकर मातपिता-  
की विद्वनरजामंदी गुप्तविवाह करलेवे इसकानाम गांधर्वविवाह  
कहतेहै, किसी मकानमें एकांत मिलकर औरत कहेकि-मैं-आ-  
पकी-स्त्री-हूं-और-पुरुषकहे-मैं-तुम्हाराभर्ता हूं-बस! इतनेविधा-  
नसेही विवाहहोगा मानलेवे-इसकानाम विषयासक्तलोगोंने गां-  
धर्वविवाह रखाहै, लेकिन! ज्ञानीलोगोंने इसको प्रमाणीक नहीं  
कहा, सबबकि-शास्त्रकेहुकमसें बखिलाफहै, शर्त्तलगाकर कन्या  
देना इसकानाम अमुरविवाहहै, जैसे जुआखेलतेवरत कोइशखश  
शर्त्तलगावेकि-मैं-इसमे हारजाउगातो अपनी लडकी तुमको देदूंगा,  
जोराजोरी दूसरेकी लडकी लेकर अपनी स्त्री बनालेना इसकानाम  
राक्षसविवाह कहतेहै, छलकपटसें-या-विद्याकेजोरसें-किसीकीलड-  
कीको उडालेजाना इसकानाम पिशाचविवाह कहतेहै, कइमतावलं-  
बीबाको मंतव्यहैकि-घरछोडकर वनमें जारहना और-स्त्रीपुत्रकोभी  
शाथरखना कोइहर्जकीवात नहीं. घरछोडनेसें वेभी मुनी कहेजायगे,  
लेकिन! ज्ञानीलोगोंका फरमाना इससें विरुद्धहै, वे-फरमातेहै  
जबतक धनदौलत-बेटाबेटी-और-स्त्री-नहींछोडी तबतक मुनि न-  
हीकहेजासकते-खेर!-हमको यहां-आर्षविवाहका भेद बतलानाहै  
इसलिये समझलो वैसे वनवासीमुनि-अपनी लडकीको दूसरे वन-  
वासीमुनिके लडकेसे विवाह ते समय फक्त एकगौ-या-बछडा-देकर  
पाणिग्रहणकरावे इसकानाम आर्षविवाह बोलतेहै, माजापत्यविवाह  
जो-मातापिताकी रजामंदीसें पंचोंके रुबरु शास्त्रोक्त प्रमाणसें क-  
रायाजाताहै बुद्धिमानोंको यही विवाह मंजूररखना चाहिये, यही  
विवाह जगत् प्रसिद्धहै,

(१६६)-विवाहमुहूर्त्त किसतरह शोधनकरनाचाहिये?—उसका बयान,—रोहिणी—मृगशिरा—मघा—उत्तराफाल्गुनी—हस्त—स्वाति—अनुराधा—मूल—उत्तराषाढा—उत्तराभाद्रपद—और—रेवती—ये नक्षत्र—विवाहके योग्यहै, लेकिन!—इसमें लक्षा—पात—एकार्गल—वेध—उपग्रह वगेरादोष नहोनेचाहिये, नक्षत्रगंडांत—तिथिगंडांत—भद्रा व्यतिपात और—वधृति वगेरा खोटेकालकोभी विवाहमुहूर्त्तमें बचाकर शोधन करना चाहिये, जानकारज्योतिषी क्रांतिसाम्य—दग्धातिथी—अधिक—मास—चौमासा—वगेरा बचाकरकेही शोधनकरते है, बढीहुइ—या—दूटीहुइतिथि—रिक्ता—अष्टमी—षष्ठिद्वादशी—और—अमावास्याकों छोडकर जिसरौज—२—३—५—७—१०—११—१३—१५—तिथिहो उसरौज विवाहमुहूर्त्त शोधनकरना चाहिये, जिसवख्त सिंहराशिका वृहस्पति—और—धनमीनका सूर्यहो—तथा—गुरुशुक्रग्रह अस्तहो—उसवख्त विवाह—दीक्षा—और—प्रतिष्ठा—करनामुनासिव नही. संक्रांतिके रौज तथाउसके दूसरेरौज—ग्रहणहो—उसरौज—तथा—उसकेबाद सातरौज तक—विवाहकरना मनाहै, जन्मलग्न—जन्मवार—जन्मनक्षत्र—जन्मतिथि—और—जन्ममासमेंभी—विवाहकराना निषेधहै, जन्मलग्नकास्वामी अस्तंगतहो—या—कूरग्रहकरके पराजितहो उसवख्तभी विवाहकराना अच्छानही, जन्मराशिसें और जन्मलग्नसें आठमें लग्नमें विवाहहोना नेष्टहै, बुध—गुरु—या—शुक्रवार इनमेंसे कोईहो—विवाहकेलिये अच्छे है, स्थिर—द्विःस्वभाव—या—चर—इनमेंसे कोईसा लग्नहो अच्छे है, हां! उत्पात वगेरादोषकरके—रहित—और—लग्नशुद्धिमें उत्तमता जरूर देखलेनाचाहिये, विवाहलग्नकी उदयशुद्धि और अस्तशुद्धि भी अच्छे लोग जरूर देखलियाकरते है, लग्नकास्वामी—और—लग्नके



नवांशकास्वामी-नवांशकों देखताहो-या-नवांशमें युक्तहो-उसको उदयगुप्ति बोलते है, सप्तमनवांशकास्वामी-सप्तमनवांशकों देखता हो-या-सप्तमनवांशमें युक्तहो-उसको अस्तगुप्ति बोलते है, लग्न-दोपापग्रहोंकेबीचमें होनाठीक नही, चंद्रमाभी दोपापग्रहोंके बीच या-पापग्रह करके दृष्टहोना अच्छानही, लग्नमें शुभग्रहका नवां-शहो-और-उसको शुभग्रह देखातेहो-वैसे-लग्नपर विवाहकरना अच्छाहै, सूर्य-तीसरे-छठे-या-दशमेंभुवनमें होना अच्छा, चंद्रमा पहिले-छठे-और-आठमेंभुवनको छोडकर अन्यभुवनमें होना श्रेष्ठ, मंगल-तीसरे-छठेभुवनमें होना अच्छा, बुध-पहिले-दूसरे-चौथे-पांचमें-छठे-आठमें-या-दशमेंभुवनमें होना ठीक, बृहस्पति-पहिले-दूसरे-पांचमें-सातमें-नवमें-या-दशमेंभुवनमें होना अच्छा, शुक्र पहिले-पांचमें-छठे-या-दशमें-भुवनमेंहोना अच्छा, शनि-तीसरे-छठे भुवनमेंहोना उमदा, ग्यारहमें भुवनमें सभीग्रह श्रेष्ठहोते है, छठे-या-तीसरेभुवनमें राहु-हो-और-पांचमेंभुवनमें कोई पापग्रह न हो-और सप्तमभुवनमें शुभाशुभ कोईभी ग्रह-न-हो-ऐसे लग्नपर विवाहका मुहूर्त्त शोधनकरना ठीकहै, स्त्रीकेलिये बृहस्पतिकाबल देखनाचाहिये-पुरुषकेलिये सूर्यबल देखना अच्छा, और-चंद्रबल दोनोंकेलिये देखना अच्छा-और-चंद्रबल दोनोंकेलिये देखना-बहोतठीक होताहै, इसतरह शोधनकरके विवाहमुहूर्त्त निश्चय करे,

(१६७)-अगर ऐसा शुद्धलग्न-न-मिलेतो-सामान्यदिनगुप्ति देखकर चंद्रस्वरचलते वस्तु विवाहकार्यमें प्रवर्तना चाहिये, बरात चढतेवस्तु जरूर चंद्रस्वर लेकर चलना-तोरणछवतेवस्तुभी चंद्र-स्वर होतो उमदाहै, चंद्रस्वर अमृतनाडी फरमायी, इसमें गृहस्थ-

धर्मके जितने स्थिर और प्रभावशाली कार्य हैं अच्छे होते हैं, जिस पुरुषका विवाह अच्छे लग्नमें-या-चंद्रस्वरमें नहीं हुआ है उसको अपनी स्त्रीसे प्रेम नहीं रहता, इसलिये मुनासिब है अच्छे लग्न और अच्छे स्वरमें विवाह करे, अगर लग्न कमजोर भी हो-कोई हर्जकी बात नहीं, स्वर चंद्र होना चाहिये, हस्तमेलनके वस्तु तो चंद्रस्वर जरूर होना चाहिये, अगर सवाल किया जाय कि सारी रात चंद्रस्वर न-चले तो क्या करना ?-(जवाब.)-स्वरका बदलना घंटेघंटे भरमें हुआ करता है, सारी रात चंद्रस्वर न चले यह नहीं बन सकता, अगर सवाल किया जाय कि-ऐसी देखादा स्त्री करके खाली बहे में पड़ना क्या फायदा ?-(जवाब.)-जिसकी इच्छा न हो मत देखो, शास्त्रकारोंका फरमाना जो माने उनको लिये है, न माने उनको लिये शास्त्र क्या ?-सर्वज्ञ भी कुछ चीज नहीं है, ज्ञानीयोंका फरमाना अच्छे लोगोंने हजारदफे शिरपर चढ़ाया है, और अब भी लाखों करोड़ों लोग शिरपर चढ़ाते हैं, कुछ गिनतीके लोगोंने नमाना तो कुछ परवाह नहीं.

(१६८)-विवाहका मुहूर्त मुकरर हो जाय जब वरके संबंधी लोग कन्याके संबंधीयोंको लिखे कि-अमूकरौज विवाहका मुहूर्त है, फिर कन्याके संबंधी ज्योतिषीको बुलाकर लग्नपत्र लिखावे कि-हमारे कुलकी अमूकनामकी कन्या तुम्हारे कुलके अमूकनामके वरको पंचोंकी साक्षीसे दिह जायगी. उसका यह लग्नपत्र भेजा जाता है, वह लग्नपत्र जब वरके मातापिताके पास पहुंचे आदरपूर्वक लेवे, उस वस्तु वरकी तर्फका कुलगुरु इस आगे लिखे हुवे मंत्रको पढ़े, [मंत्र:]—ओं ऐं हं परमसौभाग्याय-परमसुखाय-परमभोगाय-

परमधर्माय-परमयशसे-परमसंतानाय-भोगोपभोगांतराय-व्यवछेदा-  
य-इमां अमूकनाम्नीकन्यां-अमूकगोत्रां-अमूकनाम्नेवराय-अमूक-  
गोत्राय ददाति प्रतिगृहाण अँई ओँ,—फिर मरके मातापिता-गेहने  
कपड़े और इतरफूलेल कन्याकेघर भेजवावे, जब विवाहकेपहिले  
अंदाजन पनराहरौज रहजाय-अच्छेवरुत्तर सोहागनस्त्रीयें मि-  
लकर बाजेगाजेशाय कुंभकारके घरजाय,—और-चार मंगलकलश  
बधायकर अपनेघर लावे, मीटीका घड़ा सवकार्यमें मंगलीक मां-  
नागयाहै, सोनाचांदीके कलश अलबते! मौलमें ज्यादा है, लेकिन!  
अच्छेकाममें पहिले मीटीका घड़ाही अच्छासमझागयाहै, दूसरा  
यहभी कारण हैकि-इसअवसर्पणोर्कालमें रिषभदेवभगवान्के वरुत्त  
पहिलपहिले कुंभकार शिलरही जारीहुवाथा, इसलिये गृहस्थावा-  
सके अवसरमें उसका सत्कारकरना पहिले बयानकियागया, इस-  
तरह चाकबधायकर कुंभकारके घरसें चार मंगलीकघड़े अपनेघर  
लाना-और-उसकों अच्छेकमरेमें स्थापन करना चाहिये, इसरौ-  
जसें समझो विवाहका आरंभहुवा, कुंभकारकेघरसें मंगलकलश  
लाना जैसे वरकेघरसें होताहै कन्याकेघरसेंभी होनाचाहिये, दो-  
नोंके घर गीतगान होना-पीठीबटनालगाकर स्नानमज्जनकरना-  
और-शिगारपहेनना-ये-कार्य गुरुहने चाहिये, जब विवाह  
गृहर्तके आडे सात-या-पांच रौज रहजाय वरके तथा  
कन्याके दोनोंके घर जवारारोपन करना चाहिये, पांचप्याले मी-  
टीके लेकर उसमें जबधान्यकों बौना और उनकों उसमंगलीक  
घड़ेकेपास स्थापनकरना, इसतरह जवारारोपन कियेबाद वहांही  
उसकेपास एकचौंकीपर सातकुलकरोंकी-और-एकचौंकीपर शा-  
सनदेवीकी स्थापना करनाचाहिये,

(१६९)—सप्तकुलकरोंकी स्थापना इसतरहकरना, स्वयंवक्ति-  
 सेहुवे चार मंगलकलश-और-जवारारोपनकेसप्त-सौत्रेनांदीका-  
 या-काष्ठका-पट्ट-स्थापनकरे, स्थापनकरतेवकत-[ ओं आभारसत्त-  
 मः आभारसत्तयेनमः आसनायत्तयः ] इसमंत्रको सातदफे पढ़े, फिर,  
 [ ओँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतं वर्षिणी अमृतं वर्षय वर्षय स्वाहा, ] इ-  
 समंत्रको पढ़कर कुंकुमचंद्रन असतसें पढ़का अभिषेककरे, (मन्त्री)  
 उसकी पूजाकरे, और उसपर इसतरह ॐ सातपुंज ज्ञानलौ-  
 का बनावे, फिर एकएकपुंजपर एकएककुलकरका मंत्रपढ़कर उ-  
 सकी स्थापना श्रीफल और पुष्पमालसें करे, प्रथमकुलकरकी स्था-  
 पनाका मंत्र इसतरहहै,—[ मंत्रः ]—ओं नमः प्रथमकुलकराय-कांचन  
 वर्णाय-श्यामवर्णचंद्रयशाम्रियतमासहिताय-हाकारयात्रलुवापित-  
 न्यायपथाय-विमलबाहनाभिधानाय-इहविवाह महोत्सवादौ-आम-  
 च्छआमच्छ-इहस्थानेतिष्ठतिष्ठ-समिहितोभवभवक्षेमदोभव-उत्सव-  
 दोभव-आनंददोभव-भोमदोभव-कीर्त्तिदोभव-अपत्यसंतानदोभव  
 स्नेहदोभव-राज्यदोभव-अर्थ-पार्थ-बलिं-अर्चा-आचमनीयं गृहाण  
 गृहाण-सर्वोपचारान् गृहाणगृहाण-ऐसामंत्र पढ़कर सातपुंजोंमेंसें  
 उपरकेप्रथमपुंजपर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापनाकरे और उ-  
 सपर एकरूमाल-रूपया-या-शक्तिहोतो-एकमहोर-चढ़ावे-फिर धूप  
 दीप-नैवेद्य-फल-फूल-और-इतर-चढ़ाकर-उसस्थापनाकेपास-दो  
 पानबीदी धरे, यह प्रथमकुलकरकी स्थापना और पूजाहै, [ इ-  
 सरेकुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै. ]—(मंत्रः)—ओं नमः द्विती-  
 यकुलकराय-श्यामवर्णाय-चंद्रकांताम्रियतमासहिताय-हाकारयात्र-  
 लुवापितन्यायपथाय-जम्बुध्वानाभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ

आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरहमंत्रपढ़कर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखे मुजब करना, [ तीसरेकुलकरकी ] स्थापनाका मंत्र इसतरह है. [ मंत्रः ]-ओंनमःतृतीयकुलकराय-श्यामवर्णाय-सुरूपाम्रियतमासहिताय-हाकारमात्ररूपापितन्यायपथाय-यशस्मानभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्) इसतरह मंत्रपढ़कर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखे मुजबकरना, [ चौथे कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरह है ]-(मंत्रः)-ओंनमःचतुर्थकुलकराय-श्वेतवर्णाय-श्यामवर्णम्रियतमासहिताय-माकारमात्ररूपापितन्यायपथाय-अभिचंद्राभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्) इसतरह मंत्रपढ़कर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपर लिखे मुजब करना. [ पांचवें कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरह है, ]-(मंत्रः)-ओंनमःपंचमकुलकराय-श्यामवर्णाय-चक्षुःकांताम्रियतमासहिताय-धिकारमात्ररूपापितन्यायपथाय-प्रप्तेनजिदभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थानेतिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरह मंत्रपढ़कर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापनाका पूजा उपर लिखे मुजब करना--[ छठेकुलकरका-मंत्रइसतरह है, ]-(मंत्रः )-ओंनमःषष्ठमकुलकराय-स्वर्णवर्णाय-श्यामवर्णम्रियतमासहिताय-धिकारमात्ररूपापित न्यायपथाय-मरुदेवाभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ-आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरहमंत्रपढ़करश्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखेमुजब करना, [ सातवें

कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै, ]-( मंत्रः )-ओंनमःसप्तपकु-  
लकराय-कांचनवर्णाय-श्यामवर्णमियतमासहितायविकारमात्ररूपा-  
पितन्यायपथाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने  
तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-( श्लेषं पूर्ववत्. )-इसतरहमंत्र पढ़कर श्री-  
फल और पुष्पमालकी स्थापनापूजा उपरलिखेमुजब करना, सप्त-  
कुलकरोंकी स्थापना कियेबाद उनकेपास दूसरी चौकीपर श्वास-  
नदेवीकी स्थापना करनाचाहिये, सोनेचादी-या-काष्ठका-पट्ट स्था-  
पनकरना-और उसका अभिषेककरनावगेरा जैसे-कुलकारोंकी  
स्थापनाकेलिखे लिखआये-वैसे-करके एकचौकी स्थापनकरना-  
और-उसपर चावलोंका एककमल आठपांखड़ीका बनाना, [शा-  
सनदेवीकी-स्थापनाका-मंत्र इसतरहहै. ]-ओंनमोभगवतीश्वासनदे-  
वि!-चतुर्थगुणस्थानवर्तिनि-जैनैन्द्रधर्मालंकारसज्जितांमि-पुन्यमुखि!  
अस्मिन्विवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-स-  
न्निहिताभवभव-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-अलंकारं गृहाणगृहाण-सर्वसिद्धिं  
कुरुकुरुस्वाहा. इसमंत्रको पढ़कर उसकमलपर श्रीफल-और-पुष्प-  
माल स्थापनकरना-और-धूप-दीप-नैवेद्य-गुद्रावगेरा चढाना,-  
फिर षोडशविद्यादेवीयोंके नामसें जिसतरह दिवारपर सोलह टीके  
लगाना-और जिसतरह चित्रमय स्वस्तिक तथा मंगलकलश ब-  
नाना उसकी स्थापना निचेमुजबबतलाइ जाती है,

## [ कौतुकाचारकी स्थापनाका आकार. ]



## ( षोडश विद्यादेवीकी स्थापना, )

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*

मंगलकलश—२,  
जवाराकेप्याले-२,सप्तकुलकरकी  
स्थापना.

\*

जवारेकाप्याला-२

शासनदेवीकी  
स्थापना.

\*

जवाराकेप्याला२,  
मंगलकलश—२,

चार मंगलकलश-सातकुलकर-शासनदेवी-जवारारोपन-षो-  
डशविद्यादेवी-चित्रमयस्वस्तिक-और-मंगलकलश-उपरलिखेमुजब  
देखलो, चारमंगलकलश-पांचजवाराकेप्याले-सप्तकुलकर-और-  
शासनदेवी-इनकीस्थापना भूमिपर करनाचाहिये, और षोडश-

विद्यादेवी-स्वस्तिक-और-चित्रमयकलश-इनकी-स्थापना-दिवार-पर करना चाहिये, षोडशविद्यादेवीयोंके नाम-रोहिणी प्रज्ञप्ति-व-ज्रमृगला-वज्राकुशी-अमतिचक्रा-नरदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गंधारी-महाज्वाला-मानवी-वैरुध्या-अल्लुप्ता-मानसी-महामानसी इनमें-जो-काली-महाकालीनामकी देवी है उनको समस्तवतीही जानना, जिस कालीमहाकालीको मिथ्यात्वश्रद्धावाले मानते हैं, मांसमदिरा चढ़ाते हैं उसको-यहां नहीं समझना, भूमिपर चारमंगलकलशकी स्थापनाकरना जो उपरलिखआये-वो-इसतरह समझनाकि-दोनोंबाजु दोदो कलश-एकपरएक उपरनीचे धरना-नीचेकाकलश कुच्छबड़ा और उपरका कुच्छछोटाहोनाचाहिये, घाते खूबसूरती मालूम दे, उपरलेदोनोंकलशोंपर एकएकश्रीफल और राजलक्ष्माल-लच्छेसहित बांधदेनाचाहिये, उनकलशोंके बीचमें-जमीनपर जो दोहाथका फासला छोड़ा है उसमें कुलकर-और-शासनदेवीकी स्थापनाकी चौकी-तथा जवारेके पांचप्याले उपरबतलायेमुजब स्थापनकरना. इसस्थानकानाम शास्त्रोंमें कौतुकागार फरमायाहै, जहांजहां विवाहसंस्कारमें कौतुकागार नाम लियाजाय वहां यही स्थान जानलेना, इसकीस्थापना वरके तथा कन्याके दोनोंकेघर किइजाती है, और विवाहपूर्णहुवेबाद सातदिनतक रखीजाती है,

(१७०)-विवाहके प्रारंभमें जिसदिन पुनासिव्रतमश्राजाय वरकेपास साफजगहपर एकमंडप बनानाचाहिये. स्थंभोंपर आरीसे दरवजोंपर-तोरण-धजापताका-मंडपके उपर चांदनी-हांडीतखते वनेरा मकानकीसजावट अकसर विवाहकाममें जरूरकरना पड़ती



है, कन्याके घर मंडप ऐसा बनाना चाहिये कि-जिसमें-ठीक बीचमें-एक बेंदी और चौरी बनानेकी जगह तयार रहे, कइलोग विवाह कार्यमें लाखों रुपये लगा देते हैं और कइलोग इज्जतमें कलंक लगाकर कंजुसाइका टीका लगवा लेते हैं असलपूछो तो दोनों बातें ठीक नहीं, घरबैचकर संसारमें चाहवाह कराना, या-धनवान् होकर कंजूस बनना दोनों काम अच्छे नहीं, आदमी उसका नाम है-जो-अपनी शक्ति-और-इज्जतकों संभालकर चले, हां!-इतना जरूर कहे-किमें-फजूल खर्च करना मुनासिब नहीं, लग्नदिवससे पहिले जब बरात चढ़े तब अच्छे गेहने कपड़े पहनकर वर अश्वारूढ़ होके चले, सबके अगाड़ी बाजा-उसके बाद-बराती लोग-और वरके-पिछाड़ी सोहागन स्त्रीये मंगलगीत गाती हुई प्रयाण करे, कइदेशोंमें गवैये लोग और वारांगना नृत्य गान करती हुई बरातमें साथ चलती है, यह देशदेशकी रसम न्यारी न्यारी है, लेकिन! हां!-ज्ञानी लोग इसको पसंद नहीं करते, बल्किन्! मना फरमाते हैं, असलमें यह बात ठीक भी है कि-इसका नतीजा अच्छा नहीं. अकसर करके नयी उमर-वाले युवान मोहित होकर घरका धन जरूर उड़ा देते हैं, आतिस्वा-जो-(यानी)-बारूदखाना-छोड़ना भी अच्छे लोगोंने पसंद नहीं किया. इसमें दोतरहके नुकशान हैं एक तो फजूल खर्च लगना-और-दूसरे जीवहिंसाका पाप शिरचढ़ना-इसलिये मुनासिब है कि-बारूदखाना-न-छोड़ना चाहिये, क्या!-राजा-या-रंक-कोइहो-विवाह होनेकी खुशी दोनोंके लिये एकसी है, गरीब होगा उसको भी एकदफे तो खुशीकी लहरे असर कर जायगी. जैसे लहकपैदा होनेकी खुशी राजाको और गरीबको एकसा होती है वैसेही विवाह-

कीखुशीभी एकसा समझनाचाहिये, इसमें दौलतमंद अपनी दौ-  
लतका घमंड लावेकि-जैसी मुजेखुशीहुइहै वैसी गरीबकों नहुइ  
होगी तो उसकाघमंडलाना फजुलहै. यह खुशीतो गरीबकों भी  
वैसीही होती है,

(१७१).-इसतरह बरात चलतीहुइ अगाडोबढे. और कुल-  
गुरु शांतिमंत्रपढताहुवा शाथचले,-[ शांतिमंत्र:]-ओं ऐंह-आदिमो  
अईत्-आदिमोनृप:-आदिमोदात-आदिमोनियंता-आदिमोगुरु:-  
आदिमः श्रेष्ठ:-आदिमोभर्ता-आदिमोजयी-आदिमोनयी-आदिमः  
शिल्पी-आदिमोविद्वान्-आदिमोजल्पाक:-आदिमःशास्ता-आदि-  
मःसौम्य:-आदिमःकाम्प:-आदिमःशरण्य:-आदिमोबंध-आदिमः  
स्तुत्य:-आदिमोज्ञेय:-आदिमोभोक्ता-आदिमः सोढा-आदिमण्क  
आदिमोनेक:-आदिमस्थूल:-आदिमः कर्मवान्-आदिमोऽकर्म-  
आदिमोधर्मवित्-आदिमोऽनुष्ठेय:-आदिमोऽनुष्ठाता-आदिमःसह-  
ज:-आदिमोदशवान्-आदिमः सकलत्र-आदिमोविवोढा-आदिमो  
ज्ञापक:-आदिमःकुशल:-आदिमोवैज्ञानिक:-आदिमःसेव्य-आदि  
मोगम्य:-आदिमोविभृश्य:-आदिमोविमर्ष्टा-सुरासुरनरोरगप्रणत:-  
प्राप्तविमलकेवल:-दयालु:-गरोपेक्षारहित:-परात्मा-परंज्योति:-परं  
बल-परमैश्वर्यभाक्-जगदुत्तम:-सर्ववित्-सर्वजित्-सर्वप्रशस्य:-स-  
र्वबंध:-सर्वपूज्य:-सर्वात्मा-असंसार:-अव्यय:-हृतशंस-यदूत:-  
विश्वसारो निरंजनो निर्ममो निकलंका-निःपापः निःपुन्यः  
निर्मना-निर्देही-निःशंसयो निराधारो निरवधि प्रमाणप्रमेयमा-  
ता-जीवजीवपुन्यपापश्रावसंवरबंधमोक्षप्रकाशक:-सएवभगवान्-शां-  
तिकरोतु-तुष्टिकरोतु-पुष्टिकरोतु-रुद्धिकरोतु-वृद्धिकरोतु-सुसंकरोतु

सौख्यं करोतु-लक्ष्मीं करोतु-अँई आँ,-[ इतिज्ञातिमंत्रः]-इसतरह चलतीहुइ बरात-जिनमंदिरमें और निर्मथगुरुकेपास नमस्कारकरने-कों जाय, फिर अगाडी बढे जिसगांवजानाहो एकगांवसें दूसरे-गांव प्रस्थानकरतेहुवे जाय, जब उसगांवमें पहुंचे-कन्याकेसंबंधी लोग-बरातकी-पेशवाइकरे, बरातसहित-वर-जब तोरणछबने जा-य-उसवरुत कन्याकेदरवजेपर-जो-आम्रपत्रका तोरण लगा होता है उसको अपने दाहनेहाथसे स्पर्शकरे, राजालोग तलवारसें स्पर्शकरते है, उसवरुत बाजेगाजेवालोंको और याचकोंको प्रीति-दान देनाचाहिये, अच्छेलोगोंका कायदाहैकि-भपनेको खुशीहो उसवरुत-दूसरोंकाभी खुश करना तोरणछवकर पीछा फिरे और जहां बरातका डेरा मुकुरर कियागयाहो वहां जाय,

(१७१)-जब विवाहमुहूर्तमें घंटाभरका फासलारहे-वर-बरा-तीलोगोंकेसाथ-घोडेपरसवारहोकर-कन्याके मंडपद्वारपर जाय, व-हां सासु-एककोरा मोटीकाघडा और कुंकुमवगेरा तिलककरनेकी सामग्रीलेकर सामने आवे और-वरको-तिलककरे, वर-उसमीठी-के घडेमें रुपया या-मोहर-वगेरा डाले, फिरवरके पांव-सासु-दू-धसें प्रक्षालनकरे,-और-मंथान-हल-मुशल-धूसर-तथा-चरखेकी आकसें वरको-पौखे,-(यानी)-इनचीजोंको लालकपडेमेंलेपेटकर अलगअलग तीनदफे वरके मस्तकतक फिरातीहुइउतारे, येचीजें बहोतछोटीछोटीबनीहुइ-इसीकामकेलिये तयाररहती है. हानीलोग इसपौखनेका मतलब इसतरह फरमाते हैकि-सासु-जो-तुमको मं-थान दिखलाता है इससें जानलो-विवाहहुवेबाद तुम गृहस्थावासमें मथे जाओगे, हल दिखलानेका यहमतलबहैकि-तुम-जमीनकीतर-

खेडात्तेरहोगे, मुसल दिखलानेका मतलब तुम अनाजकीतरह खंडात्तेरहोने, धूसर दिखलानेका मतलब तुम बैलकीतरह जोतेरहो- और चरखेकीत्राक दिखलानेका तात्पर्य तुम मायाजालसें लपेटे- रहोगें, सासु इसतरकीबसें तुमकों होशियार करती हैकि-अबभी- सौचलो-और-समझजाओ-विवाहमें कोइफायदा नही. वर-इसका अर्थ-ऐसे समझताहैकि-सासु-जो-हमकों येये चीजें दिखलाती है इससें हमारे येये फायदे होंगे, मंथानकेदिखलानेसें-जानाजाताहै हमारेघर दूधदही बहोतहोगा. हलदिखलानेसें जानाजाताहै हमारे खेतीवाडी बहोतहोगी, मुसल दिखलानेसें जानाजाताहै. हमारेघर अनाजबहोत खंडातारहेगा, धूसरदिखलानेसें जानाजाताहै हमारे घरमाडी बैल बहोत चलतेरहोंगे, और चरखेकीत्राकके दिखला- लसें कहसकते हैकि-हम-इसकी लडकीकेशाथ स्नेहतंतुसें बंधहुवेर- होंगे. इसलिये विवाहकाहोना अच्छा है ऐसा मानकर परवानगी देताहै, इतनेकामहुवेबाद-सासु-चूपहोकर बरकों भीतरआनेकी- अगाइ देती है, इसतरह अगाइहुवेबाद-बर-भीतरप्रवेशकरे, और जहां सप्तकुलकरवगेराकीस्थापना फिइहुइहो उसजगह कौतुका- गारमें जाय,-

(१७३)-वहां शींगारपहनकर कन्या पहिलेसें आनकर हा- जिररहे, कुलगुरु उसकों बरकीदाहनीतर्फ और कुलकरोंकी स्था- पनाके सामने बैठावे, फिर कुलगुरु-केशरचंदन-श्रीफल-और-सु- पारीवगेरासें-कुलकरोंकी और शासनदेवीकी पूजाकरावे, (यानी) सातश्रीफल-सातकुलकरोंकी स्थापनापर-और-एक-शासनदेवीकी स्थापनापर चढावे, केशरचंदनकुंकमके टीकेदिलावे, बाद लालसू-

त्रकी वरमाल बनाकर वरकन्याकों धारणकरावे, और फिर वरके दुपटेमें कन्याकी चुंदरीकी ग्रंथीबंधन करे, और पीसीहुइ शमीट्ट-क्षकीत्वचा-तथा-पोपलवृक्षकीत्वचा-मिलाकर वरकन्याके दाहने हाथमें देकर दोनोंका हस्तमेलन करावे, और इसमंत्रकों पढ़े, [हस्तयोजनमंत्रः]-  
 ओ अहं-आत्मासि जीवोसि-समकालोसि-सम-  
 कर्मासि-समाश्रयोसि-समदेहोसि-समक्रियोसि-समस्नेहोसि-समचे-  
 ष्टितोसि-समाभिलाषोसि-समेच्छोसि-समप्रमोदोसि-समविषादोसि  
 समावस्थोसि-समनिमित्तोसि-समवचोसि-समक्षुत्तृप्नोसि-समाग-  
 मोसि-समविहारोसि-समविषयोसि-समशब्दोसि-समरूपोसि-सम-  
 रसोसि-समगंधोसि-समस्पर्शोसि-समैन्द्रियोसि-समाश्रवोसि-समसं-  
 वरोसि-समबंधोसि-समनिर्जरोसि-सममोक्षोसि-तदैकत्वं इदानीं  
 अहं औ, -इतिहस्तयोजनमंत्रः, -फिर कन्याके संबंधीलोग मंडपमें  
 वेदीबनानेकीतयारी करे, वेदी चारहाथलंबी होनाचाहिये, उसके  
 चारों कोनेपर हरेवांशकी चौरी बनावे, सात-या-नव-छोटेछोटे  
 मोटीकेघड़े एकएकतर्फ क्रमसे बड़ेपरछोटा इसतरहरखे, -और-त्रि-  
 कोण हरेवासमें उनकों बंधन करे, इसतरह चौरी बनाकर चारों  
 तर्फ आभ्रपत्रकातोरण बांधे, वेदीके ठीकबीचमें त्रिकोणाकार  
 अग्निकुंड बनावे, फिर कुलगुरु कौतुकागारसे मंडपमें आनकर उ-  
 सवेदीकी प्रतिष्ठाकरे, पुष्प-चावल-कुंकुम-हाथमैलेकर वेदीकाप्र-  
 तिष्ठाकामंत्र पढ़े, [वेदीप्रतिष्ठा मंत्रः]-  
 ओन्नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै ।  
 सौंक्षीधूंक्षौक्षः-इहविवाहमंडपे आगच्छआगच्छ इहबलिपरिभोगं गृ-  
 न्हगृह-भोगंदेहि-सुखं देहि-यशोदेहि-संतर्तिदेहि-रुद्धिदेहि-वृद्धि-  
 देहि-सर्वसमोहितं देहिदेहिस्वाहा, इसमंत्रकों पढ़कर चारोंकोनेपर

(१७४)-वेंदीकामें पहुँचेबाद वरकन्याकों चौकीपर पूर्वकी-  
र्षमुखकराके बैठावे, कुलगुरु उत्तरदिशातर्फमुखकरके पास बैठे,  
कइदेशोमें ऐसारवाजहैकि-वरकन्याका-हस्तमेलन-इसवख्त-वेंदी-  
कामें आयेबाद करातेहै, लेकिन!-आवश्यकसूत्रकी टीकामें जहां  
रिषभदेवजीकेविवाहका वर्ननचलाहै वहां हस्तमेलन कौतुकागार-  
मेंही करनेका लेखहै, इसलिये वहांही करना मुनासिबहै, चौरीमें  
बैठेबाद कुलगुरु त्रिकोणाकारकुंडमें-जो-पहिले अग्नि स्थापनकि-  
इहै उसकों पींपल-या-कपिथ्यवृक्षके काष्ठोमें प्रज्वलितकरे, और  
उसमें घृत-मिश्री-जव-तील-इंद्रजव-नागरमोथा-छाछडीला-लॉग  
एलाची-रूपूरकाचली-और-चंदनकाबुरा वगेरा हवनकीसामग्रीमें  
होम करे, फिर वरकीदाहनीतर्फ बैठीहुइ कन्याकों उठाकर वरके-  
सामनेबिठावे, और यह मंत्र पढे, [मंत्रः]-ॐ अहं-इदमासनम-

ध्यासीनौ-स्वध्यासीनौ-स्थितौ-सुस्थितौ-तदस्तु-वां-सनातनःसं-  
 गमः अर्ह ओ, इसतरह मंत्र पढ़कर दुर्वासों पवित्रजलद्वारा वरक-  
 न्याकों अभिषेक करे, फिर कन्याका दादा-पिता-बडामाइ-या-  
 कोई वृद्धपुरुष-हो-वरकन्याकेपास बैठे, उसवरुत-कुलगुरु-नमोर्ह-  
 त्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः-ऐसापढ़कर कहेकि-आपके गौ-  
 त्रोंकासंबंध मैंने जाना-लेकिन ! इससमय सबकेरुबरुभी प्रकाशित  
 होनाचाहिये, ऐसासुनकर वरके संबंधीलोग अपना गौत्र-जाति-वंश-  
 प्रकाशकरे, फिर कन्याके संबंधीलोगभी इसीतरह गौत्रजातिवंशादि  
 प्रकाशकरे, तद अनंतर कुलगुरु इसतरह गौत्रका उच्चारणकरे, ओ अर्ह  
 अमुकगोत्रीय इयत्प्रवरः अमुकज्ञातिः-अमुकान्वयः-अमुकप्रपौत्रः-अमु-  
 कपौत्रः अमुकपुत्रः अमुकगोत्रीयः इयत्प्रवरः अमुकज्ञातीयः अमुका-  
 न्वयः अमुकप्रदौहित्रः अमुकगोत्रीयः इयत्प्रवरः अमुकज्ञातीयः अमु-  
 कान्वयः अमुकप्रपौत्री-अमुकपौत्री-अमुकपुत्री-अमुकगोत्रीयः इयत्प्र-  
 वरः-अमुकज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुकप्रदौहित्री अमुकमात्रीयः-इय-  
 त्प्रवरः अमुकज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुकप्रदौहित्री अमुकावधू-तद्यु  
 वयोर्निविडो विवाहसंबंधोस्तु-शांतिरस्तु-तुष्टिरस्तु-पुष्टिरस्तु-धनसंता-  
 नवृद्धिरस्तु-अर्ह ओ, फिर वरकन्याकेहाथसें गंधपुष्प-धूप-नैवेद्यव-  
 गेरासें अग्निकी पूजाकराके चावलक्रीधाणी अग्निमें प्रक्षेपकरावे,  
 और अपनीदाहनीतर्फ वरकों-और-बामीतर्फ कन्याकों बैठाकर  
 इसमंत्रकों पढे,-[ मंत्रः ]-ओ अर्ह-अनादिविश्वं-अनादिरात्मा-  
 अनादिकालः-अनादिकर्म-अनादिसंबंधो देहिनां-वेदानुमतानुग-  
 तानां-क्रोधाहंकारलज्जलोभैः संज्वलमनप्रत्याख्यानाप्रत्याख्याना  
 नंतानुबंभिभिः शब्दरूपरसगंधस्पर्शच्छापरिसंकलितैः संबंधो

सुबंधःप्रतिबंधःसंयोगःसुगमः सुकृतःस्वनुष्ठितः सुप्राप्तःसुलब्धो द्रव्य-  
भावविशेषेण अहं औ,

(१७५)—फिर कुलगुरु ऐसावाक्य उच्चारणकरे—तदस्तु-वां-  
सिद्धप्रत्यक्षं-केवलिप्रत्यक्षं-चतुर्निकायदेवप्रत्यक्षं-विवाहप्रधानाग्निप्र-  
त्यक्षं-नामप्रत्यक्षं-नरनारीप्रत्यक्षं-जनप्रत्यक्षं-गुरुप्रत्यक्षं-मातृप्रत्यक्षं  
पितृप्रत्यक्षं-मातृपक्षप्रत्यक्षं-पितृपक्षप्रत्यक्षं संबंधःसुकृतःसदनुष्ठितः  
सुप्राप्तःसुबंधःसुसंगतः—तुमारा विवाहसंबंध सिद्धप्रत्यक्ष केवलीप्र-  
त्यक्ष मातापिता सर्व जनप्रत्यक्ष उत्तमप्रकार हुआ, अग्निकीचौत-  
र्क प्रदक्षिणा दिजिये, फिर वरकन्या ग्रंथीबंधनसहित अग्निकी  
चौतर्क प्रथम फेराफिरे जिसमें कन्या आगे और वर पीछे रहे,  
णहिलाफेरा फिरकर पूर्वोक्त आसनपर बैठे, चावल-या-चावल्लोंकी  
धाणी हाथमें रखे, तदनंतर कुलगुरु इसमंत्रकों पढ़े,—[ मंत्रः ]—औ  
अहं—कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निविडमस्ति-दुच्छेद्यम  
स्ति अष्टाविंशतिप्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति  
संज्वलनोस्ति-प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानावरणोस्तिअनं-  
तानुबंध्यस्ति-चतुश्चतुर्विधोस्ति-हास्यमस्तिरतिरस्ति-अरतिरस्तिभ-  
यमस्ति जुगुप्सास्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति-स्त्रीवेदोस्ति नपुंसकवेदो-  
स्ति-मिथ्यात्वमस्ति-मिश्रमस्ति-सम्यक्तमस्ति-सप्तकोटाकोटीसागर  
स्थित्यस्ति-अहं औ, तदस्तु-वां-निकाचितनिविड बद्धमोहनीयक-  
र्मोदयकृतः स्नेहसुकृतोस्तु सुनिष्ठितस्ति-सुसंबधोस्तु-आभवमक्षयो-  
स्तु-अग्निकीचौतर्क प्रदक्षिणा दिजिये, फिर वरकन्या ग्रंथीबंधन  
सहित दूसरा फेरा फिरे, धाणीकीमुष्टि अग्निमें प्रक्षेपकरे, इसमेंभी  
कन्या अमाडीरहे, फिर उसीतरह चावल्लोंकीधाणी मुष्टिमें लेकर



पूर्वोक्त आसनपर बैठे, और कुलगुरु इसमंत्रको पढ़े,—[ मंत्रः ]—औं  
 अहं-कर्मास्ति वेदनीयमस्ति सातमस्ति असातमस्ति सुपुंवेद्यंसातं दु-  
 पुंवेद्यं असातं-सुवर्गणाश्रवणंसातं-दुर्वर्गणाश्रवणं असातं-शुभपुद्गल-  
 दर्शनंसातं-दुःपुद्गलदर्शनं असातं-शुभपुद्गलास्वादनंसातं-अशुभपुद्ग-  
 लास्वादनं-असातं-शुभपुद्गलस्पर्शनंसातं-अशुभपुद्गलस्पर्शनं-असातं  
 सर्वसुखंकृतं सातं-सर्वदुःखकृतं असातं-अहं औं, तदस्तु-वां-सातावे  
 दनीयं-माभूदमातावेदनीयं-तत्प्रदक्षिणी क्रियतां विभावसुः-फिर  
 वरकन्या उसीतर तीसरा फेरा फिरे, धाणीकी मुष्टि अग्निमें प्रक्षे-  
 पकरे, इसमेंभी कन्या भगाडी रहे, और उसीतरह पूर्वोक्त आसन  
 पर बैठे, फिर कुलगुरु इसमंत्रको पढ़े, [ मंत्रः ]—औं अहं सहजोस्ति  
 स्वभावोस्ति संबंधोस्ति-प्रतिबंधोस्ति-मोहनीयमस्ति वेदनीयमस्ति  
 नामास्ति गोत्रमस्ति आयुरस्ति हेतुरस्ति आश्रववद्धंअस्ति-क्रिया-  
 बद्धमस्ति कायवद्धमस्ति-तदस्ति संसारिकसंबंधः अहं औं,—इसमंत्रके  
 पूरेहोनेपर कुलगुरु-कन्याके-पिता-चाचा-बडाभाइ-या-जोकोइ-  
 कुलमेंबडाहो उसकेहाथमें तिल-जव-कुश-और-जलदेकर ऐसेकहे,  
 अद्यअमुकसंवत्सरे-अमुकायने-अमुकऋतौ-अमुकमासे-अमुकपक्षे-  
 अमुकतिथौ-अमुकवासरे-अमुकनक्षत्रे-अमुकयोगे-अमुककरणे-अ-  
 मुकमुहूर्ते-पूर्वकर्मसंबंधानुबद्धवस्त्र गंधमाल्यालंकृतां-सुवर्णरूपमणि  
 भूषणभूषितां-कन्यां-ददात्पयं-प्रतिगृन्हीथ-ऐसाकहकर वरवधूके  
 हाथपर जल निक्षेप करावे, उमवरुत-वर-कहे-प्रतिगृन्हामि-कुल-  
 गुरु-कहे-सुप्रतिगृन्हितास्तु-शांतिरस्तु-तुष्टिरस्तु-पुष्टिरस्तु-ऋद्धिरस्तु  
 वृद्धिरस्तु-धनसंतानवृद्धिरस्तु-इतनाकहकर-वरको-भगाडी और क-  
 न्याको पिछाडीकरके कहे-अग्निकीचौतर्फ प्रदक्षिणा किजिये, प-

हिलेके तीनफेरेमें वरकाहाथ कन्याकेहाथसें नीचे रखागयाथा-इ-  
 सचौथे फेरेमें-वरकाहाथ-उपर-और-कन्याकाहाथ-उसकेनीचे र-  
 खनाचाहिये, फिर वरकन्या अग्निकीचौतर्फ चौथाफेरा फिरे,धा-  
 णीकीमुष्टि अग्निमें प्रक्षेपकरे, चौथे फेरेके अंतमें कन्याकों वरके  
 बामीतर्फ पूर्वोक्त आसनपर बैठावे, इसवख्त-कन्याका-पिता-या-  
 उसकेकुटुंबका-औरकोइवृद्धपुरुषहो-वस्त्र-आभूषण-हाथी धोडा-रथ  
 पालखी-दासदासी-जोकुच्छ देनाहो-शक्तिपुआफिक देवे, औरभी  
 कुटुंबीलोग जोकुच्छ देनाहो-इसवख्त-देसकते है, फिर कुलगुरु-  
 दुर्वा-अक्षत-वगेरा सुगंधिवस्तु हाथमेलकर-येनानुष्ठानेन-आद्योअ-  
 र्हन्-शक्रादिदेवकोटि परिवृतो भोगाय-संसारजीवव्यवहारमार्गसंद-  
 र्शनाय-मुनंदासुमंगले-पर्यणैषीत्-ज्ञातमज्ञातं-वा-तदनुष्ठानानुष्ठितम  
 स्तु, -ऐसा कहे और वरकन्याके मस्तकपर प्रक्षेपकरे, फिर कन्या-  
 कापिता-जव-तील-कुश-और-जलकों हाथमेंलेकर वरकेहाथमें दे-  
 वे. और ऐसेकहेकि [ दायंददामि ] अर्थात् दायचादेताहूं-वर-कहे  
 [ प्रातिगृह्णामि ]-अर्थात् लेताहूं, इसवख्त कुलगुरु कहे [ सुगृहित-  
 मस्तु-सुपरिगृहितमस्तु ] इसवख्त जमीनजहागीर भांडेबर्तन जोकु-  
 च्छ देना हो फिर देवे, इसतरह दायचादियेबाद कुलगुरु ऐसेकहे  
 वधूवरौ-वां-पूर्वकर्मानुबंधन निविडेन-निकाचितबद्देन-अनुपवर्त्त-  
 नोयेन-अनुपायेन-अश्लेषेन-अवश्यभोग्येन विवाहःप्रातिबद्धो बधूव  
 तदस्तु-अखंडितो अक्षयो अव्ययो निराबाधःसुखदोस्तु-शांतिरस्तुपु-  
 ष्ठिरस्तु ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु धनसंतान वद्धिरस्तु, ऐसे वचनबोल-  
 कर तीर्थजलसें कुशाग्रद्वारा वरकन्याकों अभिषेककरे, इतनेकार्य  
 हुवेबाद चौरीमेसें उठाकर कौतुकागारमें जहां कुलकरोकीस्थाप-  
 नाहै वहां लेजाकर बैठावे,

( १७६ )—वहां कुलकरोकी स्थापनाके रुबरु कुलगुरु ऐसे कहे अनुष्ठितो—वां—विवाहः—समस्नेहौ—समभोगौ—समायुषौ—समधर्माणौ—समसुखदुःखौ—समशत्रुमित्रौ—समगुणदोषौ—समवाङ्मनःकायौ—समाचारौ समगुणौ भवेतां—इसप्रकारकहकर—करमोचनकरनेका मंत्रपढ़े, [ करमोचनमंत्रः ]—ओं अँह—जीवस्त्वं कर्मणाबद्धः—ज्ञानावरणेनबद्धः—दर्शनावरणेनबद्धः—वेदनीयेनबद्धः—मोहनीयेनबद्धः—आयुषाबद्धः—जात्याबद्धः—गोत्रेणबद्धः—अंतरायेणबद्धः—प्रकृत्याबद्धः—स्थित्याबद्धः—रसेनबद्धः—प्रदेशेनबद्धः—तदस्तु—ते—मोक्षोगुणस्थानक्रमारोहक्रमेण—अँह ओं, मुक्तयोःकरयोस्तु—वां—स्नेहसंबंधो अँखंडितः—एसाकहकर वरवधूका हस्तमोचन करावे, इसवरुत—कन्याकापिता—जमाइकों—जोकुच्छदे—नाहो देवे, फिर कुलगुरु इसकाव्यकों पढ़े—[ काव्यं ] पूर्वयुगादिभगवान् विधिनैव येन—विश्वस्य कार्यकृतये किल पर्यणैषीत्—भार्याद्वयं तदमुनाविधिनास्तु युग्मं—एतत्सकामपरिभोगफलानुबंधि—१,—इसतरहमंगलवाक्य उच्चारणकरके ग्रंथीमोचन करावे, [ अचलसौभाग्यं अस्तु भवतां ] ऐसा आशीर्वचन बोले, फिर कौतुकागारसें चलकर वरवधू बहार आवे और—बरातीलोगोंकेसहित जिसआडंबरसें आयेथे वाजेगाजेकेशाथ अपने डेरे पर जाय, दोचाररौजकेबाद जब बरातकी विदागीरीहो—वहांसें—चलकर अपनेशहर आवे, और वाजेगाजेकेशाथ अपनेघरमें प्रवेश करे, याचकलोंगोंकों दानदेवे, जिनजिन नोकरचाकरोंकी जितनीजितनीतनखाह ठहराइहो तु देवे, बरात घरआये बाद सातरौजपीछे—कुलकरकी स्थापनाकों—विसर्जनकरे, विसर्जनकरतेसमय प्रत्येककुलकरकी पूजाकरना और प्रत्येककुलकरका मंत्र जो ( १६९ )मी कलममें लिखआये है देख-

कर पढ़ना-मंत्रपुराहोनेपर-[पुनरागमनाय स्वाहा]-इतनापद बोलकर प्रत्येककुलकरकी स्थापनाकों विसर्जन करना, इसीतरह शासनदेवीकीभी पूजाकरके-मंत्र-जो-उसी ( १६९ ) मो-कलयमें-लिखआयेहै देखकर पढ़ना, मंत्रपुराहोनेपर [पुनरागमनाय स्वाहा] कहकर शासनदेवीकी स्थापनाकों विसर्जन करना,

( १७७ )-विवाहकी रसम कइदेशोंमें न्यारीन्यारी है लेकिन ! उपरलिखीहुइ विधि सबकों मान्यरखनेयोग्यहै, विवाहकाकाम पुराहोजाय तब धर्मके उत्तेजनमेंभो ध्यानदेनाचाहिये, विवाहमें तरहतरहके खानपानकिये, तरहतरहके आनंद भोगे,-और तरहतरहके गायन सुने, तो अबधर्ममेंभो ध्यान देना चाहिय,-स्वधर्मावात्सल्यकरके धर्मज्ञजनोकों जीमानाचाहिये,-जिनमंदिरमें तरहतरहके नैवेद्यधरके रागरागणीसैं पूजन करानाचाहिये, तीर्थयात्रामें और साधुसाध्वीयोंकी सेवामें द्रव्यव्ययकर धर्मकीबढवारी करनाचाहिये, संसारीककाममें हजारोंहै रुपये लगाये तो आधाचोथाइ दशांशषोडशांश धर्मकाममेंभी लगाना मुनातिबहै, अपशोषहैकि-आजकलकेजमानेमें धर्मतर्फ लोगोंकी निगाह घटती जाती है, धर्मकी बातें बतलानेवालोंकों-लोग-हंसोंमें उडाते है, लेकिन ! यादरहे ! सुख और आनंदजितना तुम पायेहो धर्मरूपी कल्पवृक्षका फलहै, सुंदरस्त्री-अच्छेमकान-अच्छासवारी-और-अच्छाखानपान सब धर्मकी बढौलतमिलाहै, पूरवजन्ममें तुमने धर्म कियाथा उंसीका यह नतीजाहै,

( १७८ )-विवाहहुवेबाद स्त्रीपुरुषमें स्नेहवृद्धि जरूरहोती है, लेकिन ! ऐसा स्नेह किसकामका जो अपनेइज्जतमें कलंक लगे,

स्त्रीकों मुनासिबहै पतिके हुकममें चलना, जो पुरुष अपनीस्त्रीकों अपनेहुकममें नहींचलाते उनकों पुरुष नहीं बल्किन् ! स्त्री-कहना चाहिये, ज्यूज्यू स्त्रीकों शिरचढाओगें बहोतपस्ताना पडेगा, जिनकेघर दोस्त्री है उनकों महाविडंबना रहेती है, आजकल वैसे पुन्यवान् नहीं रहे जिनकेघर बत्तीसबत्तीसस्त्रीयें होतेहुवेभी टंटेझगडेका कुच्छकामनही था, दोस्त्रीकी चाहना छोडकर एकहीमें संतोषकरो तो अच्छाहै, राजाओंकी देखादेखी तुम राजे मतबनो, अपनीपुन्यवानी तर्फ खयालकरो, ज्यूज्यू स्त्रीकों बहोतमनाते जाओगे-तुमारे शिरचढतीजायगी, स्त्री-पुत्र-नोकर-और-चोला-पहिछे दिनसेही अंकुशमें रखोगे तो अच्छाहै, अगर तुम समझतेहोगें पीछेसें अंकुशमें करलेगें तो यहसमझना फिजुलहै, इसपर अनुयोगदारसूत्रकी टीकामें जो एककथा लिखी है यहांपर सुनादेते है, सुनकर अमलकरना, एकस्त्रीकों तीनलडकीयें कवारी मौजूद थी, जब उसमेंसें एकलडकीका-विवाहहुवा माताने उसकों सिखलायाकि-बेटी ! जब तूं अपनेपतिके पास जाय उसकीपीठपर पांवसें एकलात मारदेना, और वह जोकुच्छ तुजेकहेसुने सवेरे आनकर मुझे कहना, लडकीने विवाह हुवेबाद पहिलेरौज उसीमुताबिककिया, (यानी)-लात मारदी, पति-कुच्छनहीबोला, उल्टाकहनेलगा तेरेपांवमें लगीतो नहीं ! बस ! इसीतरह बातेंकरते हुवे-रात पूरीहुइ जब लडकी अपनीमाताकेपास गई, माताने सबबात सुनी औरकहा बेटी ! तेरे पतिमें कुच्छदम नहीं है, तेरे आधीनमें रहेगा, जो तूं नाच नचावेगी नचेगा, खुश रहना, दूसरी बेटीका विवाह हुवा तब उसकोंभी सिखलायाकि-तूंभी जब तेरेपतिके पासजाय

उसकीपीठपर एकलात मारदेना, उसनेभी पतिकेपासजाकर उसकीपीठपर एकलात मारदीइ, पतिने गुस्साखाकर कहा-नालाइक ! तूं किस चांडालकी लडकी है ?-क्या ! पतिसैं पहिल पहिले मिलतेबख्त ऐसे करना चाहिये ?-खैर ! आजका गुनाह माफकर-ताहूं, लडकीने सवेरे जाकर अपनी माताकों सबबातकही, माताने कहा बेटी ! तेरापति कुच्छ हिम्मतबहादूर और कुच्छनार्मद है, इसलिये कुच्छ डरतीभी रहना और कुच्छ हुकमभी चलाना, फिर तीसरी लडकीका विवाह हुवा और उसकोंभी सिखलादियाकि-पतिकी पीठपर लातमारदेना, उसने उसीमुआफिक पतिकेपासजाकर उसकीपीठपर लात मारदीइ, पतिने उसीबख्त स्त्री के मुंहपर दोतमाचे ऐसे धरेकि-मुंहमेसैं लोही निकल आया, लालआंखकरके कहनेलगा नालाइक तूं किसचांडालकी लडकी है ? स्त्रीबख्त मेरेघरसैं चली जा, ऐसाकहकर गलापकडकर बहार धकेलदिइ, सारीरात-वो-रोतीरही, लेकिन ! पतिने मुंहसैंभी नही जुलाइ, सवेरहोनेपर उठकर अपनी माताकेपास गइ और कहने लगी तेने अच्छीसिखा दिइ, आज मेरातो मरनाहोजाता, माताने कहा क्या हुवा ?-बेटीने सबबात बयानकिइ, माताने कहा-बेटी ! मैतो-तेरे अच्छेकेलिये यहबात सिखलाईथी, याद रख !-तेरापति बडा बहादूरआदमी है, उससैं सदा डरती रहना, कभी सामने नहीबोलना, जोकुच्छ-वो-कहे उसमुजबकरना इसीमें तेरा अच्छा है, महाशय ! इसकथाका मतलब समझसको तो समझ लो, और तुमकों जिसमें दाखिलहोनाहो उसपंक्तिमें बैठजाओ, स्त्रीकों अपनेहुकमसैं बखिलाफ चलनेदेना अच्छानही, मुनासिबहै हुकममें

रखना, जो लोग कायर है उनको यहकथा कभी-न-सोहायगी, और जो बहादुरशस्त्राई है उसको आपहीआप रुच जायगी.

(१७९)-पनराहमा-व्रतारोपसंस्कार-जिसपुरुष-या-स्त्रीको व्रतलेनाहो-स्नानमज्जन करके अच्छेकपड़े पहनकर निर्ग्रन्थगुरुकेपास जाय-और-नमस्कारकरके प्रार्थना करेकि-महाराज! मुजको-व्रतलेनाहै, तब गुरु उसकीयोग्यतादेखकर यदि वह दीक्षाकेयोग्य और अभिलाषीहो-दीक्षा-देवे, और जो दीक्षालेनेकी ताकत-न देखे-तो-उसको गृहस्थधर्मके बारहव्रतमेंसे जितनेव्रतकी इच्छाहो अंगीकारकरावे, और समझावेकि-इसवस्त्र-तुम्हारीयोग्यता इतनीही है, कितनेकसाधु जोराजोरी व्रत प्रत्याख्यान दिलवाते है यहबात ठीकनही, कितनेकसाधु-गच्छकेपक्षपातसे-दूसरेगच्छके श्रावकों अपनेगच्छमें खेंचते है यहभी मुनासिबनही, कोईगच्छ-का साधु-या-श्रावकहो-जो-सर्वज्ञप्रणीतवचनानुसार धर्मपालनकरेगा उसका निर्वाण होगा, हां! जो सर्वज्ञप्रणीतशास्त्रके पाठको उध्यापन करेगा उसका निर्वाणहोना मुश्किलहै, दुनियामें जितनेमतमांतरवाले है सब अपने आपको सत्यवादी बतलाते है लेकिन! सत्यवादी वही है जो सर्वज्ञप्रणीतशास्त्रसे बाँझलाफ-न-हो, सर्वज्ञ-उसको समझना जिसकेवचनमें पूर्वापरविरोध-न हो, मिथ्या-भाषण न-करताहो सत्यसत्यवातका बयानकरनेवालाहो-आज-कल-सर्वज्ञपुरुष नही रहे, उनके कथन कियेहुवे शास्त्र-जो-मौजूद है उन्हीके फरमाने मुजब चलना चाहिये, सर्वज्ञोंको इसकालमें प्रत्यक्ष कोई नहीबितासकता सबबकि-वै-रहे नही, हां! अनुमान प्रमाणसे संवृत्तकरसकते हैकि सर्वज्ञ-जंकरहुवे,यहाँके-

कुनिषार्थे-जितनेपदार्थ है-वें-प्रमेयरूपहै-जो-जो प्रमेयरूप है वे-  
किसीकोनकर प्रत्यक्षहोनेचाहिये, इसलिये जानाजाताहैकि-य-  
मेयवस्तुका-जाननेवाला सर्वज्ञपुरुष जरूर हुवा.

(१८०)-दीक्षामुहूर्त्त-जिसरौज-अभिनी-रोहिणी-मृगशिरा-  
पुनर्वसु-पुष्य-पूर्वाफाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति-  
अनुराधा-ज्येष्ठा-मूल-पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-शत-  
भिषा-पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये-नक्षत्रहो-रवि-बुध  
गुरु-शनिवारहो-रिक्तातिथिकों छोडकर और कोइ तिथि-व्यति-  
पात वैधृति भद्रावगेराकुयोगसें रहित हो-उसरौज दीक्षादेनेका मु-  
हूर्त्त शोधनकरनाचाहिये,-गणिविज्जापयन्त्रमें जो-संध्यागत-रवि-  
गत-विटेर कुराक्रांत-बिलंबी-राहुगत-और-ग्रहभिन्न-ये सातदोष  
जो नक्षत्रके बयानकिये है-उनको-तथा-वेध-लत्ता-पात-और-ए-  
॥ अर्गलवगेरादोषोंको बचाकर शुद्धनक्षत्रको लेनाचाहिये, हां!कोइ  
अच्छायोग मिलजायतो नक्षत्रचाहे जो हो-हर्जनही जानना. धन-  
मीनके सूर्यमें वृहस्पतिके अस्तमें-अधिकमासमें जो पहिलाहै उस-  
में-तथा-चौमासेकेकालमें दीक्षादेना मनाहै, मिथुन-वृश्चिक-धन-  
और-कुंभलग्न दीक्षाकेलिये अच्छे है, वृषभ-और-तुलालग्न अ-  
च्छेनही. वृषतुलाका नवांशकभी दीक्षाकेलिये निषेधहै, और लग्न  
दीक्षाकेकालमें साधारणहै, लेकिन! लग्नशुद्धिमें बलवान् निकले  
तो लेना मनाभी नही, लग्नकी उदय और अस्तशुद्धि देखना  
चाहिये, दोनों एकसरस्वी-न-मीलेतो-उदयशुद्धि तो जरूर देखना  
चाहिये, दीक्षालग्नमें सूर्य-दूसरे-पांचमें-छडे-या-ग्यारहमेंभुवनमें  
देखाहोतो अच्छा, चंद्रमा-दूसरे-तीसरे-छडे-चारहमें होतो अच्छा,



मंगल-तीसरे-छठे-दसमें-ग्यारहमें होतो ठीक, बुधभी-तीसरे-छठे-दसमें-ग्यारहमें होना अच्छा है, बृहस्पति-केंद्र-या-त्रिकोणमें होना उत्तम, शुक्र-तीसरे-छठे-नवमें-बारहमें होना अच्छा, शनि-दूसरे पांचमें-आठमें-ग्यारहमें होना ठीक, सूर्य-तीसरे-भुवनमें बैठना अच्छानहीं। चंद्रमा-दसमें ठीक नहीं, बुध-या-बृहस्पति-आठमें-बारहमें अच्छे नहीं, शुक्र-केंद्रमें-या-आठमें-ठीक नहीं, शनि-तीसरे-छठे-अच्छानहीं, मंगल-शुक्र-और-शनिसं-सातमें चंद्रमा ठीक नहीं, चंद्रमासे सातमें-राहु-केतुभी अच्छे नहीं, सूर्यके साथ चंद्रमा बैठजाय तो राज्यकी तर्फसे भय पैदा हो, मंगलके साथ चंद्र बैठे तो कलेशकारी जानना, बुधके साथ चंद्र बैठे तो-तकलीफकी निशानी है, बृहस्पतिके साथ चंद्र बैठे तो बड़ी तकलीफ होगी, शुक्रके साथ चंद्र बैठे तो मान भंग होना पमे, शनिके साथ चंद्र बैठे तो-विपत्ति पैदाकरे, चंद्र बुध गुरु-या-शनिका-लग्न-और-इन्हीका नवांशक दीक्षाके वरुत होना अच्छा है, होराद्रेष्काणवगेरा षड्वर्गभी इन्हीका होना ठीक होता है,

( १०१ )-दीक्षा किसी अच्छे स्थानमें जाकर देना चाहिये, बाग बगीचेमें-या-किसी दूसरे रमणीक स्थानमें तीन चौकी एकपर एक रखकर उसपर सिंहासन धरके जिन प्रतिमा स्थापन करना, और दीक्षा लेनेवाले शिष्यकों वहां ले जाना। वहां पहुंचनेपर नमस्कार कराके जिन प्रतिमाके सामने चार पांच हाथके फासलेपर उसको खड़ा रखकर पांच सात फुल उसके हाथमें देना-और-जिनप्रतिमाके सिंहासनपर क्षेपन कराना, अर्थात् सिंहासनपर फुल उछालना, अगर एकभी फुल सिंहासनमें न पड़े तो

जानना इस श्रृंखलेसे दीक्षा न पल सकेगी, फिर दूसरी दफे प्रक्षेप कराके देखना, और फिर तीसरी दफेभी इसीतरह देखना, अगर एक दफेभी सिंहासनपर फुल जागिरे तो जानना अच्छा है, तीनोंही दफे फुल खाली जाय तो मुनासिब है अयोग्य समझकर उसको दीक्षा न देना, अगर सवाल किया जायकि-इतना महोच्छव-करकेभी क्या वृथा जानेदेना चाहिये? ( जवाब. ) हां!-बे शक!-वृथा जानेदेना, कोई हर्जकी बात नहीं. जिस काममें अगाड़ी जाकर बुरा नतीजा पाना है उसको पहिलेहीसे क्यों करना!-यह अधिकार पंचाशक सूत्रकी टीकाके अधिकारसे लिखा गया है, जिनको संशय हो देखलेना. अगर कोई सवाल करे-कि-साधु होकर श्रावकके पास सचित फूल कैसे उछलवावे?-(जवाब.) शास्त्रोंमें कइ जगह ऐसा बयान है कि-शिष्यकी परीक्षा के लिये-गुरु बहार भूमिका जाते हुवे रास्तेमें जान बुझकर आप वनास्पतिपर कदम देते हुवे चले. अगर चेला गुरुके पीछे पीछे वनास्पतिही उपर चला आवे और विनयके साथ कहेभी नहीं कि-आप रास्तेकी मौजूदगीमेंभी वनास्पतिपर किस कारणसे चलते है?-तो-जानना चाहिये कि-चलेके दिलमें रहेम नहीं है, अगर सवाल किया कि-इसमें गुरुको दोष लगाया नहीं!-(जवाब.) हरगिज नहीं लगा, सबबकि-इरादा उनका शिष्यकी परीक्षा करनेका था, इसीतरह यहांभी शिष्यकी पुन्यवानीकी परीक्षा करनेके लिये फूल उछलवाना कोई हर्जकी बात नहीं. कोई श्रृंखला बहंमलावेतो उसकी भूल है, पहिलेसेही किसीकार्यकी परीक्षाकरना और कानियोंके-कहनेपर बहंमलाना यही मूर्खोंका काम है. यहां तक

परीक्षाकरना लिखा है कि-दीक्षादेतेवस्त-प्रतिमाकी चारोंतर्फजो-  
 चारदीपक बरेजातेहैं उनमेंजीतनेदीपकोंकी शिखामंदहोजाय-या-  
 बुझ जाय उबनेही अंश उसकीदीक्षाकी कमजोरीजानना, अगर  
 दीपशिखा-ज्युंज्युंतेज होतीजायत्युंत्युं उसकीदीक्षाकी तेजीहोगी  
 ऐसाजानना. ज्योतिषके कायदेमुजब अगरलग्न कमजोरमीले तो  
 उसकोछोड़कर सामान्यदिनशुद्धि देखलेना, और जिसवस्त दी-  
 क्षालेनेवालेका चंद्रस्वर चलनेलगे उसवस्त उनकोदीक्षादेना, चंद्र  
 स्वर अमृतसमानफलदेनेवालाहै, उसमेंभी अगरपृथ्वी-या-जल  
 तत्व-चलताहोतो निहायतउमदाजानना, अगर सवालकियाजाय  
 कि-जिनप्रतिमाके सिंहासनपरफूल उछालनेकीपरीक्षामें उत्तीर्ण-  
 न-हुवाहो-उसकोभी-चंद्रस्वरमेंदीक्षादेनाठीकहै ?-(जबाब.)नहीं !-  
 बोतो-पहिलेही अयोग्यहोचूका,-यहांउसकीबातहै जो उसपरीक्षा )  
 उत्तीर्णहुवाहो-वैसा-शरूश-अपनेचंद्रस्वरचलतेवस्त-अगर-दीक्षा-  
 लेगा बहोतउमदातरहसैं पालन करसकेगा.उसके धर्मोपदेशसैं बहें  
 बहें अच्छेकाम बनेगें.औरउसके ज्ञानकीख्यातीसबलोगमंजूर करेगे.

(१८२-)-जिसकी ताकत दीक्षालेनेकी नहो वो गृहस्थधर्मके  
 बारहव्रतअंगीकारकरे, मुहूर्त्तकेलिये दीक्षामेंजोजोनक्षत्रवारवगेरा  
 बयानकरचूके-उसमुजब अच्छायोगदेखलेना-चंद्रस्वरसबमेअच्छाहै.

सबदेव-सबेगुरु-और-सबेधर्मपर श्रद्धालाकर उनको मानना  
 पूजना-इसकानाम-सम्यक्तहै, झूठेदेव-झूठेगुरु-और-झूठेधर्मको-  
 माननापूजना या उनपरश्रद्धालानाउसकानाम मिथ्यात्वहै. अपने  
 कियेहुवेकर्मको कोइफेरनहीसकता, फिरक्याफायदा संसारीकफा-  
 यदेकेलियेभी कुदेवादिकको माननेसैं ?-बढ़ीभूलहैकि-अपनेपुण्यके

शिवाय दूसरेकों फायदादेनेवाला समझना, दुंदिबापंथीलोग स-  
वालकरतेहैकि-बारहव्रतमें प्रतिमाकीपूजाकरना कौनसेव्रतमेंसमज-  
ना ? (जबाब)-प्रतिमाकीपूजा सम्यक्त्वमेंही दाखिलहै और सम्य-  
क्त्व सबव्रतकामूलहै, इसलियेजिनप्रतिमाकी पूजा गृहस्थोंकों करने  
योग्यहै, (१)निरापराधीत्रसजीवकों बिनाकारण नहीमारना इसका  
नाम प्राणातिपातविरमणव्रतहै, (२) झूठबोलनेका त्यागकरना इ-  
सकानाम मृषावादविरमणव्रतहै, किसीकीधरीहु थापनकों नामुकर  
जाना-झूठालेखलिखना-और-अठीगवाहीदेना इसव्रतबालेकों छोड  
देनाहोगा, (३)बाडा मारना, रास्तेचलतेकों लूटनाजोराजोरी कि-  
सीकीचीजखोंसलेना, किसीकीधरीहुइ अनामतचीजपचाजाना,  
चीजकीअदलबदल करदेना, एकचीजमेंदूसरीझूठीचीज मिलाकर  
बेंचना, विनामंजूरीकिसीकीचीजउठाजाना, यहसब चौरीकेभेदमें  
दाखिलहै, तीसरे अदत्तादानविरमणव्रतवालेंकों न करना चाहिये,  
जंगलमें पडीहुइचीजभी व्रतधारीपुरुष नउठावे, (४)परस्त्रीविरमण  
व्रतवालापुरुष-दूसरेकीस्त्रीकों न भोगे किंतु अपनीस्त्रीपरही संतोष  
रखे, इसीतरह स्त्रीभी अपने पतिकेशिवाय दूसरेकों नभोगे, वेइया  
कोइकी स्त्री नहीहै-तो-अपनीभी नही, इसलियेउसकोंभी न भोग-  
नाचाहिये. सारांशयहहुवाकि-कवारो-विधवा-सोहागन-वेइया-  
और अपनीविवाहितास्त्री-इनमे एकअपनीनिजस्त्रीकों छोडकर  
सबपरस्त्रीहै, जोलोगविधवास्त्रीका पुनर्लग्नकरनाचाहतेहै उनसेपूछ-  
नाचाहियेकि-आपलोगकिसका पुनर्विवाहकरनाचाहतेहो ? क्या !  
-जोस्त्री पतिके जीतेजीभीउससँनाराजरहकर अलगकोठरीमें सत्ती  
है उसका-या-जो-पतिसँ पुरामेभरसत्तीहै उसका-? बतलइये !

किसका पुनर्लग्नकरना चाहते हो ?—अगर कहा जाय कि—जो—नाराज रहती है उसका—तो—महाशय ! वो तो पहिले ही से दूसरे की है. अगर पति से प्रेम युक्त है उसका कहोगे—तो—सौचो ! वो पतिके मरने बाद भी दूसरे को कैसे चाहेगी ?—जिसकी कामाग्नि नहीं बुझी है वो तो पहिले ही से अनेक गुप्त पतिकर चुकी है, जिसकी कामाग्नि बुझ गई है वो क्यों दूसरा विवाह करना चाहेगी ?—खैर !—अगर विधवा का पुनर्विवाह किया और कर्मयोग—वो—दूसरा पति भी भर गया—बतलाइये ! फिर वो तीसरा करे या नहीं ? अगर तीसरा भी मर जाय तो चौथा करे या नहीं ? इस तरह कितने प्रतितक करते जाना इसका भी भेद खोलकर पुनर्लग्नकी रसमजारी करना चाहिये. विधवा विवाहजारी होने से देशकी उन्नति नहीं नाश होगा. ज्ञानी लोगों ने जो विवाहकी रसमजारी कर रखी है बहोत सौच समझकर रखी है, आर्य लोगों का मस्तक जो अनार्यों से उंचा है इसी उमदाकार रवाइयों से है. आर्य लोगों में भी अगर यह खोटी रसमजारी हो जाय तो जो स्त्रियोंकी महाभक्ति पतिपर रहा करती है यह उठ जायगी. क्योंकि—वह समझेगी कि—इसको छोड़कर दूसरा पति चाहे जब कर लुंगी. (सवाल.) क्या ! पुरुष नहीं चाहेगा कि—मैं—दूसरी विवाह लुंगा—(जवाब.)—चाहेगा, लेकिन ! यह मालूम है कि—दोनों में से किसको अपना घर छोड़कर दूसरे के घर आना पड़ता है ?—स्त्री को अपने पिता का घर छोड़कर पतिके घर आना पड़ता है, इसी से कहा गया है कि—स्त्री का—पुन्य कमजोर है, उसको मुनासब है कि—पतिके आधीन रहे. अगर आर्यों में भी पुनर्लग्नकी रसमजारी हो जाय तो इंग्लैंड देशकी तरह तल्लाक के मुकदमों से अदालत को फुरत तक नमीले. हम इसी अवस्था से कभी

सहमत नहीं हो सकते कि-इस मर्यादानाश्रक पुनर्विवाहकी रसमजारी  
 किइजाय.जोलोगविधवास्त्रीयोंका दुखदेखकर दयावानबनतेहैं सो  
 ठीकहै,लेकिन ! यहनहीं सौचतेकि-इससे नतीजाक्या आवेगा.  
 काम बोकरीना जो दूरदेशीअच्छेनतीजेवालाहो,

### [ सवैया. ]

देवगुरुशास्त्रकी श्रद्धासैं प्रीतिकरों-  
 यहीसबसूत्रसिद्धांतोंका मूलहै,  
 इनमेंजो शंशयकरे चारोंगतभ्रमफिरे  
 धिग्धिग्संसारकहेकेसी बड़ीभूलहै,  
 आदरसत्कारनहींहोयऐसेजीवनका  
 अपजशकापंजबने शीशपडे धूलहै  
 राजमेंभी उनकी मुनवाइ कहाकैसेहोय ?  
 धर्मसैंप्रतिकूल जाके दुनियांप्रतिकूल है,

(५)पांचमें परीग्रहप्रमाणव्रतमें अपनीइच्छामुजब.दोलतकाप्र-  
 माणकरनाकि-लाख-दोलाख-या-पांचलाख-रुपयें-मैं-रखुंगा,इस  
 सेंज्यादेहोजायगें तोधर्मकाधमें खर्चदूंगा,कोइबडाआदमी-या-रा-  
 जाहो-तो-बो-करोड-दोकरोड-अबजतक रखे,

( १८३ )-छठेदिशापरिमाणव्रतमें पूर्व पश्चिम उत्तर दखनचा-  
 रोतर्फ-दोदोहजारकोम-पांचहजार-या-उससैं कमीबेंसी-जितनार-  
 खनाहो-रखे,(७)पांसमदोरा-रात्रोभाजन-जमीकंद-बगेराअभक्ष्य  
 चोजोंका त्यागकरना और चौदहनियमधारनकरना-इसकानाम-  
 भोगोपभोगविरमणव्रतहै,(८)-आर्चरौद्रध्यान करनां-हाथी-बैल-

गुरघे-मैठे-और-भैसे-वगेरालहाना, विनाकारण वृक्षपरछाठीमार देना, किसीकों फांसी दिइजाय-और-उसमेंखुशीमानना, इसका नामअनर्थदंडहै, इससेबचना चाहिये, (९)नवमासामायकव्रत-दिनमें कमसेकम एकसामायिक जरूरकरनाचाहिये, (यानी)दोघडीतक एकस्थानपर बैठकर वाचनापढ़ना-याध्यानकरना, (१०)दशमा देशावकासिकव्रत-(११)ग्यारहवा-पौषधव्रत-पर्वतिथिकेरौज जरूरकरनाचाहिये, (१२)-बारहमें अतिथिसंविभागव्रत-इसकानामहै जो साधुजनोंकों आहारपानीदेकर भोजन जिमना-अगर-योग-न-मिलेता-भावना रखना,

(१८४)-जैनपर्व,-दीवालीकेरौज महावीरतीर्थकरका निर्वाण हुवा, कार्तिकसुदीपंचमीकेरौज ज्ञानपंचमीपर्व, कार्तिकपौर्णिमाकेरौज शत्रुंजयतीर्थकीयात्रा, मगसीरसुदी एकादशीकेरौजमौनएकादशी पर्व पौषवदी दसमी-गुजरातीमहिनेकी अपेक्षा मगसीरवदी दसमीके रौज पौषदशमीपर्व,-माघवदी-(गुजरातीकीअपेक्षापौषवदी)त्रयोदशीके रौज मेरुत्रयोदशीपर्व-वैशाखसुदी तृतीकेरौज अक्षयतृतीयापर्व, भाद्रपदवदी-(गुजरातीकीअपेक्षा श्रावणवदी)द्वादशीसें भाद्रपद सुदीचौथतक पर्युषणपर्व, पर्वकेरौज देवपजा-व्रतनियम-या-ज्ञान भंडारकी वृद्धिकेकाम ज्यादाकरनाचाहिये,

(१८५)-जनक (१०८)तीर्थोंके नाम, १, शत्रुंजयताथ सौराष्ट्र-देशमें पालिताणानगरकपासहै, पहाड चढाइमें बडासहजहै, वृक्षोंकी घटा-जलकेकुंड-पानीकेझरने-औररंगबेरंगीलतावल्लीयोंसें सारा पहाड मानों बागकीतरह फूलरहाहै, चारोंतर्फ फलफूल हंसरहेहै, इसपहाडकीमुंदरसोहावनीजगह मनकों मोहे लेतीहै, जोयात्री इस

तीर्थका संयोगकरलेताहै फिर नही चाहताकि-इसका बिरहहो, क्र-  
पणसे अधिकक्रपण क्यों नहो ! यहां आनकर दिलका दरिबाव-  
होजाताहै, इसतीर्थपर जैनमंदिरोंकी योजना और अगणितधनकी  
लागत कौनकेदिलकों चकितनहीकरती.कौन ऐसासुंदरमंदिरहै जो  
इसतीर्थपर नहो ?-कौन ऐसीसुंदर जैनमूर्तिहै जो यहां नहो !-वी-  
तरागकी निरागमयमूर्ति मनकों वीतरागबनाडालतीहै,मंदिरोंकी  
धजा पवनको झकोरसें नाचरहीहै,जब रिषभकूटकेमध्य वीमलवसी  
टोंकपर जातेहै तो मानो मंदिरोंकी श्रेणी औरआस्मानकी छब  
एकहोजातोहै,दिलनही चाहताकि-नीचे उतरें, वर्षमें चैत्री और  
कार्तकी पौर्णिमाकेरौजयहां दोदफेमेंलाभरताहै,जिसमें कार्तिक  
पौर्णिमाका मेंला देखनेलाइकहै,(२)गिरनारतीर्थ इसीसौराष्ट्रभू-  
मिकादूसराशींगारहै,जुनागढसें दोकोश अगाडीबढो तो गिरनार  
पहाड थुरुहोताहै,वृक्षोंकी शाखापर वानर कलोलें करतेरहतेहै,  
जलकेकुंड-पानीके झरनें-और-सरोवर ठोरठोरपरनजरआताहै,  
मयूर-क्रौंच-तोंते-बगेरापक्षी लतावल्लरीयोंमें आनंदकररहेहै, तरह  
तरहकी वनास्पति यहांपर मौजूदहै,आदमीकी ताकतनहीकि-य-  
हांकी जडीबुटीयोंकापारपासके,गिरनारकी गुफायें दुनियामें म-  
शाहूरहै,इसतीर्थपर नेमनाथभगवानकेदर्शन-सहस्राभवन-और-पां-  
चमीटोंक-देखनेलाइकहै,

(१८६)-३,-सम्मेतशिरस्वतार्थ-पूरवदेशमें-अतिउत्तमजगहहै,  
इसकोंवहांके आमलोग पारसनाथकापहाडकहकरबोखतेहै,इसपहा-  
डमें हरड बहेडें आवलें सतावरी सफेद स्याममुशली-चीरोंजी-  
और-कम्बुबावगेरा कइचीजेंपैदाहोतीहै, मधुवन-गंधर्वनाला-सी-



तानाछा-चंदाममुकीटोंक-शामलीयामहाराजकामंदिर-और-तीर्थ-  
 करोंके चरणपादुकाकी छतरीयें यहां देखनेलाइकहै, ४, आबुती-  
 र्थ-भारवाडमें एरावली घाटीमें मीलाहुवाहै, इसकी हवा बड़ीनि-  
 रोग और पुष्टिकारकहै, देलवाडेमें विमलशाहसेठका-बनायाहुवा  
 रिषभदेवभगवानकामंदिर-और-उसकेपास-वस्तुपाल तेजपालका  
 मंदिर-कारीगरीमें भरपूरहै, संगमर्भर पथ्थरमें कारीगरोंने जो जो  
 कामकियाहै देखकर दिल चकितहोजाताहै, जिसजिस इतिहासमें  
 देखों आबुकेजैनमंदिरकी तारीफ लिखीहुइ नजर आयगी, अ-  
 चलगढ जो इसीपहाडका एकउत्तंगशिखरहै इसमें धातुमय जिन-  
 प्रतिमा बहोतखुबसूरतहै, तरहतरहकी वनस्पति-यहांपर मौजूदहै,  
 मुन्नाचांदी-तांबाशीशा-रांग-और बिलोरीपथ्थर-यहांकी खानिमें  
 पैदा होते हैं, ५, केशरीयाजीतीर्थ मेवाडदेशमें उदयपुरके प. ति. )  
 इसतीर्थकीयात्रा करनेकों आमलोग जाते हैं, असलमें इसीलिये इस-  
 कानाम केशरीयाजीतीर्थ कहागया, हुंढियापंथीलोग मूर्तिकों नही  
 मानते-लेकिन ! यहांपर आनकर केशर फुल नगदीरूपया चढाते  
 हैं और नहाधोकर पूजाभी करते हैं, सवाल होनेकी जगहहैकि-  
 जब मूर्तिकों मानना मंजूरनहीं था-तो-वहांजाकर पूजा कैसे किइ ?  
 अगरकहाजायकि-हमन अपने संसारीक मतलबकेलिये किइतो ब-  
 तलानाचाहिये तुमकों धर्म प्यारा रहा-या-लडकालडकी प्यारे र-  
 हे ? बड़ीशर्मकी बातहै कि-जिसकेधर्मकों मानना उसीकी मूर्तिसे  
 नाकचढाना. ६, हस्तिनापुरतीर्थ-कुरुक्षेत्रमें दिल्लीमेरठके पासहै,  
 ७, अंतरिक्षतीर्थ-वराटदेशमें मौजूदहै, ८, मकसीतीर्थ-मालवादे-  
 शमें उजेनकेपासहै. ९, तारंगातीर्थ-गुजरातकी उत्तरसीमापर-वा-

लन्पुरके पास है. १०, फलोदीपार्श्वनाथका तीर्थ-मारवाड में अजमेरके पास है. ११, शंखेश्वर तीर्थ-गुजरात में राधनपुरके पास है. १२, स्थंभनपार्श्वनाथका तीर्थ-गुजरात में खंभातशहर में है. १३, वरकाणा, १४, घाणेराय, १५, नाडोल, १६, नाडलाइ, १७, राणकपुर-यह छोटी पंचतीर्थी-मारवाड में पालीके पास है, १८, लाटदेश में नर्मदाके کنارे भरुच में मुनिमुव्रत स्वामीका तीर्थ है, अश्वारोध तीर्थ भी इसीका दूसरा नाम समझीये, बंबई इलाके में नाशिक शहर चंद्रप्रभुका तीर्थ है. २०, दखन देश में सोपारकपत्तन-यहां पर-रिषभदेव भगवानका तीर्थ है, २१, दखन हेदरावाद से तीसकोस दूर कुल्पका तीर्थ-इसमें माणिक्यदेवका मंदिर है, इसको श्वेतांबर-दिगंबर-दोनों मानते हैं, मूलमूर्ति श्वेतांबर और आसपास दिगंबर मूर्ति है, लकेटेशन से तीनकोस आगे जाना पड़ेगा.

(१८७)-२२, किष्कंधा पर्वत में शान्तिनाथका तीर्थ है, २३, लंका में शान्तिनाथका तीर्थ-मंदोदरीदेवता वसर पहिले था-अब नहीं रहा. २४, महाराष्ट्र देश में गोदावरीके کنارे प्रतिष्ठानपुर तीर्थ है-इसका दूसरा नाम पेंठण बोलते हैं, २५, त्रिकूट पर्वत में शान्तिनाथका तीर्थ है, २६, विंध्याचल पर्वत में गुप्तपारसनाथ-तथा-भ्रैयासनाथका तीर्थ है. २७, माहेंद्र पर्वत में छायापार्श्वनाथका तीर्थ है-२८, त्रैकार पर्वत में सहस्रफणापार्श्वनाथका तीर्थ है. २९, पुंद्र पर्वत में महाबी-स्वामीका तीर्थ है-३०, मलयगिरि में पार्श्वनाथका-तथा-भ्रैयासनाथका तीर्थ है. ३१, सेगमतीगांव में-(जहां से नर्मदा नदी निकसी है) अभिनंदन स्वामीका तीर्थ है, ३२, उदंड विहार महानगरी में रिषभदेव भगवानका तीर्थ है-३३, हेमसरोवर में बह्मसरणिनालयका तीर्थ है

३४, चारिणसी-और-३५, दंडखातमें-पुष्करावर्चपार्श्वनाथकातीर्थ है. ३६, कोयाद्वारमें-सुविधिनाथकातीर्थ है. ३७, तारणमें-और-३८, बंदरीमें-अजितनाथजीकातीर्थ है-३९, काशहृदमें-त्रिभुवनमं-गलकलशआदिनाथकातीर्थ है. ४०, अंगदिकानगरीमें-अजितनाथ-शांतिनाथकातीर्थ है, ४१, खेंगारगढमें-उग्रसेनपूजितमेदिनीमुकुट-आदिनाथकातीर्थ है. ४२ अणहिल्लपुरपटनमें-पंचासरा पार्श्वना-थकातीर्थ है. ४३, करहेटकमें-उपसर्गहरपार्श्वनाथकातीर्थ है. ४४, ढाकुलीभीमेश्वरमें-पार्श्वनाथकातीर्थ है ४५, भायलस्वामीगढमें-दे-वाधिदेवपार्श्वनाथकातीर्थ है, ४६, गुजरातदेशमें हरिकंखीनगरमें-पार्श्वनाथभगवान्का तीर्थ है, ४७, आंवुरीगांवमें श्रीमतीदेवकातीर्थ है, ४८, हारवतीमें-अनंतनाथजीका तीर्थ है. ४९, माणिकदंड-स्थानमें-मुनिसुव्रतस्वामीकातीर्थ है, ५०, प्रभासपटनमें-शशिभूष-णचंद्रप्रभुकातीर्थ है,

(१८८)-५१, हिमालयपर्वतमें-छायापार्श्वनाथ-मंत्राधिराज-और-स्फुलिंग पार्श्वनाथकातीर्थ है, ५२, नेपालभोटानमें जैनका तीर्थ था-अब नहीं रहा-५३, पांचालदेशमें उत्तर दिशातर्फ सौ-वीरदेशमें जहां उदयनराजाहुवा-वहां-बीतभयपत्तनमें-महावीर-स्वामीकातीर्थ था-आजकल बीतभयपत्तननगर नहींरहा. उस जगह-जेहलमनदीकी दखनतर्फ भेंरागांव बसताहै, कौशांबीनग-रीका-उदयनराज-दूसरा हुवा-और-उक्त-बीतभयपत्तनका-उत्ति-यनराजा दूसरा हुवा, ५४, काबुलगजनीतर्फ तरुतशिलानगरीमें पहिलेकालमें-रिषभदेवकेपुत्र बाहुबलीजीका बनायाहुवा धर्मचक्र-तीर्थ था-अब-नहींरहा, ५५, गंगायमुनाके संगममें जहां अब इला-

इत्यादि मिथंगुषट्कोजीचे जैनतीर्थ या-अब-नही रहा, अबभी किलेमें जैनमूर्ति मौजूदाहै, ५६, बनारससेछकोश-सिंहपुरीमें विमलनाथजीकातीर्थ है. ५७, ज्वालामालिनी देवतावसरमें-गणधरगौ-तमस्वामिप्रतिष्ठित-चंद्राप्रभुकातीर्थ है. ५८, हिमालयकेपास-गंगा-कीक्षीलयें-विमलनाथजीकातीर्थ है. ५९, पूर्वतर्फ कोशलदेशमें अयोध्यानगरी-जैनकातीर्थ है-बिनीतानगरी-कौशला-और-साकेतपुर-इसीअयोध्याके-दूसरेनामहै, ६०, पूरवमें मगधदेशकी राजधानी-राजगृही-जैनकातीर्थ है. विभारगिरिपहाड यहांही है. ६१ इलाहाबादसेदखनकीतर्फ (४०) मीलदूर-कौशांबीनगरीमें-छठे पदमप्रभुतीर्थकरका तीर्थ है, आजकल कौशांबीकीजगह कौसुंभगांव बसताहै, पहिलेजमानेमें वत्सदेशकीराजधानी-कौशांबीनगरी ब-गियाबादथी, उदयनराजा जो शतानीकका बेटाथा. इसिकौशांबीका-मालिक था, ६२, अयोध्याकेपास-सरयूनदीकेकनारे-रतनपुरीमें-धर्मनाथकातीर्थ है. ६३, अयोध्याका शास्त्रानगर-पुरिमताल जैनका तीर्थ है. ६४, पूरवमें अंगदेश चंपापुरी-वासुपूज्यभगवान्का तीर्थ है. सुभद्रासतीने कुवेसें चालनीभरकर पानी इसी चंपानगरीमें निकालाथा, ६५, पूरवमें विदेहदेशकी राजधानी मिथिलानगरी-जैनकातीर्थ है, जो दरभंगा और चंपारनके पासहै, आजकल उसजगहका नाम तीरहुत्तदेश बोलते है, ६६, इलाहाबादके और भरवारीदेशनकेपाससावथ्यीनगरी-संभवनाथका तीर्थ है, ६७, मुरसेनदेशमें मथुरानगरीकेपास-शौरीपुरनगर-जैनकातीर्थ है यहां बाइसमें नेमनाथ तीर्थकरका जन्म हुवा था, आजकल इसजगहका नाम-बटेश्वर-बोलतह, यहां-चरणपादुका और छतरी बनी

हुइ है, ६८, विहारभूमिमें लखीसरायके पास काकंदी नगरी जैनका तीर्थ है, ६९, पूरवमें राजगृहीनगरीकेपास क्षत्रीय कुंडगांव-जैनका तीर्थ है-यहां महावीरभगवानका जन्म हुवाथा, ७०, चंद्रावती नगरी-जिसको-आजकल चंद्रपुरी-बोलते है बनारसके पास-जैनका तीर्थ है, ७१, पूरवदेशमें शीतलनाथजीकी जन्मभूमि-भदीलपुर-जैनका तीर्थ है, कइलोग कहते है भोपालके पास जो भेलसागांव-है यही भदीलपुरथा, लेकिन ! यहबात गलत है, सबबकि-यहां-कोइ चिन्ह-ऐसा नही मिलता जो उक्त बातको सबूत करता हो, भेलसागांव-हमने देखाहै, ७२, मुरसेनदेशकी राजधानी मथुरामें-कल्पद्रुम पार्श्वनाथका तीर्थथा-आजकल मथुराकी गिर्दकों ब्रजभूमि बोलते है, मथुराके जैनटीलेमेंसे अबभी जैनभूमि निकसती है, ७३, पूरवमें कायमगंजके पास-कांपिल्यपुर-विमल तीर्थकरकी जन्मभूमि-जैनका तीर्थ है. ७४, माणिकदंडक स्थानमें मुनि सुव्रत स्वामिका तीर्थ है ७५, श्री पर्वतमें-मल्लिनाथजीका तीर्थ है,

( १८९ )-७६,-पूरवमें मगधदेश-पावापुरीमें-महावीर तीर्थकरका निर्वाण तीर्थ है. ७७, कलिंगदेशमें-रिषभदेवभगवान्का तीर्थ है, ७८, कादंबरी अटवीमें कुंडसरोवरके कनारे अहिच्छता नगरीमें कलीकुंडपार्श्वनाथका तीर्थ है, ७९, शंखजिनालयमें पातालगंगाभिध-नेमनाथ भगवानका तीर्थ है. ८०, श्रीरामशयनमें मद्योतकारी वर्द्धमानस्वामीका तीर्थ है. ८१, नंदीवर्द्धनकोटीभूमिमें-महावीर भगवानका तीर्थ है. ८२, चर्मणवतीनदीके कनारे-होपुरीनगरीमें जैनका तीर्थ है. ८३ क्रौंचद्वीपमें तथा ८४, हंसद्वीपमें-सुमतिनाथभगवान्की चरणपादुकाका तीर्थ है, ८५, श्रीमाल

पत्तनमें तथा ८६, उपकेशपुरमें-महावीरभगवान्का तीर्थ है. ८७, गुजरातमें अहमदाबादके पास भोयणी जैनकातीर्थ है, इसमें मल्लिनाथ भगवानकी प्रतिमा अतिशययुक्त है, ८८ पाटलीपुत्र ( पटना )-जैनकातीर्थ, स्थूलभद्रमहर्षि इसीपटनाके रहनेवाले थे, सुदर्शनशेठका मकानभी यहांपर मौजूद है, ८९, ताम्रालिप्ती नगरी जैनका तीर्थ है. ९०, मारवाडमें नाणेबेडेमें-महावीर भगवान्का तीर्थ है. ९१, मालवादेशकी राजधानी उज्जैनमें अवन्तीपार्श्वनाथका तीर्थ है. ९२, कच्छदेशमें अंजारकेपास भद्रेश्वर-जैनका तीर्थ है, ९३, मारवाडमें पिंढवाडेके पास वंभणवाल जैनकातीर्थ है, ९४, कच्छदेशमें दूसरा तीर्थ-सुथरीगांवभी-प्रभाविक तीर्थ है, ९५, गुजरातमें खंभातकेपास कावीगंधार जैनका तीर्थ है, ९६, द्वारकामें-नेमनाथभगवान्कातीर्थ-पहिलेजमानेमें था-अब नहीरहा, ९७, मालवेमें धारानगरीके पास मांडवगढ जैनका तीर्थ है, ९८, मारवाडमें सांचौरगांवम-महावीरभगवान्का तीर्थ है. ९९ कुंकणमें श्रीपालराजा कास्थापित जैन तीर्थ था-अब नही रहा, १००, विशालानगरी-जैनकातीर्थ-पटनेसे उत्तरकीतर्फ तिरहुतमें आजकल (बुस्स) नामसे मशहूर है, चेडाराजाके मरनेबाद कौणिकने उजाड करडालीथी अब-नाममात्र रहगइ है, १०१, पूरवतर्फ श्वेतंबिकानगरी जैनका तीर्थ था, अब नाममात्र समझीये, १०२, मालवदेशमें दशपुरनगरसे चारकोसदूर वहीपार्श्वनाथका जैनतीर्थ है, दशपुरका दूसरानाम मंदसौर समझना चाहिये, १०३, दशार्णभद्रराजाकीराजधानी दशार्णपुर-जिसका दूसरानाम आवश्यकसूत्रकी टीकामें एढकासपुर लिखा है दशार्णभद्रने महावीरतीर्थकरको नमस्कार करते बख्त थे

हांही अपनी राजरिद्धिकामान कियाथा, इंद्रने अपनीदेवसेनासहित यहांही समवसरणकी चौफेर प्रदक्षिणादिइथो, हाथीयोंके पांवसें जमीनमें खड़े पड़जानेकेलिये लोगोंने इसनगरका नाम गजपंथाभी बोलना शुरूकरदियाथा पहिले यहां श्वेतांबर जैनतीर्थथा, अब पहाड़में दिगंबरोंने दिगंबर मूर्तियें उकेरवालिइ इसलिये हालमें दिगंबरोंका तीर्थ मशाहूर होगयाहै, आजकल इसकानाम गजपंथातीर्थ बोलाजाताहै, नाशककेपासजोअब मौजूदहै क्या जाने ! यही दशार्णपुरकी जगहहो ? कितनेक मंदसौरकों दशार्णपुर बतलातेहै लेकिन ! यहबात गलतहै, १०४, बनारसमें-१०५, चितोड़में, १०६, काश्मिरमें, और-१०७, गौड़देशमें-पहिलेजमानेमें प्रभावशाली जैनतीर्थ थे, अबनाममात्र रहगये है, १०८, अष्टापदतीर्थपर भरतचक्रवर्त्तोंने चौइसतीर्थकरोंकेमंदिर बनवाये थे, आज कल वहां-जाना मुश्किल है.

( १९० )-सिंधमें-वराहमें-माढेरमें-टंकास्थानमें- रस्थलमें- मुंडस्थलमें-और-मेतुंडकस्थानमें कइजगह जैनकेतीर्थथे, अबनहीं रहे, अनार्यदेशोंमें जैनतीर्थ कमहोनेकासबब-यहहैकि जैनमें मांस मदिराका त्यागरखना फरमाया, और अनार्यलोग मांसमदिराके प्रेमी ज्यादा ठहरे, फिर उनलोगोंमें धर्मका-या-तीर्थका फैलाव कैसे होसकताहै ?-[ वर्षचर्यामें ]ज्ञानी लोगोंने फरमायाहै कि-आदमीकों-एकवर्षमें एक नयेतीर्थकी यात्रा जरूर करना चाहिये-अपनी पैदाशमेसें-अर्द्धांश-चतुर्थांश-दशांश-या-षोडशांश-धर्मकेलिये स्वर्चकरना, अपने गुरुकेदर्शनकरनेकों जाना, और एक नवीन पुस्तक मौललेकर धर्मकीपुस्तकालयमें धरना यहस्थलोंमेंकी फरज

है, [ जन्मचर्यामें ] लिखा है कि-सारी जींदगीमें एकदेवमंदिर-सा-  
 देवमूर्ति-जहर बनाना चाहिये, व्रतनियमलेकर पालन करना चा-  
 हिये, देवद्रव्यभक्षणका त्याग-दीनदुखीका उद्धार-पुर्णभार्योंको  
 मदत-और मातापिताकी सेवाकरना जींदगीका सार है, अगर  
 ताकत हो तो एक-अपूर्वग्रंथ-बनाकर दुनियामें रख जाना चाहिये कि-  
 जिससे अपने भरोबादभी-लोगोंको उससे फायदा पहुंचता रहे,  
 बनते प्रयत्न संसार छोड़कर दीक्षा भी लेना चाहिये-जिससे पर लोग-  
 का रास्ता साफ हो, इतने कार्यमें से जिसने एक भी कार्य सचेदिकसे  
 किया हो उसको बारंवार धन्यवाद है,

(२००)-तीर्थनाम उसका है जहां जाकर आदमी संसारसमु-  
 द्रसे तीरे, जैन तीर्थकों जैनी बौद्ध तीर्थकों बौध-वैदिक तीर्थकों वेद-  
 मतावलंबी-महामदीनाको मुसलमान-और-अपने-गिरजेघरको अं-  
 ग्रेजलोग-तीर्थ-(यानी)-पवित्र जगह समझकर उसमें जाते हैं, वहां ईश्व-  
 रका ध्यान और प्रार्थना करते हैं, इसाई लोग जरूजलमस्थानको तीर्थ  
 मानते हैं. कोइलोग मनोमय मूर्तियों-और-कोइलोग साक्षात् मूर्तियों  
 न मानते हैं, मूर्तिविदून किसोका काम नहीं चला, मशजिद और-गिर-  
 जा-क्या चीज है ?-सौचो तो !-यही कहना बनेगा कि-ईश्वरका घर है,  
 जब ईश्वरका घर माना तो उसकी मूर्तिमाननेमें क्या बिगाड था ?-अगर  
 कहा जाय-निराकार ईश्वरकी मूर्ति नहीं बनसक्ती-(जवाब.) जैसे मूर्ति  
 नहीं बनसक्ती वैसे निराकार ईश्वरका घर भी नहीं बनसक्ता, ईश्वरका घर  
 मानना और उसकी मूर्ति नहीं मानना एक जिद है, जिद्दी आदमी-  
 को कौन समझासकता है. ? कुरान और बाइबल क्या चीज है ? इसको  
 सौचते हैं तो यही कहना बनता है कि-वह-पाकपरवर्दीमारकी जबाब है,



कहने वाले कह सकते हैं कि—जब जबानका इतना आदर करना तो मूर्तिके आदर करनेमें क्या हर्ज था ? जब जुबीलीका जलसा हुआ अपने देशके हजारों लोगोंने जो कि—मूर्तिमाननेसे नाराज भी थे भारतेश्वरीविक्टोरियारानीकी मूर्तिकों मुजरा किया था और फुलोंकी मालाभी पहनाई थी, कहिये ! उस वस्तु मूर्तिमाननेकी नाराजी कहां चली गई थी ?—दयानंदसरस्वतीके मतानुयायी दयानंदजीकी मूर्तिका आदर करते हैं और ईश्वरकी मूर्तिसे नाराज रहते हैं यह उनकी जिद है—या—नहीं ?—हुंढीयापंथी लोग अपने मुहबंदे गुरुओंकी मूर्तिको नमस्कार करते हैं और जिनेद्रोंकी मूर्तिसे नाराज रहते हैं यह भी उनकी जिद है या नहीं ?—शिख लोग—उनके ग्रंथ साहबका आदर करते हैं—और—देव मूर्तिसे नाराज रहते हैं यह उनकी जिद है या नहीं ?—लेकिन ! क्या कहा जाय ! जो लोग अपनी अकलके सापने दूसरेको कुछ चीज न समझे—उनको कौन समझा सकता है. ?—अदालतमें हरेक मनावलंबीको कहा जाता है कि—अपने अपने धर्मकी—किताबको—या—अपने ईश्वरकी मूर्तिकों—हाथमें लेकर कहो कि—मैं—सच बोलता हूं, उस वस्तु सब लोग उसी मुआफिक करते हैं, मूर्तिमें नाराज रहने वालोंको पुछना चाहिये उस वस्तु आपकी नाराजी कहां गायब हो जाती है ?—अगर कहा जाय कि—यह काम तो अदालतके खोफसे किया जाता है—तो—बतलाना चाहिये—क्या—ईश्वरकी हुकमअदुलीके खोफसे भी अदालतका खोफ ज्यादा है ?—आजकलके नयीरोशनीवाले कुछ अंग्रेजी फारसीपढकर मंदिरमूर्तिसे नाराज रहते हैं लेकिन ! यह नहीं सोचते हमारे ही तालीमदेनवाले बड़े बड़े समझदार अपने गिरजे घ-

रमें जाकर ईश्वरकी प्रार्थना करतेहै, मशजिदमें जाकर शिरझुकाते है, कहिये ! गिरजाघर औरमशजिद कुछ चीज नहीथी तो ये कारवाइ क्यों करते ?-निदान! तीर्थकी जगह भी ईश्वरकों और धर्मकों-याददिलानेवाली है, उसमेंजाकर देवमूर्तिकी पूजा करन्ना, उसजगेह बैठकर ध्यानसमाधिकरना धर्मका एक अंग है, मेरुशिखरपर-मानुषोत्तर वगेरार्पवर्तोंपर-नंदीश्वरद्वीपमें-और-रुचकद्वीपमें जो जैनतीर्थ है उसका बयान यहांइसलिये नहीलिखाकि-वहांजा-नेकी ताकतवाले मनुष्य इसजमानेमें नही रहे, विद्या और लब्धि-योंके कारणसें जो आकाशगामिनी विद्या पहिले जमानेमें लोगों-कों थी अब नही रही, पवनके यंत्रसें आकाशमें उडना एकनकली आकाशगमन है, इससें वैसा फायदा नही होता जैसा विद्यापढकर (आकाशमें उडनेसें होताथा, बेलूनमें बैठकर आजकल कइ लोग उडते है लेकिन ! इसमें खतरा बहोत और फायदा थोडा हासिलहोता है. बल्किन् ! कइ लोग इसकाममें जान खो बैठे है एकअ-खबारमें एक शरूशने लिखाथाकि- कइ बेलूनबाजसाहब-बेलूनमें चढकर मेरुपर्वतकी तलाशकों गयेथे, लेकिन ! पीछे नही लौटे, एक साहब गुब्बारेमें बैठकर पधारेथे, अपनी पहोंचकी खबर-कितने-करौजतकतो-वे-अपनेकबूतरोंद्वारा भेजतेरहे, लेकिन ! अखीरमें कबुतर आनेभी बंदहुवे, सौचो !-मेरुकी तलास क्या इसतरह हो सकती है ?-उतनी ताकतका नहोना ज्ञानीयोंने पहिलेंही फरमा दिया, फिर क्या फायदा इसतरह जानकी जोखममें पडना, ब्र-तारोपसंस्कारमें तीर्थका बयान इसलिये लिखा है कि-तीर्थम जा नाभी मनुष्योंकी एक फरज है, अभिग्रहप्रत्याख्यानभी कइतरहके

है जिनको खायेसहो आवश्यक सूत्र और प्रवचन सारोद्धार ग्रंथ देखे, व्रतारोपसंस्कार पूरा हुआ-अब अंतकर्म संस्कारका बयान सुनिये.

( २०१ )-१६-सोलहमा-अंतकर्मसंस्कार, अंतकर्मका दूसरा नाम-मृत्यु-है, संसारमें कोई ऐसा नहीं जो मृत्युसे बचा हो, जितना आयुष्य कर्म पूर्व भवमें जीव बांधलायाहै उसका पुरा होजाना इसीकानाममृत्युहै, क्या राजा-और-रंक-सभीको मरना है, मनुष्य अपनी जीवित दशामें धन्यवाद और मुख्याती प्राप्त करसकते है. लेकिन ! गुणविदून मुख्याती कभी नहीं फैलती, फुलनही लेकिन ! गुणोजनोंकी खुशबू बनीहुइ है, दुनियामें आदमीको-मान अपमान-सुखदुख-और-हंसीखुशी-अलबते ! प्राप्त होतीहै लेकिन ! तारीफ उनकी है-जो-समभाव रहे, जलमें डूब मरना-या-झेर खा-करभरना बेचकुफोंका कामहै, क्या ! इसतरह मरनेसे स्वर्गमिलता है !-कभी नहीं ! बुरीगतिहोकर जन्म जन्ममें तकलीफ छठानी पड़ेगी, अगर अच्छे लोगोंकी तालीम पाइ है तो याद रखो इस तरह जानखोना बुरा है, स्थानांग सूत्रकेदूसरे स्थानमें लेखहै कि-क्रोध-मान-माया-और-लोभ करके आत्मघातकरना दूर्गतिका हेतु है, अज्ञानी अव्रतीका मरना बालमरणमें दाखिल है, ज्ञानी और सर्व विरतिका मरना पंडितमरण है, देशविरतिका मरना बालपंडितमरण है, आराधना करके अच्छे ध्यानमें मरना अच्छी गति पानेका सूचक है, स्थानांगसूत्रके सातमें स्थानमें-और-आवश्यकसूत्रका निर्युक्तिमें-सात कारणसे आयुष्य दूटजाना फरमाया, जैसे अकाले किसीदृष्टकों फलआजाता है वैसे खोटे निमित्तमिल-

नेपर अकालमरनाभी होजाताहै, जैसे भस्मरोगी मनुष्यों बहोत कालमें पचनेवाला भोजन थोड़ेकालमें पच जाता है वैसे निमित्त पाकर आयुष्य भी थोड़े कालमें भोगलिया जाता है, जैसे पचास हाथलंबीढोंर एकतर्फके कनारेपर अग्निलगानेसें बहोतकालमें जलकरखाखहो सकती है, लेकिन-वहीढोंर इकठी करके अगर आगमें धर दीजाय तो जलदी जलजाती है वैसे आयुष्यभी उपक्रम लगनेसें जलदी भोग लिया जाता है, यानी टूट जाता है, ऐसा कहनाभी कोई हर्जकी बातनही, १, अतिराग और-अतिस्वोफके मारेभी आयुष्यटूटजाता है, २ चाबक-तलवार-बरछी-बंदूक-तोंप वगेरा निमित्तसें भी आयुष्य टूट जाता है, ३, ज्यादा खाना खानेसें और ज्यादा भूखारहनेसें-४, मर्मप्रदेशमें अत्यंततकलीफहोनेसें ५, दीवार परसें या-पहाडकोशिखरसें-गिरजानेसें-कुवावाड-डी-नदीसरोवर सपुंदरमें पडजानेसें आगमें गिरनेसें-वगेरा कारणसेंभी आयुष्य टूट जाता है, ६, सर्प काटखाय-या-झेरकाप्याला पोइकीया जाय तोभी आयुष्य टूट जाता है, ७, स्वासरूकजानेसें (यानी) फांसी वगेराके निमित्तसेंभी आयुष्य टूट जाताहै, अगर सवाल किया जायकि-वैसाही होनहार था जिससें वैसा निमित्त मिला और मर गया-इसमें आयुष्य टूट गया-वैसा क्यों कहना?-(जवाब.)-अगर वैसानिमित्त न मिलता तो वो शरूस न मरता ऐसाभी ज्ञानीयोंने अपने ज्ञानके जरीये देखाथा-इसीलिये उन्होंका फरमाना हुवाहै कि-वैसा निमित्त मिलनेसें आयुष्य टूट भी जाता है, अगर सवाल किया जायकि-कइलोग-प्राणांत करनेवाले निमित्तमिलनेपरभी जितेरहगये है, फिर आयुष्य टूटना कैसे स-

वृत्तरहा, ( जवाब. )-जितेभी रहजातेहै और मरभी जाते है, इस लिये यह निश्चय नही कहाजासकताकि-जितेही रहे-या-मरही-जाय, हां ! इतना कहना बनसकता हैकि-उपरलिखे निमित्त मिलनेसें मरजानेकी संभावना है, इसलिये बनतेप्रयत्न इन निमित्तोंसें बचना चाहिये,

( २०२ )-जिसरोगीकों रात्रीमें नींद न आवे, सभी इंद्रियें अपने अपने कार्यकों छोड़देवे-तो-जानना रोग असाध्य है, स्वास चलना, मूल उठना, हीचकीचलना, तृषा बहोतलगना-सभी पदार्थ छालरंगके दिखनेलगना. वृक्षोंतर्फदेखनेसें जलते हुवे मालूमदेना-ये-सबलक्षण असाध्य रोगके समझना चाहिये-लेकिन ! इतना यादरहेकि-बहोतदिनके बिमारकेलिये-ये-बातें है, तंदुरस्तकों किसीकारणसें एकदम ऐसा हो जाय तो उसके छिये एक दम नहीं समझनाकि-यह असाध्यरोग होगया. जिसरोगीके पांव गर्मरहे और सावधानीसें बातेंकरे उसको असाध्यरोग हुवा नही जानना, आंखकी चमक मोतीके पानीकीतरह उतरजाय, और किसीकों पहचाने नही तो जानना कुछ असाध्यरोगके लक्षण शुरुहुवे, जिसकों अपनी जबान-आर-नाककी अणी-अपनी आंखोंसें-बिदून आरीसे न दिखे उसकों जानना चाहिये मरना नजदीक आया, जिसको अपनी छायामें अपना मस्तक न दिखाइदे-तो-जानना-मृत्यु-नजदीक आया, जिस बीमारका खाना पिना बिल्कुल छूटजाय या-जिसकी गर्दन आपही आप स्थिर न रहसके-उसेजानना रोग असाध्य है, दोनों कानमें एकसाथ दोनोंअंगुली दबाकरदेखनाकि-भीतरका धोंर शब्द अपनेकों सु-

नाइदेता है—या नहीं ?—मुनाइदेवे तो ठीकहै नहींतो मरना नजदीक आया जानना, बीमारआदमीकी—भू—टेंडी होजायतो—जानना नवदिन जीनारहा, कानसें अवाज न मुनाइदेवेतो सातदिन—नाकसें किसीचीजकी खुशबूलेना बंदहोजाय—यानी—घ्राणइंद्रियकी ताकत हठजायतो—पांचदिन—आंखोंसें—हाथकी रेखा दिखनी बंद होजायतो—तीनदिन—और—जबानसें—किसीचीजका गुणमालूम होनाबंदहोजाय तो—एकदोदिन जीना रहा ऐसा जानना, छींक और मलमूत्र एकसाथ खलास होजाय—यानी—छींक आई औरउसीदम मलमूत्रके द्वारभी खुलगये तो जानना मरना निकटआया, जिसको भुवकातारा रात्रीके वरुत न दिखाइदे—तो समझना मृत्युपास आगया.

( २०३ )—जब वृद्ध अवस्था होनेपर आवे तो मनुष्यको चाहिये अपने किये हुवे पापोंकी आलोचना लेवे, जीवहिंसा किइहो, शूठ बोलाहो, चोरीजारी किइहो, व्रतनियमलेकर तोडडालेहो, सामायिक—प्रतिक्रमण—पौषधव्रतवगेरामें दोष लगाया हो—तीर्थयात्रामें दोषलगाया हों—देवद्रव्यभक्षण किया हो, शूठीगवाइ दीनी हो—कि—सीपर शूठा दोष लगाया हो—वगेरा जोजो खोटेकाम अपनेसें बन पडेहो—निर्ग्रंथगुरुकेपासजाकर मुनाना चाहिये, मनवचनसे किया हुआ पापभी अगरआलोयानींदा नजायतो कायासेंभोगनापडताहै. निर्ग्रंथ गुरुउसकोमुनकर शास्त्रमेंदेखके उसे प्रायच्छित्तदेवे, प्रायच्छित्तदेनेके कइरस्ते है, जिसकी ताकत तपकरनेकी नहो उसको ज्ञानध्यानकरनेका फरमावे, जिससें ज्ञानध्यानभी न होसकता हो उसको द्रव्य खर्च करनेका फरमावे, जिसकेपास द्रव्यखर्चकरनेको ताकत नहो उपवास—वगेरा करनेको फरमावे,

स्वाध्याय-तीर्थयात्रा-मंदिर-मूर्ति-पुस्तकालय-वनेराकार्यमें तनमनधनसें जितना उससेवनसके उतना कार्यकरना फरमावे, बस ! इसीकानाम प्रायच्छित है, कितनेकलोग इज्जतकेमारे आलोचनानहीलेते-लेकिन ! यह उनकी भूल है, गुरुकेपास अपना पाप जाहिरकरनेसें-बड़ाफायदा है, मनमेंशल्यरहजाना अच्छानही गुरुकों मुनासिबहैकि-एककी आलोचना दूसरेकेपास जाहिर न करे, शिष्य कौंचाहिये जोकुच्छ प्रायच्छित गुरु बतलावे दूसरेकेसामने बयान करे.

( २०४ )-बीमार भ्रादमीकों चाहियेकि-अपनेमरनेसें पहिले धर्मकामकेलिये द्रव्यनिकालकर देवमंदिरमें-या-धर्मसमाजमें भेजदेवे. पीछेसें बेटाबेटी न मालूम कैसे निवडेगें-कहलोगोंके घरमें धर्मका द्रव्य रहगयाहै, और वे पापसें दूष गयेहै-नालाइकबैटे बापका निकालाहुवा धर्मद्रव्य पीछेसें देतेनहीहै, इसलिये मरनेवालोंकों मुनासिबहैकि-अपनी हयातीमें सप्तक्षेत्रकेलिये धन निकालकर तुर्च जहांकातहां भेजवादेवे, लेकिन ! अपश्रोष है कि-हीनपुण्यलोगोंसें धर्मकाम होता नही-बल्किन् ! बेटाबेटीकेमोहमें पढ़कर हाथपांव तडफातेहुवे मरजाते है, लाइकवर बेटे-वें-है-जो-अपने मातापिताके फरमाने मुजब-रूपयोंकेतोडे उसीबरुत देवमंदिरमें-या-धर्मसमाजमें भेजदेवे, कितनेकलोग-बड़ाइकेलिये कहदेतेहैकि-हमने-हमारे मातापिताकेपीछे इतनेरुपये धर्मकामकेलिये निकाले है, लेकिन ! पीछेसें कुटीकोडीभी नहीदेतेहै, धिक्कार है उनके जीबकों,-मरनेका वरुत नजदीक आगया मालुमदेवे तब कुटुंबपरिवारके लोगोंकों मुनासिब है कि-उसकों धर्मशास्त्रका बयान सुनावे, देवगुरुका शरण दिखावे, और बारवार कहतेरहेकि जगतमें सारबस्तु धर्म है,

उसके श्वर कोइ तरेहकी नाराजी न बतावे, लाडकर बेटा जो है जो अपने मातापिताकों धर्मकाभत्ता शायदेवे, अच्छी औरत-को है-जो-अपने खाविंदकों मरनेकेवरुत धर्म सुनावे, रोवेनही और कहेकि-आपकी काररवाईसैं-मैं-सुखीहूं-किसीतरहकी चिंता आप अपनेपास न आने देवे,

( २०५ )-जिमवरुत मनुष्यका मृत्यु हो अच्छाध्यान रहे तो जानना चाहिये उसका अच्छीगति प्राप्तहुइ, मरनेबाद जीव तुरंत दूसरीगतिकों प्राप्त होजाता है, रास्तेमें उसकेसाथ पुन्यपाप बगेरा कर्म साथलगेरहने हैं जबतक जीवकी मुक्ति नहीं होती कर्म अलग नहीं होते,-कर्म-ब्याचीजहै उसकाभेदजाननाहो-तो-कर्मग्रंथ-देखो अगर उसकोंभी तुमने नहींपढ़ाहैतो थोड़ेमेंउसकाबयान समझलो कि-जीवके साथ जो शुभपुदगललगे है उसकानाम पुन्य है-अथुभ पुदगललगेहै उसकानाम-पापहै, जीवकों भलीबुरीगति वेंही लेजातेहै, यानी लोहचूंबकके न्यायसैं खेंचायाहुवाजीव कर्मकेही उदयसैं भलीबुरीगतिकों जाताहै, अगर पुन्यकिये होमेंतो स्वर्ग मिलेगा, लेकिन ! अपशोष है अखीरमें वहांसैंभी मरना पड़ेगा, जहां कं-कर-कंटक-रज-कींचड-पशु-पक्षी-नहींहै, निर्मलवायु अच्छेबाग बगीचे साफजलकी बावडीयां-झिड़ा करनेकेलिये मौजूद है, जहां पुन्यविपाकसैं-तरहतरहकेरत्न-तरहतरहकेनाटक-गीतगान-और-अप्सराके भोगविलास मौजूद है. जहांदेवांगनाकों गर्भ रहनेका कु-छकाम नहीं बल्किन्-उत्पातशय्यामेंही एकसुहृर्चभरमें पैदाहोकर जवानी आजाती है, जहां बड़ी बढीलंबी उमर है, लेकिन ! अप-शोष है अखीरमें उनकोंभी मरना है, हां ! जिनोने-सगद्वेषबगेरा



सबतरहके कर्म दूर करके देव-मनुष्य-नरक-और-तिर्यचगतिसे छुटकारा पाया है अलखते ! उन्हींको मरना नहीं है, दूसरे सबको मरना है तो इसकी चिन्ता करना भी फिजुल है, इसलिये मुनासिब है, कि-धर्मतर्फ खयाल रखकर किसी चीज पर मोहममत्व नहीं लाना, इसीमे अपना भला है,

(२०५)

( दोहा. )-

जैसे कंचुकत्यागसे-विनसत नाही भुजंग,  
 देहत्यागसे जीवफुन-तैसे रहत अभंग. १

जो उपजत सो तूं नही-विनमन मो पिणनाह,  
 छोटा मोटा तूं नही-समज देखदिलमांह. २

तूं सबमें सबसें अलग-न्यारा अलख सरूप,  
 अकथकथा तेरीमहा-चिदानंद चिद्रूप. ३

जनममरण जहां है नही-ईत भीतलवलेश,  
 नही सिर आण नरींदकी-सोही अपनादेश. ४

बेंदी लोहकनकमयी-पापपुन्य युग जान,  
 दोनोंसें न्यारा सदा-निजमरूप पहिचान. ५

युगलगति शुभपुन्यमें-इतर पापसें जोय,  
 चारोंगति निवारीये-तब पंचमगति होय. ६

पंचमगति विन जीवकों सुख तिहू लोकमझार,  
 चिदानंद नही जानजो-ये मोटा निरधार. ७

मैं मेरा इसजीवकों-बंधन पुरुता जान,  
 मैं मेरा जाकों नही-सोही मोक्ष पहिचान. ८

रागद्वेष जाकों नही-ताकों काल न खाय,  
 काल जीत जगमें रहें-मोटा विरुद्धराय. ९

( २०६ )-सबकामका मुहूर्त्त लोग देखतेहैं लेकिन ! मरनेका मुहूर्त्त कोई नहीं देखता, देखे कौन ? मरनेकी आफतही ऐसीहै. मृतकलेवरकी अंतिमक्रिया देशदेशमें अलगअलगतोरसें किई जाती है, लेकिन ! जो जलादेनेकी रसम है सबसे उमदाहै, कइलोग मुर्देकों जमीनमें गाडदेते है, कइ समुंदर-या-नदीमें-डालते है, कइ सूर्यके तापसें सुखानेकेलिये या सडगलजानेके लिये जंगलमें छोड आतेहैं, कइलोग मसालाभरके संदूकमें रखते है, कइ मकानमें-और कइलोग इंटचुनेके कमरेबनाकर उसमें सोलादेते है, लेकिन ! सबसे अच्छीरसम आगमें धरकर जलादेना ठीकहै, किसीजमानेमें जंगलमें रखआनाभी लोग पसंदरखतेथे लेकिन ! इसजमानेमें तो जलादेनाही अच्छासमझागयाहै, छोटेछोटे बालकोंकेलिये अबभी जमीनमें गाडदेनेकी रीति जारी है, दो-या-तीनहाथलंबा-खड्ग खोदवाकर उसमें गाडना चाहिये, सूक्रीपीटी उसपर डालना अत्यंत जरूरीहै, जब मनुष्य मरजाता है नजर नहीं आताकि-कहां गया ?-नजर कैसे आवे ?-जीव अरुपी ठहरा, और उसके साथ जो कर्मलगे है वे चारस्पर्शी है, जो-छदमस्थोंके दृष्टिगोचर आन-हीसके, जैसे मकानबंदकरके तलघरमें नगारा बजाओ-और-उसकी अवाज बहार निकलआतीहै वैसे जीवभी-भीतके बीचमें होकर निकलजाताहै, अवाजके पुदगल आठस्पर्शी हैं और आठकर्मके पुदगल चारस्पर्शी ठहरे, फिर दिवारके आरपारहोते क्या बड़ीबात है ?-जीवके चलेजाने बाद मुर्देकों नहलाकर अच्छे कपडे पहना नाचाहिये नइबनाइहुइ बांसकी शय्यापर घासबिछाके मुर्देकुं सुलाना और कंधेपरधरकर मन्नाणभूमिकामें लेजाना यह

अंतर्कर्मसंस्कारकी बातें किसीसे छिपी हुई नहीं है, मुर्दे-  
केपीछे रोतेपीटतेजाना इससेतो गंधर्वलोगोंको बुलाकर  
सारंगीतबलेकेसाथ बैराग्यरसके पद गातेहुवे जाना हजार  
दर्जे अच्छा है, कइदेशोंमें यह रसमें जारी है, जबकोइ शरणा मरता  
है तब उसके पीछे इभीतरह गायन करतेहुवे लोग जाते है, हमारी  
ही समुदायके एकसाधु जब मरगयेथे बैराग्यरसकेपद गातेहुवे लोग  
उनको लेगयेथे, उसवरुत पाषाणहृदयपुरुषोंनेभी रोदिबाधा, मो-  
हनीकर्ममें पडकर रौना इससें यहरौना हजारदर्जे अच्छा है, इस-  
सें सबलोगोंकी निगाह धर्मपर बढ़तीहै, अगर सबसंसारीलोग इ-  
सी मुजब करतैरहेतो कैसी उमदाबातहो !-लेकिन ! अपशोषहैकि  
बुरीरसमको रोकनेवाले लोग इसजमानेमें बहोत थोड़ेरहगये, ब-  
ल्किन् ! इसबातको कइमूर्खलोग हंसीमें उडादेयगे, लेकिन ! अ-  
च्छेलोगोंको चाहिये कि उनका एकतिलमात्रभी खोंफखयालमें  
न लावे. ज्ञानीयोंकी बातको मूर्खलोग हंसीमें न उडावे तो फिर  
उनकी मूर्खता कैसे जाहिर हो ?

( २०७ )-एकनालाइक बेटा जुआरीओंके संग जुआ खेलता  
था-उसवरुत किसीने आनकर कहा-तेराबाप मरगया, चल !-  
उसनेकहा तुम तयारीकरो-मैं-आया, थोडीदेरकेबाद फिर आन-  
कर उसशख्सने कहा-चल ! भैया !-तयारीभी होचूकी, तब जु-  
आरी बोलाकि-चलना-तो-इसीरास्तेसें है, तुम लेआओ, मैंभी  
यहांसें साथहोचलुंगा, महाशय !- ऐसेबेटसे तो न होनाही अच्छा  
है, सबलोगोंको चाहिये कि दुश्मनकोभी तकलीफके वरुत सहा-  
यतादेना, दुश्मनकेपरभी शोककेवरुत जरूर मिलनेको जाना चा-

हिये, सबको मरना है, सुख और आरामका घमंडलावे सो मूर्ख है हां ! अधर्मी-और-नास्तिकोंके पासजाना कुछ जरूरत नहीं। म-  
शाणमें पहुचनेपर काष्ठकी चितामेंधरके-मुर्दोंको-आगलगाना चाहिये, साधुलोगोंका मृतकलेवर होतो उसको काष्ठके विमान ब-  
नाकर उसमें बैठाके लेजाना-और-चंदनकेकाष्ठसे अग्नि संस्कार करना चाहिये, तीर्थकरके कलेवरको अग्निसंस्कार कियेबाद उनके अस्थिक्षीरसमुद्रमें देवोंद्वारा वहनकरादिये जातेहै, उनकी दाढ़ां इंद्रलोगलेजाते है और उनको रत्नकेडब्बोंमें रखकर पूजते है, अ-  
गरकोई ग्रहस्थ अपने मातापिताके अस्थि लाकर तीर्थस्थानमें प-  
हुचादे तो कोई हर्जकी बातनही, तीर्थस्थानमें कोईनदीहो तो उ-  
समें वहनकरादेना, नदी-न-होतो-तीर्थस्थानकी जमीनमें-पहाडकी कंदरामें-या-गर्तमें खड्डा खोदकर उसमें रखकर मीठीढालके पुर देनाचाहिये, पूज्यभूमिमें कालांतरसे परिणामांतरहोकर तदाकार होजायगें निहायतउमदाबातहै, मुनिजनोंके मृतकलेवरको शींगारे हुवे विमानमें वेठाकरजब गृहस्थलोग श्मशानमें लेजातेहै तो-वहां पहुंचनेपर ध्वजावगेरा उतारलेतेहै और अपनेघर इसलिये लेआ-  
तेहैकि-इससे हमारा अच्छाहोगा, लेकिन ! यहरीति शास्त्रोक्त न-  
हीहै, इसमेंधर्मकी और गुरुकी बेअदबी होतीहै इसलिये मुनासिब है जिनको दिया जाता हो उनलोगोंको देदेना,

( २०८ )-मरनेवालेकेपीछे बहोतदिन शोककरना अच्छा न-  
ही, जिसकेघर मृत्यु हो उसकेवहां बारहदिनतक अशौच जानना, बारहदिनतक उसघरके मनुष्य जिनप्रतिमाकी पूजा न करे, दर्शन दूरसे बेशककरे, मृतकलेवरको कंधालगानेवाला ( २४ ) पहरतक

जिनप्रतिमाकी पूजा न करे, वेष बदलकर शीर्षोंगोंको बुलाकर  
 पहरतक अशौचमाने, दासदासी जो अपनेघरमें मरे जाय हज़ार  
 अशौच, जिनदिन बालक जन्में अगर उसीदिन मरजाय मरता  
 दिनका अशौच,—आठवरसका या आठवर्षके निचेका बालक मरता  
 रेतो आठदिनका अशौच. जितनेमहिनेका गर्भ पड़े उतनेदिनका  
 अशौच, हाथी-घोडा-उंट-उंठणी-गौ-भैस-कुत्ता-बिल्ली-अपनेघ-  
 रमें मरे तो जबतक कलेवर बहार न पहुंचायाजाय तबतक अशौच,  
 साधुलोगकालकरजाय वहां एकदिनकाही अशौच जानना, पुरुषके  
 पीछे सतीहोना यानी जीतेहीउसकेसाथ जलमरना बड़ापाप है,  
 मोहनीमें पड़कर कइस्त्रीयें इसतरह जलमरी हैं लेकिन ! यह महा  
 मूर्खताकाकाम उन्होंनेकिया है, किसीमतावलंबीयोंके धर्मशास्त्रमें  
 यह बात नहीं लिखी-न-मालुम यहरसमकहांसे चलपडोथी, कि-  
 तनेककहतेहैं सतीहोतेवरुत उसकों सत चढ़जाताहै, उसवरुत अ-  
 गर वो स्त्री किसी बंदकियेहुवे मकानकों या तालेकों हाथ लगा-  
 देतां उसीदम खुलजाता है, ( जवाब. ) यह बात बिल्कुल गलत  
 है, कषायके उदयसे मरनेचली और उसमें सत आजाय यह स-  
 मझना बेवकुफोंका काम है, अच्छेलोग इसबातकों कभी नहीं मा-  
 नसकते, आजकलतो बहोतही अच्छीबातहुइहैकि-यह रसमही उठा  
 दिइगइ, कइबातमें स्वार्थीलोगोंने अपना मतलब बनालियाहै कि  
 मरनेवालेकेनामसे हमकों जो कोइ पलंग-थाली-लोटा-पौशाक-  
 और-गौ-बगेरा देयगें उनके पितरोंकों स्वर्गमें-बैं-चीजेंमिलेगी,  
 लेकिन ! यहबात अच्छेलोगोंने बिल्कुल झूठ फरमाइ, हां जोकुच्छ  
 वो मरनेवाला अपनेअंगसे करगयाहै वहोधर्म उसके शाय मया जान-

हिये, सबकों मरनेकीकुच्छ धर्मकार्यमें खर्चकरना कहदिया हो और हां ! अधर्मी-असाधवधानीहोनेपर अपनेदिलसे उसवातकी अनुमो-  
 शाणमें ह्वा-तो-उसका-पुन्य उसवरुत वोबांधकर शायलेगया जान-  
 ना, बिदून कियेकराये अनुमोदे-आत्माकों कर्मबंधनही होता, मनष-  
 चन विना-एकीली कायासें कियाहुवाकर्म-इरादा नहोनेसें आत्माके  
 साथ बंधकोप्राप्त नहीहोसकता, बेटे अगर उसवरुतके निकालेहुवे धर्म  
 द्रव्यकों पीछेसेंभी खर्च करे तो उनकादोषहै, लेकिन ! यहां जो उनके-  
 नामसेंदूसरोंकोदेवे वोउसकोंस्वर्गमें जाकरमिलेयसमझनावडोभूलहै,

( २०९ )-बेलजियमदेशमें मुर्देकों जैसीधूमसें लेजाते है वैसी  
 धूम दूसरेदेशोंमें विवाहके वरुतभी नही होती होगी, मरनेकीखबर  
 कुटुंबीनातेदारोंकों नोटिशद्वारा दिइ जातो है, और जब-बें-लोग  
 आतेहै,-तो मरनेवालेकेघर अपने अपनेनामके क्याई देकरआते  
 है, मुर्देकी गाडी गहनेकपडोंसें खूब सजाइजाती है, हांकनेवाला  
 टोंपी चांगा पहनकर बैठता है, गाडीमें कालेघोडे जोतेजाते है,  
 सबसामान काला होताहै, गाडीकेपीछे दोचारआदमी नोकदार  
 टोंपी और कमरतक झंडीयोंके फरहरे लगाये चलते है, टोंपीयोंपर  
 काले तुरे फरफरातेरहते है, इनकेपीछे जितनीगाडीयांहो मरनेवाले  
 कीतारीफ है, किसीस्त्रीका प्यारा पुरुष-या-स्त्री मरजाय उसके  
 जलानेकों स्त्रीकेबदले उसकापति जाता है, गाडीकेसाथ जोलोग  
 घोडेपरचढकरजातेहै रास्तेमें जुलुटपीतेरहते है. देशदेशकी रसम  
 न्यारी है, कहांतक बयानकरे ?-हरशखशकों यादरखना चाहिये  
 एकदिनमेरेशरीरकी खाखहोजाना है, कहां पैदा हुवे औरन मा-  
 लूम कहां मरनाहै, जिनके जन्मसमय किसीने खुशीनही मनाइ  
 और मरनेके वरुत किसीने रोयानही-ऐसेशखशभी दुनियामें ला-

खोंकरोडें होगये और जिनके जन्ममरणमें अद्वैत हर्षशोकसे संसार चकित होगया ऐसेभी लाखोंकरोडें होगये, किसकिसकी गिनती करे ?-छत्रपति और कंगालपति-दोनोंकेलिये मरनेकी सड़क एकसीहै, अगर दुनियामें मरना न होता तो न मालूम लोग क्या क्या अन्याय कर गुजरते ? जो-जो-राजेमहाराजे दुनियाभरमें नहीं समातेथे तीनहाथजमीनमें समागये, जिनपर चवरछत्र होतेथेउनपर गींदह पैशाब करते हैं, संबंधीलोग मीठीके ढेंलेकीतरह मुर्देकोछो-डकर पीठदेके चले आतेहैं कोई किसीके साथ नहीं जाता, समझ शकोतो समझलो मोहममता और घमंड किसपर करते हो, !

( २१० )-जोशस्त्र बिना औलाद मरगया हो-उसकी दौलतका बारीसकौनहो ?-उसकाबयान अर्हन्नीतिके कानून मुआफिक यहां लिखाजाताहै,-जैनशास्त्रोंमें पुत्रपांच तरहके फरमाये, दोतरह के मुख्य और तीनतरहके गौण-

( अर्हन्नीतिका-दायभाग प्रकरण. )

औरसो दत्तकश्चव-मुख्यौ क्रीतः सहोदरः  
 दौहित्रश्चेति गौणास्तु-पंचपुत्रा जिनागमे. ६८  
 धर्मपत्न्यां समुत्पन्नः-औरसो दत्तकस्तु सः  
 यो दत्तो मातृपितृभ्यां-प्रीत्या यदि कुटुंबजः ६९  
 क्रयक्रीतोभवेत् क्रीतः-लघुभ्राता च सोदरः  
 सौतःसुतोन्नवश्चेमे पुत्रा दायहराः स्मृताः ७०

( अर्थः )-औरस-और-दत्तकपुत्र ये-दोनों मुख्यके भेदमें दाखिलहैं द्रव्यदेकर लियाहो-सो-क्रीत-और-छोटाभाइ तथा ल-इकीका लइका ये तीन-गौणपुत्रकेभेदमें दाखिल हैं, निजजीसें

पैदाहुवाहो-उसकानाम औरसपुत्र है, मातापिताने खुशहोकर दियाहो उसकानाम दत्तकपुत्र है, दत्तकके ग्रहण करनेके पीछे आत्मजपुत्रपैदाहोजायतो पघडो आत्मजपुत्रके बंधेगी, और दत्तककों ज्यायदादसें चोथाहिस्सा मिलेगा, अगर पहिलेसेंही दत्तकपुत्रकों पघडी बंधादिइ गइ होतो दोनोंकों बराबर भाग मिलेगा, निचे छिखेहुवे आठतरहके पुत्र जैन आम्नायमें हिस्सेदार नहीं माने, दूसरेमतवालोंने माने है.

पौनर्भवश्चकानीनः प्रच्छन्नःक्षेत्रजःतथा,

कृत्रिमश्चापविद्धश्च-दत्तश्चैव सहोदजः, ७१

अष्टावमी पुत्रकल्पा-जैन दायहरानहि,

तीर्थोत्तरीयशास्त्रे च-कल्पिताः स्वार्थसिद्धये, ७२

( अर्थः )-भर्त्तारकेमरेबाद अन्यसें उत्पन्न हुवाहो सो पौनर्भवपुत्र-कवारीसें पैदाहुवाहो सो कानीनपुत्र-भर्त्ताकेजीतेहुवे परपुरुषसें पैदाहुवाहो सो प्रच्छन्न पुत्र-देवरवगेरासें पैदाहुवाहोसो क्षेत्रज ग्रामवगेराआजीवकाका लोभदेकर पुत्र बनालिया हो सो कृत्रिम मातापिताका-निकाल दिया हुवा जिमतिस उपावकरके पुत्रबना लिया हो सो अपविद्ध-मातापिताने छोडदियाहो-या-उसक माता पिता मरगये हो-वो-खुदआकरपुत्र बने सोदत्त-और-कन्या अवस्थामेंही गर्भवतीहोगइहो-उसकाविवाहहुवेबाद चन्म हो सो सहोदजपुत्र-ये-आठतरहकेलडके जैनशासनमें प्रमाणीक नहीं गिने, इसीलिये इनकाहिस्सा नहींहोता, मिताक्षरावगेरा अन्यमतावलंबीयोंने इनकों हिस्सेदार फरमाये है, लेकिन ! यह बड़ी अंधेरकी बात समझना चाहिये, इनका हिस्सा किसहेतुसें होसकता है सो



बतलाना चाहिये, लेकिन ! क्या बतलावे ?-जिनके घरमें सबामन-  
तैल होतेहुवेभी अंधेरारहताहो उनको कहांतक तारीफ करे ?-

( १११ )-कौशिकरुस मरजायतो उसकेबाद उसकी स्थावर-  
जंगम मिलकतपर हक किसका पहुंचे उसकाबयान-अर्हन्नीतिके  
काननमुजब-ऐसेहै,

पत्नीपुत्रश्चभ्रातृव्याः-सर्पिडश्च दुहितृजः  
बंधुजो गोत्रजश्चस्व-स्वामो स्यादुत्तरोत्तरं, ७३,  
तदभावेच ज्ञातीयै-स्तदभावे महीभुजा  
तद्धनं सकलं कार्यैर्धर्ममार्गे प्रदाय च, ७४,

( अर्थः )-पुरुषकेमरनेबाद उसकीकुलज्यायदादकी मालकी-  
न अवल उसकी स्त्रीहै, दूसरेनंबरमें उसका बेटा-उसक नहोनेपर  
भतीजे-चौथेनंबरमें सर्पिडकहनेसे उसकी सातपीढीतककाभाइ पां-  
चवेनंबरमें बेटा-छठेनंबरमें बेटाकाबेटा-सातमेंनंबरमें चौदहपीढीत-  
कका भाइ-आठमेंनंबर गोत्रज-नवमेंनंबर ज्ञातिवाल-और जब बें-  
भी नहो-तब-उसद्रव्यकों राजा लेकर धर्मकाममें लगादेवे, अपने  
खजानेमें नडाले, पतिकेमरनेबाद विधवास्त्रीकों अखतियार हैकि  
पतिकी कुलज्यायदाद अपनेतालुकरखे, अगर पुत्र किसीकाममें  
स्वर्चकरना चाहेतो माताकी सलाह बिदून नकरसकेगा, माताकी  
मौजूदगीमें दत्तपुत्रकों या आत्मजपुत्रकों अखतियार नहीकि-स्था-  
वर जंगममिलकतकों दान-या-विक्रय करसके, मिताक्षरादिवगेरा  
अन्यमतावलंबीयोंके ग्रंथमें पुत्रके अभावमें स्त्रीकोंपतिकी ज्यायदा-  
दकी मालकीन होना लिखा, लेकिन ! यह अन्याय है, स्त्री नि-  
राधार होजाय और उसकों धनदौलतकाभी आधार न दियाजाय

तोफिर उसे आश्रय किसचीजका रहेगा, इधर पति मरगया और इधर लडकोंने धनमालका अखतियार लेकर उसकों निराधार करवाली, कहिये ! यह अन्याय है या नहीं ?—अगर कहाजायकी—स्त्रीकापुन्य—पुरुषके पुन्यसें कमकहा फिर पुत्रकोंछोडकर स्त्रीकों, पतिकेधनकी अधिकारिणी क्यों किइजाती है ? ( जवाब. )—पुन्य अलबते ! स्त्रीका कमहीहै लेकिन ! पतिकी मिलकतमें पुत्रसें पहिले स्त्रीका हकपहुचना न्याय है, क्योंकि—जबपतिकेजीतेहुवेभी पतिकीअर्द्धांगीथी तो पीछेंसें उसके धनमालकीमालकीन क्योंनहो?

( २१२ )—अगर कोई संतानरहित पुरुष बीमारीवगेरासें दुस्तीहोकर अपने घरके बंदोबस्तकेलिये वसीयतनामा लिखनाचाहेतो उसकेनाम लिखसकता है जो स्त्रीकी आज्ञापालनेलाइकहो, पतिकेमरनेबाद अगर वसीयतनामावाला बदनीयतहो जाय तो—वो विधवास्त्री उसवसीयतनामेकों खारीजकर दूसरेकेनाम दूसरा वसीयतनामाकरसकती है, धर्मकामकेलिये या ज्ञातीयव्यवहारकेलिये पतिकी मिलकतको गिरवीरखसकती है और बेचभी सकतीहै आत्मजपुत्र—या दत्तपुत्र विनयवान् मातृभक्त और विद्याध्य नतत्परवगेरा गुणोकरके सहित है तोभी—वो—कुलागतव्यवहारके शिवाय—ज्यादे काम माताके हुकमबिदुन नहीं कर सकता, अगरसवालकियाजायकि—माता—उसे—न—चाहतीहो—और हमेशा नाराज रहती हो—तो—क्याकरनाचाहिये ?—(जवाब.) उसका हुकम उठाना बे—फिर—कैसे—नाराजरहेगी—अगर कहाजायकि—वो—शूठेधर्मकीश्रधावाली है और लडका सच्चेधर्मकाश्रद्धावान् है—तो क्याकरनाचाहिये. ( जवाब )—धर्मकामकों छोडकर दूसरेसंसारों

काममें मुनासिब है माताकेहुकम मुआफिक करतारहे, मातापिता-  
कों अखतियार है कि-अगर-आत्मजपुत्रभी-अपनेसें विरुद्धहोजाय  
या-धर्मभ्रष्टहोजाय तो उसकों निकालदेवे और दूसरापुत्र रखलेवे,  
दत्तपुत्र लेकर उसका विवाह-करदिया हो-और-कुलअधिकारभी  
देदियाहो-तोभी-अगर-मातापितासें प्रतिकूल होजायतो अधिका-  
रहै मातापिताकों उसे बहारनिकालदेवे, अर्हन्नीतिका फरमानाहै  
कि-उसका अभियोग राजाकोंभी मुननेका अधिकार नही,

[ अर्हन्नीतिका दायभागप्रकरण. ]

पितृभ्यां प्रतिकूलः स्यात्-पुत्रोदुष्कर्मयोगतः

ज्ञातिधर्माचारभ्रष्टो यवा व्यसनतत्परः ८५

संबोधितोपिसद्वाक्यै न त्यज्येद् दुर्मतिं यदि

तदा तद्वृत्तमाख्याय ज्ञातिराज्याधिकारिणः ८६

तदीपाज्ञां गृहित्वा च सर्वे कार्यो गृहात् बहिः

तस्याभियोगः कुत्रापि श्रोतुं योग्यो न कर्हिचित् ८७

इसका अर्थ उपर आगयाहै, जबपुत्रकोंभी अगर प्रतिकूल  
होजायतो घरसें निकालदेना फरमाया तो-चेल-नोकर-पूजारी-  
और सेवकोंकी क्यागिनती रही?-इसीकानूनसें उसकाअधिकार  
खोसकर निकालसकते हो, कितनेक मारवाड-मेवाड और माल-  
वेके श्रावक-सेवकलोगोंकों अधिकारीसमझकर सिरपर चढादेते  
है कितनेक ऐसेभीहै कि-जो-सेवकोंकों नमस्कार करतेहै, कित-  
नेककहते है सेवकलोग हमारेहाथकी रेखाहैकैसेदूरहो? लेकिन! यह  
नहीमालूमकि-हमारे धर्मप्रवर्त्तकतीर्थंकरगणघर क्या फरमाते है?  
कइजगह सेवकोंने जैनमंदिरमें अपने अपने देव घरदिये है, कित-

नेक सेवकोने जैनधर्महो छोड़दिया है, मौचनेकी जगहहैकि जब जैनधर्मही उन्होंने छोड़ दिया तो फिर उनका जैनीयोंके साथ किसबातका सगपन है ?-अगर कहाजायकि-हमारेबड़े जैनीयोंके साथ बटलेहै. (जवाब.) क्यों बटले ?-किसनेकहाथाकि-तुम-जैनी बनो ?-अगर कहाजाय-जैनाचार्योंने उपदेश दियाथा जिससे हमजैनी बने-(जवाब.) तो-फिर जैनधर्मपालो, और अपनी मेहनतसे अपना गुजरा करो,-किसजैनाचार्यने तुमको परवाना करदियाहै कि-तुम-जनसंघसे हकदारहो ?-अगरकहाजायकि-हम लोगोंने-जैनमंदिरोंकी पहिले सेवा किइथी-मूर्त्तिकों सिरपरलेकर फिरेथे. ( जवाब. )-जोनोकरहोताहै मालिकका कामकरताही है, उसकी एवजीमें नोकरी पाइथी. लेकिन ! हकदार कहाँसे बने?—कइजगह सेवकलोगोंने मारवाड मेवाडवगेरा देशमें मंदिरमूर्त्तिपर दावा करके मालकी जाहिरकिइ फिरभी मूर्खलोगोंने उनको निकालकर अलगनहीकिये बड़ीभूल है. इसबातमें गुजरातके जैनसंघकी तारीफ करना चाहियेकि-उनोंने पहिलेहीसे सेवकोंके पाषंडकों अलग करदिया. जब तीर्थकरगणधरोने जैनकानूनमें खुले-खुला बयानकरदियाकि-बेटाभी-अगर बर्खिलाफ चलेतो उसको निकालदेना-फिर-दूसरोंकी क्या गिनती रही ?-कानून सच्चे सच्चा बयान फरमाता है फिरभी अकलके अंधोंको नही सुझता क्या कहाजाय, ?

( २१३ ) स्त्रीभी अगर पतिसँ बदलजाय तो कानूनफरमाताहै निकाल दो, बदचलन औरतकेलिये रोटीकपडेंकाभी दावा नही है, कइविषयासक्तपुरुष स्त्रीके बदचलनचलतेहुवेभी उसकी

ताबेदारी उठातेहैं, और कहते हैं क्या करे ? स्त्रीकों कैसे निकाले ? लेकिन ! कानून फरमाता है निकालदेना चाहिये, जोलोग नहीं निकालते हैं और पश्चात्ताप करके बैठेरहते हैं ज्ञानियोंने उनकों मनुष्य नहीं जानवर फरमाया, कोईपुरुष बिनापुत्र मरगया और उसकी स्त्रीने दत्तपुत्रलिया, वो पुत्र पिताका कुछ अखतियार पाकर कवाराही मरगया तो माता उसदत्तपुत्रके नाम दूसरालडका गोंद नहीं बैठासकती, किंतु अपने गोंद लेसकतीहै, सासुकी मौजूदगीमें मरेहुवे बेटेकीबहूकों कुलागतद्रव्यमें रोटीकपडेके शिवाय दूसरा कुछ अखतियार नहीं है, पुत्र गोंदलेना वगेरा सभीकाम सासुके मनोनुकुल करनेमुनासिब है, क्योंकि-सासुका अधिकार बडाहै, मातापिताकेमरनेबाद पुत्र अपनेअपने हिस्से अलगकरना चाहे तो सबकेहिस्से एकसरखे होने चाहिये, जीतेहुवे हिस्साचाहे तो पिताकी इच्छा मुआफिकहोगा, मिताक्षरावगेरा अन्यमतावलंबीयोंके ग्रंथमें कइतरहके मतभेदहै, भाइयोंमें जो भ्राता अविवाहित हो उसकाविवाहकरके बाकी बचाहुबाधन सबभाइ बराबरहिस्से बांटलेवे, बहोतसें भाइयोंके बीचमें एक-या-अनेक बहेनहो-तो-सभीभाइ अपनेअपने हिस्सेसें चोथा हिस्सा निकाल कर उनका विवाह करे, भाइयोंमेंसें कोईभ्राता पिताकेधनकों न खर्चकर नोकरीकरके लडाइमें बहादूरीपाकर-या-अपने एलमके जोरसें लाभ उठाकर जो कुछ धनदौलत हासिल करे उसमें दूसरेभाइयोंका कुछ हक नहीं पहुंचसकता, कोईदोस्तसें इनाम पावे, विवाहमें सुसरालसें-जोकुछधन पावे उसमेंभी दूसरे भाइयोंका कुछहकनहींपहुंचता. पिताका दूधहुवा धन पिताने का

भाइयोंने नही बिकाळा उसकों अपनीताकतसे किसीभाइकी मदतबिना निकाले यानी हासिलकरे तोभी उसमें किसीभाइका हकनही पहुंचता, मिताक्षरा बगेराग्रंथोंमें अनेकमतभेद है, विवाहितापुत्री मरजाय और उसकों मातापिताने जोकुच्छ धन दिया हो उसके मालिकउसलहकीके मातापिता नही किंतु पति उसका मालिकहै, जिसस्त्रीकों विवाहमें-या-विवाहकेपीछे-गांवनगर-या-गेहनेकपडे जोकुच्छ उसके मातापिताने दियाहो-चाचाने-बड़ी बहेनने-भूआने-मासीने-भाइने-या-उसकेपतिने-जोकुच्छ दियाहो-वो-उसीका है, किसीका उसमें दावानही, दुर्भिक्षबगेरामें आपदा आनपडे उसवरुत अगर बोरजामंदीसें देवे तो लेना बनसकताहै, हां ! पतिको अखतियारहै कि-संकटके वरुतस्त्रीसें मांगलेवे, स्त्रीका भी धर्महैकि-संकटकवरुत साहायतादेना, जुआबगेराखोटेकामोंमें धनहारजाना और स्त्रीके गेहनेकपडेउतारलेंनायह लाइकवर आदमीका कामनही.

( २१४ ) मातापिताकी मौजूदगीमें आत्मजपुत्र भी-कोइ-ज्यायदादकों-गिरवी-या-विक्री नहीकरसकता, कोइ भ्राता दीक्षालेकर साधुहोजाय तो उसकी स्त्रीको-स्त्रीधन-शिवाय अविधक्तधन जो उसके जेठदेवरोंकेपास मौजूद है उसमेंसें उसकेपतिके हिस्से मुआफिक मिलनेका हक है. भाइयोंमेंसें बडाभाइ पुत्ररहिनहो-तो-वो-ज्यायदादमेंसें किसीकार्यकेलिये बिदूनभाइयोंकी-या-पुत्रीकी-सलाह-धन नहीदेसकता. अगर बहोतसें भाइ हो और उसमेंसें कोइभाइकी स्त्री-न-हो-और वो मरजाय-तो उसका धन उसकेभाइ या भतीजे सबभागकरके बांट लेवे. बहोतसे भाइयों-

मेंसें कोईभाइ पंगु-उन्मत्त-या-अंधत्वादिदोष युक्तहो तो उसका भाग उसकेताल्लुक न करके अपनेपास रखे-और-सबभाइ मिलकर उसका पालन करे, जिससें उसकों तकलीफ नहो और उसकाधनभी कोई ले न जाय. पतिकी मौजूदगीमें जो गेंहना स्त्री पहनेहो-या-उसीके पासहो उसकों कोई नही लेसकता. विधवा स्त्री अपनेपतिका धन जोकि-सासु सुसरंके कबजेमें हो उसकों नही लेसकती. किंतु पति जीतेजी जो देगयाहो उसीहीमें उसका अधिकार है, अगर वो विधवा स्त्री लडका गोंदलेना चाहेतो सासु सुसराके हुकम बिदून नही लेसकती. मातापिता जो चीज जिस दूसरे शरूशकों-या-अपने कुटुंबपरिवारकों देजाय उसकों बेठा नही लेसकता,

( २१५ ) जहां यवन-अधर्मी-कसाइ-वैश्या-नट और-जुआरीलोग ज्यादा बसते हो उसमहोलेमें अच्छेलोगोंकों निवासकरना ठीकनही. दुर्गंधवालीजमीनमें-वसना पहिलेछेलिखचूकेहैकि-नरककुंडमें पडना एक सरखा है. जिसजमीनके नीचे मनुष्यका हाड डटाहुवाहो वहां वसनेवाला सुखीनहीरहता. गधेका हाड डटा हुवा हो तो राज्यभय-कुत्तेका हाड होतो संतानकी हानि-और-जहां गौका हाडहोतो जानवर उसघरमें वृद्धि न पावे, जब कभी तुमकों धर्मचर्चाकरनेका काम पडे तो-वादी-प्रतिवादी-सभादक्ष-दंडनायक-और-शाक्षीद्वारा कियेकरो, शुष्कवादकरनेमें कोई फायदा नही. जिसराजाके राज्यमें न्याय नहो वहां रहना जिंदगीकों ? दुखानेमेंढालनाहै, एकराजाकी अदालतमें एकशरूशने इसबात, नालीशकिइकि इसने मेरी स्त्रीकों-इतना मार मारा जो उसके पां चमाहिनेका गर्भपात होगया, मूर्खराजाने न्यायकियाकि-अच्छा !

मुद्दईकी औरत तबतक मुद्दाइलेके घरमें रहे जबतक उसको पाँच महिनेका गर्भ नहोजाय, धन्यहै राजासाहब ! खुब न्यायकिया ! ऐसे राजाओंके कोठारीभी ऐसेही होतेहोंगे, एकदफे ऐसे अकल मंद कोठारीसाहब राजाजीके पास बैठे हुवे थे, नोकरने आकर कहा, चलिये !-अनाजके कोठोंमें आगलगी है, कोठारीजी हसकर बोले, लगाकरे-कुंचातो मेरेही पास है, किसरस्ते होकर-बो मकानमें घूमेगी ?-कोठारीजी गयेनही-और-वहां अभिने सबकाम पुराकरदिया. धन्य हैं! ऐसे कोठारीयोको कहांतक तारीफकरे.

( २१६ )-रात्रीको सोतेवरुत-देवगुरुका स्मरणकरके सोना चाहिये, सब पापारंभसें निवृत्ति सूचक त्यागप्रत्याख्यानकरके जो शुरुश सोवेगा अगर रात्रीमें मरना भी होजाय तोभी अच्छी गतिकों जायगा, स्त्रीसें अलगहोकर दूसरीशय्यामें सोना बलवृद्धि होनेका हेतु है, सारीरात स्त्रीसें मीलकर सोना ज्ञानीयोंने अच्छा नही फरमाया, ऐसंस्त्रीकोभी विवेक रखना चाहिये, कामभोगमें जैसा रागके परिणामसें पुरुषको पापलगता-वैसा-स्त्रीकोभी लगता है, स्वप्नमें अगर किसीस्त्रीको या पुरुषको वीर्यपात होजाय तो उसको अतिचार दोष लगता है, उसके निवारणकेलिये साफहोकर सवेरे कायोत्सर्ग ( १०८ ) स्वासोत्स्वासतक करना चाहिये, अनादिकालसें जीव अज्ञाननिद्रामें सोता हुवा पडा है, क्रोधादि दुश्मन उसे खराब कररहे है, ज्ञानी लोग ज्ञानरूप खडगके प्रहारसें विद्धत करते है. [ अनुष्टुप्चत्तम् . ]

क्रोधमानमायालोभा-देहे तिष्ठन्ति तस्कराः

ज्ञानखड्गप्रहारेण-तस्मात् जायत जायत. ९



मातानास्ति पितानास्ति-नास्ति भ्राता सहोदरः

अर्थो नास्ति गृहनास्ति-तस्मात् जागृत जागृत. २

जन्मदुःखं जरादुःखं-मृत्युदुःखं पुनः पुनः

संसारसागरे दुःखं-तस्मात् जागृत जागृत. ३

आशा हि लोकान् बध्नाति-कर्मणा बहुचिंतया

आयुः क्षयं न जानासि-तस्मात् जागृत जागृत. ४

निद्रा एकतरहकी विश्रांतिस्थिति है। निद्रामें प्राणी अचेतन पड़ा रहता है। रक्त भ्रमण और श्वासोत्श्वास-ये-दोकार्यही होते रहतेहैं। नबघंटे-पा-छघंटे रातकों नींद नलिइजायतो बदहजमीरोग पैदाहोजाता है। जिसाजिसतरहके स्वप्नआते है उसमें कौनसा स-चा और कौनसा झूठा-इमका बयान इसीकिताबके अष्टांगनिमि-त्तविषयमें देखो। आतीहुइ नींदकों मतरोंकों। जहां नींदलेनाहो वहां साफ हवा आनेका बंदोबस्त जरूर रखो। खालीजमीनपर सोंने-सें बीमारी पैदाहोतीहै। जमीनपर या पलंगमें नरम बिछौना ढा-छकर सोना चाहिये। कइलोग सोतेवरत अपने सब शरीरकों ढा-कलेतेहैं मुखकोंभी खुला नहीरखते, इससे बुरीहवा जो उत्स्वास द्वारा शरीरसें बहार आतीहै उसीका अंश फिर स्वासलेतेवरत भीतर जाताहै, थोड़ीदेर पैसाहोनेपरहर्ज नही लेकिन ! बहोतदेर पैसाहोनेसें बीमारीआतीहै, इसलिये सोतेवरत मुखकों खुला-चा-आधा-खुला रखेकरो, रातकों जल्दी सोंना और सवेरकों जल्दी जागना सुखकी निशानीहै,

( २१७ )-पहिलेजमानमें मनुष्योंकी उमरबड़ीबड़ीलंबी होती-थी, ज्युंज्युं उतार होतागया उमरभी कमहोतीगइ, कारककामी उ-

तारचढाव अकसर होताहीहै, जैसे गाडीकाचक्र उपर नीचे चढ़ता उतरताहै वैसेकालचक्रभी समझनाचाहिये, पहिलेजमानेकी बातें जाने दिजिये ! आजकल मनुष्योंकी उमर बाहुल्यतासे देखीजाती है तो (१२०) वर्षके अंदाजपर है, कइदेशोंमें दोसें देदसेंवर्षके मनुष्यभी अबहै लेकिन ! थोड़ोंकी गिनती नहींकिइजाती, जो बातकही जातीहै बहोतोंकी अपेक्षा किइजातीहै. तुमको अगर अच्छवारपढनेका शौकहै तो कइजगह पढाहोगाकि-बडीबडी जयरवालेभी शुरुश देशांतरमें है. जापानदेशमें एकआदमी इसबरत देसा मौजूद है जिसकी उमर (१३५) वर्षकी है. उसकी स्त्रीकी (१३३) वर्ष और बडापुत्र (१०८) वर्षका है, इसीलिये कहसकते है कि- १२० वर्षकी उमरजो कहीगइ है वो बहांतोंकी अपेक्षा समझना. आजकलकेबरतमें स्त्री (५५) वर्षबाद-और-पुरुष (७५) वर्षबाद निर्बीज होजातेहै. (यानी) उनके रजोबीर्यमें संतानपैदाहोनेकी ताकत नही रहती. कोइकोइको सो (१००) वर्षतक लडके पैदाहोते है लेकिन ! बहोतसे लोगोंको तो वही बातहोतीहै जो उपर लिखचूके, संभोगकरतेबरत पिताका जैसा मन होगा लडका वैसा स्वभाववालाहोगा, कइ हसमुखे देखतेहो यही सबबहै उनके मातपिताजसबरत खुशमिजाज थे. आजकल हाथी (१२०) वर्ष जीतेहै. घोडे (४८) वर्ष, -गधे (६०)-(६४) वर्ष, कुत्ते (१२) वर्ष, हिरन-शियाल-(२४) वर्ष, बिलाव (१२) वर्ष, हंस (१००) वर्ष, तोंता (१३)-(१३) वर्ष, गेंडा (२०) वर्ष, बुगला (६०) वर्ष, सांप (१२०) वर्ष, उंदरा दोवर्षसें लगाकर (२०) वर्ष, ससावारां चौ-दाहवर्ष, चींटी (१)वर्ष, सूअर (५०) वर्ष, बंठ-गौ-भेंस(२५) वर्ष

जूं-तीनमाहिने, बीछु-छमाहिने कागडे (१००) वर्ष, सिंह (१००) वर्षसें ज्यादा जीता है, बडेमगरमच्छभी जो मध्यसमुंदरमें होते है लंबी उमरवाले होतेथे.

(२१८)-आजकलके हरेकतंदुरस्तमनुष्यके शरीरमें दशशैर लोही-पांचशैर चरबी-दोशैर मलमूत्र-एकीसतौलेपित्त-दशतौले वीर्य-और-दश तोले कफ रहताहै. भारीशरीरवालेके मांस ज्यादा-पतलेको कम, लेकिन ! यहवात एकअंदाजनसें कही गई है, सोभी लडके और बुढेको छोडकर जवानकी बनीस्पत जानना. पहिलेजमानेमें बडाशरीरथा उसमुआफिक गिनतीथी अबके लोगोंकी इसजमाने मुजब है, कइदेशके आदमीकमजोर और कइ देशके जोरावर होते है, लेकिन ! हां इतना कहसकते है पहिले जमानेमें जो ताकत-और-धनदौलतथा इनदिनोंमें नही रही. इ-स्वीसनसें (३३१) वर्ष पहिले युनानके बडेबादशाह सीकंदरने जब भारतमध्यखंडपर चढाई किइथो उसवख्तकेबयानमें-वो-लिखता हैकि-मगधदेशका राजा-नंद-पुरीतेजीपर था, उसकी फौजमें छलाखयोढे पैदल थे, बीसहजारसवार-और-नवहजार हाथीये. चीनके मुसाफिरलोग जब भारतमें शैरको आयेथे उनोंने भी अपने इतिहासमें भारतकी तेजी लिखी, जगहजगह सडके-वृक्षोंकी श्रेणियां-जगहजगह धर्मशाला-थी, हजारोंहमंदिर और हजारोंह मूर्ति मुन्नेचांदीकी मौजूदथी. अनाज-घी-गुड-मिश्री-मेंवा-मिठाई, इतने शस्ते बीकतेथे जो आजकलके जमानेसें आठदसगुने ज्यादा थे. कइनगरीयां ऐसीथी जिसमें तीसतीसहजारतमोलियोंकी दुकानथी,-जहां इतने तमोली होंगे वहां शौकीन कितनेहोंगे इसका

खयाल करना चाहिये, कोटकांगडोंकी लूटमें महमूद गजनवोने (२००) मण सुना-( २००० ) दो हजार मण चांदी-(२०) मण जवाहिरात लूटा, मथुरासे पांचमूर्ति फक्त सुन्नेकी-जिसमें एकमूर्ति चारमण पक्केकीथी लूटी-चांदी इतनी लूटी जो (१००) उठोंपर लादीगई थी, कइजगहतीर्थोंमें मंदिरोंके थंभोपरसे जवाहिरात इतना लूटा जो उठाना मुश्किल था. शाहबुदीनगौरीने हजारोंहमंदिर तोडवा दिये, शम्शुदीनअलतिमशकि-जिसने मालवेमें धारानगरीकेपास मांडवजीके जैनमंदिर तोडें, जगहजगहसे सुनाचांदी और जवाहिरात लूटा-इसलिखनेसे मतलब कहनेका यहहैकि-पहिले जमानेमें देश रिद्धसिद्धिसे भराथा. बडेबडे एलमदार और आकाश गामिनीविद्यासिद्धपुरुष मौजुदथे, ज्यू ज्यू पुरानेवस्तुकी तलाश करोतो निःसंदेह मालुम होताहै कि पहिले जमानेमेंदेश-पुन्यवान जीवोंसे भरपुर था, मानवधर्मसंहिताका वाच्यार्थ पूराहोताहै, इसमें सवेरेसे लगाकर रात्रीतक जोजोकार्य करनेमुनासिब थे बतलादिये गये-यंतो शास्त्रसमुद्रकापारनही, लेकिन ! हां ! जो बडेबडे विषय जाननेयोग्य थे बयानकियगये, इतना और रहगयाकि-जातबी-रादरी-या-धर्मसे भ्रष्ट होगया हो उसको क्या दंडप्रायश्चितदेना-सो-अर्हन्नीतिके कानुनसे यहां लिखना था-लेकिन!विस्तार बहुतबढ़ गयाहै इसलिये नहींलिखा. दिनचर्या-रात्रीचर्या रिनुचर्या-वर्षचर्या-और-जन्मचर्या इसमेंठीकठीकतोरसे लिखीगई, ज्योतिष मंत्र-और-मतमतांतरके भेद चोथेतारंगमें बयान करेंगे.

इति श्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-  
शांतिविजयजीमहाराज-विरचित-मानवधर्मसंहिता-  
वा-शांतसुधानिधिग्रंथका-तीसरा तरंग समाप्त,-

## [ ज्योतिष शास्त्रका वयान. ]

१-ज्योतिर्विद्या-एकदिव्यचक्षु है, जितनाफायदा मातापिता और मित्र नहीं पहुंचासकते उतना ज्योतिर्विद्या पहुंचासकती है तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण-और राशिके नाम पहिलेकंठकरना चाहिये, चंद्र-सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-और-शनिवगेराग्रह किसकिस नक्षत्र और राशिपर कबकब आते है, उदयअस्तकब होते है, इसकी पहचानभी सिखनाचाहिये, इष्टशोधनकरके लग्न निकालना और उसपर ग्रहोंको स्थापनकरना जिसको इतना आजायगा ज्योतिर्विद्या रुपकिलेमें उसकाप्रवेश ठीकतोरसें होसकेगा.

२-गणितविद्याप्रकीर्णकमें नक्षत्रकेसप्तदोष इसतरहबयानाकिये है सुन लो, (१)-सूर्यअस्तहोते वरुत जिसका उदयहुवाहो उसको संध्यागतनक्षत्र बोलतेहै, इस रोज कोइकार्य शुरुकियाजाय क्लेश पैदा होगा, (२) जिसनक्षत्रपर सूर्य बैठाहो उसको रविगतनक्षत्र बोलते है, इसमें जोकार्य प्रारंभकियाजायगा पूरा नहोगा, (३) विटेरनक्षत्रमें फतेह नहोगी.(४)जिसपर क्रूरग्रह बैठाहो उसको सग्रहनक्षत्र बोलते है, इसमें कोइकामका मुहूर्त्तकिया जायगा तो बिघ्नहोगा, (५) जिसपर सूर्यबैठा हो उसकेपीछाडीके एकनक्षत्रको विलंबीनक्षत्र बोलते है इसमें कोइनयाकाम किया जाय तो बिबादपैदाहोगा, (६) जिसपर ग्रहणहुवाहो उसको राहुगतनक्षत्र बोलते है, इसमें नयेकार्यकी शुरुआत किर्याजाय तो मरणान्तकष्ट होगा, (७) जिसके बीचमें होकर कोइसाग्रहनिकसे उसको ग्रहभिन्ननक्षत्र बोलतेहै, इसमें मुहूर्त्तकियाजाय तो लोहीवमन होगा,

३-जिसनक्षत्रपर सूर्यहो-उससें दैनिकनक्ष-४-६-९-१०-१३-या-२०-मा होतो उसरौज रवियोग कहा. बडाउमदा है. इसरौज जोकामकरोगे अच्छाहोगा, जिसरौज सोम-मंगल-बुध-या-शुक्रवारहो, १-५-६-१०-११-ये तिथिहो, भस्वनी-राहिणी-पुनर्वसु-मघा-हस्त-विशाखा-मूल-श्रवण-या-पूर्वाभाद्रपद-ये-नक्षत्र हो, इनमेंसें किसीतीनोकायोग मिलजाय उसदिन कुमारयोग होता है. इसमें जिसकामकी शुरुआतकरोगे फतेहहोगी, रवि-मंगल-बुध-शुक्रवार हो, २-३-७-१२-१५-ये तिथीहो, भरणी-मृगशिरा पुष्य-पूर्वाफाल्गुनी-चित्रा-अनुराधा-पूर्वाषाढा-धनिष्ठा-या-पूर्वाभाद्रपद-येनक्षत्रहो, इनमेंसें किसीतीनोंका-योगमिले उसरौज जिस कार्यकी शुरुआत किइ जायगी हकुमतके साथ पार पड़ेगी.

## [ जन्मपत्रिकाके बारहभुवनके नाम. ]

४, (१) तन, (२) धन, (३) सहज, (४) सुख, (५) संतान, (६) शत्रु, (७) जाया, (८) मृत्यु, (९) धर्म, (१०) कर्म, (११) लाभ, (१२) व्यय, -पांचमा-नवमाका नाम त्रिकोण, पहिला-चोथा, सातवा, दसवाका-नाम केंद्र, केंद्रके अगाडीके चारभुवन पणफर-और-पणफरके अगाडीके चार-आर्षोक्लिम-कहेजातेहै, कौन ग्रह किसराशिका मालिकहै?-किसराशिपर आनेसें उंचनीच और किसकिसराशिपर शत्रुमित्रक्षेत्री कहलाताहै? इतनीबात जानेगा उसकों जन्मपत्रदेखनेकी राह मालूमदेगी,

५-जबकोइशुल्क किसीअच्छे जामकारज्योतिषीकेपाम जाय तब उसकों मुनासिबहैकि-खालीहाथनजावे. जैनआम्नायमें चंद्रम

ज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-गणित विद्याप्रकीर्णक-ज्योतिषकरंडक-त्रैलोक्यप्र-  
कश-जन्मांभोषि-आरंभसिद्धि-और नारचंद्र वगेरा-कइग्रंथ ज्यो-  
तिर्विद्याके बयानकरनेवालेहै, आजकल इस विद्याकी कदर इस  
लिये कमहोगइकि-उत्तमग्रंथ पढनेवाले बहोतथोडे रहगये और  
पुछनेवाले बिनाखर्चकिये मतलब निकालनेवाले बनगये,

६-जन्मग्रह-देखकर मालुमहोमकताहै कि-इसशरूखकी बुद्धि  
कैसी होगी ?-धर्मश्रद्धा ध्रुवहोगी या नही ? जींदगीमें एशआराम  
कबकब भोगेगा ? मोहनीकर्म कमजोरहै या भारी ? इज्जतकितनी  
बढेगी ? स्त्रीका सुख इसके होगा या नही ? पुत्रपुत्री कितने होंगे ?  
उमर कितनी लंबी भोगेगा ?-दौलत कितनी बढेगी ? किसगतिसे  
आया और किसमें जायगा ? जींदगीमें इसको राजयोग होगा या  
नही ?-बीमारी कबकब आयगी-देशाटन कितना करेगा-मंत्रविद्या  
सिखेगा या नही ?-भोजनकी तकलीफ रहेगी या आनंद ?-स्त्रीसे  
प्रेमरहेगा या लडाइ-? केंदहोना-आगमें पडकर जलमरना-नदी-  
समुद्रमें गिरपडना-फांसी होना-या-झेरखाकर मरना-अैसेअैसेकु-  
योग इसके है या नही ?-व्यभिचार योग इसकेहै या नही ? जी-  
ंदगीमें कितनी स्त्रियों विवाहेगा ?-दीक्षा उदयआयगीया नही ?  
इसकेघर हाथीघोडे बंधेंगे या सवारोंसेभी तकलीफ रहेगी ? देव-  
मंदिर-मूर्ति-बागवगोचे-या-नयेनयेमकान बनवायगा या नही ?-  
स्त्रीकोंपतिमें प्रेमकैसा रहेगा ? कौनसीस्त्री राज्यभोगेगी-कौनसीस्त्री  
दिवानगिरि करेगी-कौनसीस्त्री दीक्षालेयगी-कौनसीस्त्रीकों लखपति-  
करोडपति-भर्तारमिलेगा-कौनसीस्त्री बालविधवा होजायगी-कौन-  
सी बंध्यारहेगी-और-कौनसीस्त्री राजाकी रानो बनेगी ?-वगेराबातें

जन्मग्रहदेखकर मालुमहोसकती है, लेकिन! देखनेवाला पुरापढाहुवां होनाचाहिये किसीकी जन्मपत्रिकामें फर्कहोगातो-गणितकरके-उसकों अच्छाज्योतिषी निकाल सकताहै,

७-एकज्योतिषीकेपास एकशरुश गया-और-पुछनेलगा बतलाइये ! पंडितजी ! आपके ज्योतिषमें जमाना कैसा मालुमदेताहै?—पंडितजी कुच्छ पढेहुवे नहीथे-शेखीमें आनकर कहने लगे-मेरे ज्योतिषमें ऐसामालूम देताहैकि-बलवान् कमजोरकों मतायगें, देशमे फूट मचेगी, किसोदेशकी जमान कपंगो, चौइसघंटोंकेबाद दूसरा-दिन लगेगा, दिनमेंचांदना और रात्रीमें अंधेरा रहेगा. मित्रोंमें प्रीति और दुश्मनोंमें नाराजी रहेगो. इसबातकों सुनकर पुछनेवालाशरुश कहनेलगा धन्य ! पंडितजी-धन्य ! तारीफहै आपकी अकलकी, ऐसेऐसेफल तो हम बिनापढेही कहसकतेहै, इसमें आपने कौनसी अपूर्वबात कही ?-निमित्तज्ञ उसकानामहै जो अपूर्वबात कहे,

८-गर्भाधान-पुंमवन शूचिकर्म-नामकरण-अन्नप्राशन-कर्णवेध-केशवपन-उपनयन-विद्याध्ययन-विव ह-आंर-व्रतारोपवगेराके मुहूर्त्त-सोलहसंस्कारकेबयानमें लिखचुकेहै, यहां आंरभी जो ज्यादे उपयोगीहै लिखदेयगें. [ दुकान खोलनेका मुहूर्त्त, ]-जिसरौज अश्विनी-रोहिणी-मृगशिरा-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनुराधा-उत्तराषाढा-उत्तराभाद्रपद-अभिजित-और-रेवती-ये-नक्षत्र हो, चौथ-नवमी-और चतुदशीकों छोडकर दूसरीतिथिहो, उसरौज अपना-चंद्रस्वर चलतेवरुत दुकान खोलना चाहिये, गदी बिछाकर मुहूर्त्तकरना, और सवासेंर सवापांचसेंर-या-सवामन मीठाइ बांटना-जिनमंदिरमें स्नात्रपूजन-अंगीरौशनो कराना, साधुजनोंकों



भक्ति-और-स्वधर्मीभाइयोंको-प्रभावना देना, दुकानमें फायदा होगा. जोशख्स सूर्यस्वरमें दुकानखोलेगा, फायदा न उठायगा, ज्योतिषसें स्वरोदयज्ञान बलवान् होता है. [ नोकरीके अधिकार लेनेका मुहुर्त्त. ]-जिसरोज अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य-हस्त-चित्रा-अनुराधा-अभिजित्-और-रेवती-ये नक्षत्र हो, बुध-वृहस्पति-शुक्र-या-रविवारहो-उसरौज जब अपना चंद्रस्वर चले नौकरी रहनेको मालिकके घर जाना-और-जिमकामका अधिकार अप-नेको सोंपे वह लेना, फायदा होगा और इनाम पाओगे.

९-[ प्रतिष्ठाका मुहुर्त्त. ]-उत्तरायणसूर्यमें प्रतिष्ठाकरना अच्छा होता है, मृगशीर्ष माघ फाल्गुन वैशाख जेठ और अषाढ ये महिने प्रतिष्ठाकेलिये ठीकहोते हैं, अधिकमासमें गुरुशुक्रके अस्तमें और प्रतिमाबैठानेवालेके जन्ममासमें प्रतिष्ठाकराना अच्छानही. संक्रां-तिकादूसरादिन-ग्रहणदिन-ग्रहणहुवेर्पाछेके सातदिन-रिक्ता-षष्ठी-अष्टमी-द्वादशी-अमावास्या-घटीबढीतिथि-भद्रा-नक्षत्रगंडांत-तिथि-गंडांत-दुष्टवार-व्यतिपातवैधृतिवंगेरा कुयोग-प्रतिमा बेठानेवालेका जन्मनक्षत्र-जन्मतिथि-जन्मवार-जिसरौज नहो उसरौज प्रतिष्ठाका मुहुर्त्त मुकररकरनाचाहिये. नाडीका अविरोध, षडाष्टकपरिहार, योनिका अविरोध, वर्गका अविरोध, गणका अविरोध, लभ्यालभ्यसंबंध, राशिकेस्वामीका अविरोध, प्रतिष्ठाकारकगुरुको चंद्रबल, और शिष्यको गोचरशुद्धिभी देखनाचाहिये.

१०-रोहिणी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-मघा-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-स्वाति-अनुराधा-मूल-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये नक्षत्र प्रतिष्ठाकेलिये अच्छे हैं, लेकिन ! गणि-

विज्ञापयनेके दिखलायेहुवे सप्तदोषोंकरके वर्जित होनाचाहिये. प्रतिमाबैठानेवाले पुरुषके जन्मनक्षत्रसे प्रतिष्ठाकानक्षत्र-१०-१६-१७-१८-२३-और-२५-मा होना ठीकनही. तिथियोंमें-शुक्लपक्ष-को दसमीसें कृष्णपक्षकी पंचमोतक अच्छोकही. जिसमेंभी-१-२-५-१०-१३-१५-ज्यादेतर अच्छीहै, वारमें सोम-बुध-गुरु-शुक्र ठीकहै. योग अगर अच्छा मीलजायतो-तिथिवार चाहे जैसे हो कोईहर्जको बातनही, कुंभस्थापनाकेलिये सूर्यनक्षत्रसे आगेके पांचनक्षत्रछोडकर उसकेआगेके आठनक्षत्रलेना, फिर आठ छोडकर आगेके छनक्षत्र लेनाठीकहै. जिसनक्षत्रपर सूर्यहो-उससेसातमान-क्षत्र भस्मयोगवाला कहलाताहै,

११-प्रतिमाजी बैठानेसें घंटादोघंटा पहिले कोई उत्पात हो-जाय-तो-मुनासिवहै उसदिन प्रतिष्ठाकाकाम बंदरखना, उत्पात किसको कहतेहै इसकेलिये इसीकितावमें अष्टांगनिमित्तका विषय देखलो-बीजलीका कडाका होना,-अग्निके किणके आकाशसें गिरना-धूलकरके आकाशमंडल छाद्रित होजाना-दिवारपर चित्रांमकीमूर्तियां कुचेष्टा करनेलगजाना-हसनैरौने लगना-आंखिफाडकर डरानेलगजाना-येसब उत्पातके लक्षणहै, उसदिनके मुहूर्त्तको बदलदेना चाहिये, अगर सवाल कियाजायकि-इतनाकामकरकेभी क्या ! प्रतिष्ठाबंदरखना ठीकहै ?-(जवाब.) हां !-जरूरबंदरखना. जोलोग इसमुआफिक नहींकरते खना खातेहै.

१२-प्रतिष्ठालग्नमें ग्रह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश, इनमें सौम्यग्रह आवेतो-अच्छाहै, पांचवर्ग-या-चारवर्ग शुद्धितकभी ठीक, इनसेंकम होतो ठीकनही. मेष कर्क तुला और

मकर ये चरराशिहै. वृष सिंह वृश्चिक और कुंभ ये स्थिरराशिहै, मिथुन कन्या धन और मीन ये द्विस्वभावराशिहै, प्रतिष्ठालग्नकी उद-यास्तशुद्धि देखना जरूरीकार्यहै,

[ प्रतिष्ठालग्नशुद्धि:- ]-[ शार्दूलविक्रीडितं- ]

सौरार्क क्षितिसूनवास्त्रिरिपुगा द्वित्रिस्थितश्चंद्रमा  
एकद्वित्रिखपंच बंधुषु बुधःशस्तः प्रतिष्ठा विधौ  
जीवः केंद्रनवस्वधीषु भृगुजो व्योमत्रिकोणेगतः  
पातालोदययोः सराहुशिखिनः मर्वेप्पुपति शुभाः (१)  
खेर्कः केंद्रनवारिगः शशधरः सौम्यो नवास्तारिगः  
षष्ठो देवगुरुः सितस्त्रिधनगो मध्याः प्रतिष्ठाक्षणे  
अर्केदुक्षिजिताः सुतेसहजगो जीवो व्ययास्तारिगः  
शुक्रो व्योमसुते विमध्यमफलः सौरिश्च सन्निर्मतः २

( अर्थः )-शनि सूर्य-या-मंगल-तीसरेछठे बैठेहोतो अच्छेहै, चंद्रमा-दूसरेतीसरे अच्छा, बुध पहिले दूसरे तीसरे चौथे पांचमें-या-दशमें-होतो ठीक, वृहस्पति केंद्रमें दूसरे-पांचमें-या नवमें होतो अच्छा, शुक्र-पहिले पांचमें सातमें नवमें-या-दसमें-होतो ठीक, राहुकेतुकेशाथ ग्यारहमेंभुवनमें सभीग्रह अच्छेहोतेहै, पांचमें-या-दसमें सूर्यहोतो मध्यम, केंद्रमें-पांचमें-छठे-या-नवमें-चंद्रमा होतो मध्यम, बुध-छठे-सातमें-या-नवमें-होतो-मध्यम, तीसरे छठे वृहस्पति मध्यम, शुक्र-दूसरे तीसरे छठे सातमें-या-बारमें मध्यम, मंगल-पांचम-और-शनि पांचमें-या-दसमें होतो मध्यमजानना,

१३. प्रतिष्ठालग्नमें सूर्य निर्बलहोतो प्रतिमा बैठानेवालेका नाशहो, चंद्रमा-निर्बल होतो प्रतिमाबैठानेवालेकी स्त्रीका नाशहो,

शुक्र-निर्बलहोतो उसके घनका नाशहो, केंद्र-या-त्रिकांणमें-सूर्य-शनि-या-मंगल बैठेहोतो थोड़े कालमें उसमंदिरका नाशहोजाय-मंगल-शनि-राहु-सूर्य-और-केतु-इनमेंसें कोईसाभी-ग्रह-सप्तमस्था-नमें शुक्रकेशाय बैठाहो-तो-कारिगरकों-प्रतिमाबैठानेवालेकों-और-प्रतिष्ठाकारकगुरुकों-तीनोंकों नुकसानकारकहै, केंद्र-या-त्रिकोणमें-शनि-बलवानहोकर बैठजाय और उसकों मित्रग्रह देखतेहो-तो-उसवस्तु अच्छेकामकी नींव डालना ठीकनही,

१४-प्रतिष्ठालग्रमें मंगलअगर आठवे-नवमें-बारमें-या-केंद्रमें बलवानहोकर बैठाहोतो समझलो हजारद्वंद्वकी तकलीफ पैदा-होगी, चंद्रमा-कूरग्रहकरके दृष्टयुक्तहो-वैसे लग्नमें प्रतिष्ठा कराइजाय तो प्रतिमाबैठानेवालेकों मरणांतकष्ट होगा, प्रतिष्ठालग्रमें शनि-बलवानहो-मंगलबुध-बलहीनहो-मेषवृषका सूर्य-या-चंद्रहो-अैसे वस्तुपर जिनप्रातमा बैठाइजायतो निहायत उमदा है, प्रतिष्ठाल-ग्रमें तीसरे छठे-या-ग्यारहमेंभुवनपर सूर्य बैठाहो-तो-तिथिवार-नक्षत्र बुरेभीहो-कोइहर्जकीबातनही, चंद्रमाभी अनुकूल नहोतोभी कुच्छपरवाह नही, सभीतरहके दोष दूरहोजायगें, प्रतिष्ठालग्रमें पहिले चौथे पांचमें नवमें-या-दसमें-शुक्र-या-बृहस्पति बैठेहोतो निहायतउमदाहै, सूर्य-चंद्र-मंगल-शनि-या-केतु-तीसरे छठे-या-ग्यारहमें बैठेहोतोभी निहायतउमदाहै, बुधबृहस्पति-या-शुक्र-इनमेंसें कोईभी बलवानहोकर केंद्रमेंबैठजाय और उसकेसाथ कोई कूरग्रह न हो-तोभी-बहोतठीकहै, लग्नमें-या-केंद्रमेंबुध बैठाहोतो-लग्नसंबंधी संकटदोष निवारन होसकतेहै, शुक्र-लग्नमें बैठाहोतोहजारदोषदूरहो-सकतेहै-और-बृहस्पति-अगरलग्नमें बैठाहोतो लाखदोषदूरहोसकतेहै,

१५-असीलप्रशुद्धि मिलजाय और उसवख्त प्रतिमाबैठाने-  
वालेका चंद्रस्वर चलताहो-तो-निहायतही उमदायोगहै, चंद्रस्वरमें  
किइहुइ प्रतिष्ठा बहोतही फायदेमंद होतीहै, सूर्यस्वरमें प्रतिमाबै-  
ठानेसें कइतरहके विघ्न पैदाहोगें. (सवाल) फिर ज्योतिषशास्त्र  
कौनकामका रहा ? ( जवाब. )-स्वरोदयज्ञानके आगे ज्योतिषशास्त्र  
अलबते ! कमजोरहीहै, गणिविज्ञापयन्त्रमें खुलासावयानहैकि-नि-  
मित्तज्ञान सबसें बढकरहै, ज्योतिषशास्त्र निष्फल नहीं लेकिन !  
हां ! इतनाजरूर कहसकतेहैकि-स्वरोदयज्ञानकेआगे जरूर कमजोर  
है, चंद्रस्वर अमृतनाडीकही. जितने प्रभावशाली और स्थिरकार्य  
करनाहो इसीमें करने चाहिये, याते सबतरहसें आनंदरहेगा.

१६-प्रतिष्ठाकरानेवाले आचार्य-उपाध्याय-साधु-या-व्रतधा-  
रीश्रावक-कोइहो उसकाभी प्रतिमाबैठातेवख्त चंद्रस्वर चलताहोगा  
तभी अच्छाहै, प्रतिमाबैठातेवख्त-गुरु-जबअपना चंद्रस्वर आवे  
तब संघमेंसें जिसशस्त्रका उसवख्त चंद्रस्वरचलताहो-उसीकेहा-  
थमें प्रतिमा तरुतनशीन करादेवे. प्रतिष्ठाका मुहुर्त्त जिसरौज मुक-  
ररकियाहो उसलग्नकेसमयपर अगर-गुरुका-या-प्रतिमाबैठानेवालेका  
चंद्रस्वर न चले-तो-बेहतरहै उसवख्त प्रतिष्ठा न करना, ज्योति-  
षशास्त्रका जिसको ज्यादाज्ञान न हो-वो-अगर सामान्यदिनशुद्धि  
देखकर चंद्रस्वरचलतेवख्त प्रतिमा बैठावेतो कोइहर्जकीबातनही.  
हां ! लग्नभी अच्छा मिले-और-गुरुका तथा प्रतिमाबैठानेवालेका-  
उसवख्त-चंद्रस्वरचलताहोतो निहायत उमदाहै, प्रतिष्ठामें-दीक्षामें-  
और-विवाहमें-चंद्रस्वर चलना बहुतअच्छाहोताहै, इतिप्रतिष्ठा-  
मुहुर्त्त समाप्त.

१७-देशाटनकरनेका मुहूर्त-अश्विनी मृगशिरा पुनर्वसु पुष्य हस्त अनुराधा ज्येष्ठा मूल औ रेवती ये नक्षत्र देशाटनकेलिये बहो-तउमदाहै, तीनोंपूर्वा-रोहणी चित्रा स्वाति श्रवण धनिष्ठा और शततारका-ये नक्षत्र देशाटनकेलिये मध्यमहै, इनकेशिवायके नक्षत्र, अच्छे नहीं. जिसमेंभी तीनोंउत्तराभरणी कृत्तिका आर्द्रा मघा अश्लेषा और विशाखा-ये-विल्कुल अच्छे नहीं, जोजोनक्षत्र उमदा और मध्यम उपर लिखचूके वेंभी सप्तदोषकरके रहितहोनेचाहिये. रोहिणीनक्षत्रमें पूरवदिशाकों जाना ठीकनहीं. हस्तनक्षत्रमें उत्तरदि-शाकों जाना अच्छानहीं, चित्रानक्षत्रमें दखनदिशाकों और श्रव-णनक्षत्रमें पश्चिमदिशाकों जानाठीकनहीं, शनिवार सोमवारकों पूरवदिशातर्फ दिग्शूल हांताहै, गुरुवारकों दखनतर्फ-रविवारशुक्र-वारकों पश्चिमदिशातर्फ-और-मंगलबुधकों उत्तरदिशातर्फ-दिग्शूल होताहै, मुकदमेके और लडाइकेकामकों छोडकर और सबकामके-लिये देशाटनकरना तो चंद्रस्वरमें घरसँ चलना ठीकहोताहै, जो-शरूश देवगुरुकों नमस्कारकरके-या-परमेष्ठिमहामंत्रकों पढकर देशाटन करेगा फतेह पायगा,

१८-[रोगावलीचक्र.]—जिसरौज रोगपैदाहो उसरौज नक्षत्र और वार कौनसाहै?—इसकों देखकर इसचक्रकों बांचलेना-और-मालूमकरलेनाकि-यहरोग इतनेरौजतक रहेगा. मरनेकी बी-मारी आतीहै वोतो कभी नहटेगी. लेकिन ! हां ! जो आगंतुकरो-गहै उसकीस्थिति कितनेरौज रहेगी ? इसचक्रके पढनेसँ मालूम होसकेगी. नक्षत्र-मीले-और-इसमें लिखेमुजब-वार-न-मीले तो बीमारी साधारण जानना.—जिसरौज अश्विनीनक्षत्रहो-और-रवि-

सोम-या-शुक्रवारहो-उत्तररौज बीमारी आवेतो जानना एकीसरौ-  
 जतकलीफरहेगी. पीछे आरामहोगा. भरणीनक्षत्रकेरौज बीमारी  
 आवे तो मरणांतकष्टजानना, कृतिकानक्षत्र-गुरुवारके रौज बीमारी  
 आवेतो (८) आठदिनतकलीफ रहेगी, रोहणीनक्षत्रकेरौज बीमारी  
 आवेतो (७) रौज तकलीफ फिर आराम, मृगशिरानक्षत्रकेरौज  
 कोइवारहो-बीमारीआवेतो (१) महिना तकलीफ-फिर आराम,  
 आर्द्रानक्षत्रकेरौज-मंगल या-शुक्रवारहो-और बीमारी आवेतो म-  
 रणांतकष्टहोगा, पुनर्वसुनक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारीपै-  
 दाहोतो (२५) दिनतकलीफ फिर आराम, पुष्यनक्षत्र-सोम-बृह-  
 स्पतिवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (१३) तकलीफ फिर आ-  
 राम, अश्लेषानक्षत्र-सोम-शुक्रवारकेरौज बीमारीपैदाहोतां मरणां-  
 तकष्टहोगा, मघानक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो  
 दिन (१९) तकलीफ फिर आराम, पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र-सोम-  
 गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (११) तकलीफ फिर आराम,  
 उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र-सोम-शुक्रवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन  
 (२५) तकलीफ फिर आराम, हस्तनक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारके  
 रौज बीमारी पैदाहोतो-दिन (१५) तकलीफ फिर आराम, चि-  
 त्तानक्षत्र-सोम-गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (१५) तक-  
 लीफ फिर आराम, स्वातिनक्षत्र रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारी  
 पैदाहोतो दिन (१०) तकलीफ फिर आराम, विशाखानक्षत्र-रवि-  
 मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्टहोगा, अनुरा-  
 धानक्षत्र-बुधवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (४) तकलीफ  
 पीछे आराम, ज्येष्ठानक्षत्र-गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन

(२०) तकलीफ फिर आराम, मूलनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारके रौज बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, पूर्वाषाढानक्षत्र-सोम-बुधवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( ५ ) तकलीफ फिर आराम, उत्तराषाढानक्षत्र-गुरुवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( ३ ), तकलीफ, श्रवणनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( २५ ) तकलीफ फिर आराम, धनिष्ठानक्षत्र-कोइवार हो-उसरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( २५ ) तकलीफ फिर आराम, शततारकानक्षत्र-गुरु-शुक्र-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो ( १०० ) दिनतक तकलीफ फिर आराम, पूर्वाभाद्रपदनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी आवेतो मरणांतकष्ट हांगा, उत्तराभाद्रपदनक्षत्र-सोम-बुधवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( ८ ) तकलीफ फिर आराम, रेवतीनक्षत्र-गुरु-शुक्रवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( १०० ) तकलीफ फिर आराम,

( १९ )-जिसमनुष्यकी जन्मराशि मेषहो-उसको अगर पूर्वा फाल्गुनी-पूर्वाषाढा-या-पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, वृषराशिवालेकों हस्तनक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो-मरणांतकष्ट, मिथुनराशिवालेकों स्वातिनक्षत्रमें, कर्कराशिवालेकों अनुराधामें, सिंहराशिवालेकों पूर्वाषाढामें, कन्याराशिवालेकों श्रवणमें, तुलाराशिवालेकों शततारकामें, वृश्चिकराशिवालेकों रेवतीमें, धनुराशिवालेकों भरणीमें, मकरराशिवालेकों रोहणीमें, कुम्वाराशिवालेकों आर्द्रामें, और मीनराशिवालेकों अश्लेषानक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, इतिरोगावलीचक्र,

( २० )-तुमारसंचंद्रस्वर चलताहो उसबख्त-कोइधरुख-आ-



नकर बामीतर्फ खड़ाहोके पुछेकि-वरसात होगा-या-नही?-(ज-  
बाब.) कहदेना होगा. दोशखशकी लड़ाइहोरहीहो-और किसी  
तीसरने आनकर पुछाकि-दोनोंमेंसे किसकी फतेहहोगी? उसव-  
रुत अगर तुमाराचंद्रस्वर चलताहो-तो-जिसका पहिले नाम लि-  
या उसकी फतेह होगी कहना, खेतमें बीजडालतेवरुत अगर डा-  
लनेवालेका चंद्रस्वर चलताहोतो अनाज बहोतहोगा. कोइशखश  
आनकर पुछेकि-हमारा-एकआदमी केदहुवाहै छुटेगा-या-नही?   
उसवरुत अगर तुमारा सूर्यस्वर चलताहो और उसने पूर्णदिशामें  
स्थितरहकर प्रश्नकियाहोतो कहदो छूटजायगा. इसीतरह रोगदूर  
होनेका प्रश्न-अधिकारसें गिरेहुवकों फिरपानेका प्रश्न-और-च-  
र्चामें जयपराजयका प्रश्न-सूर्यस्वरमें पूर्णदिशातर्फ रहकर कोइ  
पुछे तो-कहदो फतेहहोगी, कोइशखश पूछेकि-मैं-दुश्मनसें मीलने  
जाताहूं-मैरी बात ठीकरहेगी या उसकी?-उसवरुत अगर तुमारा  
सूर्यस्वर चलताहो-और पूर्णदिशाका प्रश्न होतो कहदो-तुमारी  
बात अच्छीरहेगी. अकस्मात् किसीकों कोइ डर आनपडा उसके  
दूरहोनेका प्रश्न पूछे-या-लड़ाइमें हमारी जयहोगी-या-हार? -  
ऐसा पुछे-उसवरुत अगर तुमारासूर्यस्वर चलताहो-और-प्रश्न-  
पूर्णदिशाका होतो कहदो-फतेहहोगी.

## [ मंत्रशास्त्रका खुलासा. ]

( अनुष्टुप्छन्दम्. )

निर्वीजं अक्षरं नास्ति-नास्ति मौलमनौषधं

निर्धना पृथिवी नास्ति-आम्नायाः स्रलु दुर्लभाः १,

( १ )-अक्षरोंके संयोगका नाम-मंत्र-है, मंत्रके उच्चारणसे जो जो परमाणु फैलते हैं उससे एकतरहकी असर पैदा होकर फायदा पहुंचता है, कइ अक्षरोंके संयोगमें ऐसी ताकतरही है जिसके पढ़नेसे सर्पका झेर उतरजाता है दूसरेका मन अपनेअनुकूल हो सकता है, और दुष्ट देवोंका स्थंभनभी होसकता है। पहिलेकालमें ऐसे मंत्र थे-जिनका पाठ किया और तुर्त फल हुवा। ऐसे पाठसिद्धमंत्र आजकल नहीं रहे। रहेभी है-तो-उनके जाननेवाले नरहनेसे विछेदहोते जाते हैं, कइमंत्र ऐसे हैं जिनके पढ़नेसे देवता आसके, लेकिन ! आजकल तो कालदोषसे देवतेही आने बंदहोगये-फिर उसका जिकरही क्या ?-पंचमकालमें देव-प्रत्यक्ष-नहीं-आते, हां ! आंखोंमींचकर बैठो और मंत्र पढो तो सामने खड़े होकर बातेंकर जाते हैं, लेकिन ! आंखे खोलनेसे दिखाई नहीं देयेंगे, कइमंत्र ऐसे हैं जिनके पढ़नेसे आत्माका भलाहो-जैसे परमेष्ठि महामंत्रका पाठ करनेसे आत्महित पैदाहोता है,

( २ )-वर्द्धमानविद्या-सूरिमंत्र-अपराजितमहाविद्या-जो जैन सूत्रोंमें लिखीहुई है मुनिजनोंको जरूर पढतेरहना चाहिये, इससे शिथिलनिकाचित अशुभकर्मकी निर्जरा होसकती है, अगर सवाल कियाजायकि-जैनस्त्रास्त्रोंमें-तो-कर्मही बलवान् कहेफिर मंत्रक्या कामके रहे ? ( जवाब.-) जब अच्छेकर्मका ( यानी ) पुण्यका उदय हो तभी अच्छे मंत्रका योगमिलता है, मंत्र-अगर ध्यानदेकर स्वाध्यायरूप पढेजायतो-वै-शिथिलनिकाचित अशुभकर्मोंकी निर्जरा के हेतु होसकते हैं, इसीअपेक्षा मंत्रोंकी साफल्यता समझी गई है, रिषिमंडलस्तोत्रके बीज अक्षरोंका विधिसहित पाठकियाजाय तो

स्वप्नमें अरिहंतकी प्रतिमाका दर्शावहोकर अधिष्ठातादेवसें कइबा-  
तोंके खुलासें मिलसकते है, उंचपंक्तिकेदेव दिव्यज्ञानी होते है उ-  
नकों सबबात अपनेज्ञानसें मालूम होसकती है, उपसर्गहर-तिजय  
पहुत्त-भक्तामर-और-शक्रस्तव वगेराके बीजमंत्र अशुभकर्मकी नि-  
र्जराके हेतुहोकर फायदे जनक होसकते है,

( ३ )-कइ बीजाक्षर ऐसे है जो अटवीमें संकटकेवरुत्त पढे  
जायतो भय दूरहोसकताहै. समुद्रमें-अग्निमें-या-सिंह-सर्प वगेरा  
दुष्टजानवरोंके सामने लडाइदंगेके वरुत्त-राज्यसंबंधी भयमें-और  
केदस्त्वानेमें अगर मन-वचन और कायाकों स्थिरकरके पढे जाय  
तो-सबतरहसें साहायकारक होसकते है, मंत्रोंकी ताकत इसीवरुत्त  
हीतो कामदेती है, जबकि-दुनिया सारी बदल जाय,

( ४ ) ज्योतिषद्वारा-सुन्ना चांदी-अनाज-और-अफीमवगेर.  
चीजोंकी-मंदीतेजी होना मालूमहोसकता है, लेकिन!-जोकाम-मं-  
त्रसाधनकरके देवोंसें दरयाफत किये जाते है वो-ज्योतिषसें नही  
होसकते, आजकल संसारमें मतलबी शरूश ज्यादा रह गये. मत-  
लबबिदून बात नहीकरते, धर्ममें धनखर्चनेको कबूलकरके मुकर  
जाते है, इसलिये शास्त्रवेत्ता मुनिजनकों मुनासिबहेकि-धर्मकेका-  
ममें-( यानी ) सप्तक्षेत्रमें पहिले धनखर्चकराके पीछे उनकों कोई  
चीजका साधनबतलाना, दुनियादारोंका आजकल भरोसा नही  
वैसे-श्रद्धावान् नही रहे जो अवलमें अखीरतक एकसरखे रहे,  
जमाना बदलाहुवाहै, बाप बेटेसें परहेज रखताहै, इसलिये समझ  
सौचकर बातकरो. अगर सवाल कियाजायकि-साधुलोग-त्यागी  
होते है उनको धनदौलसें क्या मतलब!-( जवाब. )-साधुलोग

अलबते! संसारीक कामके त्यागी है लेकिन ! धर्मवृद्धिकेकाम करानेकेतो त्यागी नहीं है, पूर्वाचार्योंने कइकार्य इसतरह कराये है, विधिवादमें तोर्थकर गणधरोंका हुकमभी हैकि-धर्मकी बढवारीके छिये साधुलोग अपनीलब्धिभी-स्फुरायमान-करे और अधर्मीकों " शिक्षादे-तो-योग्यबातहै, अयोग्यनही, तोर्थकर गणधरोंने शास्त्रोंमें जगेहजगह क्यों मंत्र-ब्रह्मा-धर्मकेलिये चलानी वर्ननकिइ ? तीर्थ-करगणधर साधु थे-या-गृहस्थ ? अगर साधु थे-तो-सौचो !-क्या ! सिद्धहुवा ?-आजकल दुनियादार ऐसे रहगयेहैकि-मतलबभी निकालजाय और पीछेसे अवर्णवाद बोले, लेकिन ! जो-ज्ञानी मुनिहै कभी उनके फंदेमें नहींफसते, पहिलेसे सप्तक्षेत्रकी पुष्टि पढ़ुंचाकर बतलातेहै,

५-अगर सबालकियाजाय कि-जिनकेपास-द्रव्यखर्चकरनेकी ताकातनहीहै-तो-क्या उनकेलिये क्या करनाचाहिये ? ( जवाब. ) उनकेलिये अपनेभाग्यकी कमजोरी समझकर उसकामकों नकरना चाहिये. जैसे कोइ किसान खेत बोंकर अनाज पैदाकरना चाहता है लेकिन ! बीजडालनेकों सामग्री नहोनेसे वह-अनाज पैदानही करसकता-वैसे धर्मक्षेत्रमें बीजडालेबिदून मंत्रसाधनभी नहींकरसकेगा, अनाज बोंवेगातो पीछेसे फलमिलेगा-बोंवेहीगा नहींतो फल कैसे हासिलकरसकेगा, इसलिये मुनासिबहै कि-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-पुस्तक-प्रतिमा-और-मंदिर-इनसप्तक्षेत्रमेंद्रव्यव्यय करनेका प्रथम ध्यानदेना, हुंदियेपंथीलोग जो मुंहबांधरखतेहै और जैनीकहलातेहै-वे-इसीलिये जैनी नहींकि-उनोने सातक्षेत्रमेंसे प्रतिमा-और-मंदिर-ये-दोक्षेत्र उडादिये, कइ गृहस्थ ऐसे चालाक

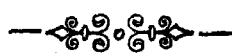
होतेहैं-जो-धनस्वर्चनेमें नपुंसकहै और साधुलोग जब उनको धन स्वर्चनेका उपदेशदेवे तब नींदाबोलनेपर कमरकसतेहैं-उनको अ-धर्मीसमझकर लाजिमहैकि-मुंह-नलगावे, जोशरुख दौलतमंदहै-और-वह-कोई देवसाधनकरना चाहे तो-मुनासिबहै पहिले धर्म-काममें स्पर्चकरे, राजाबादशाह-हो-या-कोई लखपाति करोडपति गृहस्थहो-उनकेलिये उनकीताकतमुजब-और-पांचपचीसहजाररूप-येवाला साधारणगृहस्थ-या-इससेंभी कोईगरीबहो-उसकेलिये उसकी ताकतमुजब-धर्मकाममें स्पर्चकरनाचाहिये, जोलोग इसतरह नहीकरते है उनकादिल लोभीलालचीहोनेसें उनको अच्छाफल नही होसकता.

६-( मंत्रके बीजाक्षरोकाअर्थः )-१, नमःसंपत्तिकरं, २, ह्रीं-जगत्रयवशीकरणं-परमेष्ठिवाचकं-जिनपतिबीजं वा, ३, श्री-लक्ष्मी-बीजं-ज्ञानबीजं वा, ४, अहं-सिद्धचक्रबीजं-जिनपतिबीजं अष्ट-महासिद्धिबीजं, वा, ५, क्लीं-कामबीजं, ६, क्रौं-अंकुशबीजं-निरोधबीजं वा, ७, ब्लूं-द्रावणबीजं, ८, हूं-विद्वेषणबीजं, ९, स्वाहा-पुष्टौ, १०, स्वधा-तुष्टौ-११, धेंधें-मारणे, १२, हः-सहस्ररूक्-१३, खंशखं, १४, हौं-ज्ञानं, १५, वषट्-वश्यकरं, १६, बौषट्-आकर्षणे, आह्वानेच, १७, संबौषट्-आमंत्रणबीजं, १८, फुट्-विसर्जने, १९, फट्-अस्त्रबीजं, २०, ओं-प्रणवः-ध्रुवविनयप्रदीपतेजो बीजं, २१, द्रां द्री क्लीं ब्लूंसः-पंचसायकाः-२२, स्वा-वायुबीजं-२३, हा-आकाशबीजं, २४, हंसं-विषापहारबीजं, इत्यादिबीजाक्षरोंके अर्थ-अनेकतरहके है, यहां कहांतक लिखें, मंत्रशास्त्रका जिनको शौख है-वें-शास्त्रांतरसेंभी तलाश करलेयगें, इसलियेयहांइतनाहीलिखना मुनासिब समझा गया.

७-हरमनुष्योंको चाहियेकि-सर्पके जहेरदूरकरनेका मंत्र जरूर सीखलेवे. इसमें अपना और दूसरेका दोनोंका भलाहै, परविद्या उच्छेदनमंत्र-और-दूसरेप्रभाविकमंत्र-भी-किसी ज्ञानीपुरुषसेमिलकर सीखलेनाजरूरीहै, जिसशस्त्रकों जो-मंत्र-सिद्धहोगा-उसका दिया हुवाही-जलदी चलेगा-पोथीमेंसे निकालकर वाचलिया और मंत्र-वादी बनगये यह कभी नहोगा. हमने यहां कइउपयोगीमंत्र लिख-देनेका इरादाकियाथा-लेकिन ! इसलिये-वो-मोक्षफरसाकि-मंत्र-गुरुकेमुखसेही लेनाअच्छाहै, जबतक ठीक ठीक भेदबतलानेवाला नमीले तबतक-लिखाहुवा मंत्र फायदेमंद नहीहोता-इसलिये अच्छे लोगोंसे मिलकर उनकी सेवाकरो और जब-वै-खुशहोकर तुमको बतलावे-तब उनकेफरमानेमुआफिक विनयभक्तिसे सीखो, तभी तुमारा मनोरथ सिद्धहोगा.

८-अगर मनुष्योंकी पुन्यवानी कमजोरहोनेसे कलिकालमें कोईमंत्र तात्कालिक फल नदिखलावे तो दूसरी-या-तीसरीदफे उसका साधन करना चाहिये-जो तीनदफे साधनकिया और फलित नहुवा तो उसे छोडदेनाठीकहै, इसकालमें मंत्रतंत्र औषधि और फलफूलोंकी सत्ता कमहोना ज्ञानियोंने पहिलेही बयानकर-रखाहै. रुपसौभाग्य जैसे पहिलेये अबनहीरहे, जातिस्मर्ण-अवधि-मनःपर्याय-और-केवलज्ञान विच्छेदहोगये. जवाहिरात नाममात्र होगइ, सत्वसंहनन-यशःकीर्त्ति-और-दौलतकमहोतीजातीहै, दातार मनहीन-और-धनाढ्य सुम बनतेदेखतेहो, धर्म श्रद्धा [ इतिश्री ] होगइ, जिनकल्पमार्ग बंद हुवा. राजेलोग रैयतकों फिजुल दंडतेहै, बरसात अकालमें होतीहै, जमीन थोडाफलदेतीहै, मतमतांतर इतने

फैल गये जिनोने धर्मकों चकनाचूर कर डाला. लोभी मिथ्या भिमानी-  
पाषंडी और धूर्तोंकी तारीफ बढी. पुन्यवान् धर्मवान् और मन्नावान्  
थोड़ीजींदगीमें मर जाते हैं, बापकों बेटे और गुरुकों चेले तमाचे  
मारते हैं, देवोंमें देवत्व-और-सतीमें सतीत्व विनाश हो जाता है,  
और साधु लोगोंमें भी पाषंडवृद्धि चल रही है, कहिये ! ऐसे बुरे ज-  
मानेमें अगर कोई मंत्र फल न दे-तो-कोई क्या करे ? तुमारे भाग्यो-  
दयकी कमजोरी समझो,



## [ छंदःशास्त्रका वर्नन. ]

( छंदःशास्त्र बिदून पढ़े कविता करना ठीक नहीं. )

१-छंदः-स्तवन-बनानेवाले ऐसी शिघ्रता करते हैं कि-उसके  
नियमोंपर कुछ भी ध्यान नहीं देकर कविता बना डालते हैं, लेकिन !  
याद रहे !! अच्छे लोगोंके सामने उनकी कविता मीठी समान गिनी  
जाती है. यद्यपि छंदशास्त्र बहुत बड़ा है और उनके भेदानुभेद अपार  
हैं तथापि जिसके जाने बिदून छंदस्तवनादिकका बनाना फिजूल  
है-वो-थोड़ा सा भेद यहाँ लिख देते हैं,

वर्णमालाके (५२) अक्षर हैं उनमें (१६) स्वर-और (३) क्ष-त्र-ज्ञ-  
अंतके मिश्रित व्यंजन हठाकर जो बाकी (३३) व्यंजन रहते हैं उनमें  
(१७) अक्षर नीचे लिखे मुआफिक दग्ध हैं,

[पूर्णदग्ध.] -ख-छ-ठ-थ-फ-र-ष,

[अर्द्धदग्ध.] -घ-झ-ढ-ध-भ-व-ह,

[चतुर्थांशदग्ध.] -ट-ड-ण,

इनउपरलिखे दग्धअक्षरोंको देवस्तुतिमें अगर-आद्य-लगादिये जाय-तो कोइहर्जकी बातनहीहै, लेकिन ! कविका धर्महै जहांतक होशके जरूर बचावे. जोजो चतुर्थांश और अर्द्धदग्धहै-न-बचेतो-खेर !-कुच्छ हर्जकी बात नही-लेकिन ! जो पूर्णदग्धहै उनको जरूर बचाना चाहिये, यद्यपि दग्धअक्षरोंका विस्तार-फलाफल-शुभाशुभ-और-भेदानुभेद-इतनाहै-कि जो लिखनाशुरूकरे तो पार नआवे-इसलिये छोटेकविकों इतनाही जानना ठीकहै.

२-अब थोडासा गणभेदभी बतला दिया जाताहै.

मगण—भगण—जगण—सगण—नगण—यगण—रगण—तगण,  
चोराशी—काजल—विहार—चरखा—गगन—दिवाना—श्राविका—बाजार,  
SSS—SII—ISI—II5—III—ISS—SIS—SSI,  
लक्ष्मी—कीर्त्ति—रोग—भय—आयु—वृद्धि—नाश—अफल,

तीनअक्षरमिलनेसे एकगण कहलाताहै. सो यदि-तीनअक्षर-गुरुहो-जैसे ( चोराशी ) तो-इसको मगणगण कहतेहै-जिसछंदकी आदिमें यहरखागयाहो तो-बनानेवालेको अच्छाहै, दौलतकी बढ़-वारीहोगी. जहां एकअक्षरगुरु-और-दो-अंतके लघुहो जैसे ( काजल ) इसको भगणकहतेहै. जिस छंदकी आदिमें यह रखाजाय उसछंदसे बनानेवालेकी दुनियामें इज्जत बढेगी, जहां तीनअक्षरोंकेबीचमें आद्यअंतकाअक्षर लघु और मध्यका गुरुहो-जैसे ( विहार ) इसको जगणकहतेहै. जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेको बीमारीआनेकी सुरतहै, जहां आद्यकेदोअक्षर लघु और अंतका एकगुरुहो-जैसे ( चरखा ) इसको सगणकहतेहै, जिसछंदकी आदिमें



यह रखाजाय बनानेवालेको कुटुंबीयोंसे भयहोगा, जहां तीनोंअक्षर लघुहो-जैसे ( गगन ) इसको नगण कहतेहै, जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेको शरीर तंदुरस्तीका हेतुहै. जहां आद्यका एकअक्षरलघु और अंतको दो-गुरु-हो-जैसे ( दिवाना ) इसको यगणकहतेहै, जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेको अच्छेकामोंकी वृद्धिहोगी. जहां आद्यअंतमें गुरु और बीचमें लघुहो-जैसे ( श्राविका ) इसको रगण कहतेहै, जिसछंदकी आद्यमें यह रखाजाय बनानेवालेको हरसुरतसे-नाशहोगा. जहां आद्यके दोअक्षरगुरु और अंतका एकलघुहो-जैसे ( बाजार ) इसको तगण बोलतेहै, जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेको कुछ फायदा नहोगा.

३-इसतरह देखकर अच्छेगणका ग्रहण-और-बुरेका त्याग करनाचाहिये. चार यगण मिलानेसे एकचरण और-सोलह यगणका पुरा भुजंगप्रयातछंद बनजाताहै,

### [ भुजंगप्रयातछंदः ]-( उदाहरण. )

तमाखू तमाखू तमाखू तमाखू-पियेसो दिवाना दिवाना दिवाना,  
जुआकों जुआकों जुआकों जुआकों-नखेले वहीहै सयाना सयाना,१

४-दोहाछंदमें प्रथमचरणकी (१३) मात्रा-दूसरेकी (११)-फिर तिसरेकी (१३) और चौथेकी (११)-मात्रा रखीजातीहै.

[ दोहाछंदः ]-ज्ञानीध्यानी संयमी-सुराधीरा अनेक,

तपिया तो दीसे घना-शीलवंत नर एक.

दोहाको आधाकरके पहिलापद पीछे-और-पीछलापद पहिले

पढ़नेसें सोरठाछंद होताहै. सवैये दोतरहके-एक-तेइसा-और-एक-  
 एकत्तीसा-इनमें गणका भेद नहींहोता-हरिगीतछंदमें एकपदकी  
 अठाइसमात्रा रखीजातीहै, जैसे. चारचरणोंके मिलानेसें पुरा एक  
 हरिगीतछंद बनजाताहै. विमलकेवलज्ञानकमलाकलितत्रि,  
 भुवनहितकरं-सुरराजसंस्तुतचरणपंकज नमो आदि  
 जिनेश्वरं-यहजो शत्रुंजयतीर्थका चैत्यवंदनहै इसको हरिगीतछंद  
 जानो. चौपाइछंदके लक्षणमें जाननाचाहियेकि-एकएकचरण पन-  
 रांहपनरांह मात्राका होताहै जैसे चारचरण मिलानेसें चौपाइछंद  
 बनजायगा. जिसचौपाइके हरेकचरणमें सोलहमात्रा रखीगइहो-  
 उसको रुपकचौपाइ जानना, जैसेही छंदोंके अनेकभेदहै जिनको  
 खायेसहो बडेग्रंथोंसें तलाशकरलें, यहांतो फक्त उसविषयकाबर्नन  
 जरूरीसमझागया था-जो-छोटेकविकों जाननेयांग्यथा, इसलिये  
 इतनाही समझलेना काफीहै.

## [ जैन और दयानंदसरस्वती ]

इसलेखमें हमारा और दयानंदजीका लेखनीद्वारा  
 युद्ध होगा. सावधान होकर देखना.

१-आर्यसमाजके आदिकर्त्ता दयानंदसरस्वतीने जो-सत्यार्थ  
 प्रकाशग्रंथ-रचा और उसके बारहवैसमुल्लासमें जैनधर्मपर जोजो

आक्षेपकिये उसपर यह लेख बतौर जवाबके समझना चाहिये इसको बांचनेसे समाजीलोगोंको जैनोंको-और दूसरेभी जो धर्म केज्ञाताहै फायदा पहुंचसकेगा, लेकिन ! पक्षपातरूप चश्मा हटाकर इसको देखना चाहिये-इसमें कोई बात झूठ मालूमपड़े-और-उसका कोई जवाब लिखना चाहे बेशक ! लिखे-धन्यवादकेशाय दूसरी आवृत्तिमें उसका शोधन कियाजायगा, दयानंदसरस्वतीजीकीतिरह कहकर बदलेंगे नही. लेकिन ! हां !-जो कोई वृथा कुवचनकहकर हमारे इष्टदेवकों-या-धर्मकों-आक्षेप करेगा उसको हम क्या ?-सब कोई अज्ञानी कहेगा. दयानंदजीके जीवनचरित-और-उनकीतर्फ-दारीके लेखोंके पढनेसे जाहिरहोताहैकि-वै-गुजरातकाठियावाडकी सीमापर राज्यमोरबीइलाकाके रहनेवाले ब्राह्मणथे. दयानंदजी खु- कहतेथे मेरापिता धनाढ्य जमीदारथा. दिलकुशायंत्र-फतहगढर्क. छपी. दिनचर्याका छेलापत्र देखतेहैतो जाहिर होताहै दयानंदजीका नाम गृहस्थपनमें मूलशंकर था. दयानंदजी अपने जीवनचरितमें लिखतेहैकि-जब-मैं-घरसेंचला संवत् ( १९०३ ) विक्रमी था. उनके फरमानेमुजब मैं कह साधुसंन्यासीयोंसे मीलें-विद्या पढी-और संन्यासी हुवे.

२-दयानंदजी संस्कृतविद्याके जानकरपंडित थे. प्राकृत-अर्बी-या-अंग्रेजीभाषा-व-नही जानतेथे. संस्कृतविद्याकेभी पूरेजानकार नहीथे-क्याकि-संस्कृतवाक्य प्रबोध-नामकी एकछोटीसी किताब उन्होंने रची उसमें कइजगह व्याकरणके नियमविरुद्ध रचना किइ है. पंडित अंबिकादत्तव्यासजीने इनकीअशुद्धियां-एक-अबोधनि-वारण किताब बनाकर जाहिर किइ है-जो काशीके भारतजीवन-

प्रेसमें छपीहुइ मौजूदहै, जिनकों संदेहहो देखलेना चाहिये. दयानंदजी वैदिकमतके संन्यासी थे-और हमकों यहां उनकेमतकाकुच्छ ध्यानलिखनाहै इसलिये पहिले वेदोंका हाल सुनलो!-असलमें वेद जडमूलसें एकनहीथा. हजारोंह रिषियोंके-पास-हजारोंहमंत्रये उनकों व्यासजीने इकठे किये. और उनके चारहिस्से बनाये, कोइ कहताहै निराकार इश्वरके कहेहुवेहै-कांइ कहताहै ब्रह्माके मुखसें प्रकटहुवे-और कोइकहताहै अनादिभीहै. खर ! हालतो तुम शुक्ल-यजुर्वेदकीभाष्यमें जोकुच्छ कहाहै सुनलो!-वहां असापाठहैकि-ब्रह्माकी परंपरामें वेदकों व्यासजीने पाया. और मनुष्योंकी अकल कम्होतादेखकर उन इकठेकियेहुवे मंत्रोंके चारहिस्से कायम किये, जिनकेनाम (१) रिग् (२) यजुः (३) साम-और-(४) अवर्थहै, फिर इनकों पैल-वैशंपायन-जैमिनि-और-सीमंतुकों यथाक्रमसें दिये. कइरौज गुजरेबाद वैशंपायनजी अपनेशिष्य याज्ञवल्क्यपर गुस्सा खाकर कहनेलगे-मेरेसें पढाहुवा यजुर्वेद त्याग करदे, कहतेहै उसने योगसामर्थ्यसें उसका त्याग किया, और सूर्यकों आराधनकर दूसरा यजुर्वेद हासिल किया. उस त्यागेहुवेका नाम कृष्ण-और-हासिलकियेहुवेकानाम शुक्ल-यजुर्वेद कहागया,

३-चारवेदके चारब्राह्मणविभाग ऐसे जानना चाहिये-रिग्वेदका अतरेयब्राह्मण-यजुर्वेदका शतपथ-सामवेदका तांड्य-और-थर्ववेदका गोपथब्राह्मण-ग्यारह उपनिषदके नाम सुनिये ! इशानि-कठ-प्रश्न-छांदोग्य-वृहदारण्यक-मुंडक-मांडुक्य-श्वेत-तैत्तरीय-और-अतरेय, वेदके छःअंगोंके नाम इसतरहहै. शिक्षा-कल्प-व्याकरण-निरुक्त-छंद-और-ज्योतिष्, स्मृतिशास्त्रके करनेहारे कइहै

लेकिन ! उनमेंसे नीचे बतलायेहुने आचार्य ज्यादा मझाहूगै, मनु-  
 याज्ञवल्क-विष्णु-हारित उशना-अंगिरा-यम-आपस्तम्ब-संवत्-का-  
 त्यायन-वृहस्पति-पाराशर-शंख-लिखित-दक्ष-गौतम-शातातप-  
 और-वशिष्ठवगेरा. अवतार उसकों समझना चाहिये-जो-निर्गुणका  
 सगुणहोना अर्थात् बड़ेपदमें छोटेपदमें उतरना. मच्छावतार-कच्छा-  
 वतार-वाराहावतार-नरसिंहावतार-पशुरामावतार-रामचंद्रकाअव-  
 तार-कृष्णावतार-गौतमबुद्धावतार-और-कल्कीका अवतार-ये(१०)  
 दसअवतार वैदिकधर्मवालोंने मानेहै. सत्य-त्रेता-द्वापर-और-कलि,  
 यहचारयुग क्रममें परिवर्तनहोतेरहतेहै. और यहभी कहतेहैकि-धर्म  
 रुपवृषभ-सत्ययुगमें चारोपांवमें खड़ाथा-त्रेतामें तीन-द्वापरमें दो-  
 और-कलिमें एकपांवपर खड़ाहै. ब्राह्म्यपुराण-विष्णुपुराण-शिव-  
 पुराण-पद्मपुराण-नारदीय-भारकंडेय-भविष्य-ब्रह्मवैवर्त्त-लिंग-वा-  
 राह-स्कंद-वामन-मत्स्य-गरुड ब्रह्मांड-और-भागवतवगेरापुराण-  
 वैदिकमतवालोंके धर्मग्रंथहै, महाभारत-रामायण-गीता-वगेराभी  
 उनकेही ग्रंथहै, गायत्रीमंत्र वैदिकमतावलंबीयोका मूलमंत्रहै. वेदके  
 भाष्यकार-तथा टीकाकेकरनेवाले-उन्हट-सायनाचार्य-महीधर-और-  
 रावणवगेरा प्राचीनवैदिकाचार्यहै, मूर्तिपूजा तीर्थ स्नान-तथा  
 श्राद्धतर्पण-वैदिकलोग मननकरतेहीहै यहता किसीसे छिपाहुवा  
 नहीं. बस ! आप इतनी बातें यादरखकर अब दयानंदजीके कहनेपर  
 खयाल किजिये.

४-दयानंदजीने जितनेशास्त्र मत्स्यमानेहै उनकेहाथका लिखाहुवा  
 विज्ञापनपत्र जो कानपुरके शोलेनूर छापखानेमें छपाथा उसीकेमु-  
 ताबिक यहां लिखदेतेहै, इतनायादरहे उनोंने संस्कृतमें लिखाथायहां

उत्सकी भाषाकिइहै. सुनो !-१. रिग्-२, यजुः ३, साम ४, अथर्व-  
येचारवेद, ५, आयुर्वेद, ६ धनुर्वेद, -७, गंधर्ववेद, ८ अथर्ववेद,  
इसमें शिल्पविद्याहै, ९, शिक्षाग्रंथ, १० कल्पशास्त्र, ११ व्याकरण,  
१२, नैरुक्तं, १३, छंद-इसमें गायत्रीवगेराहै, १४, ज्योतिषमें एक  
भृगुसंहिता. १५, इश-केन-कठ-प्रश्न-मुंड-मांडूक्य-तैत्तिरीय-छां-  
दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेता-स्वनः-कैवल्य-इत्यादिबारह उपनिषद,  
१६, शारीरकसूत्र, १७, कात्यायनादिमूत्र- ८, योगभाष्य, १९,  
वाकोवाक्य, २० मनुस्मृति, और-२१. महाभारत-में एकीमशास्त्र  
सत्यहै, मनुष्यराचित ब्रह्मवैवर्त्तादि (१८) तरहके पुराण पहिला  
गण्य-पाषाण वगेराकी मूर्त्तिकों देवबुद्धिकरके पूजना दूसरागण्य,  
शैवशाक्त वैश्रवणपतिवगेरासंप्रदाय तीसरागण्य, तंत्रग्रंथोंमें कहा-  
हुवा वाममार्ग चोथागण्य, भंगपीनावगेरा नशाकरना पांचवागण्य,  
\*पराइस्त्रीगमनकरना छठागण्य, चोरीकरना सातवागण्य-और-छल-  
कपट अभिमानतथा जूठ बोलना आठवागण्यहै. रिग्वेदवगेरा(२१)  
एकीमशास्त्र +परमेश्वरकेबनाये यहपहिला सत्य. ब्रह्मचर्याश्रममें  
गुरुसेवा और अपने स्वधर्मपर चलकर वेदोंका पढ़नादूसरा सत्य,  
\*वेदमेंकहेहुवे वर्णाश्रम धर्मसंध्यावंदना अग्निहोत्रादि तीसरामत्य,  
यथोक्तस्त्रीगमन पंचमहायज्ञोंका अनुष्ठान-रितुकालकेसमय अपनी  
स्त्रीकेपास जाना-और श्रौतस्मार्तआचारवगेरा अनुष्ठान चोथासत्य.

\* फिर -सत्यार्थ प्रकाशमें-एकस्त्रीकों ग्यारहपतिहोनेकाआज्ञा कैसे दिह गइ,

+ निगकागइश्वरने रचना किम मुखमें किइ ?

× वेदमेंकहाहुवावर्णाश्रम और धर्म सत्य-और-दूसरेका वर्णाश्रमधर्म झूठ, क्या

स्व पक्षापातरूपजामा पहनाया ?

अमदमतपःचरणयमादिसमाधितकउपासना और मशाहूर है, मनु-  
प्रस्थादि पांचवामत्य. विचारविवेकवैराग्यविद्याभ्यास नंब-संवर्त-का-  
संग्रहणपूर्वक संपूर्णकर्मोंकेफलकों छोड़देना छठामत्य. ज्ञानोपा-  
सर्वअनर्थ-जन्ममरणहर्षशोक कामक्रोध लोभमोहसंगदोष त्यागवै-  
गेराअनुष्ठान मातवासत्य, अविद्यारागद्वेष अभिनेवेश तमःरजः  
\*सत्त्वगुण-सर्वक्लेश निवृत्ति-पंचमहाभूतसें न्यारा-मोक्षस्वरूप स्व-  
राज्यप्राप्तहोना आठवा सत्य. [ दयानंदसरस्वत्पारव्येनेदं

पत्रं रचितं, तत्सज्जनै वेदितव्यम्— ] शोलेतूरमें छपा.  
यहविज्ञापनपत्र दयानंदजीने छपवायाथा इसमें ( २१ ) शास्त्रसत्य  
मानेथे लेकिन ! पीछे जब नवानसत्थार्थप्रकाश लिखा तब बदलेथे,

५-संवत् ( १९२६ ) में-जब दयानंदजी काशीगयेथे स्वा  
विश्वद्वानंदजी तथा बालशास्त्रोक्तेशाथ उनका वादानुवाद हुवा.  
लेकिन ! प्रकटरूपसें किसीकी विजयनहीहुइ. दोनोंदल अपनीअपनी  
विजय मान बैठरहे. इसविषयमें भारतेंदु-बाबू हरिश्चंद्रजीने  
अपनोबनाइ दूषणमालिकाकी भूमिकामेंइसतरह लिखा कि-“दया-  
नंद नामी-क्याजाने कौनजाति-वा-किसआश्रमके कोइनप्रपुरुष  
सबदेशोंमें भ्रमणकरतेहुवे-मनातनधर्मरूपीसूर्यकों राहुकोभांति ग्रा-  
सकरतेहुवे-मूर्खों और आलस्यभरेजीवोंकों अपनेरंगमेंरंगतेहुवे-और  
अपने वाक्यबाणोंसें माधुलोंगोंके हृदयकों दाहकरते हुवे काशीमें  
आये. मन १८७० ईस्वी-काशी-( हरिश्चंद्र, )-संवत् ( १९२९ ) में  
जब दयानंदजी पुनःकलकत्ते गये थे-वहांभी पंडित ताराचरणजी

\* यहां सत्त्वगुणभी त्यागने योग्य कह दिया. ठीकहै-जो मनःकल्पितमतवाले-  
होतेहैं जरूर भूलजातेहैं. बतलाना चाहिये विना गुणभीकोइ पदार्थ होसक्ताहै ?

उसकी भाषाकि/डंके रहनेवाले थे शास्त्रार्थ किया था. लेकिन! नती-  
येचारवेद, ५ ही निकला. दोनो दल अपनीअपनी विजयका डंका  
इसमें हि रहे. संवत् ( १९३० ) में जब द्रव्यकीसहायतामिली लंगोट  
बाध नंगा फिरना छोडकर अच्छेकपडे और बहुमूल्य जूता पह-  
नने लगे.

६-संवत् ( १९३१ ) में उनका प्रथम सत्यार्थप्रकाशग्रंथ छप  
करतयारहुवा-उसमें लिखाथा कि-सृष्टिकी आदिमें आग्नि वायु आ-  
दित्य और अंगिराके हृदयमें वेदोंका प्रकाशहोना, दसपुरुषों त-  
कसें नियोगकी आज्ञादेना, मांसादिपदार्थोंसे सबेरसांझ दोनोब-  
रुत होमकरनेकी आज्ञा फरमाना, मांसभक्षणकी पुष्टि करना, य-  
ज्ञमें बंध्यागौ और बैलआदि नरपशुओंके वधकी विधिकरना,  
स्वर्गनर्कलोकका नमानना, प्रत्यक्षादि आठ प्रमाणमानना, इत्यादि-  
बाते विद्वान् लोगोंमें-छिपीहुइनहीहै. इसकेबाद दयानंदजी बंबइ  
गये-और-इन दिनोंमें यह इरादाकियाकि-विद्यमानचारोंवे-  
दोंकी मनमानी टीकाबनाकर फेलाइ जाय तां ठीकहै, दयानंदजीका  
प्रथमआर्यसमाज बंबइमें स्थापितहुवा, और दसनियमभो बनायेगये,  
तोसरेनियममें लिखाकि-वेद-सत्यविद्याओंका पुस्तकहै, वेदोंका  
पढनापढाना मुननामुनाना सबआर्योंका धर्महै. संवत् ( १९३२ ) में  
दयानंदजी पुनातर्फ गये. फिर वहांसे पीछेलोटे, और-दिल्लीहोकर  
पंजाबमें लुधियाना लाहोर-अमृतसरवगैरातर्फ विचरतेरहे, संन्यासी-  
योंकेलिये पैदलचलनाकहा लेकिन! आप सवारीसे देशाटनकरतेथे.  
लाहोरमें जब दयानंदजी व्याख्यानदेनेलगे पुरानेवेदिकमतवाले  
इनसें नाराजहुवे, एकजगहनहीहरजगहयहोहालथा. सबबकि-पुराने



वैदिकमतसें इनका इरादा भिन्नथा। जहां जातेथे यही फरमातेथे कि—उब्हट—मायन—महोधर—और—रावणवगेराके बनायेहुवे—वेदभाष्य महाभ्रष्ट और अंधकार बढ़ानेवालेहै, मूर्तिपूजा गप्प—और—तीर्थोंमें भटकनाभी निरा झूठहै, इधर पुरानेवैदिकमतवाले जाहिरकरतेथे कि—दयानंदजीका व्याख्यान—वेदसें—विरुद्ध है, सुननानचाहिरे. —

७—मंगलदेवपराजय पृष्ठ(१९)पंक्ति(१३)मेंछपाहैकि—दयानंद-जीनेप्रथमसत्यार्थप्रकाशमें विस्तारपूर्वकयुक्तिमहित—मृत्युहुवेपुरुषोंके श्राद्ध और तर्पणकीविधि लिखी, फिर जबकि—उसका खंडनकरने लगे—और—लोगोंने आक्षेपकियाकि—आपने अपने पुस्तकमें क्या लिखाहै?—और—व्याख्यान क्या ! देतेहो !—तब वेदभाष्य अंक (२) के टाइटलपेजपर झूठावज्ञापन जाहिर कियाकि—सत्यार्थप्रकाशमें—तर्पण और श्राद्धके विषयमें जो छपागयाहै सो लिखने औरशोधनेवालोंकी भूलसें छपगयाहै, खूब ! कहा ! कहकरबदलना इसीका नामहै, अपनो लिखीबातसें मुकरना और दूसरेको दोषदेना संन्यासधर्मधाराको मुनासिब नहाथा संवत्—(१९३४)में—फिल्लोर—जिला—जालंधरनिवासी—पंडितश्रद्धारामजीसें दयानंदजीका शास्त्रार्थहुवा, उन्होंने दयानंदजीकी खूब खबर लिई, लेकिन ! जो शस्त्रज्ञ जानबुझकर जिमबातको स्थापनकरना चाहताहो उससें कैसे हटेगा ?

८—दयानंदजीने सत्यार्थप्रकाशके बारहवसमुद्रासमें जो जैनमतका खंडनलिखाहै उसमें नास्तिकमतके लेकर—जैनधर्मकेलोगोंको कलंक दिया और—कहाकि—देखो ! ये श्लोक जैनोंने बनारखेहै, सत्यार्थ-प्रकाशके पृष्ठ (४०२) पंक्ति (२०) से पृष्ठ (४०३) पंक्ति (१८) तक लिखाहैकि—

[ श्लोकाः ]

यावज्जिवं सुखं जीवेत्-नास्ति मृत्योरगोचरः  
 भस्मीभूतस्य देहस्य-पुगरागमनंकुतः, ? (इत्यादिसंलगाकर)  
 त्रयोवेदस्य कर्तारो-भांडधूर्त्तनिशाचराः,  
 जर्फरी तुर्फरीत्यादि-पंडितानां वचःस्मृतं,  
 अश्वस्यात्रहि शिश्रं तु-पत्नीग्राह्यं प्रकीर्तितं,  
 भंडैस्तद्वत् परं चैव-ग्राह्यजातं प्रकीर्तितं,  
 मांसानां खादनं तद्वन्-निशाचरममीरितं,

(यहांतक तेरांह श्लोक) लिखकर कहदिया ये श्लोक जैनोंने बनारसखेहै, लेकिन ! यहवात सरामर झूठहै, ये श्लोक जैनकेनहीं किंतु सर्वदर्शनसंग्रहग्रंथ जो वैदिकमतानुयायीमाधवाचार्यने रचाहै उसके है. जिनकों शंशयहो कितावसर्वदर्शनसंग्रह मंगाकर देखले, कलकत्ताके सारमुधानिधियंत्रमें छपीहै. सत्यार्थप्रकाशमें असा घोखादेनेवाला लिखाणदेखकरपंजाब-गुजरांनवाल निवांसी-लालाठाकुरदासजी जैनधर्मावलंबीने-चीठीद्वारा जब दयानंदजीमें प्रमाणमांगा-और पुछाकि-बतलाइये ! ये श्लोक कौनसे जैनआगममें लिखेहै ? तब कुच्छममयतकतो अनेकप्रपंचभरे जवाबदेतेरहे, कभी पुस्तक \*विवेकसारका सहारा लिया, कभी कल्पभाषाकों जा देखा, कभी यह जवाब लिखा आपको शुद्धभाषा लिखनाही नहीं आता, इसतरह अपने हठधर्मकोंही पालन करतेरहे. अंतमें लालाठाकुरदासजीने बंबई जाकर-[जबकि-दयानंदजीभी बंबई आयेहुवेथे] तारिख (१३) जून-सन (१८८२) इस्वीकों-मिस्टर स्मिथ-अंड-फ्रियर-हाइकोर्टके सोलिस्टर कीभारफत दयानंदजीकों

\* सोचना चाहिये-विवेकसार कौनसा जैनआगम था ?

नोटिस दिया. उसके जवाबमें दयानंदजीने तारिख (१९) जून-सन (१८८२) इस्वीकों मिस्टर पेंनी-अॅड-गिल्वर्ट मारफत उत्तरदिया, - जिसका मतलब नीचे मुजबहै. हमारे मवक्किल स्वामी दयानंद सरस्वती यह समझरहेहै जैनमतके किसी विद्वानके रचितहीयहश्लोक है-इसलिये तुमारा मवक्किल या कोईदूसरा जैनी हमारे मवक्किलकों यह सिद्ध करदेगाकि-पूर्वोक्त श्लोक जैनधर्ममें विरुद्धहै तो सत्यार्थप्रकाशपुस्तकके छपानेवाले-राजाजयकृष्णदास-सी-एस-आई-मुरादाबादनिवासी दूसरीबारछपनेके समय उनश्लोकोंको पृथक् करदेवेंगें. इसमें हमारे मवक्किलकों कुछ उजर नहीहै. महाशय !-देखिये ! क्या उत्तर दियाहै !-यहतो दयानंदजी खुलाखुला कैसे कहशकेकि-हम-भूलेहै, लेकिन ! ममझनेवाले समझसकतेहै कि-जब उनश्लोकोंको उक्तग्रंथमें पृथक्करदेनेमें कुछ उजर नहीरखते-तो जानाजाताहै कि-उनकेदिलमें सबूतहोगया येश्लोक जैनके नही. महाशयदयानंदजी ! इतनी कमजोरी क्यों बतागये ? अगर पहिलेसेही ऐसी आदत नढालतेतो कितना अच्छा था ! यह सबूत-होचूकाकि-ये-श्लोक नास्तिकमतके है, जैनके नही. इसकी गवाही सर्वदर्शनमंग्रह किताबहै शंभयहो देखलो-अच्छाहुवा जो दयानंदजीने नवीनसत्यार्थप्रकाशमें इनश्लोकोंको जैनका नही कहा, किंतु नास्तिकमतका मान लिया, नहीतो हमको इसका यथार्थ भेद और दयानंदजीकी अधिकपॉल खोलनी पडती, सत्यार्थप्रकाश तीन-चारदफे छपाहै इसलिये परस्पर पृष्ठसंख्या नमिले तो बारहवा समुल्लास देखलेना जिसमें जैनकावर्नन जैनबौधऔर नास्तिकको मिश्रितकरके लिखाहै.

९-संवत् (१९३९) में-दयानंदजी जब उदयपुर गयेथे वहाँ-  
 जैनभेतांबरधर्मोपदेष्टा-संवैगीसाधु-श्रीमान्श्वेदसागरजीमहाराजसें  
 उनका जोकुच्छ वादानुवाद हुवा यहाँलिखाजाताहै. श्रीमान्श्वेद-  
 सागरजीकों जब यहसमाचार मिलाकि-दयानंदजी जैनोंकेनास्ति-  
 कबतलातेहै एकआदमीकों उनके पास भेजकर यहपुछाकि-तुम  
 जैनोंकों नास्तिक किसग्रंथके प्रमाणसें कहतेहो ? अगर प्रमाण रखतेहो  
 तो लिख भेजो-या-विदितकरो. नहीरखतेहो तो यह तुमकों अथवा  
 कोईभी विद्वानकों मुनासिबनहीकि-विनाप्रमाणके किसीकों अनु-  
 चितशब्द कहे, इसपर दयानंदजीने अपने दोनवीनशिष्य जो उद-  
 यपुरमेंही कियेथे सहजानंदादिकों श्रीमुनिश्वेदसागरजीके पासभेजे,  
 उनोंने मूर्त्तिपूजा-और-जीवराशिपर प्रश्न किये-जिनका जवाब  
 उक्तमहाराजने दिया. फिर कुछदिनोंकेपीछें-श्रीमान् श्वेदसाग-  
 रजीने दयानंदजीकेपास एकशस्त्रकों भेजकर यह कहलायाकि-  
 आपने जो निजरचितसत्यार्थप्रकाशके द्वादशसमुल्लासमें जैनोंके  
 नामसें झूठे श्लोक लिखेहै सो-यातो-उनकों अपनेग्रंथसें निकालडालो.  
 और जो उनकों किसीजैन शास्त्रसें सिद्धकरनेकी सामर्थ्यरखतेहोतो  
 सन्मुखहोकर शास्त्रार्थकरलो, यह समाचार सुनकर स्वामीजीके  
 छके छूटगये. मनमें विचाराकि-ठाकुरदासतो अल्पज्ञी भिडनेकों  
 तयारथा-यह-साक्षरपुरुष शास्त्रार्थकों स्वतःउद्यमीहुवा. अब क्या  
 कहाजाय ! बस ! इसबातके घमंडमें आनकरकि-यहाँके महाराणा  
 साहिब हमारेरागीहै श्रीश्वेदसागरजीका कुछभी उत्तरनहीदिया.  
 जबयहसमाचार श्रीश्वेदसागरजीको विदितहुवे तो उनोंने एक  
 विज्ञापन बडेहफोंसें लिखा-और-काष्ठकी तखतीपर लगाकर अपने

उपाश्रयके दरवाजेपर (जहां) सर्वलोगोंकी दृष्टिपडे लटका दिया. उसमें यह लिखाथाकि-दयानंदसरस्वतीने अपने बनायेपुस्तक सत्यार्थप्रकाशमें कुछनास्तिकमतके श्लोकलेकर उनको जैनमतका कह दियाहै. इसविषयमें हम दयानंदसरस्वतीस शास्त्रार्थकरना चाहतेहै. और यह प्रतिज्ञाभी करतेहै कि-यदि शास्त्रार्थमें हमारी पराजयहुई तो हम दयानंदजीके शिष्य होजायेंगे-और-जो हमारी विजयहोगी तो दयानंदजीको हमारा शिष्यहोना पडेगा,

१०-जिसदिनसें यह साइनबोर्ड (तखती) लटकाइ गई दयानंदजीको बड़ा कष्ट हुवा. श्री झवेरसागरके संबंधमें मनमानेअपशब्द बोलने लगे. कइप्रकारका डरभय दिखलाया-जब कोई कामठीक नहुवा तो महाराणाजीसेंही कहना पडा कि-आपके अखंडप्रताप राज्यमें-झवेरसागरसंवेगीने विज्ञापन लगाकर हमको महान्कष्ट दिया. इस विज्ञापनकेतखतेको जबतक नहटाया जायगा हमको बडाकष्टहै. इसको महाराणाजीने स्वीकारलिया, तब-एक-श्रीझवेरसागरजीका शिष्य श्रावक उस समय दयानंदजीकेपास उपस्थित था इससमाचारको सुनकर चलपडा-और श्रीझवेरसागरजीके पाम आनकर कहनेलगा-यह विज्ञापनका तखता स्वतःउतारदियाजाय तो ठीक है नही तो महाराणाजीकी आज्ञासें उतार देना पडेगा, आज दयानंदजीने उनसें आपकी बहुत बुराई किइहै.-तब-श्रीझवेरसागरजीने कहा कुछ फिकरनही सबकार्य ठीक होजायगा. श्रीझवेरसागरजी सवेरे और श्यामको दोनोवख्त बहार दिशाजंगलको जायाकरतेथे सो इसरोजवें इसतरफ पधारे जहां उदयपुरके एजंट साहेबकी कोठीथी, दीशाजंगल होकर सीधे एजंटसाहबके

बंगलेपर चले गये. पहरेवालेने साहिब बहादूरको खबर दिई कि-कोई फकीर बहार खड़ा है. साहिब बहादूर बहार आये-श्रीशिवेरसागरजीको सलाम किया. कुरसीपर बिठलाकर पूछा-पूज्यसाहिब ! क्यों आनाहुवा ? श्रीशिवेरसागरजीने कहा-हज़ूर ! आपके स्वतंत्रनिर्मलराज्यमें एकअनुचितकार्य तो यह होगयाकि-दयानंदजीने हमारे धर्मसंबंधी झूठे श्लोक नास्तिकमतके लेकर उनको हमारा कहकर हमारा दिल दुखाया, दूसरा अनर्थ यह होनेवाला है कि-मैंने एकपाटिये ( साइनबोर्ड ) पर एक विज्ञापन इसविषयका लिखकर अपने मकानपर लटकाया है कि-दयानंदसरस्वतीने जो श्लोक अपने पुस्तकमें जैनियोंके कहकर लिखे हैं वह जैनके किसी ग्रंथके भी नहीं हैं. सो दयानंदजीको हमसे शास्त्रार्थ करना चाहिये, जो हम हारेंगे उनके शिष्य होंगे. वह हारे हमारा शिष्य होजाय. इसपर दयानंदजी शास्त्रार्थ तो नहीं करते किंतु राणाजीसे कहकर वह तखता ( साइनबोर्ड ) हटाना चाहते हैं-सो क्या ! यह अन्याय नहीं है ? इसपर साहबबहादूरने कहा-हम समझ गये-तुम कुछ भय मतकरो. हमारे देखेबिदून तुमारा साइनबोर्ड (तखता) नहीं हटैगा. और कलरौज शुभह हम उसको जरूर देखेंगे. श्रीशिवेरसागरजी अपने स्थान चलेआये. दूसरेरौज निजवचनानुसार एजंटसाहब-श्रीशिवेरसागरजीके उपाश्रयपरआये. विज्ञापनको पढ़ा-और कहा-इसमें राज्य विरुद्ध कोई लेख नहीं है. और अपने सत्त्वकी रक्षाकेलिये सबकोई ऐसा करसक्ता है. यह नोटिस राज्यके हुकमसे नहीं उताराजायगा. और इन्होंने तो अपने निजस्थानपरही लगाया है, इसमें कुछ राज्यका हर्जनही, बराबर लगा रहने दो,

यह कहकर एजंटसाहिब चलेगये. और दयानंदजीकों चुप होजाना पडा. कुछ बननहीपडा. और इसबातका ज्यादातर खेद हुआकि—एकछोटेसे कार्यमें बहुतबड़े प्रतिष्ठित महाराणासाहबकी सहायता चाही और अफल हुई,

११—संवत् ( १९३९ )में—दयानंदजीकों अपनी पूर्वोक्तसंपूर्ण रचना तथा व्याख्यानोका विश्वास त्यागकर नवीनसत्यार्थप्रकाश—लिखना पडा. जो प्रथम सत्यार्थप्रकाशसे बहुत विरुद्धहै. जैसे जैनसे ढुंढियेलोग बदलतेहै पुरानेवैदिकमतसे दयानंदजीबदलतेथे. अच्छा ! अब हमकों यहां वहबात दिखलानाहै जो जैनोके संबंधमें दयानंदजीने लिखाहै, पुराना सत्यार्थप्रकाश—तथा नवीनसत्यार्थ—प्रकाश जो ( १९३९ )में दयानंदजीने लिखा—और—तीसरी—चौथी—दफे प्रयाग वैदिकयंत्रालयमें छपा है यहां उनतीनोंकी पृष्ठसंख्या लिखकर जवाब दियाजायगा. मबबकि—हमारे पासतीनों सत्यार्थ—प्रकाश मौजूद है,

१२—सत्यार्थप्रकाशपृष्ठ ३९८ पंक्तिमें दयानंदजी लिखतेहै—जैन बौध—और नास्तिक—इन तीनोंकामत कोइकोइबात छोडकर एकसा है, फिर सत्यार्थप्र. पृष्ठ ४०९ पंक्ति १६ में—कहतेहै राजा शिवप्रसाद सितारेहिंदने इतिहासतिमिरनाशकग्रंथमें लिखाहै कि—इनके दो नामहै. एक जैन और दूसरा बौध ये पर्यायवाची शब्द है फिर सत्यार्थप्र. पृष्ठ ४१० पंक्ति १० में लिखाहै कि—अबदेखो ! अमरकोशमें बुध जिन औरबौध तथा जैन एकके नामहै वा नही ? क्या ! अमरसिंहभी बुध जिनके एक लिखनेमें भूल गया ?—( जवाब. ) महाशय ! अमरसिंहजीने दोनोंमत एक नहीकहे. नाम एकहोनेसे

मत एक नहीं होसकता, तनक दोनों मतके शास्त्रोंको देखकर लिखते तो अच्छाथा. अमराचार्य नहीं भूले आपही भूले हो. जो जो देव-गुरु-शास्त्र-और-तत्त्व \*जैनकेहैं बौधके नहीं. नास्तिक दोनोंसें अलग है. आपने इतनी ओछीतहकीकातपर क्यों एक कहनेकी बहादूरी जाहिरकिई ?-यहतो-साधारण विद्वान्भी जानते हैं कि-जैन-और-बौध-न्याराहै. पर्यायवाचीशब्द जो राजाशिवप्रसादजीनेकहा उसपर जो आपकोइतनाहठहैतो देखो ! उन्हीकीलिखीचीठीमें वे क्याकहरहेहैं ?-जो पंजाब-गुजराणवालेके जैनोंने मंगवाई थी. [चीठीकी नकल]-श्री,पं-सकल जैनपंचायत गुजारा न्वालाकों शिवप्रसादका प्रणामपहुंचे, कृपापत्र पत्रोंसहितपहुंचा.

( १ ) जैन बौध मत एकनहींहै,सनातनसें भिन्नभिन्न चले आये. जर्मनीदेशके एकबड़े विद्वान्ने इसके प्रमाणमें एकग्रंथ छापाहै,(२) चार्वाक और जैनसें कुछ संबंधनहीं.जैनकों चार्वाक कहना ऐसा है जैसा स्वामीदयानंदजीमहाराजकों मुस्लमान कहना.(३)इतिहास तिमिरनाशकका आशय स्वामीजीकी समझमें नहींआया.उसकी भूमिकाकी नकल.इसकेशाय जातीहै उससें विदित होगाकि-संग्रहहै, बहुतबात खंडनकेलिये लिखीगई.मेरे निश्चयके अनुसारउसमें कुछ भी नहीं है ४ जोस्वामीजी जैनकों इतिहास तिमिर नाशकके अनुसार मानतेहैं तो-वैदोंकोंभी उसके अनुसार क्यों नहींमानते ? [श्री कादास शिवप्रसाद.] बनारस-?जान्युआरी. सन १८७३ ई. देखिये ! राजाप्रसादजीने जैनबोधमत एकनहींकहा. चोची कलममें वें लिखतेहैंकि-इतिहासतिमिरनाशकके अनुसार स्वामीजी

\*जैनबोधका भेद-जोइसक्रितावके (१४१)पृष्ठसे(१८१)पृष्ठतकठिकाई देखा जाे.



बेदोंकोभी क्यों नहीं मानते ?-अर्थात् मैंने जो बतलायाहैकि-वेद थोड़ेकालके रिषियोंकेबनायेहुवेहैं उसको-इश्वरप्रणीत और सृष्टिकी आदकेबने क्यों फरमातेहैं ?

१३-दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४१० पंक्ति १६ में-लिखते हैं कि-सर्वज्ञ-वीतराग-अर्हन्-केवली-तीर्थकृत-जिन-ये छःनास्तिकों के देवताओंके नामहैं. ( जवाब. ) बतलाना चाहिये कौनसे नास्तिकग्रंथमें ये छःनाम उनके देवताके लिखे हैं, बड़े अफशोषकी बातहैकि-जो लोग देवही नहींमानते-वें-सर्वज्ञ-वीतरागको क्यों मानने लगेथे ?-यहतो दयानंदजीकी इर्षाका नमूनाहैकि-किसी सुरत जैनको नास्तिकहकर अपना हठधर्मपालन करना, फिर सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४११ पंक्ति ११ में दयानंदजी लिखते हैंकि-अगर अनादिइश्वर नहोता तो “अर्हन्” देवके मातापिताआदिके शरीरका सांचा कौन बनाता ?-( जवाब, ) यह चिंताजैनोंको नहीं वें-जगत्को अनादि स्वतःसिद्ध सबूतकरदेते हैं. यह दोष तो आपहीको आताहै जो निराकारको विकारमें पड़कर जगत्का बनावेवाला मानतेहो ? क्यों ! अंगाविनाभी कोइशखुश किसीचीजको बनासकताहै ?-अगर नहीं बनासकता तो फिर यह कैसे सबूत करसकतेहोकि-निराकारने जगत्बनाया, सर्वशक्तिमान् कहदेनाही जानतेहो या कुछ प्रमाणभी रखतेहो ?-जगत्कर्त्ताका खंडन देखना होतो इसकिताबके पृष्ठ (५२७) पंक्ति ८ से लगाकर (५३४), तक देख लो.

१४-सत्यायन-पृष्ठ ४१४ पंक्ति २६ में-दयानंदजी लिखतेहैं कि-आदिसृष्टिमें-जीवके शरीर और सांचेको बनाना इश्वराधीन

पश्चात् उनसे पुत्रादिकी उत्पत्ति करना जीवका कर्त्तव्य काम है (जवाब.) क्यों ! इतनेहीसे क्यों थक गये ? क्या ! निराकारइश्वर जगत्बनानेका तो शौकीन बने और पालनकरनेमें कायरपन बतलावे यह मुनासिब है ?—दयानंदजी सत्यार्थप्र-पृष्ठ २१५ में लिखते हैं आकाश नित्यहै—और फिर नवीनसत्यार्थप्र-पृष्ठ २१९ में—रिग्वेदका—मंडल १ सुक्त १९ मंत्र ३—“सूर्यचंद्रमसौ धाता यथा पूर्वे मकल्पयत् दिवं च पृथ्वीचांतरिक्षमथोऽस्वः” बतलाकर फरमाते हैं कि—आकाश पृथ्वी सूर्यचंद्र वगेरा इश्वरके बनायेहुवे हैं. खूब पूर्वापरविरोधभरी बातकिइ. एक जगह आकाशको नित्य और एक जगह बनायाहुवा कहना—यह कौनसी बुद्धिमानका काम है ?

१५—दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १७१ में लिखतेहैं कि—यज्ञके लिये जो पशुओंकी हिंसाहै सो \* विधिपूर्वकहै, पृष्ठ (३०३) में गौमेधादिकमें वंध्या गौ और बैलआदिनरपशुओंका मारना लिखा, पृष्ठ (३९९) में लिखाकि—पशुओंके मारनेमें थोडासा दुःख होता है परंतु यज्ञमें चराचरका उपकारहोताहै, इसके प्रतिकूल—गौकरुणानिधिमें—तथा गौरक्षणीसभाके स्थापितकरते वरुत् व्याख्यानोंमें मांसका निषेध किया, देखिये ! दयानंदजीकी परस्परविरोधीबातपरस्वयाल किजिये ! नवीनसत्यार्थप्रकाश चोथी बारका साहुवा जो हमारेपास इसवख्त मौजूदहै उसके पृष्ठ ३९९ पंक्ति १ में लिखाहै कि—पशुमारकर होमकरना वेदादिसत्यशास्त्रोंमें कहीं

---

\* उसविधिकी खोलकर क्यों नलिखी ?—मुसल्मानभी तोयही कहते हैं कि—हमभी विधिसें मारते हैं.

नहीं लिखा. इससे तनक अगाडी बढोतो पृष्ठ ४०० पंक्ति ६ में लिखाहै-वेदोंमें कहीं मासका खाना नही लिखा. [इसकाजवाब] वेदोंकी भाष्य और टीकाकरनेवाले-उब्बट-सायनाचार्यऔर मही धराचार्यवगेरोंने साफसाफ लिखाहैकि-यज्ञमें-इसतरह हिंसाकरना. दयानंदजी नमालूम क्यों कभी कबूल और मुकरतेहै, देखिये ?-रिग्वेदमें अश्वमेधकाहालयों लिखाहैकि-घोडेकों नहलाकर और उसपरकीमतीसाज चढाकर और उसके आगे रंग बरंगकी बकरियां रखकर उससें अग्निकी परिकम्मा दिलाइ, और फिर खंभेसे बांधकर और हथियारसें काटकर उसकामांस सीखपर भूना और उबाला और गोले बनाकर खागये. और एकजगह ऐसाभी लिखाहैकि-मैत्रावरणीं बशामालनेत्-अर्थात् मंत्र और वक्त्रके लिये बांझगौ मारनी चाहिये. रिग्वेदके ऐतरेयब्राह्मणमें-और शुक्लयजुर्वेदके शतपथब्राह्मणमें पशुमारनेकी बातहै. अथर्वणवेदके गोपथब्राह्मणभागके द्वितीयप्रपाठकमें ऐंद्राग्नि देवताकी प्रीतिके लिये पशुवधकरके यज्ञकरनालिखा, आपस्तंबीयधर्मसूत्र जो छपाहुवा हरदत्तनामकीटीका युक्त है उसमें गौवधकरके मधुपर्क करना लिखा,-इधर शंकराचार्यजी (जहां बौधोकेशाय उनका संवादहुवाहे) वहां फरमाते है रे रे ! नीच !! तूं क्याक्या बोलरहाहै कि-अहिंसा धर्म है ?-मुन ! वेदसंबंधिनीहिंसा धर्मरूपहै-सर्वदेवों की तृप्तिहोनेका कारणहै-तद्वारास्वर्गप्राप्ति वगेरा फल देखेजाते है. इसलिये यज्ञमें पशुकी हिंसा करनीयोग्यहै. उसका पाठ शंकरदिग्विजय जो आनंदगिरिने बनायाहै उसके (२६) में-अध्यायसें यहां लिखते है “रे रे ! सौगतनीचतर ! किंकिं जल्पसि ! अहिंसा कथं

धर्मो भवितुमर्हति ? यागीयहिंसा-धर्मरूपात्वात्-(तथाहि) अग्निष्टोमा-  
दिऋतुः छागादिपशुमानयागस्य-ररमवर्तत्वात्-सर्वदेवतृप्तिमूलत्वा-  
त् च-तद्द्वारास्वर्गादिफलदर्शनाच्च-पशुहिंसा-श्रुत्पाचारतत्परैरंगी  
करणीया, देखिये ! दयानंदजी ! आपके शंकराचार्य क्या फरमा-  
गये हैं ?-इधर महाभारत क्या-कहता है !

भुवं प्राणवधो यज्ञे-नास्ति यज्ञ स्त्वाहंसकः

ततो हिंसात्मको यज्ञः-सदा कार्यो युधिष्ठिरः

इत्यादि प्रमाणोंसे सबूतपायाजाताहैकि-वेदमें हिंसाकरनी  
फरमायो है, आप क्यों मुकरतेहो ?-क्या ! दूसरोंके तर्कतापसे  
घभराते हो ? सबूतहोताहैकि-वेद अज्ञानीयोंके रचेहुवे है. क्या !  
वैदिकमतवालोंके घरमें सुनाचांदी झवाहिरात-ओर-मेंवामिठाई  
नहीं थे जो देवोंकेसामने अर्पण करके पूजा करते-क्या ! वैदिक  
देवोंको मांसशिवाय तृप्ति नहीं आतीथी-अगर कहाजायकि-जैन-  
लोगजो-प्रतिमाकेसामने फलफुल चढाकर पूजाकरते हैं इसमें क्या  
हिंसा नहीं होती ! (जवाब.) फलफुल चढानेमें जीवके गलेका-  
टनेकी तरह रौद्रभाव नहींआता-कहां पशुवध-और कहां फलपु-  
ष्प ?-पौचसमजकर तर्क उठाये करो.

१६-महाभारतवगेरासें जाहिर होताहैकि-पांडवोंने यज्ञ  
किया. उत्कंठमहादेवकेपाम जाबालिरूविने यज्ञ किया जिसका  
नाम खैरनाथ जाहीर है. दयानंदजी वैदिकयज्ञोंकी हिंसा छिपाना  
चाहते हैं लेकिन ! छिप नहींसकतो. कइलोग यज्ञमें घृत-दूध-और  
उर्दकीदाल वगेराके पशुवनाकर होमकरते हैं. और कहदेते हैं,  
वेदमें हिंसा नहीं कही. लेकिन ! यहसब दूसरोंकीतर्कतापसे बच-

नकेलिये बहाना है. यज्ञमें पशुबध करनेसे उसपशुका भला है ऐसा मानाजाय तो इसलाभसे मनुष्यों क्यों वंचित रखा गया?—अगर कहा जाय उसमें पशुका कुछ भला नहीं होता तो बतलाना चाहिये निरापराधीके गले खूरी फेरना कौनसा न्याय है? दयानंदजी तो खैर! बात-बातमें बदलते हैं, लेकिन! और भी कोई वैदिक महाशय इसके संबंधमें प्रमाण रखते हो तो बतलावे. रिग्वेदकी संहितामें गौबलिदान करनेकी रिचा है—और उसीमें लिखा है कि—जो पशुका बलिदान करता है स्वर्गकी तरह आनंददाता है, सत्ययुगमें रिग्वेदके गौका बलिदान किया. ब्राह्मण लोग एकदफे विश्वामित्रके यज्ञमें ( १०००० ) दसहजार गौएँ लगा गये. दयानंदजी! आपने चतराई किइकि—वेदकी हिंसासे मुकर गये, नहानि—आजकल नमालूम ऐसे काम करनेहारोंको क्या क्या दंड दिया जाता?—गौकों पवित्र समझना और उसके बधकी आज्ञा फरमाना यह परमपवित्र वेदोंहीकी वाणी है. देखो! यजुर्वेद अध्याय २४ मंत्र २७—इसमें लिखा है कि—वृहस्पतिकेलिये गोमेध किया जाय यानी गौका होम किया जाय. यजुर्वेद अध्याय २४ मंत्र २८ में लिखा है प्रजापतिकेलिये नरमेध यज्ञ हो. इसपर दयानंदजी फरमाते हैं कि—इसका अभिप्राय यह नहीं जो—हम—मनुष्योंका—बध करे. इसका मतलब तो यह है कि—मनुष्य परमेश्वरकेलिये अपने आपको जीताही अर्पण कर देवे. विद्वान् लोगो! सुनलजिये! दयानंदजीका वेदभाष्य क्या उमदा अर्थ फरमाता है! आप ऐसे चतरथे कि—किसीका निशाना नहीं बनते थे. और दूसरोंकी तर्कतापसे बचजाते थे. लेकिन! जब गोमेधकेलिये पूजा जायगा कि—बतलाइये! गौ—अपने आपको

परमेश्वरकेलिये कैसे अर्पण करसकेगी ?—इसके जवाबमें दयानंदजी क्या कहसकेगे ? खैर ! दयानंदजी तो रहे नहीं, उनका कोई आर्यसमाजही इसका जवाब दे तो बड़ीखुशीकी बात है. याद रहे ! इसीलिये दयानंदजीके बनाये वेदभाष्यकों काशीवगेराके वैदिक-पंडितोंने मंजूर नहीं किया. सबबकि—पदपदपर अर्थ उल्टाये हुवे है. समाजीलोग दयानंदजीकेलिये चाहे जितना बुगल बजावे—उसमें होता क्या है ?

१७—यहमत कहनाकि—दयानंदजी—वेदोंके ब्राह्मणभागकों नहीं मानते थे. देखो ! सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६०१ पंक्ति १४ से आगे लिखा है कि—चारोंवेदोंके ब्राह्मण—अंग—उपांग—चार उपवेद—और—( १.१२७ ) वेदोंकी शाखा जोकि—वेदोंके व्याख्यारूप—ब्रह्मादिमहर्षियोंके बनाये ग्रंथ है उनकों परतः प्रमाण—अर्थात् वेदोंके अनुकूल होनेसे प्रमाण और जो इनमें वेदविरुद्ध वचन है उनकों अप्रमाण मानता हू. [ इसपर मंगलदेव पराजय पृष्ठ ३१ पंक्ति (२) पर लिखा है कि ]—यहां ब्रह्मादिमहर्षियोंके बनाये ग्रंथोंमें वेदविरुद्ध वचन कहनेसे स्पष्ट सिद्ध है कि—स्वामीदयानंदजीकों—ब्रह्मादिमहर्षियोंसे अधिकविद्वान् होनेका अभिमान था. और उनका अज्ञान उन्दीके लिखे हुवे सत्यार्थप्रकाशादिग्रंथोंसे सम्यक्प्रकट है, यहां हमकों इतनाही लिखना बहुत है कि—दयानंदजीने लाखचतराई किइ (लेकिन ! झूठ होनेसे चली नहीं.

१८—जिस वैदिकमतावलंबीकों यह अभिमानहो कि—वेद—इश्वरप्रणीत है—वह—इसलेखकों सावधानीसे पढ़े. रिग्वेदभाग (२) मंत्र (७) में—लिखा है कि—वेद—परमेश्वरसे आये है—इसलिये सबतर-

इकी स्तुतियोग्य है. यजुर्वेदके शतपथमें लिखा है कि-चारों वेद पर-  
मेश्वरके श्वासें निकसे. मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक (२३) लि-  
खा है कि-ब्रह्माने अग्निवायु और सूर्यसे-रिगवेद-यजुर्वेद-और-  
सामवेदको आकृष्ट किया. और यह भी उसी श्लोकमें कहा दिया कि-  
तीनों वेद असलमें सनातन हैं, शारीरिक अध्याय १-पाद ३-सूत्र  
१९ में लिखा है वेद अनादि हैं. इधर महाभारत और दयानंदजी-  
की बनाई रिगवेदादिभाष्य भूमिकामें लिखा कि-जब प्रलय होगा  
तब वेद परमेश्वरमें लीन हो जायंगे. क्योंकि-वे-उसीसे प्रकट हुवे हैं  
जब फिर दूसरी सृष्टि होगी तब रुषिलोग परमेश्वरकी आज्ञासे त-  
पस्या करेंगे और वेदोंको पायेंगे. दयानंदजीका यह भी कहना है  
कि-१, वृंद ९६, करोड़ ८, लाख (५२) हजार-९७५ वर्ष हुवे वेद  
संसारमें आये. (१००) करोड़का एक अरब-और-(१००) अर-  
बका एक वृंद कहा जाता है. इसमें मनुस्मृति-और-ब्राह्मणोंका पं-  
चांग साक्षी है. (जवाब.)-वेद इश्वरके फरमाये हुवे इसलिये नहीं  
कि-उसमें अप्रमाणीक बातें जाहिर हैं जो इश्वरके कथन करने योग्य  
नहो. वेद पौरुषेय-या-अगौरुषेय? इसके नतीजे पर खयाल करते हैं  
तो यही मुनासिब ठहरता है कि-शब्दरूपवाणीका उच्चारण देहधा-  
री विद्वान नहीं हो सकता. निराकार इश्वर-मुखसे बोले-यह मुखोंके  
शिवाय दूसरे नहीं मान-सकते. अगर इश्वरने रुषियोंपर प्रेरणा  
किइ माने तो भी देहविद्वान प्रेरकका मानना युक्तिविकल है, नै-  
शब्दरूप है-और जो जो शब्दरूप है सो सो देहधारीका कथन होना  
चाहीये-इस बातको कोई तोड़ नहीं सकता. वेदोंमें कइमंत्र ऐसे हैं

\* इश्वर तो शरीररहित है फिर उसके श्वास कहाँ निकसा ?

कि-इश्वर-( रुद्र-सूर्य-त्र्यंबक-और वरुणवगेरासैं )-विश्वसिकरताहै कि-पेरा यह काम तुम करदो, रिग्वेदके ऐतरेयब्राह्मणभागमें अष्टमपंचिकाके (२८)में खंडमें लिखाहैकि-इसअनुष्ठानसैं राजाके सबशत्रु मरजाते है, इसमंत्रकों जपेतो फतेहामिले-इसपर कइ वैदिकलोग जवाबदेते हैकि-यहबात इश्वर थोडाही कहताहै किनु मनुष्योंकों सिखलाताहैकि-तुमलोग ! इमतरह मेरी प्रार्थना करो लेकिन !-यहबिल्कुल गलतहै-सबबकि-वेदोंमें किसीजगह यह नही लिखाकि-इश्वर मनुष्योंकों कहताहो, तुम ! ऐमे मेरी प्रार्थना करो, न किसी प्राचीन भाष्यकारने ऐसा अर्थ किया. असलपुछोतो वेदकी उत्पत्ति मनुष्यसैं है इश्वरसैं नही, इससैं बहुतेरे वैदिकमत-वाले अलबते ! नाराज होगे-लेकिन ! क्या कहाजाय-बिद्वान् प्रमाणके कैसे कहदेवेकि-इश्वरप्रणीत वेदहै. कपिल-गौतम-पतंजलि और कणादवगेरोंने जो वेदोंकों छोडकर नवीनसूत्र बनाये, इससैं मालूम होताहै उन्हींकों वेदोंकीप्रक्रिया अच्छी नही लगी होगी, असलमें वेद एकशरूशके बनाये नही बल्किन् ! कइरुषियोंके बनाये हुवे है, रिग्वेदकी संहितामें बहुतजगह ऐसा लेखहैकि-वेदमंत्र रुषियोने उत्पन्न किये. रिषेमंत्रकृतास्तोमैः कश्यपोदर्घ्यन्गिरः-इत्यादि प्रमाणोंमें कहसकते हैकि-वेद इश्वरके कहेहुवे नही.

१९-आर्यतत्त्वप्रकाशग्रंथके पहिले व्याख्यान पृष्ठ २० में लिखाहैकि-रिग्वेदका पहिलामंत्र विश्वामित्रके पुत्र मधुछंदस्ने-बनाया. और अंतका मंत्र अघमर्षणरुषिने-बनाया, इसलिये कहसकते हैकि-रिग्वेद उससमयका रचाहुवाहै जबकि-मधुछंदस् और



अधमर्षण वर्त्तमान थे. मधुच्छंदम् रुषिजिनोने पहिला मंत्र बनाया  
 रायचंद्रजीके समयवर्त्तमान थे, इसकारण रिग्वेदके आरंभका स-  
 मय प्रगट होगया. रामचंद्रजीसे सुमित्रतक वैदिकग्रंथोके अनुमार  
 (५६) पांडियां होती है, और छयनपीडियोंके (११२०) वर्ष नि-  
 कलते है. इसमें विक्रमादित्यसे आजतकका समय अर्थात् संवत्  
 (१९५२) मिलानेतें विदितहोताहैकि- अबतक (३०७२) वर्ष होते  
 है जबकि-रिग्वेदका आरंभहुवा था. ” यूरोपखंडके नामी विद्वान्  
 मोक्षमूलरवगेराकोभी यही कहनाहैकि-वेदकेवचन ऐसे है जैसे अ-  
 ज्ञानीयोंके मुखसे अकस्मात् निकसेहो-और इनकी रचना अनु-  
 मान तोनहजार (२०००) वर्षोंतेंहुइहै. वेदोंमें जहां दीर्घायुहोनेकी  
 प्रार्थना किइहै यही कहाहैकि-मैं-(१००)-सोवर्षतक जीसकूं-कठ  
 उपनिषदमें यम-नचिकेतासे कहाहैकि तैरे बेटे-और-पोते मांग  
 जो सोसोवर्षतक जीयं. इत्यादिप्रमाणोंसे सबूतपाया जाताहैकि-  
 वेदोंकी रचनाकों बने बहुतवर्ष नही गुजरे. महाशय ! अब कैसे  
 कहाजायकि-वेद-निराकारइश्वरके रचेहुवे-या-उसके श्वाससे नि-  
 कसे है ?-कैसे कहाजाय ब्रह्माजीने अग्निवायु और सूर्यसे आकृष्ट  
 किये ?-कैसे कहाजायकि-अनादिहै ? और दयानंदजीकीतरह य-  
 हभी कैसे कहदेवेकि-वेद-इश्वरमें प्रकटहुवे और प्रलयके वख्त  
 उसमें लीन होजायगे. फिर जब दूमरीमृष्टि दयानंदजीका निरा-  
 कार इश्वर पैदाकरेगा तब उसकी आज्ञासे रुषिलोग तपस्या क-  
 रेमें और वेदोंको पायगें. ऐसी ऐसी अमंभवबाते कौन मानसक-  
 ताहै ? जिसमतमें एकवातपर कोई कायमनही-कोई कुछ और  
 कोई कुछ कहताहै उसपर कहांतक कोई दरयाफ्त करे ? यह

निश्चयहैकि-वेदोंमें पूर्वापर विरोध पिष्टपेषण-और-निष्प्रयोजन-वर्जन बहुतसीजगह है, इसलिये सबूतहोगयाकि-वेद-इश्वरके कहे हुये नहीं,—

२०—स, पृष्ठ ४३६ पंक्ति २९ से—दयानंदजी लिखते हैकि-जितना मूर्त्तिपूजाका झगडा चलाहै वहसब जैनोंकेघरसें और पाखंडोंका मूलभी जैनमतहै. पुरानेमंदिरोंको सुधरानेसें मुक्ति होजाती है, एककिभीने पांचकोडीका फूल चढाया उसने अठाराह देशका राज्य पाया. उसकानाम कुमारपालहुवा था. जैनलोग मंदिरोंमें लाखहां रुपये लगादेते हैं जिनसें कुछ संसारका उपकार नहींहोता. ( जवाब. ) दयानंदजीको मूर्त्तिपूजासें कुछ उपकार नहीं दिखता यह उनकी उत्तम समझका फर्क है, वाल्मीकीयरामायणको वैदकलोग जैनमतमे पहिले लिखीगइ समझ हुवे है, और उसके सर्ग(४४)श्लोक(४२-४३)पर लिखाहैकि-रावणशिवमूर्त्तिकी पूजाकरता था. बतलाइये! दयानंदजी! फिर आप किस मुंहसें लिखतेहोकि-मूर्त्तिपूजाका झगडा जैनोंकेघरसें चलाहै?—मनुस्मृतिमें आठतरहकी मूर्त्तिका बयानहै. रामायणको दयानंदजी इनकार करना चाहेतो नहीं करसकते. पहिले सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ (६८) में मनुस्मृति-वाल्मीकीयरामायण और महाभारत प्रमाणीक मानचूके है. अगर आपमूर्त्तिसें नाराजथें तो आपने अपनी तस्वीर फोटोग्राफमें क्यों उतरवाइ? आपतो मूर्त्तिपूजाके उढानेको झंडा लेकर खडे हुवे थे. पाषाणादिकों देवबुद्धिकरके मानना गप्प फरमा गये और कागज स्याहीमें बनीहुइ आपकी मूर्त्तिकों दयानंदजीकी बुद्धिकरके मानना गप्प क्यों नहीं फरमाया? समाजीलोग अपने

घरमें आपकी रंगीनतस्बीर दिवारोंपर लटकाकर-उसका आदर-सत्कार क्यों कर रहे है?—कोई आपके रागी आपकी तस्बीरको यानी एककुरसीपर रखकर उसमें इतर फुल चढाके-गायन करे और-आपके जन्म-या-मृत्युकेदिन जलसा करेतो उसने मूर्त्तिपूजाका आदर किया जानना या-निरादर?—इश्वरकी-और-अन्य अन्य रुषियोंकी मूर्त्तिसें नाराज रहना और अपनी तस्बीर देशमें फैलाना यह पक्षपातनहीतो क्या है? अगर आप सब्बे मूर्त्तिद्वेषीये. तो सत्यार्थप्रकाशमें पुत्र कन्याके विवाहसंबंधके लिये फोटोग्राफकी मूर्त्तिकों काममें लानेकी आज्ञा क्यों दिइ? कहिये! कागज-स्याहीकी मूर्त्तिकों स्त्री और मर्दकीबुद्धिसें देखनातो मंजूरहुवा-और देवमूर्त्तिकों देवबुद्धिसें देखना मंजूरनही यह कौनसी बुद्धि-मानीका काम किया? याद रहे! मूर्त्तिपूजासें कोई नही बचा. ५ रमात्मा-इश्वर-आँ-शिव-सत्-चित्-प्रजापति-ये क्याचीज है? अगर कहाजाय ये खुद इश्वरनही किंतु इश्वरकी यादि दिलानेके आलंबन है ( जवाब. ) फिर इसीतरह मूर्त्तिभी खुद इश्वरनही ले-किन! उसकी यादि दिलानेका आलंबन माननेमें क्या हर्जया? अगर कहाजायकि-निराकारका आकार नही बनसकता-तो-यह भा कहसकते हैकि-निराकारका अक्षरभी नही होसकता. क्योंकि अक्षर साकार है, और निराकार इश्वर जगत्कों भी नही बनास-कता. रचना करना देहधारीका काम है. दयानंदजीने तृतीयसमु-ल्लासमें-बेंदी-प्रोक्षणीपात्र-वमेरा पांच चित्र इसलिये बतलाये है कि-इसके आकारका. सभाजीलोगोंकों ज्ञानहों देखिये! जड व-स्तुके ज्ञानकरावेमें तो आप अपने चेलोंकों मूर्त्ति बिना काम न

चाल-और-फरमाते है निराकार इश्वरका यूंही मनमें ध्यानकर लिया करो यह कौनसी बुद्धिमानी जाहिर करगये ? दयानंदजी ! सच कहना ! सब पापंडोंका मूल जैन है या आप ?-पुराना या-नयामंदिर तभी सुधरवायाजायगा जब उस ही बुद्धि धर्मपर रज्जू होगी. जिसकी बुद्धि धर्मपररज्जू हो उसकी मुक्ति कौन रोकसकता है. पांचकोडीके फुलसें अठाराहदेशका राज्य कुमारपालने पाया इसबातको आप किस प्रमाणसें तोडमकतेहो ?-पांचकोडीपर बात है या-उसके अंतःकरण की भक्तिपर बात है ?-पूवजन्ममें वह दोन हीनथा. उसने पांचकोडीके फुल मौललेकर भक्तिमें देवकों चढाये और नमस्कार किया-जिसमें अगले जन्ममें उसके पुन्यकी वृद्धि हुई और राज्यपाया-इसमें कौनसी असंभवबातथी ?-मूर्तिके दिखनेसें उसदेवकी यादी आती है उनमें मनःपरिणाम शुद्धहोकर मनुष्यको फायदा पहुंचताहै. दयानंदजी को-ब्रह्माविष्णुमहेशकी-मूर्ति-स्त्री और हथियारवाली देखकर कुछ फायदा नही दिखताथा तो जैनोंकीतरह समाधि युक्तमूर्ति-बनवाकर उसकी उपासना करनेकी रमम जारीकरते. सन्यासीहोकर धनसंचयकरना-और-भपनी तस्वीर पूजवाना-बनपडा और यह काम क्या नही बनसकता था ?—

२१-सत्यार्थ-पृष्ठ (४३९) पर-पंक्ति १ में-दयानंदजीने जैनोंका नमस्कारमंत्र लिखकर बतलायाकि-इसमंत्रका बडा महात्म्य लिखाहै और सब जैनियोंका यह गुरुमंत्रहै. इसका ऐसा महात्म्यधराहैकि-तंत्रपुराण भाटोंकीभी कथाको पराजय करदिया, इसमें जैनके अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-और साधुओंको

नमस्कार किया है, यद्यपि मंत्रमें जैनपद नहीं है तथापि जैनियोंके अनेकग्रंथोंमें बिना जैनमतके अन्य किन्हींको नमस्कारभी न करना लिखा है, (जवाब.)—जैनलोग पहिले जिसको (नमस्कारमंत्र मानते है उसको सुनलो.) नमो अरिहंताणं—नमो सिद्धाणं—नमो आयरियाणं—नमो उवझायाणं—नमो लोएसव्वसाहूणं—एसो पंचनमुक्कारो—सव्वपावप्पणासणो—मंगलाणं च सव्वेसिं—पढमं हवइ मंगलं. (अर्थः) अरिहंतकों—सिद्धकों—आचार्यक—त्रयध्यायका—और—सबसाधुओं—को—नमस्कारहो. यह पंचतरहका नमस्कार सब पापोंका नाशकरनेहारा है—और—सबतरहके मंगलोंमें अवलंबकरका मंगलीक है. कहिये ! इसमें कौनसे पक्षपातकी बात हुई ? अरि नाम शत्रुका—सो—कामक्रोधादि आत्माके शत्रुको जिसने ढनडालेहो सो अरिहंत—जो मुक्तहुवेहो उनका नाम सिद्ध—आचार्य उपाध्याय—आर—साधु—जो कि—संसारके त्यागी और धर्मके उपदेष्टा होते है सब किमीको जाहिरही है. इनको नमस्कार करनेमें बड़ा फल जो जैनोंने बयान किया—इसमें दयानंदजीकी क्या बुराई थी ? जयति रागद्वेषादि-शत्रून्—इति जिनः—ऐसी निष्पक्षपातकी बातमें भो दयानंदजी चोढेतो उनके दौर्भाग्यके शिवाय और क्या कहा जाय ? आप फरमागये कि—जैनोंने इसमंत्रके महात्म्यसे तंत्रपुराण भाटोंकी कथाको भी पराजय कर दिया, लेकिन !—यह क्यों नहीं बनला गये कि—हमारे गायत्रीमंत्रकी भी कुछ तारीफ गाइगइ है. वैदिक लोगोंमें गायत्रीका जप सबमें बड़ी विशेषता रखता है. मनुजी अपने शास्त्रमें फरमाते है कि—मनुष्य—गायत्री पढनेसे निःसंदेह मुक्ति पाता है—चाहे वह अपने मतकी और कुछ बात करे—या—न करे. वेदकों भो वही

जानता है जो गायत्रीका पहिला अक्षर जानता हो. जो तांनवर्षतक गायत्रीको हरहमेश पढ़ेगा वह आकाश और पवनकी तरह साफ होकर परब्रह्ममें लीन हो जायगा. गायत्रीसें कोई बढानही. उपनिषद्में बयान है कि—जो सूर्यके सामने बैठकर जाप करेगा निडर हो जायगा. गायत्रीके प्रभावसें एकक्षत्री विश्वामित्ररुषिसें ब्रह्मरुषि हुवा और नयी सृष्टिरचनेकी सामर्थ्य पाइ. दयानंदजी ! आपने सुना !—आपके वैदिक आचार्य—गायत्रीकी क्या तारीफ कर गये है ? (समीक्षक)—मुना दिजिये ! गायत्रीमें क्या बयान है ? (जवाब.) गायंतं त्रायते इति गायत्री, पढ़नेवालेकी रक्षा करे उसका नाम—गायत्री है. (समीक्षक,) हम पुछते है उसका पाठ क्या है ? सुना दिजिये. (जवाब.)—मकानकी चौकेर और गलीकुचोंमें देख आओ कोई सुनता तो नहीं. चढ़नेकी सीढ़ीमें भी देखलो. हम नहीं चाहते कि—कोई अनार्य मनुष्य इसको सुन लेवे. जरा पास आन कर कानमें सुनलो. [ ओं नमो भगवते वासुदेवाय—स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं—भूर्भुवः स्वः ]—अर्थः—भू-आकाशस्वर्ग हम सूर्यकी बड़ी ज्योतिका ध्यान करते है वह हमारी बुद्धिकी प्रेरणा करे, अर्थात् तेजोमय सूर्यको हम नमते है वह हमारी बुद्धिको रास्ते पर लावे. बस ! यह वेदमतवालोंका गुरुमंत्र है. जिसपर इतना अभिमान रखते है कि—कुच्छ कहान जाय कहिये ! इसमें कौनसे परमात्माका ध्यान है ? दयानंदजी बतलाइये ! चारणभाटकी कथाको किसने हरा दिया ?—जरा पक्षपात रूपजामेंसें बहार आनकर कुच्छ कहते तो अच्छा था.

२२-जैनलोग जो कहते हैं कि-कुगुरुकीसेवा नकरना चाहिये. सांपकीसंगतसें एकभव मरनाहै लेकिन! कुगुरुकेसंगसें भवभवभय मरनापडेगा. इसपर चींड़कर दयानंदजी सत् अर्थ-पृष्ठ ४२८ षष्ठी शतककी गाथा लिखकर पंक्ति २६ में कहते हैं देखिये! जैनोकेस-मानकठोर-भ्रांतद्वेषोनिंदक भूलाहुवा दूसरेमतवाले कोईभी नहोगे. इन्होंने मनसें यह विचाराहै कि-जो हम अन्यकी नींदा और अपनीप्रशंसा नकरेंगे तो हमारीसेवा और प्रणिष्ठा नहोगी, परंतु यह बात उनके दौर्भाग्यकी है. ( जवाब.) कुगुरुकी सेवा नकरना चाहिये यहकहना जैनोका किसीसुरत बुरा नही. क्योंकि-जो केचनकामनोका भोगो-भौर-शास्त्रोंसें उल्टा उपदेशदेनेवालाहै वह कुगुरु उसको मानने पूजनेसें कोईपारमार्थिकलाभनही-इसमें दयानंदजी क्यों! चींड़ें? जैनोंने इसमें किसकी नींदाकिइ? औ कौनसी अपनी प्रशंसाकिइ?-जैनगुरुओंकी सेवाकरनेवाले लोभालोहांलोगहै उनके दौर्भाग्यकी बात क्यों हो?-दौर्भाग्य तो आपका ही-आपके वैदिक मतवालेही आपको नहीमानते थे. थोड़ा-इससे, वेदविरुद्ध इनका उपदेश होनेसें न सुनना और कहते थे नष्ट नष्ट उपदेश होनेसें न सुनना चाहिये. वेदोंका अमूल्य अर्थ सच्चा-या-दूसरा ऐसीभ्रांति आपको थी-या-जैनोको? महीधरादि पुरानेवैदिकाचार्योंके नींदक आपथे-या-जैन? भूलाहुवा आपका निराकारइश्वरथा-जिसने जूठे अर्थलिखनेहारें महीधर सायनवगेराकी अंगुली न तोडडाली और आपको उनसेंपहिले जन्म नहीदिया.

२३-दयानंदजी स. पृष्ठ ४२८ पंक्ति २ में-लिखते हैं कि-दुष्ट कर्मरूपसागरमें डुबानेवाला जैनमार्ग है. क्योंकि-थेलोग-मुदेवमुगु-

रुद्रधर्मकोंही मानो ऐसा कहकर दूसरोंकों कुदेवकुगुरुकुधर्म कहते हैं, जैनकेशिवाय दूसरेकों मानना पूजना नहीं फरमाते. यहतो बैरवेचनेहारी कुंजडीकसमान अपने बैर मीठे दूसरेके खट्टे बतानेवाले है. (जवाब.) जैनलोग-रागद्वेषकामक्रोध-और-स्त्रीसंगसे रहित देवकों सुदेव-कंचनकामनीकेत्यागी और सच्चेशमों-पदेशकों सुगुरु-और-ऐमे निरागी और ज्ञानीके कथनकियेहुवे धर्ममार्गकों सुधर्म कहतेहैं. कहिये ! इसमें क्या झूठ कहा ? कुदेवकुगुरुकुधर्मकों जैन क्या ! समनुष्य इनकारकरत है-इससे दयानंदजी क्यों नाराजहुवे. देखिये ! जिसभर्तृहरिके ग्रंथका आप अपने ग्रंथमें काव्य लिखकर प्रमाणीक सबूतकरते हों वही भर्तृहरि-क्या कहगये है ?

### [ काव्य. ]

शंभुस्वयंभुहरयो हरिणेषणानां-येनाकृतं सततं शुद्धकर्मदासाः

वाचामगोचरचरित्रपवित्रिताय-तस्मै नमो भगवते ! कुसुमायुधाय, ?

अर्थ:-जिस कामदेवने ब्रह्माविष्णुमहेशकों-त्रीयोंके दास बनादिये ऐसे अगोचरचरित्रवाले कामकों-मैं-नमस्कार करता हूं. दयानंदजी ! देखिये ! यह आपके वैदिकदेवोंका हाल पढलिये ! जिसदेवकेपास हथियारहै-या-जो-दूसरे दैत्योंकी छातीपर पांव-धरके खड़ाहै उसकों ध्यानसमाधिलीन कौन कहसकताहै ? इसलिये जैनोंका कहना किसीसुरत झूठ नहींहोसकता, न झूठबातका जैन पक्ष करते हैं. जिनशब्द विशेषस्निग्धहै, जो रागद्वेषशत्रुकों जीतगयाहो वह जिन-और उसके कहेहुवे मार्गकानाम जैन-



नमत है. आपने जो सत्यार्थप्रकाशक बारहवेसमुल्लानमें जैनकेषष्ठो शतकग्रंथकी जो (२९) पाथ के अंशज लिखकर जो जो अर्थ किया सब झूठ और मनःकलित है, क्योंकि-दयानंदजीकों प्राकृतभाषाका ज्ञान नही था. अगर कोई आर्यसमाज अधिमान रखता हो कि-हमारे स्वामीजी झूठ कैसे लिखे-तो-प्राकृतभाषाके जानकार पंडितके मा-मने सत्यार्थप्रकाशके लिखाणकों भेजकर तहकीकात कर लेवे. क्योंकि-दुनियामें विद्वान् लोगोंकी नास्ति नहीं-दूनरा जानकार विद्वान् प्राकृतभाषाठी जो कुछ अर्थ करे वही सबको प्रमाण करना होगा. दयानंदजी! जगहजगह लिखते कि-जैनी बड़े हठवादी होते हैं, दूसरेमतवालोंको मानना पूजना नहीं फामाने. अपने वैर मीठें और दूनरेके खट्टे कहते हैं, (जवाब.) सत्यार्थ प्र० पृष्ठ ५२) पंक्ति १७ में लिखा है कि-जो वेद और वेदानुकूल आत्मपुरुषोंके किये शास्त्रोंका अपमान करता है उसवेदनींदक नास्तिकको जा-तिपंक्ति और देशमें बहार कर देना चाहिये. खू! क्या कहना ! दयानंदजी! आपके वचनकी तो तारीफ ही है जैन-बौध्-कपिल-गौतम-पतंजलि-कणाद-कवीर-गुरुनानक-इशाइ-मुसलमान वगैरा जो आपके वेदको नहीं मानते उनको आपदेशनिकाला देना चाहते हो?-शंकराचार्य-शंकरादिग्विजयमें-प्रकरण (२६) पर फरमाते हैं तद्व्यतिरिक्तस्पैव पाषंडत्वात्-वेदके व्यतिरिक्त सब पाषंड है. इधर मनुजी सबसे बढकर फरमारहे हैं कि-वेदनिंदापरा यतु-तदाचारविवर्जिताः-ते सर्वे नरकं याति-यद्यपि ब्रह्मबीजजाः-वेदकी निंदा करनेहारे और उसके कहेहुवे आचा-

रसेरहित-सब नरक जायेंगे. क्या कहना ! दयानंदजी ! आप-और-आपके मनुजी तथा शंकराचार्य-खूब पक्षपातरूपवादाबन्धी कर गये, देखिये ! अब जरा खोलकर कहदिये ! कुंजडीके समान अपने बैरमोठे दूसरेके खट्केहनेवाले जैनहै ?-या-आप लोग ? दुष्टकर्मरूपसागरमें डुबानेवाला जैनमार्ग है ?-या-वैदिक-मार्ग ?—

२४-सत्यार्थप्र० पृष्ठ ४२५ पंक्ति-५ सें-आगे लिखते हैंक-जैनमतवाले दूसरेमतवालोंको-नमस्कारकरना-या-अन्नपानीदेना भी अच्छानही समझते. कितनेदयाहीनहै ? (जवाब.) अनुकंपा-लाकर दानदेना जैनलोक कभी बुरानही समझते. देखिये ! कल्प-सूत्रमें क्या लिखाहै ?-जैनकेमहावंरतीर्थकरने दाक्षालीयेबादभी एकदलिद्रीब्राह्मणको देव दुष्पवस्त्र देदिया, जो बहुमूल्यहोनस उस ब्राह्मण को बहुतसमयतक फायदेमें रहूँगाथा ?-दयानंदजीने यहबात क्यों जाहिर नकिई ? जैनोका दानगुण दुनियामें मशहूरहै, जैन-शास्त्रोंमें लिखाहैकि-जैनके चौईसतीर्थकरणे, जबकि-वें संसारमें थे. सबमतवालोंको अनुकंपादानदिया. यह आपहीके वैदिकमत-वालोंका हठवादहैकि-नगच्छेत् जैनमंदिरं-जैनमंदिरमें नही जाना. जैनलोग-धर्मभ्रष्ट और पापशास्त्रके उपदेशकोको धर्मबुद्धि जानकर नमस्कारकरना-और-अन्नपानीदेना इसलिये अच्छानही समझतेकि-उनसे धर्मसंबन्धी कोई लाभनही. दीनहीनजानकर अनुकंपादान देना जैनलोग मना नही फरमाते, बतलाइये ? फिर जैनलोग दयाहीन और कठोरहृदयवाले कैसे सबूत हुवे ? क्या ! आपको सच्चेधर्मके उपदेशक नही समझे इसलिये ?

२५-दयानंदजी सत्या० पृष्ठ ४२० पंक्तो ९ में-लिखते हैं कि-  
 जिन्होंने वेदोंसे विरोध किया-करते हैं-और-करेंगे-वें-अवश्य-  
 विद्यारूप अंधकारमें पड़कर जितना दुख पावे उतनाही न्यून है.  
 इसलिये मनुष्यमात्रकों वेदानुकूल चलना समचित है. ( जवाब. )  
 दयानंदजी ! बहुतहुइ-अब माफ़ फरमावे. पहिलेबहोत कुच्छ  
 लिखाभी गया है कि-वेद-अविद्यारूप अंधकारकी गुफा है-इसमें  
 जो कोई जागरेगा वही पस्तायगा. दयानंदजी इसी पृष्ठ पंक्ति  
 २६ में लिखते हैं कि-चारवाकसें बौध और जैनियोंका भेद है-प-  
 रंतु नास्तिकता-वेद-इश्वरकी नोंदा परमतद्वेष-और जगत्का कर्त्ता इ-  
 श्वर नही इत्यादि बातोंमें सब एकही है. ( जवाब. ) जैन लोग-अष्टा-  
 दशदोषरहित इश्वर मानते हैं. जगत् अनादि स्वतः सिद्ध मानते हैं  
 जो जैसा कर्म करेगा वैसा फल भोगेगा. जो सर्वज्ञ प्रणीत धर्म पालन  
 करेगा उसका निर्वाण होगा मानते हैं इसलिये नास्तिक नही, जै-  
 नोंको यह दृष्टवादनही कि-परमतमें कोई विद्वान् नही, इश्वर ज-  
 गत्को बनावे यह किसी युक्ति प्रमाणद्वारा सबूत नही होता इसलिये  
 कर्त्ता नही मानते. अगर जगत्को इश्वरने बनाया मानेतो मसाला  
 कहाँसे लाया ?-अरुपी इश्वरसें रूपी पदार्थोंकी पैदाशमानना प्रमा-  
 णस बाधत है. अगर जीवका कर्त्ता इश्वरकोही माना जाय तो म-  
 त्पक्षप्रमाणसें विरोध आता है. सबब कि-कार्य अपने उपादानकार-  
 णस भिन्न न होता. अगर जीवोंका उपादानकारण इश्वर है तो  
 बतलाना चाहिये जीव-इश्वरकी एक्यतामें अंतर क्यों मानने हो ?  
 और इश्वरकी इच्छासें प्रातिकूल जीव क्यों देखे जाते हैं ? इसलिये  
 कबूल करना चाहिये जीव अनादि-और-इसका कर्त्ता इश्वर नही,

इसपरभी जिनलोगोंको हठवादहै वें बतलावेकि-एकमनुष्यसे दूसरेका घातकराना-और-फिर घातकों राज्यद्वारा फांसी दिलाना-इश्वरकेलिये कौनसी बहादूरीका काम था?—अगरकहाजाय एककाम इश्वरने किया-दूसराजीवने-तो-फिर बतलाना चाहिये वह सर्वशक्तिमान् कहां रहा? तैत्तिरीयब्राह्मणभागमें लिखाहैकि-परमेश्वरने अपने आपमें चाहाकि-मैं-सकलवस्तुको उत्पन्न कर-इसइरादेको पुराकरनेकेलिये तप किया. फिर सकलवस्तुके मूल कारणको उत्पन्नकिया. उनको अपना आत्मादिया और इसप्रकार सकलवस्तु बनगया. सौचना चाहिये-निराकारने तप कैसे किया! साकारचीजोंको आत्मा कैसे दिया? सकलवस्तुकेमूल-कारणको किसमसालेसे बनाया? पहिलेतो एकीला निराकारही था-इधरउधर फिरकर पीछा जैनोंकेघर आना आपलोगोंको मुनासिब नही था.

२६-सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४२१-पंक्ति १३ में दयानंदजी लिखते हैकि-जीव और जडका लक्षण तो जैनलोगठीककहते है लेकिन! जडरूप पुद्गलहै वें पापयुक्त कभी नहीहोसकते. (जवाब.) कौन कहताहैकि-जडपदार्थ पापपुन्ययुक्तहै? अपने दिलसे चाहे सो कहदो. किसी जैनशास्त्रमें यहबातनही लिखी. अच्छे बुरे अभिप्रायसे जो जीवकेशाथ अच्छेबुरे पुद्गल बंधते है-वें-चारस्पर्शों परमाणु पुद्गलहै इसको उल्टा समझे हुवेहोतो अलगबातहै. सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४० पंक्ति ११ में-दयानंदजी लिखते है जैनियोंके साधुओंकी लीला देखिये!-एक जैनमतका साधु-कोश्या वेश्यासे भोगकर पश्चात् त्यागीहोकर स्वर्गलोकको गया. (जवाब.)

पटनानगरके शकडालमंत्रोंके बेटे स्थूलभद्रजी जब संसार अवस्था थे-एक वेश्याकेघर ( १२ ) वर्षतक रहे थे. पीछेसे उसका संग छूटकर वे साधु हुवे. धर्मपालन किया-और-उमर पुरीहोनेपर मकर स्वर्गगतिकों प्राप्तहुवे. कहिये ! इसमें कौनसी विरुद्धबात थी क्या ! कोई आर्यसमाजी वेश्यागामी हो-पीछेसे संन्यासी बं दयानंदजीके इरादेमुजब वेदोंके हुकमपर चले-आर-निराकार ईश्वरका ध्यानकरे तो मुक्तिकों पासके या नही ?-अगर पासके तो जो कोईस्थूलभद्रजीसाधु सच्चासाधुधर्म पालनकरके स्वर्गलोग क्यों न जैनमें लिखते दयानंदजी बारबार जो सत्यार्थप्रकाशमें लिखते है वे-पासकेगे ?-इत्ता-वेदइंदक बौध-वा-जैनमत-प्रचलितहुवा-इससे जा-दादिशास्त्रोंका नतीमें सबएक है. ~~समाप्त~~

नाजाताहैकि-दयानंदजीकों पंजाब, अरामवालनिवासा ठाकुर, सजीने-तथा-मेवाड उदयपुरमें श्रीमानझवेरसागरजीने ऐस लायाकि जैनकों बुगकहते उनकों शांति नहीआतीथी. फिर आप फरमाते हैकि-जैनोंके साधुओंकी लीला देखिये ! ( जवाब. ) जैनोंका धर्म निर्विकारहै उसमें लीलाक्रीडा या-विकार-प्रथमहीसे निषेध है, लीलाक्रीडा तो आपक ब्रह्माविष्णुमहेश-परशुराम-और पाराशररुषिबेगोराकी देखना चाहिये-जो-कामक्रोधरुष समुद्रमें डूबे हुवे थे, आपनेभी संन्यासाबनकर खूब लीला जाहिरकिइ-पहिले लंगोट बांधकर नंगे फिरे-पीछेसे-कलावतूनका चौगा-कोट-शालदुशाले-और-जूता पहनकर संन्यासधर्म पाला, सकारीपरचढ़े खजाना तरकिया-और-परमहंस परिव्राजकाचार्यभी बने-खूब किया. आपकी लीला भी कुछ कम नहीथी.

२७-सत्यार्थ० पृष्ठ ४४२ पंक्ति १० में-दयानंदजी कहते है

एककरोड साठलाखकलशोंमें मेरुपर्वतपर देवोंने महावीरतीर्थंकरको स्नानकराया यह असंभववातहै (जवाब.) महाशय!-जिस-वातको दूसरे बुद्धिमान् असंभव नकहसके-वो-आपके कहनेसे असंभव नहीं होसकती. आप जो पक्षपातरूप अग्रिसें जलहुवे हृदयकी साक्षीदेगयेहो शिवाय आपके अनुयायीलोगोके दूसरा कोई नहीं मानसकता, आगे त्या०पृष्ठ ४४२ पंक्ति ११ में-दयानंदजी लिखते हैंकि-दशार्णराजा महावीरके दर्शनको गया-वहां कुछ उसने अभिमानकिया-उसकेनिवारणकेलिये-१६, ७७, ७२, १६०००-सोलहअरब सतत्तरकरोड-बहत्तरलाख सोलहहजार इंद्रके स्वरूप-और उससेंभी ज्यादा इंद्राणी वहां आइथी. देखकर राजा आश्चर्यहोगये, अब विचारनाचाहियेकि-इंद्र और इंद्राणीयोंके खडेरहनेकेलिये ऐसे ऐसे कितनेही भूगोल चाहिये? (जवाब.)-यह लिखना दयानंदजीका बिल्कुल गलतहै, आवश्यकसूत्रकीटीकामें दशार्णराजाका जहां बयानहै वहां ऐमापाठहैकि तद्गर्वखवतां नेतुं-स्वसैन्यैच्छादितांबरः-शक्रःस्वर्गादवातारीदारु-ह्यैरावणं गजं ८ तस्यास्यानि विकुर्व्याष्टौ-प्रत्यास्यं दशनाष्टकं-दंते-दंतेष्टपापीश्च-प्रतिशप्यष्टपञ्चिकां ९ पञ्चपञ्चेष्टपञ्चाणि-पञ्चपञ्चेतथैकके-द्वात्रिंशत्पात्रयुक्तानि-नाटकान्पद्भूतानिसः-१० तदानीमाययौ शक्रो-दशार्णद्विरदोपरि-श्रीमद्वीरगुणग्रामस्फीतगीतवशांतरः ११ (अर्थः) दशार्णराजाका गर्व नीचाकरनेके लिये इंद्र ऐरावण हाथीपर बैठकर स्वर्गस आया-उसह्मार्थीके आठ शूढथी-एकशूढपर आठआठदांत, और एकएकदांतपर आठआठ वावड़ीका आकार बनाया. वावड़ी वावड़ीपर आठआठ कमल-एकएककमलके आ-

ठआठपत्ते-और-उनपत्तोंपर देवशक्तिसँ बत्तीमतरहके नाठकोंकी रचना इंद्रनेकिई, सबबकि-देवोंकी ताकत मनुष्योंसँबढकर होती है. बस! इसजलसँकों देखकर दशार्णराजा गर्वरहितहुवा और सौचनेलगा मेरीरुद्धितो कुछभी चीजनही. देखिये! इसबातकों दयानंदजीने कितनी बढाई? कौन कहताहै सोलहअरब इंद्र और उससँ ज्यादा इंद्राणी वहां आइथी! जिमसँ उनकों खडेरहनेकेलिये जगहभी नमिले? दयानंदजीतो देहांतहोगये-अगर कोईआर्यसमाजी जैनशास्त्रके प्रमाणसँ अबभी सबूतकरना चाहे तो लिखकर जाहिर करे. सच्च जूठ आपही दिखजायगा.

२८-सत्यार्थ पृष्ठ ४४२ पंक्ति १६ में दयानंदजी लिखते है जैनके श्राद्ध दिनकृत्यमें लिखाहै वावडी कुवा और तालाव न बनवानाचाहिये. (जवाब,) सौचना चाहियेकि-जिसधर्ममें करुणा ही प्रधानहो उसके प्रवर्त्तक उसकी मनादी क्यों फरमावे? जैन-श्वेतांबरमंदिर जो इसवख्त भारतमें (३६०००) मौजूदहै तो उनकेलिये कुवे और बागभी हजारोंहीहोंगें. बडेबडेशहरोंमें कइ जगह जैनश्रीमंतलोगोंके बागबगीचे बनेहुवे विद्यमानहै. अगर इस बातकों बुरीममझते तो उनमे यहरसम कैसे पाइ जाती!-हां! अनार्यकर्म के लिये कारखानाखोलना-और-उसके लिये कुवावावाडीतालावबनाकर उसमें पुन्य मानना-जैनलोग-नही फरमाते. श्राद्धदिनकृत्यमेंभी इसीमतलबसँ मनादी है, दयानंदजी लिखते है एक नंदनमणिकारने वावडी बनवाइथी उससँ धर्मभ्रष्टहोकर सोलहमहारागहुवे-और-मरकर उसीमें मेंढक होगया जैनलोग मानते है. (जवाब.) नंदनमणिकारने धर्मकीपुष्टिकेलिये वावडी नही ब-

नवाइथी इसीलिये वह धर्मभ्रष्ट हुवा. सौचो ! धर्मकेलिये बनवा-  
ता तो धर्मभ्रष्ट क्यों कहा जाता ! और उसकेमरते वख्तभी उसका  
इरादा अच्छारहता तो वह मेंढक क्यों बनता ? यह सबशास्त्रका-  
रोंको मंजूरहैकि-जिमचीजमें जीवकों मोहममत्व उपादे रहजाय  
अगले जन्ममें वह उसीमें उत्पन्नहोजायगा. इसमें जैनोंने क्या बु-  
राकहा ? और दयानंदजी क्यों नाराज हुवे ?

२९-सत्यार्थ पृष्ठ ४४२ पंक्ति ३१ में दयानंदजी लिखते है  
जैनकेश्राद्धदिनकृत्यग्रंथमें लिखाहै मृतकवस्त्र साधु लेलेवे देखिये!  
इनके साधुभी महाब्राह्मणके समान होगये, वस्त्रतो साधु लेवे प-  
रंतु मृतकके आभूषण कौन लेवे ? बहुमूल्यहोनेसे घरमें रखलेते  
हीमें तो आप कौनहुवे ? (जवाब.) यह लेख दयानंदजीकी अ-  
ज्ञानतका सूचकहै. अमलमें बातयहथीकि-जबकभी साधुम दा-  
यमेंसे कोई साधु-मृत्यु होजाय-तब उसके पहिनेहुवेकपडे तो ज-  
लाहीदियेजायगें, लेकिन ! जो उसके बचे दूसरे हुवे वस्त्र-कमल  
वगेरा रहते है उसको दूसरासाधु लेकर अपने काममें लालेवे, इ-  
सपर दयानंदजी फरमाते है मृतकके वस्त्रतो साधु लेव-परंतु आ-  
भूषण कौन लेवे ? महाशय ! यह अर्थ आपने कहाँसे निकाला ?-  
जैनकेसाधुओंके गहनेआभूषण पहिलेहीसें नही होते, ऐसी मि-  
थ्यातर्ककरना कौनसी बुद्धिमानीका काम था ? सत्यार्थ पृष्ठ ४४३  
पंक्ति १ में दयानंदजी रत्नसारग्रंथका प्रमाणदेकर बताते हैकि-  
जैनलोग-भूंजने-कूटने-पीसने-अन्नपकानेआदिमें पापहोनामानतेहै  
अब देखिये ! इनकी विद्या हीनता-भला ! ये कर्म नकियेजाय तो  
मनुष्यादि प्राणी कैसे जीसकें ?-और जैनीलोगभी पीडितहोकर



मरजाय—( जवाब. ) अगर इनकामोमें पाप नहीं थातो धर्मशास्त्रोंमें पर्वतिथीके रौज येकाम बंदरखने क्यों फरमाये?—इससें सबूतहुवा कि—भट्ठी—चूल—चक्की वगेरा जितनीतरहके संचे—हैं उनके चलानेमें पाप जरूर होताहै, लेकिन ! गृहस्थोंकों इनके चलाये बिदून काम नहीं चलता—इसलिये फरमायागयाकि—हरहमेश बंदरखना नबने तो पर्वकेरौज जरूर बंदरखेकरो. पकायेहुवे भोजनमेसें दशांशखो-दशांशभी सुपात्रदानमें दियाकरो, दीनप्राणीयोकों अनुकंपालाकर दियाकरो, कहिये ! विद्याहीनता आपकीहै या जैनोंका ?—कौन कहताहैकि—देहरक्षाकेलिये खंडनपेषनआदि—न करना ? रत्नसारमें मना फरमायी सो पर्वकेलिये है. जितने हिंसादिककर्म फिजूलके है जैन उन्हींकों नकरना बयान करतेहै. यह आपकी बुद्धिकाही अंधरैहीक—ग्रंथकर्त्ताके अभिप्रायकों नबुझकर वृथाकागज काले करगये.

३०—दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४४३ पंक्ति ८में लिखते है—एकदिन जैनका एकलब्धि साधु भूलसें वेइयाकेघरमें चलागया, आर धर्मसें भिक्षा मांगी, वेइया बोलीकि—यहां धर्मका काम नहीं. किंतु अर्थका कामहै तब उसलब्धिसाधुने साढेबारहलाख अशर्फी उसके घरमें वर्षा दी. इसवातकों विनानष्ट बुद्धिके कौन मानेगा ? ( जवाब. ) जिस जैनसाधुनै अशर्फीयें बर्साइथी उसकानाम नंदी-पेणमुनि था. और उनकों ऐसीचमत्कारी लब्धि सिद्धथी जिससें वे अशर्फीयां बर्सासकते थे. आजकलके जमानेमेंभी कइसाधुलोग तथा—गृहस्थ ऐसे मौजूदहै जो शरीरकीतलाशीदेकर विद्याबलसें मणोंबंद मिठाइवगेरा मंगासकते है. फिर अच्छेजमानेमें बढेबढे

लब्धिधारी साधुलोग क्यों न अशर्फी वर्सा सकतेहोंगे ? अनुमान प्रमाणसेंभी सबूत होसकताहैकि बात सत्यहै, अगर कहाजायकि फिर वें भिक्षा क्यों मागते थे ?—( जवाब. ) भिक्षामागना साधुलोगोंका मुख्यधर्म है. दूसरोंकी महत्वता सुनकर रंज उठाना ठीक नहीं. यह अपने अपने भाग्यकीबातहै. अशर्फीवर्साना क्या ! सिद्धसेन दिवाकरकि—जिनोंने मंत्रशक्तिसें उज्जेननगरमें शिवलिंग तोड़कर उसमेंसें जैनमूर्त्ति निकाली थी क्या ! यह दयानंदजीने नहीं सुना होगा ? उज्जेनमें महाकालकामंदिर मशहूरहै मारवाडमें नाडोलनाडलाइगांवमें जाकर देखो तो मंत्रशक्तिसें उडालाये हुवे कई मंदिर मौजूदहै. इत्यादि प्रमाणोंसें मंत्र और विद्याओंकी शक्ति जूठीनही कही जासकती. दयानंदजीकहते हैकि—इसबातकों विज्ञानवृद्धिके कौन मानेगा ?—लेकिन ! असलमें तो नष्टवृद्धि उन्हीं की होगइथी जो निराकार इश्वरसें साकरजगत्की पैदाश फरमा गये—प्रलयकेसमय वेद इश्वरमें लीनहोजायंगे—और जब दयानंदजीका निराकार इश्वर दूसरी सृष्टि बनायगा—उसकी आज्ञास रुचिलोग तप करेगें तब फिर वेदोंकों वें लोग पायंगे. एसी असंभ बातें माननाही नष्टवृद्धियोंका कामहै,—

३१—सत्यार्थ पृष्ठ ४४३ पंक्ति १२ में दयानंदजी—रत्नसार भाग पृष्ठ (५७) का—नाम लेकर लिखते हैकि—जैनोकी—एकपाषाण की मूर्त्ति घोडेपर चढीहुइ उसका जहां स्मर्णकरे वहां उपस्थित होकर रक्षाकरती है, कहा जैनीजी ! आजकल तुम्हारे यहां चोरी डाकाआदि—और शत्रुसें भयहोनाही है तब तुम उसकास्मर्णकरके अपनी रक्षा क्यों नही करा लेतेहो ? क्यों जहांतहां पुलिसआदि

राज्यस्थानोंमें मारेमारे फिरतेहो ? ( जवाब. ) जैनोंका कोईदेव घोंडेपर चढाहुवानही होता. वें-निर्मोही अर्हन्देवकों मानते है. कोई जैनशास्त्रमें नहीलिखाकि-जैनोंकादेव-घोंडेपरसवाररहताहै. दयानंदजी सच्चे थे तो नामबतलाजाते. लेकिन ! बतलावे क्या ?-जिसबातपर अपनेही दिलमें धोखाहो उसकों शिवाय गोलमोल के दूसरीतरह कैसे लिख सके ? जैनलोग अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्मकों प्रधानमानते है. और अर्हन्देव जो सर्वज्ञ हुवे है उनके कहे हुवे मार्गकों अनुसरते है. निर्मोहीका ध्यानकरनेसे उनमें जो स्वतः निर्मोहता पैदा होती है वही उन्होंने पापकर्मसे बचाती है. जैनलोग ऐसे बाहियातदेवका स्मर्ण क्यों करेगें ?-यहतो आपलोंगोंकीदो कमजोरी हैकि-इश्वरकों जगतकाकर्त्ताहर्त्ता सर्वशक्तिमान् मानकरभी कचहरीमें पुलिसके धक्के खाते फिरतेहो, उसका स्मर्ण क्यों नहीकरलेते ? क्या अब वो आपलोंगोंका पालनकरनेमें कायरहोगयाहै, ? बनानेकी ताकत रखना-और-पालन करनेमें मौन होजाना-क्या ! सर्वशक्तिमानकों लाजिमथा ?

३२-सत्यार्थ पृष्ठ ४५७ पंक्ति ६ में-दयानंदजीलिखते है-जैनोम-"जल छानकर पानी-सूक्ष्मजीवोंपर नाममात्र दयाकरना-और रात्रीभोजननकरना-येतीनबाते अच्छा है, बाकी जितना इनका कथनहै सब असंभवग्रस्तहै." (जवाब.)-तीनबातेभी क्यों अच्छी कहनाथा ?-सभी असंभवग्रस्त कहदेतेतो कोईहर्ज नहीथा. क्याकि-सत्यार्थप्रकाशमें-जहां भारतकेसभीधर्मकी नींदा किइ वहाँ जैनकी बुराइभी नकरतेतो पक्षपाती समझे जाते, असंभवग्रस्त जैनमतहै-या-वैदिकमत ?-जरा अगाडी चलकर इसलेखकों पुरा

पढला-स्वतः मालूम होजायगा,—

- वेदैः पुराणैः स्मृतिभिश्च येषां—मनांसि नित्यं परिगर्वितानि,  
 पृच्छामि संदेहपदानि तेषां—समीपतः शास्त्रविरोधभांजि. १  
 ब्रह्मापि पुत्रीमवसंवदात्मा—वृद्धोपि किं स्वांचकृमे न मोहात्,  
 पीनस्तनीभिः सह गोपिकाभि—लक्ष्मीपतिः सोपि चिरं चिखेल. २  
 सनीलकंठ स्त्रिपुरस्य दाहं—कोपाद्वितेने गगनस्थितस्य,  
 पूषांधकादींश्च मृधे जघान—मुक्तिप्रदः स्यात्कतमस्त्वमीषु. ३

वेदपुराण और स्मृतियोंके कथनसें जिनका दिल घमंडमें आगयाहो—उनकों कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो दरयाफक्त करने योग्य हैं, देखो! ब्रह्माने विकारवालाहोकर अपनी पुत्रीकों कुटाष्टिसें देखा, सवाल पैदाहोताहै क्या! ब्रह्मा जैसे लाइकवरम-हात्माकों ऐसा कर्तव्यकरना योग्य था? वैदिकलोग इसकों छिपानेके लिये ऐसा अर्थ भी करते हैं कि—प्रजापति नाम सूर्यका और उसकी बेटी उषाहै, वेदोंमें जहां कहाहै कि प्रजापति अपनी बेटीसें फसा मतलब इतनाही समजो सूर्य उषाके पीछे चलता है, लेकिन! यह अर्थ सच्चा नही—विद्वानोंकी सभामें यह झूठ नही पसार होसकता, इधर कृष्णजीकी लीला देखोतो उनके ग्रंथोंमें साफ बयान है कि—गोकुलगांवकी गोपियोंके अधरामृतसें—उनके उत्तंगस्तनकलशोंके आलिंगन करनेसें—और उनके साथ कामक्रीडाकरनेसें कृष्णजीका मन अतिहर्षित होताथा. इधर शिवका वयान सुनो तो उन्होंने राक्षसोंके तीननगर जो आकाशमें थे गुस्सेमें आनकर जलादिये. और पूषांधकवगेराकों लडाइमें मारडाले—फिर यहभी लिखाकि—शिवका लिंग—अत्रिरुषिके शापसें टूट पडा, रामचंद्रजी

जबकि-उनकी सीता रावण लेगयाथा दिलखोलकर रोये, कसिये! वैदिकमतवाले महाशयो!-यही आपके इश्वरावतारोंका कर्त्तव्य था!-बतला दो! इनमें मुक्तिदाता कौनकों गिने?-अगर दयानंदजी कहदेवेकि-हम-अवतारोंकों कब मानते थे?-(जवाब.) यही तो आपको खंफ थाकि-इनकों मानेंगे तो पकड़े जायेंगे. दयानंदजी कइजगह लिखते है जैनोंके तीर्थकर भूल गये मालूम होते है. बतलाना चाहिये! वें-भूले थे-या-आपके ब्रह्मा विष्णुमहेश और रामावतार, तीर्थकर पूर्णज्ञाही निर्मोही थे-वें क्यों भूलने लगेथे?

३३-तपस्विशापात् न कथं विनष्टा-पूर्वार्द्रिका यादवमंडितापि,

हरि र्भमन्काननमध्यदेशे-बाणप्रहारान्नकथं विनष्टः ४

बड़े आश्चर्यकी बातहैकि-कृष्णावतार बैठेहुवेभी द्वारिकानगरी तपस्वीके शापसें जल उठी, क्या! आरोंकी तकलीफ मिटानेके लिये तो अवतार लेना और अपनी तकलीफकों आप न मिटासकना-यहभी कोई प्रमाणयुक्त बातहै? अखीरमें द्वारिकासें भगकर वनमें गये-और वहां एकबाणके लगनेसें दुखितहोकर जलके प्यासेंही कालकरगये-बड़े अपशोषकी बातहैकि-एसे कमजोरोकों सर्वशाक्तमान्के अवतार मानेजाय !

चकर्त शीर्षस्वकरेण मातुः-निःक्षत्रियां यःपृथ्वीचकार,

स्नातिस्म तेषां हृत्तिरैस्त्रिकालं-सोप्युच्यतेन्यैर्मधुसूदनांशः ५

द्रोणो रणे पांडवकौरवाणां-द्विजोपि जज्ञे नयमावतारः

यत्सौप्तिके पर्वणि तस्मिन्सालः-सुतोपि चक्रे वचनातिगं तत् ६

पथुरामने अपनीमताका मस्तक अपने हाथोंसें छेदन किया जितनेक्षत्रिय थे उनकों मारकर पृथ्वी-निःक्षत्रिया किह, और उ-

नकेलोहीसें दिनमे तीनतीन दफा स्नान किया. बड़ी हंसीकीबात हैकि-ऐसे निर्दयोंकोभी इश्वरातार कहे जाय! इधर द्रोणाचार्य ब्राह्मणहोकर कौरवपांडवोंके संग्राममें युद्धकरके यमावतार बने.

पाराशरः कामवशान्नकन्यां-दिवा निपेवे यमुनाजलस्यः,

व्यामस्तु बंधोर्दयिताद्वयस्य-वैधव्यविध्वंसकरो न जज्ञे. ७

भार्याप्यहिल्या किल गौतमस्य-क्रुद्धस्य शापेन शिलाबभूव,

नीतो वशिष्टेन रुपाभिषक्त-श्रृंगालतां भूमिपति स्त्रिशंकुः ८

पाराशररुषिने यमनानदीमें धीवरकी कवारीकन्यासें भोग किया. इधर व्यासजीनें अपनेभ्राताओंकी स्त्रीयाँका वैधव्यविध्वंस कराया-देखिये! यह वैदिकरुषियोंके कर्त्तव्यहै. गौतमरुषिके शा-पसें उनकी अहिल्यास्त्री शिला बनगइ, कितनेककहते है इंद्र नाम सूर्यका और-अहिल्या नाम रात्रीका-जहां इंद्रने अहिल्याको ख-राबकिया लिखा-मतलब इतनाही समझोकि-सूर्यसें रात्रीकी ख-राबी होती है, ऐसे मनकल्पित अर्थ बनाकर दूसरोंकी तर्कतापसें बचजाना-यह मिथ्याबात कहांतक चलसकेगी?-कहिये? ऐसी अघटितबाते वैदिकअवनार और रुषियोंकी है-या-जैनोंके तीर्थ-कर और मुनियोंकी?-दयानंदजी कहजगहलिखत है जैनलंगवडे पक्षपाती होत है, लेकिन! खयाल करके निम्नलिखित वचनोंको देखिये! मालूम होजायगा पक्षपाती कौनहै?—

५-~~५~~ पक्षपातो न मे वीर!-नद्वेषः कपिलादिषु,

युक्तिमद्रचनं यस्य-तस्य कार्यः परिग्रहः ९

भवबीजांकूरजनना-रागाद्याः क्षयमुपगता यस्य,

ब्रह्मा वा विष्णुर्वा-हरो जिनो वा नमस्तस्मै. १०

जैनोंका कहना है कि—हमकों महावीरवगेरा तीर्थकरोका पक्ष नहीं—इधर कणादवगेरा मतानुयायीयोंसे द्वेष नहीं, जिसके युक्ति प्रमाणसहित वचन है उनकों मनन करनेवाले हमहै. (९) जिसजि सपुरुषके रागद्वेषवगेरादोष दूरहोगयेहो—चाहे वह ब्रह्माहो—विष्णु शिव-या-जिन कोइहो उनकों हमारा नमस्कारहै. कहिये ! जैनों-कों पक्षहोतातो ऐसीबात क्यों फरमाते ? औरभी सुनिये !

प्रत्यक्षतो न भगवानृषभो न विष्णु-रालोक्यते न च हरो न हिरण्यगर्भः  
तेषां स्वरूपगुणमागमसंप्रभावात्-ज्ञात्वा विचारयथकोत्र परापवादः ११

नास्माकं सुगतः पिता न रिपन्नस्तीर्या धनं नैव तै,

देतं नैव तथा जिनेन न हृतं किंचित् कणादादिभिः,

किं त्वेकांतजगद्धितः स भगवान् वीरो यतश्चामलं,

वाक्यं सर्वमलापहर्तृ च यतस्तत्राक्तिमंतो वयं. १२

जैनोंका साफ कहना है कि—प्रत्यक्षमें तो न रुषभदेव मौजूद है—न ब्रह्माविष्णुमहेश है. हां ! उनके कथन किये हुवे आगमवचनोंसे उनके गुण और स्वरूपकी तहकीकात करनी चाहिये कि—कौन तो इनमें सर्वज्ञ और—कौन असर्वज्ञ थे ?—कहिये ! यह जैनोंकी कैसी निष्पक्षपात बात है ? फिर वें बयान करते हैं कि—बौधलोग हमारे पिता नहीं, सांख्य हमारे वैरी नहीं जिनेन्द्रोंने अशर्फीयें नहीं दीइ, कणादवगेरा मतवालोंने कुछ हमारा चोराया नहीं. हमतो जो सर्वज्ञपरमात्मा सच्चे उपदेशक होगये—उनके ग्राही है, बतला दो ! इसमें जैनोंने कौनसी पक्षपातकी बात फरमायी ?—

न सर्वज्ञा न नीरागाः—शंकरब्रह्मविश्ववः,

प्राकृतेभ्यो मनुष्येभ्यो—प्यसमंजसवृत्तितः

रामादिदोषजनकानि वचांसिविष्णो-

रुन्मत्तचेष्टितकराणिच यानि शंभोः

निःशेषरोषशमनानि मुनेस्तुसम्यग्-

वदध्वमर्हति तु कोनु विचारयध्वं,

१४

दुर्योधनादि कुलनाशकरो बभूव-

विष्णुर्हर स्त्रिपुरदाहकरः किलासीत्,

क्रोचं गुहोपि दृढशक्तिहरं चकार-

वीरस्तु केवल जगद्वित सर्वकारी,

१५

शक्रं वज्रधरं बलं ह्यधरं विष्णुं च चक्रायुधं,

स्कंदं शक्तिधरं श्मशाननिलयं रुद्रं त्रिशूलायुधं,

एतान् दोषभर्यादितान् गतघृणान् बालान् विचित्रायुधान्

नानाप्राणिषु चोद्यतप्रहरणान् कस्तान् नमःस्यात् बुधः १६

न यः शूलं धत्ते न च युवतिमके समदनां,

न शक्तिं चक्रं वा न ह्यलमुशलाद्यायुधधरं,

विनिर्मुक्तं क्लेशैः परिहितविधाबुद्यतधियं,

शरण्यं भूतानां तमृषिमुपयातोस्मि शरणं.

१७

ब्रह्मा लूनशिरा हरि र्दृशि सरूक् व्यालुप्तशिश्नो हरः

मूयोप्युल्लखितोनलोप्यखिलभुक् सोमः कलंकांकितः,

स्वर्नाथोपि विसंस्थुलः खलुवपुः संस्थैरुपस्थैः कृतः,

सन्मार्गस्ल्लनाद् भवंति विपदः पायः प्रभूणामपि. १८

ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादि-रागाद्यंकलंकिताः,

निग्रहानुगहापरा-स्ते देवाः स्पुर्न मुक्तये.

१९

परिग्रहारंभमंग्ना-स्तारयेयुः कथं परान्,



स्वयं दरिद्रो न परान-ईश्वरीकर्तुमीश्वरः २०

नाट्यादिहाससंयुक्ता दुःपल्लवविसंस्थुलाः

लंभयेयुः पदं शान्तं-प्रज्ञान प्राणिनः कथं. २१

नशूलं नचापं नचक्रादिहस्ते-नहास्यं नलास्यं नगीतादि यस्य,  
ननेत्रे नगात्रे नवक्त्रे विकारः-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेन्द्रः २२

नगौरी नगंगा नलक्ष्मीर्यदीयं-वर्षा शिरो वाप्युरोवा जगाहे,  
यमिच्छाविमुक्तं शिवश्रीस्तु भेजे-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेन्द्रः २३

नभोगा नरोगा नचोद्वेगवेगा-स्थितिर्नो गतिर्नो नमृत्युर्न जन्म,  
नपुण्यं नपापं नयस्य-स्तिबंधः-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेन्द्रः २४

कोपे सति स्यात्कुतएव मुक्तिः-कामेथवा तत्प्रतिबंध एव,  
रागेपि च स्यान्नफले विशेषः-तस्मान्नचैतं हृदयेवधार्याः २५

इमां समक्षं प्रतिपक्षसाक्षिणा-मुदारघोषामवघोषणां ब्रुवे,  
नवीतरागादपरोस्ति दैवतं-नवाप्यनेकांतमृते नयस्थितिः २६

कोपेन कश्चिन्मदनेन कश्चिद्-रागेण कश्चिच्च परितदेहः  
विहाय सर्वांश्च विमुक्तिहेतोः-श्रीवीतरागं शरणं विधेहि. २७

३६-ब्रह्माविष्णुमहेश-प्राकृतमनुष्योंसें भी बेसमझप्रवृत्तिवाले होनेसें नहीकहाजानाकि-सर्वज्ञ-या-निर्मोही थे. विष्णुके वचन रागपैदाकरनेवाले सबूत होते हैं, दुर्योधनके कुलका नाशकरानेमें आप सामीलथे. इधर शिवकों देखोतो स्त्रीकों गोंदमें लिये बैठेहैं, इंद्र-बलभद्र-और स्कंद तरहतरहके विकारोंसें ग्रस्तहैं, ब्रह्माका म-स्तक नमालूम क्यों छेदनहोगयाथा ?-सूर्यचंद्रऔर अश्विगेरा-जो-वेदमंत्रोंकरके पूज्य फरमायेजातेहैं तरहतरहके दोषोंसें दोषितहैं, कहिये ! किसकों मुक्तिके अधिकारी समझे ?-न्याय-सच्चासच्चाव-

यान फरमाताहैकि-जिमकेपास स्त्रीऔर हथियारहोंगे वह जरूर कामीक्रोधी होगा. अगर कोपकरनेसे-कामभोग सेवनसे-और-राग बढ़ानेसे मुक्तिहोताहो-तो-सारामंसार मुक्त होजाता, इत्यादि प्रमाणोंसे सबूतपायाजाताहैकि-जिमने कामक्रोधादिशत्रुकों हरा दियेहो वही मुक्तिका अधिकारीहै मुक्तिहुवेबाद फिर संसारमें नही गिरता. उपरलिखेहुवे काव्योमें जोकुच्छ निष्पक्षपात बयान दिया है कोइ शरूश प्रमाणसहित तोडनाचाहे तो तोडे; कितनेकलोग व्याकरण और तर्कशास्त्रकी विद्वत्ताका घमंडलाकर बेमतलब लंबा चोडालिखानकरडालतेहैं वैसेकरनाहोतो वैसा मसालाभी मौजूद ,लेकिन! तत्ववातसें लडनाचाहिये. जैसे मुसाफिर सर्पऔर कां-टेवाले रास्तेको छोडकर चलताहै मुक्तहोनेकी इच्छावाला कुदे-वादिंकंटकसर्पको छोडकर चलेतो उसको कौन बुराकहसक्ताहै?—निदान! जैनोंके कोइ कायदे ऐसेनही जिसपर दोष आसके, उनको असंभवग्रस्तकहना किसीसुरतपर नहीबनसक्ता.

३७-सत्यार्थपृष्ठ४४१ पंक्ति११में विवेकसारग्रंथका पृष्ठ(५५) का-नामलेकर दयानंदजीलिखतेहै गंगादितीर्थ-और-काशीआदि क्षेत्रोंके सेवनेसें कुछभीपरमार्थ सिद्धनहीहोता ऐमाजैनलोगमानतेह और अपने गिरनार शत्रुंजय और आवुआदितीर्थक्षेत्रमुक्ति पर्यंतकेदेनेवालंबतलातेहैं विचारनाचाहियेकि-जैसे शैववैष्णवादि केतीथे जडस्वरूपहै वैसे जैनियोंकेभीहै,इनमेंसें एककीनींदा और दूसरेकी स्तुतिकरना मूर्खताका कामहै या-नही? (जवाब.)-जन लोग युक्तिप्रमाणसें सबूतकरदेतेहैकि-स्त्री और हथियाररखनेवाले देव मुक्तिके अधिकारीनही गंगातीर्थ-और-काशीक्षेत्रमें अगर स्त्री

शास्त्रसे रहित-त्यागीदेवकी मूर्ति विराजित होती तो उसको जरूर तीर्थ समझ सकते, साफ साफ बयान है कि-जहां जहां स्त्री शस्त्र रहित देव मूर्ति होगी उसीको तीर्थ समझा जायगा. तीर्थनाम भी उतीका है जहां जाकर मनुष्य का दिल धर्म पर रजु हो. कृष्णजी और रामचंद्रजी एक प्रभावशाली राजे थे, उनको मुक्ति हुवे मानना वैदिक लोगों के निश्चयकी बात है, ब्रह्मा और शिव-रिषि-और विद्याधर थे, इनको मुक्ति हुवे मानना उनके भक्तों के निश्चयकी बात है, युक्ति प्रमाण से और उनके आचरण से पाया जाता है वे-मर्वज्ञ-या-निर्मोही नहीं थे, इसा मसीह का यहूद देश में संवत् (५७) विक्रमी के-असे पैदा होना-लोगों को उपदेश करना-और शूली पर चढ़ना इतिहासकी बात है. लेकिन ! ईश्वर-या-ईश्वर का पुत्र होना-और-सारे संसार को प्राणशरण होना इसाई यों के निश्चयकी बात है. मुसलमानों के पेगंबर महम्मद साहब का म-के में सन (५६९) ईस्वी के दर्मियान पैदा होना, मत फैलाने के लिये लड़ाई करना और फिर मदीने में जाकर परलोक सिधारना, इतिहासकी बात है, लेकिन ! ईश्वर का दूत होना और मुसलमानों को स्वर्ग देना, मुसलमानों के निश्चयकी बात है, गंगा और काशी में जहां जहां वैदिक लोग तीर्थ मानते हैं वहां त्यागी देवों की मूर्ति न होने से वे पारमार्थिक तीर्थ नहीं समझे जाते. शत्रुंजय गिर नार आबू गेरामें त्यागी देवों की मूर्ति होने से वे-पारमार्थिक तीर्थ समझे जाते हैं. कहिये ! इसमें जैनो ने नींदास्तुति किसकी कि ? अगर जड़ का सत्त्वार नामंजूर था तो-आपके \* मरे बाद आपके जड़ शरीर को-समाजी लोगों ने दण्ड चंदन-दसमण आम्र काष्ठ-चारमण पृत-पांचशैर कपूर-अढाई सेर बा-

\* संवत् ( १४८० ) दीपमाल के राज अजमेर में दयानंदजी का देहांत हुआ.

लछड-आधाशैर केशर-और-दोतोलेकस्तूरके साथ-क्योंदग्धकि-  
या ?-क्या ! आपकाशरीर चैतन्ययुक्त था ?-महाशय ! जडवस्तुका  
सत्कार आप क्या ! आपके पुरुषोंने और चेलोंनेकिया-और-कर  
तेहै, यहसत्कार किससे छूटाहै, यहआपलोगोंकी जीदहैकि-मूर्त्तिके  
बारेमें नाराजीलातेहो, हमारा एकशरूश शहरअजमेरमेबास्ते इम्ति  
हानमिडलदेनेकोंगयाथा, इंतफाकसें आर्यममाजीयोंकी यज्ञशालामें  
जापहुंचा, वहां एक महाशयने पुछाकि-आप कहाँसे आये ? उ-  
सनेकहा मैं जिलाउज्जैनसें आयाहूं, सुनकर खुशहुवे, औरकहनेलगे  
निहायतखुशीकीबातहैआपयहां तशरीफ लाये, आज होंमपुराहो  
गया आपदेरसें आये, बारहबजे होम शुरुहोताहै और तीनबजे स-  
माप्तहोजाताहै, खेर ! चलिये ! हवनकुंड देखिये ! क्या अच्छा वेदा-  
नुसार बनायागयाहै, बाददेखनेके मुकाममजलिसमें गयेतो वहां  
फरमानेलेगे देखिये ! यह हमारे स्वामीदयानंदजीकी मूर्त्तिहै, इस-  
परदेखनेवालेने दो सवालकिये, अवलतो ! आपने इसमूर्त्तिकों क्यों  
लटकाइ ? जबकि-आपने मूर्त्ति मानना फिजूल समझाहै, दोयम-  
यज्ञ-या-होंमकरनेसें क्याफायदा पहुंचाताहै, उमदाचीजें जलाकर  
खाखकरदेना-शिवाय नुक्शानके औरकोइदूसरीसुरतनही. अगर  
वही सामान गरीबगुरबोंकों खानेकेलिये दियाजातातो अलबते  
फायदाथा. देवपूजनतीर्थयात्रा और मंदिरमूर्त्तिकों तो फिजूलस-  
मझना और यज्ञशालाबनाकर हजारेरुपये होमकेजरीये खाखकर  
देना कौनसे फायदेकीसुरतथी ? क्या निराकारइश्वर उनचीजोंकों  
खाताहै ? दूसरीबातयहहैकि-जब मूर्त्तिकोंबाहियातसमझतेहो तो  
स्वामीदयानंदजीकी मूर्त्तिभी बाहियात क्यों नही ? बाहियातची-

जकों मकानमें लटकाना कौनसीबुद्धिमानीकाकामहै? साफसाफ जाहिरहोताहैकि-बंगरमूर्त्ति माने किसीकाकामनहीचलसकता, मं-दिरउडाकरयज्ञशाला बनाइ, किसीने पथ्थरकी मूर्त्तिमानी; आप लोगोनेकागजपर कायमरखी, किसीनेनैवेद्यलगाया-आपने हवन किया, बातएकहीहै, सुनकर कुच्छभीजवाब नहीदिया, और कहने लगे वरुत्तथोडाहूगया-मुजे कामजरुरीपरजानाहै, फिर बातकरं-गा अगरकोइ आर्यसमाजमहाशय होंमकरने-और-स्वामीदयानंद जीकीमूर्त्तिमाननेमें कुछ फायदासबूतकरसकतेहोतो बजरीये अ-खबारजाहिरकरे, मैंउसपरकुच्छलिखुंगा,

३८-सत्यार्थपृष्ठ४४१पंक्ति२५में-दयानंदजी लिखतेहैजैसे अ-न्यमतमें-वैकुंठ कैलाश गोलोक श्रीपुरआदि-पुराणी-तथा चौथे आसमानमें इसाइ-सातमें आसमानमें मुसल्मानोंकेमतमें मुक्तिके स्थानलिखेहै वैसेही जैनियोंकी सिद्धशिला और शिवपुरहै. जिस-कों जैनीलोग ऊंचा मानतेहै वही अमरिकावाले नींचा मानतेहै. यानी जैनोंकी सिद्धशिला भूगोलके नीचे होनीचाहिये, मुक्तिमेंसे पीछा नआनेसें सबूतहोताहैकि-उनकों वहां प्रीति और बहार आनेमें अप्रीतिहोतीहोगी, फिर वहमुक्तिकाहेकी संसारहोगया. (जवाब.)-दयानंदजी कहतेहै जैनोंका मुक्तिस्थान भूगोलकेनीचे समझनाचाहिये-यहउनकी अज्ञानताका नमुनाहै, वेदोंमेंतो किसी जगह पृथ्वी गोलबयाननहीकिइ, पृथ्वीसपाटहै, गोलाके आकार होना-फिरना-और-उसके नींचे आबादीहोना-युक्तिप्रमाणसें \*सबूतनहीहोता, दयानंदजी कहतेहै हमारी मुक्ति सर्वव्यापीहै-

[illegible]

यानंदीयोंकी मुक्ति क्याहुइ ! मसलनजैसे औरतका पीहरहोगया,  
जब मनचाहाचलीगइ-पतियाद आया सासरे लोटआइ.

४०-महाशय !-जैनोंकीमुक्तिकाहाल जोकुच्छहै इसकाव्यसें  
मुनलिजिये !

नासंताभावरूपा नचजडिममयी व्योमबद्ध्यापिनी नो,

न व्यावृत्ति दधाना विषयसुखघना नेक्षते सर्वविधिः

सद्रूपात्मप्रसादा दृग्वगमगुणौघेन संसारसारा,

निःसीमात्यक्षसौख्योदयवसातिरनिःपातिनी मुक्तिरुक्ता, ?

( अर्थः )-कितनेकमतावलंबी असंतअभावरूप मुक्ति मा-  
नतेहै.जैसे बौध्लोगोंकी मुक्ति,कितनेक मतधारी मुक्तिमें जडहोजा  
ना मानतेहै,जैसे नैयायिक और वैशेषिकोंकी मुक्ति,कितनेक आ-  
काशकीतरह सर्वव्यापी और कितनेकलोग मुक्तिसें पीछालोट  
आना मानतेहै,जैसे आजीविकमतवालोंकी मुक्ति,दयानंदजी इसी  
के अनुगायीबनेहै,किसी वेदमें मुक्तिसें लोटआना नहींलिखा,कि-  
तनेक फरमातेहै मुक्तिमें खानपान भोगविलास और महेलभीमि-  
लतेहै, जैसे यवनलोगोंकी मुक्ति, कितनेक मतवाले कहतेहै जी-  
वकी मुक्तिहोतीही नहीं. जैमनीयमतवाले इसीबातपर पाबंदहै,  
कितनेककहतेहै इश्वर-भक्तोंकीरक्षाकेलिये-अवतार लेतेहै, वैदिक  
मतवाले इसीपर आरुढ़है.दयानंदजीवैदिकमतकेही सन्यासी कह-  
लाते थे-लेकिन ! उनकोतों न्यारीखीचडी पकानाथा-वें-पुराणी  
सडकपर कैसेकदम रखे.जैनलोग ज्ञानमयमुक्ति मानतेहै, मुक्तहुवे  
बाद-(जैसे जलपर तुंबास्थितरहे वैसे)लोकाग्रभागमें-अशरीरीहो  
कर स्थितरहना मानतेहै, मुक्तिहुवेपीछे लोटआनाभी जैनलोग

नहीमानते, किंतु लोकाग्रमें आत्मिकसुखमें मग्न रहना मंजूर रखते हैं, वहां बने रहनेसे उनको राग होने का जो दयानंदजी दोष लगाते हैं यह गलत है, सब बकि—उनको राग होता तो मुक्ति हुवे कैसे समझे जाते?—बल्किन्! जन्ममरणसे रहित हुवे बाद उनका गमनागमन स्वतः बंद हो जाता है, जैसे बिना हवा—पानीमें—तरंग—न उठेगी.

४१—सत्यार्थ पृष्ठ ४२३ पंक्ति १७में दयानंदजी लिखते हैं—जैनियोंके आर्हतलोग देहके परिमाणसे जीवका भी परिमाण मानते हैं, उनसे पुछना चाहिये कि—जो ऐसा हो तो हार्थीका जीव कीड़ीमें—और—कीड़ीका जीव हार्थीमें कैसे समासकेगा?—(जवाब.)—जैसे दिया जमीन पर रखकर उसपर बड़ा वर्त्तन ढांक दो तो बड़ेमें—और—छोटा ढांक दो तो—छोटेमें प्रकाशमान रहता है वैसे ही जीव छोटे या बड़े शरीरमें प्रकाशमान रह सकता है, दयानंदजी कहते हैं जीव तो एक परमाणुमें भी रह सकता है लेकिन! उसकी शक्तियां नाडी आदिके साथ संयुक्त होकर रहती हैं उनसे सब शरीरका वर्त्तमान जानता है, (जवाब.) जब नाडीके साथ उसकी शक्ति—संयुक्त—मानी तो वह एक ही बात होगी. शक्तिरूप गुण—जीवरूप गुणसे अलग होकर नहीं रह सकता. जहां जहां शक्ति है वहां वहां जीव है यह बात प्रमाणसे सबूत है, जीदीलोग जीद करे जिसका कोई क्या करे?

४२—सत्यार्थ पृष्ठ ४३० पंक्ति ११ में—दयानंदजी लिखत है कि—जैसे अन्य स्थानोंमें—चामुंडा—कालिका—जवालाप्रमुखके आगे दुर्गानवमी तिथि आदि पर्व बुरे हैं वैसे क्या! तुमारे पर्युषण आदि—व्रत बुरे नहीं हैं?—जिनसे महाकष्ट होता है. (जवाब.) दुर्गानवमी वगेरा पर्व—जैन लोग—इसलिये बुरे फरमाते हैं कि—उनमें पशुओंका बध



किया जाता है, जैनोँके पयुर्षणपर्व इसलिये बुरेनहूँ पाँहरहोगया, ओँका वधनहीकियाजाता, बल्किन्! जीवोंकी रक्षापाइ.

कहिये ! इसमें दयानंदजीकों कष्ट क्या आनपडा ?—क्या अन्धसँ दुकाने खुली नरहनेसँ खानपानकी चीजें नही मिलसकतीथी—इसलिये हिँसाकी पुष्टि करगये. फिर इसीपृष्ठपर पाँक्त १८ में दयानंदजी लिखते हैकि—वह ( तुमारी शासनदेवी )—राक्षमी और दुर्गाकालिकाको संगीबहन क्यों नहीं ? जिसने एकपुरुष और बकरेकी आँखे निक्काल लिइथी. ( जवाब. )—जैनके आवश्यकसूत्रके प्रतिक्रमण अध्ययनकी टीकामें एककथाहै वहाँ ऐसा लिखाकि—दशार्णपुरनगरमें एकगृहस्थ रहता था. वह खुद धर्मश्रद्धासँरहित और उसकी स्त्री—धर्मरक्ता थी. जिसमें वह रात्रीकों भोजनतक न खातीथी. इसबातपर उसका पति उसकी हँसउडाताथाकि—रा भोजनमें बुराइ क्याहै ? स्त्रीने कहा बहुतबुराइहै—पति बोला, अच्छा ! हमभी नियम लेलेयगें, स्त्रीने कहा तोड दोगें ! पति—बोला ! कभी न तोडुगा. ऐसाकहकर कितनेकरौज तो नियम रखा, और फिर पिछा खानेलगगया स्त्रीने कहा देखो ! बुराहै, तोभी—न—माना जैनमें शासनदेवी उमकों बोलते है जो धर्मके नियमोंका भंगकरे उसे शिक्षादे, उसनेभी चेतायाकि—तू—नियमभंग मतकर, लेकिन उसने नही माना, शासनदेवीने उसकी आँखे \*पतनकरडाली. दूसरेदिन उसकी स्त्रीने शासनदेवीसँ बहुतनम्रताकिइ—और—पति, कौँभी नियमपालनकेलिये सावधान किया. शासनदेवीने उससँ

---

\* आवश्यकसूत्रटीकाका—पाठ, देवता तं प्रहृत्याथ—दृग्गोलौ च व्यपातयत्,

नहीमानते, किंतु अपनी खता याद रखनेकेलिये असली आंखें वहां बनेरहने-लेकिन ! एकजगहपर कसाइलोगोंने एकबकरा जो यहगल्लने-हुवाथा उसकी आंखें लाकर उस व्रतभंगकरनेवालेके थठाइ, वह पूर्ववत् देखने तो लगा-लेकिन ! लोगोंमें उसकानाम ए-डकाक्ष जाहिरहुवा. और सबलोग कहनेलगे नियम तोडनेवालेका यह हालहै. कहिये ! दयानंदजी ! जैनकी शासनदेवीने इसमें क्या बुराकिया ? और भक्तोंसे कबकहाकि-तुम-मैरेलिये सांढबकरेभैसे मुधेवगेरा मारकर अर्पण करो ? बाततो क्या थी ? और दयानंद-जीने क्या बनाइ ?-दयानंदजीने शासनदेवीकों-काली-चामुंडावगे-राकी बहेनबनाना चाहा-लेकिन ! परिश्रम व्यर्थ गया, सबहैकि जूठोंकी जय नहीं. जिनकों उपरके लेखका शक होवे जैनागमआ-वश्यकसूत्रकी टीका अध्ययन प्रतिक्रमण देखलेवे, क्या ! दयानंद-जीकों लिखतेवख्त मान्द्रूमनही रहाकि-मैरी जाल प्रकटहो जायगी ! असलमें तो वैदिकमतके रिषिलोगही हिंसक थे-जिनोंने यज्ञकरनेका महाहिंसकमार्ग चलाया, और यज्ञोंका मांसप्रसाद खाया. कहिये ! भैरवके भाइ कौनबने ? जैन-या-वैदिक ? रामा-यणमें लिखाहैकि-वशिष्ठजीने विश्वामित्रकों उसकी सेनासमेत मांस खिलाया और-मदिरा पिलायी, भारद्वाजने भरतकों सेना-समेत मांसखिलाया, कहते हैं रामचंद्रजीनेभी-खाया. रामायणका बालकांड और अयोध्याकांड इसका गवाही है, इनबातोंसे पाया जाताहैकि-वैदिकमतवाले धर्मके रास्तेसे दूरहै, अगर कहाजायकि जैनके नेमनाथतीर्थकर जब विवाहनेकों गये थे स्त्रीके पक्षवालोंने मांसपकाया था फिर मांसका निषेध कैसे करसकतेहो ? (जवाब.)

एक नेमनाथ क्या जैनके कोईभी तीर्थकर या साधुने मांस नहीं खाया, जैनकेकानूनसें यह सबूतहोताहैकि-मांसमदिरा खानापिना धर्ममार्गनहीं. इसीलियेतो नेमनाथतीर्थकरने विवाह नहींकराया और पिछा लोट आये.

४३-सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३३ में दयानंदजी कल्पभाष्य पृष्ठ १६ का-नाम-लिखकर बताते हैं, जैनाचार्योंने छोटेसे पात्रमें ऊंट बुलाया, भला छोटेसे पात्रमें कभी ऊंट आसकताहै ? ( जवाब. )-कौन कहताहै कि-छोटेसे पात्रमें ऊंट बुलाया, कल्पभाष्यका प्रमाणदेते हैं तो उसके अक्षरेअक्षर क्यों नहीं लिखे ?-लिखे क्या ! जिनको घूठलेखलिखकर दूसरेको कलंकदेनाही मंजूरहो खुलेखुला बयान कैसे देसके ?-असलमें म-जमूनतो यहथा और दयानंदजीने उल्टा किया, जैनके आवश-कमूत्रके प्रतिक्रमणअध्ययनकी टीकामें बयानहैकि-एकनगरमें एकमकानपर गुरुशिष्यवगेरा साधुलोग आनकर ठहरे, पोछाडी पे-शाबकरनेकी जो जगहथी-उसकी-देखभालरखनेकेलिये गुरुने शिष्यको कहा हमेशा सायंकाले देखलियाकरकि-उसमें कोई जी-वजंतु न आनबैठे, तब शिष्य बोला रौजरौज क्या देखना ? क्या ! वहां ऊंटतो बैठाही नहीं, (उचेचतत्रसंत्युष्मा-निविष्टा:किं-विश्रुंखलाः)-गुरुनेकहा-जा-देखतो सही, शिष्य रात्रीकोजब देखनेगया तो क्या देखताहै ! वहां गुरुके वचनको प्रमाणीकरनेके लिये शासनदेवताने ऊंटका रूपबनाकर देखादिया. (उष्मरूपंत-तःकृत्वा-निविष्टातत्रदेवता,)-चेला डर खाकर पीछा आ-या-और-गुरुजीसें कहने लगा वहांतो ऊंट दिखताहै. गुरुने कहा

देख! मेरा कहना तेने नही माना. मकानकी सारसंभाल जरूर रखना चाहिये, आगेपर खयाल रखना. चेला हाथजोड कहनेलगा आपका कहना सत्यहै. आगेपर खयाल रखुगा. बस? तात्पर्य तो यहथा-और-दयानंदजीने देखिये! क्या लिखादिया?—कौन कहा-ताहै जैनाचार्योंने पात्रमें उंट बोलाया.

४४—सत्यार्थ पृष्ठ ४५? पंक्ति २ में—दयानंदजी लिखते है जैनियोंके एक दमसार साधुने क्रोधितहोकर उद्देगजनकसूत्रपढकर एकशहरमें आग लगादी-और-बह-महावीरतीर्थकरका अतिप्रिय था. बतलानाचाहिये इसकी दयाक्षमा कहागइ थी? जब महावीरके संगसेंभी उसका आत्मा पवित्र नहुवा तो अब महावीरके मरे पीछे उसके आश्रयसें जैनलोग कभी पवित्र नहोंगे, (जबाब.) जैनके एक दमसारनामके मुनि एक नगरमें गये जहां ऐसे लोग बसते थे जो-कोइभी साधु वहां जाय बिदूनतकलीफ दिये नरहे, दमसारमुनिने उनकों प्रथम-उपदेश दिया-और-धर्मियोंकों तकलीफदेना बुराहै समझाया-लेकिन! उनोंने तो फिरभी उनकेसाथ बैसाही बर्ताव किया जो पहिले किया करते थे. उक्तमुनिने देखा, ये लोग इसतरह नही समझेगें-उसीवख्तजो उद्देगजनकसूत्र-धर्ममें विघ्न पहुंचानेवालोंके चित्तकों उन्मत्तकरडालनेकी ताकतवाला था पढा, उसीदम नगरके लोग भ्रांतचित्तहोवेहुवे इधर उधर डोलनेलगे, अस्तीरमें जब उनमहाराजके पासआनकर अपराध क्षमा करवाया और आगेकों बैसा न करनेपर कबूलहुवे तब उक्तमुनिने अपनीविद्या पीछी समेट लिइ-अर्थात्-समुपस्थानसूत्र-पढाकि-जिससें उनलोगोंके चित्त पुनःस्थिर हुवे, देखिये! यहकाम उनोंने

किस इरादेपर किया था और दयानंदजीने उसकामतल किसरास्ते उतारा. व्यर्थद्वेषलाकर क्यों अपनी कमजोरी बतागये?—फिर आपलिखते हैं उससाधुका आत्मा महावीरकी संगतसें न सुधरा तो महावीरके मेरे पीछे उसकेआश्रयसें जैनलोग पवित्र कभी न होंगे. (जवाब.) कौनकहताहै उसका आत्मा नसुधरा?—उसका बिगड़ाही क्या था? धर्मकीरक्षापर ध्यानदेना मनुष्योंके लिये कौन कहेगा बिगाडकी सुरतहै?—महावीरतीर्थंकर जैसे सर्वज्ञ और निर्मोहीकी संगतपाकर योग्यपुरुष कैसे न सुधरेगें?—जरूर सुधरेगें, ऐसोंकी संगतसें न सुधरे तो क्या कामीक्रोधी ब्रह्मा-विष्णु-महेश बगेराकी--या-मांसाहारी वैदिकरिषियोंकी संगतसें सुधरेगें, कभी नहीं. आपके भर्तुहरिजीही कहगये हैंकि—ब्रह्माविष्णुमहेशकों जिसकामदेवने स्त्रीकेदास बनादिये उसकामकों मेरानमस्कारहै. महावीरतीर्थंकर निर्वाण होगये तो क्या हर्ज है उनके सत्यवचनोंका समूह तो निर्वाणनही हुवा. जैनलोग उनके आश्रयसें क्यों न पवित्रहोंगे? दयानंदजीके नाराजहोनेसें होता क्या है? दयानंदजीके मरेबाद उनकी एकहीपोथीकी संगतसे पंजाबीआर्यसमाजी लोग घासमांसकी लडाइलडकर फूटफजिताकर चुके हैं, दयानंदजीनेतो विधवाविवाह स्यात् मुंहसें नहीं निकाला होगा—हां! ग्यारहपत्तिकरनेकी बात नियोगद्वारा कही थी—लेकिन! चेलोंने क्या तामील किइ उसपर खयालकरते हैं—तो—उसमें विधवाविवाहकी ध्वनिहै, कह दयानंदीयोंकी बनाइ छोटीछोटी उर्दकिताबें देखते हैं—तो उनमें विधवाविवाहका दर्शावहै. दयानंदजीके पधारनेपर—थोडेही दिनहुवे कि—यहहालहै—तो—नमालूम आने

क्या होगा ?—दयानंदजी लिखते हैं उस दमसारमुनिकी दया क्षमा कहाँ गई थी ? ( जवाब. )—उन्होंने कौनसे जीवोंके गलेपर छूरी फेरी थी जो—उनकी दयाक्षमा चलीजाय. दयानंदजी द्वेषकेमारे चाहे सो लिखे, इनबातोंमें जैनोंका एकबालभी बांका नहीं होसकता, उसमुनिका इरादा लोभलालचका कब था ? उनका इरादा आगामीकालपर धर्मीपुरुषोंकेलिये—रक्षाकरनेका था,

४५—सत्यार्थ पृष्ठ ४५१ पंक्ति ५ में—दयानंदजी लिखते हैं एककोशा वेश्याने थालीमें सरसोंकी ढेरीलगा उसके उपर फूलोंमें ढकी हुई—सुई—खड़ीकर उसपर अच्छेप्रकार नाच किया. परंतु सुई पगमें गडने नपाइ और सरसोंकी ढेरी बिखरी नहीं. यह अतीव झूठ नहीं तो क्या है ? ( जवाब. ) काशीवेश्या—नाचघरमें सरसोंकी भरीथाली धरकर उसमें खड़ी सुई—और—सुईपर फूलरखकर इसतरहनाचींथीकि—जब नाचतीहुई उसथालीके पास आजातीथी—उछलकर उसफूलपर चारअंगुल उंचे—तीनचकर देतीहुई फौरननीचे उतरआतीथी. फूलकों सूइकों और सरसोंके दानोंकों स्पर्शतक न करतीथी. जाहिरातमें यही कहाजाताथाकि—देखो ? इसने सरसोंकी भरीथालीपर क्या उमदानाचकिया ?—दयानंदजी के पगजमें यहबात क्यों न समाई ?—और—अतीव झूठ इसमें क्या था ?—आजकलभी ऐसे नृत्यकार पुरुष—और स्त्री—मौजूदहैं जिसकी कलादेखकर बड़ेबड़े सभ्य चकित रहजाते हैं, नृत्यकलामें अन्य देशवाले भारत वासीयोंके नीचे हैं, अबभी—बड़ेबड़े शहरमें कथ्यकछोग बह नृत्यकला बतलातेहैं जिसकों देखकर अकलकामनही करती. काशीवेश्याने अपने शरीरकों ऐसीतालीम दिई थी जिससे

वह सर्वोत्तमकला बतलासकती थी. इसमें दयानंदजी अतीव  
 भूढ़ समझे तो उनकी मरजीकीमियें बात है. बुद्धिमानलोग भूढ़ नहीं  
 कहसकते,—

४६-सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३१ में दयानंदजी लिखते हैं,  
 जैनके तीर्थंकर-महावीर<sup>न</sup> में स्वर्गकों गया. भला! शरीरके काटनेमें  
 ला. और वह सर्प<sup>न</sup> सीने नहींदेखा, सिवाय इंद्रजालके दूसरीबात  
 दूध निकलना<sup>वि</sup> काटनेवाला सर्प तो स्वर्गमें गया-और-महात्माश्री-  
 नहीं. उसको<sup>न</sup> तीसरेनरककों गये, यह कितनी मिथ्या बात है?  
 कृष्णआदि तीर्थंकरके शरीरमें दूध नहीं निकला, किंतु वह रु-  
 (जवाब.) महा<sup>मांसाह</sup> जैसे पानीखीकपमीनेमें खुशबू और शरि-  
 धिरही सफेदरंगका<sup>जी</sup> थी. कहगये हैं. . . ताज्जब है, स-  
 केबदबु-होती है, वैसे रुधिरकीरंगतमें फेकेहानों-केथानमें<sup>का</sup> १०.  
 जब महावीरतीर्थंकरकों काटा तब उन्होंने उसे ज्ञान सुनाया. स-  
 र्पकों जातिस्मर्णज्ञान हुवा और जानगयाकि-में-पहिलेभवमें गुस्सा  
 खोर शरुश था-जिसमें सर्प बनाहूं. अब गुस्साछोडदेना चाहिये.  
 ऐसा सौचकर उसने जीवोंकों काटना खानाछोडदिया. धर्मक्रि-  
 याके प्रभावसे वह आठवेस्वर्गमें दाखिल हुवा, कहिये! इसमें क्या  
 असंभव बातथी!-क्या! महात्माओंके उपदेशसे पापीलोग धर्मीनहीं  
 बनसकते!-अब महात्माश्रीकृष्णकी बात सुनलो-वें-नरक किस  
 कामकेकरनेसे गये. जैनशास्त्रोंके लेखसे सबूत है कि-कृष्ण<sup>का</sup>  
 अपनीजीर्दगीमें ( ३६० ) संग्राम किये, पीछलीडमरमें<sup>२</sup> . .  
 द्वारका जलउठीथी-बनमें चलेगये और वहां भी जलके  
 प्यासे मरगये, तप करना या दीक्षितहोना उनसे नहीं ब-

नसका, चाहे राजाहो-या-रंकहो-पापसें नरक और पुन्य-सेस्वर्ग-सीधीमडकहै, इसमें जैनोंने क्या मिथ्या कहा, ?-अगर वे तपस्या करते तो पापक्षयहोजाता. यह उनकेसेवकोंके निश्चयकी बातहैकि-(सामर्थको नही दोष गोसाइ)-जैनलोग कृष्णजीकों इ-श्वरावतार नही किंतु एकराजाहुवे मानतेहै, जब नरकगतिभोगकर फिर मनुष्यजन्ममें आयगें और तपकरेंगे तभीउनका निर्वाणहोगा,

४७-सत्यार्थ पृष्ठ ४४० पंक्ति २८ में-दयानंदजी लिखते है. जैनलोग-"त्रिपृष्ठ-द्विपृष्ठ-स्वयंभू-पुरुषोत्तम-पुरुषसिंह-पुरुषपुंडरी-क-दत्त-लक्ष्मण-और-कृष्ण-ये-नववासुदेव-तथा-अश्वग्रीव-तार-क-मोदक-मधु-निशुंभ-बली-प्रह्लाद-रावण-और-जरासिंधु-ये-नवप्रतिवासुदेव-भी-नरकगये और रिषभदेवसें लेकर महावीर प-र्यंत चौइसतीर्थकर मोक्षकों प्राप्तहुवा मानते है, भला ! इनके साधु गृहस्थ-और-तीर्थकर-जिनमें बहोतसें वेश्यागामी-परस्त्रीगामी और चोर आदि-सब-स्वर्ग और मुक्तिकों गये-और श्रीकृष्णआदिमहा-धार्मिकमहात्मा सब नरककोंगये यह कितनी बड़ी बुरी बातहै"?-(जवाब.)उपरलिखे नववासुदेव-और-नवप्रतिवासुदेव राजोंनें आप-समें लडाइये लडकर हजारोंह लाखांह मनुष्योंको मारढाले-और वासुदेवोंने प्रतिवासुदेवोंको मारे, तपकरनेनहीपाये, इसीलिये वे नरककों गये, इसमें दयानंदजीकों क्या बुरालगा ?-क्या ! पापकर्म सेंभी-कभी मोक्ष होसकताहै ?-दयानंदजी जरा पक्षपातरूपजामेसें बहार होकर बातकरते तो आनंद आता. दयानंदजी कृष्णजीकों महाधार्मिक और महात्मा समझतेये तो उनकी मूर्त्तिकों देखकर नाकमें बल क्यों ढालते थे ?-और उनके चेले समाजीलोग-महा-



त्माकृष्णजीकी मूर्तिदेखकर क्यों हंसी उड़ाते है !-क्या ! जिसको महात्मा समझना और उसकी मूर्तिसँ द्वेषरखना यहभी कोई न्या-यहै. रहे जैनके चौइसतीर्थकर सो उनोंने राज्यछोडकर दीक्षा लिइ, बडे बडे तप किये, परिसहदेनेवालोंपरभी रहेम किइ. कइदु-ष्टोंने उनकेशरीरकों हथियार और आगसँ काटाजलाया, लेकिन! वें समाधिसँ नही गिरे, है कोई ! ऐसा योगीराज ! जिनके कानोंमें खीले ठोकदियेजाय और ध्यानसँ नडिगे ? देवांगना नाटक दि-खलावे और मोहित नहो ? दयानंदजी ! आपको मालूमहुवा ! जैनतीर्थकरोंने किसतरह धर्मपालनकिया और मुक्तिपाइ ? जो श-रुश निस्पृहहोकर तपकरेगा मुक्ति क्यों नहोगी ? आपके ब्रह्मा-विष्णुमहेश-रावण-और-जरासिंधुवगेरा ऐसाकरतेतो उनकोंभी मोक्ष मिलता, कहिये ! हठवादी कौन ठहरे ? जैन-या-आपलोग ? जैनके तीर्थकरोंकों कोई वेश्यागामी सबुन करदेवें तो हम बेशक ! कहदेयगें वें मुक्तिके अधिकारी नही थे. अगर कोई आर्यसमाजी जैनकेतीर्थकरोंकों वेश्यागामी प्रमाणकेशाथ सबूतकरदे तो हम (५००) रुपये इनाम दिलायगें रहे जैनमुनि-सो-उनकेनामलिख-बतलाना चाहियेथा कौन वेश्या-या-परस्त्रीगामी थे ? दयानंदजी अगर सच्चे थे तो पत्तेवार नाम लिखते, गुम्मानामके लेख लिखना नामदोंका कामहै, जो साधुबनकर फिर गृहस्थहोजाय कौन उसे मुनि कहताहै ? कामक्रोधके होतहुवे कौन कहताहै मुक्ति मिले, दयानंदजी जैनके सभी तीर्थकर और साधुओंकों वेश्या-या-पर-स्त्रीगामी लिख दे-तो-उससँ होता क्याहै ? विना प्रमाण किसीका लेख मान्य नही होसकता.

४८-सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३२ में दयानंदजी लिखते हैं जैनके महावीरतीर्थंकरके पगपर खीर पकाइ और पग न जले, यह झूठ है, (जवाब.) महावीरतीर्थंकर जब बनमें ध्यानारूढ खड़े थे, गो-बालियोंने उनके दोनोंपाँवोंके बीच आगजलाकर खीर पकाइ, जिससे उनके पैरोंको तकलीफ जरूरहुइ, लेकिन ! बिल्कुल दग्ध होकर खाख इसलिये नहींहुवेकि-बहुतकालतक आग नहीं ज-लागइ थी. दयानंदजीका इरादा यहथाकि-बिल्कुल दग्ध क्यों न-होगये?-(जवाब.) बिल्कुल दग्धतो जब होते बहुतकालतक आग जलाइ जाती,

४९-सत्यार्थ पृष्ठ ४०७ पंक्ति २५ में-दयानंदजी लिखते हैं कि-अबजो बौध और जैनी लोग सप्तभंगी और स्याद्वाद मानते हैं सो यह है, एसाकहकर विनासमझे सप्तभंगीका बयान भाषामें लिखा है, (जवाब.) बड़ेअपशोषकीबात है कि-जिसन्यायको आप नसमझना और उसकेखंडनकरनेको तत्परहो जाना, दयानंदजी तो क्या-लेकिन ! उनकेबड़े व्यासजी और शंकराचार्यभी इस न्यायको विनासमजे खंडनकर गये हैं.-लेकिन ! उनको तारीफ़ जबहोतीकि-समझकर खंडनकरते. व्यासजी ब्रह्मसूत्रमें लिखते हैं कि-(नैकस्मिन्नसंभवात्)-अर्थात् एकवस्तुमें अनेकविरोधी धर्मोंका समावेश नहींहोसकता. जैसे शीतआतप-और-सर्पनकुल समानाधिकरणहोकर नहींठहरसकता वैसे सप्तभंगीभी एकवस्तुमें नहीं ठहरसकता. (जवाब.)-व्यासजी जो हेतु बतलाते हैं सो ग-लत है, सबकि-भिन्नभिन्न अपेक्षासे एकही वस्तुमें भिन्नभिन्न धर्म भी समावेश होसकते हैं, यह जो कहाजाता है कि-ईश्वर-साकारभी

है और निराकारभी है, निर्गुणभी है समुणभी है-एकभी है अनेक भी है, कहिये विरोधिधर्म एकवस्तुमें नहीं रहमकते थे-तो-येये-बाते क्यों मानी गई? इसी लिये कहाजाताहैकि-व्यासजी और शंकराचार्यजी जैनोंके स्याद्वादन्यायकों मननभी करते जाते थे. और अज्ञानतासे खंडनभी करते थे. पक्षपातरूप चक्षुमें उन्होने अपने नेत्रोंसे नहीं दृष्टाये थे, रहे दयानंदजी! सो-उनकों यहभी मालूमनहींकि-बौधलोग-स्याद्वादन्यायकों मान्यरखते हैं-या-नहीं?-असलमें बौधके ग्रंथ दयानंदजीने नहीं देखे, देखे होतेतो ऐसा कभी नहीं लिखते, बौधलोग तो स्याद्वादसप्तभंगीके शत्रुहैं, उनके शास्त्रोंमें तो उसका खंडनकिया हुआ मौजूदहै, दयानंदजीने इतनाभी नहीं सोचाकि-जो लोग पदार्थकों क्षणभंगुर मानते हैं वे स्याद्वाद न्यायकों क्योंकर मानने लगे थे?

५०-शंकरस्वामीकों कितनेक लोगकहते हैं सर्वज्ञ और अद्वैतवादी थे, लेकिन!-यहदोनोंवाते गलतहैं, यदि सर्वज्ञ थे-तो-मंडनमिश्रकी स्त्री-सरसवाणीके सामने कामचर्चामें क्यों हारगये?-और जवाबदेनेकेलिये छमहिनेकी मुद्दन क्यों मागी?-रहा उनका अद्वैतवाद-सो उसकाभी हाल सुनलिजिये!-वे-कहतेथे सबदुनिया ब्रह्मरूपहै, और जो नाना प्रकारके पंच दिशाइदेते हैं, सब मायाजन्यहै, इसपर यहसवाल पैदाहोताहैकि-माया-सत्यरूपहै-या-असत्यरूप?-अगर सत्यरूपहै तो दोतत्व सिद्धहुवे-एक ब्रह्म दूसरीमाया, अगर असत्यरूपहै-तो-उससे नानाप्रकारके पंचकी पैदाश कैसे हुई?-जिमकों माता कहना उसकों बंध्याभी कहना यह कौन बुद्धिमान मनन करसकेगा?-इसलिये अद्वैतवाद झूठाहै,

झूठेवादकों बयान करनेवालोंकी क्या ताकत है कि—स्याद्वादन्यायकों खंडन कर सकें?—जिस शंकराचार्यकी तारीफ दयानंदजी बड़े जोरसे सत्यार्थप्रकाशमें कर गये देखिये ! उन्होंने वेदकी हिंसाकों अहिंसा फरमायी, और धर्ममार्ग कहा, लेकिन ! कोई प्रमाण नहीं दे सके, पक्षपातमें पडकर यह भी कह गये कि—वेदके प्रतिकूल सबपाखंड है, धन्य महाराज ! खूब विद्या सीखे थे, इशाइ और मुसल्मान भी तो कहते हैं बाइबल और कुरानके शिवाय सबपाखंड है. शंकराचार्य—कुमारपालराजाके वख्तमें हुबे सबूत होते हैं, वें-बौधोंके साथ मतके बारेमें लड़े, दयानंदजी कहते हैं उन्होंने जैनकों भी हराये लेकिन ! महाशय ! जैसे आपने दिग्विजय किया वैसे उन्होंने भी किया होगा. कुछ वाममार्गपर भी शंकराचार्यकी निगाह थी. उन्होंने श्रीचक्रकी स्थापना किई, श्रीचक्र वाममार्गीयोंका मुख्यदेव है. शंकरदिग्विजयग्रंथके (६५) में अध्यायमें उसकी बड़ी कीर्ति गाई है, शृंगेरी और द्वारिकाशेराके मठमें श्रीचक्रकी स्थापना है, हम नहीं कह सकते कि—शंकराचार्यजीने—सप्तभंगीन्याय—समझा था, जैसे व्यासजीके कहा दिया शंकराचार्यभी उसीमडकचले, सायनाचार्य—माधवाचार्य—विद्यारण्य—और—दयानंदजीभी उसीरास्ते चलकर सप्तभंगीकों झूठ बतला गये, अच्छा ! अब हम सप्तभंगी न्यायकों नीचे लिख बतलाते हैं जिसकी इच्छा हो समझकर खंडन करे, तारीफ उनकी किई जायगी जो समझकर खंडन करेंगे,

५१—~~स्याद्वाद~~ स्याद्वादन्याय क्या कहता है सुनिये !

( अनुष्टुप्वृत्तं. )

सर्वं अस्ति स्वरूपेण—पररूपेण नास्ति च,

अन्यथा सर्वभावानां—एकत्वं संप्रसज्यते,

१

( शार्दूलविक्रीडितम्. f )

या प्रश्नाद्विधिपर्युदासमिदया-बादश्च्युतैना सप्तधा,  
 घर्मघर्ममपेक्ष्य वाक्यरचना-नैकात्मके वरैस्तुनि,  
 निर्दोषा निरदेशि देव ! भवता-सासप्तभंगो देया,  
 जल्पन् जल्परणांगणे विजयते-वादा विपक्षं क्षणात्, २

तत्र च स्यात् कथंचित् स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेणास्त्येव सर्वं  
 घटादिद्रव्यं, न पुनः परद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण, ( तथाहि )-घटो द्र-  
 व्यतःपाथित्वरूपेण अस्ति, नास्ति जलादिरूपेण, क्षेत्रतःपाटलि-  
 पुत्रकत्वेन-नास्ति कान्यकुब्जादित्वेन, कालतः शैशिरत्वेन-नास्ति  
 वासंतिकत्वेन, भावतो रक्तत्वेन-नास्ति पीतत्वेन, एवं सर्वं अन्य-  
 दपि ज्ञातव्यं-स्वद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया कथंचिदास्त-परद्रव्यादिच  
 तुष्टयापेक्षा नास्ति च घटइतिउल्लेखः-अन्यथा इतररूपापत्त्या  
 स्वरूपहानिप्रमंगः इति-अवधारणं चात्र भंगेनाभिमतार्थव्यावृत्त्यर्थं  
 मुपात्तं-अन्यथा अनभिहिततुल्यतैवास्य-वाक्यस्य-प्रसज्येत, प्रति-  
 नियतस्वार्थानभिधानात्-(तदुक्तं)-वाक्येवधारणं तावदनिष्ठार्थनि-  
 वृत्तये-कर्तव्यमन्यथानुक्तसमत्वात् तस्य कुत्रचित्-(१)-तथाप्यस्त्येव  
 कुंभइति-एतावन्मात्रोपादाने-कुंभाद्यस्तित्वेनापि सर्वप्रकारेणास्तित्व  
 प्राप्तेः प्रतिनियतस्वरूपानुपपत्तिः स्यात्-तत्प्रातिपत्तये स्यादिति श-  
 ब्दः प्रयुज्यते-स्यात्कथंचित् स्वद्रव्यादिभिरेवायमस्ति-न परद्रव्या-  
 दिभिरपि-इत्यर्थः, यत्रापि चासौ-न प्रयुज्यते-तत्रापि व्यवच्छेदफ-  
 लैवकारवत् बुद्धिमग्निः-प्रतीयते एव,-सोऽप्रयुक्तोऽपि वा तत्रैः-सर्वथा  
 त्प्रतीयते-यथैवकारो योगादिव्यवच्छेदप्रयोजनः, २, ततएवकार-  
 स्यात्कारयोः सप्तस्वापेभंगेषु ग्रहणं कर्तव्यं इति प्रथमो भंगः-(अ-

यद्वितीयभंगः प्रदर्श्यते, स्यान्नास्ति एव,—घटादिद्रव्यं—स्वद्रव्यादिभि-  
 रिब—परद्रव्यादिभिरपि—वस्तुनो सत्वानिष्ठौ—हि—प्रतिनियतस्वरूपा-  
 भावात् वस्तुप्रतिनियति—न स्यात्—न चास्तित्वैकांतवादिभिः अत्र  
 नास्तित्वमसिद्धमिति वक्तव्यं कथंचिद्वस्तुनि तस्य युक्तिसिद्धत्वात्  
 न हि कचिदनित्यत्वादौ सास्ये सत्वादिसाधनस्यास्तित्वं विपक्षे ना-  
 स्तित्वमंतरेणोपपन्नं—तस्य साधनत्वाभावप्रसंगात्—तस्मात् वस्तुनो-  
 स्तित्वं नास्तित्वेनाविन ूतं—नास्तित्वंच तेनेति—विवक्षावशाच्चानयोः  
 प्रधानोपसर्जनभावः—एवमुत्तरभंगेषूपिज्ञेयं—अर्पितानर्पितसिद्धेरिति वा  
 चकवचनादिति द्वितीयभंगः—यह वर्णन यहां भगवतौ सूत्रकीटोका\*—  
 नयप्रदीप—और—स्याद्वादमंजरीग्रंथके आधारसें लिखा गया है, जि-  
 नकों शंसायहो उनग्रंथोंको देखलेवे. इसकीभाषा यहां इसलिये  
 नहीलिखी कि—जो—पुरातार्किकहोंगा—वही इसन्यायका समझेगा,  
 फिर क्यों लंबान करना!—निदान! स्याद्वादन्याय किसीसें खंडन  
 नहीहोसकता. सबबाकि—वह—सच्चा है, व्यासजी—शंकरस्वामी—या—द-  
 यानंदजीवगेरा चाहेसो कहे—जैनीकों उममें कोई क्षति नही. जि-  
 सअपेक्षा वस्तु अस्तिरूपहै उसीअपेक्षा वह नास्तिरूपहो ऐसा जै-  
 नलोग कब फरमाते है? हां! दूसरी वस्तूका इसमें असद्भाव  
 बतलाकर नास्तित्वधर्म सबूत करते है, जैसे एकपुरुष समझो अ-  
 पने बेटेकी अपेक्षा बापहै लेकिन! अपनेबापको अपेक्षासेंतो वह  
 बेटाही है. कहिये! एकहीपुरुषमें अपेक्षा भिन्नसें दो विरोधीधर्म  
 रहे गये या—नहीं?—ऐसेही गुरु और शिष्य—स्वामी और सेवक  
 जिसपर उतारना चाहो उतरसकेगा. नही मालूम! व्यासजी—शं-

करस्वामी-और दयानंदजी-इससे श्री

पनी अज्ञानता जाहिरकर गये,

५२-सत्यार्थपृष्ठ ४४३ जो-तीरने आँके लक्षणबतलाये है बिल्कुल दजीने जो श्वेतांबर दगंबरके साथ दयानंदजी लिखते हैं "दगंबरोंका गलत है, ४४४ पृष्ठ ५२-पंक्ति २-में पढ़ें कि-दिगंबरलोग-स्त्रीका-संसर्ग श्वेतांबरोंके शाय इतनाही भेद है कि दिवातोंसे मोक्षको प्राप्त होते हैं, नहींकरते और श्वेतांबरकरते हैं, इत्येना सब भारी जुर्म है, दयानंद (जवाब) शास्त्रोंके अर्थको उलटा करके अर्थको बदल देना, स्त्री-अगर जीकी आदत थी कि-जगह जगह अनुमति मुक्तिको हासिलकर अच्छे प्रकार धर्मपालनकरे तो उसी प्रकार कहते हैं चाहे जितनी सके ऐसा श्वेतांबर मानते हैं-और-दिगंबरोंके धर्मक्रिया स्त्री-करे उसी भवमें मुक्ति हासिल न कर सकेंगे, दयानंद जीने इस बातको न समझकर ऐसा अनर्थ माग कि-कुछ कहानही जाता. मुनासिब था सच्चा बयान करते, लेकिन ! क्या कहा जाय ! दयानंद जीने उस घड़ी जन्म ही नहीं लिया था जो मच्चाल बालिखे, श्वेतांबर दिगंबरकी भिन्नता-नामका विषय इस ग्रंथके प्रथमतरंगमें लिखे चूके हैं, उसको पढ़कर सब हाल मालूम कर लें, एक शिवभूतिमुनिने सनातन जैन श्वेतांबर आमनायमें फटकर विक्रमसंवत् (१३९) में दिगंबरमत निकाला, जैसे आपलोग बेदके सच्चे अर्थसे बदले वैसे वे जैनके आगमोंसे बदले जैसे आपलोग वैदिक नहीं वैदिक भासते हैं वैसे दिगंबरलोग जैन नहीं जैन भासते हैं, उनोंने जो नंगी मूर्ति माननेकी प्रथा निकाली जैन आगमसे विरुद्ध है, दिल्ली और मध्यखंड बंगोरामें जो इनकी रथयात्रा अन्य लोगोंद्वारा अटकाई जाती है इसका यही

सबवक्त्रि-नंगीमूर्ति मानना फिजूलहै, देखिये ! गुजरात-कच्छ-दखन-पूरवमारवाड-और-पंजाबमें जहांजहां श्वेतांबरलोग शींगारी हुइमूर्ति रथयात्रामें निकालतेहैं क्यों कोइनही अटकाता ?-यह दिगंबरोंकी अज्ञानत का नमुनाहै कि-जैनकी अबनतिकार रहेहै, वेही लोग अपने शास्त्रोंको गुप्तरखकर-जनकेनामको कमजोरी दिलातेहैं, शास्त्रछप कर अधिक लोगोंको दियेजाय इसमें श्वेतांबर लोग फायदा समझतेहैं, देखिये ! मुर्शिदाबादनिवासी रायबहादूर धनपतर्निजीने मूलसूत्रभी छपवाकर शहरशहरमें भेजदियेहैं, यह दिगंबरोंकी हाठवादहै कि-संशास्त्र छपवाना ठीकनहीं. इनके कुआचरणोंसे दयानंदनी या औरकोइलोग जैनको कलंकदेनाचाहे तां उनकी भूल है,

पृ३-सत्यार्थपृष्ठ १४ पर-दयानंदजीने-जो-हुंढियेलोग मुंहपर पटी बांधरखतेहैं उसपर लंबी चौड़ी वक्तृतादेकर जैनधर्मको कलंकितकरना चाहा था, भी जैनकेशाथ कुछसंबंधनहीरखता. किसी जैनआगममें मुंहपर पटीबांधनानहींलिखा, जैसेदिगंबर जेनाभास वैसे हुंढियेभी जेनाभासहै, जब जैनशास्त्रोंके लेखसे दिगंबर और हुंढिये जैनही नहीं तो-उनके कुआचरणोंसे जैनको क्या ?-दिगंबरोंने द्वादशांगसूत्र उद्धथापन किये-और हुंढियोंने बत्तीससूत्रके शिवाय दूसरे सबसूत्र उद्धथापन किये, कहिये ! इनकेवचनोंपर क्या परतीत लाइजाय ?-मलीनरहना कोई जैनशास्त्र नहीं फरमाया हुंढियोंकी मलीनता जहानभरमें मशहूरहै, अगर मलीनरहना तोर्थकरोंको मजूरहोतातो-वै-कपड़ोंको प्रक्षालनकरना क्यों फरमाते ? चाहे साधुहो-या-गृहस्थ-मलीनरहना किसीको मुनासिबनहीं, दयानंद



जी इसी पृष्ठपंक्ति ४में-लिखते हैं कि-जैनोंका केशलुंचन सर्वत्रप्रसिद्ध है, अब कहिये ! जैन लोग ! तुमारा दयाधर्म कहाँ रहा ? चाहे अपने हाथसे लुंचन करे-या उसका गुरु करे, परंतु कितना बड़ा कष्ट उस जीवको होता होगा ? जीवको कष्ट देना ही हिंसा कहती है, (जवाब.)-साधु लोग-या-गृहस्थ-जो धर्मपालनके लिये तपकरत हैं जीवको कष्ट तो होता ही है, वे कन ! इस कामको अगर हिंसा मानी जाय तो फिर जितने धर्म शास्त्र सभी व्यर्थ सिद्ध हो जायगे, यह दयानंदजी की ही अज्ञानता का नमूना है कि-वे-धर्मपालनके लिये तपकरना भी हिंसामें सामील करते हैं, जैनके कल्पसूत्र वगैरामें खुले खुला वयान है कि-जिमकी ताकत हो वह केशोंका लुंचन करे, जिमकी ताकत न हो-रोगी हो-बालक-या वृद्ध हो-उनके लिये हुकम है कि-उसेसें या कतरनीसें केशोंको साफ करावे. जैसी शक्ति हो वैसा करे कोई हर्ज की बात नहीं. दयानंद जीके कुतकेमें जैनोंको कोई क्षति नहीं पहुंच सकती, दयानंदजी प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४०१ की अंतिम पंक्तिसें आगे लिखते हैं दुंदिये लोगोंके केशोंमें जूँआ पड़ जाय तो भी नहीं निकालते-इजामत नहीं बनवाते-जब उनका साधु आता है जैनी लोग उसकी डाढ़ी मूँछ नोच लेते हैं, शरीरको कंपावे तो उसको कच्चा साधु समझते हैं. (जवाब.) जब हम पहिले भी लिख चुके हैं कि-जैन शास्त्रोंके लेखसें दुंदियापंथी जैन नहीं किंतु जैनके घातक हैं तो फिर उनके कुआचरणोंसें जैनको क्या गरज रही !-ज्यादे दरयाफत करना चाहते हो तो उन लोगोंसें पुछो,

५४-जैन लोग थालीके आकार गोल-और सपाट-जो-ठाख-योजन लंबा चौड़ा जंबूद्वीप मानते हैं उसमें दो सूर्य और दो चंद्र पृथक्

पृथक् घांणीके बैलकीतरह फिरते कहते हैं, उस जंबूद्वीपके दखन-कीतर्फ भारतवर्षक्षेत्र जिसमेंहमतुम रहते हैं बहुतछोटा हिस्साहै, जंबूद्वीपकी चौतर्फ दोलाखयोजनका बलयाकार लवणसमुद्र मानते हैं. जिसको हमतुम महासागर बोलते हैं उसलवणसमुद्रका एकतर्फका कनारा है, अगर कोई सिधादखन दिशाकों महासागरमें जहाजलेकर जायगा फिरपिछा न लौटंगा, सबबकि दोलाख योजनजाकर पीछे चले आवे ऐसे जहाज आजकल कोइनही बनासकता, बड़ेबड़े विज्ञानी कबूलकर चूके हैंकि-समुद्रमें सिधादखनको जहाज चलावे तो जल तरंगोंकेमारे आगे जानही सकते, पीछा उत्तरकनारेकोही लौटते चले आयेंगे, बस ! ऐसे अगम्यलवणसमुद्रके आगे-चोफेरबलयाकार चार लाखयोजनका धातुकी खंड जैन लोग मानतेहैं, लवणसमुद्रमें चारसूर्य और चारचंद्र-तथा धातुकी खंडमें बारहसूर्य बारहचंद्र मानते हैं, इसकी चौफेर आठलाखयोजनका कालोदधिसमुद्र इसमें बेंतालीससूर्य-बेंतालीसचंद्र-और इस कालोदधिसमुद्रको चौतर्फ पुष्करार्द्ध द्वीप जिसमें बहत्तरसूर्य बहत्तरचंद्र-मानते हैं इसतरह इतनेद्वीपसमुद्रोंमें मिलाकर जैनलोगजो (१३२) सूर्य और इतनेही चंद्र आकाशमें अलगअलग फिरतेहुवे कहते हैं, इसपर दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५२ पंक्ति २३ में लिखते हैंकि-अब सुनिये ! भूगोलखगोलके जाननेवालो !-इतने सूर्यचंद्र जैनलोग मानते हैं, अगर आपलोगोंको वेदमतानुयायी सूर्यसिद्धांत नमिलता तो जैनोंके महाअंधेरमें पड़े रहते, (जवाब.) देखिये ! दयानंदजीकी अज्ञानताका नमुना ! जैनीलोग जितने द्वीपसमुद्रोंमें जितनेसूर्यचंद्र मानते हैं उनको एकही भारतवर्षका

धोखा देकर आप कैसे सच बनते हैं? तनक सोचना तो था कि-  
 जैनलोग ( १.३२ ) सूर्यचंद्र एकीलेभारतवर्षमें कब कहते हैं?—सूर्य  
 सिद्धांतग्रंथ जैनोके सूर्यप्रज्ञप्ति—चंद्रप्रज्ञप्ति—ज्योतिष्करंडक—आरं-  
 भसिद्धि—वगेराग्रंथोके सामने ऐसा है—जैसा सूर्यके सामने दीपक-  
 का उजाला, उसकी क्या सामर्थ्य है कि—उक्तग्रंथकी सच्चाईके सा-  
 मने बैठसके?—जैसा वेदोंकी सच्चाईका घमंड दयानंदजीको था—वै-  
 साही सूर्यसिद्धांतका समजलेना चाहिये, अगर कोई ज्योतिष वि-  
 द्याकापाठी जैनके ज्योतिषग्रंथोंको देखेगा स्वतःमालूमहोजायगा.  
 दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४५३ पंक्ति १७ में—लिखते हैं अब देखो  
 भाइ! इमभूगे लमें ( १.३२ ) सूर्यचंद्र जैनियोंके घरपर तपतेहोंगे,  
 भला ! जो तपतेहोंगे तो वे—कैसे जीते होंगे? और रातकोभी जै-  
 नीलोग ठंडकेमारे जकडजातेहोंगे ( जवाब. ) जैनोकेघर इतने चंद्र  
 सूर्य जब तपें कि—वे—एकजगहपर इतने मानतेहोवे, वे—तो—उपर  
 लिखे मुआफिक लवणसमुद्र—धातुकीखंड—कालोदधिसमुद्र—और—पु-  
 ष्करार्द्धद्रोप—जो—लाखहां योजनके हैं उनमें इतने चंद्रसूर्य मानते  
 हैं. फिर दयानंदजी क्यों चिल्ला गये, क्या ! वैदिक  
 मतके सन्यासीयोका यही लक्षण है कि—छलकपटद्वारा खडनघंडन  
 लिखना ? दयानंदजीके उपर उनके निराकारइश्वरकी ऐसी घोर  
 कृपाहुइथी कि—वे—अपशब्द लिखनेमेंही बड़ादूरी समझते थे, जैसे  
 कोई औरत कि—नीसें लड़ाइलड़े तो शिवाय गालियोंके और कुच्छ  
 नहीं बोलसकती, सत्यार्थप्रकाशमें जहां जहां मतमतांतरोंका बनेन  
 लिखा शिवाय अपशब्द और हंसी उडानेके और कुच्छ लिख  
 नहींसके हैं, लेकिन! याद रहे! यहकाम विद्वानोंका नहीं, भांड

और धूर्तोंका है, जैनोंके घर ( १३२ ) क्या-उससें भी-ज्यादे ज्ञान-मूर्ध तपरहे है, वें-आपके अज्ञान अंधकारमें कभी नहीं गिरसकते, दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५३ पंक्ति २३ में एक और गप्प धरगये हैंकि-सुमेरु बिना हिमालयके दूसराकोइनही, ( जवाब. ) किसी ज्योतिषग्रंथमें-यहनही लिखाकि-हिमालय-सुमेरुहै, न किसी धर्मशास्त्रमें भी हिमालयको सुमेरु बतलाया. दयानंदजीने नयीरो-शनीवालोंनेकी संगतसें खूब मनमानी विद्या सीखलीइथी. लेकिन ! यादरहे-समाजीयोंके शिवाय दूसरा कोई इसपर भ्रमल नहीं करसकता.

५५-दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५६ पंक्ति २३ में लिखते है, जैनलोग कुरुक्षेत्रमें-चौराशी ( ८४ ) हजार नदी मातनेहै, भला ! कुरुक्षेत्र बहुतछोटादेश-उसको न देखकर एकमिथ्याबात लिखनेमें इनको लज्जाभी न आई ! ( जवाब. ) जैनलोग जो देवगुरु उत्तरकुरुक्षेत्र-कहते है इसभारतवर्षका कुरुक्षेत्र नहींकहते, किंतु उपरलिखे जंबूद्वीप-धातुकीखंड-और पुष्करार्द्धद्वीपके कुरुक्षेत्रकी बात है, जिनको संदेहहो जंबूद्वीप प्रज्ञतिशास्त्र देखलो, जिसकुरुक्षेत्रको दयानंदजी बयान करते है क्या ! और कोई नहींजानता ? पानी पतकरनालवगेरागांवोंके पास जो कुरुक्षेत्रहै कुरुराजाके जमानेसें बसाहुवाहै, जैनलोग इसकुरुक्षेत्रमें चौरासीहजार नदी कब कहते ! ? दयानंदजी लिखते है जैनोको ऐसीमिथ्याबात लिखते लज्जा भी नहीं आई ! ( जवाब. )-लज्जा और शर्मतो जब आवेकि-भूठ बातकाबयान किधीजाय ? सौचोतो ! आपको इतनीभी लज्जानहीं आईकि-वैं-बिनासमझे क्या लिखताहूं ? वेदोंमें इंद्रकी तारीफ,

सूर्यकी इज्जत, - वायुवगेरा तत्वोंकी चर्चा, तरहतरहके जानवरोंको गलाघोटकर मारना - अश्वमेध - गौमेध - बलिदान वगेराका करना और - जहाँ राजाको अभिषेककरनेकी बात आइ मदिरापानकरना फरमाया, ऐसे अज्ञानकेखजानेको ईश्वरप्रणीतकहना यही लज्जाका कारणहै, दयानंदजीने सोचाकि - अगर मैं प्राचीनअर्थको कबूल-खूगातो जैन बौधवगेराओंकी तर्कतापसे बचनामुश्किलहोगा. दयानंदजीने ( ५९ ) वर्षकी उमरतक जैनग्रंथोंका खोज लगाया दुवारा - सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमें - जैनका बर्ननकिया, लेकिन ! फिरभी यथार्थभेद नहीपाया, प्रथम सत्यार्थप्रकाशमें जो नाम जैनग्रंथोंके लिखे थे नवीनसत्यार्थप्रकाशकी भूमिकामें बदलने पड़े, कहिये ! जिनके भ्रमकी निवृत्ति जिंदगीतक नहीहुइथी उन-केवचनोंकी कहांतक प्रमाणता किइजाय !

५६ - सत्यार्थ पृष्ठ ४५६ पंक्ति १५ में दयानंदजी लिखनेहै जंबूद्वीप - लवणसमुद्र - धातुकीखंड - कालोदधि - और - पुष्करार्द्धद्वीप वगेरा - जो - जैनलोग लाखहां योजनके मानतेहै इस पनरांह हजारपरिधिवाले भूगोलमें क्योंकर समासकतेहै ? इसलिये यहबात केवलमिथ्याहै, ( जवाब. ) जैनलोग कब उनद्वीपसमुद्रोंको इसभूगोलमें मानतेहै ? - वृथा शंखनाद क्यों किया ? - क्यों नयीरोशनीवालोंकी झूठीदलीलपर कायम हुवे ? - किसवेदमें इसभूगोलको पनरांह हजारकी परिधिवाला कहाहै ? - जब अमरिकाकी तलाश नही हुइथी अंग्रेजलोग कितनी जगहको सारीदुनिया बतलाते थे ? - जिनके नित्यनये सिद्धांत बदलते रहे उनकेकहवेपर कौनबुद्धिमान् एत-कात लासकताहै ? अंग्रेजलोगोंका यहभी कहनाहैकि - अबतक सं-

पूर्ण दुनियाकी तलाश नहीं होचूकी है, नित्यनये टापु तलाशहोते जाते हैं, और यहभी कहाकरते हैंकि-उत्तरध्रुवके ( ७२ ) अंशसे ( ७५ ) अंशतक मनुष्यकी गति नहींहोमकती, इसलिये ( १५ ) पन-रांइहजार परिधिका भूगोल मानना प्रमाणीकनही हुवा. यह द-यानंदजीकी कमजोरी हैकि-अपने नयीरोशनीवाले चेलोंके पिछे चलपड़े, अनार्यलोग आर्योंकेपीछे जागृत हुवे हैं, आर्यभूमि अपने गर्भमें सर्वज्ञपुत्रहोनेका दावा रखती है, दयानंदजीने बड़ी भूल किई-आर्य होकर अनार्योंके रास्ते चले,—

५७-जैनलोग-जो-ममय-आवली-मुहूर्त्त-दिवस पक्ष-मास-वर्ष-पल्योपम-और-सागरोपमवगेरा कालकी संख्या मानते हैं इ-सपर दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४१७ पर लिखते हैं जैनोके पल्योपम-सागरोपमका मापा ठाकनही. सबबकि-कुवेमें केशोंके बारिकटुकडोंको भरना और उनको अनुक्रमसे निकालना यह बात नहीं बनसकती (जवाब,) जैनलोग कब कहते हैंकि-केशोंके टुकडोंसे अमूकशख्शने कभी-कुत्रा-भरा और एक एकटुकडा क्र-मसे निकाला!-जैनलोगका कहनातो यहहैकि-अगरकोई ऐसा कामकरे और उसमें जितना वख्तलगे उतनेवख्तका नाम पल्यो-पमकाल-बोलाजाय, दयानंदजी इसबातपर क्यों नाराज हुवे!-क्या! नास्तिकोंकी तरह अनमानप्रमाणको इनकार करदेना चा-हते थे? दयानंदजीके निराकार इश्वरने जो इससृष्टिसे पहिले सृ-ष्टि रचीथी और उससे पहिलेभी इसतरह अनंतकालपहिलेभी रची होगी ऐसा जो-मानाजाताहै उस अनंतकालको कोई आर्य-समाजी गणितकरके बतलासकताहै!-अगर कहाजायकि-हां!ज-

नुमानप्रमाणसे बतलासकेगा—( जवाब )—फिर पल्योपम—सागरोपमके प्रमाणकोंभी जैनलोग—क्यों न बतला सकेंगे?—जब संसारको ही अनादि समुत्तरदेते हैं—तो—फिर पल्योपमसागरोपमके मापेकी समुत्तीबतलाना कौन मुश्किलबातथी?—

५८—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४९ पंक्ति २८ में—दयानंदजी लिखते हैं जैनोके तीर्थकारोंकी उमर इतनी लंबी है जो आपलोग सुनकर हंस उठोगे, सबसे बड़ेतीर्थकर रिषभदेव हुवे उनकीउमर—चौरा—शीलाखपूर्वकी—कही, दूसरे अजितनाथतीर्थकरकी बहत्तरलाखपूर्वकी—तीसरेतीर्थकरकी साठलाखपूर्वकी—इसतरह बड़ीबड़ीउमर जो—जैनलोग मानते हैं बिल्कुल असंभववातहै, इन्ही जैनियोंके गपोठें लेकर पुराणीयोंने जो दशदशहजारवर्षकी उमर लिखदिई है यहभी संभव नहींहोसकती तो जैनियोंकीबात कैसे संभव होसकेगी? ( जवाब )—इतनी बड़ीउमर जो पहिलेजमानेमें होताथो इसबातकों शिवाय दयानंदजीजैसेके और कोई इनकार नहींकरसकता. जो जो प्रज्ञाशाली श्रुतज्ञ हैं, अनुमान प्रमाणकों कभी निषेधनहीं कर सकते. और यहभी नहीं कहसकेकि—पेस्तर आदमी बड़ोउमरवाले नहीं होतेथे? बड़ेबड़े मकान कोट किले और पशुपक्षी जैसे पहिले—लेकालमें थे आजकलकी अपेक्षा हजारदुर्जे बढ़कर थे. पहिले दिनोमें—जैसा—रूपरंग पुन्यवानी और तरखजाना था अब कहां है? जैसी ताकत अगलेंलोगोंकी थी अब कहां पाइजाती है—दशहजार वर्षपहिले जितनी लंबोउमरवाले मनुष्य थे, वैसे अब कहां है?—सोचोकि—लाखवर्षपहिले—उसमें ज्यादा उमरवाले होंगे—या—नहीं? करोड़—और—कोटानकोटवर्षपहिले उसमेंभी बढ़कर उमरवाले क्यों

नहोगे? वस! इसप्रमाणसें साबितहै अगले जमानेमें जरूरबड़ीबड़ी उमरवाले मनुष्य होते थे, फिर जैनोके तीर्थंकर चौरासीलाखपूर्वकी उमरकेहुवे किस प्रमाणसें गरमुम्किन होसकते है? दयानंदजीने शिवाय कमजोरोके और कोई प्रमाण नही बतलाया, इसके मारे यहीकहना बनाकि-जैनियोंके सब गपोडें है, लेकिन! यह नही सौचाकि-सत्यार्थप्रकाशमें मेंढो-गपोडें मारआयाहूं. मुक्तिमें जाकर पीछे लोट आना कौन बुद्धिमान् कहेगा गप्पनही? स्वर्ग नरकका इसभूगोलसें अलगस्थान न मानकर कहदेनाकि-जो यहां सुखी और दुखी है वही स्वर्गनरक-यहभी गप्पहै-या-और कुच्छ? संस्कार\*विधिके पृष्ठ (१२९) पर लिखा पृथ्वी स्थिरहै और नवीन सत्यार्थप्रकाशमें लिखा घूमती है. यह गप्प हुवा-या-और कुच्छ? निराकारईश्वरने अग्निस्वरूप और पवनरूप र्षियोंको प्रेरकर वेद बयानकिये यहगप्पहै-या-और कुच्छ? निराकारने किस मुखमें प्रेरणा किइ? कहिये! दयानंदजी! यह आपके गपोडें है या जैनोके? अगर आप सत्यवक्ता थे तो अपनेजीवनचरितमें साफसाफ क्यों न लिखगयेकि-हमारे मातापिताका यह नाम था, आपका छलकपट रफतेरफते सबलोग जानगयेहै, दयानंदजीको यह अभिमान थाकि-वेदोंमें तो (१००) वर्षहोका आयुष्य लिखा और जैनोके यहां इतनी लंबी उमर क्यों हुई? (जवाब.) वेदही तीनहजारवर्षकी रचनाके सबुतहोते है तो उनमें उससें पहिलेकी बातें कहाँसे निकमेगी? अगर वेदही प्रमाणोकयें तो उनके प्रमाणहोकरभी मनुजीने सत्ययुगमें (४००) वर्षकी उमरहोना



क्यों बयान कियी ? सबूत होता है कि—पहिले जमानेमें जरूर बड़ी बड़ी उमरवाले थे. एक दयानंदजीके नमानेसे क्या होता है ? जरा—महाभारत और रामायणमें तो देख लो ! लाख लाख वर्षकी उमरके मनुष्य हुवे लिखे हैं या नहीं ? क्या ! उक्त ग्रंथोंके कर्त्ता मिथ्यावादी थे ?

५९—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ( ४४९ ) पर दयानंदजी लिखते हैं जैनोंके रिषभदेवतार्थकरका शरीर ( ५०० ) धनुष्य लंबा—किसीका ( ४५० )—और कोइकोइका ( ४०० ) धनुष्य लंबा था, इतना लंबा शरीर होना कभी संभव नहीं हो सकता. इसलिये मिथ्यावात है. ( जवाब. )  
उपरकी कलममें अभी तो सबूत कर चुके हैं कि—पहिले जमानेमें मनुष्योंकी उमर यड़ी बड़ी होती थी. सोचना चाहिये कि—जब उमर बड़ी होगी तो शरीर भी बड़ा क्यों न होगा ? दूसरा यह भी मालूम कर लेना चाहिये कि—जैनशास्त्रमें मापा कितनी तरहका बयान किया है ? जैनमें मापा तीन तरहका—१, उत्सेध अंगुल—२, आत्म अंगुल—३, और प्रमाण अंगुल मापा—जिसमें प्रमाण अंगुल सबसे बड़ा—आत्म अंगुल उससे छोटा—और उत्सेध अंगुल—उससे भी छोटा है, इनके भेदानुभेद देखना हो तो अनुयोगद्वारसूत्र—और—अंगुलमीत्तरीप्रकरण देख लो, यहां हमको थोड़ेमें बहुत कहना है, इसलिये जितना उपयोगी है उतना ही कहेंगे. पहिले आत्म अंगुलका संक्षिप्त वर्णन सुन लो, जिसजिस जमानेमें जो जो मनुष्य अपनी अंगुलसे ( १०८ ) अंगुल उंचा हो उनकी चौइस अंगुलका एक हाथ गिनना यह आत्म अंगुल मापा हुवा. कालभेदसे यह मापा छोटा बड़ा भी हो सकता है, रिषभदेवतीर्थकरके जमानेमें जो गांव जितनी दूर था—वही अगर आजकलकी अपेक्षा गिने तो गिनतोमें ज्यादा दूर कहना पड़ेगा,

अब उत्सेधअंगुलका बर्नन सुनिये ! महागीर तीर्थकरकी आधीअं गुलकों एकपूरी उत्सेधअंगुलकहना यह अनुयोगद्वारसूत्रकी टोकामें लिखाहै. चक्रवर्त्तीका कांकणीरत्नभी एकउत्सेधअंगुलप्रमाण लंबा चौड़ा होता है, रिषभदेवजी उत्सेधअंगुलके मापसें (५००) धनुष्यके उंचे थे, सो महावीरतार्थकरके हाथके मापसें (२५०) धनुष्य हुवे, धनुष्य चारहाथका—उसहिसाबसें एकहजारहाथकी देह रिषभदेवकी थो, कहिये ! जिम रिषभदेवकों आज एककोटानकोट सागरोपमकाल अंदाजहुवा जैनलोग मानतेहैं उनकेशरीरकी इतनी उंचाइहोना कौनआश्चर्यकी बातहै ? जो बात युक्तिप्रमाणसें सिद्धहो उसकों कौन इनकार करसकेगा ?—जिमकी आंखोंमें पोलेपनका रोग होजाताहै उसकों सबपदार्थ पीलेरंगकेही दिखलाइ दे-तो-बतलाओ ! किसका दोषहै ? दयानंदजीकों ऐसा असाध्य रोग होगया था जो असत्यपदार्थभी सत्य प्रतीतहोतथे. दयानंदजी ४१९ पंक्ति ६ में लिखतेहैं जैनलोग दशहजारकोशका एक योजन मानतेहैं. ( जवाब. ) यह्वात किसी जैनशास्त्रमें नहीं लिखी, दयानंदजी गुजर गये, अब कोई उनका शिष्य—अपने सत्यवक्तास्वामीजीकी सत्यतापर घमंड रखता हो तो जैनशास्त्रसें सबूत करे, गुरुके सत्य वचनकों साबीत करना शिष्योंकी फर्ज है, बस ! जो कोई सबूतकरदेगा हम उसकों ( ५०० ) रुपये इनाम दिलवायगें,—

६०—दयानंदजीने सत्यार्थ पृष्ठ ४१८ पंक्ति ३० में लिखाकि अढतालीशकोशकी जूं जैनियोंके शरीरमें पडतीहोगी. और उनोंने देखीभी होगी. औरका भाग्य कहां जो इतनीबड़ी जूनों—देखे !

(जवाब.) किसी जैनशास्त्रमें अडतालीशकोशकी जूँ नहीं लिखी. बात बिल्कुल गलत है, अगर सब बातों उसशास्त्रका नाम क्यों नहीं लिखा? लिखे क्या! जिनके दिलमें धोखा हो-वें-प्रमाणसहित कैसे बतलासके? दयानंदजी तो गुजर गये, अगरचे उनकी जगहपर उनके शिष्य समाजीलोग इसबातको जैनशास्त्रसे साबित करदेवे तो हमसे (१०००) हजार रुपये बतौर इनामके पावें, क्या जाने! वैदिकलोगोंके इश्वरावतार जो चारचारमहिनेतक सोते रहते थे-कुंभकर्ण-छमहिनेतक सोताथा, कहते हैं अगस्तिरिषि इतने बड़े थे जिनोंने समुद्र पेटमें भरलियाथा, शिवकी जटायें गंगानदी बहतीथी ऐसेऐसे महात्माओंके शरीरमें अडतालीशकोशकी जूँ पड़तीहो-और-लिखना भूल गये हो तो विचार करलिजिये!

६१-दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४५४ पंक्ति १५ में लिखते हैं 'जैनलोग तीनकोश लंबा मनुष्य और उनकी तीनपल्यो पमकालकी उमर मानत है. ऐसे लंबे मनुष्य इसभूगोलमें बहुतथोड़े समासकेगें. बंबई और कलकत्ते जैसे शहरमें तो तीन-या-चार मनुष्यही निवासकरसकेगें. (जवाब.) हम (५९) मो कलमें लिखचूके हैं कि-जैनमें जितना शरीरकी उंचाइकामापा है उत्सेधअंगुलसे जानना. उत्सेधअंगुल महावीरतीर्थंकरकी आधीअंगुलको समझना यहभी पहिलेलिखचूके है उसहिसाबसे तीनकोशका आधा देढकोश हुआ सो ऐसे मनुष्य-जैनलोग-धातुकीखंड और पुष्करार्द्धदीपवगेर मानते हैं, धातुकीखंड यहांसे आठलाखकोश-और-पुष्करार्द्ध है. यहांसे छपनलाखकोश दूर मानते हैं, कौनकहता है इसभूगोलमें इतनेलंबे मनुष्य हैं? दयानंदजी बड़े करेबी थे, जितनाकेस किवा

धोखा देदेकर किया है. शर्म नहीं आइ कि-झूठ बात जहिर होने पर लोग मुझे क्या कहेंगे ?

फिर आप लिखते हैं इतने लंबे मनुष्यों के लिये घर और थंभे कितने बड़े होते होंगे ? ( जवाब. )—जहां इतने लंबे मनुष्य होते होंगे वहां वृक्ष भी लंबे क्यों न होंगे, कीड़ी अगर फिकर करे कि हाथी का घर कितना बड़ा होता होगा ?—तो—उसका मौच करना बृथा है या नहीं ?—दयानंदजी के धर्माचार्य मनुजी ने जहां हिरण्यकश्यप दैत्य का बर्नन किया है वहां फरमाया है कि—वह इतना उंचा था—जिसकी कमर सूर्य की बराबर पहुंचती थी. और उसका बाकी का शरीर सूर्य से भी उंचा था. कहिये ! इस बात को सच समझना या—झूठ ?

६२—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४१९ पंक्ति १ में—लिखा कि—जैन लोग चारकोशलंबा—वीरू—और मखी मानते हैं. ( जवाब. ) उत्सेध अंगुल के माप से चारकोशलंबा आधा—दोकोशलंबा—हुवा—मो इतने लंबे शरीर वाले—चतुरिंद्रिय जीव द्वीपांतर में—जैन लोग मानते हैं. अन्य द्वीप की बात इस भारत में लगाना ठीक नहीं. बड़े बड़े समुद्रों में जलचर मगर मच्छ वगैरा जीव जैन लोग एक हजार योजन लंबे होना मानते हैं—सो—उत्सेध अंगुल के प्रमाण से (५००) योजन हुवा. जब लाखों करोड़ों योजन के लंबे चोड़े समुद्र हैं तो उनमें पांचसे योजन के मच्छ क्यों न होंगे ? छोटे समुद्रों में भी इतने बड़े मच्छ देखे जाते हैं जो स्टीम-शरके नीचे आजाय तो एक दफा उल्टा देवे. सौचो ! फिर बड़े समुद्र में बड़े मच्छ क्यों न होंगे ? इसका इनकार करना प्रमाण से बाधित है, जैन लोग भारतवर्ष के समुद्र में कब इतने बड़े मच्छ कहते हैं, जिस-

पर दयानंदजीकों सौचना पडा. समुद्रमें डूबेहुवे वेदकों फिरपाने-केलिये जो वैदिकलोग मच्छावतारका होना मानते है दयानंदजी ने उसकी लंबाई चौड़ाई क्यों न लिखी? क्या वादीयोंकी तर्कता-पसं कुछ खोफ मालूम हुवाथा?—जब देवदानवोंने शेषनागरुपर-सी बांधकर पर्वतद्वारा समुद्रोंकों मथा—और— पर्वत डूबनेलगा—तब अपनीपीठके सहारे जिसकच्छपने उसकों रोकदिया—सौचो! वह कच्छप कितना बडाहोगा?—दयानंदजीने इसबातकों खुलासा क्यों नही लिखी?—क्या! शर्म मालूमहुइ?

६३—दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४४७ पंक्ति ३० में—लिखते है जैनलोग हरितशाक खानेमें जीवोंका मरना मानते है यह अविद्याकी बातहै, ( जवाब. ) वनास्पतिमें जीवोंका होना सर्वसंज्ञ, सबबकि—उसमेंजल सींचनकरनेसे वृद्धिहोतीहै. लाजवंतीके पेंड है हाथलगादोतो संकोच और—उठालो तो विकाश होताहै—सौचोकि अगर उसमें जीव नहोता तो—ऐसा क्यों होता? असलीही हाल-तमें रही चली आती. इसलिये सच्चहैकि—हरितशाकके खानेसे जीव जरूर मरते है. दयानंदजी ४४८ पृष्ठ पंक्ति ९ में लिखते है उश्न-जल पीना जैनोंका भ्रमजालहै, जीवोंकों मारकर पीना उससे तो ठंडाजलही पीना अच्छाथा. ( जवाब. ) जलकों तताकरनेसे कौनकहताहै जीव नही मरते? जरूर मरते है, असलमें व्रतधारीयों-कों सजीव खानपानकरना शास्त्रका हुकमनही, कच्चाजल सजीव और तताजल निर्जीव यह सर्वमान्यबातहै, जलकों तताकरनेसे उसमें चारप्रहरतक दूसरेजीव पैदा नही होते. इसलिये सजीवसे निर्जीवजल पीना व्रतधारीयोंकेलिये अच्छा समझागया. गृहस्थ

लोगोंकोभी गुनासिबहैकि-जब व्रतकरे निर्जीवजल पीये. अगर स-  
वालकियाजायकि-उसको जलके जीवभारेका पाप लगेगा यानही?  
( जवाब. ) जलतताकरनेका उसने कब त्याग कियाथा?-उपवा-  
समें चार या-तीनतरहके आहारका त्याग होताहै, जलतताकर-  
नेका त्यागनहीहोता,-और व्रतकी रक्षाकोलिये जलतताकरना भा  
वहिंसामें दाखिल नही. बिदूनभावहिंसा पाप नही, इसलिये सबूत  
हुवाकि-व्रतमें गर्मजलपीना अतिउत्तमहै, गर्मजलपीनेसे कामवि-  
कार शांत रहताहै. चिकित्साविद्याकेजानकर वैद्यलोगभी उश्रकि-  
या हुवाजल पीना ज्यादा पसंद करते है,-इसलिये कच्चेजलसे प-  
काजल पीना दुरस्तहै,

६५-सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४९ पंक्ति १ में-दयानंदजी लिखते  
है-है जैनो ! अगर जो तुम्हारा मत सच्चाहोतातो सृष्टिमें-इतनीवर्षा  
नदियोंका चलना-और इतनाजल क्यों इश्वरने उत्पन्नकिया ?-  
तुमारे मतानुसार सूर्यकेतापसेभी क्रोडानक्रोडजीव मरतेहीहोंगे.  
( जवाब. ) कौन मूर्ख कहताहैकि-सृष्टि जल नदियां और सूर्य-इ-  
श्वरने बनाये-जिनकीबुद्धि नष्ट होगइहो वही इश्वरको कर्त्ता माने,  
जैसे इश्वरवादीयोंके मतमें स्वयंसिद्ध इश्वरहै उसी प्रकार जैनमतमें  
स्वयंसिद्ध जगत् है. फिर क्या जरूरतहैकि-इसका रचनेवाला कोई  
मानाजाय, और निरागी इश्वर रागके फंदेमें क्यों फंसे ? अगर  
कहाजायकि-शुभाशुभकर्मोंका फलदाता इश्वर नही तो और कौन  
है ? ( जवाब. ) शुभाशुभकाफलदाता-खुद-कर्म है, जीव जैसाक-  
रेगा कर्म उसके स्वतःउदयआयगे, अगर कहाजायकि-बदीका  
फल वह स्वतःपाना नहीचाहता ( जवाब. ) कौन कहता है वह

चाहना है, जैसे लोहा नहीं चाहता कि-मैं-चूंबकपाषाणकी तर्फ खेंचाउ? लेकिन! खेंचा जरूर जाता है, इसी प्रकार कर्मरूपचूंबकपाषाण लोहरूपजीवकों स्वतःखेंच लेते है, इसलिये कोई जरूरत नहीं इश्वर दंडदे, अगर कहा जाय कि-फिर इश्वरकों मानना ही बेफायदे हुवा ( जवाब. )-बतौर ध्यानका सहारा ध्येयरूप मानना क्या! फायदा नहीं है? अगरचे है-तो-फिर बेफायदे कैसे कहते हो? हां! सिर्फ कर्त्तारूप नहीं मानते, क्योंकि-उसके स्वरूपमें दोष आता है,

६६-सत्यार्थ पृष्ठ ( ४५१ ) पंक्ति १० में-दयानंदजी विवेक० भा० १ का-हवाला देकर लिखते हैं कि-एक सिद्धकी कथा एक वैश्यकों ( ५०० ) अशर्फी नित्य देती थी. भला! कथा वस्त्रका होता है वह अशर्फी किस प्रकार दे सकता है, ( जवाब. ) जैनके साधुओं को कथा नहीं होती. औरोंकी बात औरपर समजना ठीक नहीं. विवेकभारमें जो बात लिखी थी-अगर सच्ची थी तो उसका अक्षर अक्षर लिखते, फिर ( ४५२ ) पृष्ठ प्रथम पंक्तिपर दयानंदजी लिखते हैं ऐसी ऐसी असंभव कहानी इनकी लिखे तो जैनियोंके थोथे पोथोंके सदृश हमारा ग्रंथभी बहुत बढ़ जाय. इसलिये अधिक नहीं लिखते-थोड़ीसी बात छोड़कर हमके शास्त्रोंमें सब मिथ्या जालभरा है. ( जवाब. ) जरा इमजमूनकों खयाल रखकर पढलो-मालूम होजायगा-वेद क्या चीज है, वैदिक लोग सत्यविद्याका पुस्तक वेद बतलाते है लेकिन! हजार वैदिक एक ठेकरो तो उनमेंसे वेदके जनेवाले एक-या-दो-निकलेगें. चारों वेदमें क्या लिखा है इसके जनेवाले औरभी कम निकलेगें. अगर वैदिक आचार्योंको पुछा जाय कि-वेद-क्या वस्तु-और-उसमें क्या लिखा है? बहुतसे इसबा-

तकों नहीं बतासकें, फक्त यही जाहिरकरेंगे कि—हमारे बड़े वेद मानतेचले आये—और हमभी मानते हैं. वेदमें जो जो असंभववाते हैं इसीलेखमें हम पहिले लिख आये, पढ़नेसे मालूमहोजायगा कि वेदके थोथे पोथे हैं—या—जैनके? दयानंदजीने कुतर्करूपी तलवार हाथमें लेकर वेदरूपमहानगरका कतल आम किया, वेदके असली अर्थसे शर्म आइ—और—वादीयोंकी तर्कतापसे घबड़ाये—जब—नये अर्थ खड़े किये, दयानंदजीका फरमानाथा कि—सबके मतम—तांतर—सबके ग्रंथ—तीर्थयात्रा—मूर्त्तिपूजा—और—व्रतउपवास वगेरा मिथ्याहै, मुसलमान और इशाइयोंकोभी वैदिक बनालेना अच्छा है, सबजातिवालोंका एकत्रभोजनहोना कोइहर्ज नहीं, आचार विचार—चौका—जातिभेद—मिथ्याहै, सबजातिकी लडकीसें—विवाह करो. पति परदेश जाय तब स्त्रीकेलिये एक दूसरा पुरुष घरपर नियतकरजाय—वह उसस्त्रीसे संतान पैदाकरता रहे, जब पति घर आवे तब उस दूसरेपतिकों विदाकरदेवे. संतानकों आप ले लेवे, पति अपनीस्त्रीकों दूसरे पुरुषसे मैथुन करानेकी आज्ञा देवे, आर्यसमाजके संन्याशीकों धन देना—दूसरेकों कुछजखरत नहीं. पंचयज्ञकरो—संघ्यासेवन करो—अग्निमें होम करो, देखिये! दयानंदजीका ये फरमाना था, कहिये! अब सत्यार्थप्रकाश थोधाहै—या जैन? दयानंदजीने लिखाहै जैनाचार्योंने वेदकी संहिता नहीं ऋषीथी इसलिये नोंदा करगये, (जवाब.) महावीरतीर्थकरके बड़े शिष्य गौतमगणधर—अग्निभूति—वायुभूति सुधर्मा—वगेरा वेदपाठी अग्निहोतृब्राह्मण थे, शय्यंभव भट्ट—कुमुदचंद्र ( सिद्धसेन दिवाकर ) और—हरिभद्रसूरि—पहिले वैदिकमतके आचार्य थे, उन्होंने वेदों—

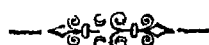


कों असत्यजानकर छोड़ दिया, और जैनमजहब अंगीकार किया, वेदोंकी चारोसंहिता मेरे पासभी मौजूद है, अपनी हस्वलियाकत उसका तरजुमाभी कर सकता हूं. जिसकिसीको इम्निहानलेनाहो छपवाकर मेरे नजदीक इरसाल फरमावे, जवाब बमुजबटीकाभाष्यके दूगा, अगर कोई गुस्ताखी करेगा उसकेसाथ गुस्ताखीसे पेश आनापडेगा. सबबाकि—यह जमानेकी खूबी है,

६७—दयानंदजीकों ग्रंथलिखते वख्त सौचनाचाहियेथाकि—जैनलोगप्रलयकिसकों कहते है?—पुद्गल किमकों मानते है? चौदहरज्वात्मकलोक क्या वस्तु है? विनासमजे मनमाना लिखदेना कौनसी बहादुरी किइ? चौदहराज्य नही—किंतु रज्जू है, और रज्जू एकमापकरनेके—पैमानेका नाम है, किसी राज्यधानीका नाम नही, उसमें आकाशपाताल सबमिलाकर यह गिणना है, केवलआकाशपर चौदहरज्जू मानना दयानंदजीका भ्रम है, दयानंदजीने कौनसा दिग्विजय कियाथा लेकिन! उनकरागीलोंगोंने दयानंददिग्विजयग्रंथ तयारकिया, इधर प्रतिपक्षीयोने दयानंदपराजय—दयानंदपराभूति—मुखचपेटिका—और—दयानंदमतमर्दन तयार किये, दयानंदजीने सत्यार्थप्रकाशमें लिखा तभी उनकों बोलनेकी जरूरत हुई, समाजीलोग अकसर! यही कहते है हमारे स्वामीजीने जो कुछ लिखा वह सच है, लेकिन! दुश्मन जिसबातकों मंजूर करे वह सच होता है.

६८—दयानंदजीने लिखा है जैनमुनि विष्णुकुमारने नमुचिप्रधानको मार डाला, और दंडप्रायश्चित लेकर शुद्धहोगये क्या खूब बात है? ( जवाब. ) नमुचिकों जैनमुनिविष्णुकुमारने इसलिये मारा

कि—वह धर्मकों डूबाता था, उसकों उपदेशद्वारा समझाया—लेकिन! फिरभी वह सामनाकरनेकों आमादाहुवा. इसलिये उसकों मारना फर्जहुवा, जोवात फर्जहो—उसमें गुनाह नही. गुनाह बिदून प्रायश्चित्त नही. फिरदंडकी क्या जरूरत रही? कौन कहता है उन्होंने दंड लिया, दयानंदजी नाराज क्यों हुवे? क्या नमुचि कोई उनका रिस्तेदार था? कितनेक कहते हैं दयानंदजीने इशाइवनते रोककर समाजी बनाये यह गुण क्यों नही लेते? ( जवाब. ) सौ-चोतो—कुच्छभी नहीरोका और बनाया, बल्किन्! वैदिकमतमें विरोध फैलाकर जगह जगहपर भेद डालदिया, दयानंदजीकी और हमारी कलमकी लडाइ खतमहुइ, सत्यार्थप्रकाशके बारहवे समुल्लासका—जवाब भी पुराहुवा. इसमजमूनमें जहां कइ जीकर इनामका आया उसकेलिये एकवर्षकी मुहलत दिइजाती है. जिनकों खायेसहो वजरीयेकलम छपवाकर जाहिर करे,



## [ दुनियाके मतमतांतर. ]

१—अगर दुनियाके दोहिस्से समझेजायतो एक आर्य और दूसरा अनार्य, जिसमें आर्योंके बनिस्पत धर्मकी तलाशीमें अनार्यलोग हमेशा नादुरस्त चलेआये, कोईधर्मतत्व अनार्योंका ऐसा नही जो आर्योंसे बढकरहो, अनार्यलोग बिदून सौचे उसकामकों जरूरकरडालेंगे जिसमें पाप ज्यादाहोताहो. मगर आर्यलोग उसको कभी न करेंगे जिसमें पाप बढकर लगे. निदान! आर्योंका खया-

ल धर्मपर ज्यादाकहना कोईहर्जकी बातनहीं देखिये! उसकी चंदमिसालें यहां पर कुछ लिखदिजाती हैं। फ्रांसके एक अध्यापकने इम्तिहान कियाकि-खरगोश जानवर ठंडकी बर्दास्त-सबसे ज्यादाकरसकताहै, उसने एकखरगोशको बर्फके संदूकमें बंदकरके एकमाँवसे दूसरेमाँव डाकमें भेजा, वहाँजब बर्फको पींगलाकर उसे निकाला जीताजागता निकसआया, आर्यलोग ऐसा इम्तिहान कभी नहीं कर सकते, अगर वह मरजातातो कितना बेजाहोता? अनार्यलोग बतौर इम्तिहानके जीतेकुत्तोंकीखाल धीरेधीरे इसलिये खेंचलेते हैंकि-इसको नयीखाल आती है-या-नहीं? आर्यलोग ऐसाकठोरकाम हर्गिज नहोकरसकेगें।

२-बंदरोंकी खोपरीयोंको बरमोंसे छेदकर उसमेंसे मांस निकालना और कहनाकि-इम्तिहानलेते हैं, एकजानवरका अंग काटकर दूसरेको लगाना और देखनाकि-जुड़ जाताहै-या-नहीं? जानवरोंको जहरीले सपोंसे कटवाना और देखनाकि-इससे वह मरताहै या नहीं? नशकाटनेकी तरकोवकेलिये हजारोंहकुत्ते निर्दयहोकर काटडालना-आर्यलोग ऐसाकाम प्राणभंकट आनेपरभी मंजूरनहीं करेगें, कइ जानवरोंको भूखाप्यामारखकर इम्तिहानकरना अनार्योंहीका कामहै, मच्छलायोंको तलभुंजकर और उंदरोंका मुरब्बा बनाकर खाना अनार्योंहीकी लीला है आर्योंकी नहीं। युरोपदेशमें डाककेजरीये सांपवींछू बगेरा जीतेजानवर पार्सलमें बंदकरके भेजनेकी रसम दिनपर बढ़तीजाती है, आर्यलोग इसरशमको इसलिये बुरोसमझते हैंकि-स्यात्-वह मरजाय तो कितना पाप दर्पेश हो? इसीलिये कहसकते हैंकि-धर्मकीतलाशीमें

अनार्यलोग आयोंसे हमेशा नोचेचलेआये.

३-अनार्यदेशमें जानेकी चंद सरते निचे लिखी जाती है,

(१) कइशख्श धर्मकी वृद्धिके लिये अनार्यदेशमें जानेका इरादा जाहिरकरते है उनकों चाहिये पहिले अपनेकोंही धर्ममें पाबंद करे, और उसकेजरीये आर्यदेशमेंही उसका फायदा हासिल करे, बाद ज्यादे फायदा मालूम दे-तो-जानेको इजाजत संघमें मागे,

(२) कइशख्श हरकिसके इम्तिहानके इरादेसे जानाजरूरीसमझते है. उनकों मुनासिबहै वहांजाकर धर्ममें द्रढ रहे, और बाद इम्तिहान हासिलके फौरन आर्यदेशमें चलाआवे, चाहे जितना वहां-वो-धर्ममें द्रढ रहाहोतोभी-अनार्यदेशमें भक्ष्याभक्ष्यकेसंसर्गका उसेजरूर दंडमायछित लेनाहोगा,

(३) अगर कोई उक्तदोकल्मके जरीये अनार्यदेशमें जानाचाहेतो उसकों चाहियेकि-निचे दर्ज कियाहुवा इकरारनामा संघकों लिखदेवे, इसमुताबिक जो शख्श जायगा उसकों वहांसे आनेपर मुआफिक इकरारनामेके समाज और बिरादरीमें सामोल करलिया जायगा. कोइशख्श इकरारनामेसे बदल जायतो उसगांवका समाज आर्यखंडके कुलसमाजकों इतला दे-जिसकेजरीये वह कुलसमाजसे स्वारिज समझाजाय.

### [ इकरारनामेकी नकल, ]

(४)-श्रोजिनायनमः-स्वस्तिश्री अमूक नगरे-श्रीजैन श्वेतांबर संघ-और अमूक ज्ञातियोग्य-अमूक नगरसे-अमूकशख्शका जय-जिनेंद्र मालूमहो, मैं-अनार्यदेशमें जानेकी इजाजत चाहताहूं और

सच्चेदिलसें यह इकरारनामा पेशकरताहूँकि-मैं-वहाँ जाकर मांस मदिरावगेरा अभक्ष्यका भक्षण न करूंगा, अगर कहें तो जींदगी-तक ज्ञातिबिरादरी न पाउ, दूसरे अर्हन्नीविगेरा जैनशास्त्रमें जो कुछ दंडप्रायश्चित्त फरमायाहै उम मुआफिक लुंगा, शिवाय उसके शत्रुंजय-गिरनार-सम्मेतशिखरजी वगेरा एकमहातीर्थकी यात्रा करूंगा, इसलेखसें नफिरूंगा, अगरफिरुंतो ताबेउमर ज्ञाति नपाउ,

( गवाही अमूक अमूककी.)	} संवत् सही-हस्ताक्षर-
गवाही नंबर-१-	
गवाही नंबर-२-	



(५)-इस इकरारनामेकी नकल छपवाकर आर्यखंडमें जहां जहां बडेबडे शहरहैं समाजमें भेजदिइजाय, जब किसीशख्शको अनार्यदेशमें जानाहोतो इसपर सही करके जानेकी इजाजत संघसें हासिलकरे, शास्त्रोंमें लेखहैकि-अनार्यदेशभी कारणपाकर आर्य-और-आर्यदेश-कारणपाकर अनार्य होजाते हैं, इसवख्त जो देश अनार्य है वही कारणपाकर अगर आर्य होजायतो फिर वहां जानेकेलिये इजाजत या दंड प्रायश्चित्तलंनेकी जरूरत नहोगी, सुनाजाताहैकि-थोडे अर्मेंमें यूरोपवगेरा देशोंकी रैल खुलनेवाली है, अगर खुलगइतो हजरांहआर्योंका वहां गमनागमन होकर खानपानकी योग्यसामग्री जारी होजायगी. रास्तेमेंभो खानपानकी शुद्धता रहसकेगी. अगर ऐसा हुवा तो-वें-देशभी आर्यतुल्य होजाय तो क्या ताज्जुब? उसवख्त-फिर दंडकी जरूरत नरहेगी.

(६)—फ्रांसके परिसनगरकी नेशनेललाइब्रेरी आजकल दुनियाभरमें बड़ीहै जिसमें चौदहलाख छपीहुइ किताबें-तोनलाख न-कशे-और देढ़लाख प्राचीनमिक्के तथा तमगे मौजूदहै वैसे पहिले जमानेमें आर्यखंडमेंभी बहुतसी थी, सबबकि-उममयके ग्रंथ-अवधी-प्राचीन पुस्तकालयोंमें मिलते हैं, असलमें! विद्या और कारीगरीकी खजाना भारतवर्षहो था. क्या हुवा!-कुछसमयके फेरफार एकमा जमाना नरहातो?—याद रहे! धूपछांव सबजगह बदलती रहतीहै, दुनियामें सबमें बंडीनहेर जैसेआजकल-सेपटी-टमैवर्गसें लेकर चीनकी हदतक बनीहुइहै वैसे पहिलेदिनोंमें अपनेदेशमेंभी थी. यह कभी नहीकहाजासकताकि-अपनेअपने जमानेमें-मुखके साधन नबनेहां,

(७)—यह भूलकरभी मतसमझनाकि-जैसा मुलकका-बंदोबस्त अबहै वैसापहिले कभी नही था. जब चक्रवर्ती वासुदेव-पतिवासुदेव-और-पंडलीकराजे-मौजूदथे-कैसे कहाजायकि-वें-अपनेदेशका बंदोबस्त नही करसकतेथे-अर्धवर्षवर्षोंकोंजानेदो, कोटानकोटि-और-लाखवर्षभी अलगरखा-फक्त दो-अठाइहजारवर्षकाही हाल सूनलो! अशोकराजाके हुकमनामेका खुलासाहाल तपसील-जेलयहहै, प्रयाग-जूनागढ-दिल्ली-कइजगहकी गुफाअें-चटान और खंभोंमें जोजो हुकमनामें मौजूदहै उनमें लिखाहैकि-अशोकराजाने स्तोंपर कुब्रे बनवाये. सडकोंपर दरखत लगवाये, आदमी और जोनवरोंके लिये सफाखाने बनवाये, अशोक-मगधदेशकेराजा-चंद्रगुप्तका पोता-और इतिहासोंके लेखमें सबूतहैकि-मन (२५७) के पहिले यह पटनाकी गदीपर था, कहिये! सडकें-दोंनोंतर्फ द-

रखत-कुवे-और-सफाखाने पहिले थे-या-नही?-पहिले जितनी धरती बोइजातीथी इतिहासोंके पढनेसे मालूमहोताहै अब उससे कम बोइजातीहै, अगर ऐसा न माने तो बतलाना चाहिये पहिलेज मानेमें अनाज सस्ता क्यों था?-देश निर्धन था तो दूसरे देशवाले दौडदौडकर इसको लूटने क्यों आते थे?-जवाहिरात औरमणो-बंद सुवर्णकी मूर्त्ति क्यों बनाइजाती थी?

(८)-यह भूलकरभी मत समझोकि-पहिलेदिनोंमें कारीगरी कम थी, देखिये! जैसे पूर्वकालमें ग्रहनक्षत्रादिके वेधक-यंत्र बनायेजातेथे अब कहाँ बनमकते हैं? डाककी चीठीयां जैसे अब जातीआतीहै, पहिले इससेभी थोडे परिश्रमके साथ विद्याधरलोग आकाशगामीविमानोंके जरीये जल्दी पहुंचाते थे, पांचहजारवर्षपहिलेका वृत्तांत शास्त्रोंमें पढो तो बखूबी मालूमहोसकताहैकि-पहिलेदिनोंमें-आकाशगामी विमान विद्याधरलोग चलातेथे और देशाटनकरनेवालोंको उससे बडाआराम पहुंचता था, पुलिसका बंदोबस्त जैसा अबहै नहीकहाजाताकि-पहिले नही था,-राजेलोग खुद-रात्रीको रैयतकी रक्षाकरतेथे, अगर सवालकियाजायकि-किस राजेने ऐसी कचहरी खोली-जिस्मेंराजापरभी नालिश सुनीजाय? ( जवाब.) इजराह राजे ऐसेहुवे जिनों खुद अपनी सजाकेलिये न्यायालय खोले थे-सभासदभी इसलिये मुकरर किये जातेथेकि-हमभी अगर न्यायसे चूके तो किताइ अलायदा करदि येजाय, किनकिनके नाम लिखे?-यह खूब यादरखोकि-वचनर्क पाबंदी जितनी पहिलेथी-अब नही रही. बतलाइये! बातबातप

रसीद क्यों लिइजाती है? क्या जरूरत हस्ताक्षरकी अगर ज्यादा इतमीनानहोता तो ?

९-जंगलमें मंगल पहिलेनही था-इसकी क्या सबूती है? क्या द्राक्षके बाग-और मेंबेके पैड-कदमकदमपर नही सुने? कितनेक कहते है रामचंद्रजी अयोध्यासे रामेश्वरतक गये वहां रामायणमें जंगलही जंगल लिखाहै ( जवाब ) रामचंद्रजीकों वनवासकी राह लेना था-इसलिये-वें-उमरास्ते चले थे-जहां राजधानी न आसके. दीनदुखीका-उद्धारजैसे पहिले किया जाताथा अबउससेकमहै ऐ-माकहनेमें कोइहर्ज नही. क्या ! मजालहैकि-धर्मकी पाबंदीमें आ-योंका कोइसामना करसके? अगर कहाजायकि-पहिलेजमानेमें इ-तने पुल-कहांथे ? ( जवाब. ) यह कोइवातनहीकि-हरेकजमानेमें सुख और आरामके साधन न बनेहो रामचंद्रजीकी सेनाने समुद्रमेंभी-पुल बांध दियाथा-यह किसीसें छीपीहुइबात नही. पहिलेजमानेमें जितनी रहेमदिलीथी-अब उतनी कहां है? चौइससंवर्षके पहिले जब बौतभयपत्तननगरके राजा उदयनने-उज्जैनके चंडप्रद्योतकों हरादिया और-केदभी करलियाथा-फिरभी रहेमदिलीसें पूछाकि अब क्या चाहताहै? उसने कहा मेरा राज्य पीछा देदो, उदयनने उसीवख्त उसका राज्य छोटादिया, ऐसेबहादूर बहुतथोडे निक-लेगें जो-जीते हुवे देशकों फिर वापिस करदे,

१०-अगर कहाजायकि-टेलीग्राफ जिस्मे तारपर बीजली दौडाना पहिले कहांथा ? ( जवाब )-पहिले लिखआये हैकि-अग-लेजमानेमें आकाशगामीविमानोंके जरीये विद्याधरलोग समाचार पहुंचाते थे, जिनकेपास ताकतवर इथियारहो-वें-कमजोरकों क्यों



पकड़े?—जरासा थंभा गिरजाय-या-तार-दूटजाय-वहांही वीजली दौड़ना बंद होजाय, रेलगाड़ी पट्टीपरसें उतरजाय तो जल-अग्नि और-पवन-कुच्छभी नोकरी नहीं देसके-विद्याधरोकोंयदखतरा कहाथा, अंग्रेजोंकी अमलदारीमें बहुत बड़ाआराम यहहैकि-कोइ किसीके धर्मपर दखलनहीं देसकता. किसीकी औरत कोइ छिन-नहींसकता, चाहे जैसागेहूँ कोइ पहनो-मनादी नहींकि-तुमने ऐसा क्यों पहना ?

११-गरीबोंकेलडकेकों पढनेका जैसा अब आरामहै पहिले भी था. इतिहासोसें मालूमहोसकताहैकि-पहिलेभी गांवगांवमें पाठशाला बनाइजातीथी,-विद्या और कलाकौशल्यताका निधान आर्यावर्त्तही सदासें चला आया. छापखानेकी रसम पहिलेभी थी. देखिये हरेकजगह शास्त्रोंमें पढतेहोकि-स्वनामांकित मोहर पहिलेभी लोग रखते थे, अब छापखानेका काम ज्यादा पसंदहै पहिले हाथका लिखा पसंद था, जमानेकी खूबी सदासें बदलती चलीआइ, जैसे खेलनेके तास इस्वीसन (१३५०) के असें-छापेगये पहिले दूसरी बजइकेछापेजातेथे, इसमें चकितहोना कोइजरुरतनहीं,

१२-[ अकलके चाबुक, ] १-बैमतलब ज्यादा मतबोलो, २-ऐसा गुप्तभी मतरहो जहां कोइभी तुम्हारेपास न आसके, ३-सबकेसामने ऐसागुस्सा मत दिखाओ-जिससें लोग तुमकों पागल समझे, ४-यह हमेशा यादरखो हम मोट्टीके पुतलेहै, यह घमंडभी मतलाओकि-यहकाम हमने किया, सबकार्य तुम्हारे पूर्वसंचितपुन्यसें सुधरतेहै, ५-कचहरीमें हाकिमकी धमकीसें मत गभडाओ-सौचकर इजहारदो, ६-मूर्खोंकी हांमें-हां!-मतमिलाओ, ७-तुम

नेकोइ ग्रंथबनाआ और गलती रहगइ-उसकों सुधारनेमें ऐब मत समझों, ८-सबकेशाय मिलबुलकर चलना अच्छा होताहै लेकिन! बुरोंसे हमेशा दूर रहो, ९-दूसरेकी तारीफ करना अपनीही इज्जत बढ़ानाहै लेकिन! बूढ़ोंकी तारीफ मतकरो. इसमें अच्छेकी बुराई होती है.

१३-(१०)-कोइशख तुमकों सुन्नाचांदी बनानेकी तरकीब बतलावे-तो सिखलो-लेकिन! पहिलेसें रुपयेपैसे हर्गिज मत दो, काम फतेहहोनेपर देना अकलमंदोंका कामहै, ११-अकलके काममें ताकतकी जरूरत नहीं, १२-जिसकामकों थुरुकिया उसकों पुरा करना चाहिये, आधीहजामत नाइलोगभी नहीं रखते, १३-ऐसा देशहित और आमदनी किसकामकी जिसमे धर्म डूब जाय, १४-चाज नजरदेखकर लेनाचाहिये-दूसरेके भरसे लिइ हुइ न जाने कैसी निकसे?-१५-अगरतुम दौलतमंदहो तोभी फिजूलखर्च मतकरो, हां! धर्मकेकाममें जितना खर्चोगे अच्छाहोगा, १६-हरबातमें बहुत चिडना अच्छानहीं. मिजाजकों मुकामपर रखेकरो, १७-नोकरीपर हरवख्त हंटरलिये मतखडे रहो. १७-थोडेहफोंमें ज्यादा इशारत लाना अकलमंदीकी निशानी है, १८-यह हर्गिज मतसमझोंकि हमवेभूलहै, १९-ज्यादे लिखावट मतकरो थक जाओगे. २०-साधुलोगोंकी तारीफ जबहै गरीब और दौलतमंदकों एकसा गिने, २१-अपनी भूलकों किसीके सामने मतजाहिरकरो-तुमकोंही निचादेखना पड़ेगा,

१४-(२२)-इतना सख्तरौआब मतडालोकि-लोग-पासआनेसेंभी नफरत करे, हां! बिना रौआब रहनाभी ठीकनहीं, २३-

दोछतकी तंगीपर बड़ी तिजारतका काम मत खोलो,—२४-विवाह-या-और किसी काजकरीयावरमें इतना खर्चमतकरो, जिससे कर्जदार बनना पड़े, २५-गुम्ननाम चीठी लिखना डरपोकोंका काम है, २६-ज्योतिष्-चिकित्सा-मंत्र-और-धर्मशास्त्रके पढेहुवे-हर-जगह-इज्जत पाते है, २७-अलभ्यवस्तुकी चाहनाकरना मूर्खोंका काम है, खूबसुरतस्त्रीकों देखकर पुरुष-और-खूबसुरतपुरुषकों देखकर-स्त्री-मोहितहोकर-मनकों बिगाडलेते है, लेकिन ! नही सौचतेकि-जो चीज अपनी नही उसपर अपना अमल क्योंकरहोसकता है ! २८, स्त्रीकों कुल जायदादकी कुंची सुपर्दकरदेना अकलमदीसे दूर है, २९-स्त्रीकों मरजी मुजब जेवर और पोशाक पहनाओ लेकिन ! हेसियतसे बहारहोजाय ऐसाकाम मत करो, ३०-पूर्वपुन्यकेउदयसेही संसारीकसुख मिलताहै, यहांधर्मकरोगे तो फिरभी पाओगे,

१५-(३१)-जैसे गुंजपर गेंद नही टीकती मूर्खके दिलपर नसीयत नही टीकती, ३२-उल्लूने वारांहवर्ष मेहनतकरके एकग्रंथ बनाया, उसमें लिखाकि-सूर्यमें रौशनी नही होती. उसपर चमगीदडोंने सही करदिइकि-बात-दुरस्त है, बस ! इसतरह मूर्खोंकी बात मूर्खही मानसकते है, ३३-साधुलोगोंको चाहिये कोइ बेवकुफ वहेस करनेवाला आवे शिवाय खामोशीके दूसरा अमल न करे, ३४-जो इसवरत तुम्हारा प्रीतिपात्र है वही कभी-भीतिपात्र बनजायगा-दिलकी बात सौचकर कहा-दुनिया दगलबाजोंकी सराय है, इसमें नेक थोडे बद् ज्यादे देखोगे. ३५-साधुओंकी और राजाकी मुठी बंधीहुइ रहना चाहिये, खुल जानेसे योग और भोग

बेकदर होजायें, ३६-यह मतसमझोकि-भारत मध्यखंड दशपांचनगरोंका एकदेशहै, दौलत और बिद्याका खजाना यही खंड है, गिरतीवरुतमेभी दूसरे देशोंको परवरिश पहुचानेवाला दूसराकौन होगा ?देखिये ?-बहत्तरकरोडरूपयेका माल-दरसाल-दूसरेदेशोंसे-इसमेंआताहैऔर(९९)नवाणुंकरोडका यहांसे-अन्यदेशोंकेलिपेजाताहै,दूसरेदेशवालेअकसर-बजरीयेखूबसुरत औरतोंकेमालबिकवातेहै याते उनका माल आसानीसेबिके,देखो ! एक अमरिकाके युनाइटेडस्टेटमेंही(७००००)हजार औरतेंहोटलोंपर सौदा बेचनेके लिये मुकररहै,भारतमें उत्तरसम नहोनेपरभी-मालका ज्यादा बिकना-कौनबुद्धिमान कमजोर कहसकताहै ?-

१६-राज्यरिद्धि-और-इज्जत-सब-धर्मरूपकल्पवृक्षकेफलहै, पहिलेजमानेमेंजोलोगज्यादेसुखीहोतेथे धर्मकों-ज्यादे-करतेथे-आजकल-जिसकेबहुतसुख-उसकोंबिल्कुलअधर्मादेखोगे, जबकिसीकों तकलीफहोकरहाजाताहै धर्मकरो,सौचो ! धर्म कुछ चीजनहीतो-ऐसा क्योंकहागया ? सबूतहुवाकि-सबका-शरणदाता धर्म है,अच्छाअधर्म किसका नाम है. सुनिये ! धर्म उसकानामहै जो दुर्गति पडते हुवे जीवकों अच्छी गतिमें धारणकरे. परलोकके रास्तेकों साफकरना या आत्मिक गुण प्रकटहोना उसकानामभी धर्महै,जिसने पूर्वभवमें धर्मकों सच्चे दिलसे कियाहो उसीकों यहप्यारालगेगा, दुनियामेंधर्म-अनेक तरहकेहै-लेकिन ! उनसबका-नतीजा-इसतरकीबसें लिखदिया जायगाकि-कोइमजहब इससें बहार नरहेगा,

१७-पहिले षड्दर्शनके नाम सुनिये, !-कइलोग-जैन-बौध-नैयायिक-सांख्य-वैशेषिक-और-जैमनीय-इनकों षड्दर्शनगिनते

है, कइजैन-बौध-सांख्य-शैव-मीमांसक-और-नास्तिककों-सामिल करके गिनते हैं, कइ-जैन-बौध-सांख्य-जैननीय-वैशेषिक-और-योगमतकों मिलाकर षड्दर्शन गिनते हैं, कितनेक लोग-नैयायिक-और-वैशेषिकों शैवमतमें और कइ वैशेषिकों अलगभी कहते हैं, कितनेक शैवमतका दूसरा नाम योगमतभी-बोलते हैं, अद्वैतवादी-और-वेदांती-मीमांसकके अंतर्गत समझना चाहिये, जैन और बौधका बयान इसी किताबके (१४१) पृष्ठसे लगाकर (१८१) तक लिखा गया पढ़ना हो-तो पढ़ लो !-जैनमें श्वेतांबर आम्नाय सबसे प्राचीन है. दि-गंबर मत विक्रमसंवत् (१३९) में निकसा, इन्हींने द्वादशांगसूत्र नमान कर नये ग्रंथ जारी किये, इसलिये इनको जैन-नहीं-जैनाभास-समझना चाहिये, हुंदिये पंथी लोग जो मुखपर कपड़े की पट्टी बांध रखते हैं ये भी जैन नहीं-जैनाभास समझे, जैनसूत्रोंमें मूर्तिका मनन करना दुरस्त लिखा-इन्होंने-इनकार किया. विक्रमसंवत् (१०९) में-एकलवजी नामके शरुशने मुखपर कपड़े की पट्टी बांधकर इसमतकी नींव-डाली, थोड़े वर्ष हुवे इनमेंसे एक-भीखमजी नामके शरुशने-भीखमपंथ चलाया, मूर्ति नहीं मानना-जैसे हुंदिये लोगोंका मत है इसीतरह भीखमपंथका भी-जान लो, दोनों मत-शास्त्र विरुद्ध होनेसे त्यागने योग्य है.

१८-संवत् (१९२५) में-षूज्यधरणेंद्रसूरिसे लडकर-एक-रत्न-विजयजी यतिने तीनथुईका मत निकाला, उक्त-रत्नविजयजीय-ति-पहिले तो कोइरीज-श्रीपूज्य-बने थे. लेकिन ! जब श्रीपूज्यधरणेंद्र सूरिने राज्यबलसे मुकाम जावरेमें उनका लवाजमा छिनलिया मारेशर्मके साधु बने, संवत् १९२५ के असें खाचरोदमांवंमें-पहिला चातुर्मास किया-और-तीनथुईका-मत निकाला, शास्त्रके व-

चनकों-लौप-करना इसकेबराबर कोइपापनही, लोगोंकों भ्रममें डालनेकेलिये कभीकभीयहभी कहदेतेहैंकि-तीनथुइभी सत्यहै, चारभी सत्यहै, लेकिन! यहकहना उनका इसमतलबपरहैकि-हरक शरुश हमारे मजहबमें दाखिलहो, दुनियाका यह कुदरती नियम हैकि-नयीचीज-चाहेखोटीभी हो-लोग-उसपर आमादा होजाते है, सज्जनोंकी यह कहलावत यादरखो-[सभी घास जल जाय-गो-दूब रहेगी खूब]-अखीरमें झूठेझूठेहीहै. नयेमतकी नयीबात-तीनदिन रहेगी. संवत् (१९२८)में-जब-श्रीमत् श्रवेरसागरजीके साथ-राजेंद्रविजयजीकीचर्चाहोनेका-#इकरारनामा लिखागया-लेकिन! सभामें नही आये-उसदिनसे उनके मतकी जड मालवेमें जमनेनहीपाइ-उज्जेन-इंदोर-और-रतलाम-जोकि-मालवेमें बडेश-हर समझेजातेहै-कोइश्रावकनेइनकोंनहीमंजूरकिये-रतलाममें जैन श्वेतांवर श्रावकोंके(७००) घर-जिसमें. कुल-४०-५०घर-उनके मतमेंदाखिलहुवे, जावरा-खाचरोद-राजगढ-कुकसी-शाबुआ-मंदसोरबगेराजोछोटेगांवहै उनमें जाकर इन्होंने अपनी तीनथुइकी प्ररुपणा चलाई, नीमच-नीभाडा-आवर-और कुच्छहिस्सा-गुजरातकी सरहदपर-थराद-वीरमगाव-वगेरामें लोग-उनकेमतमें दाखिलहुवेहै, तीनथुइवालेश्रावक इसबातका ज्यादा अभिमान लाते हैकि-हमारे-गुरुजीने-बडीबहादूरीकिइ, लेकिन! असलपुछोतो-कुच्छभी नहीकिया. (३०)तीसवर्षकी मेहनतसे कुच्छ नतीजा

\* वह इकरारनामा-जिसमें-रतनविजयजीकेहाथकी सही है रतलाममें शेठ-हरखाजी रिखवाजीके-घरखा हुवाहै-उसकी-नकल-जो-(त्रिस्तुतिभतखंडन) फिताब-इमने बनाना-शुरु किइहै उसमें छपेगी.

नहीपाया. सर्वविरतिचारित्रिकिसीके पासनहीलिया. आपही आप बिनागुरुके साधु बने-और-शास्त्रकेवचनकों लोपकर तीनथुइका पंथ निकाला. तोनथुइवाले श्रावक चाहेसो समझे-लेकिन!-और देशके श्रावक इनकों निन्हवोकीपंक्तिमेंगिनतेहै, देखिये! जब कि-सीतरहकी सम्मति-लेनाचाहतेहै तो-कोइदेशके श्रावक-इनकीसं-म्मति नही पुछते, सूरिपदवी किसीने नही दिइ-और-सूरि-बने, वंदितासूत्रकी गाथामें-समदिठीदेवा-पदकों तोडकर-समत्तससि-द्ध-जारीकिया. बगेरा फिजुलबाते पैदाकर अपने आत्माकों पा-पकर्मसें मलीन किया और नाहक फजीतहुवे.

१९-मेरा और राजेंद्रविजयजीका-शहरभमदावादमें-दोधं-टेतक-इठिभाइकीवाडीमें बार्त्तालाप हुवा, बहुतसा प्रसंग तोनथु-इके बारेमेंही चलाथा-अखीरमें उनोंने यही कहाकि-जिसबातकों मैं-जारीकरचूका-उसीकों अपनेमुखमें झूठ कैसे कहसकूं?-कित-नेक तीनथुइवालेश्रावक-कहते है-मुनिश्रीआत्मारामजीनेभी जैनत-त्वादर्शमें-पृष्ठ ( ४१.७ ) पर-तोनथुइ-लिखी है, ( जवाब. )-यहबात बिल्कुल गलतहै. थोडीसमझवालोंकों धोखादेकर बात बनाना-और सामने नही आना-कौनचतराइका कामहै? असलमें जैनत-त्वादर्शका लिखाणही मंदिरके संबंधमेंहै, जब जिनमंदिरके दर्श-नों जाना तब अवकाश थोडाहो-तो-एकएकमंदिरमें एकएक-स्तुति-पढना-अवकाश ज्यादाहोतो-दो-या-तीनभी पढना, देखि-ये!-मतलब क्या था-और-तीनथुइवालोंने किसरास्ते उताराहै?-कहां प्रतिक्रमणकी-बात-और कहां जिनमंदिरकी?-जिसकों संशय हो-एक अलग पुर्जेपर छपवाकर भेजे-छापाद्वाराही उ-

सका जवाब दिया जायगा,

२०.—मरिचिके चेले कपिलने सांख्यमतकी नाँव डाली. जैन-मतके पीछे सांख्यमत निकला, कइलोग सांख्यकारिकाको बहुत पुरानी कहते हैं, लेकिन ! उसकी रचना पुरानी विदित नहीहोती, उसके रचयिता इश्वरकृष्णआचार्यने संवत्नही बतलाया—लेकिन रचना नयी है, इसमतमें कपिल—और—आसुरिकेबाद एक संखनामके आचार्यहुवे उसकेनामसे मतका नाम सांख्य कहलाया, पहिले इसकानाम कपिलमत था. सांख्योंका फरमानाहैकि—हमारे मजहबके पचीसतत्व जो कोइ जानेगा, उसकी मुक्ति होगी. चित्तको—सांख्य मतमेंज्ञानसेरहित मानागयाहै. बुद्धि—जड, शब्दादित नुमात्रमें आकाशवगेराकी पैदाश, और पुरुषको बंधमोक्षनही, सिर्फ प्रकृतिही बंधन और छुटकारा पाती है,

२१.—सांख्यमतके साधु गैरवेवस्त्र पढ़ेनते हैं, हाथमें त्रिदंड और बिछानेको मृगछाला, भक्तलोग जब उनको नमस्कार करे [ नमोनारायणाय ] कहे—उसके जवाबमें—वें—[ नारायणाय नमः ] कहतेहैं. सांख्यमतके दोभेद—एक ईश्वरवादी—दूसरे अनीश्वरवादो, कपिल—आसुरि—भार्गव—उलूक—पंचशिख—वरकृष्ण—और—सांख्य—ये—सांख्यमतके आचार्यलोगहैं, माठर—तत्त्वकौमुदी—गौडपाद—आत्रय तंत्र—और—सांख्यसप्तति—ये—इसमतके शास्त्रहैं, प्रत्यक्ष—अनुमान—और—शाब्द—ये—तीन प्रमाण मान्यरखेगये. सांख्योंने वेदकी हिंसाको मंजूरनहोरखी. काशीतर्फ—इनकेसाधु—ज्यादे देखोगे, मस्तकके केश झौर करवातेहैं, और जहांतकबने ब्राह्मणके घरकाही भोजन जीमते है,



२२-मीमांसकमतका दूसरानाम-जैमिनीय-समझे, इनमें दोभेद एक-कर्ममीमांसक-दूसरा-ब्रह्ममीमांसक-वेदांतीलोग ब्रह्ममीमांसक-और-भट्टप्रभाकरकों कर्ममीमांसक-समझना चाहिये, इनके साधु-गैरवेवस्त्र-त्रिदंड-मृगचर्म-और-कमंडलु-रखतेहै, कितनेक भी मांसक वेदहीकों परमतत्व कहकर ईश्वरकों नहीमानते. वेदही उनके गुरुहै, जब एक दूसरेके सामने मिलेगे [ संन्यस्तं-संन्यस्तं ] ऐसा शब्द बोलेगें,

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

एकमेवाद्वितीयं स्यात्-ब्रह्मतत्त्वं महाफलं,

प्रपंच स्तंभकुंभादि-स्तेषामते निरर्थकं, ?

इसकामतलब इतनाही है कि-एक-अद्वितीय ब्रह्मतत्त्वही फायदमंद और स्तंभकुंभादि सब-मिथ्याप्रपंचहै, १-कुटीचर-२बहुदक-३, हंस-और-४, परमहंस-ये-इसमतके साधुलोग है, प्रपंच-मिथ्या-और-कठवल्लिका वगेरा-इनके शास्त्रहै,

२३-नैयाचिकमतका दूसरानाम अक्षपादहै, प्रमाण-प्रमेय-संसय-प्रयोजन-दृष्टांत-सिद्धांत-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितंडा-हेत्वाभास-छल-जाति-और-निग्रहस्थान-ये-सोलहपदार्थ इसमतमें मान्यरखेगये है, लकुटीश-कौशिक-गार्ग्य-मैत्र्य-कौरुष-इशान-अपरगार्ग्य-पलांडक-मनुष्यक-अपरकुशिक-अत्रि-पिंगला-स-पुष्यक-वृहदाचार्य-अगस्ति-संतान-राशिकर-विशगुरु-और-रथापर-ये-(१८) अठाराह इनकेबडेआचार्य है, जयंताचार्यरचि-

त-न्यायतर्क-तथा-न्यायसार-जिसपर न्यायभूषणटीका है इसमतके मान्यवर शास्त्र समझो-इनकेसाधुलोग-दंड-कंबल-काखमें तुंबी-और-शिरपर जटा रखतेहैं, हमेशा दातूनकरके कुरले करना-कंदमूलफल खाना-और-पंचाग्नितापना-इनका मुख्यधर्म, बहुतसे स्त्री-नही रखते, कोईकोई रखतेभी है, लेकिन ! रखनेवालोंका दर्जा कम, इसमतके गृहस्थ जब उनके साधुओंको मिले जब [ ॐ नमःशिवाय. ] कहे-और-जवाबमें-वें-[ शिवाय नमः ] कहते है,

२४-वैशेषिकमतका दूसरानाम पाशुपत्य-कहा, नैयायिकमतके-और-इनके साधुओंमें बहुतसीबातें एकसी देखोगे, जो (१८) बड़े आचार्य उपर लिखआये-उनको-येभी मानतेहैं, द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-और-समवाय-ये-छहपदार्थ-इसमतमें मनन कियेगयेहैं, तर्कसंग्रह-मुक्तावली और दिनकरी वगेरामें जोसप्त पदार्थ-कहे-यह-नवीननैयायिककी अपेक्षा समझना-नैयायिक. वैशेषिकोंने अभावको पदार्थ नहीं कहा, श्रीधराचार्यरचित-न्यायकंदली वगेरा-वैशेषिकमतके शास्त्र-है, आत्रेयतंत्रभी इसीमतका शास्त्र था-लेकिन ! विच्छेद होगया. दुखका आत्यंतिक वियोग होना-इसीका नाम मोक्ष हुवा फरमातेहैं, शिवने उलूकरूप धारण करकेकणादमुनिके सामने इसमतका बयान किया इसलिये इसका तीसरा नाम औलूक्यमतभी कहागया.

२५-रामानुजमतसंवत् (११८५) में पैदाहुवा उन्होंने शंकराचार्यजीके मतको बेजा कहा, और सीतारामको भजना पसंद रखा, संवत् (१५१५) में-वल्लभाचार्यजीने राधाकृष्णजीका रासविलास जारी कीया जिससे लोग-तुर्त उनपर रजुहुवे. शैवमार्गी-

योंने-वैश्ववोंका-और-वैश्ववोंने-शैवोंका-खंडनकिया. शैवोंने-भस्म-रुद्राक्ष-और-बाणालिंग-चिन्ह बनाये, वैश्ववोंने-तप्तमुद्रा-तुलसी-गोपीचंदन-और-शालिग्राम-चिन्ह जारीकिये-परस्पर द्वेषबढा और-एकदूसरोंके आक्षेपपर ग्रंथबनने शुरूहुवे, इस्वीसन (१३८०) के असेंमें एककीबरनामके शरूशने पतंजलशास्त्रका सार लेकर कबीरपंथ निकाला, अकबरवादशाहके वख्तमें दादुजीनामके शरूशने दादुपंथ-चलाया. दिल्लीके पास छुडाणीगांवके रहनेवाले गरीबदासजी जाटने गरीबदासपंथ जारीकिया, गुरुगौविंदसिंगजीने निर्मलपंथ चलाया, नानकसाहबके वख्तमें गोरखनाथजीयोगीने कनफटेका मत निकाला. पंजाबदेशमें भाइरामसिंह-सूत्रधारने-कुकापंथ चलाया, दखनमें तुकारामभक्तने भक्तिपंथ निकाला, अंदाज (१२५) वर्षहुवे गुजरातमें स्वामिनारायणमत-प्रचलित हुवा, संवत् (१९३०)के असेंमें दयानंदसरस्वतीने आर्यसमाजमतनिकाला. वेदोंके नयेअर्थ बनाकर असली अर्थकों रद किये.-विश्वपुराणकीरचनाइस्वीसन(१०४५)के-असेंमेंहुइ, दादुपंथीनिश्चलदासजीने विचारसागर-और-वृत्तिप्रभाकर-ग्रंथ बनाये, जिनकों आजकल वेदांतीलोग काममेंलातेहैं. मनुस्मृति भृगुनामकेआचार्यने बनाइ, इसकों बने ( २५०० ) वर्षके अंदाज हुवे, महाभारतमें लिखाहैकि ब्राह्मणोंकी संध्यापाठके प्रभावसें सूर्य उदय होताहै, भागवतमें कृष्णभगवान् फरमाते हैकि-मैं=जितना अग्निमूर्य और चंद्रसें खोफ नही लाता उतना ब्राह्मणोंके कोंपसें डरता हूं-असलमें यहलख-ग्रंथकर्त्ताकी अत्युक्ति समझना चाहिये. एककविने-सारे भागवतका सार निचे लिखेहुवे काव्यमें कहदिया—

( देखिये ), आदौदेवकीदेवगर्भजनन-गोपीगृहेवर्द्धन,  
 मायापूतनजीवितापहरण-गोवर्द्धनोद्धारण,  
 कंसछेदनकौरवादिहनन-कुंतीसुतापालन,  
 एतत्भागवतःपुराणकथन-श्रीकृष्णलीलास्पदं, १  
 एककविने सारोरामायणकासार-निचे लिखेहुवे काव्यमें-इ-  
 सतरह बयानकिया, ( सुनिये ! )-

आदौरामतपोवनादिगमन-हृत्वामृगंकांचन,  
 वैदेहीहरणं जटायुमरणं-सुग्रीवसंभाषणं,  
 वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं-लंकापुरीदाहनं,  
 पश्चात् रावणकुंभकर्णमरणं-एतद्विरामायणं. २

तवारिखफिरस्तेकिताबमें लिखाहैकि-जगन्नाथजीतीर्थका मं-  
 दिर संवत् ( १३७३ ) के असेंमें बनायागया, बद्रीनाथका मंदिर  
 संवत् ( १४०६ ) के असेंमें बना, संस्कृतभाषामें बेरडी वृक्षका  
 नाम-बद्री कहा, -बेरडीयोंके झुंडमें यह तीर्थहोनेसे बद्रीनाथ नाम  
 कहलाया,

२६-नास्तिकमतका दूसरानाम चार्वाक है, चर्वन्ति भक्षयन्ति  
 पुण्यपापादिकं-परोक्षवस्तुजातं-तत्त्वतो-न-मन्यन्ते-इतिचार्वाकाः-  
 शीलतरंगिणी ग्रंथमें लिखाहैकि-एक बृहस्पतिनामका-ब्राह्मण हुवा,  
 उसकी एकबहेन बालविधवा थी. कइरौज बादबृहस्पतिकी स्त्री गु-  
 जर गइ-और-वह कामविकारसें पीडित हुवा तबसें बहेनकों कहने

लगा दुनियामें भोगविलासकरना सारचीजहै, बहेनने कहा इससें नरक जानापड़ेगा, और दुनियामें नींदाहोगी, वृहस्पति कहनेलगा, पुन्यपाप-स्वर्ग नरक सब कहनेमात्रहै, कोई स्वर्गनरक नहीं देखआया, पांचतत्वका पुतला मरेबाद खाखहोजाताहै, परलोक जाता-आता-कोई नहीं, हरसुरतसें शरीरकों आराम पहुचाना उमदा बातहै, अखीरमें बहेनका मनभी इसबातसें खुश हुवा, दोनों स्त्रीभर्ता बने, और खुलेखुला कहनेलगेकि-शरीरसें शरीरकामिलापहोनेपर क्या हर्ज है, बम ! इसतरहहोते नास्तिकमत फैला, खानापीना भोगविलासकरना-और-आनंद उडाना-किसकों अच्छानही लगता ?-बहुतसें लोग इसीसेराजी रहते है, फिर ऐसे मतकी जड क्यों न फैले ?-लेकिन ! यादरखो !-अज्ञानीयोर्ब बात ज्ञानी कभी नहींमानसकते, पुन्यपाप-और-स्वर्ग नरकका होना-शिवाय नास्तिकके और कोई नहीं फरमाता, जो-लोग-जैनकों नास्तिक कहदेतेहैं उनकी भूल समझो, पुन्यपाप-स्वर्गनरक-और-पुक्तिवगेराकोमननकरे कभी नास्तिक नहींसमझेजाते, अगर जैन-लोग-ईश्वरकों जगत्काबनानेवाला नहींमानते इसअपेक्षा नास्तिक कहा तो उससे होताक्याहै ? फिजूलबातें बनाकर कोई किसीकों बुराफरमावे उनकी समझकीही बुराइहै,

२७-मुसलमानोंकी किताबोंमें लिखाहैकि-हजरतआदमसें पहिलें मनुष्य नहींथे, और जिंदथे-जो चारलाखवर्षपहिलेसें, उनकेबाद शैतानकी औलादने कुछदिन दुनियामें गुजरानकिया, फिर आदम पैदा हुवे, उनकी उमर ( ९३० ) वर्षकी थी, सबसें पहिलेपेगंबर यहोथे, शेष-अद्रेस नूह-हूद-सालह-इब्राहिम-लूत-इ

समाइल-असहक-याकू-बयूसुफ-शअब-मूमा-हारु-अलियास-अलीसय-समयूल-दाउद-मुलेमान-यन्स-जिकरिया-यहिया-इशा-और-मुहम्मदसाहब-इनके पेंगंबर हुवे, इनमें मुहम्मदसाहबकों ज्यादाअफजल मानतेहै, किताब कुरानकी आकाशमें इन्हीकेलिये उतरीथी, मुहम्मदसाहबकी बेटी फातमा-दामादअली-और उनके दोबेटे हस्सन-हुसेन-लडाइमें काम आये, ये अपने नानाके मजहबकों फैलाना चाहतेथे, दुश्मनोंने इनकों लडाइमें मारडाले, इनके मृतकबरकीनकल ताजिये कहलाये, फारस और अरबमें ताजिये बनानेकी रमम नही, मुहम्मदसाहबका हिजरीसन मुसल्मानोंमें ज्यादा माना गयाहै, रमजानमहिनेकी तारीख (२७) मीकों कुरानशरीफ आकाशमें उतराथा, तारीख (१३) रबीउलअव्वल-सन ( ११ ) हिजरीके रौज मुहम्मदसाहबका अंतकाल हुवा, उस रौज मुसल्मानलोग-रौजा-रखतेहै,

२८-कुरानमें लिखाहैकि-इसदुनियाकों खुदाने बनाइ, खुदाही नाश करेगा, जो कुछ बंदेकों आराम और तकलीफ होती है खुदाही देताहै, कुरानकों मुसल्मान लोग [ कलामेइलाही ]=(यानी)-इश्वरवाक्य समझते है, [ लाइलाह इल्लीला-मुहम्मदरसूलअल्ला ]-यह मुसल्मानोंका पाक कल्माहै, मतलब इमका इतनाहीहैकि-तू-अल्ला-यानी-परमात्माहै तेरे शिवाय दूसरा कोई नही, मुहम्मद तेरा दूतहै, मुसल्मानोंमें गुरुकों पीर-या-मुर्शिद-और-चेलेका-मुरीद कहतेहै, मौलवी-हाफज-मुल्ला-और-काजी-इनके मजहबी बुजुर्गहै, अरबमें-मक्का-मुसल्मानोंका बडातीर्थ और आबेजमजमका पानी पीना अच्छा समझते है, अरबदेशमें जब-जो

मुसलमान मिलते हैं परस्पर सलामके बदले एकदूशरेका हाथ चूमकर गले लगते हैं, रुमदेशमें जब-दो-मुसलमान मिलते हैं अपनी अपनी छातोपर हाथ रखकर सिर झुकाते हैं, इरानदेशमें जब दो मुसलमान मिलते हैं एकदूसरेसे फरमाते हैं. आपका साया कभा कम नहो,-निश्रीमुसलमान जब आपसमें मिलते हैं तो एकदूसरेसे पूछते हैं आपका पभीना किमकदर निकला करता है, अफगानिस्थान-और-हिंदुस्थानके मुसलमान जब मिलते हैं तो कहते हैं [अस्मलामअलेकुम.](यानी) सलामतहो-तुमपर,

२९.-अजमेरमें जिस ख्वाजंसाहबकी दर्गा है हिजरीसन (५२७)मेंसजस्थानमें पैदाहुवे-और हिजरीसन ( ६०७ )में अजमेरमें आये, यहां सैय्यदहुमेनमुशहरीकी लडकीसे उनकी स्यादी हुई, आप मृन्नी-आग-इनके सुमर सियाथे, अखीरसन ( ६२८ ) हिजरीमें अजमेरहीमें उनका अंतकाल हुवा, उनकी वहां दर्गाह बनाई गई, मुसलमानलोगोंका मालभरमें यहांपर एकमेला भरता है, हजरतइब्राहिमकों अल्लाहतालाका हुकम हुवाथाकि-तूं-अपने बेटे इसमाइलकों राहखुदामें कुरबान करदे, जब उन्होंने उस हुकमकों मंजूरकरलिया और कुरबान करनेकों तयार हुवे-तब-खुदाके हुकमसे फिरस्तेने उनके लडकेकी जगह एक बकरेकोलाकर रखदिया-और-लडकेको बचालिया, उसरौजमें मुसलमानोंमें बकरीइदकी रमम जारीहुई, खुदाका हुकम लडका कतलकरनेका था-लेकिन ! लडकेको कौनकतलकरे गरीबबकरेपर सबकोई मारनेकेलिये आमदा होजातेहैं, हरेक मुसलमानोंको इब्राहिमजीकी पावंदीपर खयालकरना चाहिये, बिदूनहुकम बकरेकी जान लेना

और खुदाके बंदे कहलाना-सौचलो ! कहांतक सच्चदे ? मुसल्मान लोग जो बातबातमें खुदाकी कसमखातेहै अच्छा नहीं करते जिसको अपना पैदाकरनेवाला समझना-उसकी झूठीकसमझों खाना ?-इसमें उनकी बेअदबी होतीहै,

३०-इसाइयोंकी किताबोंमें लिखाहैकि-इश्वरने जब्रायेल दूतकों गालीलदेशके-एकनगरमें जो-नामरत-कहलाताथा-किसी कुंआरीके पास भेजा-जिसकी मंगनी यूसुफ नाम-दाउदके घरा-नेके पुरुषमें हुईथी, उम कुंआरीका नाम-मरियम-था. जब्रायेल दूतने आनकर मरियमसे-कहा-है ! मरियम !-परमेश्वर तेरेसंगहै और-स्त्रियोंमें-तू-धन्यहै. मरियम उमकों देखकर कुच्छ घबराइ, लेकिन !-दूतनेकहा ! मरियम ! मतडर, इश्वरका अनुग्रह तुजपर हुआहै, देख ! तू ! पुत्र जेनेगी, उमका नाम इसा-रखना, मरियमने कहा ! यह किमतरहहोगा ?-में-पुरुषकों नहीं जानती हूं. दूतने कहा-पवित्रआत्मा तुजपर आवेगा-और-सर्वप्रधानकी शक्ति तुजपर छाया करेगी. इसलिये वह पवित्रबालक इश्वरका पुत्र कहावेगा, मरियमने कहा-मैं परमेश्वरकी दासी हूं-पुजकों आपके कहने मुताबिक फलहो, दूत चला गया-मरियमने इश्वरकी तारीफ किइ, और कहा-मेराप्राण-परमेश्वरका गुणानुवाद करताहै. मेरा आत्मा मेरेप्राणकर्त्ता इश्वरसें आनंदित हुवा,

३१-पहिले लिखआये हैकि-मरियमकी स्यादी यूसुफसें हुईथी, लेकिन ! उनके इंकटे होनेकेपहिले वह दिखपड़ीकि-पवित्र आत्मासें गर्भवती हुईहै. उसकों कलंक लगाना ठीकनहीं-चूपकेसें छोडदेना चाहिये-इसइरादेमें थाकि-उसीरौज इश्वरके दूतने आ-



नकर यूसुफकोँ ख्वाबमें कहा, हे ! दाउदके संतान यूसुफ ! तू ! अपनीस्त्री मरियमकोँ अपने घरलानेसेँ मतडर !-उसकोँ जो गर्भर-हाहै पवित्र आत्मासेँ है, वह पुत्र जनेगी. उसकानाम इशा रखना, वह जगत्कात्राणकर्त्ता होगा, यूसुफने उसीमुआफिक किया, इ-शाका जन्महुवा-लोगोंकी समझमें इशा यूसुफके पुत्र थे-लेकिन ! इशाइयोंके निश्चयमुआफिक इश्वरके पुत्र थे, यूसुफके पिताकानाम एली-था, एलीकेपिताका-पत्तात-पत्तातकेपिता-लेवी-और-ले-वीकेपिता-मलकी-इसतरह इशामे लेकर आदमतक पीढियां गिने तो ( ७६ ) होती है, इशाइमतमें मारनाहैकि-आदम प्रथममनुष्य था दुनियाके सबलोग उंसीसेँ पैदाहुवे, आदमकोँ इश्वरने बनाया, बस ! आदमसेँ पहिले कोई नहीं था.

३२-इशा जब-( ३० ) वर्षकी उमरके हुवे एकरोज योहन-नामके भविष्यत्वक्ताके साथ-यर्दननदीके कनारेपर गये, और उसमें डूब लगाई-अर्थात्-स्नानकिया, और तूर्त्त जलके उपर आगये, उसीवरून उनकेलिये स्वर्ग खुलगया, और इश्वरके आ-त्माकोँ कपोतकी तरह आकाशमें उतरते देखा, कहतेहै उसवरून आकाशवाणी हुइ-उसमें फरमाया गयाकि-यह-मेरापुत्रहै-में-इस-पर निहायत खुश हूं-इशामसीह उसवरून इश्वरसेँ परिपूर्ण होकर यर्दननदीसेँ लोटे-और फिरतेहुवे जंगलतर्फकोँ गये,

३३-वहां शैतानने आनकर उनकी परीक्षा किइ, पहिले यह कहाकि-अगर तुम इश्वरके पुत्रहोतो पथ्थर रोटियां बनजाय, उ-न्होंने जवाब दिया-हे ! शैतान ! सुन !-लिखाहै मनुष्य फक्त रो-टियोंहीसेँ नहीं लेकिन ! हरबातसेँ जो इश्वरके मुखसेँ निकसती है

जियेगा, फिर शैतान-मसीहको एकपवित्रनगरमें लेजाकर एकमंदिरके शिखरपर खड़े किये, और कहा-तुम-अगर इश्वरकेपुत्रहो-तो अपनेआप निचेगिर जाओ-देखें! तुम्हारे हाथपांवको लगता है-या-नहीं?-अगर सच्चे होंगे तो-इश्वरके दूत तुमको हाथोहाथ उठा लेंगे, जवाबमें मसीहने कहा-शैतान! तू-इश्वरकी परीक्षा मत-कर!-फिर शैतानने वहांसे मसीहको एकपहाडपर लेजाकर दुनियाका सवराज्य-और-विभव दिखलाया-और-कहाकि-मुझे सि-रझुकाके सिज्दा करो-तो-ये-सबचीजें तुमकोदेदूंगा, मसीहने जवाब दियाकि-शैतान! दूर हो! और अपने पैदाकरनेवाले इ-श्वरको नमस्कारकर, वस!-इसतरह शैतानके इम्तिहानमें मसीह किसीसुरत बाज नहीं आये, कहते हैं उसवख्त इश्वरके दूतोंनेआ-नकर मसीहकी तारीफ किई और धन्यवाद दिया,

३४-एक वख्त गालीलदेशके कानाननगरमें विवाहका भोज था-वहां-इशाभी गये थे. कहते हैं वहां जब दाखरस खूटगया था मसीहने-छ-बड़ेबड़े जलकेभरे मटके अपनीचमत्कारी विद्यासे दा-खरस बनादिये, एकरौज गालीलदेशके नासरतनगरमें जब म-सीह गये और-उपदेश सुनाया-लोगोंने उन्हींको-गुस्साखाकर बहार निकालदिये. एकदफे-कफर्नाहुमनगरमें-एकशख्सके घर-एकआदमीको-भूत लगा था उसको मसीहने निकाला, बात इ-सतरहहुइकि-जब-उसभूतलगेहुवे आदमीके पास पहुंचे-खुद वह भूत बोला-है! इथु!-हमको यहांही रहने दीजिये! आपको हमसे क्या काम? क्या! हमे नाशकरनेकोलिये आये है? मैं-जानताहूं-तुम-इश्वरके पवित्रजन हो, मसीहने कहा-चूप रह!-और इसकेश-

रीरसें बहार निकल आ, भूत-उसीवरुत उस आदमीकों गिरा-  
कर बहारानिकलआया, सबलोग चकित होगये,

३५-एकशहरमें एकशख्शकों कोठ हुआ-जब मसीहका  
वहांपरजानाहुवा उसने प्रार्थना किइ-मुजे-आप अच्छा करसकते  
है?-मसीहने उसके शरीरपर हाथ फेरा-और-कहा अच्छा होजा!  
तुर्ष उसकाकोठ जातारहा, इसतरह कइरोगीयोंके रोगमिटाये, ए-  
कदफे पहाडपर खडेहोकर उपदेश किया. और स्त्रीष्टीयधर्मकी  
उच्चमता बयान किइ, मसीहका फरमानाथाकि-कोइशख्शने कि-  
सीसबबसें अपनी औरतकों त्यागदिइहो-उससें दूसरा विवाहकरे  
वह परस्त्रीगमनकरनेवालाहै, भलमनसाइसें चलना और गमखाना  
किसीमुरत बुरानही, तुम किसीचीजकी चिंता क्यों करते ने  
धर्मकी खोज करो-इश्वरकी तर्फसें सबचीजें तुमकों दिइजायग.

२६-एकदफे मसीह नाइननगरकों जाते थे-शाथमें कइचेले  
और आदमीभी थे, जब-वें-उसनगरके पास पहुंचे जहां-एकविध-  
वाके मरेहुवेलडकेकों लोग कंधेपर धरके मशानकों लेजाते थे-उ-  
सकीमाता रोतोहुइ पोछें जारहोथी-कहते है ममीहने उसके पास  
जाकर कहा-हैं! जवान! मैं! कहताहूं-तूं! उठ उसीवरुत मराहु-  
वा लडका जींदाहोकर उठखडाहुवा-और-उसकी माकों सोंपदि-  
आगया, यहूदीयोंमें और दूसरेदेशोंमें यहबात फैलगइ-लोग बडे  
खुश हुवे, कइजगह औरतोंके भून निकाले, अंधोंकों अच्छेकिये,  
लंगडोंकों चलतेबनाये, उनके शिष्योंका कहनाहकि-मसीहने जि-  
तने आश्चर्यकाम किये-पूरीतौरसें-लिखे नहीगये. एकदफे गाली-  
लदेशमें होतेहुवे जब मसीह जाते थे अपने शिष्योंकों फरमायाथा-

कि-मनुष्योंका पुत्र मनुष्योंके हाथ पकड़ाया जायगा-वें-उसकों मारडालेंगे, और फिर वह मराहुवा तांसरेरौज जीउठेगा, शिष्यों ने नही समझाकि-किसके बारेम-और-क्या! फरमाते हैं! पूरीतौरसें पुछनेकों डरतेभी थे इसलिये ज्यादा नही पुछा. मसीह फरमातेथेकि-मैं-इश्वरका-भेजाहुवा-और-जगतका प्रकाशक हूं-मेरे पोछे चलेगा अंधकारमें नही गिरेगा,

२७-मसीह जब यरूशलीमनगरमें गये वहां उपदेश सुनाया जिसतरह दुश्मनोंद्वारा पकड़ाये गये-और-कूशपर प्राण त्यागकिये उसका हाल सुनिये!-मसीहके बारांह चेले थे, उनमें एक-यहूदा-इस्करीयूतीनामकाभी शिष्य था, वह एकरौज-प्रधानप्याजकोंके पासजाकर मिला, और कहनेलगा अगरमें मसीहकों आपके हाथ पकडवा दूं-तो-आपलोग मुजे क्या देंगे? उन्होंने उसकों ( ३० ) रुपये देनाठहराये, बस! इतनेहीपर वह राजीहुवा-और मसीहके पकडवानेके उपावमें लगा, एकरौज गेतशिमनीस्थानमें मसीह गये थे-मौका देखकर-यहूदाशिष्य-प्रधानप्याजकोंकों-और-फरीसीयों ( कपटीमनुष्यों ) की-तर्फसें प्यादोंकों लेकर आया, मसीह ज्ञानीथे-उनोंने जान लियाकि-मुजकों पकडनेकेलिये आये है, कहा! किसकों ढुंढतेहो?-उनोंने कहा-इशूनासरीकों-मसीहने कहा वह-मैं-हूं, यहूदीयोंके प्यादोंने उनकों पकडकर बांधे-और-पहिले उनकों प्रधानप्याजकोंके बडे शिरदार हन्नसके पासलेगये,

२८-हन्नसने-उनकों महाप्याजकोंके पास भेजे, वहां पुछा गयाकि-क्या? तुम इश्वरके पुत्रहो?-मसीहने कहा-हां! तब महा-

\* यहूदीयोंके पूजारी.

याजकोंने उनकों दोषके योग्य ठहराये. कोइकोइ उनपर थूकने लगे, और कहा भविष्यत्वाणी बोल! ऐसा क कर बहुतसी नौ-दाकिइ, फिर रूमीयोंकी तर्फसें जो-पिलात-आर-हिरोद-गवर्न-रजनरल थे उनकेसामने मसीहका विचारहोना शुरू हुवा, पिला-तने उनकों बचानेकेलिये बहुतेरे उपाय किये-लेकिन! अखीरमें प्राणदंड देनेकी आज्ञा दिइ, अध्यक्षके योद्धाओने मसीहकों अ-ध्यक्षभुवनमें लेजाकर सारी पल्टन उनकेपास इकठी किइ, लाल-बागा पहिनाकर कांटोंका मुकुट उनकेसिरपर रखा, और घुटने टेककर ठट्टा कियाकि-हैं! यहूदीयोंक राजा! प्रणाम!-पिलातने फिरभी कहा-मैं-इनमें दोष-नही पाताहूं तुम जानो! यहूदीयोंने कहा-हमारी व्यवस्थाके मुताबिक यह वधकरने योग्यहै, क्योंकि इसने अपनेकों इश्वरका पुत्र कहा. जो इसे छोडना चाहते हैं\* कैसरके मित्र नही. अखीरमें पिलातने उनकों क्रूसपरचढाये जा-नेकेलिये-सोंपा. वें-उनकों लालबागा उतारकर असलीकपड़े प-हिना क्रूसपर चढानेकों लेगये,

२९-उसवख्त वहां लोगोंकी बड़ीभीड़ थी, बहुतस्त्रीयें वि-लाप करती थी. मसीहने उनकीतर्फ देखकर कहा, मेरेलिये कोइ मतरोओ! धर्मपुस्तकोंका यह वचनपुरा हुवाकि-वह कुकर्मीयोंके संग गिनाजायगा, क्रूसपर चढायेजानेकेबाद प्रधानयाजकोंने अ-ध्यापकोंके संग ठट्टा कियाकि-क्या!-जिसने औरोंकों बचाया, अपने आपको नहीबचासकता! जब दोपहर हुवा सारेदेशमें ती-नघंटेतक अंधकार रहा. तीसरेपहर मसीहने बड़े शब्दसें पुकारके

\* रूमीराज्यके महाराजा थे.

कहा, हैं! मेरे इश्वर! तूने क्यों मुझे त्यागा है? मैं-अपना आत्मा ते-  
रे हाथमें सोपता हूं, ऐसा कहकर प्राण त्यागे, उनके सरीरकों यह-  
दीयोंकी रीतिमुआफिक कब्रमें रखा गया, कहते हैं तोसरे रोज  
उनका पुनरुत्थान हुवा ( यानी ) फिर जीउठे, और ( ४० ) रोज  
तक फिर दुनियामें रहे, कई आश्चर्यकाम किये, और अखीरमें चे-  
लोंकों यह आज्ञा फरमागये कि-तुम! दुनियाकों उपदेश करो, जो  
कोई विश्वास लायगा. उसका त्राण होगा, मैं-पृथ्वीकी अंततक  
तुमारे संगह, ऐसा कहकर स्वर्गमें गये और इश्वरकी दाहनीतर्फ  
बैठे, यह बयान-मत्ती-मार्क-लूक-और-योहनलिखित इशुस्त्रीष्ट-  
जीवनवृत्तांत किताबसे लिया गया, जिनकों ज्यादा हालदेखनाहो  
उक्त किताब देखले, इसाइलोगोंका फरमाना है कि-जगत-इश्वरने  
अपनी कुदरतसे बनाया, बाइबल उनकी धर्मपुस्तक है, इसाइमत-  
का बयान पुरा हुवा,

३०-एकविद्वान् ऐसे शहरमें गया जहां विद्याकी पूरी तेजी  
थी. शहरमें घुसते हो उसे एकमच्छीमारकी लडकी मिली,-उससे  
पुछा तूं-किसकी लडकी है? उसने जवाब दिया, जलमध्ये दीयते  
दानं-प्रतिग्राही न जीवति-दातारो नरकं याति-तस्य कुलेहं बालि-  
का, १, आगे बढ़नेपर भीस्तीकी लडकी मिली, पुछा गया तूं-कौ-  
न है? उसने जवाब दिया-चतुर्मुखी-नतो ब्रह्मा-वृषभारूढो न शं-  
करः तोयधरा नतो मेघः तस्य कुलेहं बालिका, २, अगादी चलने  
पर दरजीकी लडकी मिली. उसको पुछा तूं कौन है?-(जवाब दि-  
या)-ग्रोवार्शीर्षे न विद्येते-हस्तपाद विवर्जितः सजीवं पुरुषं अत्ति-  
तस्य कुलेहं बालिका. ३, अगादी जानेपर सुधारकी लडकी मि-

ली. पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाब दिया, यंत्रेतंत्रविधिं नित्यं करोति खंडखंडतां-राजाप्रजा न जानाति-तस्य कुलेहं बालिका, ४, अगाडी बढनेपर लुहारकी लडकी मिली उसकों पुछा तूं कौनहै? ( जवाब दिया.) स्वासोत्स्वासंच गृण्णाति-जीवंतंइवसर्वदा कुटुंबे कलहो यत्र-तस्यकुलेहं बालिका, ५, अगाडी चलनेपर कुंभारकी लडकी मिली. पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाबदिया-पर्वताग्रं रथोयाति-भूमां तिष्ठति सारथिः-चलते वायुवेगेन-तस्यकुलेहं बालिका, ६, अगाडी जानेपर लेखककी लडकी मिली, पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाबदिया-कृष्णमुखी न मार्जारो-द्विजिव्हा न चसर्पिणी-पंचभर्ता न पांचाली-तस्य कुलेहं बालिका, ७,

३१-अगाडी गया तो-कुवेपर एक औरत जल भररही थी. पामजाकर कहा-पानीयं पातुमिच्छामि-त्वत्तःकमललोचने!-दास्यसि चेन-इच्छामि-नौदास्यसि चदेहिमें-८ ( अर्थः)-हैं! कमल समान अच्छेनेत्रोंवाली! मैं! पानी पीनाचाहताहूं-अगर देयगी तो नही लुंगा-नही देयगीतो जरूर लुंगा, दूसरा अर्थ यह निकलता हैकि-अगर तूं! किसीकी दासी है-तो-जल नही पिउंगा-अगर अच्छे खानदानकी औरतहै-तो-जरूर पिउंगा, निदान! उससें जल पोइकर अगाडी बढा, रास्तेमें एक लेखकवाहक मिला. उससें पुछागया क्या-चीजलिये जाताहै ( उसने जवाबदिया. )-अपदोदूरगामीच-साक्षरो नचपंडितः-अमुखः स्फुटवक्ता च-यो जानाति स पंडितः (९) विद्वान् समझ गया इसके हाथमें लेखपत्रहै, राज्यमहेलतक पहुंचा तो एक व्याकरणकापढा हुवा पंडित मिला, उससें पुछा आप किस स्थितिमेंहै? उसने जवाबदिया-द्वंद्वो द्वि-

गुरपि चाहं-मद्गेहे निखमव्ययीभावः-तत्पुरुष ! कर्मधारय !-येना-  
हंस्यां बहुवीहिः १०-मेरेघरमें-मैं-और-मेरीऔरत सिर्फ दोही  
मनुष्य-और-दो-गौ-है-रुपये पैसेके अभावसें असल अव्ययीभाव  
समाम मेरेघरवर्त्तरहाहै. इसलिये ऐसा उपाव बतलाइये जिससें-में  
बहुव्रीहिसमासवालाबनु-अर्थात् मेरेघर धनधान्यकी बढवारी हो,  
इसछंदमें छतरहके समासभी कहदिये और अपना मतलबभी खो-  
लदिया, विद्वान्ने जवाबदिया, महाशय ! विद्या और लक्ष्मीकी  
अकसर लडाइ रहती है, लेकिन ! याद रहे ! लक्ष्मी-विद्याकी दा-  
सी है, रुपये पैसेपर जबतक हर्फ नही उकेरे जाते कामनही देते,-  
इसलिये सबुतहुवा विद्या-बडीचीजहै,

३२-मनकी इच्छाबिदूनभी जो अधर्मीकों मानदेना पडताहै  
उसमें मोहनीकर्मका उदय जानना, झूठीहुंडी-नोट-झूठदस्तावेज-  
और झूठाशिका-बनाना महापापहै, इसमें स्थूलमृषावाद विरमण-  
व्रत टूटजाताहै, जुआखेलनेका त्याग आठमेव्रतमें-मांस और म-  
दिराका त्याग सातमेव्रतमें-शिकार और चौरीका त्याग पहिले  
तोसरमें-और-वेश्यापरस्त्री निषेध चतुर्थव्रतमें दाखिलहै, तमाखूकी  
बीडी खादिमआहारमें होनेसें दुविहारकेप्रत्याख्यानवाला पियेतो  
बेमुनासिब नही, लेकिन ! तमाखू एकीलीहोनाचाहिये, दूसरीत-  
रहका मसाला जैसे चिलम-या-हुक्केकी-तमाखूमें मिलायाजाताहै  
ऐसाहोनाठीकनही, तमाखू-चलम-और-हुक्का-तीनोंही असलमें  
सागदेने योग्यहै.

३३-पंचाशकसूत्रकी टीकामें खुलासाहैकि-जोशरूखा-जिन-



मंदिरकी नैकीसें नौकरीकरे-सूत्रधार-या-रंगरौशनकरनेवाला नै कीसें जिनमंदिरका कामकरे और देवकेखजानेमें तनखाह लेकर खावेतो कोइपाप नहीं, हरामखोरीसें जालसाइसें बदनियत-या-चौरीसें-देवद्रव्यखायगा महापापका बंधकरेगा,कोइशरूख लिखारी है,और नैकीसें धर्मपुस्तक लिखकर ज्ञानद्रव्य लेवे उसकोभीकोइ पाप नहीं, कोइश्रावक जिनमंदिरकी नैकीसें नौकरीबजाकर देव द्रव्य खावे तो-वह-देवद्रव्य-नहीं अपनी नौकरीके दामहै इसलिये उसकेखानेमेंकोइहर्जनही, श्रावकलोग मंदिरकी नौकरीकरनेसें परहेज इसलियेकरतेहैंकि-स्यात्-कभी बदनियतसें देवद्रव्य खाया जायगा तोअच्छीनहीं, लेकिन! जोशरूख बदनियत न करे-और अपनेआत्माकोबचाकर नौकरी करेतोउसको व्याजबीतनखाहलेनेमें कोइहर्जनही,हरेकमंदिरमें नौकरोंकी तनखाह व्याजबीतइसें मु-कररकरनीचाहिये जिसमें उनलोगोंकीनियत ठीकरहे और देव द्रव्यकाबिगाड नहो-चावलबदामवगेराकों बेचकरभंडारमेंजमाकरानाचाहिये-मीठाइ-और हरेफलवगेरा-नौकरोंकों-देदेना,लेकिन! एकहीपरनियतनहीं जो-नैकनियतहो उसकोदेनाअच्छा-कइगांव नगरोंमें-यतिऔर श्रावकवगेरा-मंदिरकी चीजोंसें अपनेनिजका काम लेतेहैं महापापबंध करतेहैं,अगर कोइकों जरूरतहोतो-मंदिरउके खजानेमें उसका व्याजबी किरायादेकर काममें लावे कुछहरकत नहीं,बिनाकिरायादिये देवमंदिरकी कोइचीज उपयोगमें लाना बड़ेपापबंधकाकारणहै.

३४-जैनआगमके कितनेकनाम इसीकिताबके(१७१)पृष्ठपर

लिखेगयेहै. औरभी-मुनिये!?, उपदेशमाला-२, प्रवचनसारोद्धार-३, वसुदेवहिंद-४, धर्मरत्न-५, पंचाशक-६, उपमीतिभवप्रपंच-७, अंगविद्या-( इसमेंनिमित्तज्ञानकाबयानहै )-८, भद्रबाहुसंहिता-( विच्छेद होगइ. ) ९, चंद्रोन्मीलन-और-१०, मेघमहोदधि-( इनदोनोंमेंभीनिमित्तज्ञानहै )-११, सम्मतितर्क-१२, स्याद्वादरत्नाकरावतारिका-१३, अनेकांतजयपताका-१४, स्याद्वादमंजरी-१५, षड्दर्शनसंमुख्य-१६, प्रमाणसुंदर-१७, हेतुखंडन-( ये सातग्रंथ तार्किकोंके पढ़नेलाइकहै )-१८, हेमचंद्राचार्यरचितजैनद्रव्याकरण-१९, चंद्रप्रभा-२०, बुद्धिसागर-तथा २१-विनयविजयरचितव्याकरण-( ये चार शाब्दिकोंको पठनकरनेयोग्यहै. )-२२, हैमीनाममाला-२३, हैमनिघंटु-२४, हैमलिंगानुशासन-२५, अनेकार्थनाममाला, २६, देशीयनाममाला और-२७, पायलच्छी-( ये छहग्रंथ कोशग्रंथोंके शिरोमणि है. )-अमरकोश-बौद्धाचार्योंकाहै, जैनका-नहीं. २८, द्वाधायकाव्य-तथा-२९, मेरुतुंगाचार्यरचित-नेमिदूत वगेरा-कइ काव्यग्रंथहै-कहांतक लिखे, ३०-हेमचंद्राचार्यरचित-अलंकारचूडामणि-तथा-३१, बाग्भट्टालंकार-रसीकग्रंथहै, -३२, योगशास्त्र-३३, योगबिंदु-३४, योगविंशति-३५-अध्यात्मबिंदु-तथा-३६, योगदृष्टिमसुचय-( ये पांचशास्त्र योगकों प्रतिपादनकरनेवाले है. ) ३७, ज्योतिष्करंडक-३८, आरंभसिद्धि-३९, त्रलोक्यप्रकाश-४०, जन्मांभोधि-४१, भुवनप्रदीप-४२, यंत्रराज-४३, प्रतिष्ठाकल्प-और-४४, नारचंद्र ( ये-आठग्रंथ-ज्योतिष् और निमित्तज्ञानके प्रकाशकहै. ) ४५, नमस्कारकल्प-४६, सूरिमंत्रकल्प-४७, वर्द्धमानविद्या-४८, रिषि-

मंडल-४९, शक्रस्तवकल्प-५०, लोगस्सकल्प-५१, भक्तामरकल्प  
 ५२, पद्मावतीकल्प-५३, चक्रेश्वरीकल्प-५४-अपराजितमहाविद्या  
 ५५, रोगापहारिणी-५६, विषापहारिणी-५७, बंधमोक्षिणी-५८  
 श्रीसंपादिनी-५९, परविद्याउच्छेदिनी-६०-दोषनिर्नाशिनी-और  
 ६१, अशिवोपशमिनी महाविद्या-( ये-सतरांह-ग्रंथ-मंत्रविद्याके  
 प्रतिपादक है, )-घंटाकर्ण-और-वसुयारा-बौद्धमतकेग्रंथहै जै-  
 नके नहीं,

३५-(६२), औषधिकल्प-६३, युगप्रधानगंडिका-६४, ल-  
 लितविस्तरा-६५, तत्त्वार्थ-६६, उच्चाटनसूत्र-६७, समुपस्थापन-  
 सूत्र-६८, पूजाप्रकरण-६९, अष्टक-७०, षोडशक-७१, अंगुल-  
 सप्तति-७२, कालसप्तति-७३, संबोधसप्तति-७४, हेमचंद्ररचितद्वा-  
 त्रिंशका-७५, सिद्धसेनदिवाकररचितद्वात्रिंशका-७६, यशोविजय-  
 कृतद्वात्रिंशका-७७, भवभावना-७८, धर्मबिंदु-७९, ज्ञानबिंदु-८०  
 उपदेशपद-८१, कर्मग्रंथ-८२, क्षेत्रसमास-८३ द्वादशारनयचक्र-  
 ८४, नयप्रदीप-८५, प्रशमरति-८६, पंचवस्तु-८७, विवेकविलास  
 ८८, लोकप्रकाश-८९, हैमन्यास-९० त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित-  
 ९१, प्रभाषिकचरित-९२, आचारदिनकर-९३, आचारप्रदीप-  
 ९४, वृंदारवृत्ति-९५, श्राद्धकौमुदी-९६, श्राद्धदिनकर-९७, ध-  
 र्मपरिक्षा-९८, लोकतत्त्वनिर्णय-९९, सिंधूरप्रकर-१००, कर्पूरप्र-  
 कर-१०१, हिंगुलप्रकर-१०२, शांतिचरित-१०३, पार्श्वचरित-  
 १०४, श्रीपालचरित-१०५, समरादित्य-१०६, भुवनभानु-१०७  
 श्रेणिक-१०८, अभयकुमार-१०९, कुमारपाल-और-११० पांड-  
 वचरित-१११, अर्हन्नीति, (इसमें दीवानी फौजदारीके कानून

है.) टीका-भाष्य-निर्युक्ति-चूर्ण-वगेराकी मिनतीकरे-या-संपूर्ण जैनग्रंथोका बर्ननलिखे तो बहुतकुच्छअर्सा-और-स्थानचाहिये, इसलिये इतनेहीमें संकोचकरके दिग्दर्शन कियाहै,

३६-यह हरवस्तुयाद रत्नोकि-अशुभकर्मके उदयसे व्यापारमें नुकशान और शुभकर्मके उदयसे फायदा होताहै, मनपसंदकी चीज न मिलना यही जीवोंको दुःखका कारणहै लेकिन! उसके मिटानेका उपाय-शिवाय-संतोषके और कोईनहीं. झुरते क्यों हो? देवगुरुधर्मकी सेवाकरो इसीसे अच्छा होगा. अपने आत्माको पापकर्मसे बचाना इसकानाम स्वदया और दूसरेजीवोंके प्राणोंकी रक्षाकरना इसकानाम परदयाहै, मनके इरादे बिदून जो कार्यकरोगे उसमें हिंसाहोगी-बहु द्रव्यहिंसाहै भावहिंसा नहीं, भावहिंसा बिदून पाप नहीं, संसारका स्वरूप देखकर जो तुमको हानीयोके वचनोंपर आस्तिकभाव पैदा होताहै उसीका नाम सम्यक्तकी दिप्ति जानो, जब तीर्थोंकी यात्राको जातेहो-या-शास्त्रसुनने बैठतेहो-उसवख्त जो तुमारे रोमरोम प्रफुलित होजाते हैं उसीकानाम सम्यक्तकी लहेर समझो. पुन्य-या-पापकर्मका-बंधहोना-मनःपरिणामके तालुक है. एकसरस्वी क्रिया करतेहुवेभी-सम्यक्ती-और-मिथ्यात्वीमें-इतनाफर्क हैकि-एकज्ञानी-और-दूसरा अज्ञानी,—

३७-कोई मर्द-या-औरत-अपने प्यारेके मरे पीछे-शोकसंताप न रखकर सौनापीटना-न-करेतो बतलाओ उसने लोकविरुद्ध किया-या-नहीं? जवाबमें कहा जायगा. लोकविरुद्ध नहीं बल्किन् ! अच्छा किया, कइ औरतें ऐसोहैं जो पतिकेमरे बाद

वर्षरौजपीछेभी शोकरखकर देवदर्शन-तीर्थयात्रा-और-व्याख्यान सुनने नही जाती-बतलाओ ज्ञानीयोंके ज्ञानमे वह गुनहगार है-या-नही ?-( जवाबमें ) कहाजायगा गुनहगारहै, कइदेशमें औरतें पर्देनसोन रहती है उनमेंसें किसीनेदेवदर्शनतीर्थयात्रा-और-व्याख्यान सभामें आते पर्दा नहींकिया बतलाओ उसने लोक-विरुद्ध नहीं जवाबमें कहा जायगा-लोकविरुद्ध नही बल्किन् ! अच्छाकिया, वह रसम किसकामको जिससें धर्मको धक्का पहुचे, कइमर्द और औरत-शोकके कारण-प्रभावना-या-स्वधर्मावात्सल्यमें सामील नही होते, बतलाओ ज्ञानीयोंके ज्ञानमें-वें-दोषकेभागीहै-या-नही ? ( जवाबमें ) कहा जायगा दोषके भागीहै,

३८-शोककेवरुत्त धर्मकरना समझदारोंका कामहै, जिसवरुत्त तुमाराअत्यंतस्नेही मनुष्य याद आजाय शिवाय ज्ञानचर्चाके औरकुच्छ खयालमें मतलाओं, और दिलकों नसीयतदंतेरहोकि-मोह करना मुनासिब नही, भोजनका स्थाल तयार है लेकिन ! तुमारे भाग्यमें नहोगातो धरा रहेगा. खूब सुरत औरत मौजूदहै लेकिन-तुमारे भोगाबलीकर्मका अभाव होगा तो कभी उपभोगमें न आसकेगी. इसीतरह खूबसुरत-मर्द विद्यमान होतेहुवेभी औरत उससें भोग-या-संयोग-हामिल-न करसकेगी. उमदापलंग बिछाहुवाहै लेकिन ! तुमारे भाग्यमें न होगाता हर्गिज उसपरन-सोय सकोगे, धनदौलत-पकान-ओर गहनेकपड़े-बहुतथे-लेकिन! तुमारेभाग्यमें नही थे इसलिये हाथसें चलगेये-सौच क्यों करतेहो जानकार होकर अज्ञानी बनना है तो मरजी तुमारी !

अन्नं नास्त्युदकं नास्ति—नास्ति मुद्गयुगंधरी,  
धान्येषु लवणं नास्ति—तन्नास्ति यद्विभूज्यते, !

दुनियामें दुखी वह समझाजाताहै जिसकेघर खानपानकेलिये  
अन्नजल-और-नमकभी-नही, तुमारेघर सबकुछहै फिर किसबा-  
तसें दुखी समझतेहो ? यूँतो संसारमें सब दुखी है, तनक ज्ञान दृ-  
ष्टिमें विचार लो, और थीरशांत बनो,

३९-जिसकेशाथ पहिले तुमारा दोस्ताना हो-और-पीछेमें  
विनाकारण दूट जाय तो समझलो ! तुमने पूर्वभवमें बेगुनाहै उन-  
केशाथ विरोधकियाथा, जिसका तुम बुराकरो-और-वो-तुमको  
चाहेतो जानलो पूर्वभवमें तुमने उसपर रहम किइथी, जिसें देख-  
कर तुमको राग उत्पन्नहो-वह-तुमारा पूर्वभवका हितकारी-और  
जिसको देखकर द्वेष आवे पूर्वभवका द्वेषी समझो, रागद्वेषको क-  
मकरनेका उपाय लेना अच्छा है, सत्तामें तो ग्यारह बारहमें गुण  
स्थानपर पहुंचोगे रागद्वेषका नाश होगा. कइदेशोंमें ऐसारिवाज  
देखागया जब कोई पर्दानसीन औरत जिनमंदिरमें दर्शनको जावे  
तब अपनेशाथकीदासीयोंकोभी प्रतिमाजीके सामनेतक लेजातीहै  
बतलाओ ! यह बें अदबीका कामहै या-नही ? [ जवाबमें ] कहा  
जायगा बेशक ! बेंअदबीकाकामहै, अगर मंदिरके बहार रखकर  
जावेतो बेंअदबी नही. दासदासी एकतरहकी चपरास है, देवदर-  
बारमें मानको निचा करके जाना चाहिये इसोतरह गुरुके मका-  
नमेंभी अदबरखकर जाना ठीकहै, अगर सवालकियाजायाके-दा-  
सदासीकोभी धर्मप्राप्तिहोजायगी इसलिये-मंदिरमें और-गुरुओंकी

व्याख्यानसभामें साथ लेजानेसें क्या हर्ज है? ( जवाब )-साथ लेजानेसें देवगुरुकी अवज्ञा होगी, तुम मंदिरमें-या-गुरुओंकेसामने पहुचचुके-आर-पीछेसें कुच्छदेरके बाद आवे तो हर्जनही. क-इदेशोमें बडे घरानेकी स्त्रीये-साथलाइहुइ दासीयोंद्वारा साधुलोगों-सें अर्जकराती है कि-मुजे-प्रत्याख्यान-कराइये. कहिये! उसने गुरुकी बें अदबी किइ-या-नही? ( जवाबमें ) कहा जायगा बेशक ! बेंअदबी किइ, खुद अपने मुखसें बोलना चाहिये-पास खडेहुवे-सासु-सुसरेकी शमे-न-कर-और-साफमाफ-बोले तो क्या हर्ज है ?-सासुसुसरेसे गुरुओंका दर्जा-बढकरहै,-देवगुरुके सामने संसारीक सगोंकों ताजीमदेनेसें अविनय किया मबुत होगा, दुनिया दिवानी है इसका लिहाज करके लोकोत्तर पुरुषोंका अविनय करना ठीक नहीं.

४०-जैन शास्त्रोंमें जो-निन्हव-सात कहे गये है-मो-उपलक्षण मात्र जानना. जैसे दशअच्छेरेके शिवाय कइ ओरभी हुवे लेकिन ! सामान्य रुपसें दशही कहे गये-सतीस्त्रीये अनेक हुइ लेकिन!मुख्यताकरके सोलहकहीगइ,ऐमेनिन्हवभी कइहुवे-और-होयगें लेकिन ! मुख्यतासें सातही कहे गये इस जमानेमें भारतसेत्रके जीवोंकों-धार्मिकसम्यक्त-अविधिज्ञान-और- जातिस्मर्णज्ञान-नही होसकता, सबबकि-विच्छेद हो गये. ग्यारहमें गुणस्थानपर कषासु का उपशम होता है तोभी वहांसें जो गिरना फरमाया-सबब-उसका मिथ्यात्वका उदय जानो. आत्माके उत्तम अध्यवसायका नाम गुणस्थान कहा, अव्यक्त मिथ्यात्वसें व्यक्तमिथ्यात्वमें आना इसीअपेक्षा-प्रथमगुणस्थान कहागया, छठेगुणस्थानसे लेकर चौ-

दहमें गुणस्थानतक बर्तनेवाले साधुपदमें गिनेजाते हैं, जैनशास्त्रोंमें जिसजिस मतका बयान आया-और उनकों-मिथ्या-कहे गये सबव उसकायदजानो-वें-झूठे हैं उनके तत्व युक्तिप्रमाणसे खंडित हो जाते हैं, और-उनके मननकियेहुवे देव-रागद्वेष करके ब्रह्महै.

४१-चलती सवारीमें-सामायिक-प्रतिक्रमण-करना मुनासि-बनही. जमीनपर स्थिर होकर करना चाहिये. दृष्टसे-या-कीलसे बंधा हुवा जहाजभी स्थिर नहीं कहा जाता-मुनासिब है निचे उतरकर सामायिक बगेरा करना, चेडाराजा और कौणिककी जब बाराह वर्षतक लडाइ हुई उस वख्तभी हाथीपरसे उतरकर चेडा राजाने प्रतिक्रमण किया लिखा है, धन्यवाद देना चाहिये ऐसे पुरुषोंकी धर्मक्रियाकों-जो-लडाइके वख्तभी-धर्मकों नहीं भूलते थे. आजकल कइ लोग कहदेते हैं हमकों फुरमत नहीं मिलती लेकिन ! यह सब झूठे बहाने हैं, हजारकार्य छोडकर जैसे एश आराममें लीन होतेहो-अगर-देवगुरुधर्मपर सच्चारण होतातो उनपरभी लीन रहते.

४२-जीवति-जीविष्यतिचेति-जीवः-चैतन्यलक्षणो जीवः-तद्दीपरीतः अजीवः-१. पुनाति पवित्रीकरोति आत्मानं इतिपुन्यं, [ अन्नं पानं च वस्त्रं=आलयःशयनासनं-शुश्रूषा वंदनं तुष्टिः-पुन्यं नव विधंस्मृतं, ]-२, पातयति आत्मानं इतिपापं, ३, आश्रवन्ति प्रविशन्ति आत्मनि कर्माणियेन-स आश्रवः-४, संव्रियते प्राणातिपातादि-पापकारणं येन परिणामेन-स-संवरः-५, कर्मणां परिश्राटनं निर्जरा, ६, जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलान् आदत्ते यत् स बंधः मोचनं कर्मपाशावियोजनं आत्मनो-मोक्षः,-७अन उसका



नाम जिससे मनके परिणाम स्थिर किये जाय द्रव्यमनरूपी-और-भावमन-अरूपी-कहा, कितनेक लोग आगकी धुनीके सामने बैठकर ध्यान करते हैं और कहते हैं देखो ! ध्यानका प्रताप हमे आगभी नहीं सताती, असलमें-वै-लोग-एकतरहकी जड़ोंके जलमें घीसके शरीरपर लेंप करके बैठते हैं, वनस्पतियोंमें कइ ऐसीभी है जो चौरासोधुनी लगाकर सामने बैठो आग बिल्कुल न सतायगी, अगर आकका दूध-या-कदलीका रस-कुमारीवना-स्पतिके-रसमें मिलाकर शरीरपर लेंपकरलो-और-आगकी एक धुनीके सामने बैठजाओ-आशा है आगसें न जलागे, पीप-का-लीमीरच-और-सोंठ-खूब चवाचवाकर खाओ-और-उपरसें तुर्त आगके इंगारे मुखमें लेलो, आशा है नहीं जलागे,-

४३-अंकोलके तेलमें ऐसीताकतहै कि-जिसजिसवृक्षके बीजोंको इसमें भीगोंकर जमीनमें बोदिये जायतो आशा है पहरभरमें वृक्ष उत्पन्न होसकेगा, बाजीगर लोग देखेंहोंगें इसीमें काम लिया करते हैं, हडताल-मिंदूर-और-आसगंध-कदलीके रसमें पीसकर-जो-खी-तिलककरेगी-और-जहां जायगी इज्जत पायगी, भृंगराज-अपामार्ग लज्जालू-और-सहदेवी-जलमें पीसकर-जो-श-खश-तिलक करेगा-और-जहां जायगा इज्जत पायगा.

४४-( पंच समवायका बयान. )-१, काल-२, स्वभाव-३, नियति-४, उद्यम-और-५, कर्म-इनपांचोंमें कौन ताकतवर-और कौन-कमजोर रहेगा, सुनिये !

( कालवादी कहताहै. )

कालः स्रजति भूतानि-कालः संहरति प्रजाः,

कालः सुप्तेषु जागर्ति—कालोहि दुरतिक्रमः, १,  
 फलंति वक्षाः कालेन—काले वीर्यं अवाप्यते,  
 काले पुष्पवती नारी—सर्वं कालेन जायते, २,

( स्वभाववादी. )

( वसंततिलका छंदः )

हंसा गतिं पिकयुवा कलकूजितानि,  
 नृत्यं शिखी परमसौख्यगुणा मृगेंद्राः  
 सौरभ्य शैत्यललितं मलयद्रिवृक्षाः  
 कैः शिक्षिताः सुकृतकर्मकृतः कुलानाः १,  
 निम्नोन्नतं वक्ष्यति को ? जलीना,  
 विचित्रभावं मृगपक्षिणां च,  
 माधुर्यमिक्षो कटुता मरीचे,  
 स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धं, २

( नियति वादी. )

नहि भवति यन्न भाव्यं-भवति च भाव्यं विना प्रयत्नेन  
 कैरतलगतमपि न पश्यति-यस्यतु भवितव्यता नास्ति ?  
 तादृशी जायते बुद्धिः—व्यवसायोपि तादृशः  
 सहायाः तादृशा श्वैव-यादृशी भवितव्यता, २

( उद्यमवादी. )

उद्यमेन-हि-सिध्यन्ति-कार्याणि-न-मनौरथैः,  
 नहि सुप्तस्य सिंहस्य-प्रविशन्ति मुखे मृगाः, १,  
 आलस्यं हि मनुष्याणां-शरीरस्थो महान् रिपु,  
 नास्त्युद्यमसमो बन्धुः-कृत्वायं नावसीदति, २,  
 उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः,  
 दैवं प्रधानमिति कापुरुषा वदन्ति,  
 दैवं विहाय कुरू पौरुषमात्मशक्त्या,  
 यत्ने कृते यदि-न-सिध्यति कोत्रदोषः, ३,

( कर्मवादी.

सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता,  
 परो ददातीति कुबुद्धिरेषा,  
 अहं करोमीति वृथाभिमानः  
 स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः १,  
 दैवे विमुखतां याते—  
 न कोप्यस्ति सहायवान् ,  
 पिता माता तथा भार्या—  
 भ्राता वाथ सहोदरः, २,  
 वने जनेशत्रुजलाग्नि मध्ये,

महार्णवे पर्वतमस्तके वा,  
 सुप्तं प्रमत्तं विषमं स्थितं वा  
 रक्षन्ति पुन्यानि पुराकृतानि, ३,

न जूतपूर्वोनच केनदृष्टो-हन्तः कुरंगो न कदापि वार्त्ता,  
 तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य-विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ४,  
 धनानि जूमौ पशवश्च गोष्ठे-ज्यार्या गृहचारि जनः श्मशाने,  
 देह श्रितायां परलोकमार्गे-कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ५,

यथाधेनुसहस्रेषु-वत्सो विंदति मातरं,

तथा पुराकृतं कर्म-कर्त्तारमनुगच्छति, ६,  
 सुहृदो ज्ञातयः पुत्रा-भ्रातरः पितरावपि,  
 नानुस्मरन्ति स्वजनं-यस्य दैवमदक्षिणं, ७.

विपत्तौ किं विषादेन-संपत्तौ हर्षेण किम्, .

ज्वितव्यं ज्वत्येव-कर्मणामीदृशी गतिः, ८

अर्चितितानि दुःखानि-यथैवायांति देहिनां,

सुखान्यपि तथा मन्ये-दैवमत्रातिरिच्यते, ९

किं त्वं न वेत्सि जगति-प्रख्यातं लाजकारणे मूलं,

विधिलिखिताक्षरमात्रं-फलति कपालं न जूपालः, १०,

अरक्षितं तिष्ठतिदैवरक्षितं-

सुरक्षितं दैवदत्तं विनश्यति,

जीवत्यनाथो विपिनेप्यरक्षितः--  
 कृतप्रयत्नोपि गृहे विनश्यति ११  
 प्राप्तव्यमर्थं लज्जते मनुष्यो--  
 देवोपि तं लंघयितुं न शक्तः.  
 तस्मात्र शोचामि न विस्मयो मे--  
 यदस्मदीयं नहि तत्परेषां, १२  
 माधाव माधाव विनैव देव--  
 नो धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः  
 चेष्टावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः--  
 श्वा धावमानोपिलज्जतलक्ष्मीं १३,  
 यः सुंदर स्तछनिता कुरुषा--  
 या सुंदरी सा पतिरूपदीना.  
 यत्रोज्ञयं तत्र दरिद्रता च--  
 विधे विचित्राणि विचेष्टितानि, १४,  
 विधौ विरुद्धे न पयःपयोनिधौ--  
 सुधौघमिधौ न सुधा सुधाकरे,  
 न वाञ्छितं मिध्यति कल्पपादपे--  
 न हेम हेमप्रज्ञेव गिरावपि १५  
 ज्ञीमं वनं ज्वति तस्य पुरं प्रधानं,

सर्वो जनः सुजनतामुपयाति तस्य,  
 कृत्स्ना च भू र्जवति सन्निधिरत्नपूर्णा  
 यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य, १६  
 नमस्यामो देवान ननु हतधियस्तेपि वशगाः  
 विधिर्वैद्यः सोपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः  
 फलं कर्मायत्तं यदि किममरैः किंच विधिना,  
 नमस्तत्कर्मैर्न्यो विधिरपि न येज्यः प्रज्जवति, १७  
 जातः सूर्यकुले पिता दशरथः क्षोणीभूजामग्रणीः  
 मीता सत्यपरायणा प्रणयिनी यस्यानुजो लक्ष्मणः  
 दोर्दंडेन समो नचास्ति भुवने प्रत्यक्षप्रज्ञः स्वयं  
 रामो येन विमंवितापि विधिना चान्ये जने का कथा, १८  
 जग्राशस्य करंरुपीमिततनो स्त्रानिंन्द्रियस्य क्रुधा,  
 कृत्वाखु विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे जोगिनः  
 तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा,  
 लोकाः पश्यत देवमेव हि नृणां वृक्षैक्षये कारणं, १९  
 कांतं वक्ति कपोतिकाकुलतया नाथांतकालोधुना,  
 व्याधोऽधो धृतचापमज्जितशरः श्येनः परिभ्रामति,  
 श्वं सत्यहिना स दृष्ट इषुणा श्येनोपि तेनाहतः  
 तूर्णं तौ तु यमालयं प्रति गतौ दैवी विचित्रागतिः २०,

४५—काल-स्वभाव-नियति-उद्यम-और-कर्मका संवाद पुरा हुआ, आपलोगोंको मालूम हुआ ?—कौन ताकतवर रहा ?—अकलसे दर्याफतकरके बतलाओ ! निश्चयनयसे कर्म-और-व्यवहारनयसे अपनीअपनीजगह सब प्रधान है, उद्यम खालीजासकताहै, कर्म-खालीनहीजाने, अमलमें-मुखदुखके दाता-कर्महै, स्वजन कुटुंब-परिवार-और-दोस्त-जब-भाग्य-खोटे आयमें कोई साथी नबनेगा. रुपया लेकर कोई नहींआया, नकोई साथ लेजायगा. खूब सुरत औरतका तुमकों घमंडहै-तो-यादरखो ! वह-तुमारेशाथ न चलेगी, शरीरही तुमारा जवाबदेनेवालाहै तो-नोकरचाकरोकी क्या चलाइ ?—कंजुसोकी सबमें ज्यादा खराबी होगी,—अगर सुखी होनाहै-तो-धर्मपर-निगाह बढाओ-और-सुकुत-हासिलकरो, जि सकों जैनमतमें कर्म-कहा-उसीकों दूसरेमतवाले-विधि-विधात होनहार-भाग्य-पुन्य-कृतांत-तकदीर-और-इश्वर कहकं बान करते है,—

४६—कर्म-आठतरहके-है. ?—ज्ञानावरणीयकर्म-आंखके-पटे-समान-कहा, जैसे किसीशस्त्रकी आंखोपर पटाबांधदियाजाय-तो-वह-देखनहीसकता-ज्ञानावरणीयकर्मके उदयसे जीव-ज्ञान-नही पासकता. २, दर्शनावरणीयकर्म-चौकीदारसमान कहा, जैसे पह-रेवालाशस्त्र-राजाकी मुलाकात नहीहोनेदेता-दर्शनावरणीयकर्म जीवकों-धर्मपर श्रद्धा नहीआनेदेता, ३, वेदनीयकर्म-सहेतलीपटो तलवारसमान कहा. जैसे सहेत लगीहुइ तलवार कोइशस्त्र बानसे चाटे और तकलीफ उठावे-बेसे-ऐशआराम भोगताहुवा जीव अपने आपको दुर्गतिरूप तकलीफ हासिलकरेगा. ४, मोह-

नीयकर्म मदिरासमान कहा, जैसे मदिरापीइकर आदमी ज्ञाताहै मोहकर्मरूपमदिरासें जीव-मोहांध-बनताहै, धन-दांधो-पुत्र और निजशरीरपर रागलाना इसीकानाम केदीलत-स्त्री ५, आयुष्यकर्म-बेंडीसमान कहा, संसाररूपी केदगइनीयकर्म है, आयुष्यकर्म एकबेंडी है. ६, नामकर्म चितारेस्त्वानेमें जीवकों चिनेरा तरहरतइके चित्र बनाताहै नामकर्मके जमान कहा. जैसे और-शरीरवगेरा बनाताहै. ७, गोत्रकर्म-उसवारीये जीव-रूपरंग या-नीच-जातिका पाना. ८, अंतरायकर्म - फौ नामहै-जो-उंच-कहा. जैसे भंडारी-नहांतो-कुच्छदेरतक राजाके भंडारीसमान सकता वैसे अंतरायकर्मके उदयसें-जीव-राजाभी-सर्व-नहीकर-कपडा-गहेना-वगेरा चीजोंसें वंचित रहव-स्त्री-पुत्र-घर-हाट-हवेली

४७-ज्ञान-और-ज्ञानीयोंकी बेंअदबी-ताहै.

कर्म बंधताहै, शास्त्रकं वचनकों लोपकरने-करनेसें ज्ञानावरणीय-सचे देवगुरु धर्मकों झूठे समझना दर्शनावरणीयकजैसा कोईपाप नहीं. इंद्रियोंकी विषयपुष्टिकेलिये जीवोंका बधकरनेसें-धर्मका उदयहै, पांच और-उनकों तकलीफ पहुंचानेसें अपनेकों अज्ञातावेदनीकरनेसें-बंधताहै, उनका बचावकरनेसें-मारपीट-न-करनेसें-अपनेकों शास्त्रकर्म तावेदनीयकर्म-बंधताहै, शातावेदनीयकर्मके उदयसें-जीवकों-अग-लेजन्ममें-अच्छारूप मिले. अच्छा खानपान-अच्छीस्त्री, और-स्त्रीकों अच्छापुरुष मिले, तरहरतइके दुस्-और-मानभंग होना-अज्ञातावेदनीयकर्मका फल है, मोहनीयकर्मके उदयसें रागद्वेष-कामक्रोध और लाभ ज्यादेरहेगा. धर्मकरना रुचे नहीं. शिवाय कामभोग-और-एकआरामके-और कुछबात नहीं-यहसब मोहनी-



यकर्मके लक्षण जानो, इसकों कमकरनेके उपाय लेने चाहिये, म  
 हारंभ-महो-लोभ-पंचेंद्रियजीवोंकी घात-और-मांसभक्षणकरनेसें  
 जीवकी दुर्गति होगी. धर्म और धर्मीजनोंकी सेवा करनेसें. अच्छी  
 गति होगी, नामकर्म दोतरहका-शुभ-और-अशुभशुभसें-यश-और-  
 अशुभसें अपयश होता है, उंचगोत्रका मदकरनेसें-अगलेजन्ममें नि-  
 चगोत्र मिलेगा, अंतरायकर्मके उदयमें जीवकों हरवातकी अंत-  
 राय रहेती है, फालियदा विचारो और होवे-नहीं. अच्छाखाना  
 चाहो-और-मिले नहीं. अच्छेकाभभोग चाहो और अभाव रहे,  
 दानदेनाचाहो और दुराग्या-न-जाय. जिसकामका इरादाकरो  
 और बन-न-पड़े, यह सब अंतरायकर्मके फलहै, जब सबपापमें  
 रहितहोगे तुमारी मुक्ति होगो निस्पृहहोकर तपकरांगे सबका  
 छुटकारा पाओगे, ईश्वर किसीको सुखदुःख नहीं देता, जैसा क  
 जीव-करेगा-वैसाफल-काम-भोगेगा,—

४८-इसजमानमें सर्वज्ञ-और अवधिज्ञानीनहीरहे, किमतरह  
 मालूमहोकि. कि-किसजीवके ज्ञानावरणीयवगेराकर्म कितनाहै? (जवाब.)  
 -जि-किसकीजन्मपत्रीमें सूर्य-ऊंचका-मित्रक्षेत्री-या-स्वशृहीठाकर पड़ा  
 तो-उसकेज्ञानावरणीयकर्म-थोडाजानना, इसीतरह चंद्रमासें दर्शना-  
 वरणीयकर्म-मंगलसें अशातावेदनीय-बुधसें मोहनीय-वृहस्पतिसें  
 नामकर्म-शुक्रसें गोत्रकर्म-शनिसें आयुष्यकर्म-और-राहुसें अंतराय  
 कर्मका-विचारकरना, वर्षपत्रमें जो-एकविशेषग्रह-मुंथानामसें ल-  
 यायाजाताहै-वह-भविष्यतजन्मके उपार्जितकर्मोंकासंचय जानना,  
 चिकित्साशास्त्रकी सचावटमें जैसे दस्त-और-उल्टीहोनेकी-दवा-  
 गवाहीदेतीहै ज्योतिषशास्त्रकी-सचावटमें चंद्रसूर्यकाग्रहण गवाही

देताहै, वर्षाकालमें-जब-शुक्रसें सप्तमराशिपर चंद्रमा आजाय और उसपर शुभग्रहोंकी दृष्टिपड़ेतो वरसातजरूरहो, इसीतरह शनिसें भी-पंचम-सप्तम-और-नवमराशिपर चंद्रमा आजाय और-शुभ ग्रहोंकी उसपर दृष्टिपड़ेतो वरसातजरूरहो.ग्रहोंके उदय-अस्तके समयभी वरसातका होनासंभवहै, सूर्यके आगे-या-पीछे-बहुतसेग्रह-आजाय उसवख्तभी निश्चयकरके दृष्टिहोगी ऐसाजानना, बुध-शुक्रका-या-बुध-गुरुका-अथवा-गुरुशुक्रका-मिलापहो-उसवख्त-भी दृष्टिजरूरहोगी. श्री हमप्रभसूरि-त्रैलोक्य प्रकाशग्रंथमें फरमाते हैं कि—

चलत्यंगारके वृष्टिः—उदये च बृहस्पतौ

शुक्रस्पास्तमने वृष्टिः—त्रिधा वृष्टिः शनीश्वरे—१,

उदयास्तमने चारे—वक्रं याति शनीश्वरे

जलनाडीं गताःखेटा—महावृष्टिकरा मताः २,

४९.—हरकज्येष्ठर्माहनेके-शुक्रपक्षमें-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-और-ज्येष्ठा-यह पांचनक्षत्र अंदाजदशमीतिथिमें लेकर पूर्णिमातकहांतेहैं, इननक्षत्रोंकेदिनोंमें देखनाचाहियेकि-आकाशमें बादल-विजली-वर्षा-बुंदपात-और पूर्वोत्तरकी हवाकिसकिसवख्त चलतीहै?—अगरचित्रानक्षत्रमें यहलक्षणदेखोतो अषाढमहिनेमें अच्छीदृष्टिहोगी ऐसाजाना, स्वातिनक्षत्रसें श्रावणमहिनेका विचार करो, विशाखामें भाद्रपदमहिनेका-अनुराधामें आसोजवदीका-और ज्येष्ठामें आसोजसुदीका-विचारकरो, यहां जो आसोजवदीकही उसकों गुजरातदेशकी अपेक्षा भाद्रवावदीजानना, सबबकि-गुज-

रात-और-दखनके शिवाय और जगह महिनेकी शुरुआत बदीमें मानीजातीहै,-फिर पूर्णिमा-या-प्रतिपदाकेरौज जो मूलनक्षत्र होताहै-उसकी सर्वघटिका देखो.जिसवरुतसें मूलनक्षत्रलगे औरउतरे उसकी सबघड़ीयां जितनीहो-अर्थात्-(६०)के-अंदाजहोंतीहै-उसकी आधीआधीघड़ीकी-एकएकतिथि-अषाढकृष्णप्रतिपदासें लेकर आश्विनशुक्लपूर्णिमातक(१२०)तिथियोंका विचार इसतरह करांकि-मूलकी-जिसघटिकामें वर्षाहो-उसतिथिमें वर्षा नहोगी-और-जिसघटिकामें-अत्यंतधूप-अमुझा-वायुबंध-और-मनुष्योंको घबराहट-ऐसेलक्षण देखोउनउनतिथियोंमें अच्छीअच्छीवर्षाहोगी ऐसाजानो,चित्रा-स्वाति-और-विशाखाकेलिये-अषाढश्रावणऔर भादवेकी जोवातकहीगइहै उनकीभी घड़ीयोंकेहिसाबसें वृष्टि दे'वशक्तेहो-वहांएकएक तिथिकेलिये दो'दोघड़ीका हिसाब लगा-ना होगा,-

४९-यहनीचेलिखेहुंवें(१.४)वाक्यरत्न-हरवरुत यादरखो,१, जिसकी औरत लडकाछोडकर मरगइहो-मुनासिबहै दूसराविवाह नकराना-घरमें दंगारहेगा,दंगेसें दौलतकी हानिहोगी.अगरतुमकों कामबिकारकी शांति नहीहुइहै-तो-खेर!विवाहकराकेभी उसलडकेको नयीऔरतसें ज्यादा समझो,२,जिसशरूखकी औरतकों संताननहांतीहो-विवाहकियेबाद बारहवर्षतक राहदेखनाठीकहै बाद अगलीऔरतके खानपानका बंदाबस्तकरके दूसरा विवाहकराना मुनासिबहोगा. ३,इसजमानमें लंबीउमर-रहीनहीं इसलिये लाजिम है पचासवर्षकेबाद विवाह नकराना,बुढीउमरमें विवाहकरानेसें-कुल-कलंकित होताहै,४,औरतसें-मर्दे-तीनगुनीउमरवालाहो तब

सकतो किसीकदर विवाहकाहोना ठीकभी कहेगें.लेकिन! इससे ज्यादाउमर-मर्दकीहै-तो-उसविवाहकों बेमुनासिबहुवा कहेगें,

(दोहा.)-साठवर्षका होथके-जो-नर-ब्याह करंत,-चो बुढा वह बालकी-तंतु काह करंत,-१,-(५)कोइशख्श किसीबजहसे विरादरीबहार कियागयाहो-और-वह-सामीलहोनाचाहे तो मु-आफिककायदे अर्हअतीके प्रायछितदेकर सामीलकरलो. विरादरीके मुखीयोंकों चाहिये किसीकों अदावतसे विरादरीबहार न करे, खोटाकलंक लगाना नरककी निशानी है, लिहाजमें पढकर किसी-दोषितमनुष्यकों विरादरी बहार न-करनाभी अन्याय और अधर्मका कारण है,—

५०-(६) हरेकशख्शकों-चाहियेकि-सालभरकी पैदाशमेंसे रुपये आठआना धर्मकाममें (यानी) सप्तक्षेत्रमें लगावे, इतना न बनेतो चारआना-दोआना-अखीर एकआनातो जरूर लगावे, रुपयेमेंसे एकआनाभी नखर्चेगा तोर्थकरके हुकमकों तोडनेवाला समजाजायगा, हजारोंरुपयेका ब्याजआताहै उसकोंभी पैदाश स मझो और धर्माश उसमेंमेंभी निकालो. औरत अपने पतिमें जो कुछ मांगलेती है उसमेंसेभी धर्मका-आधाचौथाइ-दशांश-षोड-शांश-निकाले, और तुर्त धर्ममें लगादेवे, कइ श्रावक कहदेते है साधुलोग शिथिलाचारी होगये जिसमें धर्म दिसिमान् नही हांता, लेकिन ! असलपुछोतो श्रावकलोगही शिथिलाचारी बनगये है, धर्मकाममें कंजुसकेसिरदार बनना और स्त्री-पुत्रकेलिये हजारांह रुपये उडादेना, स्त्रीकेलिये हजारांहका गेहना बनवाना-और-जिन-प्रतिमाकेलिये एकतिलकभी नही देना-अपने और औरतके

लिये-कइतरइकी-नयीपुशाके-और-साधुजनोंकेलिये एकचदरतक नही देना, कहिये ! धर्मका नाश किसने किया ? सौचकर जबाब दो. दिगंबर-हुंढिये-भीखमपंथी. और-तीनथुइवाले जो जैनशास्त्र-केकानुनसे निन्हवहै उनकेसाथ खानपान और बेटीव्यवहार न रखना चाहिये-और रखते हो कितनीबड़ी भूलहै, असल पुछो तो इससे धर्ममें बड़ी न्यूनता पहुंच रही है, इसबातकों सौचो,-

५१-(७)-मातापिता-पुत्र-स्त्री-वगेराके अंतसमय जो सात-क्षत्रकेलिये द्रव्य निकाला जाताहै वह तुर्त अपनेगांवके समाज (संघ)के सुपुर्दकर-दो, कितनेकलोग उसद्रव्यकों अपने बनाये हुवे त्रिनमंदिर-या-उपाश्रयमें लगाते है उनकों पुछना चाहिये क्या ! यह द्रव्य अब तुमाराहै ? जो अपनी हुकमतसे लगातेहो ? असलमें यह धर्मद्रव्य होगया, इसकों संघकी सलाहसे जहां मुनासिब समझाजाय लगाना चाहिये. कइशरूश अपनीलौकिक दिखलानेकेलिये उसवस्तु इतनेहजाररुपये हमने धर्ममें किये मुखसे कहदेते है, फिर पैसा एकभी नहीलगाते, उनके जैसा कोई अधर्मी नही, विरादरीवालोंकों मुनासिबहै उसके वहांका खान पान छोड देवे, जो लोग धर्ममें पढकर उसके पाससे धर्मद्रव्य न-हीमांगते-वे-ज्ञानियोंके ज्ञानमें दोषकेभागी है, साधुलोगोंकोंभी मुनासिबहै उपदेश देकर धर्मद्रव्य धर्ममें लगानेकी काररवाई करे, इतनेपरभी नमानेतो समझना उसका पापही उसे दुर्गतिमें डाळे-गा, लेकिन ! हां ! उसकों संघसे बहार जरूर करदेना चाहिये, उममें जो शरूशपक्षपातकरेगा महापापी बनेगा. कितनेक शरूश उम सातक्षेत्रके धर्मद्रव्यकों अपनेदस्तरेमें बतौर अमानतके जमा

करलेते है-कोइकोइ व्याजके हीलेसे जमाकरते है, और फिर उस द्रव्यको सालभरमें जोकुछ सातक्षेत्रमें अपनेनामसे खर्च किया-उसमें नाम लिखदेते है उनको पुछाजाय यहकाम कोनसे कानुन-से करतेहो ? तो जबाबमें शास्त्रसे विरुद्ध ठहरते है, जब धर्मद्रव्य अपने घरमेंही रखना ज्ञानीयोंने नहीफरमाया तो जमाकरना कहा रहा ? जिनजीवोंको संसारमें बहुतकालतक रुलनाहै-ऐसे कपटधर्मियोंको यह लिखाण बहुतबुरा मालूमदेगा. लेकिन ? उनसे हमको कोइ परवाह नही. हमको यहां ज्ञानियोंके वचन दिखलाने है. जो लोग धर्मद्रव्य देते नही और बिरादरीमें तड्डालकर अपनी बाह बाह करारहे है, याद रखो ! यह तारीफ उनकी परलोकमें शाय न चलेगी. नरक तिर्यचगतिमें पापकर्म-भोगते वरुत कोइ प्राणशरण नहोगा. रुपयापैसा हाथका मेलैहै, इसका घमंडकरना नोचपुरुषोंका कामहै, जो शस्त्र देवद्रव्यका कर्जा लेकर पोछा नही देते संघकी फर्ज है राज्यमें नालिशकरके बसुलकरना,—

५२-(८)-कितनेक श्रावक ऐसे देखेगये है-जो-साधुजनोंके साथ बैङ्गतिसे पेश आते है. लेकिन ! यहनही सौचतेकि-हम-किस-दर्जेपरहै !-संसारछोडकर मुक्तिकीराहलेना सहजबातनही. खानपान और ऐशआराम किसको अच्छा नही लगता. धन्यवाद दो-उनको-जिनोने संसारछोडाहै-साधुलोगोंको शिवाय धर्मके किसीका आधार नही, तुमको कोइ मारने आयगा फौरन मात-पिता और भाइ तुमारे साहायक बनेंगे. साधुओंका कोइसाहायक नही, ऐसे नावालिशोंका अपमान करना कितना बुराहै ? साधु-लोग परमात्माके शरणमें बैठे है, उनको सताना याद रखो ! तु-

मारनाशहोनेके दिनहै, तुमको किसीकी शर्मनहीं है तो खेर ! परमात्माकी शर्म तो रखो. शास्त्रोंका बचनहै साधुजनोंको खानपान वस्त्रपात्र-पुस्तकपंखे-और-मकान-देना और उनसे धर्म सुनना.

५३-(९)-हरेकशरूशकों-भंग-गांजा-तमाखू-मांस-मदिरा-जमीकंद-सहेत-रात्रीभोजन-परस्त्रीगमन-विनाछानाजल-तीनदिनकेबादकाअचार-और-दोघडीकेबादका मरुखन-इतनीचीजें त्यागकरनाचाहिये, इनमेंफायदा नहीं नुकशानहै,(१०)-कितनेकदेशमें लडकालडकीकी जन्मपत्री लोग नहींबनवाते. लेकिन! बनवाना मुनासिबहै, जन्मपत्रीसे धर्म-और-संसारदोनोंका विचार किया जाताहै,बल्किन्! किसगतिसे आया औरकहांजावेगा मालूमहो सकताहै? कितनेक कहदेतेहै जन्मपत्री क्या-कर्मपत्री देखना चाहिये (जवाब)कर्मपत्रीहोका दूसरानाम जन्मपत्रीहै,ऐसा नहोतातो सूर्यसे ज्ञानावरणीय-चंद्रमासे दर्शनावरणीय-वगेराआठकर्मोंका विचार क्यों कियाजाता?-और-जैनाचार्योंने ज्योतिष्ग्रंथ क्यों बनाये?इसका जवाब दो, आजकल-ऐसेमनुष्य-ज्यादेरहगये-जो-मतलबभी-पुछजाय-और-नींदाकरे.ऐसोंसेबचनाचाहिये,

५४-(११)-हरेकश्रावकों मुनासिबहै एकसो आठ-जैन तीर्थोंमेंसे किसी एकजैनतीर्थकी हरसाल यात्राकरे,जोशरूशजिस तीर्थभूमिमें बसताहो उसको दूसरेतीर्थकीयात्राकरनाचाहिये,(१२) बडेबडेतीर्थोंमें जहां ज्यादा खजाना इकठा कियाजाताहै उसखजानेसे अगर दूसरेशहरोके हजारोंजैनमंदिर जो जीर्ण होगयेहै उनकीमरम्मत कराइजायतोकितनी उमदाबातहो?-बहुतधन इकठाहोनेसे बिगाढनेवालाभी मिलजायगा,इसलियेजोउपरलिखेमुजब

जाणोद्वारमें लगादियाजाय वही अच्छा है, १३, जीव-इरादा कुछ करे-और उदयकर्मके जोरसें होजाय कुछ और ! कहिये ! कर्मबलोष्ट रहे-या-नहीं ? कर्म-आपकरना-दोष दूसरोंके शिरडालना कितनो भूल है ! जब पुन्यका उदय आयगा सब काम टीक होगा, इष्टप्राप्तिको चिंता बिल्कुल मत करो, जोबस्तु तुमारे भाग्यमें बंधी है स्वतः आनमिलेगी. बतलाओ ! कमलनी और सूर्यका संयोग कौन कराता है ? दूसरी मसाल देखो !-योगीने विचाराथा शिवकुमारको जालकर सुवर्ण पुरुष बनालउ, लेकिन ! बन गया आप ! समझसकोतो समझलो पुन्य बलवान् ठहरे या कौन ? ( १४ ) कोई शरुश तंबोलमें खुश है कोई मीठे भोजन जियनेसें-कोई सवारोपर चढकर कोई इतर फुलेलमें-कोई जवाहिरातसें, कोई अच्छे कपडेसें, -कोई सुंदर औरतसें, कोई औरत-सुंदर पुरुषसें-कोई रात्रीमें-कोई दिनमें-कोई वरसावकी-झडीमें-और कोई-बागकी शेरमें खुश है, लेकिन ! ज्ञानी लोग सबसें ज्यादा खुशीका कारण धर्म फरमाते हैं.-

दुनियाके मतमतांतरका विषय पुराहुवा-बाचकर गौर करो.

( मकसीतीर्थकारखानेके-जष्टी-और-मेने-  
जर-जाउसाहबके प्रश्नोका उत्तर. )

१-( प्रश्न. )-किमी शरुशने रात्रोको चतुरविध आहार प्रत्याख्यान-या-त्रिविध आहार प्रत्याख्यान-किया हो-वह स्त्रीसंभोगमें-अधरपान करे-या-नहीं ? ( जवाब. ) न करे, सबब कि-परस्पर थुंकल-



गनेसें व्रत टूटजाताहै,द्विविधआहारप्रत्याख्यानमें करेतो व्रत-नटूटे, श्राधधिधि वगेरा ग्रंथमें इसका खुलासा हैं.

२-(प्रश्न)-उपवासव्रतमें कामभोगकरनेसें व्रत टूटे या-नही?  
(जवाब.)-उपवासव्रतमें कवलआहारका त्यागकियाहै रोमआहारका त्यागनही, कामभोग-रोमआहारमें दाखिलहै, इसलिये-संभोगकरनेसें-उपवासव्रतनहीटूटता, मैथुनसेवनेसे जोपापलगनेवाला है-वो-तो-लगेहीगा. लेकिन !-उपवासटूटगया-नहीकहना.

३-(प्रश्न)चौदहनियमधारनेवाला-रात्राकों चतुर्विध-त्रिविध-द्विविधआहारप्रत्याख्यान-न-करे-और-नियमधारेतो कुछ हर्ज है! (जवाब.) कोइ हर्जनही.चौदहनियममें यहकोइप्रतिबंध नही कि-रात्रीकोंचतुर्विधआहारप्रत्याख्यानवगेरा जरूरकरना.

४-(प्रश्न)-कलंकीराजा कबहोगा?

(जवाब.)-महानिशीथसूत्रके पांचमेंअध्ययनमें पाठहैकि-सेभयवं केवइयंकालं जाव एस आणा पवेइया? (गोयमा) जावणं महायसे महासत्ते महानुभागे सिरिप्पभे अणगारे-सेभयवं केवइणं कालेणं सिरिप्पभे अणगारे भवेज्जा?(गोयमा)-होहो दुरंतपंतलखणं अदह्ववे रोहे चंदेपयंदे निस्सेरे निकिचे निग्घणे निचंसे कूरय पावमई अणारिये मिच्छदिट्ठी-कक्की-नामराया-(अर्थ.)गौतमस्वामीने महावीरस्वामीसें प्रश्नकियाकि-हैं! प्रभु! यह उपरवर्ननकिइहुइ-आज्ञा-(यानी)-यथार्थसमाचारी पांचमेंआरेमें कबतक चलेगी. (जवाबमें) फरमायागयाकि-हैं! गौतम! जब महानुभाग्य-श्रीप्रभ अणगार होयमें तबतक, गौतमस्वामीने फिरपुछा-श्रीप्रभअणगार कबहोंगे? महावीरस्वामीने जवाबदिया-जब कलंकी नामकाराजा

होगा, जो महाखोटेलक्षणवाला और अदृष्टकल्याणी-कठोर-प्रचंड-बेशर्म-निःकाम-निर्दय-क्रूर-पापी-अनार्य-और-मिथ्यादृष्टि-होगा, -इसपाठसे सबुतहुवा कलंकीराजा-श्रीप्रभअणगारकी हयाती में होगा, श्रीप्रभअणगार-कौनसे उदयमें युगप्रधान होंगे उसका सुलासा युगप्रधानयंत्रसे देखाजायतो आठमेउदयके प्रथमयुगप्रधान सबुतहोतेहै, इसवरुत उदय तीसरा झरुहै, जब आठमाउदय आयगा-श्रीप्रभयुगप्रधान होंगे. उसवरुतकलंकी राजा पैदाहोगा, महानिशोधमूत्रमें ऐसाभी पाठहैकि-वह-साधुओंको तकलीफ पहुंचा भगा और इंद्र आकर उसको जानसे मारेगा, आठमाउदय पांचमेंआरेके कितनेवर्षबीतेबाद आनाचाहिये उसका हिसाबलगाते है-तो-साठेदशहजारवर्षबाद आताहै, समझशकोतो समझलो कलंकीराजा कबहोगा ? -पांचमेंआरेके-एकीशहजारवर्षमें-तेइसदफे धर्मका उदय-और-उतनीहीदफे धर्मका अस्तहोना जो जैनशास्त्रोंमें फरमायाहै उसमें(२००४)युगप्रधान-(यानी)प्रभाविकआचार्य होंगे, श्रीप्रभअणगार आठमेउदयके प्रथमयुगप्रधान पहिलेलिल चूके, दीपमालाकल्पमें तथा पांचमेंआरेकी सप्तायमें जो कलंकीका होना-संवत्-(१९१४)में-वतलाया, वह-भागमवचनसे-वर्तिलाफ-और-गलत समझनाचाहिये. दीपमालाकल्पमें यहभी लिखा हैकि-कलंकीराजा-विक्रमकेसंवत्को लोपकरके अपना नयासंवत् स्थापनकरेगा. सौचोतो-यहवातभी अबतक नहीवनी-फिर किस सबुतसे कहाजाताहै कि-कलंकीराजा होयगा.?

५-(प्रश्न)-एकपक्षमें ( छह ) तिथि-अर्थात्-वृज-पंचमी-अष्टमी-एकादशी-चतुर्दशी-पौर्णिमा-और-अमावास्यामेंसे-कोइभी-

तिथि-दो-होतो-दोंनों-पालना-या-एक ?-अगर दोनों-पालना कहोगे तो-उक्ततिथिमेंसे कभी कोई तिथि-दूटजाय तो क्या ! न-ही मानना चाहिये ?

( जवाब. )-जैनशास्त्रकाफरमाना है कि-दो तिथिहोजायतो पहिलो छोडकर दूसरी पालना, और क्षय हो तो पूर्वदिनमें मानना, जैसे अष्टमीका क्षय होतो सप्तमोकेरौज अष्टमो मानना चाहिये, अमावास्य-या-पौर्णिमा-टुटेतो-तेरसकों तोडकर चतुर्दशी-पौर्णिमा-और-अमावास्या-पूर्ण-पालना, इसतरह हरेकतिथिके संबंधमें जानलो, जैन शास्त्रके कानुनसेदेखोतो बारहमहिनेकी-जो (१४४) पर्वतिथि-है, उनमेंसे-न तो (१४३)-न-(१४५) होगी.

६-(प्रश्न,)किसीवर्षमें-दो-श्रावण-या-दो-भादवेमहिने हो तो पर्युषण-किसमहिनेमें कियेजाय ?-भादरवा मुदीचौथ-टूटी हो या-दो-होगईहो-तो-संवत्सरीकप्रतिक्रमण किसरौज करना ?-इस तरहपर्युषणके आठदिनोंमें-औरभी कोईतिथि-घट बढ हुइ होतो-किमतरह करना ? और भादवामुदीपंचमी-टूटी होतो-कौनसे रौजपर्युषण बैठाना,

(जवाब.)-दो-श्रावणहोतोभी-भादवेमेंही-पर्युषणपर्व करना चाहिये, अगर कहाजायकि-अपाडमुदी ( १४ ) चतुर्दशीसे(५०) रौज लेना कहा यह कैसे सबुतरहेगा ? ( जवाब. ) कल्पसूत्रकी टी-कामें पाठ है कि-अधिकमास-कालपुरुषकी चूलिका-यानी-चौंटी है, जैसे किसीपुरुषका शरीर उचाईमें नापा जाय-तो-चौंटीकी लंबाई नापी-नही जाती, इसीतरह कालपुरुषकी चौंटी जो अधिकमासकहा गिनतीमें नहीं लिया जाता, कल्पसूत्रकी टीकाकापाठ-

कालचलेत्यविवक्षणात् दिनानां पंचाशदेव,—अगर लिया जाताहो पर्युषणपर्व—दूसरेवर्ष श्रावणमें—और—इसतरह अधिकमहिनोंके हिसाबसे हमेशां उक्तपर्व फिरते हुबे चले जायगें, जैसे मुसलमानोंके ताजिये—हरअधिक मासमें बदलते रहते हैं, दूसरायहभी दूषण आयगाकि—वर्षभरमें जो—तीनचातुर्मासिकप्रतिक्रमण किये जाते हैं उनमें पंचमासिकप्रतिक्रमणपाठ—बोलना पड़ेगा, शीतकालमें और उश्नकालमें—तो—अधिकमहिना गिनतीमें नहीं लाना—और चौमासेमें गिनतीमें लाकर श्रावणमें पर्युषण करना किस न्यायकी बात हुई? अगर कहा जायकि—पचासदिनकी गिनती लिइजातीहै—तो—पीछले ७०)दिनकी जगह—(१००)दिन होजायगें, उधर दोष आयगा, सवत्सरीके पीछे(७०)दिन—शेष—रखना,—यहबात समवायांगसूत्रमें लिखिहै—उसका पाठ—वासाणं सवीसइराए—मामे वइकंते सत्तरिराईं दिण्हिं—सेसेहिं, इसलियेवहीप्रमाणवाक्यरहेगाकि—अधिकमास—काल पुरुषकी चोंटी होनेसे गिनतीमें नहीं लेना, अधिक महिनेकों गिनतीमें लेनेसे तीसरा यहभी—दोष—आयगाकि—चौइसतीर्थकरोंके—कल्याणिक—जो—जिसजिसमहिनेकी तिथिमें आतेहैं गिनतीमें वेंभी बढ जायगें, फिर क्या !—तीर्थकरोंके कल्याणिक(१२०)सेभी ज्यादा गिनना होगा ?—कभी—नहीं, इस हेतुसेभी अधिकमास नहीं गिना जाता, अधिक महिनेके कारणसे—कभी—दो—भादवे—हो—तो दूसरे भादवेमें पर्युषण करना चाहिये, जैसे—दो—अषाढमहिने होते हैं तबभी दूसरे अषाढमें चातुर्मासिककृत्य कियेजाते हैं वैसे पर्युषण—भी दूसरे भादवेमें करना न्याययुक्त है, भादवा सुदी चोथ दूटीहो—तो—ग्यारसकैरौजसे पर्युषण बैठाना, भादवा सुदी चोथ—दो—हो—तो—पर्युषण तेरसकी तिथिसे बैठकर पुरे आठरौज गिनना

संवत्सरीक पर्व दूसरीचौथके रौजमानना, भादवासुदी पंचमी दूटी हो-तो-ग्यारसके रौजपर्युषण बैठाना चाहिये, सबबकी-चौथ संबत्सरीपर्वका-दिनठहरा-उसकोतोडना-प्रमाणसे विरोधी है, इसतरह पर्युषणके आठरौजमें औरभी कोड पर्वतिथि दूटीहो-तो उसकी प्रथमतिथि घटाकर पहिलेदिन उसको मानना उपर पांचमे प्रश्नमें लिखही चुकेहैं, निदान ! सबबातका सारयह हुवाकि-तेरससे लगाकर चौथतक कोइभी-तिथि-दूटीहोतो ग्यारससे और बढ़ीहोतो-तेरससे पर्युषण मानकर आठरौज पूरेकरलेना, और शुरुदिनसे चौथेरौज बढाकल्प-पांचमेरौज-महावीरस्वामीका-जन्म महोत्सव-आठमेरौज-चैत्यपरिपाटी-और-संवत्सरीक प्रतिक्रमण वगेरा-कार्य-करलेना चाहिये,

७-प्रश्न मुनिजनोको पीलेवस्त्र रखना कौनसे शास्त्रमें लिखा है ? (जवाब.)-निशीथसूत्रके अठारहमें उद्देशमें पाठहैकि-साधुलोग नयेवस्त्रको-कथा-लोध-या-पद्मचूर्ण वगेरासे रंग चढावे. [पाठ] जेभिखु-णवण्ये बथ्ये लद्धे-तिकट्टु वहुदिवसिएणं-लोधेणवा-कक्केणवा-पडम चुन्नेणवा-वक्केणवा-उल्लोलेज्जवा-उवदेज्जवा-उल्लोतंवा उवदंतंवा-साइज्जइ-इत्यादि,

८-प्रश्न-इसकालमें भरतक्षेत्रके मनुष्य-मरकरकितने-स्वर्ग और-कितनी नरकतक जासके. (जवाब.) बृहत्कल्पसूत्रकी टीका वगरामें पाठहैकि-छेवठासंहननवाला-मनुष्य-उपर-चतुर्थदेवलोक तक-और-निचे-दूसरी नरकतक-जासके, आजकल भरतक्षेत्रमें छेवठेसंहननवाले मनुष्य है, इसलिये वही कहना मुनासिब आया जो उपर लिख चुके,

[ भाउसाहबके प्रश्नोंका उत्तर समाप्त हुवा. ]

## [ इसलेखकों मत पढो-तुमका नागवार गुजरेगा. ]

स्त्रीपुत्रपर मोह-न-करो, देवद्रव्य तुत्त देदो, हरकिसीकी बरातमें-जानेका इरादा-नरखो, जो औरत तुमसें नफरत लातीहै उससें मत बोलो, पराइ औरतसें प्रेम-न बांधो, अपनी औरत-कोंभी दिलकी बात मत कहो, ज्यादा कामभोग मत सेवो, रज-स्वला औरतसें तीनदिन संभोग-न-करो, हरहमेश मिठाइखानेका शौख-न-रखो, राज्यकी नौकरी करनेका इरादा कम करो, धर्म शास्त्रसुनते किसीसें बात-न-करो, सभामें जाते और प्रमाणीक बात कहते शर्म-न-लाओ. अन्यायके तर्फदार मत बनो, रसायन विद्या-विच्छेद हो गइ-इसके पीछे मत पडो, हुका-चिलम-या बीड़ी-तुम पीते हो-यही बुरी बात है फिर औरतकोंइसके फंदमें क्यों डालतेहो ?-संसारके कामकों पीछेंऔर-धर्म कार्यकों पहिले करो, बीमारीमें कोई आनकर तुमकों कहे धर्म करो उसपर नाराज मत हो, एक लोभी आदमीकों नींदआइ-ख्वाबमें देखाकी मुजे कोई-एक रुपया-देता है, उसने कहा-दो रुपयेसें-कम-न लुंगा, उतनेमें नींद खुल गइ और रंजीदा हुवाकि-मैने-एक रुपयाभी नाहक छोडा, सौचने लगाकि-फिर लेटजाउ-और-एकही कोई देवेतो लेलूं, कहिये ! जैमाभि कोई बेवकुफ आदमी होगा संसारमें ?-स्वभावसें दलेर बने रहो, और एक एलम ऐसा सीख लो-जिससे रुपया रौज हमेशा पैदा हो जाया करे. जो काम स-

बकी सलाह लेकर करनेका है उसकों अपनी इच्छासे मत कर-  
 ढालो, नसीयतमें तुमकों कोई कहुआ वचनभी कहे-तो-उसको  
 अच्छा समझो, घरसे बहार निकलो जब हरवख्त पांच सात रुपये  
 या-पैसे पास रखे करो-न मालूम किम वख्त काम आ जाय !—,

## [ जैनका इतिहास. ]

१-रिषभदेवसे लगाकर आजतकका कुछ मुख्तसिरहाल  
 बतलाकर ग्रंथ पूरा करता हूं, इसकालचक्रकी आद्यमें पहिलेराजा  
 रिषभदेव हुवे, और-वै-खुद तीर्थकरभी थे, धर्मप्रवर्तक कहो-या  
 तीर्थकर-एकही बात है. जैनमें अवतार लेना नहीमानागया,  
 मोक्षपाकर फिर संसारमें आना अयोग्य बात है, जोइश्वर भक्तों-  
 पर खुशहोगा-कभी-नाराजीभी लायगा. रागद्वेषका होना महान्  
 दोष है, सर्वशक्तिमान् गर्भमें आवे-और-भक्तोंकी साहायता करे  
 कौन बुद्धिमान् मनन करसकता है ? देखिए ! सारी दुनिया अ-  
 पनेदेवोंसे गुजारीश करतीहै कि-गर्भवाससें मुत्लक मुलत्व छूटजाय,  
 बडे खेदकी बात हैकि-जिससें दुनिया छूटने चाहे उसीमें इश्वर  
 आनकर फसे ?

२-प्रथम तीर्थकर रिषभदेव विनीता (अयोध्या) नगरीमें हुवे,  
 उनका बडाबेटा भरत और भरतका-सूर्ययशा-हुवा, जिससें सूर्य-  
 वंशी खानदान चला, रिषभदेवका दूसरा बेटा-बाहुबली-और  
 बाहुबलीका-बेटा-चंद्रयशा-हुवा, जिससें चंद्रवंशी खानदान चला,

रिषभदेवके प्रथम पुत्र भरतचक्रीने भारतमध्यखंडमें अष्टापदवगेरा तीर्थोंकी स्थापना किइ, शत्रुंजय तीर्थ जो देवताओं करके पूजनीकथा-उसरौजसें-मनुष्योंकाभी पूजनीकहुवा, हरेक कालचक्रमें इसीतरह होता है,

३-दूसरे तीर्थकर अजितनाथ हुवे, दूसरा सगर चक्रवर्ती इनहीके वख्तमें हुवा, इसने देवोंकी मददसें लवण समुद्रकी खा-डीकों जगतीके कोटके भीतर फैलाया, जिससें क्षेत्रमर्यादा पहिलेमे बदल गइ, इसीसगरचक्रीके बेटे जन्हुकुमारने गंगाकी नहर अष्टापद तीर्थकी चौफेर लेजाना चाहा कुच्छ लेभी गयाथा, गंगाका दूसरानाम इसीलिये जान्हवी कहलाया, इसके बाद सावध्थी नगरीमें तिसरे तीर्थकर संभवनाथ हुवे, इनके बाद अयोध्यामें चतुर्थ तीर्थकर अभिनंदन हुवे, किसकिस तीर्थकरोका-कितने कितने वर्षोंका अंतर पडा-इसकी गिनतीकल्पमूत्रसें जानना, इनकेबाद पांचवे तीर्थकरभी इसीअयोध्यामें हुवे, इनकेपीछे छठे पद्मप्रभ तीर्थकर कौशांबीनगरीमें हुवे, सातमें तीर्थकर सुपार्श्वनाथ बाणारसीमें हुवे, इनकेबाद आठमें तीर्थकर चंद्रप्रभु चंद्रपुरीमें हुवे,

४-इनकेबाद नवमें सुविधिनाथ तीर्थकर काकंदी नगरीमें हुवे, इनके निर्वाण हुवे पीछे कुच्छकालतक धर्म बिल्कुल नाश होगया था, जबदशमें तीर्थकर शीतलनाथ हुवे फिर-धर्म-जाहिर हुवा जो आजतक चलरहा है, पैदाश हरिवंशकीइन्हीके जमानेमें हुइ, इनकेपीछे ग्यारहमें तीर्थकर श्रेयांसनाथ सिंहपुरीमें हुवे, पहिला त्रिपृष्ठ वासुदेव इन्हीके जमानेमें हुवा, इनकेबाद बारहमें



तीर्थंकर वासुपूज्य चंपानगरीमें हुवे, दूसरा द्विपृष्ठवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनके पीछें तेरहमें तीर्थंकर विमलनाथ हुवे, तीसरा स्वयंभूवासुदेव इन्हींके जमानेमें हुवा, इनकेबाद चौदहमें अनंतनाथ तीर्थंकर अयोध्यामें हुवे, चौथा पुरुषोत्तमवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनके पीछें पनराहमें तीर्थंकर धर्मनाथ रत्नापुरीमें हुवे, पांचवा पुरुषसिंहवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनकेबाद तीसरे मघवाचक्रवर्त्ती—और—चतुर्थ सनत्कुमारचक्रवर्त्ती—क्रमसें हुवे,

५—इनकेबाद हस्तिनापुरमें सोलहमें, शान्तिनाथ तीर्थंकर हुवे, आप खुद छठे चक्रवर्त्तीभी थे. सतरहमें तीर्थंकर कुंथुनाथ—और अठारहमें तीर्थंकर—अरनाथ—इसी हस्तिनापुरमें हुवे, ये—दोनोंभी खुद चक्रवर्त्ती थे, इनके पीछें पुरुषपुंडरीक—छठे वासुदेव—और इनकेबाद कुरुवंशी सुभूमनामके नवमें चक्रवर्त्ती हुवे, इनकेवरुत्तमें यमदग्नितापसके पुत्र परशुराम हुवे, कई लोगोंने इनको ईश्वरावतार माना है, इनकेबाद दत्तनामके मातमे वासुदेव हुवे, इनके पीछे उन्नीसमें तीर्थंकर मल्लिनाथ मिथिलानगरीमें हुवे, इनकेबाद बीसमें तीर्थंकर मुनिमुव्रत राजग्रहीमें हुवे, अयोध्यामें दशरथराजा—केपुत्र जो—रामचंद्रजी—और—लक्ष्मणजी हुवे हैं उक्त मुनिमुव्रततीर्थंकरके बादहुवे समझे, जैनशास्त्रोंके लेखसें सबूतहैकि—रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी—जैनधर्मके अनुयायी थे, सीताको रावण लेगया तब रामचंद्रजीने लंकापर आसोजसुदी दशमोके रौज चढाई किह और फतेहपाइथी—इसलिये उसरौजसें दुनियामें विजयदशमी (—यानी—)दशेहरापूर्व जारीहुवा. रावण—सुग्रीव—अंगद—और—हनुमानबगेरा असलमें मनुष्य थे, विद्याकेबलसें तरहतरहके रूप बना

लेते थे, जैनशास्त्रोंके पाठसें सबूतहैकि-लक्ष्मणजी आठमे वासुदेव थे, इनकेबाद चंपानगरीमें श्रीपालराजा हुवे जिनोने सिद्धचक्रयंत्रका आराधन किया,

६-इनकेबाद एकीसमें नमिनाथतीर्थकर मिथिलामें हुवे, हरिषेणनामके दसमें और-उनकेबाद जयनामके ग्यारहमें चक्रवर्ती इन्हीके अंतरमें हुवे है, इनके पीछे समुद्रविजयराजाके पुत्र बाइसमें तीर्थकर नेमिनाथ-शौरीपुरमें-हुवे, ये-तीर्थकर बालब्रह्मचारी रहे ( यानी )-स्यादी नही किइ, इन्हीके चचेरेभाइ कृश्रजी नवमें वासुदेव हुवे, जैनशास्त्रके लेखसें सबूतहैकि-कृश्रजी और बलभद्रजी-दोनोंभाइ-जैनधर्मके अनुयायी थे, कौरवपांडवोंका महाभारतयुद्ध इन्हीके वरुतमें हुवा किसीमें छीपी बातनही, इनकेबाद बारहमें ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती हुवे-इनके पीछें तेइसमें तीर्थकर पार्श्वनाथ बाणारसीनगरीमें हुवे, इनकेबाद चौइसमें तीर्थकर महावीर क्षत्रीयकुंडग्राममें हुवे, जो जो तीर्थकर होते है, संसारकों छोडकर तप करे और जब केवलज्ञान होजाय दुनियाकों धर्मका उपदेश देवे यह उनका मुख्यकर्त्तव्य है,

७-रिषभदेवसें लेकर महावीरतीर्थकरतक चौइसहुवे-इन्होंके सबशिष्य कितने हुवे इनकी गणना किइजायतो लखहांतक पहुंचती है, लेकिन! हां! जिन्होंकों गणधरपदवी प्राप्तहुइथी-वें-गिनतीमें ( १४५२ ) होते है, महावीरतीर्थकरके बडेशिष्य ग्यारह थे, जितनेचक्रवर्ती और-वासुदेव इसलेखमें लिखआये सब जैनधर्मकों माननेवाले थे, महावीरतीर्थकरके वरुतमें और उनकेबाद जो जो बडे बडे जैनीराजे हुवे ( जैनबोधके भेदमें )-लिखआये, इ-

सीकिताबके प्रथमतः पृष्ठ ( १६९ ) पर देखलो, बीतभयपत्त-  
ननगरका राजा उदयन-कौशांबी नगरीकाराजा उदयन-विशा-  
लानगरीका राजा-चेटक-नवमल्लिक-और-नवलच्छिक-अठाराह  
राजे-और-बलमित्र-भानुमित्र-नरवाहन-तथा-कुमारपाल-वगेरा  
कइजैनीराजेहुवे कहांतक लिखे?—

८-महावीरतीर्थकरके जो ग्यारहबडेशिष्यहुवे उनमेसे पांचमे  
सुधर्मास्वामीके-शिष्य-जंबूस्वामी हुवे, इन्होंने करोडें रुपये छोड-  
कर तपस्या इस्तिथार किइ, इनके चेले प्रभवस्वामी हुवे-इनके  
बाद शय्यभवसूरि-जोकि-पहिले-वेदपाठीब्राह्मण थे, वेदोंको अ-  
सत्य समझकर छोडदिये, इनकेबाद यशोभद्रसूरि हुवे, फिर संभू-  
तिविजय-भद्रबाहु-स्थूलभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती-सुस्थित-  
सुप्रतिबद्ध-महावीरतीर्थकरके निर्वाणबाद ( ३७६ ) पीछे-श्यामा-  
चार्य-जिन्होंने-प्रज्ञापनासूत्र-रचा, इंद्रदिन्न-दिन्नसूरि-सिंहगिरि-  
वज्रस्वामी-जिन्होंने बौद्धोंको दूसरीदफे परास्तकिये, (प्रथम-म-  
हावीरतीर्थकरने किये थे,) महावीर निर्वाणके पीछे (५८४) वर्ष-  
बाद वज्रस्वामी-देहांत हुवे, सिद्धसेन दिवाकर-जोकि-पहिले कु-  
मुदचंद्र नामसे ब्राह्मण थे, पीछेसे जैनधर्मके साधु बने,—

९-महावीर निर्वाणकेबाद ( ६८४ ) वर्ष पीछे गंधहस्ती आ-  
चार्य हुवे, महावीरसे ( ९८० ) वर्षबाद देवर्द्धिगणिक्षमाश्रवणने-  
वल्लभीनगरीमें ( ५०० ) जैनाचार्योंको इकठ्ठे करके कंठाग्र ज्ञान  
था-पुस्तकाकार लिखा. यह नही जाननाकि-इनसेपहिले कोई  
जैनपुस्तक लिखानही जाताथा, बल्किन्! बहुतसाज्ञान कंठाग्र र-  
खते थे, जब अतिशयज्ञानी कमहोते गये लिखनेकी रसम ज्यादा

होतीगई, उमास्वाति-ये-देवर्दिगणिक्षमाश्रमणमें पहिलेहुवे है, इनको दिगंबरलोगभी मानते हैं, लेकिन! उनके बनाये हुवे ग्रंथोंको पुरीतौरमें नही मानते, महावीरसें ( ९९३ ) वर्ष पीछे-कालिका-चार्य हुवे-जिन्होंने-सबआचार्योंकी-संम्मतिसें-भाद्रपदशुक्ल चतुर्थीके रौज संवत्सरीकपर्व-स्थापन किया, महावीरसें ( १००८ ) वर्ष पीछे साधुलोग पौषधशालामें निवासकरने लगे, पूर्वकालमें बनखंड-या-उद्यानमें रहाकरते थे, ज्यूंज्यूं जमाना कमजोर सब-कार्य कमजोर होतेगये, महावीर निर्वाणसें ( १०५५ ) वर्षबाद हरिभद्रसूरि हुवे, इन्होंने ( १४४४ ) ग्रंथोंकी रचना किई, महावीर निर्वाणसें ( ११५० ) वर्ष पीछे जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण हुवे, जिन्होंने बहुतसें शास्त्रोंपर भाष्य बनाइ, आचार्य गल्लवादी-जिन्होंने बलभीनगरीमें बौधोको परास्त किये.

१०-संवत् ( ७०० ) में-शैलंकाचार्य हुवे, जिनोंने आचारांग और सूत्रकृतांगपर-टीका-बनाइ, संवत् ( १०९६ ) में-वादिवेताल शांतिसूरि स्वर्गवास हुवे, संवत् ( ११३५ ) में-अभयदेवसूरि-देहांत हुवे-जिनोंने स्थानांगवगेरा नवअंगशास्त्रोंपर-टीका बनाइ, संवत् ( १२२६ ) में-वादिदेवसूरि-देहांत हुवे-जिनोंने चोरासी हजार श्लोकप्रमाण-स्याद्वादरत्नाकर-ग्रंथ बनाया, जो अबपूरा नहीमिलता, संवत् ( १२२९ ) में-हेमाचार्य-हुवे, जिनोंने राजाकुमारपालकों प्रतिबोध दिया, और-बहुतसे ग्रंथ रचे, आचार्य मल्लयागिरि-जिनोंने कई शास्त्रोंपर टीका बनाइ, मानतुंगसूरि-जिनोंने भक्तामरस्तोत्र बनाया, मानदेवसूरि-जिनोंने लघुशांतिको रचना किई, देवसूरि-नेमिचंद्रसूरि-मुनिचंद्रसूरि-अजितदेवसूरि-सोमप्र-

भाचार्य-जिनोंने-सिंधुर प्रकरस्सव बगेरा स्तोत्र बनाये, जगद्ध-  
सूरि-जिनोंने तपगच्छविरुद्ध पाया, देवेंद्रसूरि-जिनोंने कर्मग्रंथकी  
रचना किई, धर्मघोष-रत्नशेखरसूरि-जिनोंने-श्राद्धविधिग्रंथ रचा,

११-हेमचिमलसूरि-जिनोंने त्रैलोक्यप्रकाश ग्रंथ-बनाया  
आनंदचिमलसूरि-विजयदानसूरि, हीरविजयसूरि-जिन्होंने अकबर  
बाहशाहको धर्मसुनाकर-जीव दयाके फुरमानपत्र बनवाये, विजयसे-  
नसूरि विजयसिंहसूरि-गणिसत्यविजयजी-उपाध्याय यशोविजय  
जी-तथा-विनयविजयजी-इन्होंने कईग्रंथरचे, गणिकर्पूरविजयजी-  
गणिसमाविजयजी-गणि जिनविजयजी गणिउत्तमविजयजी-गणि  
पद्मविजयजी-गणिरूपविजयजी-गणिकीर्तिविजयजी-गणिकस्तुरवि-  
जयजी गणिमणिविजयजी-गणिबुद्धिविजयजी-जिनोंका दूसरा नाम  
बुटेरायजी-यशहूर है, ये पंजाबके रहनेवाले थे, इन्होंने पंजाबमें  
हुंडिये मतको खंडन किया, और गुजरातदेशमें आनकर सनातन  
जैनश्वेतांबर आश्रायकी दीक्षा इस्तिथार किई,

१२-इनकेबड़े चले-गणिमुक्तिविजयजी हुबे, येभी पंजाबके  
रहनेवाले थे, इन्होंने गुजरात काठियावाड-बगेरा देशोंमें विचर-  
कर धर्मको अच्छा उच्चेजन दिया, इनके गुरुभ्राता-न्यायांभोनिधि  
आत्मारामजी (आनंदविजयजी) हुबे, इन्होंने पंजाबदेशमें हुंडिये  
मजहमको बिल्कुल उठादिया. गुजरात-पंजाब-मारवाड-और-रा-  
जपुतानेमें फिरकर हजारोंइशख्शोंको धर्ममें पावंद किये, इनकी  
प्रख्याती किसीसे छीपी हुई नहीं,-चाहे जिसदेशमें जाकर तलाश  
करो तारीफ सुनोमें, वर्तमानमें जोजो जैनके साधु लोग है उनमें-ये  
सबसे अधिकज्ञानी थे. यह आबलोग यंगूर रखते है,—

१३-मैं-एन्होंका एक हस्तदीक्षितशिष्य हूं, संवत् (१९३२) के असेंमें उक्त महाराज जब भावनगर पधारे-मैं-उनके व्याख्यान सुननेकों जाया करता था, उस वख्तसेंही मुजकों उनका उदेश अकसीर होकर लगा, बाद संवत् (१९३६) वैशाख सुदी (१०) मी-गुरुवार-वख्तदसबजे-मुकाम-मल्लिकोट-जीलालुधिहाना पंजाबमें-इन्हीके पास मैंने दीक्षा लिइ, मेरा खास बतन-शहर भावनगर-जिले काठियावाड-गुजरात है, ज्ञाति विशाओशवाल पिताका नाम-मानकचंद्र माताका नाम-रलियातकवर था, जन्म संवत् (१९१७) का-उत्तीस वर्षकी उमरमें दीक्षा इस्तिथार किइ, मुजे-जो कुछ विद्याहासिल हुई उक्त महाराजकी बदौलत स-  
 ॥ मैंने जो कुछ इस ग्रंथमें दर्जकिया बहुत शास्त्रसें चुना है, भूतेधर्मका उपदेश करना इसके समान कोइ पाप नही, और मन्वेधर्मका उपदेशक होना इसकी बराबर कोइ धर्म नही, मतम-  
 तांतरके बारेमें मुजे बहुत कुछ लिखना था-लोकिन ! ग्रंथ बढ़ गया इससें कलम बंद करता हूं,—

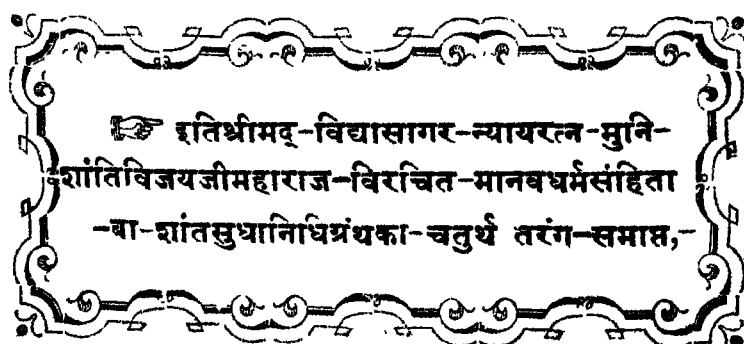
१४-मैं-पेस्तर अखबारोंमें जाहिर कर चुका हुंकि-जिसमहा-  
 शयकों-धर्म संबंधी किसीतरहके सुवाल करना हो बजरीये अख-  
 बारके मुजकों खबर दे, मैंभी-जवाब उसका छापेहीमें इरसाल  
 करुंगा, सबबकि-इसजमानमें बहुतसे लोग जवाबपाकरभी बदल  
 जाते है इसलिये यही मुम्किन समझा गया. अगर कोइ शरूश  
 खबर सवाल करना चाहे तो दर्भियान एक मोतबीर शरूशके  
 काररवाइ किइ जायगी-और-परदेशसें पुछना चाहे तो अखबार-  
 द्वारा जवाब दिया जायगा, किताब मानवधर्म संहिता-(शांतमु-

धानिधि, -पूर्ण-करता हूं, मैं-पूर्णज्ञानी नहींकि-बगैर चूकके लिख गया हूं, भूल मनुष्यमात्रके पीछे लगी हुई है, जानकार मुझे क्षमा करे, और जबतक मेरी जींदगी दुनियामें मौजूद रहे मेरे पास लिख भेजे-याते-दूसरी आवृत्तिमें दुरस्त किया जाय.

१५-जीव एकीला आया-एकीला जायगा, मनुष्य जन्म सच्चेधर्मपर श्रद्धा-दिलमें रहेंम-खानपानका आराम-और-देवगुरुकी सेवा-इतनी चीजें बड़ेही पुन्यके ताल्लुक हैं, मनुष्य जन्म पाकर जो लोग धर्म नहीं करते उनकी बड़ी भूले समझो-धनदौलत और सुखसंपदा धर्मरूप कल्यवृक्षकेही फल है, धर्मसेही आनंद मिला-और-मिलेगा, जिनकों परलोकका रास्ता साफकरना हो संसारके बंधनसें-छुटकारा पाना हो-और-आत्मिकज्ञान हासिल करना हो-धर्म करे, इस ग्रंथमें हरजगह यहीनतीजा दिखलाया है, इसके पढ़नेमें आमलोगोंको फायदा हासिल हो—

■ ( संवत् १९५५ )—

हस्ताक्षर-मुनि-शांतिविजय,—



# [ सिद्धार्थराजाने महावीरस्वामीके जन्म होनेपर जो कुछ खुशी मनाई उसका बयान. ]

## [ हरिगीत छंद. ]

श्रीवर्द्धमानजिनेंद्रजन्में-हर्षबादों अतिमही,  
 सिद्धार्थराजाके भुवनमें-न्यात सब भेली भइ,  
 परिवारके सब पुरुषनारी-मुदितमन तहां आइयां,  
 सिद्धार्थराजा स्वतः उनकों-थाल भरभर लाइयां, १,  
 सब न्यात मिल भोजनकरे-आनंदभर धन ते घडी,  
 सिद्धार्थराजा त्रिशलारानी-खुद परोसैं तहां खडी,  
 शुभनालियरकी गिरी केंला-दाख नारंगी भली,  
 अंगूर जामन जामफल-दाढम अलूचा आमली, २,  
 लोकाट आम अनार आहु-सैंव सरदा फालसा,  
 केमर कसेरु नासपाती-बीह कमरस कलरसा,  
 नींबु खजूर अंजीर खिन्नी-सुरस पौंदा आमला,  
 चकतर सरीफा बौर आदिक-हरितमेंवा मन रला, ३,  
 बादाम पिस्ता दाख खारक-बेल चारोली मली,  
 अखरोट खुरमा खोपरा-चिलगोजिया मूंगीफली,  
 इत्यादि बहुविध खुशकेमेवा-अबसुनो भोजन सही,  
 अतिमिष्टमोतीचूर लाहु-मगदमोदक मूंगही, ४,



मोदकमनोहरे सिंहकेधरी-सरस नुक्की पाकके,  
 तिलके सकरके केल मोदक-आम्ररस अरु दाखके,  
 बर्फी जलेबी सूत्रफेणी-शकरपारा इमरती,  
 पेढा गिंदोहा छालजामन-कलाकंद भला अति, ५,  
 खजला सुहाल खजूर मठडी-बालूसाही रेवडी,  
 लौजात मोहनभोग सोरा-ल्हापसी मोठी बढी,  
 पूरी कचौरी दालघाटी-बेंढवी खस्ता लुची,  
 माँहें पराँठे दालचावल-खरिपूवा मनरुची, ६,  
 चीले पकोड़े गुलगुले-माखन मलीदा चूरमा,  
 मीठी कढी अरु चर्चरी-इत्यादि भोजन सब जमा,  
 पापड चणेकीदाल भुंजी-सेब खटरस पापरी,  
 बहुविधचवीणा दही ताजी-नमक जीरामें भरी, ७,  
 परवाल चौले सुहजने-सांगरवगेराकी फली,  
 मटरा करेला बाकली-कचरो कचारेकी कली,  
 खीरा करोंदा आल कौला-खेलरा ककडी तुरी,  
 मिरची हरी मेंयी खरी-भिंडी वगेरा बहुहरी, ८,  
 नींबूके रसयुत बहुपदारथ-बड़े नानादालके,  
 चौले चनेकी मूंगकी-पीठीके नानाचालके,  
 कर्पूर अगर इलायची-इत्यादि मिश्रितजल सरस,  
 मिश्रीमें मिश्रितकेबड़ा-अरु दुग्ध उपजे मनहरस, ९,  
 तंबोल पानइलायची-बादाममिश्रित छालिया,  
 केशर जबत्री जायफल-कर्पूर लबंग कथा लिया,  
 घर बर्क सोनेमें लपेटे-हाथ सबकेमें दिया,

चंपा चमेली जुड़ी मेंहड़ी-केवड़ा नीका लिवा, १०,  
 गैदा गुलाब सिंगार मरवा-मदनसर शुभ, मोगरा,  
 नानाप्रकार सुगंध ले-सन्मान बहुजनका करा,  
 सेछे दुपट्टे रेशमी-पघड़ी कलाबतूनकी,  
 जरके बनाये वस्त्र बहु-और-कोर साची ऊनकी, ११,  
 सब नारियोंको जरी साडी-कांचली अरु ओढना,  
 बहुमूल्य वस्त्रदिये-किया सत्कार आदर बहुधना,  
 सिद्धार्थनृप महावीरस्वामीके-पिता जग यश लिया,  
 शांतिविजयकहे विवुध पुरजन-सबनको राजी किया, १२,

## [ संगीतशास्त्रकी बातें, ]

जितने दुनियादार पुरुष-या-स्त्री-हैं सब-स्वाभाविक तौरसें जब बातचित-या-भाषण करते हैं तो-प्रथम सप्तकके भीतरही भीतरतक रहते हैं, कारण पाकर दूसरी-या-तीसरी सप्तकतक जाय-तो-जाय, लेकिन ! स्वाभाविक तौरसें तो प्रथमहीतक रहेगें, गवैये लोग-जोकि-बखूबी खुले हुवे गमकदार अवाजसें गाकर सहीसही स्वर लगाते हैं-जिनकी खरज-शुद्ध बनी रहती है-वै-अढ़ाई सप्तकतक पहुंच सकते हैं, जो लोग कानके हाथल-गाकर टेढ़ी गर्दन करके नाकका स्वर लगाते हैं और मनमें समझते हैं हम तीन सप्तकसेंभी ज्यादा पहुंच गये-यह समझना गायन कलाकी विद्यासें बर्खिलाफ-है, शुद्ध आलाप उसको कहते हैं जैसा स्वाभाविक अंग उसका हो-वैसाही स्वरूप गाते वरुत बना रहे, सो-यह-काम-अढ़ाई सप्तकतक होगा, ज्यादातक नहीं.

( कंठ साफ होनेकी तरकीब. )

( दोहा. ) ~~॥~~ मीर्च कुल्लिजन बावची-वच पीपर अरु पान,  
एक पहर मुखमें धरो-कंठ कोकीला जान, १,

[ श्रीयुत-सौजाग्यचंद्रमुणोतका बनायाहुवा  
गुरुज्ञक्तिपर-पद,-जीजोंटीकी ठुमरी, ]

( जलभरन जात यमुनाकेघाट-बड़े ठाठसें आवत  
कामनीयां जल,-)-( इसचालपर, )-

विद्यासागर-न्यायरत्नश्री-शांतिविजय महाराज मुनि है, वि,  
मिथ्यामतज्वर दूर करनकों-बानी अमृतरसमधुर ध्वनि है, वि, १  
भविजनके हितकारक तारक-तुम कीर्ति विरूयात सुनिहै, वि, २  
दक्षपुरनगरमध्य चौमासो-भाग्य भलो और शुभकरनीहै, वि, ३  
नरनारी मिल चरनकमलयुग-संवो ये गुरु ज्ञानगुनीहै, वि, ४  
सोभाचंदबंदित प्रमुदितचित-मेरे तो अब आप धनीहै, वि, ५,



# [ धर्म-अर्थ-काम-और-मोक्ष. ]

( धर्म. )

१-जाननाचाहिये धर्म-दौलतसेंभी-बढकर है, दोस्तभी अगर दुश्मनबनजायतो-बननेदो, पक्कादोस्त तुमाराधर्महै, जिसजगह अपनाधर्म-भ्रष्ट-होताहो वहां रहना कोइजरुरतनही. दुनियादार पापका फल प्रत्यक्षदेखरहेहै ! लेकिन ! नमालूम फिरभी धर्मपरनिगाह क्योंनहींबढाते ?-जिसबातका घमंडलातेहो-जरुर उससें नीचा देखनापडताहै-लेकिन ! नमालूम ! फिरभी उसकों तुम क्यों नहींछोडते ?-संसाररूप-केदखानेसें-छुटनेका रास्ता धर्महै जानतेहुवेभी उसतर्फ कदम क्यों नहीं बढाते ?-खूबयादरखो ! नाजुक शरीर-लंबीउमर-उच्छी औरत-औरतकों अच्छा पुरुष-हुकमहोदा-दौलत-औरबिद्या-पूर्वकृतधर्मसेंही-पायेहो,स्वर्ग और मोक्षभी धर्मसेंही मिलेगा-ऐसे मिलनसारदोस्तकों-क्यों भूलेहुवेहो ?

२-काया अनित्यहै-सरना नहींसंसारमें इसजीवकों किसीका-तरहतरहकी वेदना जीव-भोगताचलाआया-अपशोषहै अब तक इसे ज्ञाननहीहुवा,अकेला आया-और-अकेलाही जायगा-कोइ साहायक-शिवाय धर्मके-न-बनेगा, देखलो ! राजेलोगोंकों इजारांह नोकरहोतेहुवेभी मरना नजीकआनेपर कोइ साहायक नहींबनता, धन-यौवन-और-उमरका भरुसानही.पूर्वजलोग-जितने मरगये अगर एकएकभी उनमेंसें बनेरहते-तो-उनके रहनेकों जगहतक न मिलती, संसारका यही स्वरूपहै-जो-आया-

वह-चला जायगा, धर्मका बोधपाना जीवकों महादुर्लभसें दुर्लभहै, खूब ! यादरखो !! यहशरीर मिटोकापुतला और-सारबस्तु-धर्महै-शास्त्रोंमें जो-विधिवाद-चरितानुवाद-और-यथास्थितवादका ब-यानहै पुरीतौरसें समझो. उमरभरमें बनसकेतो नवलाख नमस्कार मंत्र पढो, किये हुवे पापोंको किसी ज्ञानीगुरुके सामने बयान करके प्रायच्छित लो, नैकीसें हासिल किई हुई दौलतसें अगर बनसके तो जिनमंदिर बनवाओ, इतनी ताकत नहोतो एक जिन-प्रतिमा बनवाकर तीर्थकी जगह-या-अपने शहरके जिनमंदिरमें स्थापित करो, पाठशाला-या-पुस्तकालयकी वृद्धिहो ऐसा प्रयत्न करो, नष्टहोतेहुवे अमूल्य शास्त्रोंका छापेद्वारा-या-लेखनीकेजरीये जीर्णोद्धारकरके रक्षण करो, पैदाशमेसें अर्द्धांश चतुर्थांश-अष्टमांश षोडशांश-द्रव्य-धर्ममें लगाओ, बनसकेतो संसार छोडकर दोक्षा लो, और परलोकका-रास्ता साफ करो,

( अर्थ. )

१-दुनियादारलोग-धनकों-प्राणोंसेंभी-अधिकप्यारा समझ-तेहै-लेकिन ! ज्ञानीलोग-इसे-दुर्गतिका द्वार-दुखका कारण-और-पापका मूल-फरमातेहै, कितनेक कहतेहै धनसें धर्मभी-तो-बन सकेगा, लेकिन ! असलपुछो-तो-भावधर्म-मनसेंही-बनेगा-धनसें नहीं. हां ! दुनियादारोंको धनकी-कुच्छपरवाह जरूर है, इसलिये उसका बयानदेना यहां लाजिम आया,-पहिले इतनायाद रखलोकि-जहांतुमको कुच्छ पैदाश-नहोतीहो-वहारहना कोइजरूरतनही दुश्मन-अधमी-और-हिंसककी पडोशमें रहना हरसुरत बुराहै, दुसरेके

घर-रूपये-व्याजुधरना-उससेतो दूसरेकी चीज अपनेघर-रखकर-  
-उसपर धनदेना निहायतउमदाहै,-अकलमंदकों एकशहरके कौं-  
नेमें पहेरहना अच्छानही,देशाटनकरनेसें इज्जत मिलेगी,लेकिन !  
खानपानकी सामग्री-और-खर्चा-पासरखकर जाना यातेकिसीसें  
लाचारी करना-न-पड़े,-

४-जिसचीजकों खरीदना चाहो-देखभालकर हाथमें लो-  
और-पीछें दाम दो, दुनिया-दगलबाजोंकी सरायहै, घर-हाट-  
कोट-किला-पुल-धर्मशाला-या-देवमंदिर बनवाना शुरू करो-तो-  
मगसीर-फाल्गुन-वैशाख-या-श्रावणमहिनेमें-रोहिणी-मृगशिरा-  
पुष्य-हस्त-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-ज्येष्ठा-उत्तराषाढा-  
शततारका-उत्तराभाद्रपद-और-रेवतीनक्षत्रके रौज-जब-अपना  
चंद्रस्वर चलताहो-नींव-ढालो,प्रथमईंट-अपने-बायेहाथसें रखो,-  
मकान उमदावनेगा-और-उसमें रहनेवाले सुखचैनसें रहेगें, विना  
चंद्रस्वर नींवढालोगे-या-उसमें रहने जाओगे-तकलीफ उठाया-  
गे,-जिसदिशातर्फ घरका दरवजा हो-वही-उसकी अपेक्षा पूर्व-  
दिशा जानना, सूर्योदयकी पूर्वदिशा-यहां-नहीलेना, दरवजेकी  
अपेक्षा जोपूर्वदिशा कहचूके उसीतर्फ खजाना रखनेका मकान  
बनाना चाहिये, अग्निकौनमें रसोइघर-दखनतर्फ शयनघर-नैरु-  
त्यकौनमें शस्त्रशाला-पश्चिमदिशातर्फ भोजनजिमनेका स्थान-वा-  
यव्यकौनमें अनाजका संग्रह-उत्तरमें पानीरखनेकी जगह-  
-और-इक्षान्कौनमें देवमंदिर बनानाचाहिये, जिसघरमें पहिले-  
चौथेपहरकों छोडकर दूसरे तीसरे पहरमें वृक्षकी-या-देवमंदिरकी  
ध्वजाकी छाया पडतीहो अच्छानही,-जिमघरके दरवजेके पास  
जिनमंदिरकी पीठ आतीहो-वहभी ठीकनही, रहनेवालोंकों तक-

लीक रहोगी, दुश्मनभी घर आवे तो उसका मानरखना और पान बीड़ी देना न्याय है, -तुमको कोई कार्य किसीसे कराना है और उससे वह इनकार हो-तो-अन्योक्ति करके कहो, न-माने तो चूर हो, जो-राजोरी कोई कार्य नहीं बनता, जो कार्य तुमसे न-हो सके उसका प्रथमसे ही ऐसा जवाब दे दिया करो, जूठा दिलासा देना फिजूल है. जिसके साथ तुमारा स्नेह है-उसके सामने हर हमेशा विरोध की बातें मत करो, सच्चसच्च और प्रेमयुक्त कहना हो सो कहो;

### ( काम. )

५.—स्त्री-पुरुषकी मोहबत छोपी नही रहती, जबजब देखेगे प्रेम जाहिर होगा, बारबार नेत्रमिलाकर स्थिरदृष्टिमें देखना इसीका नाम प्रेम है, जहां स्त्रीपुरुष-संभोग करते हो-या-बिल्कुल नंगे बैठे हो-उसबख्त उनकी तर्फ देखना नही चाहिये, बिल्कुल नंगे होना बेबकु-फोंका काम है, एकदम तो सदैव पहने रहना चाहिये, किसी स्त्रीने तुमसे प्रेमवचन कहे हो-किसी बातका ओलाहना दिया हो-नेत्रमिलाये-या-रतिक्रीड़ा किइ हो-उसबातको किसीके सामने मत कहो, किसीका पर्दा खोलना अच्छी बात नही, औरतको भी मुना सिब आया किसीमर्दकी बात जो अपने साथ गुजरी हो-उसरेके सामने न कहें, गुरुके सामने प्रायश्चित्तलेतेवख्त कहना बुरा नही, गुरुभी उसबातको जाहिर न करे ऐसा न्याय है, जिस औरतके सामने तुमने देखा और उसने मुंह फेर लिया-स्पर्श करनेसे नाराज हुइ उससे प्रेमबांधना कोई फायदा नही. दूर रहनेसे-या-दिनरात पास बैठारखनेसे स्त्रीके साथ प्रेम दूट जाता है, पचीसवर्षका यह-

और-सोलहवर्षकी-औरद-संतान उत्पत्तिके लाइक-हुवे कहेजायमें, आजकल-जो-विचित्रता देखतेहो-जमानेकी खूबीहै,

६—गर्मीयोंके दिनोंमें जितना ज्यादाकामभोग सेवोगे तकलीफ उठाओगे, असलमें सुतेसर्पको जगानाही बुराकहा, ज्ञानी-लोगोंका फरमानाहै कि—गर्मीयोंकी मौसिममें पनरांहरोजके बाद कामजोग सेवनेवाला सुखी रहेगा, चौमासेमें तीनदिनके बाद-और-ठंडके दिनोंमें इच्छानुसार कामभोग सेवनेवालाभी-ज्यादे तकलीफ-नउठायगा, लेकिन ! इसमें-शरीरकों तकलीफ पहुंचा कर सुखमानना-शिवाय इसके-और-कोइबात हासिल नहीहोसकती. क्याकहाजाय ! गृहस्थलोग इसकोंबिलकुलछोड-नही-सकते—जहांतक-कम-हो=अच्छाहै,—शयनकरतेवख्त इष्टदेवका स्मर्णकरके सोनाचाहिये,—जिसकों बुरेबुरे स्वप्नआतेहो—नींदमें खौफलगता हो-उपसर्गहस्तोत्र-तीनदफे पढकरसोयाकरे, रात्रीकों बहुतजागना-या-लिखना अच्छानही, आरामकरनाही ठीकहोताहै-याते-खायाहुवा भोजन अच्छीतरह पचजाय,

### ( मोक्ष. )

७—मोक्षनाम मुक्तिकाहै, देवगुरुधर्म-मोक्षसाधनके निमित्त कारण है, इसलिये देव-और-देवमंदिरका-कुच्छवयान सुनिये ! जो सबलोगोंकों उपकारी है, शिवाय अरिहंतके-औरोंमें-देवके लक्षण सबुतनहीहोते, अरिहंतकहो-या-जिन-एकहीबातहै, जिनें-ब्रह्मदेव जब-उपकारी सबुत हुवे-तो उनकी मूर्ति-और-मंदिर इ-



जिनकाँ अच्छेभाव पैदाहोनेके कारण क्यों नकहे जायने !-जरूर कहे जायने, बस ! सिद्धहुवाकि-उनकीमूर्ति-और मंदिर आमलो-गोंकों उपकारकहै, इसलिये पहिले मंदिरका बर्नन मुनिये ! जिन मंदिर वहांपर बनानाचाहिये जहांपर बीजडालनेसेँ औरजगहकी अपेक्षा बहुतजल्दी फल उत्पन्न होताहै,—हाडचर्मवगेरा शल्यवाली जमीनपर मंदिर बनायाजायतो बनानेवालोंकों अशुभका-सूचक है, फटीहुइजमीनमें-या-सर्प वगेराके बिलवालीजगहपर-मंदिर बनायाजायतो-बनानेवालेकों-रोग उत्पत्ति-और-महान्कष्ट हो-नेका द्योतकहै, अगर सवालकियाजायकि-जिनेंद्रदेवका मंदिर-और-मूर्ति-तो महान् उपकारक फरमाचुके—और उनके बनाने-वाला तकलीफ उठावे-यह-क्याबात !-( जवाब. )-शास्त्रप्रमाणसेँ अयुक्त बनावे तो तकलीफका कारणहै-प्रमाणयुक्त बनावे तो कौन कहेगा बुराहै ?

८—जितनाउंचा-मंदिरहो-उतनेघैरेमें-पुरुताकोट बनवाना चाहिये, बिटूनकोट-मंदिरकी रवंन्नकही नहीआती, देखिये ! जो जो पुरानेमंदिर बनेहुवे है उनकी चौतर्फ कोट बनाहुवा जरूर मि-लेगा, हरेकमंदिरमें जोजो मूलनायकप्रतिमा होतीहै उसकोअचल रखनाचाहिये-प्रतिष्ठाकेदिनसेँ बुनावगेरामसालासेँ जमारखना ठीक है कभी उठानानही, जोलोग हमेशा उठातेहै उनकों पुछनाचाहिये स्थापनाका-मुहूर्त्त तुमाराकहांरहा ? बल्किन् ! उसकाफल बिल्कुल नष्टहोगया, जिसके ताल्लुक-या-जिसका-वह-मंदिरहोना उसके छिये बुरेदिनोंकी निशानी है, असलमें जितनी पाषाणकी प्रतिमा-मंदिरमेंहो-सब-बुनेसे-स्थिरकरदेना चाहिये-याते-संहितहोनेका-

डर-न-रहे, अगर कहाजायकि-खौफकेवल्ल मूर्ति उठाना पड़े तो-देरहोगी. ( जवाब ) देरका क्या काम ?-तुर्त उठसकती है,- बाहियात्तर्क करनामुनासिबनही, सौचो ! फिर बढीबढीप्रतिमा बनाना क्यों मंजुररखागया, खौफकेवल्ल दस आदमी उठानेके लिये कहांसें आयगें ? वस्तुतः सब मंदिरमें मूर्ति अचल रखना बहुतठीक बात है,

९-जिसशस्त्रके हाथसैं प्रतिमाका नख खंडित होजाय-उसकों दुश्मनमें तकलीफ होगी, जिससे अंगुली खंडितहोजाय-उसकों स्थानभष्टहोनापड़ेगा, जिससैं हाथखंडितहोजाय-उसके कुटुंबका विनाशहोगा, जिसके हाथसैं पांवखंडित होजाय-उसकी दौलत चौर लेजायगें-जिसकेहाथसैं गर्दनखंडितहोजाय-उसकें लिये सबतरह बुराहै, मूलनायकप्रतिमाकी दृष्टि किसतरह रखना उसकाखुलासामुनिये-मूलगर्भद्वारकी जितनीउंचाई हो-उसके आठ भागकरना-और-उनमेंसैं उपरका आठमाभाग-तथा-नीचेके-छ भाग-छोडकर-जो सातमाभाग रहा-उसके फिर सातभाग करना -उससातभागमेंसैं नीचेके-छभाग-छोडकर-उपरका जो एकभाग रहा-उसभागमें ठीकमीलाकर मूलनायकप्रतिमाकी दृष्टिरखना चाहिये, इससैं ऊंचीनीची रखोगे-तो-अच्छा नहोगा,-उसकेमालिककों दुख बोधकरेहेगा.

१०-जिसमंदिरका जीणौंदार करायाजाय-और-मूलनायक प्रतिमा-न-उठाइगइहो-तो-नवीनस्थापना करानेकी जरूरत नही, अगर अठाइगइहो-तो-फिर प्रतिष्ठापहोच्छव नया करानाहोगा, जिसरंगके पाषाणकी प्रतिमाहो-उसीरंगकी कोइरेखा-उसमेंदि-

खाइवे-तो-कोइहर्जकीबातनही, अगर दूसरेरंगकी रेखाहो-जैसे कालेमें सफेद-और-सफेदमें काली-तो-अच्छानही, बनानेवाले-कों दुखका कारणहै, रौद्रस्वरूपवाली प्रतिमाहो-तो-जानलो ! बनानेवालेकेलिये बुराहै, अति स्थूलप्रतिमा-कारीगरके विनाशका सूचकहै, खरमोशके उदरसरीखा-उदरवाली-प्रतिमा दुर्भिक्ष-और-विनाशकाकारण जानो, बहुतपतलीप्रतिमाहो-तो-बनानेवालेके लिये बुरेदिनोंकी निशानीहै, नाशिका टेंडीहो-या-मुख-जैसा चाहिये-उसी प्रमाणसें छोटाहो-तो-बनानेवालेकेलिये तकलीफ-का-कारणहै, छोटीकमरवाली हो-तो-स्थापनकरनेवालेका हृदय सुरत-नाशहोगा, चक्षुरहित हो-तो-बनानेवालेकी आंखोंमें पीड़ा रहेगी. छोटीजंघावाली-होतो-बनानेवालेकों कुटुंबसें बियोगरहेगा. छोटे अंगोपांगवाली-हरसुरत-बिगाडका कारणहै, प्रतिमाका-मुख-ऊंचा-नीचा-या-टेढाहों-तो-बनानेवालेकेलिये तरहतरहकी विपत्तिप्राप्तहोनेका कारणहै, बहुतनीचीदृष्टिवालीभी-ठीकनही, इल्लिये प्रतिमा-बनवाना-या-तयार-लेना-तो-जानकारसें-दर-याफतकरके लेनाठीकहै, शास्त्रोक्तप्रमाणसें रहितहोना-अमंगलीक-और-प्रमाणयुक्तहोना मंगलीकका-कारणहै,

११-पदमासनप्रतिमाका-समचतुरस्र-नापहोना चाहिये.एक घुटनेसें दूसरे घुटनेतक सिधीढोर नापलो, वहीनाप वामेघुटनेसें दाहनेस्कंधतक-औरफिर वहीनाप दाहनेघुटनेसें वामेस्कंधतक-एकसरिखा मिलालो. चौथानाप महाराजके नीचेके स्थलसें मस्तकतक एकसरिखा देखलो, इसीचारनापकानाम समचौरस प्रमाण मानाहै, ऐसी समचौरस और सुंदरप्रतिमा-पूजकपुरुषकों

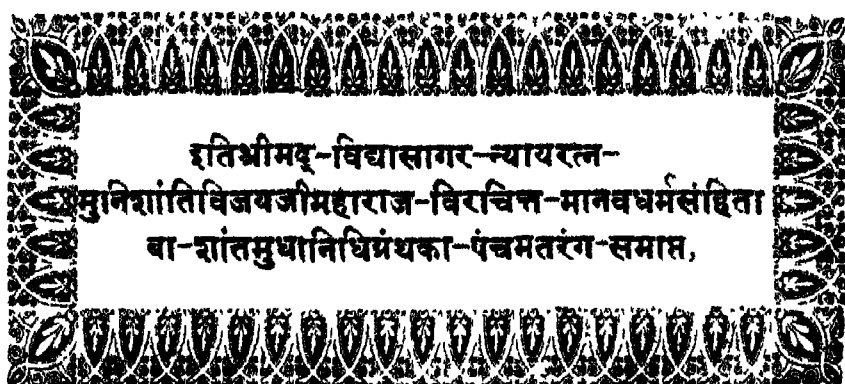
महान्मुक्तकारणहोगी. प्रतिष्ठाकरातेवस्तुजब प्रतिमा बैठाना तब अपना चंद्रस्वरूप देखकर बैठाना चाहिये, ज्योतिषके मुहूर्तसे बढकर स्वरोदयज्ञान है, गणिषिद्धापयमेमें लिखाहुवा है कि-निमित्तज्ञान-का फल-लोग-नही जानते, इसलिये ज्योतिषद्वारा दिनभृद्धि देकर स्वरोदयज्ञानसे कायलेना ठीक है, घरदेरासर अपने रहनेके मकानसे कुछ उंचा होना जरूर है जिससे अपनी हरसुरतसे उच्च-तिबनी रहे, घरदेरासरमें पाषाण-या-धातुकी-प्रतिमा-रखना ठीक नहीं. धातु-या-रत्नकी रखना अच्छा है, सोभी-ग्यारह अंगुलसे ज्यादा उंची न हो, बड़ी प्रतिमा-बड़े मंदिरमें स्थापन करना मुनासिब है, आजकल-मानक-पंखा-स्फटिक-लाजवर्द-निलय-संगेशम-और-पुखराजबगेराकी-प्रतिमा-देखनेमें आती है, पहिलेदिनोमें सब तरहके रत्नोंकी थी, बड़े उत्तमपुरुष होगये जिन्होंने संसारकी मूर्च्छा छोडकर धर्ममें ध्यानदिवा, कइजगह देखा गया घरदेरासरमें भी-लोग-बड़ीबड़ी रत्नक रखते है, असलमें सारवस्तु-जगतमें धर्म ही है, और-सब-मिथ्याग्रपंच आत्माको अहितका देनेवाला जानो.

१२—प्रतिमाके उपर छत्र उसतरकी बसें रखना जो-नासिका-और-ललाटके ठीक मध्यभागपर ऊंचे-सिंघीलकीरमें रहे, हरेक मंदिरमें घंटानाद होतारहेगा-तो-उसमें रत्नक बनी करेगी, हरेक मंदिरके शिखरपर ध्वजारखना जरूरी बात है, ध्वजारहित मंदिरमें पूजा करनेसे पूजाका फल नही होता, एकदिनभी ध्वजारहित-मंदिर रखना ठीक नही, ध्वजा-त्रिशूटी रखना चाहिये, कइलोग-खंभी-और-चौखूटी रखते है, काबदेसे बलिष्ठाफवात है ध्वजाका यही कायदा समझो कि-त्रिशूटी होना-कइलोगमें मंदिरबगेराके कार-

णसें कपड़ेकी ध्वजा-सावत-न-रह सकती हो-तो-पीतलकी ध्वजा  
तयारकरके उसमें अष्टमंगलीक-या-एकीलास्वस्तिक-बनाके लगा  
देना चाहिये याते सदा आनंदमंगल रहेगा,

( संवत् १९५५- )

हस्ताक्षर-मुनि-शांतिविजय,-



इति श्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-

मुनिशांतिविजयजीमहाराज-विरचित-मानवधर्मसंहिता

वा-शांतमुधानिधिग्रंथका-पंचमतरंग-समाप्त,

## ( गहूली गहूली. )

( जगतगुरु जिनवर जयकारी, ) इस चालपर,—

- श्रोतारे सुनां गुरुगुणना रागी-जानारे तुम भाग्यदशा जागी,  
 श्रोतारे सुनो गुणना रागी, ए देशी,  
 जंबूमारि भरतभलूं सुनिये-देशगुर्जर राजनगर गणिये,  
 शोभारे तेह शहरतणी सुनिये-श्रोतारे, १  
 शोभेरे जिनमंदिर जयकारी-के-शत उपर अठ निरधारी,  
 नमेरे जहां नितनित नरनारी-श्रोतारे, २  
 करमदल कापवा बलवंता-साधुरे जिनशासनमें रमता,  
 एतारे पांचो इंद्रियने दमता-श्रोतारे, ३  
 आव्यारे गुरु देशविदेश फिरी-भूमी राजनगरनी पवित्रकारी,  
 श्रोतारे मन शंभय दूर हरी-श्रोतारे, ४  
 संबत् ओगणीस चालीस विषे-गुरु गिरुवा एकविष सिध्वे,  
 रही राजनगरमें कर्म पीसे-श्रोतारे, ५  
 तृप्णा तरुणीथी मन तांणी-विरतिरमणी करी पटराणी,  
 जेह उभयलोकमां गुणखाणी-श्रोतारे, ६  
 विवेकने मंत्रीपद ताजां-संबेगकुबर किया युवराजा,  
 सवर रहे हाजर दरवाजा-श्रोतारे, ७  
 आर्जवपटहस्ती महाभारी-बिनबल्लुष घोडा मिणघारी,  
 मुनि आतमराज करे भारी-श्रोतारे, ८  
 रथ संयमशिलतणा भरिया-सुभट समदमणी अलंकरीवा,  
 मुनिरे समयतारसना दरिया-श्रोतारे, ९

के समकितमहेल मनोहारी-संतोषसिंहासन गुणकारी,  
 बेठारे जहां मुनिमुद्रा धारी-ओतारे, १०  
 चामर जहां धर्मभुकल करता-किरातिअशक्त जहां किरता,  
 कर्यारे जेणे मोहरिपु हरता-ओतारे, ११  
 अलिकद्वयराज कथुं अलगुं-भलुंरे भावराजमां मन बलमुं,  
 दुरितवन शिघ्र जेथी सलगुं-ओतारे, १२  
 आत्मरूप लक्ष्मी रुढी लेवा-सदा करे शांतिविजय सेवा,  
 मीलेरे जेथी मुक्तितणा येवा-ओतारे, १३

### ( गहूली दूसरी, )

( भवी तुमे सुणज्योरे-भगवतीमूत्रनी बाणी, ) ए देखी,  
 भवीतुमे सुणज्योरे-गुरुमुखमधुरो बाणी,  
 दिलमां धरज्योरे-समतारसगुणखाणी,  
 पंजाबदेसमां जन्मलिया गुरु-बालपणे व्रत लीबा,  
 व्याकरणालंकार भणीने-दुर्पत दुरे किधा, भवीतुम. १  
 नामसमानगुणे शोभंता-सुमतिगुप्तिना धारी,  
 आनमनिजपद ध्यानमां लिना-भिना जिनगुणवधारी, भवीतुम. २  
 आगम अनुसारी किरिचामां-अप्रमत्त गुरुराया,  
 तृष्णातरुणीथी मन तांणी-संयम तान लमाया, भवीतुम. ३  
 गांमनगरपुर देसविदेसे-विचरंता व्रतधारी,  
 बहुजनने प्रतिबोध दइने-दुरमति दुर निवारी, भवीतुम. ४  
 संसयशत्रु दुर निवारी-भयथी निर्भय कीधा  
 खटमत्तत्व स्वरूप बतावी-छोचन अमने दीधा, भवीतुम. ५

कुम्भवादेकां कुर निवारी-कीचो इन सुपसाव,  
 बरहकदिवदा जिनवाणीना-मकटाया गुराय, भवीतुम. ६  
 ए उपकार तुमारो कहो गुरु-विसायो किम जाय,  
 स्वर्णकरी उपकारीतणां सह-गुणगातां दुख जाय, भवीतुम. ७  
 ज्ञानबधे ज्ञानीगुणगातां-ज्ञानी गुणधी भरिया,  
 सांतिविजयंकहे गुरुगुणदरिया-केम तराये तरिया, भवीतुम. ८

### ( गहूली तीसरी. )

[ इसमें महाराजभी आत्मारामजीका-जीवनचरित-गुंफितहै. ]

( साभलजोरे मुनि-संयमरागी,-उपसमश्रेणी चढीयारे,)

ए देवी,

आजनगरमें सुगुरु पधार्या-जिनआगमना दरियारे,  
 ज्ञानतरंगे लहेरां लेता-ध्यानपवनथो भरियारे, आजनगरमें, १  
 आजकालमां जे जिनआगम-दृष्टिपथमां आवेरे,  
 गहनमहन तेहना जे अर्थो-प्रकटकरीने बतावेरे, आजनगरमें, २  
 शक्तिनही पण भक्तितणे वश-गुणगावा उलसावुरे,  
 कर्णामृत गुरु चरित सुणावी-आनंद अधिक बढावुरे, आज० ३  
 दक्षिणदिशि जंबूद्वीपमांही-मेही भरतमझाररे,  
 उत्तरदिशि पंचाबदेस जहां-लहेरां भांव मनोहाररे. आज० ४  
 लखीबवंश गणेशचंदधर-जन्मलिया सुखधामरे,  
 बपदेवी कुशी मुक्तिमां-मुक्ताफल उपमानरे, आज० ५  
 लखुबधमां पण लखनवी बहु-दीपता गुरुरायारे,  
 संगतवी मिली हुंदकचन्ने-हुंदकवंश बसयारे, आज० ६



संवत ओगणीसे दसमाही-उत्खलकार्तिक मसेरे,  
 ब्रंचजीमे दिवसे क्रिमे दीक्षा-जीवधराम गुरुपासेरे, आज० ७  
 ज्ञानभण्या बली देख क्रिया बहु-जुनां शास्त्र बिलेकीरे,  
 संसकपदिया गुरुने पुछे-प्रतिभा केम उवेखीरे, आज० ८  
 उचर न मिला जब गुरुजीने-ज्ञानकला घट जागीरे,  
 सुमतासखी घट आन बंसी जब-हुंडपंथ दिया त्यागीरे, आ० ९  
 धर्मशिरोमणि देसमनोहर-गुर्जरभूमि रसालीरे,  
 जहां आवी सुबिहितगुरुपासे-मनशंका सह टालीरे, आ० १०  
 परमकर्मो उपकार तुमे बहु-श्रीगुरु आतमरायारे,  
 जयवंत बर्तो आभरते-दिनदिन तेज सवायारे, आ० ११  
 दुषमकालसमे गुरुजी तुमे-वचनदीवडा दीधारे,  
 शांतिविजय कहे जेथी हमारा-विषमकाम पण सिधारे आ० १२

### ( गहूली चतुर्थी. )

( इसमेंभी-उक्तमहाराजका जीवनचरित-शेषहै. )

आजनगरमें सुमुख पचार्या-रत्नत्रयीना धारीरे,  
 ज्ञान अपूरबदान दइने-जडता दूर निवारिरे, आ० १  
 संवत ओगणीसे बत्तीसे-राजनगर मोझारिरे,  
 संयमक्रिया सुबिहितगुरुपासे-सोलह शिष्य परिवारर, आ० २  
 चरणकरण गुणधार अनुपम-श्रीगुरु आतमरायारे,  
 जिमशासन भिगार महापुनि-तत्त्वभजननां धामरे, आ० ३  
 नयम भंग प्रमाण करोने-जीवादिंकनुं स्वरूपरे,  
 भुव उत्पात नाशयी गुरुने-जगण्युं निखिल अनुपरे, आ० ४

जाण्या द्रव्यगुणपर्याय-भर्काधर्म आकाशरे,  
 पुदमलकाल अने वली चेतन-निस्त्यामिस्त्य मकाकरे, आ० ५  
 परम कर्यो उपकार तुमे गुरु-दुर्मत दुर नस्यारे,  
 जयजयकार थयो जिनशासन-आनंद अधिक सवायारे, आ० ६  
 जो न होत आ वखत तुमारा-वचन दीवडा हडारे,  
 तो दुषम अंधारी राते-लेत अमे मत कुडारे, आ० ७  
 विद्यानी वधती करवामा-जेहना विविध विचाररे,  
 ये गुरुना उपकार कहो किम-भूले आ संसाररे, आ० ८  
 देस बहु विचरो गुरुराया-क्रोडकरो शुभ कामरे,  
 अंतरघटमां शांतिविजय पण राखेछे हृदहायरे, आ० ९

### [ गहूली पंचमी. ]

( भवीतुमे अष्टमीतिथि सेवारे-इसचालपर. )

रहोगुरु राजनगर चोयासुरे-गुणनिधि गुण तुमारा मास्थुं-रहोगुरु,  
 तुमे रागथी नही रंगाया-नही द्वेषरिपुथी बंधायारे,  
 महामोहथी नाही रंगाया-रहोगुरु. १  
 धनमाल अने राजधानीरे-महासंकट आकर जानीरे,  
 तुमे छोडी दुनिया दिबानी-रहोगुरु. २  
 पांच इंद्रो सुभटथी सुरारे-आलसविकथाथी दुरारे,  
 चार चौर किया चकमुरा-रहोगुरु. ३  
 शानदोरीथी मन्नकापि शंभुरे-तीर तत्व रमणतामां साध्युंरे,  
 जेथी समकित अदभुत, माध्युं-रहोगुरु. ४

- गुरु विद्यावेळडीये विटायारे-जेनी कल्पतरुसम कायारे,  
 एतो समता जळथी सिंचाया-रहोगुरु. ५
- तुमे शास्त्रसुधारस पिधोरे-महामोहरिपु वश किधोरे,  
 तुमे अनुभव प्यालो पिधो-रहोगुरु. ६
- तुमे ज्ञानरतनभंडाररे-करवा हमपर उपकाररे  
 याज्यो नोधाराना आधार-रहोगुरु. ७
- तुम आणा सदा क्षिर धरस्युंरे-तपनियमविज्ञेये करस्युंरे,  
 कहे शांतिविजय अनुसरस्युं-रहोगुरु. ८





# वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल नं० 28 शक्ति  
लेखक शान्ति (विजय)  
शीर्षक महान्यास साहिता